मैक्सिम गोर्की की अमर कृति

मा

अनुवादक : चंद्रभाल जौहरी

—संपादक—

श्रीपतराय

सर्वोदय साहित्य मन्दिर
हुसैनीअलम रोड, हैदराबाद (दक्षिण).

सरस्वती प्रेस बनारस

प्रस्तावना

यह पुस्तक रूस के महालेखक मैक्सिम गोर्की की महाकृति 'मदर' नाम की पुस्तक का अनुवाद है, जिसके अनुवाद यूरोप की प्रायः सभी जीवित भाषाओं में निकल चुके हैं, और जिसकी लाखों प्रतियाँ उन देशों में बिक चुकी हैं। सोवियट रूस में मजदूरों और किसानों का पंचायती राज्य स्थापित करनेवाला, आधुनिक रूस का विधाता महात्मा लेनिन—प्रजा के लेखकों में, अर्थात् उन लेखकों में जिन्होंने प्रजा का गीत गाया और प्रजा को उठाने के लिए लिखा, दो ही को महालेखक मानता था—एक तो महात्मा टाल्सटाय को और दूसरा मैक्सिम गोर्की को। इन दो महान् लेखकों के ग्रन्थों से उस प्रजा-भक्त नेता की आत्मा पर वैसा ही गहरा असर होता था जैसा हमारे महात्मा गांधी की आत्मा पर गीता और रामायण से होता है। अस्तु. संसार के दो ऐसे प्रजा-प्रेमी महा-लेखकों में से एक, मैक्सिम गोर्की के इस उपन्यास को जो उसकी सर्वश्रेष्ठ कृति मानी जाती है, हिन्दी-पाठकों के सामने रखते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है।

मैक्सिम गोर्की केवल लेखक ही नहीं था। वह प्रजा की स्वतंत्रता और प्रजा के अधिकारों के लिए लगातार युद्ध करनेवाला वीर सिपाही और रूस में प्रजा का पंचायती राज्य स्थापित करनेवाला एक क्रान्तिकारी नेता भी था। जब तक रूस में क्रान्ति होकर मजदूरों और किसानों का राज्य स्थापित नहीं हो गया, तब तक मैक्सिम गोर्की को बराबर अपना जीवन जेलों और जलावतनी में ही गुजारना पड़ा। बल्कि उसका जीवन बचपन से ही एक ऐसी कटी हुई पतंग का-सा रहा जो उड़ती हुई, बिजली के तारों से उलझती, पेड़ों से अटकती, मँडराती हुई मैदानों को पार करती हुई जाती है और जिसको देखकर छोकरे आनन्दोन्मत्त होकर उसके पीछे दौड़ते हैं और उसे लूट लेते हैं। गोर्की बचपन से अनाथ था। उसकी गरीबी और आवारागर्दी का यह हाल था कि उसने होटलों में बरतन माँजने और आटा गूँथने तक के काम अपना पेट भरने के लिए किये और खण्डहरों मे गली के कुत्तों के साथ-साथ सो-सोकर रातें बिताईं। न तो कभी उसे किसी स्कूल में पढ़ने को मिला और न कभी उसे किसी कालेज या विश्वविद्यालय से डिग्री प्राप्त करने का मौका ही अपनी जिन्दगी में मिला। उसका विश्वविद्यालय बस संसार ही रहा, जिसमे वह तरह-तरह के अनुभवों की परीक्षाओं मे बैठता रहा और अपने हृदय को माँज-माँजकर उज्ज्वल बनाने और अपनी आत्मा को मनुष्यमात्र की सेवा में लगाने का प्रयत्न करता रहा।

मैक्सिम गोर्की ने जो कुछ लिखा है, अपनी आत्मा से और अपने स्वयं अनुभवों की बुनियाद पर मनुष्यमात्र के कल्याण और समाज की उन्नति की दृष्टि से लिखा है। उसका दृढ़ विश्वास था कि जब तक मनुष्य-समाज का एक बड़ा भाग थोड़े-से मनुष्यों की गुलामी

में दबा रहेगा, तब तक मानव-समाज का कल्याण नहीं हो सकता। मनुष्य-समाज के बड़े भाग को गुलामी से मुक्त करने के लिए वह हमारा हृदय अपनी महान कृतियों के द्वारा बदलने का प्रयत्न करता है। कहाँ तक वह अपने इस प्रयत्न में सफल हुआ, इसका पता तो इसी से लग सकता है कि रूस में मजदूरों और किसानों का राज्य स्थापित करनेवाले महात्मा लेनिन तक पर गोर्की की कृतियों का बड़ा असर हुआ था। और प्रजा पर जो असर हुआ था, उसका यह फल हुआ कि रूस ने स्वतंत्र हो जाने पर गोर्की को, उस आवारागर्द को जिसका न तो कोई घर-बार था और जो न किसी स्कूल या कालेज में पढ़ा ही था, इतना मान दिया कि अपने देश के सबसे बड़े हवाई जहाज का नाम मैक्सिम गोर्की रखा अर्थात् मानों उसको अक्षरशः अपने सिरों के ऊपर उठाकर आकाश मे रख दिया।

प्रेमचन्दजी और मैक्सिम गोर्की मे मुझे बड़ी समता लगती है। इन दोनो महान् लेखकों के फोटो देखकर उनके चेहरो की झुर्रियों के पीछे मुझे एक-सी ही सरल बाल आत्मा हँसतीं हुई दीखती है। प्रेमचन्दजी के ठट्ठे, जो आनन्द से अट्टहास करनेवाले बालकों की तरह उनका चेहरा खिला देते थे और उनके शरीर को झकझोर डालते थे, को अक्सर देखने का मुझे सौभाग्य अपने जीवन में मिला। पर मैक्सिम गोर्की को देखने का मुझे कभी सौभाग्य नहीं मिला। फिर भी न जाने क्यों मेरे मन में यह बैठा-सा है कि मैक्सिम गोर्की भी अवश्य प्रेमचन्दजी की ही तरह संसार पर मानों ठट्ठे लगाता हुआ हँसता होगा। अन्यथा उसको वे दुःख और अत्याचार सहना जो उसने अपने जीवन में मनुष्यों के हाथों सहे, और वह पीड़ा जो उसके हृदय मे मनुष्य-जीवन के लिए थी, अपने हृदय में रखकर जीना और फिर भी मनुष्य-समाज को प्रेम और भाईचारे की बुनियाद पर चलते हुए देखने की आशा रखना अवश्य असम्भव हो जाता। इसलिए मैं बार-बार सोचता हूँ कि वह अवश्य खूब हँसता होगा। गोर्की इसी उपन्यास मे लिटिल रूसी नाम के पात्र से एक स्थान पर कहलवाता भी है कि 'शायद वह लोग जिनके दिल अन्दर से पके होते हैं, बाहर से बहुत हँसा करते हैं।' यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि प्रेमचन्दजी को वैसी अवारा-गर्दी या कठोर यातनाएँ तो अपने जीवन मे नहीं मिलीं जैसी गोर्की को मिली थीं; परन्तु तो भी उन्होने अपने जीवन मे काफी कष्ट और अन्याय का अनुभव किया था जो उनके चेहरे पर गोर्की के चेहरे की तरह झुर्रियाँ डाल देने और उनके कोमल हृदय को पकाकर उसमें मनुष्य-समाज के उस बड़े भाग के प्रति जो थोड़े आदमियों को गुलामी से दबा हुआ है, असीम सहानुभूति भर देने के लिए काफी थे। मैंने एक बार सोचा कि शायद मैं जो मुखाकृति की समता मैक्सिम गोर्की और प्रेमचन्दजी में देखता हूँ, वह मेरा भ्रम हो। अस्तु, मैंने मैक्सिम गोर्की का चित्र अपनी स्त्री को दिखाकर पूछा कि 'बताओ तो, गोर्की की शक्ल हमारे किस परिचित मित्र से मिलती है?' उन्होंने चित्र देखते ही आश्चर्य से कहा, 'कितनी प्रेमचंदजी से मिलती है!'

परन्तु प्रेमचंदजी और गोर्की मे केवल मुखाकृति या प्रजा के प्रति सहानुभूति की ही समता नही थी। गोर्की ने अपने देश की जो दशा थी उसका वैसा ही—बिलकुल वैसा

ही—अपने उपन्यासों में चित्रण किया है। वैसे तो सभी रूसी कलाकार, डोस्तोवस्की, तुर्गनेव, चेखॉव इत्यादि सभी ने, जीवन जैसा है उसको वैसा ही चित्रित करने का प्रयत्न किया है, क्योंकि उन्हें दूसरे देशों के लेखकों की जमीन-आस्मान के कुलावे मिलानेवाली कहानियाँ पसन्द नहीं थीं और वे उन्हें मनुष्यों का दिमाग खराब करनेवाला व्यर्थ का वितण्डा-सा मानते थे—परन्तु मैक्सिम गोर्की ने अपने देश की साधारण जनता का जीवन, उस जीवन के संघर्षों और मुक्ति के लिए प्रयत्नों का चित्रण करने में जो निपुणता दिखाई है, वह अद्वितीय है। वह साधारण किसानों, मजदूरों, सिपाहियों, नौकर-नौकरानियों, गाड़ीवानों, चपरासियों की नित्यप्रति की बातों और छोटी-मोटी साधारण वस्तुओं से जो महान् चित्र बना देता है, वे बड़े अनूठे और अद्वितीय हैं। शायद यह उसके साधारण जीवन के अति निकट संघर्ष और उस जीवन के अनुभवों और अध्ययन का परिणाम था कि वह उस जीवन के चित्र हमारे सामने ऐसी सुन्दरता से रखता है। कुछ भी हो, मैक्सिम गोर्की छोटी-मोटी चीजों और नित्यप्रति की आपस की साधारण बातचीतों से ऐसे चित्र बनाकर हमारे सामने खड़ा कर देता है जो हमारे हृदय पर प्रलयकारी असर करते हैं। इस उपन्यास को वह व्लेसोव नाम के एक मजदूर के जीवन के वर्णन से खोलता है। मजदूरों के जीवन की कठोरता और नीरसता का चित्र खींचता हुआ वह बताता है कि व्लेसोव एक बहादुर और आजाद तबियत का मजदूर होने के कारण कारखाने में सबसे अच्छा कारीगर होने पर भी अच्छी मजदूरी नहीं कमा पाता था, क्योंकि न तो वह मिस्त्रियों और मैनेजर की खुशामद करता था और न किसी और से ही कारखाने में दबता था। वह अक्सर अधिकारियों और कारखाने के दूसरे मजदूरों से लड़ता-झगड़ता रहता था और सदा मरने-मारने को तैयार रहता था। इस एक आजाद तबियत के मजदूर के जीवन का वर्णन करते हुए मैक्सिम गोर्की पाठकों के दिलों और दिमागों पर मानों पत्थर की लकीरों से, इस सत्य को समझाने के लिए कि आज की दुनिया में मेहनत-मजदूरी करनेवालों को दबाकर जानवरों की तरह रखा जाता है, बड़े दिल को हिला देनेवाले और अनोखे चित्र खींचने के प्रयत्न करता है। कैसे व्लेसोव बहादुर और आजाद तबियत का होने पर भी बेचारा गरीबी से लाचार और बेबस लोहू के घूँट पी-पीकर अपना नीरस जीवन बिताता है। उसके हृदय में एक अपार वेदना भरी रहती है, जिससे न तो वह अपनी स्त्री को ही प्यार कर सकता है और न अपने लड़के को। अपनी इस आन्तरिक वेदना को निकालने के लिए वह आदमी स्त्री को खूब रोज ठोंकता है और अपना दुनिया-भर पर का गुस्सा उस बेचारी की पीठ पर उतारता है। वह एक प्रकार का मानसिक रोगी है। शायद वह अपने मन में सोचता है कि यदि उसके स्त्री और बच्चा न होता तो वह काहे को किसी की गुलामी कर अपना जीवन बिताता? क्यों न वह भी डाकू बनकर इन शैतानों की दौलत लूटता जो उसका दिन-रात खून चूस-चूसकर धनी-मानी हो रहे हैं। परन्तु उस पर गृहस्थी का भार है, जिससे वह डाकू नहीं बनता और जैसा एक पात्र के मुँह से गोर्की आगे कहलाता है, गृहस्थी में पड़कर 'सिरके में गगनधूल' की तरह

गलता है। उस बेचारे की सारी दिक्कत यह है कि वह इन्सानियत को हाथ से न छोड़कर एक साधारण गृहस्थ की तरह रहना चाहता है, जिसके लिए उसे तरह-तरह के अपमान सहने पड़ते हैं, और दुनिया में दबकर रहने के लिए समाज उसे मजबूर करता है, जिससे वह बड़ा दुखी होकर एक मानसिक रोगी बन जाता है और पागलों की तरह जीवन व्यतीत करता हुआ मरता है। मरता क्या है बेचारा, शिकंजे में गगनधूल की तरह गल जाता है। अपने हृदय में दिन-रात धधकती हुई आग को बुझाने के लिए वह खूब शराब पीता है, जिससे धीरे-धीरे उसका शरीर अहरहः गल जाता है। न तो दुनिया में उसे कोई खुशी है, न कोई उसका दोस्त और साथी है। सुबह से शाम तक कारखाने में कड़ी मसक्कत करके जब वह घर लौटता है, तब जल्दी-जल्दी थोड़ा-सा खाना खाकर अपने दिल की आग बुझाने और अपने शरीर की थकान भुलाने के लिए वह एक शराब की बोतल अपने सामने रखकर बैठ जाता है और शराब पीता हुआ कुछ गाने का प्रयत्न करता है, जिसका वर्णन मैक्सिम गोर्की यों करता है—

'...ब्यालू कर चुकने के बाद तुरन्त ही उसकी स्त्री उसके सामने से थाली इत्यादि नहीं उठा लेती थी, तो वह मेज पर से सारी चीजें जमीन पर गिरा देता था। और ह्विस्की की एक बोतल लाकर अपने सामने रख लेता था। फिर दीवार से अपनी पीठ टेककर और आँखें मींचकर मुँह फाड़-फाड़कर, कर्कश स्वर में वह राग अलापना शुरू करता था, जिससे आर्तनाद-सी वेदना झरती थी। उसकी फटी दुखित आवाज उसकी मूँछों में लड़खड़ाती थी और उनमें चिपटे हुए रोटी के टुकड़ों को नीचे गिराती थी। अपनी मोटी-मोटी उँगलियों से मूँछों पर ताव देता हुआ वह इसी प्रकार रोज रात को बहुत देर तक अर्थ-हीन राग तान-तानकर अलापता था। उसके इस विचित्र संगीत का स्वर जाड़े की रात में भेड़ियों के गुर्राने की तरह लगता था। जब तक बोतल में ह्विस्की रहती थी, तब तक वह गाता रहता था। ह्विस्की खत्म हो जाने पर तिपाई पर वह एक तरफ लोट जाता था या मेज पर सिर रखकर ऊँघ जाता था और इसी दशा में, दूसरे दिन सुबह कारखाने का भोंपा बजने तक सोता रहता था।...'

किसी मनुष्य के दुःखपूर्ण जीवन का इससे अधिक दुःखपूर्ण चित्र और क्या हो सकता है कि उसके संगीत से भी आर्तनाद की-सी वेदना झरे या उस दुखी मनुष्य के आन्तरिक क्रोध का और इससे अच्छा वर्णन क्या हो सकता है कि उसकी आवाज में जाड़ों की रातों में गुर्रानेवाले भेड़िये की गुर्राहट हो। हमारे गाँवों के पड़ोस में तो रात को सियार ही आकर चिल्लाते हैं जिनका चिल्लाना भी हमें काफी मनहूस लगता है। परन्तु रूस देश की उन निर्जन जाड़ों की रातों में, जिनमें बर्फ गिरती हुई मकानों और सड़कों को ढाँक लेती है और सियारों के बजाय गावों के पास आ-आकर भेड़िये गुर्राते हैं, उन भेड़ियों का गुर्राना मनुष्य को बड़ा मनहूस ही नहीं, बल्कि भयावना भी लगता है। देखिए, मैक्सिम गोर्की व्लेसोव की शराबखोरी के दृश्य का वर्णन करता हुआ अपने चित्र में कितनी वेदना, व्यथा, दुःख, अकेलापन, नीरसता और मनुष्य-समाज के लिए एक संकट का

चित्र खींचता है! वह ब्लेसोव की आन्तरिक व्यथा को खींचकर, उसकी शराबखोरी और उसके संगीत को प्रदर्शित करके और उसकी उस दुखी शाम से उस मनहूस सुबह तक सुलाकर जिसका वर्णन आपने अभी ऊपर पढ़ा है, सन्तुष्ट नहीं हो जाता ; बल्कि अपने चित्र का प्रभाव आप पर ऐसा डालने के लिए कि आपका हृदय उस मजदूर के दुखी जीवन को अच्छी तरह समझकर बैठने लगे, जिस कला का उपयोग करता है, उसको भी देखिए। चतुर फोटोग्राफर किसी मनुष्य के कद पर अपने फोटो में जोर देने के लिए—फोटो देखते ही आपको फौरन यह समझा देने के लिए कि वह मनुष्य, जिसका उसने फोटो लिया है, कितना लम्बा या नाटा है—जिस मनुष्य का फोटो लेता है, उसे किसी खम्भे या पेड़ के पास खड़ा करता है, जिससे फोटो पर आपकी नजर पड़ते ही आप उस मनुष्य के कद का उस खम्भे या पेड़ से मुकाबला करके बिना कुछ कहे-सुने, फौरन समझ जाते हैं कि वह मनुष्य लम्बा है अथवा नाटा है। इसी प्रकार आपने देखा होगा कि सुन्दर चित्रों में चित्रकार किसी सुन्दर स्त्री की उठती हुई जवानी पर जोर देने के लिए किसी बहाने से एक बूढ़ी स्त्री को अथवा किसी स्त्री के बुढ़ापे पर जोर देने के लिए किसी जवान स्त्री को ले आते हैं। मैक्सिम गोर्की ब्लेसोव के जीवन की नीरसता और अकेलेपन पर जोर देने के लिए इस मजदूर के जीवन में जिसका न तो दुनिया में कोई ऐसा दोस्त था, जिससे वह अपना दिल खोलता और जो न अपने हृदय में दिन-रात टसकनेवाली व्यथा के कारण किसी को प्यार ही कर सकता था, एक कुत्ता लाता है, जिसका वर्णन वह इस प्रकार उपन्यास में करता है:—

'ब्लेसोव के पास उसी की तरह भुजक्कड़ बालोंदार एक कुत्ता था। वह उसके साथ रोज सुबह कारखाने के द्वार तक जाता था और शाम को कारखाने के दरवाजे पर आकर उसका इन्तजार करता था। छुट्टियों के दिन ब्लेसोव शराब की भट्टियों का गश्त लगाने निकलता था। चुपचाप, धीरे-धीरे चलता हुआ, वह लोगों के चेहरों को इस प्रकार घूरता हुआ जाता था, मानों वह किसी को ढूँढ़ रहा हो। उसका कुत्ता भी दिन-रात उसके साथ-साथ घूमता था। शाम को घर लौटकर जब ब्लेसोव ब्यालू करने बैठता था, तब इस कुत्ते को भी थाली में से खाना फेंक-फेंककर खिलाता जाता था। न तो वह कभी इस कुत्ते को मारता था, न कभी उसे दुतकारता था और न कभी प्यार से उसकी पीठ थप-थपाता था।'

ब्लेसोव के शरीर का जो वर्णन मैक्सिम गोर्की ने किया है, वह एक बहादुर मर्द के शरीर का वर्णन है, जिस पर सुन्दरियाँ लट्टू हो जाती हैं। परन्तु उस बेचारे मजदूर का जो जीवन है, उसमें उसकी बहादुरी और मर्दानगी मिट्टी में लोटती है, और उसका जीवन उसके कुत्ते से ही अधिक मिलता-जुलता है। उसके शरीर के जिन बालों पर सुन्दरियाँ लट्टू हो सकती थीं, एक भुजक्कड़ बालोंदार कुत्ते के बालों की तरह लगते हैं। मैक्सिम गोर्की ब्लेसोव को उसकी आन्तरिक व्यथा गर्क करने के लिए शराब पिलाकर और उसके गाने से उसका दर्द टपकाकर या उसके क्रोध को भेड़ियों की गुर्राहट की तरह उसके मुंह

से निकालकर और उसको ठण्डी रातों में एक नङ्गी तिपाई पर शाम से उस अप्रिय प्रातः-काल तक सुलाकर ही सन्तुष्ट नहीं हो जाता है, जिसका वर्णन हमने आपको ऊपर सुनाया; वह अपने चित्र की व्यथा से आपका हृदय टुकड़े-टुकड़े कर डालने के लिए, जिस कुत्ते का वर्णन हमने ऊपर दिया है, उसे लाता है और उसे इन शब्दों में व्लेसोव के पास सुलाकर अपने चित्र को ऊँचा उठाकर हमारा दिल बैठाने का प्रयत्न करता है—'उसका कुत्ता भी उसी के पास एक तरफ पड़कर सो जाता था। एक दुखी मजदूर जिसका दुःख बाँटनेवाला इस दुनिया में कोई नहीं है, जाड़े की कड़कड़ाती ठण्डी रातों में, जब कि धनवान् मोटे-मोटे गद्दों और रजाइयों में ढँके सोते हैं, एक नंगी तिपाई पर बेहोश पड़ा है, और उसके कुछ दूर जमीन पर एक कुत्ता पड़ा सो रहा है।' मैक्सिम गोर्की ऐसा चित्र पाठकों के आगे रखकर मानों पूछता है, 'बताओ, व्लेसोव का जीवन कुत्ते से बदतर क्योंकर था?'

मैक्सिम गोर्की और प्रेमचन्दजी में यह तो बड़ी समता है ही कि जैसे प्रेमचन्दजो ने अपने उपन्यासों में हमारा जीवन जैसा उन्होंने पाया, उसका वैसा ही चित्रण किया है, वैसे ही मैक्सिम गोर्की ने भी अपने समय में जैसे रूसी जीवन को पाया, वैसा ही चित्रण किया है। परन्तु इसके अतिरिक्त यह भी समता है कि प्रेमचन्दजी ने जिस प्रकार न सिर्फ अपने समय में होनेवाले अपने देश के राजनीतिक और सामाजिक संघर्षों का अपने उपन्यासों में चित्रण ही किया; बल्कि उनको और अपने देश के नेता के विचारों को अपने जीवन मे भी अपनाने का प्रयत्न किया, उसी प्रकार मैक्सिम गोर्की ने भी अपने समय मे रूस देश मे होनेवाले राजनीतिक और सामाजिक संघर्षों को न सिर्फ अपने उपन्यासों में ही चित्रित करने का प्रयत्न किया, बल्कि अपने जीवन में उन्हे और अपने देश के नेता लेनिन के विचारों को भो अपनाया। इस उपन्यास की एक बड़ी महत्ता यह भी है कि इसे पढ़कर आप न सिर्फ उस समय मे होनेवाले रूस देश के राजनीतिक और सामाजिक संघर्षों को ही अच्छी तरह समझ लेगे; बल्कि उन संघर्षों के पीछे जो समाजवादी विचार और फिलासफी थी, उसको भी आसानी से उसी प्रकार समझ सकते हैं, जिस प्रकार प्रेमचन्दजी के उपन्यासो को पढ़कर न सिर्फ सत्याग्रह आन्दोलन-काल के संघर्षों को ही पाठक अच्छी तरह समझ सकते हैं, बल्कि गान्धीवाद की फिलासफी को भी बहुत हद तक समझ सकते हैं। समाजवाद अर्थात् सोशलिज्म और समष्टिवाद अर्थात् कम्यूनिज्म के बारे में—जिनके दोनों के सिद्धान्त एक ही होने पर भी रास्ते भिन्न हैं—हमारे देश में तरह-तरह के विचार लोगों में प्रचलित हैं। कोई समझता है कि समाजवाद या समष्टिवाद में सबकी बराबरी या समता का यह अर्थ होगा कि सबकी धन-सम्पत्ति बराबर होगी। कोई समझता है कि कम्यूनिज्म में स्त्रियों की पुरुषों से बराबरी का अर्थ यह होगा कि एक स्त्री कई पुरुषों की पत्नी होकर रहेगी। कोई कुछ कहता है, कोई कुछ। इस उपन्यास को पढ़कर समाजवादियों के विचारों और उद्देश्यों से पाठकों को अच्छा परिचय हो जायगा, और वह यह भी समझ जायेंगे कि समष्टिवादी या समाजवादी किस प्रकार की समाज-व्यवस्था चाहते हैं।

प्रेमचन्दजी के उपन्यासों की तरह आपको रूस के आन्दोलन का मैक्सिम गोर्की के इस उपन्यास में वर्णन तो मिलता है; परन्तु एक चीज इस उपन्यास में ऐसी मिलेगी जो प्रेमचन्दजी के उपन्यासों में नहीं मिलती। वह है शुरू से आखिर तक एक गहरी वेदना का चित्र जो कि रूस देश के लगभग सभी उच्च लेखकों की कृतियों में मिलता है। इसका कारण शायद यही है कि एक तो रूस देश के लोगों का जीवन बहुत दुखी और व्यथित था, दूसरे उन्होंने अपनी स्वतंत्रता लेने के लिए जितने कष्ट और यातनाएँ झेलीं, उतनी अभी तक हमने इस देश में नहीं उठाई हैं। अस्तु, रूसवालों का हृदय जैसा पक गया था, वैसा हमारा हृदय अभी तक शायद नहीं पका है। जैसे नौजवान गोर्की के इस उपन्यास में क्रान्तिकारी कार्य करते-करते जलावतन होते हैं, वैसे रूस में क्रान्ति होने तक आठ लाख अकेले एक साइबेरिया को ही जलावतन हो चुके थे—जो फाँसियों पर चढ़े और जेल गये वे अलग थे। हमने तो इस देश में एक लाख ही आदमी कुछ महीनों के लिए जेलों में अपने सत्याग्रह-संग्राम में अभी तक भेजे हैं और कुछ हजार ही हमारे देश में क्रान्तिकारी आन्दोलनों में नजरबन्द हुए और कुछ सौ ही काले-पानी गये और इने-गिने फाँसियों पर चढ़े हैं। इतने-से प्रयत्न पर ही हम अपने-आपको बड़ा तीसमारखाँ और त्यागी समझने लगे हैं और अपने त्याग और तपस्या की फसल को काटने के लिए इतने उत्सुक और लालायित हो गये हैं कि बन्धुत्व के भाव को भुलाकर जो कुरबानियों और साथ-साथ कष्ट सहने से उत्पन्न होता है, हम आज एक दूसरे को अपने से नीचा साबित करने में और अपने साथियों पर कीचड़ उछालने में संलग्न हो रहे हैं। हमारे हृदयों की इस संकीर्णता और ओछेपन में रूसी-जीवन के व्यथित जीवन की गहराई प्रेमचन्दजी कैसे भर देते! ऐसा करते तो वह मैक्सिम गोर्की की तरह हमारा जीवन जैसा है, उसका वैसा ही चित्रण न कर पाते जो कि उनका मैक्सिम गोर्की की तरह उद्देश्य था।

इस उपन्यास का प्लाट बड़ा सीधा-सादा है। एक मजदूर, जिसको ईश्वर की सृष्टि ने बलवान् और स्वतंत्र स्वभाव का बनाया था, परन्तु जिसको मनुष्य की सृष्टि ने जिन्दगी-भर पेट पालने के लिए कड़ी मशक्कत करने से ही कभी फुरसत नहीं दी, असन्तुष्ट और निस्सहाय, अपने भाग्य पर कुढ़ता हुआ मर जाता है, जैसे इस देश में बेचारे किसान अपनी एड़ी-चोटी का पसीना एक करते हुए मर जाते हैं; परन्तु उन्हें न तो भरपेट भोजन ही नसीब होता है और न इज्जत का जीवन! इस मजदूर की स्त्री अपने पति के लिए भोजन बनाने, उसकी पाशविक इच्छा को तृप्त करके बच्चे पैदा करने और उसके दुनिया-भर पर रोष और सन्तोष का शिकार होकर रोज उसकी मार सहने में ही अपना जीवन बिताती थी। हमारे देश में स्त्री-समाज की आज भी यही दशा है—बेचारी अपने एकमात्र पुत्र के बड़ा होने पर उससे सुख पाने की राह देखती है। परन्तु उसका लड़का बड़ा होते ही रूस देश के अन्दर छिप-छिपकर काम करनेवाले उस समाजवादी क्रान्तिकारी दल में शरीक हो जाता है जो रूस में पूँजीशाही की जड़ उखाड़कर वहाँ मजदूरों और किसानों का पंचायती राज्य स्थापित करना चाहता था। इस बेचारी मजदूर स्त्री को अपने जीवन

में किसी विकास का, दुनिया की भली चीजों से सम्पर्क का, कोई मौका नहीं मिला था। उसकी आत्मा वैसी ही दबी और कुचली हुई थी, जैसी आज भी हमारे देश में स्त्री-जाति की है, या यों कहिए कि जैसी कुचली और दबी हुई सारे रूस की प्रजा की ही आत्मा उस समय थी या आज जैसी हमारे देश की प्रजा की आत्मा दबी और कुचली हुई है। परंतु इस मजदूर स्त्री के हृदय में अपार मातृत्व था जो कि सृष्टि ने स्त्री की विशेषता बनाई है और जो सभी स्त्रियों में होता है, यदि उसको विशेष कारण या परिस्थितियाँ दबा न दें। इस मातृभाव से उत्पन्न होनेवाले अपने मातृस्नेह के कारण इस स्त्री की दबी और कुचली हुई आत्मा भी अपने पुत्र के कामों में रस लेने के कारण धीरे-धीरे जागृत होती है, और जिस प्रकार धीरे-धीरे उसकी आत्मा जागृत होती है, उसी तरह की कुचली और दबी हुई प्रजा की आत्मा भी क्रान्तिकारी आन्दोलन के प्रयत्नों से धीरे-धीरे इस उपन्यास में जागृत होती है। इन अनूठे प्रयत्नों और उनमे भाग लेनेवाले तरह-तरह के हृदय-स्पर्शी चित्रों को, अर्थात् रूस देश की आत्मा के जागरण का ही चित्र आपको, मा-बेटे की एक सुंदर कथा के परदे पर होता हुआ, इस उपन्यास में दिखाई देता है, जिस कथा को अपना चित्रपट बनाकर इस उपन्यास का क्रांतिकारी लेखक, संसार की पीड़ित प्रजा को मुक्ति का मार्ग दिखाता है। प्लाट तो इतना ही है। परंतु फिर भी बारीक छपाई के लगभग चार-पाँच सौ पृष्ठ आपको यह उपन्यास पूरा करने के लिए पढ़ने होंगे, क्योंकि यह किस्सा धीरे-धीरे बढ़ता है। किसी देश की प्रजा की आत्मा का विकास और उत्थान भी उसी प्रकार धीरे-धीरे होता है, जिस प्रकार किसी व्यक्ति की आत्मा का। समाज को भी अपने विकास और उत्थान के लिए विघ्नों, बाधाओं, संकटों और संघर्षों का सामना उसी तरह करना होता है, जिस तरह कि किसी व्यक्ति की आत्मा को अपने विकास और उत्थान के लिए करना होता है। महात्मा गांधी ने अपनी आत्मा के विकास के लिए केवल उन प्रयत्नों की कहानी लिखने मे जो उन्होंने, जिसे वह सत्य समझते थे, उसके प्रयोगों में किये, हमारे सामने अपनी आत्मकथा का एक मोटा और महान् ग्रंथ रख दिया है जो संसार के दूसरे आत्मकथा लिखनेवाले महापुरुषों की आत्मकथा की तरह उनके जीवन की कहानी नहीं है, बल्कि केवल उनके उन प्रयत्नों की ही कहानी है, जो उन्होंने अपने सत्य के प्रयोगों में किये। फिर भला एक देश की प्रजा को आत्मा के विकास लिए, उस देश की प्रजा के सत्य मार्ग पर चलने के प्रयोगों की कहानी आपको सुनाने के लिए, गोर्की आपके सामने एक मोटा उपन्यास रखता है तो आश्चर्य ही क्या है? मनुष्य जिस प्रकार अपनी मुक्ति के लए प्रयत्न करने मे अपने स्वभाव की गुत्थियों, भोंडी आर बुरी आदतों, दुःख और सुख, काम, क्रोध, मोह और लोभ से लड़ता और झगड़ता हुआ, धीरे-धीरे उन्नति करता है, उसी प्रकार आपको इस उपन्यास में एक देश की अत्मा काम, क्रोध, मोह, लोभ की गुत्थियाँ सुलझाती हुई और विघ्न बाधाओं से झगड़ती हुई, धीरे-धीरे उन्नति करती हुई दिखाई देती है। रूस के क्रांतिकारी आंदोलन में, जिसके द्वारा समाज की वह व्यवस्था बदलकर जिसमें थोड़े-से अमीरों, धनिकों, मालिकों, जमींदारों और पढ़े-

लिखे मुफ्तखोरों ने प्रजा को अपने नीचे दबाकर रखा है, एक ऐसी नई समाज-व्यवस्था स्थापित करने का प्रयत्न किया जाता है, जो मजदूरों और किसानों के, जो बेचारे दुनिया की सारी सम्पत्ति अपने बाहुबल से उत्पन्न करते हुए भी स्वयं नङ्गे और भूखे ही रहते हैं, एक पंचायत-शासन के अधीन रहे, तरह-तरह के आदमी आकर भाग लेते हैं। कोई भोंडे और बदतमीज, कोई अपढ़, कोई शक्की, कोई कठोर, कोई कोमल, कोई समाज से बहिष्कृत, कोई गरीब, कोई अमीर घर में जन्म लेकर भी अपने विचारों के लिए धन-दौलत और ऐशो-आराम पर लात मारकर आनेवाले, कोई अधिक दुनियादार, कोई अधिक मानवी और कोई अधिक आदर्शवादी—सभी लोगों ने भाग लिया था। समाज ही इस प्रकार के नाना भाँति के लोगों से बनता है। समाज के इन तमाम तरह के लोगों की समस्याओं को उसी तरह समझदारी से ध्यान में रखते हुए ही हम समाज को ऊपर उठा सकते हैं, जिस प्रकार हमे अपनी आत्मोन्नति के लिए अपनी काम, क्रोध, मोह, लोभ की समस्याओं को ध्यान में रखना और सुलझाना पड़ता है। किस प्रकार गोर्की इन नये प्रकार के लोगों की समस्याओं को ध्यान मे रखता हुआ उनके द्वारा रूसी समाज को ऊपर उठाने का प्रयत्न करता है, आप इस उपन्यास में देखेंगे।

चन्द्रकान्ता की तरह प्रथम परिच्छेद में होनेवाली घटनाओं का रहस्य अंतिम परिच्छेद में देनेवाला अथवा ऐसी भेदी और रहस्यपूर्ण घटनाओं का घटाटोप सिलसिला आपके सामने रखनेवाला यह उपन्यास नहीं है जो आपके रोंगटे भय और आशा से शुरू से आखिर तक खड़े रखे। परन्तु हाँ, इस उपन्यास को पढ़ते हुए आपका दिल बैठने लगेगा, क्योंकि इसमें पूँजीशाही मे समाज के अधःपतन, धनिकों के लोभ और गरीबों की मुसीबतों, मनुष्य की उलझनों के बड़े-बड़े हृदय को झकझोर डालनेवाले चित्र शुरू से आखिर तक मिलते हैं। धनिकों ने समाज पर अपना कब्जा जमाकर कैसे मनुष्य-समाज को अधःपतन पर पहुँचाया है ; कैसे वह बड़े-बडे पेटवाले मिल-मालिक, सेठ और साहूकार, जो जोंकों की तरह गरीबों का खून दिन-रात चूस-चूसकर अपना धन बढ़ाते हैं, मेहनत करनेवाले मजदूरों के जीवन को गरीब, नीरस, दुखःपूर्ण और पशुओं का-सा बना देते हैं : और उस नीरस जीवन में आदमी, स्त्री और बच्चों का क्या स्थान हो जाता है ; कैसे उस जीवन में मनुष्य-समाज के एक पूरे भाग ही को अछूत और बहिष्कृत करके रखा जाता है ; कैसे धनिकवर्ग सरकार, सिपाही और शासन के सभी जरियों का अपने हित में उपयोग करता है ; और कैसे उन वीरों को जो समाज को इस अधःपतन से निकालने का प्रयत्न करते हैं, नाना प्रकार के कष्टों और यातनाओं, जेलो और जलावतनी का सामना करना पड़ता है, इत्यादि के बड़े अनूठे और हृदय को हिला देनेवाले चित्र आपको गोर्की के इस महान् उपन्यास में मिलेंगे, जिसे धीरे-धीरे एक महाकाव्य की तरह पढ़ना चाहिए, न कि जल्दी-जल्दी किसी किस्से की तरह।

इस उपन्यास के मुख्य पात्र पवेल और उसकी मा हैं। परन्तु दूसरे पात्र भी इन दोनों मुख्य पात्रों की तरह ही समाज का वह चित्र पाठकों के सामने रखने के लिए, जो गोर्की

रखना चाहता है, उतने ही जरूरी हैं। लिटिल रूसी नाम का एक क्रान्तिकारी मजदूर पवेल का मित्र है। वह घर-बार छोड़कर क्रांतिकारी कार्य में लिप्त, कारखानों में काम करता फिरता है, या हो सकता है, क्रांतिकारी कार्य में भाग लेने से ही उसका घर-बार उससे छूट गया है और जेल और जलावतनी ही उसका घर हो गये हैं। वह हृदय से बड़ा कोमल और मानवी है, जिससे मा को वह अपने पुत्र पवेल से अधिक नहीं तो कम से कम बराबर ही प्यारा हो जाता है। लिटिल रूसी अपने हृदय में भरे हुए कोमल प्रेम को निराशा को दर्द से भरी हुई, मुँह की सीटियों में धीरे-धीरे बजा-बजाकर निकालता है, अपने मसखरेपन और हँसी-मजाक के पर्दे मे अपने दिल का दर्द छिपाये रहता है। व्यसीवशचिकोव नाम का एक भोंडा, उजड्ड, कुन्ददेना-तराश नौजवान है, जिसका बाप चोर है और मा मर चुकी है। दुनिया उसको नीच समझती है और उसके साथ एक अछूत का-सा व्यवहार करती है, जिससे वह हमेशा दुनिया से चिढ़ा हुआ सा रहता है और सदा मरने-मारने ही की सोचता रहता है। परन्तु वह मारने का विचार ही करता रहता है, जब कि सहृदय लिटिल रूसी मुंशी इसाय का खून कर डालता है। व्यसीवशचिकोव के-से चोर के भोंड़े लड़के और लिटिल रूसी-जैसे खूनियों के प्रति भी आपका हृदय गोर्की इस उपन्यास में द्रवित कर देता है। पवेल एक बड़ा सच्चा क्रान्तिकारी और गम्भीर सैनिक है। परन्तु वह अपने आदर्शवाद और गम्भीरता में जो बातें नहीं समझ पाता है, वह लिटिल रूसी अपनी सहृदयता के कारण समझ लेता है, जिसका वर्णन करता हुआ गीर्की इस बात पर जोर देता है कि दुनिया में बहुत-से महत्त्वपूर्ण काम बुद्धि से नहीं, बल्कि सहृदयता ही से हो सकते हैं। सशा नाम की एक अमीर घर की लड़की अपने कुकर्मी जमींदार बाप को छोड़कर क्रान्तिकारी आंदोलन में आ मिलती है। वह बड़ी कोमल और रग-रग से स्त्री है। सशा पवेल पर आसक्त है और पवेल सशा पर। परन्तु पवेल अपने आदर्शवाद में उससे विवाह का विचार भी अपने हृदय में नहीं लाता, क्योंकि एक तो वह समझता है कि विवाह कर लेने से, घर-गृहस्थी के चक्कर मे पड़ जाने से वह क्रांतिकारी कार्य फिर उसी संलग्नता से न कर सकेगा, जिससे वह कर रहा है। दूसरे विवाह करने की उन दोनों को कभी फुरसत भी नहीं मिल पाती। क्योंकि जब सशा जेल के बाहर होती है तो पवेल जेल के भीतर होता है और पवेल बाहर होता है तो सशा जेल में होती है। अस्तु, जीवन इन विचारों से आँखमिचौनी सी खेलता है। नटाशा नाम की एक दूसरी स्त्री है, जिसको लिटिल रूसी प्रेम करता है। परन्तु क्रान्तिकारी कार्य मे, जिसमे वे दोनों ही लगे हैं, बाधा पड़ने के डर से वह बेचारा चुप रहता है, और कभी उससे अपना प्रेम प्रकट तक नहीं करता। वह भी उससे दूर रहने की कोशिश करती है। नटाशा जवान है, उसके हृदय में संगीत हिलोरें लेता है। जिसको वह पियानों की मधुर तानों में बहा देती है। मधुरता को उस बेचारी के जीवन में कोई मौका ही नहीं मिलता है, क्योंकि उसने क्रान्तिकारी परचे मशीनों पर गुप्त स्थानों में स्वयं छापने और जेल और जलावतनी से भागे हुए क्रान्तिकारियों को गुप्त स्थानों में छिपाने और भगाने का कठोर कार्य अपने

जिम्मे ले रखा है, जिससे उसका बाह्य-जीवन कठोर बन गया है। वह एक जबरदस्त कार्य करनेवाली क्रान्तिकारी स्त्री है, जिसका स्त्रीत्व कठोर कामों में लगे रहने से ऊपर से दब गया है, परन्तु उसके हृदय में वह स्त्रीत्व पूरे तौर पर विराजमान है, जिसका पता उसकी यगोर की सेवा-शुश्रूषा से अच्छी तरह लगता है। नटाशा का भाई एक विद्वान क्रान्तिकारी है जो रुपया कमाकर क्रान्तिकारियों को देने के लिए नौकरी कर लेता है और क्रान्तिकारी पर्चे और पुस्तकें लिख-लिख प्रचार का काम करता है, और मुसीबत में पड़ जानेवाले क्रान्तिकारियों की देख-भाल करता है। यगोर नाम का क्रान्तिकारी नेता अथक प्रयत्न करते-करते और जेलों और जलावतनी सहते-सहते तपेदिक का शिकार हो जाता है। परन्तु मरते दम तक वह हँसता हुआ सारी मुसीबतों का सामना करता है और क्रान्तिकारी कार्य में संलग्न रहता है। राइबिन नाम का किसान, किसानों के स्वभाव के अनुसार दुनिया-भर पर सन्देह करता है, क्योंकि किसानों को दुनिया में सभी लूटने का प्रयत्न करते हैं; परन्तु जब राइबिन की समझ में क्रान्तिकारी आन्दोलन का उद्देश्य आ जाता है, तब वह उस काम में घुसकर अंगद की तरह पाँव अड़ा देता है। मजदूर, किसान, शिक्षक, लेखक, अमीर और गरीब, अछूत स्त्रियाँ, माताएँ, बहिनें, बूढ़े इत्यादि समाज के सभी सदस्य किस प्रकार रूस के क्रान्तिकारी आन्दोलन में भाग लेते हुए एक नई समाज-व्यवस्था बनाने का प्रयत्न करते है, आपको इस उपन्यास मे मैक्सिम गोर्की दिखाता है।

साथ ही साथ समाज के इन सारे विभिन्न सदस्यों की समस्याएँ और उनकी मनोंवृत्ति के भी गोर्की बड़े सुन्दर चित्र खींचता है। क्योंकि यह उपन्यास किसी एक 'हीरो' और 'हिरोइन' का किस्सा नहीं है। बल्कि पूरे समाज, उसके विभिन्न अंगों की पूँजीशाही में दुर्गति की कहानी है, जिसको समाज के विभिन्न अंगों के प्रतिनिधि रंग-मंच पर आ-आकर आपको स्वयं इस उपन्यास मे सुनाते हैं। सच तो यह है कि यह उपन्यास क्या है, समाज की, पूँजीशाही के अंतर्गत दुर्दशा का एक महाचित्र है, जिसको जल्दी-जल्दी पढ़कर खत्म कर देने में पाठकों को उसके सौन्दर्य का पता नहीं चल सकता; बल्कि धीरे-धीरे पढ़ने में जैसे कि किसी सुन्दर चित्र को देर तक देखने से उसका सौन्दर्य अधिकाधिक लगता है। मैंने तो इस उपन्यास को जितनी ही बार पढ़ा है, उतना ही अधिक मुझे यह सुन्दर लगा है। किसानों के सन्देश, मजदूर की भोंडी भाषा मे उनके दुःखों की कहानी, आदर्शवादियों की आगे की तरफ दौड़, स्त्रियों की हिचक और परेशानी, नौजवानों का उतावलापन, बूढ़ों के जोश, पुलिस के अपने अप्रिय काम पर दुःख, अधिकारियों की साधारण लोगों की तरह जीवन से बेजारी के अनूठे चित्र इस उपन्यास में शुरू से आखिर तक भरे पड़े हैं, जिन चित्रों को महाकलाकार गोर्की ने रंगों में न बनाकर सीधे-सादे शब्दों में बनाने का प्रयत्न किया है।

ऐसे उपन्यास का एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करना बड़ा दुस्तर काम है। कम से कम मेरे जैसे एक साधारण लेखक के लिए तो बड़ा दुस्तर है ही। एक तो किसी

महाचित्र की नकल उतारने के लिए भी एक बड़े अच्छे चित्रकार की आवश्यकता होती है जो मैं अच्छी तरह जानता हूँ, मैं नहीं हूँ। दूसरे रंगों से बने किसी चित्र को उसी प्रकार के रंगों का प्रयोग करके नकल करना जितना कठिन होता होगा, उससे कहीं अधिक कठिन एक भाषा में बनाये हुए किसी चित्र को दूसरी भाषा में उतार लेना है। कहीं एक भाषा का एक शब्द जो अर्थ रखता है, उसको व्यक्त करने के लिए किसी दूसरी भाषा में एक बड़े वाक्य की जरूरत हो जाती है, तो कहीं एक वाक्य का अर्थ दूसरी भाषा के एक छोटे शब्द से चल जाता है, और कहीं वाक्यों और शब्दों से घण्टों सिर मारते-मारते भी मूल ग्रंथ का अर्थ व्यक्त करना असम्भव हो जाता है। दृष्टान्त के लिए लीजिए। गोर्की प्रायः दृश्यों का वर्णन करता हुआ 'छायाओं' को नचाता है। छाया शब्द का हिन्दी में बहुवचन भी छाया ही होता है। परंतु shadow of the trees were dancing का हिन्दी में पेड़ों की छाया नाच रही थी, अनुवाद किया जाय तो इस अकेले वाक्य में तो यह गलत या बुरा नहीं लगता, परन्तु जो चित्र गोर्की मूल ग्रंथ में खींचता है, उसका यह अक्स नहीं बनता ; क्योंकि गोर्की के चित्र में एक छाया—महाछाया ही चाहे वह क्यों न हो—नहीं नाचती है, वल्कि बहुत-सी 'छायाएँ' ही नाचती हैं, जिनके बीच-बीच में खुले आकाश के धब्बे भी दीखते रहते हैं। अस्तु, मैंने मजबूरन, व्याकरण की चिंता न करते हुए अपने इस अनुवाद में ऐसे स्थानों पर 'छायाएँ' शब्द का ही प्रयोग किया है, जिसके लिए व्याकरण-शास्त्री मुझ पर खफा होंगे तो मैं नागरी-प्रचारणी सभा के एक मंत्री को अपनी ढाल बनाकर आगे रख दूँगा, क्योंकि मैंने उनकी सलाह से ही ऐसा करने की हिम्मत की है। इसी तरह 'मजदूर' शब्द अँगरेजी के labourer शब्द का पर्यायवाची हो सकता है, परंतु working men शब्द का नहीं। 'श्रमजीवी' शब्द working men का पर्यायवाची हो सकता था, परन्तु यह शब्द साधारण आदमियों के लिए मुझे क्लिष्ट जँचा और मराठी भाषा का 'कामगार' शब्द उपयुक्त लगा जो कि भारतीय मजदूर-आंदोलन में अब बहुत प्रचलित शब्द हो गया है। इसलिए मैंने 'कामगार' शब्द को हिन्दी में अपना लेने का प्रयत्न किया है, जिसके लिए मैं किसी से क्षमा माँगने की जरूरत नहीं समझता। एक और शब्द जिसने बडी कठिनाई पैदा की, वह अँगरेजी का 'comrade' शब्द है। इसका अनुवाद 'भाई' हो सकता था। परंतु comrade शब्द भाई और बहिन सभी के लिए एक-सा अँगरेजी में प्रयुक्त होता है और इस शब्द के पीछे जो भाई-चारे का विचार है, उसमें स्त्री और मर्द एक-से ही माने जाते हैं। अस्तु मैं comrade शब्द का अनुवाद करते हुए मर्दों के लिए भाई और स्त्रियों के लिए बहिन शब्द का प्रयोग करता तो मै आपके सामने स्त्री-मर्द के एक दूसरे से सम्बन्ध की जो तस्वीर रखता, वह 'कम्यूनिस्ट फिलासफी' की उस तस्वीर से बिल्कुल भिन्न हो जाती जो comrade शब्द से अँगरेजी में बनती है। अस्तु, मैंने comrade शब्द का अनुवाद 'बंधु' किया है और इस शब्द का प्रयोग मर्द और स्त्री दोनों के लिए एक-सा ही किया है। इसी प्रकार की और भी मुझे बहुत-सी कठिनाइयों का सामना

मैक्सिम गोर्की के इस उपन्यास का हिंदी में अनुवाद करने में करना पड़ा, क्योंकि किसी मूल लेखक के ऊँचे चित्रों को अपनी सरल भाषा में उतारना बड़ा कठिन होता है।

फिर भी मैंने यह कठिन काम अपने हाथ में ले लिया, उसका एक कारण था। बात यों थी कि सन् १९३० के सत्याग्रह-आंदोलन में जेल हो जाने पर पहिले तो काफी दिन तक मुझे खूब सोने से ही फुरसत नहीं मिली, क्योंकि बाहर के दिन-रात के लगातार काम से मैं बड़ा थका हुआ जेल मे घुसा था। परंतु जब यह थकावट चली गई और बम्बई जेल से चालान होकर हमारी नौजवान टोली नासिक जेल पहुँच गई और वहाँ भी जेल-वालों से हमारा शुरू का अपने अधिकार जमाने की खींचा-तानी और झगड़ा-टण्टा खतम हो गया, तब हमारे दिन जेल में कटना मुश्किल हो गये। जेलवाले जो काम हमें देते थे या दे सकते थे, उसमें तो हमारा जी लगता नहीं था। अस्तु, हम उसे करते नहीं थे। उन्होंने कुर्ते सीने के लिए हमारे पास कपड़ा भेजा तो हमने उसको फाड़कर अपने इस्ते-माल के लिए अँगोछे बना लिये। जेलवालों को हम लोगों से काम लेना तो दूर, जब अपना कपड़ा वापस पाना भी असम्भव हो गया तो सुपरेंटेंडेण्ट ने अपना पिण्ड हमसे छुड़ाने के लिए कहा—अच्छा, मैं आपको बागवानी का काम देता हूँ। बागवानी के काम से मेरा मतलब है कि आप बाग में घूमें। उस बेचारे ने इस प्रकार अपना पिण्ड तो हम लोगों से छुड़ा लिया; परंतु हमारी समस्या इससे और भी बढ़ गई। जब तक जेलवालों से झगड़ा होता रहता था, तब तक हमारे लिए कम से कम एक काम तो था। जवानी का रगों में खून था, दिलों में खुलकर खेलने की उमंगें थीं, अभिलाषाएँ थीं, लालसाएँ थीं, उत्सुकता और बेसब्री थी। देश के लिए कुछ करने को जी चाहता था। परतु जेल मे कुछ करने को नहीं था—बेबसी का सामना था। अपने दिल के फफोले फोड़ने के लिए जेलवालों से ही लड़ बैठते थे। परंतु जब जेलवाले ही लड़ाई से कन्नी काटने लगे तो व्यर्थ में हम भी उनसे कहाँ तक लड़ाई मोल लेते। अस्तु, निश्चय हुआ कि खूब अध्ययन किया जाय। परंतु जेल के पुस्तकालय में थोड़ी-सी धार्मिक पुस्तकों और प्रेमी-प्रेमिकाओं के उपन्यासों के अतिरिक्त कोई ऐसी पुस्तकें नहीं थीं, जिनमें हम रस ले सकते। बाहर से सामाजिक विषयों पर पुस्तकें मँगाना शुरू किया, जिन विषयों मे हमे रस था और जिनमें रस लेते-लेते हम जेल जा पहुँचे थे। परंतु जेल के अधिकारी इतने कुपढ थे कि जिस ग्रन्थ पर राजनैतिक शब्द लिखा देखते थे, उसे हमारे पास, सरकारी हुक्म के अनुसार, अंदर नहीं आने देते थे। इसी बुनियाद पर राजनीतिक और अर्थ-शास्त्र की वे पुस्तकें तक हमें नहीं मिलने दी गई जो सरकारी कालेजों में विद्यार्थियों को पढ़ाई जाती है—पोलिटिकल एकोनोमी नाम की पुस्तक जेल के अधिकारियों ने जेल के द्वार से ही लौटा दी; क्योंकि उस पर पोलिटिकल शब्द लिखा था। हमने राजनीतिक उपन्यास मँगाने शुरू किये, जिनमें अंदर तो राजनीति का वह हलाहल था जो अधिकारी हमसे दूर रखना चाहते थे, परंतु ऊपर से नाम के लिए कहने को उपन्यास ही थे। इन्हीं उपन्यासों में मैक्सिम गोर्की का यह उपन्यास 'मा' भी हमारे पास पहुचा जो कि ऐसा

क्रांतिकारी उपन्यास है कि उसको पढ़कर जिसके सीने में दिल है, वह यदि दुनियादारी में पड़कर उसका दिल मुर्दा नहीं हो गया है, तो अवश्य क्रांतिकारी विचारों का नहीं है तो भी, क्रांतिकारी हो जाय। यह उपन्यास तो पहले भी पढ़ा था, परंतु जिन हालतों और जिस वातावरण मे यह इस समय हमारे पास पहुँचा, उसमें उसके पढ़ने में और भी मजा आया और इच्छा हुई कि इसको अपने देश के सर्वसाधारण लोगो तक पहुँचा दिया जाय। अस्तु, इसका हिंदी मे अनुवाद करना शुरू कर दिया गया। जेल के दफ्तर से कोरे कागजों के दस्तों पर सरकारी मुहर लगकर आती थी, जिन पर जेल में बैठा-बैठा ब्रिटिश साम्राज्यशाही का एक कैदी ऐसे उपन्यास का अनुवाद लिखने लगा, जिसको एक बार जो पढ़ ले, वही साम्राज्यशाही का दुश्मन हो जावे; क्योंकि साम्राज्यशाही पूँजीशाही की पुत्री का ही नाम तो है। जेल के अधिकारियों के बार-बार पूछने पर कि यह क्या लिख रहे हो, उन्हें सादा और सूक्ष्म उत्तर मिलता था—एक उपन्यास का अनुवाद कर रहा हूं। इसी प्रकार कई मास तक जेल मे यह अनुवाद होता रहा और आखिरकार जेल-अधिकारियों की जाँच-पड़ताल और मुहरें लगकर यह बाहर निकला। जेल से छूटने के बाद ही कुछ दिन बाद में फिर गिरफ्तार हो गया और जो पुलिस के लोग मेरे घर की तलाशी लेने आये थे, उन्होंने इसको उठाकर एक कोने मे फेंक दिया और मेरे दूसरी बार छूटने तक यह अनुवाद उस कोने मे ही एक रद्दी के ढेर में दबा पड़ा रहा, जिसे मैंने छूटकर वहाँ से निकाला। यह बात सच हुई है कि 'जाको राखै साइयाँ मार न सकिहैं कोय।' इस अनुवाद को हिन्दी पाठकों के पास तक पहुँचना हो था, अतएव, उसे रोक कौन सकता था।

एक अच्छा अनुवाद करना एक मूल ग्रन्थ लिखने से कहीं कठिन काम होता है, क्योंकि मूल ग्रन्थ मे लेखक को अपने विचार अपनी भाषा मे व्यक्त करने होते हैं जब कि अनुवादक को दूसरे के विचार अपनी भाषा व्यक्त करने होते हैं जो कहीं अधिक कठिन काम है। मुझे बताते प्रसन्नता होती है कि प्रातःस्मरणीय पूज्य गणेशशङ्कर विद्यार्थी और श्री प्रेमचन्दजी के भी अनुवाद के विषय मे ऐसे ही विचार थे। परन्तु फिर भी न जाने क्यों हिन्दी-संसार में अनुवादो को अभी तक एक नीचा-सा काम ही क्यो समझा जाता है! कुछ ऐसे सस्ते विद्वान् और समालोचक भी निकल पड़े है जो मौलिकता का इस प्रकार प्रचार करते हैं, मानों मौलिकता का अर्थ यह है कि लेखक कोई ऐसी बात कहे जो पहले शायद न तो कभी कही गई हो और न भविष्य में कभी आगे कही जा सके। ऐसी मौलिकता न तो संसार मे कभी हुई और न कभी हो सकेगी। मौलिकता का अर्थ तो सिर्फ इतना ही है कि कहने का ढङ्ग अपना हो। बस। एक ही विषय पर चार कलाकार चित्र बनाते है या कविता करते है और चारों ही मौलिक होते है। अस्तु, इस दृष्टि से अनुवाद भी उतना ही मौलिक हो सकता है, जितना कि मूल-ग्रन्थ। करने-वालों चाहिए! अनुवाद को केवल अनुवाद होने के कारण नीची कृति समझना या अनुवादकों को मूल लेखक से नीची दृष्टि से देखना भूल है। मेरा यह अर्थ नही है कि

पाठक मेरे इस अनुवाद को किसी ऊँची दृष्टि से देखे। यह तो एक साधारण अनुवाद है, और जैसा और जो कुछ है, पाठकों के सामने है। मेरा मतलब इतना ही है कि जब तक अनुवादों और अनुवादकों की तरफ हमारा दृष्टिकोण न बदलेगा, तब तक ऊँचे दर्जे के लेखकों को अनुवाद करने का प्रोत्साहन न मिलेगा और हमारे साहित्य का यह जरूरी अङ्ग नीचे दर्जे के लोगों के ही हाथ में रहेगा, जिससे हमें हानि हो रही है और होती रहेगी, क्योंकि ऐसे पागल कम ही होंगे, जिनमें मूल ग्रन्थ लिखने की सामर्थ्य हो, फिर भी अनुवाद करें; जिनसे न तो उन्हें कोई आर्थिक लाभ ही हो और न वे मूल लेखकों के सम्मानित वर्ग में ही समझे जा सकें। फारस देश के कवि उमर खैय्याम की बराबरी के कवि अपनी भाषा में रखनेवाले अँग्रेज खैय्याम के अनुवादक फिट्जजेराल्ड को किसी मूल लेखक से कम मान नहीं देते, जिसका फल यह है कि संसार का कोई ऐसा महाग्रन्थ नहीं होगा, जिसका अँग्रेजी में अनुवाद न प्रकाशित हो गया हो।

हिन्दी-संसार में लेखकों, मूल लेखकों अथवा अनुवादकों, किसी को कार्य में लगे रहने के लिए काफी प्रोत्साहन नहीं मिलता, क्योंकि हिन्दी के उन लेखकों को जो केवल लिखने का ही धन्धा करते हैं, अपनी रोटियों के भी लाले पड़े रहते हैं! कुछ उन लेखकों को छोड़कर, जिनकी पुस्तकें सरकारी कोर्सों में ले ली गई हैं, बाकी सारे हिन्दी लेखक आपको गरीब ही नजर आयेंगे। ऐसी दशा में उन थोड़े-से दीवानों को छोड़कर जिन पर बिना लिखे नहीं बनता, उसका परिणाम चाहे जो भी हो—ऐसे दीवाने प्रेमचन्दजी इत्यादि थोड़े से ही इने-गिने हो सकते हैं—यदि विभिन्न विषयों पर नये-नये अच्छे ग्रन्थ लिखनेवाले लेखक हिन्दी में कम निकलें तो आश्चर्य ही क्या है! हाँ, कुछ हिन्दी प्रकाशक अवश्य अमीर बन गये हैं—परन्तु वह अधिकतर बुरे उपायों से वरना अधिकतर प्रकाशकों का भी हाल बुरा ही है। कुछ प्रकाशक सरकारी विभागों में रिश्वतें देकर अपनी बड़ी-बड़ी कीमत की पुस्तकें मंजूर कराकर, और कुछ प्रकाशक लेखकों को रायल्टी न देकर और उनकी कोर्सों में मंजूर किताबों को चोरी से छाप-छापकर अमीर बन गये हैं! बेचारे क्या करें! शायद अमीर बनने का जरिया ही चोरी और बेईमानी है, क्योंकि ईमानदारी से अमीर बनते विरले ही देखे गये हैं। परन्तु इस प्रकार की साहित्यिक क्षेत्र में चोरी, बेईमानी और फटेहाली से हमारी साहित्यिक उन्नति में बड़ी बाधा पड़ रही है, जिसका शीघ्र-से-शीघ्र दूर करना हमारा धर्म है। हिन्दी-भाषा-भाषियों की हमारे देश में इतनी संख्या होते हुए भी उनमें पढ़ने की आदत रखनेवालों की बड़ी कमी लगती है और जो पढ़ते भी हैं, वे शायद कितायें खरीदकर नहीं पढ़ते, क्योंकि अच्छी-से-अच्छी पुस्तक हिन्दी में प्रथम आवृत्ति में पाँच-छः हजार निकल जाय तो पाठक और लेखक दोनों अपने देवताओं को प्रसाद चढ़ाने लगते हैं। यही हाल समाचारपत्रों का भी है। जिस हिन्दी दैनिक या साप्ताहिक का संस्करण पाँच-छः हजार हो जाता है, वह अपना अहोभाग्य समझने लगता है। ऐसी हालत दूसरे देशों में तो नहीं ही है। भारत के दूसरे प्रान्तों में भी नहीं। अस्तु, इस बात की भी बड़ी आवश्यकता है कि हिन्दी के लेखक, प्रकाशक, सम्पादक और सरकारी

शिक्षा-प्रसार-विभाग के अधिकारी सब मिलकर हिन्दी में पाठकों की संख्या बढ़ाने की समस्या पर विचार करें और कोई उचित मार्ग निकालें। मेरा विचार है कि सब मिलकर अच्छी पुस्तकों का प्रचार करने का प्रयत्न करें तो इस कार्य में बड़ी सफलता मिल सकती है। यहाँ इस विषय की चर्चा करने का कारण यह है कि मुझे इस उपन्यास के अनुवाद में जो आर्थिक हानि उठानी पड़ी है, वह मुझे इतनी खली है कि फिर ऐसा कोई काम हाथ में लेने के लिए मुझे कोई उत्साह नहीं होता है। अस्तु, मैं सोचता हूँ कि ऐसी ही निराशा बहुत-से और लेखकों को भी साहित्यिक सेवा से रोकती होगी, जिसे दूर करना हमारा सबका फर्ज है।

मेरे एक साहित्यिक मित्र की राय थी कि यदि मैं इस उपन्यास को सर्वसाधारण हिन्दी भाषा-भाषियों तक पहुँचाना चाहता हूँ, तो मैं इस उपन्यास के तमाम रूसी नामों को, जो विचित्र और उच्चारण करने में भी कठिन लगते हैं, भारतीय नामों में बदल दूँ। परन्तु मुझे खेद है कि मै उनकी अमूल्य राय से, बहुत कुछ इच्छा रहने पर भी, सहमत न हो सका, क्योंकि रूसी नाम तो आसानी से बदलकर भारतीय किये जा सकते थे, परन्तु इस सारे उपन्यास के पीछे जो रूसी जमीन है, उसको भारतीय बनाने का प्रयत्न किया जाता तो उपन्यास के अनुवाद में इतनी काट-छाँट और तब्दीलियाँ करनी पड़तीं कि वह मैक्सिम गोर्की की कृति न रहकर शायद मेरी भोंड़ी कृति हो जाती। रूसी नाम पवेल को तो बदलकर सुरेश किया जा सकता था। परन्तु जब पवेल अपनी मा से चिपटकर उसे चूमता है, तब वह भारतीय सुरेश के वेश मे हमारे शिष्टाचार के अनुसार बड़ा बदतमीज मालूम होता और उसकी मा भी पगली लगती अथवा यूरोपियन शिष्टाचार के अनुसार मा-बेटे के स्नेह का एक स्वाभाविक घरेलू दृश्य भारतीय शिष्टाचार मे पले हुए पाठकों को इन्द्र-सभा का एक अस्वाभाविक दृश्य-सा लगता। एक यूरोपीय देश की मा को उसके जवान लड़के पवेल का चूमना देखकर वे हिन्दी पाठक जो यूरोपीय शिष्टाचार के सम्पर्क में नहीं आये हैं, अधिक से अधिक यही तो सोचेंगे कि यूरोप में ऐसा होता होगा, जिससे उनके ज्ञान की वृद्धि होगी। इसी प्रकार नटाशा का नाम तो राधारानी रख देना बड़ा आसान था। परन्तु जब वह मुँह में चुरुट दबाये फक-फक धुआँ उड़ाती हुई आती तो राधारानी के वेश मे वह भारतीय पाठकों को शायद असह्य हा जाती और गोर्की जिस पात्र के प्रति हमारे हृदय में दया और सहानुभूति का भाव पैदा करना चाहता है; मैं अनुवाद से उसी पात्र के प्रति पाठकों के हृदय में ग्लानि उत्पन्न करा देता। अस्तु, केवल रूसी नामों को भारतीय नाम कर देने से बड़ा अनर्थ हो जाता। नामों को बदलने के साथ-साथ मैं यूरोपीय जमीन को भारतीय बनाने का प्रयत्न करता तो मुझे बहुत-से गोर्की के सुन्दर दृश्य काट डालने पड़ते, जिससे इस उपन्यास की शक्ल ही बदल जाती। मजदूरों के घरों से मेज, कुर्सियाँ, मुझे निकालकर शायद चटाइयाँ बिछानी पड़तीं, ह्विस्की की जगह ताड़ी रखनी होती, चाय पीने के दृश्यों को शरबत या पानी पीने के दृश्य बनाना होता, बर्फ गिरने के दृश्य और उसकी खुर-खुर आवाज के

स्थान पर कुहरा और धुआँ दिखाना होता, भेड़ियों के गुर्राने के स्थान में सियारों का चिल्लाना दिखाना होता। इतनी तब्दीलियाँ करते-करते इस उपन्यास की शक्ल ही बदल जाती, और भारतीय नामों और जमीन के साथ यह उपन्यास एक निरा कपोल-कल्पित किस्सा-सा लगता, जब कि रूसी जमीन पर यह उपन्यास एक ऐतिहासिक घटना की-सी वास्तविकता रखता है, जिसकी अपील कहीं अधिक है। अस्तु, मैंने रूसी नाम, जमीन और सब कुछ जैसा का तैसा ही हिन्दी पाठकों के सामने रखा है, जिससे वे न सिर्फ संसार के एक महाकलाकार की कृति को जहाँ तक हो सके, असली रूप मे देखें, बल्कि वे रूसी सभ्यता, शिष्टाचार और आचार-विचार से भी परिचित हों और यह जानें कि जीवन मे रहन-सहन, भाषा और शिष्टाचार में फर्क होते हुए भी दुनिया-भर में कामगारों और किसानों की समस्या एक ही और उसके सुलझाने का उपाय भी एक ही है। सभी पूँजीशाही के चंगुल मे फँसे हुए देशों में दुनिया की सारी सम्पत्ति अपने बाहुबल से उत्पन्न करनेवाले किसान और मजदूर दुखी और जानवरों का-सा जीवन बिताते हैं, और कुछ मुफ्तखोर सेठ, साहूकार, जमींदार और बाबू लोग उनके सिरों पर चढ़े हुए चैन की वंशी बजाते हैं। इस अनुवाद को पढ़कर यह सत्य आपके हृदय में घर कर जाय तो मैं समझूँगा कि मेरा यह तुच्छ प्रयत्न सफल हुआ, और मैं महात्मा गोर्की की इस अपूर्व कृति का ईमानदारी से अनुवाद कर सका।

चन्द्रभाल जौहरी।

———

पहिला परिच्छेद

रोज सुबह कारखाने का भोंपा बजता था। उसकी तेज, गरजती और काँपती हुई आवाज मजदूरों की बस्तियों के काले-काले आकाश को चीरती हुई जैसे ही ऊपर को उठती थी वैसे ही भाप और कोयले की सत्ता का हुक्म बजाने के लिए मजदूर अपने छोटे-छोटे घरों से निकलकर गलियों में दौड़ते थे। पूरे वक्त तक न सो पाने के कारण उनके पुट्ठे कठिन और अलसाये हुए होते थे। परन्तु तो भी बेचारे डरे हुए कबूतरों की भाँति आगे को ही भागते थे। प्रातःकाल के शीतल मन्द प्रकाश में, तंग और कच्ची गलियों में होते हुए वे सब ईंट-पत्थरों के उस पिंजड़े की तरफ दौड़ते थे, जो उनके ठण्डे स्वागत के लिए खड़ा बाट देखता था। कच्ची गलियों की कीचड़ उनके पैरों से अठखेलियाँ करती हुई इन दौड़नेवालों का मजाक उड़ाती थी। अर्ध-निद्रित अलसाई हुई आवाजें चारों ओर से कानों में आती थीं, क्रुद्ध, जली-भुनी, द्वेष की बातें और गालियाँ आकाश में गूँजती थीं और मशीनों की खड़खड़ाहट और भाप की हुँकार उनको चिल्ला-चिल्लाकर उस गाँव की तरफ बुलाती थीं, जहाँ कारखाने की चिमनियाँ मौत की मीनारों की तरह आकाश में मुँह बाये खड़ी थीं।

शाम को सूर्यास्त हो जाने पर जब सूर्य की लाली मकानों की खिड़कियों पर चमकने लगती थी तब कारखाना जली हुई राख की तरह इन मजदूरों को अपने अन्दर से निकालकर फिर फेंकता था। और वे अपने काले-काले धूम्र-रंजित चेहरों को पोंछते हुए, और अपने कपड़ों में सने मशीन के तेल की दुर्गन्ध रास्ते में फैलाते हुए भूख से दाँत निपोरे फिर उन्हीं गलियों में होकर अपने घरों को लौटते थे। परन्तु इस समय उनकी आवाज में कुछ जीवन की झलक और आनन्द की झंकार होती थी; क्योंकि उनकी सख्त मशक्कत की गुलामी का एक दिन पूरा हो चुका होता था, और घर पर पहुँचकर उन्हें भोजन और आराम मिलने की आशा होती थी। दिन-भर तो उनको कारखाना खा लेता था। मशीनों को चलाने के लिए जितनी ताकत की जरूरत होती थी, उनके रग-पुट्ठों से दिन-भर में चूस लेती थी। जीवन के वृक्ष से पत्ते की तरह झड़कर उनका दिन उड़ जाता था और अंधी कब्र की तरफ उनका एक कदम आगे चुपचाप बढ़ जाता था। फिर भी शाम को घर पहुँचकर आराम से लेटने की लालसा और भोजन की सोंधी-सोंधी सुगन्ध की आशा से उनकी आत्मा में कुछ शांति होती थी।

छुट्टी के दिन ये मजदूर दिन के दस बजे तक सोते रहते थे। उठने पर अधेड़ उम्र के विवाहित पुरुष अपने अच्छे से अच्छे कपड़े पहिनते थे और नौजवानों को उनकी धर्म के प्रति अश्रद्धा के लिए झिड़कते हुए गाँव के गिरजे में चले जाते थे। लौटने पर बड़े

चाव से लपसी सड़ोपकर वे फिर तानकर सो जाते थे और औंधे पड़े शाम तक सोते रहते थे। लगातार वर्षों तक अटूट परिश्रम करने के कारण उनकी भूख मर जाती थी, जिसे बढ़ाने के लिए रोज बहुत रात तक गाँव में चारों तरफ लोग बैठकर ताड़ी और शराब पिया करते थे। ताड़ी और शराब के तेज जलन पैदा करनेवाले कोड़े लगा-लगाकर वे बेचारे अपने कमजोर मेदों को तेज करने का प्रयत्न करते थे।

सड़कों के किनारे निठल्ले बैठकर शाम को मजदूर दिल बहलाते थे। जिन मजदूरों के पास लम्बे बूट-जूते होते थे, वे उन्हें चढ़ाकर पानी बरसे या न बरसे, घूमते थे और जिनके पास छाते होते थे, वे जरूरत न होने पर भी उनको लगाकर फिरते थे। हर आदमी को दुनिया में बूट, जूता या छाता मयस्सर नहीं होता। परन्तु हर आदमी को अपने पड़ोसी से अधिक दिखावा करने का शौक होता है। आपस मे मिलने पर ये लोग सिर्फ अपने कारखाने और मशीनों की बातें करते थे और अपने-अपने मिस्त्रियों को जली-भुनी सुनाते और कोसते थे। अपने काम के बारे मे या उससे लगती हुई बातों के सिवाय न तो वे कभी कोई और बातें करते थे और न कभी कुछ और सोचते ही थे। उनकी थकी-माँदी बातों से शायद ही कभी किसी अन्य एक-आध निर्जीव-सी नई बात का जिक्र होता था। रात को घर लौटने पर वे अपनी औरतों से झगड़ते और प्रायः उन्हें खूब पीटते थे। जी भरकर उन पर घूसों और लातों की बौछार करते थे। नौजवान अविवाहित मजदूर आमतौर पर ताड़ी की दूकानों पर या यार-दोस्तों के घरों पर सायंकाल बिताते थे—जहाँ चिकाड़ा बजा-बजाकर वे गन्दे, सौंदर्यहीन गीत गाते और नाचते, अश्लील बातें बकते और नशा करते थे। दिन-भर के परिश्रम से चूर लोग शाम को ताड़ी के कुल्हड़ पर कुल्हड़ जल्दी-जल्दी ढकोस लेते थे। उनके हृदयों में एक प्रकार का अस्वस्थ और अस्पष्ट-सा क्रोध धधकता रहता था, और यह क्रोध बाहर निकलने के लिए रास्ता ढूँढ़ता था। अस्तु, जरा-सा बहाना मिलते ही वे एक दूसरे पर खूँख्वार जानवरों की तरह टूट पड़ते थे, जिससे अक्सर गाँव में मार-पीट हो जाती थी। कभी-कभी तो कत्ल तक हो जाते थे। यह क्रोध भी उनके रग-पुट्ठों की कभी न मिटनेवाली थकान की तरह दिन-दिन बढ़ता जाता, और इस आन्तरिक रोग को मा-बाप से लड़के भी जन्म से ही वसीयत मे ले लेते थे। भूत की तरह मरते दम तक यह उनका पीछा नहीं छोड़ता था। उनसे जीवन में यह पापी तरह-तरह के अपराध कराता था—हाय, बेमतलब की पाशविकता और क्रूरता का गाँववालों का वह भयंकर रोग! छुट्टी के दिन नौजवान बहुत रात बीत जाने पर, मैले, कीचड़ से लथपथ, कपड़े फाड़े, मुँह पर घाव लगाये अपने साथियों को पीटने अथवा उन्हें अपमानित करने पर घृणित शेखी बघारते हुए, या स्वयं अपमानित होने पर, क्रोध से बड़बड़ाते और आँखों से आँसू टपकाते, नशे में चूर, दयनीय, घृणोत्पादक दशा में घर लौटते थे। कभी-कभी बेहोश पड़े हुए छोकरों को मा-बाप आकर ताड़ी के पीठों अथवा सड़कों पर से उठाकर लाते थे, और क्रोध में भरकर उन्हें कोसते और पीटते थे। मगर फिर दया खाकर उन्हें बिस्तर पर लिटा देते थे, जिससे

कि दूसरे दिन अँधेरे ही कारखाने के भोंपे की क्रोधी हुङ्कार होते ही वे उनको उठाकर फिर काम पर भेज सकें।

बड़ों को नौजवानों का नशा करना और लड़ना-झगड़ना स्वाभाविक लगता था। परन्तु फिर भी वे उन्हें इन्हीं बातों के लिए दिल भरकर पीटते थे; क्योंकि जब वे छोटे थे तब वे भी तो इसी प्रकार नशा करने और आपस में लड़ने-झगड़ने पर अपने मा-बाप के हाथों पिटा करते थे। इस गाँव में सदा ही से जीवन ऐसा चला आता था। गुपचुप मन्द गति से गन्दे नाले के प्रवाह की तरह यहाँ का जीवन बह रहा था। पुरानी रस्मों, रिवाजों और आदतों के अनुसार इस गाँव की जिन्दगी का पहिया घूम रहा था। किसी को इस जीवन-प्रवाह के बदलने की न तो इच्छा ही होती थी और न किसी के पास इस काम के लिए समय ही था। कभी-कभी कोई नया आदमी भी इस गाँव में रहने के लिए आ जाता था। पहले तो वह नया होने के कारण गाँव के लोगों का ध्यान आकर्षित करता था। वह अपने इधर-उधर के जहाँ-जहाँ उसने मजदूरी की होती थी, किस्सों से लोगों में कुछ रस उत्पन्न करता था। परन्तु बाद मे उसकी भी नवीनता मिट जाती थी। गाँववालों से हिल-मिलकर वह भी ग्राम के जीवन का अंग बन जाता था और उन्हीं की तरह गाँव में चुपचाप रहने लगता था। उसकी बातों से जाहिर होता था कि मजदूरों की जिन्दगी सभी जगह एक-सी थी। अस्तु, उसकी चर्चा करने से क्या लाभ?

कभी-कभी इक्के-दुक्के कुछ विचित्र-से लोग गाँव में आते थे और गाँववालों को बड़ी अजीब और अनसुनी बातें सुनाते थे। ऐसी बातें जैसी उन्होंने पहिले कभी कानों नहीं सुनी थीं। गाँववालें इन विचित्र लोगों से अधिक बातचीत नहीं करते थे। चुपचाप अविश्वास से उनकी बातें सुनते थे। उनकी बाते सुनकर गाँववालों के मन में तरह-तरह के भाव उठते थे—किसी के मन में एक अन्धा, धुधला-सा, क्रोध उठता था; किसी के मन में डर पैदा होता था; किसी के हृदय में किसी एक ऐसी वस्तु की अभिलाषा की छाया-सी पड़ती थी, जो उनकी समझ में नहीं आती थी। परन्तु अपने जीवन में उठते हुए इन नये विघ्नों को भुला देने के लिए वे सब फौरन ताड़ी पीने लगते थे।

इन बाहर से आकर बातें सुननेवालों में कोई ऐसी बात होती थी, जो गाँववालों में नहीं होती थी। अस्तु, गाँववाले उनसे दूर रहते थे, और उनसे एक प्रकार का कीना-सा रखते थे। न जाने क्यों गाँववाले उनको कठोर दृष्टि से देखते थे। शायद उनको यह भय लगता था कि यह बाहर से आनेवाले कहीं उनके जीवन में कोई ऐसी चीज न पैदा कर दें, जिससे उनके करुण-जीवन के सहज प्रवाह में कोई नये विघ्न खड़े हो जायँ। उनका जीवन दुखी था, कठिन था; परन्तु चला जाता था। दुःख सहते-सहते वे लोग दुःख सहने के आदी हो गये थे। उनको विश्वास हो गया था कि जीवन दुःख सहने के लिए ही बना है। उन्नति में निराशा इन लोगों को हर किसी नई उथल-पुथल, विघ्न या परिवर्तन से अपना जीवन अधिक कष्टमय बन जाने का ही भय रहता था। अस्तु,

गाँव के लोग इन लोगों से, जो आकर उन्हें नई-नई बातें सुनाया करते थे, सदा दूर ही दूर रहा करते थे। कुछ दिन बाद ये विचित्र लोग लुप्त हो जाते थे, या तो वे कहीं दूसरी जगह चले जाते थे या जो कारखाने में काम करने के लिए रह जाते थे; और गाँव के निर्जीव जीवन में अपना जीवन नहीं मिला पाते थे, वे अलग रहने लगते थे।

इस प्रकार का जीवन पचास वर्ष तक बिताकर इस गाँव का एक मजदूर मर गया।

इसी प्रकार का जीवन माइकेल व्लेसोव का था। वह एक उदास, क्रुद्ध आकृति का मनुष्य था, जिसकी छोटी-छोटी आँखें भारी-भारी भौंहों के नीचे से हरएक को अविश्वास की दृष्टि से देखती थीं; और जिसके मुख पर अविश्वास की अप्रिय मुस्कान हमेशा बनी रहती थी। व्लेसोव कारखाने में सबसे अच्छा ताला बनानेवाला कारीगर और गाँव में सबसे बलवान् मनुष्य माना जाता था। परन्तु कारखाने के मिस्त्री और छोटे मैनेजर के प्रति गुस्ताख होने के कारण उसे अधिक मजदूरी नहीं मिलती थी। छुट्टी के दिन वह किसी न किसी को जरूर ठोंक बैठता था। अस्तु, सभी लोग उससे घृणा करते थे और डरते थे।

कई बार दूसरे मजदूरों ने उसे पीटने का प्रयत्न किया। मगर उन्हें कभी सफलता नहीं मिली। जैसे ही व्लेसोव को पता लगता कि उस पर हमला होनेवाला है, वैसे ही वह पत्थर, लकड़ी या लोहे का टुकड़ा, जो कुछ उसके हाथ पड़ता, लेकर आराम से पैर फैलाकर, सड़क के किनारे किसी जगह पर शत्रुओं के इन्तजार मे खड़ा हो जाता था। उसके मुँह पर आँखों से लेकर गर्दन तक दाढ़ी थी और हाथों पर रीछ की तरह काले-काले बाल थे, जिन्हें देखकर लोग डरते थे। खास तौर पर उसकी आँखों से लोग बहुत डरते थे। छोटी-छोटी, तीक्ष्ण, सुई के नकुओं की तरह वे चुभनेवाली थीं, जो कोई एक बार इन आँखों से आँख मिला लेता, उसे फौरन मालूम हो जाता था कि उसके सामने एक ऐसा पशु है, जिसकी पाशविक शक्ति, भय किस चिड़िया का नाम है, नहीं जानती; और हमेशा क्रूरता से हमला करने के लिए तैयार रहती है। 'जाओ सुअरो! भाग जाओ!' जैसे ही वह कड़ककर कहता और उसके मैले पीले-पीले दाँत दाढ़ी में चमकते, वैसे ही आक्रमण के लिए आनेवाले लोग गालियाँ बकते हुए दुम दबाकर भाग उठते।

'सूअर कहीं के!' वह उन पर आँखें मिचकाता हुआ कहता, और उसके मुख पर नहन्नी की धार-सी एक तीक्ष्ण मुस्कान चमकने लगती। फिर उन लोगों को चुनौती देता हुआ वह अपना सिर ऊँचा करता, और मुँह में बीड़ी दबाकर, उनके पीछे धीरे-धीरे जाता और बार-बार ललकारकर पूछता—क्यों! किसके सिर पर मौत सवार हुई है! कौन जिन्दगी से हाथ धोना चाहता है! कोई उसे उत्तर न देता, क्योंकि कोई भी जिन्दगी से हाथ धोना नहीं चाहता था।

व्लेसोव बहुत कम बोलता था। सूअर उसका प्रिय शब्द था। इसी प्रिय शब्द से वह कारखाने के अधिकारियों और पुलिस को याद करता था, और इसी शब्द से वह अपनी स्त्री को सम्बोधित करता था। 'देख सूअर! तुझे नहीं दीखता! मेरे कपड़े कितने मैले हो गये हैं!'

जब उसका छोकरा पवेल चौदह वर्ष का था, तब एक दिन व्लेसोव के दिल ने उसके बाल पकड़कर खींचना चाहा। परन्तु पवेल ने झपटकर एक हथौड़ा उठा लिया और कड़ककर बाप से बोला—खबरदार, हाथ मत लगाना।

'क्या!' बाप ने उसके लम्बे-पतले बदन के ऊपर जिन्न की तरह झुकते हुए पूछा।

'खबरदार!' पवेल बोला—हाथ मत लगाना। और वह अपनी काली-काली आँखें फाड़कर हथौड़ा हवा में घुमाने लगा।

बाप ने उसकी ओर घूरकर देखा और पीठ के पीछे हाथ बाँधते हुए मुस्कराकर बोला—अ...च्...छा...

फिर व्लेसोव ने एक दीर्घ निःश्वास लिया और कहा—अरे सूअर!

कुछ देर बाद वह जाकर अपनी स्त्री से कहने लगा—बस, आज से मुझसे रुपया मत माँगना। अब पाशा तुझे कमाकर खिलायेगा।

'और तुम अपनी सारी कमाई नशे में उड़ाओगे!'—स्त्री ने पूछा।

'चुप सुअर, तुझको क्या!' इसके बाद तीन वर्ष तक यानी मरते दम तक फिर उसने कभी अपने लड़के का ध्यान तक नहीं किया और न उससे कभी एक शब्द कहा।

व्लेसोव के पास, उसी की तरह भुक्कड़, बालोंवाला एक कुत्ता भी था। वह उसके साथ रोज सुबह कारखाने के द्वार तक जाता था, और शाम को कारखाने के दरवाजे पर आकर उसका इन्तजार करता था। छुट्टियों के दिन व्लेसोव शराब की भट्टियों का गश्त लगाने निकलता था। चुपचाप धीरे-धीरे चलता हुआ वह लोगों के चेहरों को इस प्रकार घूरता हुआ जाता था, मानों किसी को ढूँढ़ता हो। उसका कुत्ता भी दिन-भर उसके साथ-साथ घूमता था। शाम को घर लौटकर जब व्लेसोव ब्यालू करने बैठता था, तब वह अपने कुत्ते को भी थाली में से खाना फेंक-फेंककर देता जाता था। कुत्ते को न तो वह कभी मारता था, न कभी उसे दुतकारता था और न कभी प्यार से उसकी पीठ ही थपथपाता था। ब्यालू कर चुकने के बाद, तुरन्त ही उसकी स्त्री उसके सामने से थाली इत्यादि नहीं उठा लेती, तो वह मेज पर से सारी चीजें जमीन पर गिरा देता था, और ह्विस्की की एक बोतल लाकर सामने रख लेता था। फिर दीवार से पीठ टेककर और आँखें मींचकर, मुँह फाड़कर, कर्कश स्वर में, वह राग अलापना शुरू करता था—जिससे आर्तनाद की-सी वेदना झरती थी। उसकी फटी हुई दुखित आवाज उसकी मूँछों में लड़खड़ाती थी और उनमे चिपटे हुए रोटी के टुकड़ों को नीचे गिरा देती थी। अपनी मोटी-मोटी उँगलियों से मूँछों पर ताव देता हुआ वह इसी प्रकार रोज रात को, बहुत देर तक, अर्थ-हीन राग तान-तानकर अलापा करता था। उसके इस विचित्र संगीत का स्वर जाड़े की रात मे भेड़ियों की गुर्राहट की तरह लगता था। जब तक बोतल में ह्विस्की रहती थी, तब तक वह गाता रहता था। ह्विस्की खत्म हो जाने पर वह तिपाई पर ही एक तरफ लोट जाता था या मेज़ पर सिर रखकर ऊँघने लगता था, और इसी दशा में, दूसरे दिन सुबह कारखाने का भोंपा बजने तक सोता रहता था। उसका कुत्ता भी उसी

के पास एक तरफ पड़कर सो जाता था। मरते समय इस बेचारे की बुरी दशा हुई। उसका सारा शरीर काला पड़ गया। पाँच दिन तक आँखें मींच-मींचकर और दाँत पीस-पीसकर बिस्तर पर वह तड़पा। बीच-बीच में कराहकर अपनी स्त्री से कहता था—अरे, मुझे संखिया क्यों नहीं खिला देती? मुझे जहर क्यों नहीं ला देती!

स्त्री ने एक वैद्य बुलाया। वैद्यराज ने गर्म पुलटिस बाँधने का हुक्म दिया और कहा—'शिगाफ की जरूरत है। मरीज को फौरन अस्पताल ले जाना चाहिए।'

परन्तु ब्लेसोव ने चिल्लाकर कहा—'भाड़ में जा सूअर! मैं यहीं अकेले मरना चाहता हूँ।

वैद्यराज के जाने के बाद उसकी स्त्री आँखों में आँसू भरके उससे शिगाफ लगवाने के लिए प्रार्थना करने लगी तो उसने मुक्का तानकर उसको धमकाते हुए कहा—ऐसी हिम्मत कभी न करना! मैं बच गया तो तेरी खैर नहीं है। दूसरे दिन सबेरे जब कारखाने का भोंपा मजदूरों को बुलाने के लिए बजा तो ब्लेसोव के प्राण निकल चुके थे। उसकी लाश मुँह बाये पड़ी थी और उसकी भौंहें ऐसी चढ़ी हुई थीं, मानो वह किसी पर क्रोध दिखा रहा हो। ब्लेसोव के जनाजे के साथ उसकी स्त्री, उसका लड़का, उसका चिर-संगी कुत्ता, बूढ़ा शराबी और चोर डेनीयल, जेल से हाल ही में छूटनेवाला एक जाली सिक्का बनानेवाला और गाँव के कुछ भिखारी थे। उन्होंने जाकर उसको दफन कर दिया। उसकी स्त्री कुछ देर तक कब्र के पास खड़ी धीरे-धीरे रोती रही, परन्तु पवेल न रोया। रास्ते में जाते हुए जनाजे को देखकर गाँववाले एक दूसरे से कहते थे—देखा, उसकी स्त्री उसके मरने पर खुश है! उसकी गलती को ठीक करते हुए दूसरे ने कहा—वह मरा नहीं; पशु की तरह गल गया।

लाश को दफनाकर लोग तो चले गये; परन्तु कुत्ता वहीं ठहरा रहा, वह ताजी जमीन पर बैठा-बैठा चुपचाप बहुत देर तक कब्र सूँघता रहा।

दूसरा परिच्छेद

पिता की मृत्यु के करीब दो हफ्ते बाद एक दिन रविवार को पवेल नशे में चूर होकर घर लौटा। लड़खड़ाता, रेंगता हुआ, अपने कमरे के सामनेवाले कोने में पहुँचा और बाप की तरह मेज पर हाथ पटककर चिल्लाया—खाना लाओ!

मा यह नया रंग देखकर चुपचाप जाकर उसके बाजू में बैठ गई और अपना हाथ पुत्र की गर्दन में डालकर उसका सिर उसने अपने सीने पर रख लिया। पवेल ने अपना हाथ मा के कन्धे पर रखकर मा को दूर हटा दिया और चिल्लाकर कहा—मा, जल्दी करो!

'अरे बेवकूफ!' मा ने दुःखभरे प्रेम से उसका हाथ झटकते हुए कहा।

'मैं हुक्का पीऊँगा। लाओ मेरे बाप का हुक्का कहाँ है?' पवेल ने लड़खड़ाती हुई जबान से पूछा।

जीवन में पहली ही बार आज उसने नशा किया था। नशे के कारण उसका शरीर बेकार हो रहा था, परन्तु उसको कुछ-कुछ होश था और बार-बार उसके दिमाग मे यही प्रश्न उठ रहा था—नशा! नशा! मा के दुलार से वह दुखी हुआ। मा की आँखों में झलकती हुई वेदना ने उसके हृदय पर चोट की। उसका दिल हुआ कि रोये और इस इच्छा को दबाने के प्रयत्न में जितना नशा उसको था, उससे कहीं अधिक दिखाने का वह प्रयत्न करने लगा।

मा उसके उलझे हुए बालों को सुलझाती हुई मन्द स्वर में बोली—तूने नशा क्यों किया? तुझे ऐसा नही करना चाहिए था।

पवेल की तबियत मिचलाने लगी। एक-दो उल्टी हो जाने के बाद मा ने उसको बिस्तर पर लिटा दिया और उसके पीले मस्तक पर एक अँगोछा भिगोकर रख दिया। जब पवेल को होश आया तो उसको अपने नीचे और चारों तरफ हर चीज घूमती हुई-सी लगी। उसके पलक भारी थे और मुँह मे बहुत बुरा खट्टा-खट्टा स्वाद था। उसने कनखियों से मा के विशाल चेहरे की ओर देखा और विक्षिप्त-सा सोचने लगा—शायद मैं अभी छोटा हूँ! दूसरे लोग पीते हैं, उन्हें तो कुछ नहीं होता! मेरी तबियत इतनी बिगड़ गई!

दूर से आती हुई मा की मधुर आवाज सुनाई दी—

'इसी प्रकार नशा करेगा तो तू मुझे क्या कमाई खिलायेगा?'

पवेल ने पूरी ताकत से आँखें मींचते हुए कहा—गाँव में सभी नशा करते हैं!

मा ने ठण्डी साँस ली। पवेल का कहना सच था। मा जानती थी कि पीठे के अतिरिक्त लोगों को बैठकर आमोद-प्रमोद करने के लिए न तो गाँव में कोई जगह ही थी

और न ताड़ी-शराब के अतिरिक्त गाँववालों के पास आमोद-प्रमोद की अन्य कोई सामग्री ही थी। फिर भी वह कहने लगी—मगर तू मत पीना बेटा! तेरे बाप ने बहुत पी, तेरे हिस्से की भी पी डाली! उसने मुझे काफी दुख दे लिया! तू तो मा पर रहम खा! बेटा, मेरा कहा मान!

मा के इन दुखी, परन्तु मधुर शब्दों को सुनकर पवेल की आँखों के आगे अपने बाप के जमाने की मा की जिन्दगी का दृश्य नाच उठा। उसकी मा की जिन्दगी-भर किसी ने परवाह नहीं की थी, उस बेचारी ने पल-पल पर लात-घूसों की प्रतीक्षा में ही अपना मूक-जीवन बिताया था। बाप से दूर रहने के विचार से पवेल घर से भागा-भागा फिरा करता था। अस्तु, मा की स्थिति का अभी तक उसे अच्छी तरह पता नहीं लगा था। अब ज्यों-ज्यों उसका नशा उतरने लगा, वह बड़े ध्यान से अपनी मा की तरफ देखने लगा।

मा लम्बी थी। परन्तु उसकी कमर झुकी हुई थी। वर्षों की कड़ी मेहनत और पति की मार ने उसकी कमर तोड़ दी थी। धीरे-धीरे एक तरफ को झुकी हुई वह चलती थी, मानों उसे सदा किसी चीज से टकराकर गिर पड़ने का भय रहता था। उसके विशाल चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ गई थीं और उसकी आँखों से गाँव की दूसरी स्त्रियों की तरह रंज और दर्द झलकता था। उसकी दाहिनी भौंह पर चोट का एक गहरा निशान था, जिससे उसकी भौंह जरा ऊपर को चढ़ गई थी। दाहिना कान भी उसका बाँये से कुछ ऊपर था, जिससे उसकी आकृति ऐसी बन गई थी, मानों वह भयभीत होकर कुछ सुन रही हो। उसके काले और घने बालों में जहाँ-तहाँ सफेद बालों के गुच्छे मार के निशानों की तरह चमकते थे। दीनता, दुःख और वफादारी की-सी वह उसके सामने खड़ी थी और उसकी आँखों से धीरे-धीरे आँसू झर रहे थे।

'ठहरो, रोओ मत!' लड़के ने नम्र स्वर में मा से कहा—मुझे प्यास लगी है।

माँ उठती हुई बोली—मैं अभी थोड़ा बर्फ का पानी लाती हूँ।

मगर जब तक वह पानी लेकर जल्दी-जल्दी लौटी, पवेल खुर्राटे लेने लगा था। अस्तु, वह उसके पास खड़ी होकर धीरे-धीरे अपनी साँस सँभालने का प्रयत्न करने लगी। उसके हाथ का प्याला काँपा और बर्फ प्याले के किनारे से टकराया। मा ने प्याले को रख दिया और दीवार पर टँगी हुई माता मरियम की तस्वीर के सामने घुटने टेककर वह शान्त भाव से प्रार्थना करने लगी। बाहर गाँव के कुत्सित शराबी-जीवन की आवाजें आ-आकर उसकी खिड़कियों के शीशों से टकरा रही थीं। शिशिर के अन्धकार में किसी तरफ से एक बाजे की आवाज आ रही थी; कहीं कोई उच्च स्वर से राग अलाप रहा था; कोई भद्दी गन्दी कसमें खा-खाकर बुरी-बुरी गालियाँ बक रहा था, और स्त्रियों की थकी, चिड़चिड़ी आवाजें हवा के झोंकों से लिपटती आ रही थीं।

व्लेसोव के छोटे-से घर में हमेशा ही निर्जीव प्रवाह से जीवन बहा था; परन्तु अब वहाँ पहले से अधिक शान्ति थी, क्लेश कम था और गाँव के अन्य घरों से वहाँ कुछ फर्क था।

गाँव के उस छोर पर नीची कीचड़दार एक ढाल पर यह घर बना था। मकान के एक तिहाई भाग में रसोईघर के बीच में केवल तख्तों की एक छत तक न पहुँचनेवाली दीवार थी। शेष दो तिहाई भाग में एक चौड़ा कमरा था, जिसमें दो खिड़कियाँ थीं। इस कमरे के एक कोने मे पवेल की चारपाई थी और सामने एक मेज और दो तिपाइयाँ थीं। कुछ कुर्सियाँ, एक मुँह-हाथ धोने का बर्तन और उसके ऊपर एक आईना, एक कपड़ों का ट्रङ्क, दीवाल पर एक घड़ी और दो मूर्तियाँ ; बस, इस घर में गृहस्थी का यही सारा साजो-सामान था।

पवेल गाँव के दूसरे लोगों की तरह ही रहने का प्रयत्न करता था। गाँव के नौजवानों को जो कुछ करना चाहिए था, वह भी करता था। उसने एक एकॉर्डियन बाजा खरीद लिया था, एक सख्त कालर की कमीज बनवा ली थी, एक शोख रंग की चमकीली नेकटाई ले ली थी और लम्बे-लम्बे बूट-जूते और एक बेंत भी खरीद लिया था। ठाट-बाट और ऊपरी हिसाब मे बिलकुल वह अपनी उम्र के दूसरे नौजवानों की तरह ही था। शाम को रोज मित्रों के साथ घूमने जाता था। पोलका* नाच भी उसने अच्छी तरह सीख लिया था और छुट्टियों के दिन शराब पीकर घर लौटता था, परन्तु हमेशा नशा करने के बाद उसे बहुत तकलीफ सहनी पड़ती थी। सुबह उसका सिर बहुत दुखता था, जिगर मे जलन होती थी और उसका चेहरा बिल्कुल कान्तिहीन और पीला हो जाता था।

एक बार उसकी मा ने पूछा—कहो, कल कैसा गुजरा?

उसने चिढ़े हुए दुखी स्वर मे कहा—क्या पूछती हो। कब्रस्तान की तरह निर्जीव। हर आदमी गाँव मे मशीन की तरह हो गया है। मैं तो मच्छी मारने जाया करूँगा अथवा शिकार खेलने के लिए एक बन्दूक खरीदूँगा!

पवेल कारखाने मे दिल लगाकर काम करता था। न तो वह कभी गैरहाजिर होता था और न कभी उस पर जुर्माना ही होता था। वह स्वभाव से गम्भीर था। उसकी आँखें भी मा की तरह नीली-नीली, बड़ी-बड़ी और असन्तुष्ट थीं।

न तो उसने बन्दूक खरीदी और न वह मच्छी मारने गया। धीरे-धीरे उसका जीवन गाँव के लोगों के जीवन से अलग होने लगा, जिस राह पर दूसरे जा रहे थे, उससे वह अलग हटने लगा। मित्रों के यहाँ भी शाम को आना-जाना उसने कम कर दिया था और छुट्टियों के दिन कहीं बाहर चला जाता था, परंतु हमेशा होश-हवास में बिना नशा किये घर लौटता था। मा उस पर कड़ी दृष्टि रखती थी ; मगर मा को कुछ पता नहीं चलता था कि वह कहाँ जाता है और क्या करता है। वह देखती थी कि लड़के का भूरा चेहरा दिन-दिन तेजमय होता जाता है और आँखों में गम्भीरता बढ़ती जाती है। उसके होंठ भी एक विशेष प्रकार का बल खाये हुए रहते थे, जिससे उसकी आकृति में अजीब

---

* एक प्रकार का गँवारू-नाच।

कठोरता आ गई थी। वह सदा किसी पर क्रोधित सा लगता था, अथवा यों कह सकते हैं कि कोई चीज दिन-रात उसके हृदय में खटकती या चुभती-सी थी। पहले तो उसके मित्र उससे मिलने के लिए घर पर आते थे; परन्तु फिर कभी शाम को उसे घर पर न पाकर वे भी उससे दूर रहने लगे।

मा को इस बात मे प्रसन्नता तो जरूर होती थी कि उसका बेटा कारखाने में मजदूरी करनेवाले दूसरे छोकरों से भिन्न होता जाता था। परन्तु साथ ही यह देखकर उसे चिन्ता और भय भी होने लगा था कि गाँव के जीवन-क्रम से पृथक् किसी बिल्कुल नये रास्तेपर पवेल दृढ़ता से चल पड़ा था और इस मार्ग से जरा भी इधर-उधर हटने का उसका विचार नहीं मालूम होता था। वह घर पर रात को पढने के लिए किताबें भी लाने लगा था, जिन्हें वह शुरू में लोगों की निगाहें बचाकर पढ़ा करता था और जो पुस्तकें पढ चुकता था, चुपके से कहीं छिपा देता था। कभी-कभी किताबों में से वह कुछ कागज पर नकल भी करता था और इन कागज के पुर्जों को भी छिपाकर रख देता था।

'क्यों बेटा पाशा, कैसी तबियत है?' मा ने एक दिन उससे आह भरकर पूछा।

'मैं बिलकुल ठीक हूँ, मा!' उसने उत्तर दिया।

'कितने दुबले हो गये हो!' मा ने फिर साँस भरकर कहा।

वह चुप रहा।

मा-बेटे बहुत कम एक दूसरे से बोलते या मिलते-जुलते थे। सुबह को पवेल चुपचाप चाय पीकर कारखाने में काम करने चला जाता था; दोपहर का खाना खाने आता था, तब एक-दो मामूली बातें मा से करता था और फिर शाम तक के लिए गायब हो जाता था। शाम को अँधेरा हो जाने पर कारखाने का काम पूरा करके घर लौटता था। हाथ-मुँह धोकर खाना खाता था, खाकर फौरन किताबें लेकर बैठ जाता था और बहुत देर तक बैठा-बैठा किताबें पढ़ता था। छुट्टियों के दिन भी सुबह वह घर से निकल जाता था और रात को बहुत देर में घर लौटता था। मा सोचती थी कि वह शहर में थियेटर इत्यादि देखने कहीं जाता होगा; परन्तु शहर से कभी उससे मिलने-जुलने के लिए कोई आता नहीं था। इस प्रकार उनका समय बीतता था। मा देखती थी कि दिन-दिन लड़का बोलना-चालना कम करता जाता है और बोल-चाल में ऐसे शब्दों का प्रयोग करने लगा है, जो मा की समझ में नहीं आते थे। भद्दे, गुस्ताख और कठोर शब्द अब पवेल की बोल-चाल में नहीं होते थे। उसके रोज के व्यवहार में भी मा को साफ तौर पर एक विलक्षणता दीखती थी। पवेल ठाट-बाट करने का प्रयत्न छोड़कर अब अपने कपड़ों और शरीर को स्वच्छ रखने का ही अधिक प्रयत्न करता था। उसकी चाल में स्वतंत्रता और फुर्ती आ गई थी। उसकी यह बढ़ती हुई नम्रता और सादगी मा के हृदय में उल्लास, परन्तु साथ ही साथ भय भी उत्पन्न करती थी। एक दिन पवेल एक चित्र लाया और उसको लाकर अपने कमरे में दीवार पर लटका दिया। चित्र में तीन मनुष्य सहज निर्भीकता से टहलते हुए आपस में बातें कर रहे थे।

'यह ईसामसीह हैं! कब्र में से उठकर जा रहे हैं!', पवेल ने मा को चित्र का भाव समझाते हुए कहा।

मा को वह तस्वीर पसन्द आई। मगर वह सोचने लगी—यह ईसामसीह को मानता है! फिर गिरजे मे क्यों नहीं जाता!

धीरे-धीरे कमरे की दीवारों पर और भी तस्वीरें लगीं और घर में किताबों की संख्या भी बढ़ी। पवेल के एक बढ़ई मित्र ने एक छोटी-सी सुन्दर आलमारी किताबें रखने के लिए बना दी, जिससे कमरा सुघड़ दीखने लगा। पवेल अपनी मा को 'तू' की बजाय 'तुम' शब्द से संबोधित करता था और उसको, 'अम्मा' के बजाय 'मा' कहकर बुलाने लगा था। मगर कभी-कभी एकाएक घूमकर वह अब भी उसी पिछली भाषा में बोल उठता था—देख अम्माँ, आज रात को मुझे लौटने में देर हो जाय तो, तू घबराना मत!

मा को ऐसे वाक्य सुनकर बड़ी प्रसन्नता होती थी। ऐसे शब्दों में मा को ममता और शक्ति लगती थी।

परन्तु पवेल के संबन्ध मे मा की चिन्ता दिन पर दिन बढ़ती ही गई। काफी समय बीत जाने पर भी जब वह अपने लड़के के विलक्षण व्यवहार का कुछ अर्थ न लगा सकी, तो वह मन में दुखी रहने लगी और किसी अनहोनी या किसी विचित्र दुर्घटना का उसे हर समय भय रहने लगा। कभी-कभी लड़के की नई चाल-ढाल से असन्तुष्ट होकर वह सोचती—और सब नौजवान आदमियों की तरह रहते हैं। यह दिन-दिन साधु बनता जाता है! इतना गम्भीर रहता है! इस उम्र में यह ठीक नहीं है! कभी वह सोचती—शायद पवेल किसी छोकरी के प्रेम मे पड़ गया है!

परन्तु लड़कियों के साथ फिरने मे रुपया खर्च होता है। पवेल अपनी सारी कमाई मा के हाथों में रख देता था।

इसी प्रकार चिन्ता में सप्ताह बीते, महीने बीते, देखते-देखते दो वर्ष व्यतीत हो गये। मा के जीवन में यह दो वर्ष बड़े विचित्र बीते—घर में कोई झगड़ा-टण्टा, मार-पीट या गाली-गुप्ता नहीं हुई। परन्तु मा के मन में तरह-तरह की चिन्ताएँ उठती थीं और ये चिन्ताएँ दिन पर दिन बढ़ती ही जाती थीं।

एक दिन ब्यालू के बाद खिड़की का पर्दा खींचकर पवेल जब अपने कमरे के कोने में टीन की बत्ती के पास पढ़ने बैठ गया, मा बर्तन रखकर रसोईघर में से निकली और धीरे-धीरे उसकी तरफ आई। पवेल ने मुँह उठाया और बिना कुछ बोले प्रश्नसूचक दृष्टि से मा की ओर देखा।

'कुछ नहीं पाशा! यों ही चली आई थी!' मा ने जल्दी से कहा और भौंहें चलाती हुई उल्टे पावों लौट गई। परन्तु रसोईघर में पहुँचकर क्षण-भर वह चुपचाप खड़ी कुछ सोचती रही; फिर उसने हाथ धोये और लड़के के पास लौटकर आई। 'मैं यह जानना चाहती हूँ।' उसने क्षीण और नम्र स्वर में पूछा—तुम हमेशा क्या पढ़ते रहते हो!

पवेल ने किताब एक तरफ रखकर कहा—'बैठ जाओ मा!' मा उसके पास बैठ गई और किसी तीव्र क्लेश का आघात सहने के लिए अपने शरीर को सीधा करती हुई, कोई विचित्र बात सुनने की प्रतीक्षा करने लगी।

उसकी ओर न देखते हुए, पवेल ऊँचे और दृढ़ स्वर में बोला—मैं सरकार की जब्त की हुई किताबें पढ़ता हूँ। ये किताबें सरकार ने इसलिए जब्त की हैं कि इनमें हमारे मजदूरों के जीवन के सम्बन्ध में सच्ची बातें लिखी हुई हैं। परन्तु ये किताबें अब गुप्त स्थानों में छपती हैं। मेरे पास ये किताबें पकड़ी जायँ तो सिर्फ इसलिए मुझे जेल हो जायगी कि मैं सत्य को समझने का प्रयत्न करता हूँ!

मा का गला यकायक रुँधने लगा। वह आँखें फाड़कर लड़के के मुख की तरफ देखने लगी और उसको वह अपरचित-सा लगा। उसकी आवाज भी विचित्र हो गई थी, धीमी, गहरी और संगीतमय। पवेल अपनी मुडी हुई रेखों पर हाथ फेरता हुआ विचारहीन-सा कमरे के एक कोने की तरफ देख रहा था। मा के हृदय मे अपने बेटे के लिए चिन्ता उमड़ी और वह उस पर दया करने लगी।

'पाशा, तू ऐसा क्यों करता है!'

लड़के ने सिर उठाकर मा की ओर देखा और कोमल नम्र स्वर में कहा—मैं सत्य की खोज करना चाहता हूँ कि सचाई कहाँ है! उसकी आवाज मे धीरता और गम्भीरता थी, और आँखों में धीरता और गम्भीरता की चमक थी। मा का दिल बोला कि लड़के ने अपना जीवन किसी भयानक और रहस्यमय वस्तु को समर्पण कर दिया है। जीवन में आज तक हर चीज को उसने भाग्याधीन ही समझा था। बिना सोचे-समझे भाग्य के सामने सिर झुका देने की मा को आदत थी। अस्तु, लड़के से कुछ न कहकर वह धीरे-धीरे रोने लगी। मुँह से उसके शब्द नहीं निकले; परन्तु उसका दिल इस नये दर्द से बैठने लगा।

'रोओ मत मा!' पवेल ने स्नेह-पूर्ण स्वर मे मा से कहा। परन्तु मा को लगा, मानो बेटा उससे विदा माँग रहा है।

'सोचो तो, मा, तुम्हारा किस प्रकार का जीवन है! तुम्हारी उम्र के चालीस वर्ष बीत गये! परन्तु क्या तुमने कभी जीवन का कोई आराम जाना? बाप तुमको रोज पीटते थे! मैं अब समझता हूँ कि वह क्यों ऐसा करते थे! अपने जीवन की वेदना को वह तुम्हारे शरीर पर निकालते थे! उनका जीवन रसहीन था, मरुभूमि की तरह खुश्क था, ऊजड़ था; और उनकी समझ में नहीं आता था कि वह ऊजड़ क्यों है! उन्होंने तीस वर्ष तक कठिन मजदूरी की थी। कारखाने में जब दो मकान थे, तब से उन्होंने वहाँ मजदूरी करना शुरू की थी, अब कारखाने में सात मकान हो गये हैं, परन्तु कारखाने बढ़ते हैं और मनुष्य घटते हैं! कारखानों मे काम करते-करते वे बेचारे सूख-सूखकर पत्तों की तरह झर जाते हैं!'

मा भयभीत, पर ध्यान-पूर्वक पवेल की बातें सुन रही थी। पवेल की आँखों में एक सुन्दर तेज का प्रकाश था। मेज पर आगे की तरफ झुकता हुआ वह मा के निकट बढ़

आया और मा के आँसुओं से भीगे चेहरे की ओर एकटक घूरते हुए, उसने आज तक जीवन का जो कुछ मर्म जाना था, वह मा को समझना शुरू किया। अपनी जवानी की उमङ्ग और नये जोश में जो कुछ उसकी समझ में आया, उसने कहा और मा को समझाने से अधिक स्वयं अपने विचारों की दृढ़ता जानने के लिए ही वह शायद बोला। बोलते-बोलते विचारों को व्यक्त करने के लिए उपयुक्त शब्द न मिलने से वह बीच-बीच मे रुक जाता था। तब उसकी दृष्टि सामने बैठी हुई मा के मुरझाये हुए चेहरे पर पड़ती थी, जिसमें दो अश्रुपूर्ण नेत्र बुझते हुए चिरागों की तरह टिमटिमाते थे। ये नेत्र डरे हुए और आश्चर्य चकित इसकी ओर घूरते थे और पवेल के हृदय में मा के लिए एक हूक-सी उठती थी। पवेल मा से कहने लगा—मा, तुमने कौन-सा सुख देखा है ! मा, तुम किस भूतकाल पर अभिमान कर सकती हो ?

मा ने पवेल के इन शब्दो को सुनकर दुःख से सिर हिलाया और मा के अन्तर में एक ऐसा नवीन भाव उठा जो उसको दुःख और सुख दोनों मे डुबकियाँ लगाता हुआ उसके दुखी और प्रपीड़ित हृदय को पुचकारने लगा।

जीवन में आज पहली बार मा ने अपने सम्बंध में ऐसे शब्द सुने थे। इन शब्दों ने उसके मस्तिष्क मे अस्पष्ट सुपुप्त विचारों को जगाया और उसके हृदय मे विद्रोह और एक आश्चर्य-चकित असन्तोष की मन्द-मन्द अग्नि भड़काई, मानो जवानी के मिटे हुए अरमान और कुचली हुई अभिलाषायें फिर से जाग उठीं। वह अक्सर अपने पड़ोसियों से जीवन के विषय मे चर्चा किया करती। रोज तरह-तरह की बातें होती थीं। परन्तु गाँव के सब लोग और वह स्वयं अपने भाग्य का रोना ही रोज रोते थे। कोई यह नहीं बताता था कि जीवन इतना कठोर, इतना कष्टमय क्यों है !

परन्तु आज उसका लड़का सामने बैठा था और उसने जीवन के विषय में जो कुछ कहा था, उसने, उसकी दृष्टि ने, उसके चेहरे की आकृति ने और उसके शब्दों ने मा के हृदय मे घर कर लिया था। मा की छाती अपने बेटे के लिए अभिमान से फूल उठी, क्योंकि सचमुच बेटे ने अपनी माता का जीवन समझा था। माता के विषय मे और उसके कष्टों के विषय मे, उसने, जो कुछ कहा था, सब सच था। उसको अपनी मा पर दया आती थी ! मगर माताओं पर कहीं दया दिखाई जाती है ! पवेल ने मा के जीवन से सम्बन्ध न रखनेवाली बातों के सम्बन्ध मे जो कुछ कहा था, वह मा की समझ मे नहीं आया। परन्तु हाँ, उसके स्त्री-जीवन के सम्बन्ध में लड़के ने जो कुछ कहा था, वह सब मा के अनुभव के अनुसार ठीक था। अस्तु, उसने सोचा कि पवेल ने और जो कुछ कहा है, वह भी सच ही होगा। मा की आत्मा में आनन्द की एक उमंग उठी और प्यार से वह उसके हृदय की चुटकियाँ लेने लगी।

'तो तुम क्या चाहते हो ?' मा ने पवेल की बात काटते हुए पूछा।

'सत्य को स्वयं समझना और दूसरों को समझाना। हम श्रमजीवियों को जानकारी की जरूरत है। इस बात की जानकारी की कि हमारा जीवन इतना कठोर और इतना

रूखा क्यों है।' इतना कहते ही पवेल की नीली-नीली आँखों में, जो सदा गम्भीर और विरक्त-सी रहती थीं, एक तेज ज्वाला चमकी, जो मानो उसकी आत्मा में धीरे-धीरे किसी नई शक्ति को जगा रही थी। मा को पवेल की यह हालत देखकर आनंद हुआ और उसके होठों पर संतोष की एक मंद-मंद मुसकान नाचने लगी। मा के चेहरे की झुर्रियों में अभी तक आँसू भरे हुए थे। वह दो भावों के बीच में दबी जा रही थी। एक तरफ तो उसको अपने पुत्र पर अभिमान हो रहा था कि वह दूसरों के हित का ध्यान करता है, सब पर दया करता है, और जीवन के कष्ट और क्लेशों का ज्ञान रखता है दूसरी तरफ उसको उसकी जवानी पर तरस आ रहा था, क्योंकि पवेल दूसरे नौजवानों की तरह नहीं रहता था। वही मानों अकेला ही उस जीवन से, जिसमे दूसरे सब चुप-चाप मुँह डुबाये बहे जाते थे, संग्राम करने की तैयारी कर रहा था। अस्तु, मा के दिल में आ रहा था कि पवेल से कहे—'प्यारे बेटे! एक चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। तुम्हें जालिम कुचल डालेंगे। मेरे पूत, बर्बाद हो जाओगे!' परंतु पवेल की बातें सुनने में उसे आनंद आ रहा था, और इस आनंद को भंग करने की उसे इच्छा न हुई। लड़के की बातें उसे विचित्र अवश्य लग रही थीं। परंतु एकाएक उसको इतना बुद्धिमान जानकर उसे बड़ी खुशी भी हो रही थी।

पवेल ने मा के होठों की मुस्कान, उसके चेहरे का रंग, आँखों का स्नेह देखकर समझ लिया कि उसकी बातों का मा पर असर हो रहा था। अपने शब्दों की इस शक्ति का ज्ञान होते ही उसके यौवन-पूर्ण अभिमान ने उसका आत्म-विश्वास बढ़ाया। वह आवेश में भरा बातें कर रहा था। कभी मुस्कराता था और कभी क्रोध से दाँत पीसने लगता था। बीच-बीच में उसके शब्दों से घृणा की भी हुँकार हो उठती थी। मा जब घृणा का तीक्ष्ण कर्कश स्वर सुनाती तो सिर हिलाती हुई, भयभीत मंद स्वर में पूछती—सच कहो, पाशा, ऐसा है?

'हाँ, मा, ऐसा है!' वह दृढ़ता से उत्तर देता। उसने मा से उन लोगों का भी जिक्र किया जो जनता का भला चाहते थे और उन लोगों मे फिर-फिरकर सत्य का प्रचार करते थे; और इसी अपराध के लिए जिनको जीवन के शत्रु, जंगली जानवरों की तरह पीछा करके पकड़ते थे; और जेलों मे ठूँस देते थे या काला पानी भेजकर जन्म-भर उनसे सख्त मसक्कत कराते थे।

'मैं इन आदमियों से स्वयं मिला हूँ।' पवेल ने स्नेह-पूर्ण आवेश से कहा—वे संसार के सर्वश्रेष्ठ मनुष्यों में हैं। इन विचित्र लोगों का हाल सुनकर मा का दिल डर से बैठने लगा और उसकी लड़के से पूछने की इच्छा हुई—सच कहो, पाशा! क्या यह सच है, परंतु वह चुप रही। और पीछे की तरफ पीठ झुकाकर, उन विचित्र मनुष्यों का, जिनकी रूपरेखा अभी तक अच्छी तरह उसकी समझ मे नहीं आ रही थी, हाल ध्यान-पूर्वक सुनती रही। उन विचित्र लोगों का हाल, जिन्होंने उसके लड़के को भयंकर शब्द और विचार प्रकट करना और सोचना सिखा दिया है। आखिरकार वह पवेल से बोली—

थोड़ी देर में पौ फट जायगी ! बेटा, अब जाकर सो जाओ। तुम्हें सुबह काम पर जाना है।

'हाँ, मैं अब सोने जाता हूँ।' वह मान गया। 'तुमने मेरी बातें तो समझ लीं?'

'हाँ, मैंने समझ लीं।' मा ने एक दीर्घ निःश्वास लेते हुए कहा। फिर मा की आँखों से आँसू बरस उठे और सिसकियों में फूटकर वह बोली—बेटा, तुम बर्बाद हो जाओगे!

पवेल उठकर कमरे में टहलने लगा।

'अच्छा तो अब तुम्हें मालूम हो गया कि मैं क्या करता हूँ और कहाँ जाता हूँ। मैंने तुमसे सब कुछ कह दिया है। मा, अब मेरी तुमसे एक प्रार्थना है। अगर तुम मुझे जरा भी प्यार करती हो, तो मुझको इस काम से कभी मत रोकना।'

'मेरे लाल! मेरे बेटा!' वह बिलख पड़ी—मैं यह सब कुछ न जानती तो ही अच्छा था!

पवेल ने मा का हाथ अपने हाथों में पकड़कर प्रेम से दबाया। जिस स्नेह से उसने 'मा' शब्द कहा था तथा यह हाथ का दबाना ऐसा नवीन और विचित्र था कि मा को रोमाञ्च हो आया।

'मैं कुछ नहीं कहूँगी।' उसने टूटी हुई आवाज में कहा—केवल होशियारी से काम करना। बेटा, मेरे लाल, होशियार रहना! किससे होशियार रहें यह सब कुछ उसकी समझ में नहीं आ रहा था। अस्तु, वह दुःख-भरी आवाज से बोली—बेटा, तुम बड़े दुबले हो गये हो।

फिर एक स्नेहपूर्ण दृष्टि पवेल के सुदृढ़ शरीर पर डालकर उसने जल्दी से मन्द स्वर में कहा—भगवान तुम्हारी मदद करे। जैसी तुम्हारी इच्छा हो करो, बेटा! मैं तुम्हारी राह में बाधा न बनूँगी। केवल इतनी प्रार्थना तुमसे करती हूँ कि लोगों से देख-भालकर बातें किया करो। उनसे सदा होशियार रहना! गाँव में सब एक दूसरे को खाने के लिए फिरते हैं। सब एक-दूसरे से घृणा करते हैं। लालच और द्वेष उनका जीवन बन गये हैं। दूसरों को दुःख देने में उन्हें आनंद-सा आता है। अपने विनोद के लिए भी वे दूसरों को दुःख देने के लिए तैयार हो जाते हैं। तुम उनके घृणित जीवन के सम्बन्ध में अपने विचार उन पर प्रकट करोगे, उनकी नुक्ताचीनी करोगे तो वे तुमसे घृणा करने लगेंगे और तुम्हें नष्ट करने के जितने उपाय उनसे बनेंगे, करेंगे।

पवेल दरवाजे में खड़ा हुआ मा के इन दुःख-पूर्ण, परंतु सच्चे वचनों को सुन रहा था। मा का कथन समाप्त हो जाने पर वह मुस्कराकर बोला—हाँ मा, लोग बहुत बुरे हैं। परंतु जब से मुझे मालूम हुआ कि सत्य क्या है, तब से लोग मुझे अच्छे लगने लगे हैं।

वह फिर मुस्कराया और बोला—मुझे खुद नहीं मालूम कि यह परिवर्तन मुझमें कैसे आया। बचपन में मैं हरएक से डरता था। बड़ा होने पर मैं सबसे घृणा करने लगा। कुछ से उनके कमीनेपन के कारण, दूसरे से न मालूम क्यों, यों ही! और अब मैं उन्हीं सबको एक दूसरी दृष्टि से देखता हूँ तो मेरे मन में उनके लिए दुःख होता है। मेरो

समझ में नहीं आता कि ऐसा क्यों होता है ? परंतु जब से मुझे मालूम हुआ कि लोगों में सत्य है, और जीवन की गंदगी और बुराई के लिए बहुसंख्या दोषी नहीं है तब से मेरा हृदय कोमल बन गया है। मेरे दिल में लोगों के लिए एक दर्द आ गया है। इतना कहकर पवेल चुप हो गया ; मानो वह अपनी अंतरात्मा की आवाज सुन रहा था। क्षण-भर ठहरकर वह फिर ध्यानपूर्वक धीमे स्वर में बोला—सत्य सिर पर चढ़कर बोलता है।

मा प्यार से उसकी ओर ताक रही थी।

'ईश्वर तुम्हारे ऊपर कृपा करें।' उसने साँस भरकर कहा—तुममे बड़ा भयंकर परिवर्तन हो गया है।

फिर जब पवेल सो गया, मा धीरे से उठी और चुपके-चुपके उसके कमरे मे आई। सफेद तकिये पर पवेल का गेहुँआ दृढ़ निश्चयी गम्भीर मुख रखा था। मा छाती पर हाथ रखकर बेटे की चारपाई के पास खड़ी हो गई, और नजर भरकर अपने लाल का मुख निहारने लगी। मा के होठ बड़बड़ाते थे और आँसुओं की धारें गालों पर होकर बह रही थीं।

तीसरा परिच्छेद

मा और बेटा शान्तिमय जीवन बिताने लगे, परंतु निकट होते हुए भी वे दोनों एक दूसरे से बहुत दूर थे। एक दिन पवेल ने कहीं बाहर जाने की तैयारी करते हुए मा से कहा—देखो मा, यहीं शनिवार के दिन कुछ लोग आयेंगे।

'कौन लोग ?'

'कुछ लोग यहीं अपने गाँव के और कुछ लोग शहर से।'

'शहर से !' मा ने सिर हिलाते हुए दुहराया और एकदम उसकी सिसकियाँ बँध गईं।

'मा, यह क्या ?' पवेल ने चिढ़कर कहा—रोती क्यों हो ! क्या हुआ !

ओढ़नी से आँसू पोंछती हुई मा धीरे से बोली—न जाने क्यों मेरा दिल भर आया।

पवेल कमरे में टहलने लगा। फिर उसने मा के सामने ठिठककर पूछा—तुम्हें डर लगता है ?

'हाँ, मुझे डर लगता है।' मा ने स्वीकार कर लिया—वे शहर से आनेवाले न जाने कौन होंगे !

पवेल झुककर मा के चेहरे को घूरने लगा और चिढ़ी हुई आवाज में इस तरह बोला जैसे मा को लगा, उसका बाप बोला करता था—इसी डर ने तो हम लोगों का सर्वनाश किया है ! इसी से तो मुट्ठी-भर लोग हम पर हुकूमत करते हैं ! हमारे डर का वे फायदा उठाते हैं। याद रखो, जब तक हम लोग इस तरह डरेंगे, तब तक हमें कीचड़ के कीड़ों की भाँति जीवन व्यतीत करते हुए मरना पड़ेगा। अब हम सबको हिम्मत बाँधने का वक्त आ पहुँचा है।

'खैर, कुछ भी हो।' उसने मा की तरफ से मुँह फेरते हुए कहा—अब तो वे लोग यहाँ अवश्य आयेंगे !

'मुझ पर नाराज न हो बेटा !' मा ने गिड़गिड़ाकर कहा—मैं कैसे न डरूँ ! मेरी सारी जिन्दगी ही डर में बीती है !

'मुझे माफ करो।' पवेल ने नम्रता-पूर्वक मा से कहा—क्या करूँ, अब मैं उनसे 'न' नहीं कर सकता। इतना कहकर वह जल्दी से बाहर चला गया।

तीन दिन तक मा का हृदय धड़कता रहा। जैसे ही उसे याद आती कि कोई विचित्र लोग उसके यहाँ आनेवाले हैं, वैसे ही उसका दिल धड़क उठता था। इन लोगों का कोई चित्र उसकी आँखों में नहीं बँधता था। परन्तु वह सोचती थी कि वे अवश्य भयंकर होंगे, क्योंकि इन्हीं ने तो पवेल को यह भयंकर राह दिखाई थी, जिस पर वह अब चल पड़ा था।

शनिवार की शाम को पवेल ने कारखाने से लौटकर हाथ-मुँह धोकर नये कपड़े पहने और घर से जाते समय मा की तरफ से मुँह फिराते हुए बोला—वे लोग आ जायँ तो उनसे कहना कि मैं जल्दी ही लौट आऊँगा। उनसे कहना कि कुछ देर मेरी राह देखें। उनसे डरना मत! औरों की तरह वे भी मनुष्य हैं। मा यह सुनते ही जहाँ खड़ी थी, वहीं बैठ गई और उसका दिल बैठने लगा। बेटे ने ध्यानपूर्वक उसकी तरफ देखा। 'तुम कहीं दूसरी जगह चली जाओ तो शायद ठीक होगा!' उसने मा से कहा। मा को बुरा लगा। सिर हिलाकर 'न' करते हुए उसने कहा—नहीं, मैं यहीं रहूँगी। कुछ नहीं है। दूसरी जगह जाने की क्या जरूरत है!

नवम्बर मास के अन्तिम दिन थे। रूस देश की हिमाच्छादित जमीन पर दिन में खुश्क बर्फ की वर्षा हो चुकी थी। बाहर से पवेल के पैरों से कुचली जानेवाली बर्फ की खचखच-खचखच आवाज आ रही थी। खिड़की के शीशों पर अन्धकार घिरा हुआ किसी शत्रु की घात में बैठा-सा लगता था। तिपाई पर बैठी मा दरवाजे की तरफ टकटकी लगाये हुए आनेवालों का इन्तजार कर रही थी। उसको ऐसा लग रह था कि मकान के चारों ओर अन्धकार में कुछ लोग चुपके-चुपके फिर रहे हैं जो छिप-छिपकर इधर-उधर देखते थे और विचित्र लिबास में थे। शायद दीवार टटोलता हुआ कोई मकान की तरफ बढ़ रहा था। एक सिटी की आवाज हुई, जिसका स्वर सितार की वेदनापूर्ण झंकार की तरह अन्धकार की गोद में ध्वनित होता हुआ फैल गया, मानों वह किसी को खोजने चला गया। वह आवाज आगे बढ़ने लगी और खिड़की के पास आकर यकायक इस प्रकार बन्द हो गई, मानों दीवार की लकड़ी में घुसकर लुप्त हो गई। ड्यौढ़ी के द्वार पर किसी के आने की आहट हुई, जिसे सुनते ही मा उठकर खड़ी हो गई। उसकी आँखें भय और नींद से मिची जा रही थीं।

घर का द्वार खुला और एक बड़ा बालोंवाला टोप कमरे में दाखिल हुआ, जिसके पीछे एक दुबला-पतला, झुका हुआ शरीर लथड़ता हुआ घुसा। उसने अपने आपको सीधा करते हुए दाहिना हाथ उठाया और एक गहरी साँस खींचते हुए मा से कहा—प्रणाम!

मा ने उत्तर में चुपचाप सिर झुका दिया।

'पवेल अभी तक घर नहीं आया है?' उसने पूछा।

फिर इस आगन्तुक ने आहिस्ता से अपनी बालोंदार जाकेट उतारी और एक पाँव उठाकर टोपी से बूट पर जमी हुई बर्फ झाड़ी। इसी प्रकार उसने दूसरे जूते पर से भी बर्फ झाड़कर टोपी को एक कोने में फेंक दिया और अपने पतले-पतले पैरो पर झूलता हुआ और घूम-घूमकर पैरों से जमीन पर बननेवाले निशानों को देखता हुआ कमरे में बढ़ा। मेज के पास पहुँचकर उसने मेज को आजमाकर देखा कि कहीं बैठने से वह टूट तो नहीं जायगी और फिर उस पर बैठकर, मुँह पर हाथ रखकर, उसने एक गहरी जमुहाई ली। उसका सिर बिलकुल गोल था, बाल छोटे-छोटे थे और मुँह पर थोड़ी-थोड़ी मूँछें थीं, जिनके कोने नीचे की तरफ झुके थे। उसकी दाढ़ी मुड़ी हुई थी।

अपनी विशाल भूरी-भूरी बाहर की तरफ निकली हुई आँखों से कमरे को अच्छी तरह देखकर उसने अपना एक पैर उठाकर दूसरे पर रख लिया और मेज की तरफ सिर झुकाते हुए मा से पूछा—यह आपके घर का मकान है या किराये का !

सामने बैठी हुई मा ने उत्तर दिया—किराये का।

'मकान बहुत अच्छा तो नहीं है।' वह बोला।

'पाशा आता ही होगा, बैठिए !' मा ने धीरे से कहा।

'हाँ, मैं बैठा हूँ।' वह मनुष्य बोला।

इस आगन्तुक की शान्त मुद्रा और गम्भीर सहानुभूति-पूर्ण आवाज से और उसके चेहरे पर झलकनेवाली सत्यता और उसकी सहज सरलता से मा को सन्तोष हो रहा था। वह मा को स्नेह-पूर्ण दृष्टि से देख रहा था, और उसकी जलाशय की तरह स्वच्छ आँखों मे आनन्द का स्रोत-सा बह रहा था। इस टेढ़े और झुके हुए, पतले पाँववाले, विदूषक-से मनुष्य में दिल पर कब्जा कर लेनेवाली कोई चीज थी। वह आस्मानी रंग की एक कमीज पहने था, और उसकी काली ढीली पतलून बूट जूतों के अन्दर घुसी हुई थी। मा के दिल में आया कि उससे पूछे—तुम कौन हो ? कहाँ रहते हो ? मेरे लडके को कब से जानते हो ? परन्तु यकायक अपने सारे शरीर को हिलाते हुए आगे की तरफ झुककर नवागन्तुक ने ही मा से एक सवाल कर दिया—मा, तुम्हारे सिर मे यह गड्ढा किसने किया ?

उसने बड़े स्नेह से मा से यह प्रश्न पूछा था, क्योंकि उसकी आँखों में स्नेह की मुस्कराहट झलक रही थी। परन्तु मा को यह प्रश्न बुरा लगा। उसने होंठ चबाते हुए कुछ देर बाद रुखाई से उत्तर दिया—आपको क्या मतलब जनाब ?

नवागन्तुक ने फिर उसी तरह आगे की तरफ झुककर कहा—देखो मा, गुस्सा मत हो। मैंने इसलिए पूछा कि मेरी सौतेली मा के सिर मे भी ठीक इसी प्रकार का एक निशान था, जो उसके पति ने किया था—उसके नये पति ने, वह चमार था। मेरी मा धोबिन थी और मेरा बाप चमार था। मुझे गोद लेने के बाद एक दिन वह शराबी कहीं मेरी मा को मिल गया और मेरी मा ने दुर्भाग्य से उससे विवाह कर लिया। वह उसे बुरी तरह पीटता था, इतनी बुरी तरह कि मैं तुमसे सच कहता हूँ, उसकी मार देखकर डर से मेरे रोंगटे खड़े हो जाते थे। उसकी इन खुली-खुली बातों से मा का गुस्सा काफूर हो गया। मा को यह भी विचार हुआ कि इस विचित्र मनुष्य को कड़ा उत्तर देने के लिए पवेल कहीं मुझसे नाराज न हो। अस्तु, वह अपराधी की भाँति मुस्कराते हुए बोली—मैं गुस्सा नहीं हुई। परन्तु तुम मुझसे यह प्रश्न अचानक और बहुत जल्द पूछ बैठे। मेरे पतिदेव ने—भगवान उनकी आत्मा को शान्ति दे—यह घाव मेरे सिर मे किया था। क्यों भैय्या, तुम तातार हो ?

नवागन्तुक अपने पैर फैलाकर मा के इस प्रश्न पर इतना मुस्कराया कि उसकी मूँछों

के कोने गर्दन से जा लगे। फिर उसने गम्भीरता से कहा—नहीं, अभी तक तो तातार नहीं बना हूँ।

'तुम्हारी बोलचाल से मुझे धोका हुआ भैया, कि शायद तुम रूसी नहीं हो।' नवागन्तुक का मजाक समझकर मा उसे समझने की चेष्टा करने लगी।

'मैं रूसियों से अच्छा हूँ, सच कहता हूँ, मा।' मेहमान ने हँसते हुए कहा—मैं लिटिल रूस* प्रान्त के कनेव नगर का निवासी हूँ।

'क्या तुम बहुत दिनों से इधर रहते हो?'

'एक महीने तक तो शहर में था, एक महीने से मैं तुम्हारे गाँव के कारखाने में काम करता हूँ। यहाँ मुझे सौभाग्य से कुछ अच्छे आदमी मिल गये हैं। तुम्हारा लड़का और कुछ दूसरे लोग।'

'थोड़े दिन और मैं इस गाँव में रहूँगा।' उसने मूँछों पर हाथ फेरते हुए मा से कहा।

उसकी बातें सुनकर मा को खुशी हुई। अपने पुत्र के सम्बन्ध मे उसके मुख से अच्छे शब्द सुनकर प्रत्युपकार में आगन्तुक को कुछ देने के भाव से मा ने उससे पूछा—एक प्याला चाय पीयोगे?

'अकेले ही चाय पीऊँ?'—उसने कन्धे उठाते हुए उत्तर दिया—नहीं, मा, जब सब इकट्ठे हो जायँगे, तब सब मिलकर आपकी इस खातिर का फायदा उठायेंगे।'

दूसरों के आने की बात सुनकर मा के हृदय में फिर धड़कन हो उठी, 'यदि दूसरे आनेवाले भी इसी की तरह अच्छे हों तो क्या कहने।' वह सोचने लगी।

इतने में ड्योढ़ी पर फिर किसी के पैरों की आहट हुई। द्वार जल्दी से खुला और मा उठकर खड़ी हो गई। परन्तु अबकी बार रसोईघर में से घुसकर आनेवाले मेहमान को देखकर मा बिलकुल हक्का-बक्का रह गई। साधारण कद को, घने काले बालोंवाली, क्षीण वस्त्रों मे, एक सरलमुख किसान-औरत उसके सामने खड़ी थी। मुस्कराते हुए धीमे स्वर में उसने पूछा— क्या मुझे देर हो गई?

'नहीं, नहीं।'—लिटिल रूसी ने कमरे के बाहर झाँकते हुए कहा।

'क्या तुम पैदल ही आई हो?'

'हाँ, और क्या! अच्छा, आप ही पवेल की मा हैं? प्रणाम। मुझे नटाशा कहते हैं।'

'और तुम्हारा पूरा नाम क्या है।'—मा ने पूछा।

'वेसिलयेवना। और आपका मा?'

'पेलागुया निलोवना।'

'अच्छा तो अब हमारा एक दूसरे से परिचय हो गया।'

'हाँ।'—मा ने इस प्रकार साँस लेते हुए कहा, मानो उसके ऊपर से एक बोझ हट गया हो। फिर मा ने मुस्कराकर छोकरी की तरफ देखा।

---

* रूस के एक प्रान्त का नाम।

लिटिल रूसी ने ऊपरी लबादा उतारने में सहायता करते हुए आनेवाली स्त्री से पूछा—क्या बाहर बहुत ठण्डा है ?

'हाँ, मैदान में बहुत है। और हवा तो—बाप रे !'

नटाशा की आवाज मधुर और स्पष्ट थी। उसका मुँह छोटा और मुस्कराता हुआ था। बदन गठीला और फुर्तीला था, सिर का कपड़ा उतारकर वह अपने छोटे-छोटे ठिठुरे हुए हाथों से अपने लाल-लाल गालों को जल्दी-जल्दी मलने लगी। फिर फुर्ती से, धीमे-धीमे कदम रखती हुई, वह कमरे में बढ़ी और उसके जूतों की एड़ियों से कमरे के फर्श पर टप-टप-टप-टप की आवाज हुई।

'ऊपरी जूते भी बेचारी पर नहीं हैं !' मा ने उसको चुपचाप देखते हुए सोचा।

'सचमुच बड़ी ठण्ड है !' लड़की फिर बोली—मैं ठण्ड के मारे गली जा रही हूँ—ऊँह !

'अभी सेमोवार* तैयार करती हूँ !' मा ने उत्साह-पूर्ण चिन्ता से कहा—अभी, एक मिनट में तैयार होता है ! वह रसोईघर में पहुँचकर फिर चिल्लाई।

मा को लगा, मानों वह इस लड़की को बहुत दिनों से जानती है, और उसको मा की तरह प्यार भी करती है। उससे मिलकर मा को बहुत खुशी हो रही थी। लड़की की बड़ी-बड़ी नीली आँखों का ध्यान करके वह सन्तोष से मुस्कराती हुई सेमोवार तैयार करने लगी और साथ ही साथ कमरे में होनेवाली बातचीत भी कान लगाकर सुनने लगी।

'इतने उदास क्यों हो, नखोदका ?' लड़की ने पूछा।

'इस बुढ़िया की आँखें अच्छी हैं !' लिटिल रूसी ने उत्तर में कहा—मैं अभी सोच रहा था कि शायद मेरी मा की भी आँखें ऐसी ही होंगी ! मैं अभी तक अपनी मा को जीवित ही मानता हूँ !'

'तुम तो मुझसे कहते थे कि तुम्हारी मा मर गई !'

'हाँ, मैंने कहा तो था। मगर वह मेरी सौतेली मा थी। इसमें मैं अपनी असली मा का ध्यान कर रहा था। मैं सोचता हूँ कि शायद वह बेचारी कीव मे कहीं भीख माँगती और शराब पीती फिरती होगी !

'ऐसा भयानक विचार तुम्हें क्यों आता है ?'

'न जाने क्यों ! शायद पुलिसवाले उसे नशे में चूर सड़क पर पड़ी पाकर पीटते भी होंगे !'

'ओह बेचारा !' मा ने उसकी बात सुनकर सोचा और एक दीर्घ निःश्वास लिया।

---

*सेमोवार चाय की केटली की तरह धातु का एक बर्तन होता है, जिसमें रूस के ठण्डे देश के लोग काली-काली चाय बनाकर पीते हैं। जिस प्रकार भारतवर्ष के किसानों में हुक्का बहुत प्रचलित है, उसी प्रकार ठण्डे रूस के किसानों का प्रिय सेमोवार है।

नटाशा क्रोध से जल्दी-जल्दी कुछ बड़बड़ाई और फिर लिटिल रूसी की झनझनाती हुई आवाज सुनाई दी।

'तुम्हारी अभी उम्र ही क्या है बहिन!' उसने कहा—तुमने अभी दुनिया नहीं देखी है। सभी के माताएँ होती हैं! फिर भी लोग खराब क्यों हैं? बच्चे जनना कठिन काम अवश्य है; परन्तु मनुष्य को मनुष्यता सिखाना उससे भी कठिन है।'

'कैसे विचित्र इसके विचार हैं!' मा ने अपने मन मे सोचा। फिर एक क्षण के लिए उसका विचार हुआ कि लिटिल रूसी की बात काटकर कहे कि मैं बड़ी खुशी से अपने लड़के को सब कुछ सिखाती, मगर मुझे ही क्या आता है? मगर इतने में फिर द्वार खुला और पुराने चोर डेनियल का छोकरा, निकोले, जो कि गाँव मे चाण्डाल के नाम से मशहूर था, अन्दर घुसा। निकोले हमेशा ही क्रुद्ध दीखता था और लोगों से दूर रहता था। बदले में गाँव के लोग उसका हमेशा मजाक उड़ाते थे और उसकी ठठोलियाँ करते थे।

'अरे निकोले, तू यहाँ कहाँ?' मा ने आश्चर्य से पूछा।

इस प्रश्न का कोई उत्तर न देकर चौड़ी-चौड़ी हथेलियों से अपने चेचकरू चेहरे को पोंछते हुए उसने छोटी-छोटी भूरी आँखों से मा की तरफ एक दृष्टि डाली।

'पवेल नहीं है?' उसने भारी आवाज से पूछा।

'नहीं।'

फिर उसने कमरे के अन्दर झाँककर कहा—प्रणाम भाइयो!

'यह भी इनमें है? क्या ऐसा सम्भव है?' मा चिढ़कर मन-ही-मन आश्चर्य करने लगी। उसको यह देखकर भी बड़ा ताज्जुब हुआ कि नटाशा ने निकोले से स्नेह-पूर्वक हाथ मिलाकर उसका स्वागत किया। इसके बाद आनेवाले दो छोकरे थे, जिनकी उम्र अभी बहुत थोड़ी थी। उनमें से एक को तो मा जानती भी थी। वह कारखाने के चौकीदार सोमोव का लड़का याकोव था। दूसरे छोकरे की तीक्ष्ण आकृति थी, ऊँचा मस्तक था और घुँघराले बाल थे। उसको मा ने पहले कभी नहीं देखा था। परन्तु वह भी भयंकर नहीं था। आखिरकार पवेल आया। उसके साथ भी दो आदमी थे। इन दोनों को भी मा पहचानती थी; क्योंकि वे गाँव के कारखाने में काम करते थे।

'अच्छा, तुमने सेमोवार चढ़ा दिया? यह बहुत अच्छा किया! धन्यवाद!' पवेल ने घुसते ही मा से कहा।

'थोड़ी ताड़ी भी ले आऊँ?' मा ने पवेल के स्नेह के प्रति-उत्तर में कृतज्ञता प्रकट करने के भाव से पूछा।

'नहीं, ताड़ी की जरूरत नहीं है।' पवेल ने कोट उतारते हुए स्नेह से मा की तरफ मुस्कराते हुए उत्तर दिया।

मा सोचने लगी कि पवेल ने मजाक में मुझे डराने के लिए इन लोगों के सम्बन्ध में

मुझसे भयानक बातें कही होंगी। अस्तु, उसने पवेल के कान में पूछा—इन्ही लोगों को तुम बागी और विद्रोही बताते थे।

'हाँ, इन्हीं को!' पवेल ने उत्तर में कहा, और इतना कहकर वह कमरे के अन्दर चला गया।

मा ने पवेल की पीठ की तरफ देखा और वात्सल्य-भाव मे भरकर सोचने लगी—बिलकुल बालक है!

सेमोवार खौल उठने पर मा उसको लेकर कमरे में घुसी तो उसने देखा कि सारे मेहमान एक छोटे-से दायरे में एक दूसरे से चिपके हुए मेज के चारों तरफ बैठे हैं, और लैम्प के नीचे कोने मे नटाशा एक किताब लिये बैठी है।

'यह समझने के लिए कि लोगों का जीवन इतना बुरा क्यों है!' नटाशा बोली।

'और वे स्वयं इतने बुरे क्यों है!' लिटिल रूसी ने उसकी बात में बात मिलाकर कहा।

'यह जानने की आवश्यकता है कि उनका जीवन किस प्रकार आरम्भ हुआ!'

'देखो, मेरे बच्चे, देखो!' मा चाय तैयार करती हुई बड़बड़ाई। वे सब चुप हो गये और मा की तरफ देखने लगे।

'क्या है, मा?' पवेल ने भौहे चढ़ाते हुए पूछा।

'क्या!' मा ने घूमकर देखा, और सबकी आँखें अपने ऊपर लगी देखकर वह घबराकर उन्हें समझाने लगी—कुछ नहीं, मैं अपने मन मे बोल रही थी!

नटाशा हँस पड़ी और पवेल मुस्कराया। परन्तु लिटिल रूसी ने कहा—मा, चाय के लिए आपको धन्यवाद।

'इसने चाय तो अभी तक मुँह से भी नहीं लगाई है और धन्यवाद दे रहा है।' मा मन-ही-मन सोचने लगी। फिर अपने लड़के की तरफ देखकर उसने पूछा—मैं तुम्हारे काम में विघ्न तो नहीं डाल रही हूँ?

'मेहमानों के लिए विघ्न कैसे हो सकता है!' नटाशा बोली।

और फिर बच्चे की तरह आग्रह से कहने लगी—प्यारी मा, मुझे जल्दी चाय दे दो! मैं ठण्ड से काँप रही हूँ। मेरे पैर बिलकुल ठिठुर गये हैं।

'अभी लो, अभी लो!' मा सिटपिटाकर जल्दी से उसको चाय देती हुई बोली।

चाय पीकर नटाशा ने एक लम्बी साँस ली। माथे पर लटक आनेवाले बालों को उसने हाथों से सिर पर चढ़ाया, और एक पीली चित्रमय पुस्तक में से पढ़कर सुनाने लगी। मा तश्तरियों को सँभालती हुई जिससे कि खटका न हो, प्यालों में चाय भर रही थी। साथ-ही-साथ अपने अशिक्षित दिमाग से इस लड़की के धारा-प्रवाह वाक्यों को सुनने और समझने का प्रयत्न कर रही थी। नटाशा के मधुर-मधुर स्वरों मे सेमोवार की मन्द-मन्द संगीतमय छुन-छुन भी अपनी ताल मिलाने का प्रयत्न कर रही थी और गारों में बसनेवाले और जानवरों का पत्थरों से शिकार करके खानेवाले आदिम निवासियों का

सहज वर्णन, एक नाजुक रेशमी फीते की तरह काँपता हुआ कमरे में बह रहा था। सुनने में वह एक किस्सा-सा लगता था। मा मुँह उठाकर बार-बार अपने लड़के की तरफ देखती थी और उससे पूछने की उसकी इच्छा होती थी कि इन जंगली मनुष्यों के इतिहास में गैरकानूनी बात क्या है। परन्तु कुछ देर में यह वर्णन उसकी समझ में आना बन्द हो गया। अस्तु, वह मेहमानों के चेहरों को, उनकी और अपने लड़के की आँखें बचाकर, ध्यान-पूर्वक देखने लगी।

पवेल नटाशा के पास बैठा था। उन सबमें वही सबसे सुन्दर लगता था। नटाशा किताब के ऊपर झुकी हुई थी। वह बार-बार माथे पर आ जानेवाली अपनी अलकों को हाथ से पीछे हटाती थी और बीच-बीच में आवाज धीमी करके श्रोताओं को स्नेहमय दृष्टि से देखते हुए कुछ बातें बताती थी जो उस किताब में नहीं थीं। लिटिल रूसी अपनी चौड़ी छाती मेज के एक कोने पर झुकाये हुए बार-बार कनखियों से अपनी मूँछों के कोनों को जिन पर वह बराबर ताव देता रहता था, देखने की कोशिश करता था। व्यसोवशचिकोव कुर्सी पर बाँस की तरह सीधा, अपने घुटनों पर हाथ रखे बैठा था। उसका चेचकरू चेहरा जिस पर भौंहें गायब थीं, और जिस पर पतले-पतले होंठ थे, बिलकुल नकाब की तरह स्थिर था। समोवार की चमकती हुई पीतल में अपने प्रतिबिम्ब को वह अपनी छोटी-छोटी आँखें गड़ाकर घूर-घूर देख रहा था; और ऐसा लगता था कि वह साँस तक नहीं ले रहा है। अल्पायु सोमोव, गूँगों की तरह होंठ हिला रहा था, मानों वह किताब के शब्द सुन-सुनकर मन में दुहराता जाता था। उसका घुँघराले बालोंवाला साथी झुका हुआ, कोहनियाँ घुटनों पर रखे और हाथों पर मुँह टेके संज्ञाहीन-सा हवा में मुस्करा रहा था। एक पतला आदमी जो पवेल के साथ-साथ घर में घुसा था, लाल-लाल और घुँघराले बालों और हँसती हुई हरी-हरी आँखों का नौजवान, शायद कुछ कहना चाहता था; क्योंकि वह बार-बार बेचैनी से इधर-उधर देखता था। दूसरा नौजवान जिसके हल्के और छोटे-छोटे कटे हुए बाल थे, सिर खुजलाता हुआ, जमीन की तरफ देख रहा था। उसका चेहरा नजर नहीं पड़ता था। कमरे में गर्मी थी। वातावरण मे एक अनोखी स्नेहमय प्रेरणा थी। मा पर इस विचित्र दृश्य का, जिसको उसने अपने जीवन मे पहले कभी नहीं देखा था, जादू का-सा असर हुआ। और उसके हृदय की सुषुप्त वीणा के तार मानों जागकर झंकृत हो उठे। वह नटाशा के झरने की तरह प्रवाहित मधुर स्वरों में जिसमें समोवार का काँपता हुआ छुन-छुन का स्वर भी ताल मिला रहा था, बहने-सी लगी। उसे अपनी जवानी के दिनों के, भद्दे संध्याकालों की याद हो आई। अपने साथी नौजवानों की उजड्ड ऊधमी बातों की, उनके अश्लील चिड़चिड़े मजाकों की और उनके मुँह से रोज उठनेवाली ताड़ी की बदबू की उसे याद आई। अपनी बीती हुई जवानी के इन गन्दे दृश्यों की याद करके उसको अपने ऊपर स्वयं दया-सी आई और एक दबा हुआ भाव जाग्रत होकर उसके जर्जरित और व्यथित हृदय को धीरे-धीरे कुरेदने लगा।

उसको अपने पति के अपने साथ प्रथम प्रेमालाप का दृश्य भी याद आया। कैसे

उसने एक दिन एक पड़ोसी की अँधेरी ड्योढ़ी में उसको जबरदस्ती पकड़कर सारे शरीर से उसको दीवाल से सटाकर, उजड्ड और कर्कश स्वर में पूछा था—क्यों री, मुझसे विवाह करेगी !

मा को उसकी यह हरकत बहुत बुरी लगी थी। परन्तु उसने जंगली की तरह मा की छाती में अँगुलियाँ गड़ाकर घुर्राते हुए, मुँह पर मुँह रखकर, मा के मुँह पर अपनी गर्म और गन्दी साँस की धुक-धुकी लगा दी थी, और जब वह उसके हाथों से छूटने का प्रयत्न करने लगी थी तो उसने कड़ककर कहा था—ठहर-ठहरकर जवाब दे। बोल !

लज्जा से दबी हुई वह बेचारी अपमानित हाँफती हुई चुप रह गई थी।

'मुझसे बन मत, मूर्ख ! मैं तेरी जैसियों को खूब पहचानता हूँ ! तू बड़ी खुश है !'

इतने में किसी ने ड्योढ़ी का द्वार खोल दिया और उसने मा को छोड़ते हुए कहा—अच्छा, अगले रविवार को मैं सगाई करूँगा ! और दूसरे रविवार को सगाई हो गई। इस स्मृति पर मा ने आँखें मींचकर एक गहरी साँस ली।

'लोग कैसे रहते थे, इसको सुनने से क्या फायदा ! यह बताओ कि उनको किस प्रकार रहना चाहिए !' व्यसोवशचिकोव की असन्तुष्ट मन्द आवाज कमरे में कहती हुई सुनाई पड़ी।

'ठीक कहते हो !' लाल बालों के युवक ने उठते हुए उसकी ताईद की।

'नहीं, मेरा ऐसा मत नहीं है।' सोमोव ने चिल्लाकर कहा—मैं समझता हूँ कि हम लोगों को उन्नति करनी है तो सभी बातें जाननी चाहिए।

'ठीक है ! ठीक है !' घुँघराले बालों के युवक ने धीमे से उसका समर्थन किया।

बस, फिर क्या था ! बहस छिड़ गई, और जिस प्रकार दावानल में अग्निबाण बरसते हैं, शब्दों की चारों तरफ से वर्षा होने लगी। मा की समझ में कुछ नहीं आया कि वे सब क्यों एक दूसरे पर इतना गर्म हो रहे थे। उनके चेहरे जोश से चमक रहे थे। परन्तु किसी को भी क्रोध नहीं था, और न कोई कटु और भद्दे शब्दों का ही प्रयोग कर रहा था। 'शायद एक स्त्री के पास होने के कारण ये लोग संयम से बोल रहे हैं।'—मा ने सोचा। नटाशा का गम्भीर मुख देखकर मा को प्रसन्नता हो रही थी। यह गम्भीर युवती इन युवकों को इसी प्रकार देख रही थी जैसे बड़े-बूढ़े बच्चों को देखते हैं।

'ठहरो भाइयो !' वह एकाएक बोली और सब चुप होकर उसकी तरफ देखने लगे।

'जो तुम लोगों मे से यह कहते हैं कि हम लोगों को सभी बातें जाननी चाहिए, वे ठीक हैं। हमको अपनी बुद्धि को ज्ञान से प्रकाशित करना चाहिए, जिससे कि अन्धकार में रहनेवाले हमको देख सकें। हम लोगों में उनके हर प्रश्न और उनकी हर शंका का ईमानदारी से ठीक-ठीक उत्तर देने की योग्यता होनी चाहिए। हमको सत्य और असत्य दोनों का ही ज्ञान होना चाहिए।'

लिटिल रूसी ने उसके शब्दों के समर्थन में सिर हिलाया। व्यसोवशचिकोव, लाल

बालों का युवक और कारखाने में काम करनेवाला मजदूर, जो कि पवेल के साथ आये थे, तीनों एक छोटे दायरे मे खड़े थे। न जाने क्यों मा को वे तीनों ठीक नहीं लगते थे।

नटाशा के बोल चुकने पर पवेल उठा और उसने शान्ति से पूछा—क्या पेट भरने के सिवा हम लोगों को और किसी चीज की जरूरत नहीं है?

'क्यों नहीं!' पवेल ने उन तीनों की तरफ तीव्र दृष्टि से देखते हुए खुद ही उत्तर भी दे लिया—हमे मनुष्य बनने की जरूरत है। हमें उन लोगों को, जो हमारी गर्दनों पर बैठकर, हमारी आँखे मूँदने का प्रयत्न करते हैं, दिखा देना चाहिए कि हम सब कुछ देखते हैं। हम सब समझते हैं, बुद्धू नहीं हैं! हम पशु नहीं हैं! हम जानवरों की तरह सिर्फ अपना पेट ही भर लेना नहीं चाहते, बल्कि शिष्ट मनुष्यों की तरह दुनिया में रहना चाहते हैं। हमें अपने दुश्मनों को दिखा देना चाहिए कि घोर परिश्रमी जीवन की आजन्म गुलामी के उन बन्धनों मे जकड़े होने पर भी, जिनमें उन्होंने हमें जकड़ रखा है, हम उनसे बुद्धि में कम नहीं हैं, और भावों में कहीं ऊँचे हैं।

मा ने अपने बेटे के मुँह से जब यह शब्द सुने तो उसकी छाती अभिमान से फूल उठी। 'कैसी अच्छी बातें करता है!' —वह सोचने लगी।

'ऐसे मनुष्य तो जो अपना पेट अच्छी तरह भर लेते हैं, दुनिया मे बहुत-से हैं! परन्तु ईमानदार आदमी नहीं मिलते।' लिटिल रूसी बोला।

'हमे जीवन के इस गन्दे दलदल के ऊपर से आन्तरिक सत्यता के भावी जीवन मे प्रवेश करने के लिए एक पुल बाँधना है! यही हमारा लक्ष्य है! और भाइयो, हमे उसे पूरा करना है!'

'लड़ाई का वक्त आ जाने पर, बैठकर, हाथ नहीं सेंके जाते!' व्यसोवशचिकोव ने मूढ़ता से कहा।

'लड़ाई शुरू होने से पहले ही हमारी काफी हड्डियाँ टूटेंगी!' लिटिल रूसी ने विनोद-पूर्वक उत्तर दिया।

इसी तरह आधी रात तक चर्चा होती रही। मण्डली भंग होते ही सबसे पहिले व्यसोवशचिकोव और लाल बालों का युवक उठकर चले। यह बात भी मा के हृदय में न जाने क्यों खटकी।

'हूँ! कैसे जल्दी से भागे!' उसने सिर हिलाते हुए सोचा।

'क्या तुम मुझे घर तक पहुँचाने चलोगे, नखोदका?' नटाशा ने पूछा।

'हाँ-हाँ, अवश्य!' लिटिल रूसी ने उत्तर दिया।

नटाशा उठकर रसोई घर में जब अपना लबादा पहनने गई तो मा ने उससे कहा—तुम्हारे मोजे इस ठण्डे मौसम के लिए बड़े पतले हैं। मैं तुम्हारे लिए एक जोड़ी ऊनी मोजे बुन दूँ?

'धन्यवाद, आपकी कृपा के लिए धन्यवाद! ऊनी मोजों से मेरे पैर छिल जाते हैं!' नटाशा ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया।

'मैं ऐसे मोजे बना दूँगी कि तुम्हारे पाँव नहीं छिलेंगे।'

नटाशा मा की ओर आश्चर्य से देखने लगी और उसके इस प्रकार अपनी ओर एकटक घूरने से मा को दुःख हुआ।

'मूर्खता के लिए मुझे क्षमा करो! मेरे दिल में जो बात आई, वह मैंने सद्भाव से तुमसे कह दी!' मा ने मन्द स्वर मे कहा।

'तुम बड़ी कृपालु हो!' नटाशा ने उसी स्वर में उत्तर दिया और स्नेह से मा का हाथ दबाकर जल्दी से बाहर निकल गई।

'गुडनाइट, मा!' लिटिल रूसी ने मा की आँखों में देखते हुए कहा। और उसका झुका हुआ शरीर भी नटाशा के पीछे-पीछे ड्यौढ़ी में चला गया।

मा ने बेटे की ओर देखा। वह कमरे के द्वार पर खड़ा मुस्करा रहा था।

'आज शाम बड़ी अच्छी गुजरी!' वह उत्साह से सिर हिलाते हुए बोला—बड़ी ही अच्छी गुजरी! परन्तु अब जाकर सो जाओ, मा! तुम्हें सोने के लिए बहुत देर हो गई है!

'हाँ, जाती हूँ! तुमको भी तो सोने के लिए देर हो गई है!' यह कहती हुई मा मेज पर से तश्तरियाँ उठा-उठाकर इकट्ठी करने लगी। वह सन्तुष्ट थी। उसका मन बड़ा प्रफुल्लित था। उसे इस बात पर बड़ी खुशी हो रही थी कि सारा काम अच्छी तरह शान्तिपूर्वक पूरा हो गया।

'तुमने इन लोगों को बुलाकर अच्छा किया पाशा! सब भले लोग हैं। लिटिल रूसी बड़ा सच्चा आदमी है! वह लड़की कौन है! बड़ी तीक्ष्ण बुद्धि की है!'

'एक शिक्षिका है।' पवेल ने कमरे में टहलते हुए उत्तर दिया।

'बेचारी कितने कम कपड़े पहने थी! कितने कम! जरा देर में शीत लग सकती है! उसके घरवाले कहाँ रहते हैं!'

'मास्को मे।' पवेल ने मा के सामने ठहरकर उत्तर दिया—उसका बाप बहुत अमीर है। वह बर्तनों का बड़ा व्यापारी है, और उसके पास बहुत-सा धन है। परन्तु उसने इस लड़की को इस आन्दोलन में भाग लेने के कारण घर से निकाल दिया है। नटाशा सुख और समृद्धि मे पलकर बड़ी हुई थी। उसने जब जो चाहा और माँगा वह सदा पाया था। और अब वह रात को चार-चार मील अन्धकार और शीत में अकेली जाती है।

मा यह सुनकर हक्का-बक्का रह गई। कमरे के मध्य में खड़ी होकर वह लड़के की तरफ गूँगी-सी घूरने लगी। फिर उसने धीरे से पूछा—क्या वह यहाँ से अब शहर गई है?

'हाँ!'

'उसे डर नहीं लगेगा !'

'नहीं !'—पवेल ने मुस्कराते हुए कहा ।

'इतनी रात को क्यों गई ! रात को यहीं मेरे साथ सो सकती थी !'

'नहीं, यह ठीक नहीं है । सुबह लोग उसे यहाँ देखते । हम लोग उसका यहाँ आना जाहिर नहीं करना चाहते । न वही इस बात को पसन्द करेगी !'

मा के हृदय में फिर पहली चिन्ताएँ उमड़ उठीं ; और उसने खिड़की से बाहर ध्यानपूर्वक देखते हुए पूछा—पाशा, मेरी समझ मे नहीं आता कि तुम्हारे इस किताबें पढ़ने मे खतरे की बात अथवा गैरकानूनी बात क्या है ? तुम कोई बुरा काम तो नहीं कर रहे हो, क्यों ?

मा की समझ में अभी तक यह बात अच्छी तरह नहीं आई थी कि उसके लड़के का व्यवहार कहाँ तक उचित अथवा अनुचित था ; और उसके कारण कौन-सी आपत्तियाँ खड़ी हो सकती थी । अस्तु, वह पवेल से यह जानने के लिए उत्सुक थी । पवेल ने गभीरता से मा की आँखों मे देखा और दृढ़ स्वर में कहा—हम जो कुछ करते हैं उसमे बुरा कुछ भी नही है ; और न कभी भविष्य मे उसमे कोई बुराई आयेगी । परन्तु फिर भी हम लोगों को जेल में डाला जायगा । यह बात भी मा तुम्हें अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए । यह सुनते ही मा के हाथ काँप उठे । 'भगवान किसी-न-किसी तरह तुम्हें बचायेंगे ।' उसने डूबी हुई आवाज में कहा ।

'नहीं ।' लड़के ने स्नेहपूर्वक, पर दृढ़ता से कहा —नहीं, मैं झूठ कहकर तुम्हें धोखे मे नहीं रखना चाहता ! हम लोग नहीं बच सकते ! फिर वह धीरे-धीरे मुस्कराता हुआ बोला—अच्छा अब जाकर सो जाओ, मा ! तुम थक गई होगी, गुडनाइट !

अकेली रह जाने पर मा खिड़की के पास जाकर खड़ी हो गई, और वहाँ खड़ी होकर सड़क की तरफ देखने लगी । बाहर कड़ाके की ठण्ड पड़ रही थी । चारों ओर उदास निर्जनता का राज्य छा रहा था । हवा गुर्राती और सनसनाती हुई हिमाच्छादित अन्धकार मे सोये हुए मकानों की छतों पर से बर्फ के पालों को उड़ा रही थी । दीवारो से टकराकर और उनके कान में कुछ कहकर वह जमीन पर गिरती थी और सूखी बर्फ के पालों के सफेद बादलो को गली मे ढकेल-ढकेलकर बहा देती थी । 'ओ स्वर्ग मे बसनेवाले प्रभु ईशु, हम पर दया करो !' मा खड़ी-खड़ी प्रार्थना करने लगी ।

उसके हृदय मे भय भर रहा था और आँखों मे आँसू झलक रहे थे ; क्योंकि उसको अपनी आँखों के आगे रात्रि में पक्षी की तरह फड़फड़ाती हुई, वह आपत्ति आती-सी दीख रही थी, जिसका जिक्र उसके लड़के ने ढिठाई और धैर्य से किया था । मा की आँखों के सामने दूर तक मैदान में बर्फ का पड़ाव फैला था । हवा सफेद-सफेद चिथड़े मैदान मे उड़ाती हुई दौड़ लगा रही थी, और अपनी बाँसुरी से फूँक-फूँककर ठण्डे और तीक्ष्ण स्वर निकालती थी । और इस हिमाच्छादित विशाल मैदान के उस पार निर्जन अन्धकार में एक छोकरी की छाया झूम-झूमकर जाती हुई-सी दीख रही थी । पवन उसके

वस्त्र उड़ा ले जाने और पाँवों से जूझ-जूझकर उसकी गति रोकने का प्रयत्न करती हुई उसके मुँह पर बर्फ के चुभते हुए थप्पड़ पर थप्पड़ लगा रही थी। अस्तु, उस बेचारी का चलना कठिन हो रहा था, उसके नन्हें-नन्हें पाँव बर्फ में धँसे जाते थे। परन्तु ठण्ड से ठिठुरी हुई, भयभीत वह लड़की निर्दयी बवण्डर में पड़ जानेवाले एक तिनके की तरह आगे को झुकी हुई चली जा रही थी। उसके दाहनी ओर, दलदल के ऊपर, जंगल की काली-काली दीवार थी, और नंगे चिनार और सनौवर के काँपते हुए वृक्षों में से एक कराहता हुआ रुदन-सा आ रहा था। उस पार, बहुत दूर, सामने शहर की बत्तियाँ टिम-टिमा रही थीं।

'ईशु! ईशु! हम लोगों पर दया करो!' ठण्ड और अभी तक समझ में न आने-वाले एक भय से काँपती हुई मा फिर बड़बड़ाई।

———

चौथा परिच्छेद

एक के बाद एक दिन, सुमिरिनी के दानों की तरह आ-आकर चले गये। इसी प्रकार हफ्ते और महीने चले गये। प्रत्येक शनिवार को पवेल के घर में उसके मित्रों का जमाव होता था। और यह जमाव एक लम्बे जीने की सीढ़ियों की तरह जिसका ऊपरी सिरा लापता था, धीरे-धीरे ऊपर को उठाते हुए इन लोगों को कहीं दूर अदृश्य में लिये जाता था। इस जमाव में नये-नये लोग आने लगे थे। पवेल का छोटा-सा कमरा ठसाठस भर जाता था; और वह इन जमावों के लिए छोटा पड़ने लगा था। नटाशा हर शनिवार की रात को ठण्ड से ठिठुरती हुई, थकी हुई, परन्तु सदा अपने अनन्त उत्साह से ताजी और सजीव आती थी। मा ने मोजे बनाकर अपने हाथों से उसके छोटे-छोटे पैरों में पहना दिये। इस पर नटाशा पहले तो हँसी, मगर फिर वह एकदम गम्भीर हो गई और विचार में डूबी हुई मा से मन्द स्वर मे बोली—मेरी एक दाई थी। वह भी मुझे बड़ा प्यार करती थी। कैसी आश्चर्य की बात है, निलोवना! मज़दूर इतना कष्ट-पूर्ण, इतना अपमानित जीवन व्यतीत करते हैं, परन्तु उनमें फिर भी उन लोगों से कहीं अधिक!' और इतना कहकर वह किसी दूर, अपने से बहुत दूर, किसी वस्तु की तरफ हाथ हिलाती हुई इशारा करने लगी।

'देखो, तुम कैसी विचित्र स्त्री हो!' बुढ़िया ने उत्तर में कहा।

'तुमने अपना घरबार और सब कुछ त्याग दिया है।' मा अपना विचार पूरी तरह प्रकट न कर सकी और एक साँस भरकर चुपचाप नटाशा के मुख की ओर कृतज्ञता से देखने लगी; किस बात के लिए कृतज्ञता प्रकट कर रही थी, यह वह स्वयं नहीं जानती थी। मा नटाशा के सामने फर्श पर जा बैठी और नटाशा मुस्कराती हुई, किसी गम्भीर विचार में डूब गई।

'मैंने अपना घर त्याग दिया!' नटाशा ने सिर नीचे को झुकाते हुए दुहराया—इसमे तो मैंने कुछ त्याग नहीं किया! मेरा बाप मूर्ख, उजड्ड और शराबी है! वही हाल मेरे भाई का भी है। मेरी सबसे बड़ी बहिन ने, बेचारी अभागी दुखिया ने एक बूढ़े, धनवान, लालची और मगज़चट आदमी से विवाह कर लिया, परन्तु अपनी मा के लिए मुझे बड़ा दुःख होता है। वह तुम्हारी ही तरह एक सीधी-सादी स्त्री है—कुचली, दबी, डरी हुई रहती है! नन्हीं चुहिया की तरह दौड़-दौड़कर बेचारी घर का कामकाज करती है और सबसे डरती रहती है! कभी-कभी उसको देखने को मेरा बड़ा मन चाहता है, मेरी मैय्या!'

'बेचारी!' मा ने दुःख से सिर हिलाते हुए कहा। परन्तु फिर लड़की ने शीघ्रता से सिर ऊँचा करके जोर से कहा—नहीं, हरगिज नहीं! कभी-कभी मेरे मन में ऐसा आनन्द

आता है, ऐसा सुख होता है—है !' यह कहते हुए उसका चेहरा पीला पड़ गया और उसकी आस्मानी आँखें चमकने लगीं। फिर मा के कन्धों पर हाथ रखकर वह अपने अन्तःकरण से आनेवाले एक गम्भीर मन्द स्वर में, आनन्द में तैरती हुई-सी कहने लगो—काश कि तुम जानती, तुम समझती कि हम लोग कितने महान, कितने आनन्ददायी कार्य में लगे हुए हैं ' खैर एक दिन तुम्हारा दिल तुम्हें भी समझा देगा ' उसने श्रद्धा-पूर्वक दृढ़ता से कहा। एक ईर्ष्या का-सा भाव मा के हृदय में उठा, और फर्श पर से उठते हुए उसने एक नैराश्य और शोक-पूर्ण स्वर में कहा—मेरी उमर बीत गई। मैं निपट मूर्ख अब इस बुढ़ापे में क्या सीखूँगी !'

पवेल अब प्रायः और देर तक बोलने लगा था और सरगर्मी से चर्चाओं में भाग लेता था। वह दिन-दिन दुबला होता जाता था। मा को लगा कि जब वह नटाशा से बातें करता है, अथवा उसकी ओर देखता है, तब उसकी आवाज में कोमलता और उसकी आँख में स्नेह भर आता है और उसके सारे ढंग और हाव-भाव में सरलता आ जाती है। 'ईश्वर करे' मा अपने मन में सोचती—'नटाशा मेरी बहू हो !' और यह विचार आते ही वह मन-ही-मन मुस्करा उठती। जब कभी बहस बढ़ जाती और गरमागरमी का तूफान उठने लगता, तब लिटिल रूसी उठता और घण्टी के लटकन की तरह अपना शरीर हिलाता हुआ गुञ्जित स्वर में सरल और मिष्ट वचन कहकर सबका जोश ठण्डा करता और उन्हें ध्येय की याद दिलाता। व्यसोविशचिकोव हमेशा सबको कहीं जल्दी-जल्दी हँककर ले जाने की कोशिश किया करता था। वह और लाल बालों का नवयुवक, समोयलोव ही, सारे टण्टों की शुरूआत करते थे। गोल सिर और सफेद भौंहों और पलकोंवाला, आइवान बुनिक, जो ऐसा लगता था, मानो सूखने के लिए लटका दिया गया हो अथवा अरीठे से धो दिया गया हो। और घुँघराले बाल और ऊँची भृकुटियों का, फेड्यामाजिन दोनों हमेशा उनका साथ देते थे। शर्मीला याकोब सोमोव, जो हमेशा स्वच्छ और बाल काढ़े रहता था, मितभाषी था, और गम्भीर मन्द स्वर से पवेल और क्षुद्र रूसी का समर्थन करता था।

कभी-कभी नटाशा के बजाय किसी दूरवर्ती प्रान्त का निवासी एक ऐलेक्सी आइवानोविश नाम का मनुष्य शहर से आता था। वह चश्मा पहनता था। उसकी दाढ़ी चमकीली थी, और वह एक विचित्र संगीतकारी स्वर में बोलता था। वह किसी बड़े दूर देश का रहनेवाला लगता था। वह साधारण बातों की, घर-गृहस्थी की, बाल-बच्चों की, व्यापार की, पुलिस की, आटा-दाल के भाव की, और दूसरी दैनिक आवश्यकताओं की चर्चा करता था ; और प्रत्येक वस्तु के संगठन में वह कपट, अव्यवस्था और अज्ञान का दिग्दर्शन करता था—कभी-कभी इन बातों की चर्चा वह विनोदपूर्ण शब्दों में करता था। परन्तु हमेशा प्रचलित प्रबन्धों से प्रजा की निश्चय हानि ही वह दिखाता था।

मा को लगता था कि वह किसी दूसरे देश से इधर आ निकला था। किसी ऐसे देश से जहाँ सब लोग सरल, सत्य और सहज जीवन व्यतीत करते थे। अस्तु, उसे इधर

की हर वस्तु विचित्र लगती थी, जिससे उसको इधर के जीवन में घुल-मिल जाना और इस जीवन-प्रवाह को अनिवार्य्य मान लेना कठिन लगता था। उसको इस जीवन से कष्ट होता था; अस्तु, उसने इस जीवन को अपने स्वप्नों के अनुसार पुनः निर्माण करने का गम्भीर संकल्प कर लिया था। इस मनुष्य का मुख कुछ-कुछ पीला था; उसकी आँखों के चारों ओर झुर्रियों के क्षीण मण्डल चमकते थे; उसकी आवाज मन्द थी, और उसके हाथ हमेशा गरम रहते थे। मा से मिलने पर वह मा का पूरा हाथ अपनी लम्बी मजबूत उँगलियों मे खोलकर इस प्रेम से हाथ मिलाता था कि मा के हृदय से भय और संकोच का भार बहुत कुछ कम हो जाता था।

कुछ और लोग भी शहर से आते थे। उनमें सबसे अधिक एक लम्बी सुगठित शरीर की छोकरी आती थी, जिसका चेहरा पतला और जर्द था और आँखे बड़ी-बड़ी थीं। उसका नाम सशेन्का था। उसका व्यवहार और उसकी चाल कुछ-कुछ मर्दों की-सी थी। क्रोध आने पर वह काली-काली भृकुटियाँ ऊपर को चढ़ा लेती थी, और बोलते हुए उसकी सीधी नाक के पतले-पतले नथने काँपने लगते थे। सबसे पहिले उसी ने इस जमाव में कहा था कि 'हम लोग समाजवादी है।' और जिस समय उसने यह शब्द कहे थे, उसकी आवाज ऊँची और दृढ़ हो गई थी।

मा उसके मुँह से इन शब्दों को सुनकर भय से मूक बनकर उसके मुँह की ओर ताकने लगी थी। परन्तु सशेन्का ने आँखें मींचते हुए, दृढ़ता और निश्चय से कहा था—जीवन के पुनरुत्थान के लिए हमें अपनी सारी शक्ति लगा देनी चाहिए; और यह भी अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि इस प्रयत्न के बदले हमें कुछ मिलनेवाला नहीं है।

मा ने सुना था कि समाजवादियों ने जार को मार डाला था। उसकी जवानी के दिनों में यह घटना हुई थी। लोग कहते थे कि जार ने किसान-दासों की प्रथा उठा दी थी, इसलिए जमींदारों ने क्रुद्ध होकर उससे बदला लेने के लिए शपथ खाई थी कि जब तक जार का काम तमाम नहीं हो जायगा, तब तक हम अपने सिरों से बाल नहीं कटायेंगे। इन्हीं लोगों को उस समय लोग समाजवादी कहते थे। अस्तु, मा की समझ मे नही आया कि पवेल और उसके मित्र समाजवादी क्यों हैं। सबके चले जाने पर मा ने पवेल से पूछा—पाशा, तू समाजवादी है?

'हाँ।' उसने मा के सामने, सदा की अपनी टेक के अनुसार चट्टान की तरह अपना शरीर सीधा करते हुए उत्तर दिया—क्यों?

मा ने एक गहरी साँस भरते हुए आँखें नीची करके पूछा—क्यों पाशा, यही लोग जार के विरोधी हैं? इन्होंने ही जार की हत्या की थी?

मा की बात सुनकर पवेल कमरे में टहलने लगा। कुछ देर के बाद उसने मुँह पर हाथ फेरते हुए, मुस्कराकर कहा—हमको वैसा करने की जरूरत नहीं है।

फिर पवेल देर तक मा को धीमे-धीमे गम्भीरता-पूर्वक समझाता रहा, और मा उसके

चेहरे में देखती हुई सोचती थी—यह कोई बुरा काम नहीं करेगा! नहीं, इसके हाथों किसी की बुराई नहीं हो सकती।

इसके बाद इस भयंकर समाजवादी शब्द का दिन-प्रति-दिन अधिक प्रयोग होने लगा और नवीनता की कटुता मिट जाने पर इस शब्द से भी मा और दूसरे बहुत-से शब्दों की तरह, जो उसकी समझ में नहीं आते थे, अच्छी तरह परिचित हो गई। परन्तु सशेन्का से मा प्रसन्न नहीं थी। जब वह आती थी तब मा की तबियत घबराती थी। एक दिन मा ने अपने चेहरे के भाव से असन्तोष प्रकट करते हुए लिटिल रूसी से कहा—सशेन्का कितनी कठोर है! सब पर अपना हुक्म चलाती है! तुम यह करो, तुम वह करो।

लिटिल रूसी खिलखिलाकर हँसा।

'ठीक कहा, मा! बिल्कुल ठीक कहा! सुनते हो पवेल?' और फिर मा की तरफ विनोदपूर्वक आँखें मिचकाते हुए उसने मुस्कराती हुई आँखों से कहा—मा, रस्सी जल जाती है, पर ऐंठन नहीं जाती। खून का असर जाना बहुत मुश्किल है।

पवेल रूखे स्वर में बोला—सशेन्का अच्छी स्त्री है। और इतना कहकर उसके चेहरे पर क्रोध हो आया।

'हाँ, सो तो ठीक है।, लिटिल रूसी ने उसका समर्थन करते हुए कहा—परन्तु वह यह नहीं समझती कि उसे...और यहाँ से दोनों मे किसी बात पर ऐसी बहस छिड़ गई जो मा की समझ में आना बन्द हो गई। मा देखती थी कि सशेन्का पवेल पर सबसे अधिक सख्ती करती है और कभी-कभी उसे झिड़कती भी है। परन्तु पवेल मुस्कराकर ही चुप रह जाता था और इस लड़की की तरफ भी वह उसी कोमल दृष्टि से देखता था, जिससे वह पहिले नटाशा को देखा करता था। यह भी मा को नापसन्द था।

पवेल के घर पर जमावों की संख्या बढी। सप्ताह में दो बार लोग मिलने लगे। और जब मा ने देखा कि उसके लड़के, लिटिल रूसी, सशेन्का, नटाशा, ऐलेक्सी आईवानोविश और शहर से आनेवाले दूसरे लोगों का बातें नवयुवक बड़े चाव से सुनते हैं, तो उसके मन से भी भय धीरे-धीरे भागने लगा। इन लोगों को देखकर उसे अपनी जवानी के दिनों की याद आती और वह दुःख से सिर हिलाती।

कभी-कभी ये लोग गीत भी गाते थे—साधारण लोकगीत, उच्च-स्वर में आनन्द-मग्न होकर गाते थे। परन्तु प्रायः यह लोग नये-नये गीत गाते थे, जिनके शब्द संगीत के स्वरों से मिले हुए निकलते थे। उनका यह संगीत एक विचित्र और उदास आलाप-सा होता था। इन गीतों को वे अर्ध स्वरों में, विचार में डूबे हुए, गम्भीरता से, उसी प्रकार गाते थे जैसे गिरिजों में भक्त-गण ईश्वर के भजन गाते हैं। गाते हुए इनके चेहरे कान्तिहीन, परन्तु आवेशपूर्ण हो जाते थे और उनके गूँजते हुए शब्दों से एक महान् शक्ति की झंकार निकलती था।

'अब इन गीतों को, बाहर निकलकर सड़कों पर गाने का समय आ गया है।' व्य-सोवशचिकोव मुँह लटकाये हुए कहता।

कभी-कभी मा को इन लोगों के एकाएक आनन्द में भरकर उछलने-कूदने, जोर से हँसने और शोर मचाने पर विस्मय होता था ; क्योंकि उनके इस आह्लाद का कारण उसकी समझ में नहीं आता था। यह प्रायः उस दिन होता था, जिस दिन वे अखबारों में दूसरे देशों के श्रमजीवियों के सम्बन्ध में कुछ पढ़ लेते थे। उसको पढ़कर उनकी आँखें हर्ष और उत्साह से चमक उठती थीं ; और वे अजीब तौर पर बच्चों की तरह आनन्दोन्मत्त-से हो जाते थे। कमरा उनके आह्लाद-नाद से गूँज उठता था और ये एक दूसरे की पीठ स्नेह से ठोंकने लगते थे। 'हमारे फ्रांसीसी श्रमजीवी बन्धुओं के क्या कहने हैं!' उनमें से कोई अपने ही आनंद से उन्मत्त होकर चिल्लाता।

'इटली के मजदूर बन्धुओं की जय हो!' कभी वे सब एक साथ चिल्लाते। और इन जयघोषों और आह्लाद को उन दूरवर्ती श्रमजीवी बन्धुओं के लिए आकाश में उठाकर, जिन्होंने न तो इन्हें कभी देखा था और न इनकी भाषा ही समझते थे, ये लोग मान-सा लेते थे कि उन लोगों ने भी इनके जयघोषों को सुन लिया ; और उनके कृत्यों पर इनका उत्साह और आनंद जान लिया। लिटिल रूसी कहता, और कहते हुए उसकी आँखे हर्ष से चमकतीं, क्योंकि उसका प्रेम दूसरों के प्रेम से अधिक विस्तृत था—'भाइयो, उन लोगों को हमें पत्र लिखना चाहिए, जिससे उन्हे भी इस बात का पता लगे कि सुदूर-वर्ती रूस में भी उनके मित्र रहते हैं। उनके श्रमजीवी बधु जो उसी विश्वास में श्रद्धा रखते हैं और उसी धर्म को मानते हैं, जिनको वे मानते हैं। उनके बंधु जिनका उद्देश्य भी वही है जो उनका है और जो उनकी विजय को अपनी विजय मानकर, उनकी हर विजय पर हर्ष मानते हैं!' और फिर सब प्रसन्नमुख, स्वप्न-सा देखते हुए जर्मन, इटेलियन, अँगरेज, स्वीडिस और दूसरे सभी देशों के श्रमजीवियों की अपने मित्रों की भाँति देर तक चर्चा करते थे, मानों वे सब उनके बड़े घनिष्ठ हों, जिनके प्रति बिना देखे ही उन्हें प्रेम और सम्मान था, और जिनके सुख से उन्हें सुख और दुःख मे दुःख होता था।

इस प्रकार इस छोटे-से कमरे में दुनिया-भर के श्रमजीवियों के एक सार्वभौम कुटुम्ब का विशाल भाव उत्पन्न होता—उन दुनिया-भर के श्रमजीवियों का, जो बेचारे दुनिया के मालिक होकर भी दुनिया के गुलाम रहते हैं ; उन श्रमजीवियों की एक अखण्ड बिरा-दरी का भाव, जो पुराने अन्ध-विश्वासों के बन्धनों से मुक्त होकर अपने आपको जिन्दगी का नया मालिक मानने लगे थे। यह भाव इन सबकी आत्मा को मिलाकर एक करता और यही भाव मा के हृदय को भी द्रवित करता, गोकि उसकी समझ में यह परिवर्तन अभी तक नहीं आता था। परन्तु यह भाव मानों अपनी शक्ति से, अपने उल्लास से, अपनी विजयी, नवीन स्फूर्ति से, अपनी उमङ्ग से, अपने दुलार से, अपनी आशा से, उसको ऊपर उठाता था और उत्साहित करता था।

'तुम लोग कैसे विचित्र हो!' मा ने एक दिन लिटिल रूसी से कहा—सभी तुम्हारे बन्धु हैं—आरमोनियन, यहूदी, आस्ट्रियन सभी। तुम उन सभी की अपने मित्रों की तरह चर्चा करते हो, और उन सबके दुःख में दुखी और सुख में सुखी होते हो!'

'सबके दुःख में दुखी, हाँ प्यारी मा, और सबके सुख में सुखी ! सारी दुनिया ही हमारी है ! श्रमजीवियों का सारा संसार है ! हमारा न तो कोई एक राष्ट्र है और न हमारी कोई एक जाति है ! दुनिया-भर में ही हमारे बन्धु हैं और शत्रु हैं ! सारे श्रम-जीवी हमारे बन्धु हैं और सारे सरमायेदार और उनके साथी सभी अधिकारी हमारे शत्रु हैं । जब हम श्रमजीवियों को दुनिया में बसनेवाली अपनी महान संख्या का ज्ञान होता है, तब हम लोगों को अपने भावों की विशाल शक्ति का पता चलता है ; जिससे हमारे हृदय में ऐसा आनन्द आता है, ऐसा आह्लाद होता है, हृदय ऐसा आनन्दोन्मत्त हो जाता है कि हमारी अन्तरात्मा के सारे तार झन्कार उठते है ! और मा, फ्रांसीसी और जर्मनों का भी अपनी जीवन-समस्या पर विचार करके यही हाल होता है ! इटली के श्रमजीवियों के भी यही भाव हैं ! हम, सब-के-सब श्रमजीवी, एक ही मा की सन्तान हैं ! दुनिया-भर के श्रमजीवियों की एक सार्वभौम बिरादरी की महान अजेय श्रद्धा ही हमारी सबकी मा है ! यह श्रद्धा दिन-दिन बढ़ रही है, और बढ़ती हुई सूर्य को तरह हमे उष्णता दे रही है ! न्याय के आकाश में हमारा नया विश्वास एक नये सूर्य की तरह है—हमारे श्रमजीवियों के हृदय के न्याय-आकाश में । कोई भी हो, कहीं भी हो, हर समाजवादी हमारा बन्धु है, अब और हमेशा के लिए, सारे युगों और सारे काल के लिए !' यही नशा, यही बच्चों का-सा हर्षातिरेक, यही ज्वलन्त दृढ़ श्रद्धा पवेल और उसके मित्रों में अधिक-अधिक आने लगी थी और दिन-प्रति-दिन बढ़ती हुई अधिक-अधिक शक्तिवान हो रही थी । मा यह सब देखती और उसे लगता था कि सचमुच संसार मे एक जग-मगाती ज्योति जन्म ले रही है, जो सामने आकाश में सूर्य की भाँति चमकती हुई उसे प्रत्यक्ष लगती थी ।

निकोले का बाप जब चोरी करता हुआ फिर पकड़ा जाता और पकड़कर जेल में डाल दिया जाता, तब निकोले बन्धुओं से कहता—चलो यार, अब मेरे घर पर जमाव हो सकेगा ! पुलिस हम लोगों को चोर समझेगी ; और चोरों पर, कुछ ले-लिवाकर, पुलिस कृपा रखती ही है । प्रतिदिन कारखाने का काम समाप्त होने पर पवेल के साथ, कोई-न-कोई एक साथी, उसके घर आता, जो उसके साथ बैठकर पढ़ता और किताबों मे से कुछ लिखता । ये लोग अपनी धुन में इतने मशगूल रहते थे कि कारखाने से लौटकर हाथ-मुँह तक नहीं धोते थे । हाथ में किताबें लिये-लिये ही वे खाना खाते और चाय पी लेते थे । दिन पर दिन उनकी चर्चाएँ मा की समझ मे कम आने लगी थीं ।

'हम लोगों को एक अपना अखबार निकालना चाहिए !' पवेल प्रायः कहता था ।

दिन-दिन इन लोगों के जीवन में दौड़-धूप और बेचैनी बढ़ने लगी—वे एक घर से दौड़कर दूसरे में जाते, एक पुस्तक छोड़कर दूसरी पुस्तक पढ़ते, जिस प्रकार मधु-मक्खियाँ एक फूल से दूसरे फूल पर उड़ी-उड़ी फिरती हैं ।

'हम लोगों के बारे में गाँव में घुस-पुस होने लगी है !' एक दिन व्यसोवश्चिकोव ने कहा—अब हम लोगों को यहाँ से शीघ्र ही खिसक देना चाहिए ।

'बटेर जाल में फँसने के लिए ही होती है !, लिटिल रूसी ने उससे उत्तर मे कहा।

मा का लिटिल रूसी पर स्नेह दिन पर दिन बढ़ता जाता था। जब वह उसको अम्मा कहके पुकारता था तब मा को ऐसा लगता था, मानो कोई बच्चा अपने नन्हे-नन्हें हाथों से उसके गाल थपथपाता हो। रविवार के दिन, यदि पवेल को समय न रहता तो लिटिल रूसी ही मा के लिए लकड़ियाँ चीर देता। एक दिन एक लकड़ी का तख्ता कन्धे पर रखे हुए वह आया और बड़ी होशियारी से ड्योढ़ी की टूटी हुई सीढ़ी का तख्ता निकालकर उसने नया तख्ता उसके स्थान पर लगा दिया। उसने इसी प्रकार एक दिन मकान के टूटे बाड़े की चुपचाप मरम्मत कर दी। काम करते हुए वह प्रायः मुँह से सीटी बजाता था, जिसकी आवाज बड़ी मधुर, उदास और बड़ी अरमानों से भरी होती थी। एक बार मा ने अपने लड़के से कहा—लिटिस रूसी भी अपने घर में ही रहे तो तुम दोनों को बड़ा सुभीता हो जाय। तुमको एक दूसरे से मिलने के लिए फिर इतनी दौड़-धूप न करनी पड़े।

'तुम्हे घर मे भीड़ इकट्ठी करके कष्ट करने की क्या जरूरत है ?' पवेल ने अपने कन्धे हिलाते हुए मा से कहा।

'जिन्दगी-भर मैंने व्यर्थ बातों के लिए कष्ट उठाया। एक भले आदमी के लिए थोड़ा-सा कष्ट उठा लूँगी तो मेरा क्या बिगड़ जायगा ?'

'जैसी तुम्हारी इच्छा! उसके यहाँ आ जाने से मुझे तो प्रसन्नता ही होगी।'

अस्तु, लिटिल रूसी भी आकर फिर उन्हीं के घर में रहने लगा।

पाँचवाँ परिच्छेद

गाँव के किनारे पर बसे हुए इस छोटे-से मकान की तरफ अब लोगों का ध्यान आकर्षित होने लगा था और उसकी दीवारों पर बीसियों सन्देहपूर्ण दृष्टियाँ पड़ने लगी थीं। लोग इस घर के बारे में तरह-तरह की अफवाहें उड़ाते थे।

कुछ लोग इस मकान के भीतरी रहस्यों का सुराग लगाने का प्रयत्न भी करते थे। वे रात को चुपके-चुपके आकर खिड़कियों में से अन्दर झाँक-झाँककर देखते थे। कभी-कभी कोई यकायक आकर खिड़कियों के शीशे थपथपाता था और फिर जल्दी से डरकर भाग जाता था।

एक दिन गाँव का कलवार व्लेसोवा को सड़क पर मिल गया। वह एक बूढ़ा, परंतु शौकीन आदमी था। वह हमेशा एक काला रेशमी रूमाल अपनी लाल-लाल गुदगुदी गर्दन में बाँधे रहता था और एक मोटी हल्के बैंगनी रंग की मखमल की जाकेट पहने रहता था। उसकी तेज चमकती हुई नाक पर, कछुए की कमानी की एक ऐनक रहती थी, जिसके कारण गाँव में उसका उपनाम 'सींग की आँखें' पड़ गया था। मिलते ही उसने एक साँस में उत्तर के लिए न ठहरते हुए व्लेसोवा पर सूखे और चिड़चिड़े शब्दों की झड़ी लगा दी। कहने लगा—

'कैसी हो निलोवना! अच्छी तो हो! तुम्हारा लड़का कैसा है! उसके विवाह की तैयारी कर रही हो न! क्यों! अब तो उसकी विवाह की उमर हो गई है। जितनी जल्दी लड़कों का विवाह हो जाय उतना ही मा-बाप के लिए अच्छा होता है। गृहस्थी मे पड़कर आदमी अपना शरीर और अपनी आत्मा दोनों ही ठीक रखता है। घर-गृहस्थी में पड़कर आदमी की वैसी ही स्थिति हो जाती है जैसी सिरके में पड़कर गगनधूल की। यदि वह मेरा लड़का होता तो मैं उसकी फौरन ही शादी कर देता। मनुष्य-नामधारी पशु पर आजकल कड़ी दृष्टि रखने की जरूरत है। अब लोग अपनी अक्ल के अनुसार रहने की चेष्टा करते हैं। लोग अब अक्ल के चक्कर में पड़ने लगे हैं। और वे ऐसे-ऐसे काम करते हैं जो सरासर जुर्म है। नौजवान अब ईश्वर के स्थान गिरिजों के पास तक नहीं फटकते और सार्वजनिक स्थानों से घृणा करते हैं। छिप-छिपकर दूर जाकर, एक दूसरे से गुपचुप-गुपचुप कोनों में मिलते हैं और वहाँ बैठकर धीरे-धीरे आपस में कानाफूसी करते हैं। इस प्रकार कोनों में बैठकर कानाफूसी करने की क्या जरूरत है! भला बताओ! वही बातें शराबखाने जैसे सार्वजनिक स्थान में बैठकर सबके सामने कहने की उनकी हिम्मत क्यों नहीं होती! या कोई छिपाने की बात है! कोई रहस्य है! रहस्य का स्थान तो सिर्फ एक हमारा पवित्र ईसाई धर्म है जो अनादि काल से चला आता है। इधर-

उधर कोनों में पैदा होनेवाले दूसरे सब रहस्य केवल मायाजाल हैं। अच्छा, मैं जाता हूँ, बन्दगी ! बन्दगी !'

इतना कहकर उसने बड़े अन्दाज से अपना हाथ उठाते हुए सिर से टोपी उतारी, और उसको हवा में हिलाता हुआ मा को अपनी बातों से भौंचक करके परेशानी में गोते लगाता हुआ छोड़कर चला गया।

मेरया कोरसुनोवा नाम की लुहारिन विधवा पड़ोसिन ने भी जो कारखाने में खोमचा लगाती थी, बाजार में मा से मिलने पर कहा—निलोवना, अपने लड़के की खबर रखना !

'क्यों, क्या है ?'

'लोग उसके बारे में तरह-तरह की सुस-पुस करते हैं !' मेरिया ने मा के कान में झुकते हुए धीरे से खबर दी—सच मेरी मैया ! लोग बुरी-बुरी बातें कहते हैं ! कहते हैं कि तुम्हारा लड़का एक दल बना रहा है, कोड़ेमारों का-सा एक गिरोह बना रहा है ! हाँ मैया, उन्हीं कोड़ेमारों का-सा गिरोह जो एक दूसरे को कोड़े मार-मारकर मार डालते हैं।

'चुप रह, बहुत बकवास मत कर, मेरया ! चुप रह !'

'मैं बकवास नहीं करती हूँ मैया, जो मैंने सुना है, वही तुमसे कहा है !'

मा ने घर में पहुँचकर जो बातें बाजार में सुनी थी, जाकर वे सारी बातें पवेल से कहीं। परन्तु पवेल सुनकर चुपचाप बेफिक्री से कन्धे हिलाने लगा, और लिटिल रूसी खिलखिलाकर हँसने लगा।

'गाँव की लड़कियों को भी तुम लोगों से शिकायत है !' मा कहने लगी—तुम लोग उनके आदर्श पति बन सकते हो, क्योंकि तुम सभी अच्छे और मेहनती, मजदूर हो, और नशा भी नहीं करते हो ! परन्तु तुम लोग तो उन बेचारियों की तरफ कभी आँख उठाकर भी नहीं देखते ! इसके अतिरिक्त लोग यह कहते हैं कि सन्देहजनक चरित्र की लड़कियाँ तुम्हारे पास आती हैं।

'हाँ ठीक है।' पवेल ने कहा और उसकी भौंहें घृणा और क्रोध से सिकुड़ गई।

'गन्दे नाले में पड़ी हुई चीजों से बदबू ही निकलती हैं !' लिटिल रूसी ने आह भरकर कहा—मा, तुम गाँव की इन मूर्ख छोकरियों को समझाती क्यों नहीं कि विवाह करके उन्हें ऐसा क्या मिल जायगा, जिसके लिए वे अपने पतियों से हड्डियाँ-पसलियाँ तुड़वाने के लिए इतनी अधीर हो रही हैं !

'बेचारी क्या करें !' मा ने कहा—वे अच्छी तरह जानती हैं, विवाह करके उन्हें क्या-क्या कष्ट उठाने पड़ेंगे। सब कुछ समझती हैं। परन्तु और वे क्या करें ! उनके इसके सिवाय और कौन-सा काम है ?

'उनकी समझ उल्टी है ! वरना विवाह के अतिरिक्त भी उनके लिए बहुत-से काम । ' पवेल ने कहा।

मा ने लड़के के कठोर मुख की ओर देखा और बोली—तो तुम उनको अकल

सीधी करने का प्रयत्न क्यों नहीं करते ? उनमें से कुछ होशियार छोकरियों को यहाँ क्यों नहीं बुलाते ?

'उससे कुछ लाभ नहीं होगा।' लड़के ने रूखे स्वर में कहा।

'कोशिश करके देखने में क्या हर्ज है !' लिटिल रूसी ने कहा।

कुछ सोचकर पवेल ने कहा—आपस मे जोड़े बनने लगेंगे। लड़के-लड़कियाँ आपस मे जोड़े बना-बनाकर घूमने लगेंगे। फिर उनमें से कुछ विवाह कर लेंगे, और बस, कहानी खत्म हो जायगी !

मा विचार में पड़ गई। पवेल के इस कट्टरपन से उसे चिन्ता होने लगी। मा देखती थी कि पवेल से उम्र मे कहीं अधिक लिटिल रूसी जैसे मित्र भी, उससे हर काम में सलाह लेते थे। मगर साथ ही मा को यह भी लगता था कि वे सब उससे डरते थे, क्योंकि मन-ही-मन कोई भी उसके इस कट्टरपन को पसन्द नहीं करता था।

एक दिन मा रात को सोने के लिए लेटी तो उसने देखा कि पवेल और लिटिल रूसी अभी तक बैठे-बैठे पढ़ रहे है। कुछ देर मे मा ने उन दोनों को फिर धीरे-धीरे आपस मे इस प्रकार बातें करते सुना।

'तुम जानते हो, मैं नटाशा को प्यार करता हूँ !' लिटिल रूसी ने पवेल से एकाएक धीरे से पूछा।

'हाँ, मैं जानता हूँ।' कुछ ठहरकर पवेल बोला।

'हाँ !'

मा के कान में लिटिल रूसी के उठकर टहलने की आवाज आई। उसके नंगे पैरो की धमक फर्श पर हुई और एक धीमी रंजीदा मुँह से बजनेवाली सीटी की कुछ देर तक ध्वनि आई। फिर वह बोलता हुआ सुनाई दिया—क्या वह भी इस बात को जानती है ?

पवेल चुप रहा।

'तुम क्या समझते हो !' लिटिल रूसी ने अपनी आवाज मन्द करते हुए फिर पूछा।

'हाँ, वह जानती है।' पवेल ने उत्तर दिया—और इसी लिए उसने अब हमारे जमावों में आने से भी इन्कार कर दिया है।

लिटिल रूसी के पाँव भारी होकर फर्श पर रगड़ने लगे और फिर उसके मुँह से बजनेवाली मन्द-मन्द सीटी की काँपती हुई ध्वनि कमरे में गूँज उठी। कुछ देर के बाद फिर उसने पूछा—और अगर मैं उससे कह दूँ !

'क्या !' बन्दूक की गोली की तरह पवेल के मुँह से यह प्रश्न निकला।

'कि मैं तुमको प्यार...' लिटिल रूसी ने कहना शुरू किया।

'क्यो !...' पवेल ने उसकी बात काट दी।

मा ने लिटिल रूसी को खामोश होते सुना और उसको ऐसा लगा कि वह मुस्करा रहा था।

'मैं समझता हूँ कि अगर किसी का किसी लड़की पर प्रेम हो तो उसको उस लड़की से अपना प्रेम जाहिर करना चाहिये। वरना उसके प्रेम का अर्थ ही क्या होगा?

पवेल ने जोर से अपनी किताब पटकर बन्द करते हुए कहा—और जनाब क्या अर्थ है?

इसके बाद दोनों बहुत देर तक चुप रहे।

'अच्छा तो फिर?' लिटिल रूसी ने आखिरकार पूछा।

'ऐन्ड्री, तुमको अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि तुम क्या करना चाहते हो।' पवेल ने धीरे से कहा—मान लो कि वह भी तुम्हें प्रेम करती है—गोकि मैं ऐसा नहीं समझता। परन्तु मान लो। और तुम्हारा विवाह हो जाय। तुम दोनों की बड़ी अच्छी जोड़ी भी बनेगी—बुद्धिजीवी और श्रमजीवी की जोड़ी। फिर तुम्हारे बच्चे होंगे, अ र उनके लालन-पालन के लिए तुम्हें कठिन परिश्रम करना पड़ेगा। और साधारण आदमियों की तरह तुम्हारा जीवन भी अपने लिए और अपने बाल-बच्चों के लिए रोटी कमाने और रहने के लिए स्थान प्राप्त करने का एक संग्राम बन जायगा, और जो महान कार्य हम लोग पूरा करना चाहते हैं, उसके लिए तुम दोनों निकम्मे हो जाओगे।

दोनों चुप हो गये। कुछ देर के बाद फिर पवेल बोला; परन्तु अबकी बार उसके शब्दों में कोमलता थी—ऐन्ड्री, यह विचार छोड़ दो। शान्त हो जाओ, और उसको भी परेशान मत करो! यही ईमानदारी का रास्ता है!'

'और तुम्हें याद है ऐलेक्सी आईवानोविच मनुष्य के लिए पूर्ण जीवन की आवश्यकता के सम्बन्ध में क्या कहता था? आत्मा और शरीर की सारी शक्तियों का उपयोग करके अपना जीवन पूर्ण बनाने की मनुष्य को जरूरत है—याद है?'

'परन्तु पूर्ण जीवन हमारे लिए नहीं है। अभी जीवन में सम्पूर्णता कैसे प्राप्त की जा सकती है? सम्पूर्णता हमारे नसीब मे कहाँ है? अगर भविष्य से प्रेम है, तो वर्तवान को स्वाहा कर देना पड़ेगा—हमें अपना सर्वस्व स्वाहा करना होगा, बन्धु!'

'ऐसा करना मनुष्य के लिए बड़ा कठिन है।' लिटिल रूसी ने धीमी आवाज से कहा।

'हाँ: मगर और कोई रास्ता भी नहीं है! तुम्हीं सोच लो।'

दोनों चुप हो गये। सामने दीवार पर लगी हुई घड़ी की लटकन बेफिक्री से हिलता हुआ जीवन की घड़ियाँ धीरे-धीरे काट रहा था।

आखिरकार लिटिल रूसी बोला—जिस दिल के आधे हिस्से में प्यार भरा हो और आधे में घृणा, वह भी कोई दिल है?

'इसके सिवाय और हम लोगों के लिए है ही क्या?'

किताब के सफे पलटने की आवाज़ आई। जाहिर था पवेल ने फिर अपनी किताब पढ़ना शुरू कर दी थी। मा आँखें मींचे चुपचाप अपनी खाट पर पड़ी थी। उसे हिलने

तक का साहस नहीं हो रहा था। लिटिल रूसी के लिए उसे हृदय में रोना आ रहा था और उससे भी अधिक उसे अपने लड़के के लिए दुःख हो रहा था।

'मेरा लड़का! मेरा सर्वस्व!' मा सोचने लगी। इतने में एकाएक लिटिल रूसी ने फिर पवेल से पूछा—तो मुझे चुप ही रहना होगा?

'यही अधिक ईमानदारी का रास्ता है, ऐन्ड्री!' पवेल ने धीरे से उत्तर दिया।

'अच्छा भाई! यही राह लूँगा।' परन्तु फिर कुछ क्षण ठहर कर उसने दुखित और दबी हुई आवाज में पवेल से कहा—पाशा, जब तुम्हारा भी मेरा जैसा ही हाल होगा, तब तुम्हें इस मुश्किल का पता चलेगा।

'मुझे भी इस मुश्किल का पता है।'

'हाँ..?'

'जी हाँ।'

फिर दोनों चुप हो गये। हवा के झोंके सनसनाते हुए मकान के दीवारों से अपना सिर टकरा रहे थे, और घड़ी का लटकन टिक-टिक, टिक-टिक करता हुआ समय की गति पर तालें लगा रहा था।

'हूँ।' लिटिल रूसी फिर कुछ देर में बड़बड़ाया—यह बहुत बुरा है।

मा तकिये में सिर गड़ाकर चुपचाप रोने लगी।

× × ×

सुबह मा को लगा कि ऐण्ड्री का कद छोटा है। अस्तु, वह उसको अधिक प्यारा लगा। परन्तु पवेल उसको वैसाही पतला, सीधा, गम्भीर और मीनार की तरह ऊँचा लग रहा था। मा लिटिल रूसी को हमेशा उसका पूरा नाम ऐण्ड्री स्टेपेनोविश लेकर पुकारती थी। परन्तु आज, सहसा, आप से आप उसके मुँह से निकला—बेटा ऐन्ड्रीयूशा अपने जूतों की मरम्मत तो करवा लो! तुम्हें ठण्ड बहुत जल्द लग जाती है।

'अम्मा, वेतन के दिन मैं अपने लिए एक नया जूता खरीद लूँगा।' उसने मुस्कराते हुए जवाब दिया। फिर एकाएक अपने लम्बे हाथ मा के कन्धों पर रखकर वह बोला—तुम मेरी असली मा हो! मगर क्योंकि मैं बहुत कुरूप हूँ, तुम यह बात लोगों के सामने कबूल नहीं करना चाहती हो, क्यों?

मा उससे कुछ न कहकर चुपचाप उसका हाथ थपथपाने लगी। वह उससे बहुत से स्नेहपूर्ण शब्द कहना चाहती थी। परन्तु दयाभाव से उसका हृदय ऐसा भर आया कि उसकी जबान से कुछ भी न निकल सका।

× × ×

गाँव में चारों तरफ समाजवादियों के सम्बन्ध में, जो गाँव में नीली-नीली स्याही के पर्चे बाँटते थे—खूब चर्चाएँ होती थीं। इन पर्चों मे कारखाने में मनुष्य-जीवन की अधोगति का हृदय-विदारक वर्णन होता था; सेण्टपीटर्सबर्ग और दक्षिण रूस में होने-

वाली हड़तालों का जिक्र होता था; और श्रमजीवियों से अपने हितों के लड़ने की अपील होती थी।

बड़ी-बड़ी तनखाहें पानेवाले, गम्भीर लोग इन पर्चों को पढ़कर आग-बबूला हो जाते थे, और गालियाँ बकते हुए कहते थे—विद्रोह की आग भड़कानेवाले इन बदमाशों की जिन्दा ही आँखें निकलवा लेनी चाहिएँ, और इस प्रकार बकते हुए वे पर्चे लेकर अपने दफ्तरों को चले जाते थे।

परन्तु नौजवान इन पर्चों को पाकर बड़े चाव से पढ़ते थे, और जोश में भरकर कहते थे—बिलकुल ठीक है, सच लिखा है।

आम लोग, जिनकी रोज की कड़ी मजदूरी ने कमर तोड़ दी थी, और जो जीवन में हर चीज के प्रति उदासीन हो गये थे, सुस्ती से कहते थे—कुछ नहीं होने का! यह सब असम्भव है!

पर्चों के बँटने पर लोगों में बड़ी सनसनी फैलती थी। किसी रविवार को लोगों को पर्चा नहीं मिलता था, तो वे एक दूसरे से कहने लगते थे—अबकी पर्चा नहीं आया! मालूम होता है छपना बन्द हो गया!

परन्तु फिर सोमवार को यकायक पर्चे बँट जाते थे, और श्रमजीवियों में चारों तरफ धीरे-धीरे घुसपुस-घुसपुस होने लगती।

और फिर शराबखानों, सरायों और कारखानों में नये-नये आदमी नजर आने लगते थे। ऐसे आदमी, जिनसे गाँव में कोई परिचित न होता था। वे तरह-तरह के प्रश्न लोगों से पूछते थे, और हर चीज और हर शख्स की जाँच करते थे। चारों तरफ घूम-घूमकर देखने, इधर-उधर टहलने-फिरने, सन्देह-पूर्ण देखने और हर चीज में अपनी नाक घुसेड़ने की वजह से वे लोग गाँववालों का ध्यान फौरन ही अपनी तरफ खींचते थे।

मा जानती थी कि गाँव में इस प्रकार की सारी चहल-पहल का कारण उसके लड़के का ही काम था। वह यह भी देखती थी कि गाँव के लोग खिंच-खिंचकर उसके लड़के के चारों ओर इकट्ठे हो रहे थे, और वह अकेला नहीं था। अस्तु, मा के ख्याल से उसके लिए अधिक खतरा भी नहीं था। अस्तु, मा को अपने बेटे पर अभिमान होता था। परन्तु फिर भी उसके लिए मा के हृदय में चिन्ता भी होती ही थी। ग्राम्य-जीवन के संकुचित और गँदले प्रवाह में पवेल की गुप्त चेष्टाएँ, नवीन धाराओं की तरह मिल-मिलकर एक नया प्रवाह उत्पन्न कर रही थी।

एक दिन शाम को मेरया कोरसुनोवया ने गली में से ही मा की खिड़की खटखटाई और मा के खिड़की खोलने पर वह जोर से बड़बड़ाई—खबरदार हो जाओ निलोवना, छोकरे चक्कर में आ गये हैं। आज रात को तुम्हारे, माजिन और व्यसोवशचिकोव इत्यादि के घरों की तलाशी लेने का निश्चय हुआ है।

मा ने मेरया के इतने ही शब्द सुन पाये। बाद के सारे शब्द आनेवाली आपत्ति के विचार और मेरया के कर्कश स्वर की धार में बहते हुए-से चले गये।

मेरया के मोटे-मोटे होंठ जल्दी-जल्दी बड़बड़ा रहे थे। उसकी भारी नाक में से साँय-साँय की आवाज निकल रही थी, और उसकी आँखें बार-बार मिचतीं और दायें-बायें इस प्रकार देखती थीं, मानो वे गले में किसी को देखने की कोशिश कर रही थीं।

'और, देखो मैया याद रखना, मैं इस सम्बन्ध में कुछ नहीं जानती, और न मैंने तुझसे कुछ इस सम्बन्ध में कहा है। प्यारी मा, मैं आज तुमसे मिली तक नहीं, समझी!' इतना कहकर वह गायब हो गई।

मा ने खिड़की बन्द कर दी। धीरे-धीरे चलती हुई वह एक कुर्सी पर जा गिरी—उसके शरीर से जान-सी निकल गई, और उसका मस्तिष्क खाली हो गया। परन्तु पुत्र पर आनेवाली आपत्ति के विचार ने उसको तुरन्त ही उठाकर फिर खड़ा किया। उसने जल्दी-जल्दी कपड़े पहिने, और न जाने क्यों सिर के चारों तरफ मजबूती से अपनी शाल लपेटकर वह फेड्या माजिन के घर की तरफ भागी। उसे मालूम था कि माजिन बीमार है और आजकल काम पर नहीं जाता है। उसके घर पहुँचकर उसने माजिन को खिड़की के पास बैठे हुए एक किताब पढ़ते पाया। वह अपने बाँयें हाथ से दाहिने हाथ को इधर-उधर हिला रहा था। मा से होनेवाली तलाशी की खबर सुनते ही, वह एकाएक घबराकर उछल पड़ा। उसके होठ काँप उठे, और उसका चेहरा पीला पड़ गया।

'बड़ी मुश्किल हुई! मेरी उङ्गली में फोड़ा निकला हुआ है!' वह बड़बड़ाया।

'हम लोगों को क्या करना चाहिए!' निलोवना ने काँपते हुए हाथ से अपने चेहरे का पसीना पोंछते हुए उससे पूछा।

'जरा ठहरो। घबराओ मत।' माजिन ने अपने घुँघराले बालों में अपना भारी हाथ घुसेड़ते हुए कहा।

'मगर तुम तो खुद घबराये हुए हो।'

'मैं!' उसका मुँह लाल हो गया, और वह खिसियाकर मुस्कराता हुआ बोला—हाँ, हाँ- मुझे भी एकदम कायरता का दौरा आ गया! छीः छीः उसकी दुम में रस्सा! हम लोगों को इस बात को पवेल को फौरन खबर करनी चाहिए! मैं अभी अपनी छोटी बहिन को उसके पास भेजता हूँ। तुम घर जाओ, कोई फिक्र की बात नहीं है। वे तलाशी लेते वक्त हम लोगों को मारेंगे नहीं!

घर लौटकर मा ने सारी किताबें एक जगह एकत्र कीं, और उन्हें अपनी गोद में छिपाकर घर में, इधर से उधर, बहुत देर तक टहलती रही। कभी वह चूल्हे की तरफ देखती थी, कभी सेमोवार के नल की तरफ देखती थी और कभी पानी की कुण्ड की तरफ देखती थी। वह समझती थी कि खबर सुनते ही पवेल काम छोड़कर फौरन घर भागा आयेगा। परन्तु वह नहीं आया था। आखिरकार थककर वह रसोईघर में जाकर तिपाई पर बैठ गई, और किताबें तिपाई के नीचे छिपा लीं। और इसी प्रकार जब तक पवेल और लिटिल रूसी काम खत्म करके कारखाने से नहीं लौट आये वह वहीं, तिपाई पर बैठी रही। किताबों को छोड़कर वहाँ से उठने की उसकी हिम्मत ही नहीं हुई।

'खबर है !' उसने उनके घुसते ही तिपाई पर बैठे-बैठे चिल्लाकर पूछा।

'हाँ, खबर है !' पवेल ने गम्भीरता से मुस्कराते हुए कहा—क्यों ! क्या तुम डर गई !'

'डरने की कोई जरूरत नहीं है !' लिटिल रूसी ने कहा 'डरने से क्या फायदा होगा !'

'सेमोवार भी अभी तक तैयार नहीं किया है !, पवेल बोला।

मा उठकर खड़ी हो गई और झेंपकर तिपाई के नीचे छिपाई हुई किताबों की तरफ इशारा करके कहने लगी—देखो, इनकी वजह से दिनभर...मैं इस पर...पवेल और लिटिल रूसी खिलखिला कर हँस पड़े। जिससे मा के दिल का भार हल्का हो गया। पवेल ने उनमें से कुछ किताबें चुनकर उठा लीं और उन्हें बाहर चौक में छिपाने चला गया। लिटिल रूसी सेमोवार तैयार करने में मा की मदद करने के लिए घर ही में रह गया। वह मा को समझाने लगा—मा, इसमें डरने की कोई बात नहीं है। उन लोगों को, जो हमारी इन छोटी-छोटी बातों में आकर अपनी टाँगें अड़ाते हैं, शर्म आनी चाहिये। बड़े-बड़े जवान खाकी पोशाकें पहने, किरचें लटकाये, लोहे की एँड़ी जूतों में लगाये हुए आते हैं, और आकर हमारे घरों मे चारों तरफ खखोलना शुरू कर देते हैं। जमीन खोद-खोदकर वे देखते है। और हर चीज की छान-बीन करते हैं। चारपाइयों के नीचे झुक-झुककर देखते हैं ; छतों पर चढ जाते हैं, घर में कोई तहखाना या चह-बच्चा होता है तो उसमें रेंगते हुए उतर जाते हैं। मकडी के जाले बेचारों के मुँह पर चिपट जाते हैं, वे उनको अपने मुँह से फूँक-फूँककर उड़ाते हुए छींकते हैं। उनका ऐसे व्यर्थ के काम से खुद जी ऊब उठता है और उन्हे अपने ऊपर शर्म आने लगती है। अस्तु वे अपनी आत्मग्लानि को छिपाने के लिए हमसे बड़ी बदमाशी और पागलपन मे पेश आने का दिखावा करते हैं। उनका सचमुच बड़ा गंदा काम है और वे बेचारे स्वयं अच्छी तरह समझते हैं कि उनका काम बड़ा गंदा है, खूब अच्छी तरह समझते हैं। एक दिन उन्होंने इसी तरह आकर मेरे घर की सारी चीजें उलट-पलट डालीं। परन्तु कुछ न मिला, और झेंपते हुए अपना-सा मुँह लेकर लौट गये। दूसरी बार वे मुझे ही पकड़ ले गये और ले जाकर, उन्होंने मुझे जेलखाने में रख दिया। वहाँ मैं उनके साथ चार महीने तक रहा। वहाँ बे-काम बैठे रहना होता था। बड़ी ऊट-पटाँग और बे-सिर-पैर की बातें बुला-बुलाकर पूछते थे। पूछताछ पूरी करके फिर सिपाहियों से अन्दर जेल मे वापस ले जाने के लिए कह देते थे। बेचारे हमे इधर-से-उधर और उधर-से-इधर भेजते रहते हैं। सरकारी वेतन पाते हैं ; इसलिए सरकार को कुछ काम तो दिखाना ही चाहिए न। अस्तु अपना काम दिखा चुकने पर वे हमे फिर छोड़ देते हैं। बस किस्सा खत्म हो जाता है।

'तुम हमेशा ऐसी ही बातें करते हो, ऐन्ड्रीयूशा !'—मा के मुँह से सहसा उसकी बातें सुनकर निकला।

सेमोवार के सामने झुका हुआ वह आग जलाने के प्रयत्न में जोर-जोर से धौंकनी फूंक रहा था। मा के शब्द सुनकर तुरंत ही उसने मा की तरफ अपना मुँह फेरा और

धौंकनी फूँकते-फूँकते उसका मुँह लाल हो गया था—दोनों हाथों से अपनी मूछें पोंछते हुए उसने मा से पूछा—कैसी बातें करता हूँ, मा मैं !

'मानो कभी किसी ने तुम्हें इस दुनिया में कोई नुकसान ही नहीं पहुँचाया।'

वह उठकर खड़ा हो गया और मा के निकट आकर सिर हिलाता हुआ बोला—क्या इस, इतनी बड़ी दुनिया मे कहीं ऐसा एक भी आदमी होगा, जिस पर अत्याचार न हुआ हो ! मुझ पर तो इतने अत्याचार हुए हैं कि मैं उनके वार सहने का अब आदी हो गया हूँ। लोग अपने कामों से बाज न आयें तो क्या किया जाय ? मुझपर जो अत्याचार होते हैं, उनसे मेरे काम में जरूर बडा धक्का पहुँचता है। परन्तु इन अत्याचारों से बचकर निकल जाना भी असम्भव है। अपना काम रोक देना या इन अत्याचारों पर कुढ़ना अपना समय नष्ट करना है ! हमारी अजीब जिन्दगी है। प्रारम्भ में मुझे भी प्रायः क्रोध आता था ; परन्तु फिर मैं सोचता था कि चारो तरफ सभी के दिल टूटे हुए है। सभी एक-दूसरे से निराश है। ऐसा लगता है कि सभी को अपने अपने पड़ोसी से हमले का डर रहता है। अस्तु, हर आदमी बढ़कर मानो पहला हाथ अपने पड़ोसी में लगा देने की फिराक में रहता है। यह है हमारा जीवन, प्यारी मा !

इसी प्रकार लगातार वह गम्भीरता-पूर्वक देर तक बोलता रहा। पुलिस के आने और तलाशी लेने की ख्याल से मा को जो डर हो रहा था, उसको वह जान-बूझकर अपनी इस प्रकार की बातों से दूर कर देने का प्रयत्न कर रहा था। बीच-बीच मे उसकी चमकीली, उभरी हुई आँखें, उदासीन होकर मुस्कराने लगती थीं। वह देखने में कुरूप था; परन्तु फौलाद का बना हुआ-सा लगता था जो टूट जाती है, मगर मुड़ती नहीं।

मा ने उसकी बातें सुनकर एक आह भरते हुए अपने मन की इच्छा प्रकट की—ईश्वर तुम्हें सुख दे बेटा !

लिटिल रूसी लम्बे-लम्बे कदम बढ़ाता हुआ सेमोवार की तरफ लपका और उसके सामने पंजों पर बैठता हुआ बड़बड़ाया—मा, ईश्वर मुझे सुख देगा तो मै मना नहीं करूँगा ! परन्तु भागना मैं किसी से जानता नहीं हूँ, और सुख की खोज करने के लिए मेरे पास समय नहीं है।

इतना कहकर वह धीरे-धीरे अपने मुँह से सीटी बजाने लगा।

इतने में पवेल चौक मे किताबें छिपाकर लौट आया और विश्वास-पूर्वक कहने लगा—अब वे उन किताबों को नहीं पा सकेंगे ! यह कहकर वह एक तरफ जाकर हाथ-मुँह धोने लगा। फिर अँगौछे से रगड़कर हाथ पोंछते हुए वह बोला—मा, अगर तुम उनके सामने डरोगी, तो वे समझेंगे कि इस घर मे अवश्य कोई आपत्ति-जनक चीज है। हम लोगों ने क्या किया है। यह तो तुम जानती ही हो कि हम लोग कोई बुरा काम नहीं कर रहे हैं। हम लोग सत्य के पक्षपाती हैं, और अपना जीवन केवल सत्य की सेवा में लगाना चाहते हैं। अगर कोई हमारा गुनाह है, तो बस इतना ही है। फिर हमको किसी से डरने की क्या जरूरत है !

'मैं उनके सामने डर नहीं दिखाऊँगी, पाशा!' मा ने बेटे को विश्वास दिलाया। और फिर क्षण-भर में, चिन्ता को दबा न सकने के कारण बोली—वे लोग शीघ्र ही आ जायँ तो अच्छा हो! जो कुछ होना है, शीघ्र खत्म हो जाय!

परन्तु वे लोग उस रात को नहीं आये। सुबह मा इस विचार से कि कहीं उसके कल के भय का मजाक न उड़ाया जाय, वह स्वयं अपने भय का मजाक करने लगी

छठा परिच्छेद

फिक्र और इन्तजार की इस रात के एक महीने बाद जब कि उनके आने की किसी को भी आशा नहीं थी, तलाशी लेनेवाले एक दिन आ धमके। निकोले व्यसोवशचिकोव बैठा-बैठा पवेल और ऐन्ड्री से अभी तक अखबार के बारे में बातें कर रहा था। आधी रात के लगभग हो चुकी थी। मा अपने बिस्तर पर लेटी थी, आधी जगी, आधी सोई हुई, उन तीनों की आपस की मन्द-मन्द घुसपुस सुन रही थी। इतने मे एकाएक ऐन्ड्री उठा और रसोई मे होता हुआ, धीरे से दर्वाजा बन्द करके बाहर चला गया। कुछ देर के बाद ड्योढ़ी में रखी हुई बाल्टी खटकी, और एक दम द्वार खोलकर लिटिल रूसी ने रसोई मे घुसते हुए दबी जबान मे जोर से कहा—सड़क पर घोड़ों की टापे सुनाई पड़ती हैं!

मा फौरन बिस्तर से उछल पड़ी और उठकर काँपते हुए हाथों से अपने कपड़े सँभालने लगी, परन्तु पवेल ने द्वार के पास आकर उससे गम्भीरता-पूर्वक कहा—तुम लेटी रहो! तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है।

इतने मे ड्योढ़ी पर किसी के सँभल-सँभलकर चढ़ने की आवाज सुनाई दी। पवेल दरवाजे के पास गया और उसे हाथ से खट-खटाकर पूछा—कौन है?

जवाब मे एक लंबा, खाकी वर्दी पहने हुए, मनुष्य फुर्ती से भीतर घुस आया। उसके पीछे वैसा ही एक दूसरा मनुष्य था। दो सिपाहियों ने घुसकर पवेल को पीछे ढकेल दिया और उसके दोनों तरफ एक-एक जमकर खड़े हो गये। एक आवाज ने पवेल को चिढ़ाते हुए कहा—जिनका तुम इन्जार कर रहे होगे उनमे से कोई नहीं है, समझे? यह आवाज, एक लंबे-पतले, छोटी-छोटी, काली-काली मूँछोंवाले अफसर की थी। गाँव का चौकीदार, फेद्याकिन जो मा के बिस्तरे के पास आकर खड़ा हो गया था, एक हाथ से उस अफसर को सलाम करता हुआ और दूसरे से मा की तरफ इशारा करता हुआ, भयंकर आँखें बनाता हुआ बोला—हुजूर, यही है उसकी मा! और फिर उसने पवेल की तरफ हाथ घुमाकर कहा—और यह पवेल!

'पवेल व्लेसोव?' भौंहे चढ़ाते हुए अफसर ने पूछा। और पवेल के चुपचाप सिर हिला देने पर उसने अपनी मूँछें मोड़ते हुए कहा—मुझे तुम्हारे घर की तलाशी लेनी है, उठो बुढ़िया!

'उधर कौन है?' एकदम घूमकर द्वार की तरफ झपटते उसने पूछा।

'तुम्हारा क्या नाम है?' फिर दूसरे कमरे में उसकी आवाज आई। इतने में ड्योढ़ी मे से दो आदमी और भी अन्दर घुसे—एक बूढ़ा लोहार वेरयाकोव था और दूसरा उसके मकान में रहनेवाला, उसकी भट्टी धौंकनेवाला, भारी-भरकम शरीर का किसान

राइबिन था। बूढ़े ने घुसते ही जोर से अपनी मोटी आवाज में कहा—गुड ईवनिंग, निलोवना!

मा कपड़े पहनती हुई अपनी हिम्मत बाँधने के लिए मन-ही-मन बड़बड़ा रही थी—यह क्या है! इतनी रात को क्यों आते हैं! लोगों के सो जाने के बाद तलाशी लेने क्यों आते हैं!

कमरे की हवा बन्द थी, और न जाने कहाँ से उसमे जूतों की नई पालिश को-सी एक जोरदार बदबू उठ रही थी। दो सिपाहियों ने और गाँव के पुलिस अफसर रिसकिन ने, कमरे के फर्श पर धम-धम चलते हुए अलमारी में से किताबें निकालीं और निकालकर उस अफसर के सामने मेज पर रख दीं। दूसरे दो सिपाहियों ने घूँसों से दीवारों को ठोंक-ठोंककर देखा कि वे पोली तो नहीं हैं। फिर उन्होंने कुर्सियों के नीचे झुककर देखा। एक दूसरा सिपाही भोंडी तरह से कोनेवाले चूल्हे पर चढ़ गया और वहाँ अपनी छान-बीन करने लगा। निकोले का चेचक-रू चेहरा लाल हो गया और वह अपनी छोटी-छोटी भूरी-भूरी आँखों से उस अफसर की तरफ एकटक घूर रहा था। लिटिल रूसी चुपचाप खड़ा-खड़ा मूँछों पर ताव दे रहा था। मा कमरे में जैसे ही दाखिल हुई वैसे ही उसने उसकी तरफ स्नेह से सिर हिलाया।

अपने भय को छिपाने के प्रयत्न में मा, सदा की भाँति एक तरफ को झुकी हुई न चलकर, आगे की तरफ छाती निकालकर तनी हुई चल रही थी, जिसमे उसकी शक्ल हास्यास्पद और बनावटी लग रही थी। चलते हुए उसके जूते फर्श से लड़खड़ाये और उसकी भौंहें काँपने लगीं।

अफसर जल्दी-जल्दी किताबों को उठाकर देख रहा था। वह उनके पन्ने उलटता पलटता था, उनको हिला-हिलाकर देखता था और फिर फुर्ती से कलाई मोडकर उनको एक तरफ मेज पर फेंक देता था। कभी कभी कोई किताब नीचे जमीन पर भी जा गिरती थी, जिससे एक धप-सी आवाज होती थी। सब खामोश थे। सिर्फ पसीने से तर सिपाहियों की जोर-जोर से साँस लेने की आवाजें और जूतों की एडियों की खटखट सुनाई देती थी; और बीच-बीच में धीरे से यह प्रश्न सुनाई पड़ता था—उधर तुमने देख लिया!

मा दीवार के सहारे पवेल के पास खड़ी थी और लड़के की तरह वह भी छाती पर हाथ बाँधे चुपचाप अफसर की तरफ देख रही थी। मा को लगा था कि उसके घुटने काँप रहे थे और उसकी आँखों के सामने अन्धकार छाता जा रहा था।

एकाएक निकोले ने तीखी आवाज से शांति भंग करते हुए अफसर से पूछा—जमीन पर किताबें फेंकने की क्या जरूरत है!

मा उसका यह प्रश्न सुनकर काँप गई और वेरयाकोव ने ऐसे सिर बिजकाया जैसे किसी ने उसको पीठ पर एकाएक डण्डा मारा हो। राइबिन के मुँह से डरकर एक विचित्र मुर्गे की-सी आवाज निकल पड़ी और वह निकोले की तरफ एकटक देखने लगा।

अफसर ने मुँह उठाया और भृकुटियाँ चढ़ाकर वह क्षण-भर तक निकोले के चेचक-

रू और रंगीन चेहरे को कड़ी दृष्टि से देखने लगा। मगर फिर उसकी उँगलियाँ जल्दी-जल्दी किताबों के पन्ने पलटने लगीं। अफसर का चेहरा जर्द और उतरा हुआ था। वह बार-बार अपने होंठ चबाता था और कभी-कभी तो वह अपनी विशाल और भूरी आँख इस प्रकार फाड़ने लगता था, मानों उसे कोई असह्य पीड़ा हो, जिसकी असहाय वेदना से वह रो देने की तैयारी करने लगता था।

'सिपाही!' व्यसोवशचिकोव ने फिर चिल्लाकर कहा—जमीन पर से किताबें उठाओ!

सिपाही चौंककर उसकी तरफ देखने लगे। फिर उन्होंने अपने अफसर की तरफ देखा। अफसर ने सिर उठाया, और निकोले के विशाल शरीर को घूरते हुए गुन-गुनाया—अच्छा-अच्छा! किताबें जमीन पर से उठा लो!

एक सिपाही झुका और तिरछी नजरों से व्यसोवशचिकोव की तरफ देखता हुआ जमीन पर बिखरी हुई किताबें समेटने लगा।

'निकोले चुप क्यों नहीं रहता!' मा ने धीरे से पवेल से पूछा। पवेल ने उत्तर में कन्धे हिला दिये। लिटिल रूसी ने चुपचाप सिर नीचा कर लिया।

'क्या घुसपुस-घुसपुस करते हो! कृपया चुप रहो, यह बाइबिल कौन पढ़ता है!'

'मैं!' पवेल बोला।

'ओ हो! और ये किताबें किसकी हैं?'

'मेरी!' पवेल ने उत्तर दिया।

'अच्छा!' कुर्सी पर अपनी पीठ टेकते हुए अफसर ने कहा। फिर उसने अपने पतले-पतले हाथों की उँगलियाँ चटकाते हुए मेज के नीचे अपने पैर फैला दिये और अपनी मूँछों को ठीक करते हुए निकोले से पूछने लगा—तुम्हीं ऐन्ड्रा नखोदका हो!

'हाँ!' निकोले आगे बढ़ता हुआ बोला। लिटिल रूसी ने हाथ बढ़ाया और निकोले का कन्धा पकड़कर उसे पीछे की तरफ खींच लिया।

'यह गलती करता है। ऐन्ड्रो मैं हूँ!'

अफसर ने अपना हाथ ऊँचा किया और व्यसोवशचिकोव को अपनी पतली उँगली से धमकाते हुए कहा—खबरदार! ऐसा कभी न करना।

यह कहकर अफसर अपने कागजों में कुछ ढूँढ़ने लगा। बाहर गली में चाँदनी छिटक रही थी। वह अपनी निर्जीव आँखों से मकान की खिड़की में से यह सब दृश्य देख रही थी। खिड़की के पास ही बाहर कोई टहल रहा था; उसके पैरों से कुचलती हुई बर्फ की चर्र-चर्र आवाज आ रही थी।

'देखो नखोदका, तुम्हारी पहले भी तो राजनैतिक अपराधों के लिए तलाशियाँ हुई हैं?' अफसर ने पूछा।

'हाँ, मेरी रोस्टोव और साराटोव में तलाशियाँ हुई थीं; मगर वहाँ सिपाही मुझे मिस्टर कहके सम्बोधित करते थे!'

अफसर ने अपनी दाहिनी आँख मिचकाई और उसे हाथ से मलते हुए दाँत निकाल-कर कहने लगा—अच्छा तो मिस्टर नखोदका—हाँ, आप मिस्टर नखोदका हैं! क्या आप उन बदमाशों को जानते हैं जो कारखाने में जब्त किताबें और पर्चे बाँटते हैं!

लिटिल रूसी ने अपना शरीर हिलाया और वह मुस्कराकर कुछ कहना ही चाहता था कि इतने में निकोले क्रुद्ध स्वर में बोल उठा—बदमाशों के तो हमने आज पहली बार ही दर्शन किये हैं।

उसकी इस बात पर चारों तरफ सन्नाटा छा गया। एक क्षण-भर के लिए तो सभी की साँस-सी रुक गई। मा के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं और वह अपनी आँखें फाड़-कर इधर-उधर देखने लगी। राइबिन की काली-काली दाढ़ी विचित्र ढंग से हिलने लगी और वह आँखें नीची करके एक हाथ से अपना दूसरा हाथ धीरे-धीरे खुजलाने लगा।

'इस कुत्ते को यहाँ से बाहर ले जाओ!' अफसर ने चिल्लाकर कहा।

दो सिपाही निकोले के हाथ पकड़कर उसको रसोई में खींच ले गये, मगर वहाँ पहुँचकर वह जमीन में पाँव गड़ाकर चिल्लाने लगा—ठहरो, ठहरो, मैं अपना कोट तो पहन लूँ।

पुलिस का अधिकारी कमरे से निकलकर बाहर आँगन में आया और सिपाहियों से पूछने लगा—यहाँ बाहर कुछ नहीं है? सब जगह देख ली?

'हाँ जी, कहाँ से कुछ मिले!' फिर अफसर ने अपने-आप हँसते हुए कहा—मैं तो पहले ही जानता था! यहाँ एक अनुभवी महाशय जो मौजूद हैं। फिर भला कैसे कुछ मिल सकता है!

मा ने अफसर की पतली और रूखी आवाज सुनी। वह उसके जर्द चेहरे की तरफ भय से देख रही थी और वह उसको एक शत्रु की तरह लग रहा था—ऐसा शत्रु जो किसी पर दया करना नहीं जानता और जिसके हृदय में भी अमीरों की तरह ही आम लोगों के लिए घृणा भरी थी। पहले उसे ऐसे मनुष्य कभी-कभी देखने को मिल जाते थे। परन्तु अब तो वह उनके अस्तित्व तक को भूल चुकी थी। 'इसी मनुष्य की पवेल और उसके मित्र बुराई करते हैं! इसी के वे शत्रु हैं!' मा मन-ही-मन सोच रही थी।

'अच्छा मिस्टर ऐन्ड्री नखोदका, मैं आपको गिरफ्तार करता हूँ!' अफसर ने कहा।

'किस अपराध के लिए?'—लिटिल रूसी ने गम्भीरता-पूर्वक उससे प्रश्न किया।

'वह मैं आपको पीछे बताऊँगा।' अफसर ने द्वेष-पूर्ण शिष्टाचार से उससे कहा। फिर वह व्लेसोवा की तरफ मुड़कर चिल्लाया:

'तुम्हें पढ़ना-लिखना आता है? बोलो!'

'नहीं।' पवेल ने उत्तर दिया।

'मैंने तुमसे नहीं पूछा।' अफसर ने कठोरता से कहा—बोलो बुढ़िया, बोलो। तुम पढ़ना-लिखना जानती हो!

मा के हृदय में एकाएक उस मनुष्य के लिए घृणा का तूफान-सा उठा और उसका

शरीर काँपने लगा, मानों वह अचानक ठण्डे पानी में फेंक दी गई हो ; परन्तु उसने अपने शरीर को कड़ा करते हुए काँपने से रोका, फिर भी उसका चेहरा लाल हो गया और उसकी भौंहें नीचे को झुक गईं । 'इतनी जोर से मुझ पर चिल्लाते क्यों हो ?' वह अपना हाथ अफसर की तरफ फेंककर बोली—अभी तुम जवान हो । तुम्हें किसी के दुःख और सुख का पता नहीं...

'शान्त हो जाओ, मा !' पवेल ने उसकी बात काटते हुए कहा ।

'इस काम में मा, तुम्हें अपना दिल दाँतों में दबाकर रखना पड़ेगा !' लिटिल रूसी बोला ।

'जरा ठहरो, पाशा !' मा ने चिल्लाकर कहा और मेज की तरफ झपटकर वह अफसर से बोली—तुम क्यों इस तरह लोगों को पकड़कर ले जाते हो ?

'तुमको क्या मतलब ? चुप, जाओ !' अफसर ने उठते हुए मा को डाँटा ।

'कैदी व्यसोवशचिकोव को अन्दर लाओ !' फिर उसने हुक्म दिया और एक कागज अपने मुँह के पास ले जाकर जोर-जोर से पढ़ने लगा । निकोले अन्दर लाया गया ।

'टोपी उतारो !' अफसर ने पढ़ना बन्द करते हुए उसपर चिल्लाकर कहा । राइबिन व्लेसोवा के पास गया और उसकी पीठ ठोंककर धीरे से बोला—मा, क्रोध मत करो ।

'ये लोग तो मेरे हाथ पकड़े हुए हैं । टोपी क्या मैं अपने पाँव से उतारूँ ?' निकोले ने इतने जोर से चिल्लाकर पूछा कि उसकी आवाज में अफसर का पढ़ना डूब गया । अफसर ने कागज मेज पर पटक दिया ।

'दस्तखत करो ।' उसने संक्षेप में कहा

मा ने फिर हरएक को बारी-बारी से उस कागज पर दस्तखत करते हुए देखा, मा की घबराहट कुछ कम हो चली थी और उसके हृदय में एक कोमलता का भाव भर रहा था, जिससे उसकी आँखों में आँसू आने लगे थे—अपमान और परवशता के गरम-गरम आँसू जो दम्पति-जीवन में बीस वर्षों तक बराबर उसकी आँखें जलाते रहे थे । परंतु जिनके कड़ुवे, दिल मसोसनेवाले स्वाद को वह अब कुछ दिनों से भूल चुकी थी ।

अफसर ने मा की तरफ घृणा से देखा और गुर्राकर कहने लगा—रोने में बहुत पहले ही धाड़ मारती हो, श्रीमतीजी ! अपने आँसुओं को सँभालकर रखो, वरना वक्त के लिए आँसू भी न रहेंगे ।

'माताओं के पास हमेशा काफी आँसू रहते हैं, श्रीमान् । अगर आपके भी माता है, तो वह यह अवश्य जानती होगी !'

अफसर ने जल्दी-जल्दी कागजों को समेटकर अपने नये चमकते हुए ताले के बेग में रख लिया और दूसरे पुलिस-अधिकारी से घूमकर कहा—तुम्हारे हल्के के लोग बड़े गुस्ताख हैं ।

'बड़े गुस्ताख हैं हुजूर !' पुलिस का अधिकारी सिटपिटाकर बड़बड़ाया ।

'चलो !' अफसर ने हुक्म दिया ।

'अलविदा, ऐन्ड्री ! अलविदा, निकोले !' पवेल ने तपाक से अपने मित्रों के हाथ दबाते हुए स्नेह-पूर्वक कहा।

'हाँ, ठीक है। दूसरी बार मिलने तक।' अफसर ने मुँह बनाते हुए व्यंग्यपूर्वक कहा।

व्यसोवशचिकोव ने अपने नरम हाथों से पवेल का हाथ दबाते हुए एक गहरी साँस ली। उसकी मोटी गर्दन पर खून चढ़ आया था; और उसकी आँखें घृणा से चमक रही थीं। लिटिल रूसी का चेहरा मुस्कराहट से सूर्य की तरह दमक रहा था। उसने सिर हिलाकर मा से कुछ कहा।

'सत्य पर चलनेवालों को सदा भगवान मिलते हैं।' मा ऊपर को हाथ उठाकर उसे आशीर्वाद देती हुई धीरे-धीरे बड़बड़ाई।

आखिरकार खाकी वर्दीवालों की भीड़ ड्योढ़ी में से लड़खड़ाती हुई बाहर गली में निकली और जूतों को चर्र-चर्र करती हुई चली गई। राइबिन सबसे पीछे गया। चलते हुए उसने काली-काली आँखों से पवेल को नजर भरकर देखा और विचार-पूर्वक कहा—'अच्छा-अच्छा, प्रणाम।' और अपनी दाढ़ी में खोंसते हुए वह धीरे-धीरे ड्योढ़ी के बाहर निकल गया।

पीठ पीछे हाथ बाँधे, कमरे के फर्श पर बिखरी हुई किताबों और कपड़ों पर पैर रखता हुआ पवेल धीरे-धीरे कमरे में टहलने लगा। फिर वह सन्ताप से कहने लगा—देखा, क्या हुआ ? अपमान। कितना अपमान ! मुझे नहीं ले गये !

विक्षिप्त-सी कमरे में चारों ओर फैली हुई चीजों को देखती हुई मा उदास मुख से बड़बड़ाई—तुम्हें भी एक दिन ले जायँगे। अवश्य ले जायँगे। निकोले उनसे उस तरह क्यों बोला !

'मेरा खयाल है कि वह घबरा गया था।' पवेल ने धीरे से कहा।

'हाँ, उन लोगों से बोलना असम्भव है ! बिलकुल असम्भव है ! वे कुछ समझ नहीं सकते !'

'आये, छीना और ले गये !' मा हाथ हिलाती हुई, हसरत से कहने लगी। अपना लड़का न पकड़ा जाने से मा के दिल की धड़कन तो कुछ-कुछ हल्की हो चली थी; परन्तु फिर भी उसके दिमाग में बार-बार एक विचार चक्कर लगा रहा था और यह विचार उसके दिमाग से निकलने से इन्कार करता था। 'कैसा मुँह बनाता था, वह पिलमुहाँ ! वह बदमाश ! कैसा हम लोगों को धमकाता था !'

'अच्छा अम्माँ !' पवेल ने एकाएक निश्चय करते हुए कहा—आओ, अब यह सब सामान उठाकर रखें !

इस समय उसने अम्माँ शब्द का प्रयोग किया था। जब कभी पवेल मा पर बहुत स्नेह दिखाता था, तभी उसे अम्माँ कहकर पुकारता था। मा ने चुपचाप बेटे के पास जाकर उसके मुँह की तरफ देखा और धीरे से पूछा—क्या उन्होंने तुम्हारा बहुत अपमान किया ?

'हाँ।' उसने उत्तर दिया—यह मुझे असह्य है! मुझे भी उन्हीं के साथ क्यों नहीं ले गये!

मा को लगा कि पवेल की आँखों में आँसू भर रहे थे। परन्तु उसके दुःख को अच्छी तरह न समझ सकने के कारण लड़के को शान्त करने के विचार से ढाढ़स देती हुई वह आह भरकर बोली—कुछ दिन ठहरो—तुम्हें भी ले जायँगे!

'जरूर! जरूर ले जायेंगे!' उसने उत्तर दिया।

कुछ देर चुप रहने के बाद मा दुःख में भरकर बोली—तुम कितने कठोर हो, पाशा! कभी तो मुझे ढाढ़स बँधाया करो। तुम कभी मुझे दिलासा नहीं देते। यदि मैं कभी कोई भयङ्कर बात कहती हूँ, तो तुम उससे भी भयंकर कहने लगते हो।

पवेल मा की तरफ देखने लगा और उसके निकट जाकर कोमल स्वर में बोला—नहीं अम्माँ, मैं तुमसे झूठ नहीं बोलूँगा। तुम्हें अब सब कुछ सहने की आदत डालनी पड़ेगी।

सातवाँ परिच्छेद

दूसरे दिन पता लगा कि बुकिन, सेमोयलोव, सोमोव और पाँच दूसरे शख्श भी गिरफ्तार कर लिये गये थे। शाम को फेड्या माजिन दौड़ता हुआ आया। उसके घर की भी तलाशी हुई थी, जिससे उसे अपने ऊपर बड़ा अभिमान हो रहा था।

'तू डरा नहीं, फेड्या?' मा ने उससे पूछा।

इस प्रश्न पर वह पीला पड़ गया, उसका मुँह निकल आया और उसके नथने काँपने लगे।

'मुझे डर तो लग रहा था कि कहीं वह अफसर मुझे पीटे न। वह काली दाढ़ी और बड़े शरीरवाला अफसर जिसकी उँगलियों पर बाल थे, और जो आँखों पर काला चश्मा पहने हुए ऐसा लगता था, मानो उसके आँखें हो न थीं। वह बार-बार जमीन पर पैर पटक-पटककर मुझको डाँटता था और कहता था कि जेल में डालकर सड़ा डालूँगा। मेरे माता-पिता ने मुझे आज तक कभी नहीं मारा, क्योंकि मैं उनका एकलौता लड़का हूँ। वे मुझे बहुत चाहते हैं। दूसरे सभी लड़के गाँव मे पिटते हैं। परन्तु मुझ पर आज तक कभी मार नहीं पड़ी।' इतना कहकर उसने क्षण-भर के लिए अपना आँखें बन्द कर लीं, और होंठों को दाँतों से चबाने लगा। फिर दोनों हाथों से झटका देकर फुर्ती से सिर के बालों को पीछे फेंककर आँखे लाल करता हुआ वह पवेल से कहने लगा—अगर कभी किसी ने मुझ पर हाथ छोड़ा तो मैं फौरन हो अपना सारा शरीर उसमें चाकू की तरह घुसेड़ दूँगा और अपने दाँतों से उसे फाड़ डालूँगा। पीटने की बजाय तो मुझे कोई एकदम ठौर ही मार डाले सो ठीक है।

'अपनी आत्मरक्षा करने का तुम्हें अधिकार है!' पवेल ने उससे कहा—मगर खबरदार, कभी किसी पर हमला मत कर बैठना।

'फेड्या, तुम इतने दुबले-पतले और नाजुक हो!' मा बोली—और मरने और मारने की बातें करते हो!

'हाँ, मैं अवश्य लड़ूँगा!' फेड्या ने धीमे स्वर में उत्तर दिया।

उसके चले जाने पर मा ने पवेल से कहा—यह छोकरा सबसे पहले भागेगा।

पवेल चुप रहा।

कुछ क्षण के बाद रसोईघर का द्वार धीरे से खुला और राइबिन ने प्रवेश किया।

'गुड ईवनिंग।' उसने मुस्कराते हुए कहा—मैं फिर आ गया। कल वे लोग मुझे लाये थे। परन्तु आज मै अपने आप यहाँ आया हूँ। हाँ, जी! यह कहकर उसने पवेल से बड़े तपाक से हाथ मिलाया, और फिर मा के कन्धे पर हाथ रखकर बोला—मा, मुझे एक प्याला चाय पिलाओ!

पवेल ने राइविन के कठोर, विशाल चेहरे, घनी, काली दाढ़ी और काली, तीक्ष्ण आँखों की तरफ चुपचाप ध्यान-पूर्वक देखा। उसकी शान्त आँखों में एक विशेष गम्भीरता थी और उसकी आकृति से उसमें विश्वास उत्पन्न होता था।

मा समोवार तैयार करने के लिए रसोई में चली गई। राइविन बैठ गया। फिर दाढ़ी खुजलाते हुए, मेज पर कुहनियाँ टेककर वह पवेल के चेहरे को अपनी काली-काली आँखों से घूरकर देखने लगा।

'बात यों है।' उसने मानों किसी अधूरी चर्चा को शुरू करते हुए कहा—मैं तुमसे साफ-साफ बातें करना चाहता हूँ! कल यहाँ आने से बहुत पहले से मैं तुम्हें देखता हूँ। मैं तुम्हारे बिलकुल पड़ोस में ही रहता हूँ। तुम्हारे यहाँ बहुत-से आदमी आते-जाते हैं। मगर तुम्हारे यहाँ नशेबाजी या बदमाशी नहीं होती! यही तो सारी मुश्किल है। शैतान का साथ छोड़ो तो लोग फौरन उँगलियाँ उठाते हैं। अजीब बात है! मगर यही सारी बात है। इसी कारण मुझ पर भी सबकी आँखें रहती हैं, सिर्फ इसी लिए कि मैं सबसे दूर रहता हूँ और किसी का कुछ लेता-देता या बिगड़ता नहीं हूँ। उसके वाक्य स्वतंत्रता से धारा-प्रवाह बह रहे थे। उसकी बातों में कोई ऐसी बात थी जिससे उस पर सहज में विश्वास होता था।

'और सिर्फ इसी लिए लोग तुम्हारे बारे में तरह-तरह की बकवास करते हैं। मेरे मालिक तो तुम्हें नास्तिक बताते हैं, क्योंकि तुम गिरजे में नहीं जाते। मैं भी गिरजे में नहीं जाता! मगर वे पर्चे जो निकले, तुम्हीं उन पर्चों को लिखते थे!'

'हाँ, मैं ही लिखता था।' पवेल ने उसके चेहरे की तरफ टकटकी लगाकर देखते हुए कहा। राइविन भी पवेल की आँखों में एकटक घूर रहा था।

'अकेले तुम्हीं!' मा ने कमरे में प्रवेश करते हुए चिल्लाकर कहा—तुम्हीं अकेले तो नहीं लिखते थे।

मा की इस बात पर पवेल हँस पड़ा। राइविन भी हँसने लगा।

मा सिटपिटा गई और खखारकर गला साफ करती हुई वहाँ से चल दी। उसे बुरा लगा कि उन दोनों ने उसके शब्दों को इस प्रकार हँसी उड़ा दी।

'बड़े अच्छे पर्चे थे। उनसे लोगों में बड़ा जोश फैला है, शायद बारह थे, क्यों?'

'हाँ!'

'मैंने उन सबको पढ़ा है। हाँ, कहीं-कहीं वे अच्छी तरह समझ में नहीं आते थे। कुछ फालतू बातें भी थीं। मगर जब आदमी को बहुत-सा कहना होता है तो कुछ इधर-उधर की बातें भी कहनी ही पड़ती हैं।'

राइविन फिर हँसा और उसके सफेद, मजबूत दाँत दिखाई देने लगे।

'फिर तुम्हारी तलाशी हुई। सबसे अधिक इसी ने मुझे तुम्हारा बना दिया है। तुम और लिटिल रूसी और निकोले, तुम सभी एक दम फन्दे में आ गये!' वह चुप होकर

उपयुक्त शब्द सोचने लगा, और खिड़की की तरफ देखता हुआ, उँगलियों से मेज बजाने लगा।

'उनको तुम्हारे इरादों का पता चल गया। तुम उनसे कहते हो—श्रीमान्, आप अपना काम कीजिए, और हम अपना काम करते हैं। लिटिल रूसी भी बड़ा अच्छा आदमी है। उस दिन मैंने उसको कारखाने मे बोलते सुना था, और मैं सोचने लगा था कि यह आदमी किसी से हारकर कभी बैठनेवाला नहीं है। एक ही चीज उसे पछाड सकती है—यानी मौत। वह बड़ा बहादुर है। क्या मुझ पर तुम्हे विश्वास होता है, पवेल!'

'हाँ-हाँ, मैं तुम पर विश्वास करता हूँ।' पवेल ने सिर हिलाते हुए कहा।

'ठीक है। देखो, मै चालीस वर्ष का हो चुका हूँ। मैं तुमसे उम्र मे दुगना हूँ, और तुमसे बीस गुनी अधिक दुनिया देख चुका हूँ, तीन वर्ष तक मैंने फौजों के साथ भी पॉव रगड़े है। दो विवाह कर चुका हूँ, मैं कोहकाफ तक हो आया हूँ; और दुखोबोर लोगों को जानता हूँ। वे भी आजाद नहीं हैं। बिलकुल परवश है, बेचारे।'

मा ध्यान से उसकी सीधी-सीधी बातें सुन रही थी। उसे यह देखकर प्रसन्नता हो रही थी कि एक बड़ी उम्र का आदमी आकर उसके लड़के से इस प्रकार बातें कर रहा था, मानो वह उसके सामने अपने पापों को कबूल करने आया हो। परन्तु पवेल का व्यवहार उसके प्रति मा को बहुत रूखा लगा। अस्तु, उसने उसमे अपनी ओर से मिठास मिलाने के लिए राइबिन से पूछा—मैं तुम्हारे लिए कुछ खाने को लाऊँ?

'नहीं मा, धन्यवाद। मैं अभी खाकर आया हूँ। अच्छा तो पवेल, तुम्हारा विचार है कि हम लोगों का जीवन जैसा होना चाहिए वैसा नहीं है!'

पवेल उठा और पीठ के पीछे हाथ-पर-हाथ रखकर कमरे में टहलते हुए बोला—नहीं है। देखो न, यही जीवन आज तुम्हे दिल खोलकर मुझसे बातें करने के लिए यहाँ ले आया है! हम जीवन-भर परिश्रम करनेवालों को हमारा जीवन ही स्वयं अब धीरे-धीरे एक सूत्र मे बाँध रहा है, और एक दिन आयेगा जब हम सब मिलकर एक हो जायँगे। हमारे जीवन की व्यवस्था हमारे हित के लिए नहीं की गई है, जिससे वह हमारे लिए भार हो गया है। परन्तु अब हमारा जीवन ही स्वयं हमारी ऑखें खोलकर हमें हमारी अधो-गति दिखा रहा है, और भावी जीवन को सुव्यवस्थित करने का मुक्तिमार्ग दिखा रहा है। जैसा जीवन हम व्यतीत करते है वैसे ही हमारे विचार भी बन जाते है।

'सच है। मगर देखो,' राइबिन उसको रोककर बोला—आदमी का पुनर्जीवन करना चाहिए—मेरा तो यही विचार है। आदमी के खाज हो जाती है तो उसे ले जाकर अच्छी तरह नहलाते हैं, उसको साफ-सुथरे कपड़े पहिनाते है, जिससे वह अच्छा हो जाता है। क्यों, ऐसा ही है न? और अगर दिल में खाज हो जाय, तो भाई, दिल की खाल उतारो, चाहे उसमें से फिर कितना ही खून निकले, उसको धोओ, और उसको अच्छी तरह से मरहमपट्टी करो। क्यों, ऐसा ही है न? नहीं तो आदमी की अन्तरात्मा को और कैसे स्वच्छ किया जा सकता है? क्यों, ठीक है न!'

पवेल जोश में भरकर ईश्वर, जार, सरकारी अफसरों और कारखाने के सम्बन्ध में कड़वी-कड़वी बातें करने लगा और उसको बताने लगा कि दूसरे देशों में श्रमजीवी किस प्रकार अपने अधिकारों के लिए लड़ते हैं। राइबिन बीच-बीच में मुस्कराता था और कभी-कभी मेज पर अपनी एक उँगली गड़ा देता था, मानों वह किसी विशेष बात पर जोर देता था। जब-तब बीच-बीच में वह चिल्लाकर कह उठता—हाँ। और एक बार हँसते हुए उसने धीरे से कहा—तुम अभी लड़के हो। दुनिया को अच्छी तरह नहीं जानते हो।

पवेल ने राइबिन के सामने ठहरकर गम्भीरता से उत्तर दिया—बूढ़ा कौन है और लड़का कौन है, इसका खयाल छोड़ो। यह देखो कि विचार किसके सत्य हैं।

'तो तुम्हारे विचारों के अनुसार, ईश्वर के सम्बन्ध मे भी हमे पूरा उल्लू बनाया गया है। ऐसा ! मै भी सोचता हूँ कि धर्म के नाम पर हमें बड़ी असत्य-असत्य बात सुना-सुनाकर हमारा बहुत नुकसान किया गया है।'

यहाँ पर मा ने उनकी बातें काटी। जब पवेल ने ईश्वर और धार्मिक श्रद्धा सम्बन्धी उन सारी बातों की आलोचना की, जो मा को अतिप्रिय और पवित्र थीं, तब उसने आँखो से आँखें मिलाईं, मानो वह अपने लड़के से मूक शब्दों में कहने लगी कि 'तीखे और कटु नास्तिकता-पूर्ण शब्दों से मेरा दिल मत जलाओ।' मा समझती थी कि राइबिन को भी, जो काफी उम्र का था, वे बातें अवश्य बुरी लगेंगी और उसका भी वे दिल दुखायेंगी। परन्तु जब राइबिन शान्ति-पूर्वक पवेल से प्रश्न पूछने लगा तो मा से न रहा गया, और वह दृढ़ता से बोली—कम-से-कम जब ईश्वर के सम्बन्ध में बोला करो तब तो जरा जबान सँभालकर बातचीत किया करो। तुम्हारे जो जी मे आये सो करो। तुम्हारे लिए तुम्हारा कार्य ही पुरस्कार है। फिर जरा दम लेकर वह उद्वेग से बोली—परन्तु मुझ बुढ़िया से अगर तुम मेरा ईश्वर भी छीन लोगे तो फिर मेरे पास मुसीबत के लिए क्या सहारा रह जायगा ? यह कहकर मा की आँखों से आँसुओं की धारें बह निकलीं और रकाबियाँ धोते-धोते उसकी उँगलियाँ काँपने लगी।

'तुम मेरी बात नहीं समझीं, मा !' पवेल ने नम्र और कोमल स्वर मे कहा।

'मुझे माफ करो, मा।' राइबिन अपनी मन्द और मोटी आवाज में बोला। फिर पवेल की तरफ देखकर वह मुस्कराया और कहने लगा—मैं भूल ही गया था कि तुम इस बुढ़ापे मे अब अपने मसे नहीं काट सकोगी।

'मा, मैं उस अच्छे और कृपालु ईश्वर के विषय मे कुछ नहीं कह रहा था।' पवेल बोला—जिसमें तुम विश्वास रखती हो। मैं तो उस ईश्वर के बारे में कह रहा था, जिसके नाम का धार्मिक लोग हमारे दिलों मे भूत का-सा हौआ उत्पन्न करते हैं, जिसके नाम का दुरुपयोग करके हम सबको थोड़े-से आदमियों की कुत्सित इच्छाओं का दास बनाने का प्रयत्न किया जाता है।

'हाँ-हाँ, बिलकुल ठीक कहा।' राइबिन मेज पर उँगलियाँ गड़ाकर बोला—उन्होंने

हमारे ईश्वर को भी विकृत बना दिया है। जो कुछ उनके हाथ में आता है, उसका ही वे विरुद्ध उपयोग करते हैं। तुम जानती हो मा, ईश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया है। ऐसा बाइबिल में लिखा है। मनुष्य ईश्वर का स्वरूप है तो फिर उसे ईश्वर की तरह आचरण भी करना चाहिए। परन्तु हम लोग ईश्वर की तरह तो नहीं लगते, जानवर बन गये हैं। गिरजों में भी हम लोगों को डराने के लिए ही स्वाँग रचा जाता है। शायद हम लोगों को अपना ईश्वर भी बदलना पड़ेगा, मा, हमको अपना ईश्वर भी स्वच्छ करना पड़ेगा। उन्होंने ईश्वर को असत्य, पाखण्ड और कलङ्क के आवरण में छिपा रखा है। उन्होंने हमारी आत्माएँ नष्ट करने के लिए ईश्वर के मुँह पर भी कालिख पोत दी है।

वह गम्भीरता से बोल रहा था। उसके शब्द स्पष्ट और जोरदार थे, जो मा के कानों में तीर की तरह छेद करते हुए-से घुसे। काली दाढ़ी के चौखटे में उसका विशाल चेहरा देखकर, मानों उसके मुख ने एक मातमी काला लिबास पहिन रखा था, मा डरी। उसकी काली आँखों की चमक उसे असह्य हो उठी और उसकी शक्ल मा के हृदय में एक पीड़ा और भय उत्पन्न करने लगी।

'नहीं, नहीं, मैं जाती हूँ।' सिर हिलाती हुई वह कहने लगी—मुझमें ऐसी बातें सुनने की शक्ति नहीं है। मैं अब नहीं सुन सकती।

यह कहती हुई वह शीघ्रता से रसोईघर में चली गई। उसके जाने पर राइबिन ने कहा—देखो, पवेल! विश्वास का जन्म हृदय से होता है, बुद्धि से नहीं, हृदय ही एक ऐसी जगह है जहाँ इसके सिवाय और कोई वस्तु उत्पन्न नहीं होती।

'परन्तु केवल बुद्धि' पवेल दृढ़ता से बोला—केवल बुद्धि ही मनुष्य मात्र को स्वतन्त्र करेगी।

'बुद्धि से शक्ति नहीं आती!' राइबिन जोर देकर बोला—हृदय से शक्ति आती है, बुद्धि से नहीं। मैं कहता हूँ, मेरा कहा मानो।

मा कपड़े उतारकर, बिना ईश्वर-प्रार्थना किये ही अपनी खाट पर जा लेटी। उसका दिल घबरा रहा था। वह बड़ी दुखी थी। राइबिन, जिसको पहले उसने धीर और बुद्धिमान समझा था, अब उसके हृदय में एक अन्धविरोध की आग भड़का रहा था।

राइबिन की चौड़ी छाती से गूँज-गूँजकर निकलते हुए शब्दों को सुनती हुई वह सोचने लगी—नास्तिक! राजद्रोही! यह क्यों आया है—क्या यह भी इस काम के लिए जरूरी है!...

राइबिन विश्वास-पूर्वक दृढ़ता से कह रहा था—पवित्र स्थान को खाली नहीं रहना चाहिए। ईश्वर दर्द की जगह में रहता है। ईश्वर दिल से निकल गया तो दिल में एक बड़ा घाव हो जायगा। दिल में निरा दर्द-ही-दर्द रह जायगा, याद रखो। अस्तु, एक नई श्रद्धा उत्पन्न करने की जरूरत है पवेल! सर्वसाधारण के लिए एक नया ईश्वर पैदा करने

की जरूरत है ! न्यायाधीश या सर्वशक्तिमान परमात्मा के स्थान पर एक प्रजा के मित्र-स्वरूप परमात्मा की जरूरत है !

'ईसा मसीह ऐसा ही था !'

'जरा ठहरो ! ईशा की आत्मा मजबूत नहीं थी। जब उसे मृत्यु सामने आती दिखाई दी तो वह प्रार्थना करने लगा—भगवान, इस प्याले को हटा लो। वह राजा के अधिकारों को भी स्वीकार करता था। ईश्वर को मनुष्य की सत्ता स्वीकार करने की क्या जरूरत है ? ईश्वर स्वयं शक्तिमान है। वह अपनी आत्मा के इस प्रकार भाग नहीं करता कि यह भाग महात्माओं के लिए है और यह मनुष्यों के लिए। अगर ईसा मसीह स्वर्गीय राज्य स्थापित करने आया था तो उसे दुनिया की चीजों की क्या जरूरत थी ? वह व्यापार और विवाह को भी क्यों मानता था ! उसने व्यर्थ में अंजीर के पेड़ को दोष लगाया। क्या वह उस बेचारे पेड़ का दोष था कि उसमें फल नहीं लगते थे ! किसी की आत्मा स्वभाव से ही ऊसर नहीं होती। क्या अपनी आत्मा में पाप का बीज पहले-पहल मैंने बोया ? नहीं, हरगिज नहीं !'

दोनों की आवाज जोर-जोर से कमरे मे गुनगुना रही थी, मानों वे एक दूसरे से जोश मे भर कुश्तियां लड़ रही थीं। पवेल जल्दी-जल्दी-कमरे मे इधर से उधर, उधर से इधर टहल रहा था, उसके पैरों की जमीन पर चलने की आवाज सुनाई दे रही थी। परन्तु जब वह बोलने लगता था तब दूसरी सभी आवाजें उसके शब्दों में डूब जाती थीं। राइबिन के मन्द शान्त, वाणी-प्रवाह के ऊपर घड़ी के लटकन की धीमी-धीमी खटखट-खटखट सुनाई देती थी, और बाहर से बर्फ गिरने की कुर्र-कुर्र आवाज भी आ रही थी, मानो कोई बाहर से मकान की दीवारों को तेज पंजों से खुरच रहा हो। राइबिन पवेल से कहने लगा—देखो, मैं अपने ढंग से अर्थात् एक भट्टी मे कोयला झोंकनेवाले के शब्दों में तुम्हें समझाता हूँ। ईश्वर अग्नि की तरह है। वह किसी को शक्ति नहीं देता। उसमें शक्ति देने की सामर्थ्य ही नहीं है। जब वह दूसरों को रोशनी देता है तो अग्नि की तरह स्वयं जलता है और जलकर राख बनता है। वह गिरजो को जलाता है, परन्तु बनाता नहीं। उसका घर हमारे दिल मे है।

'और दिमाग मे !' पवेल ने जोर देकर कहा।

'हां ! दिल में और दिमाग मे। और यहीं से सारे झगडे की जड़ खड़ी होती है। यहीं से सारे कष्ट, दुःख और मुसीबत पैदा होती हैं। हमने अपने टुकड़े कर डाले हैं। हृदय को बुद्धि से पृथक् कर दिया था जिससे बुद्धि भी भ्रष्ट हो गई है। मनुष्य एक नहीं है। ईश्वर उसको एक करता है, उसको गोल करता है, उसको कन्दुकाकार बनाता है। ईश्वर हमेशा वस्तुओं को गोल बनाता है। पृथ्वी, नक्षत्र और जगत् की सभी दृष्टि-गोचर वस्तुएँ गोल हैं। तीखी और नुकीली चीजें मनुष्य की बनाई हुई हैं।'

उनकी इस प्रकार की बातें सुनते-सुनते मा की आँखें लग गईं। न मालूम कब उनकी बातें खत्म हुईं और कब राइबिन अपने घर गया। मगर इसके बाद से राइबिन

उनके यहाँ अक्सर आने लगा। जब वह आता था तब पवेल का कोई दूसरा मित्र भी मौजूद होता तो वह चुपचाप एक कोने में बैठ जाता था और पवेल की और उसकी बातें सुनता था। बीच-बीच में कभी-कभी सिर्फ इतना कह उठता था—हाँ-हाँ, ऐसा ही है।

मगर एक दिन वह अपने कोने से काली-काली आँखों से सबको ध्यान-पूर्वक देखता हुआ रंजीदा स्वर में बोला :

'हमको वर्तमान की चर्चा करनी चाहिए! भविष्य का किसे पता है? लोगों को स्वतन्त्रता मिल जाने पर वे अपने लिए सर्वश्रेष्ठ मार्ग स्वयं देख लेंगे। काफी, बहुत काफी ऐसी बातें, जिनकी उन्हें जरा भी दरकार नहीं है, उनके दिमाग में अभी तक भरी जा चुकी हैं। अब इन ढकोसलों का अन्त करो। उन्हे अपने लिए स्वयं प्रयत्न करने दो। मुमकिन है, वे हमारी किसी भी चीज को पसन्द न करें। हमारे सारे जीवन, सारे ज्ञान को ही त्याज्य समझें। मुमकिन है, हमारी बनाई हर चीज की व्यवस्था उनको अपने विरुद्ध लगे। हमको तो केवल उनके हाथों में किताबें दे देनी चाहिए ; वे अपने आप उत्तर ढूँढ़ लेंगे। विश्वास रखो। उन्हें सिर्फ एक बात याद रखनी चाहिए कि घोड़े की जितनी लगाम कड़ी होगी उतना ही वह धीरे चलेगा।'

राइबिन और पवेल अकेले होने पर हमेशा एक लम्बी, परन्तु शान्त चर्चा में उतर पड़ते थे, जिनको मा चिन्ता से सुनती थी, और चुपचाप समझने का प्रयत्न करती थी। कभी-कभी मा को ऐसा लगता, मानों बैलों के-से कन्धे और काली-काली दाढ़ी का वह किसान और उसका सुडौल, सुदृढ़ लड़का, दोनों अन्धे हो गये हैं और उस छोटे-से कमरे के अन्धकार में इधर-उधर मार्ग और प्रकाश की खोज में लड़खड़ा रहे हैं और अपने मजबूत, परन्तु नेत्रहीन हाथों को फैला-फैलाकर किसी चीज को पकड़ते हैं और खड़-खड़ाते हुए जमीन पर गिर पड़ने पर भी पैरों से खुरच-खुरचकर टटोलते है। वे दोनों उस अन्धकार में हर चीज से टकराते थे, हर चीज को टटोल-टटोलकर पकड़ते थे और फिर उसे उठाकर शान्ति और गम्भीरता से दूर फेंक देते थे। परन्तु फिर भी वे अपनी श्रद्धा और आशा को कायम रखते थे।

धीरे-धीरे मा बहुत-से ऐसे भयंकर शब्दों को सुनने की आदी हो गई जो सीधे और सच्चे होने के कारण बड़े भयंकर लगते थे। परन्तु अब इन भयंकर शब्दों को सुनकर उसका पहले की तरह दिल नहीं बैठने लगता था। एक कान से सुनकर उन्हे दूसरे से निकाल देने का उसे अभ्यास हो गया था। राइबिन मा को अभी तक नापसन्द था। परंतु अब वह मा के मन में विरोध का भाव पैदा नहीं करता था।

सप्ताह में एक बार मा लिटिल रूसी के लिए कपड़े और किताबें लेकर जेल पर जाती थी। एक बार जेलवालों ने उसको लिटिल रूसी से मिलकर बातें कर लेने दीं। घर लौटने पर मा बड़े उत्साह से उसका हाल सुनाने लगी :

'वहाँ भी वह वैसा ही है जैसा घर पर था। सबसे सज्जनता और स्नेह का बर्ताव

करता है। सब उससे हँसकर बोलते हैं, मानों उसके हृदय में सदा बहार ही रहती है। उसका जीवन कठिन और दुःख-पूर्ण है। परन्तु वह कभी माथे पर शिकन नहीं लाता।'

'ठीक है! इसी तरह रहना चाहिए।' राइविन बोला—जिस प्रकार खाल से हमारा शरीर मढ़ा हुआ है, उसी प्रकार आपदाओं से हमारा सबका जीवन भी मढ़ा हुआ है। हमारी साँसें आपदाएँ हैं, हमारा वस्त्राभूषण आपदा है। उसका रोना क्या रोना! दुनिया में सभी तो अन्धे नहीं हैं। हाँ, कुछ-कुछ लोग अपनी आँखें जान-बूझकर मूँद लेते हैं। जो मूर्ख हैं वे ही अपनी आपदाओं पर रोते और चिल्लाते हैं।

———

आठवाँ परिच्छेद

दिन-पर-दिन व्लेसोव के उस छोटे घर की ओर गाँव के लोगों का ध्यान अधिकाधिक आकर्षित होने लगा। लोगों के इस विशेष ध्यान का कारण यद्यपि अभी तक उनके मन का संदेह और एक प्रकार का विरोधी भाव ही था ; परन्तु साथ-ही-साथ उनके मन में एक विश्वासपूर्ण जिज्ञासा भी बढ़ने लगी थी। जब-तब गाँव से कोई आता, और होशियारी से अपने चारों ओर देखता हुआ पवेल से कहता—भैया, तुम किताबें पढ़ते हो और कानून भी समझते हो। मुझे जरा समझाओ तो कि...

और फिर वह पवेल को पुलिस अथवा कारखानों के अधिकारियों के किसी अन्याय या जुल्म का हाल बताता। पेचीदा मामला होता तो पवेल शहर में अपने किसी वकील मित्र को उसकी मदद करने के लिए खत लिख देता और यदि उस मामले को वह खुद ही सुलझा सकता तो खुद सुलझा देता।

धीरे-धीरे इस गम्भीर, सीधी और खरी बातें कहनेवाले, बहुत कम हँसनेवाले नौजवान को, जो हर आदमी की बात ध्यान-पूर्वक सुनकर उसे हर पहलू से समझने की कोशिश करता था, और जिसको हर चीज की तह में एक ही बे-ओर-छोर का आम धागा दीखता था, जिसकी हजार कठिन गाँठों से प्रजा का जीवन बँधा था, गाँव के लोग सम्मान की दृष्टि से देखने लगे थे।

मा भी अपने बेटे की बाढ़ देखती थी। वह उसके कार्य को समझने का प्रयत्न करती थी और जब कभी अपने इस प्रयत्न में वह सफल हो जाती थी, तब बच्चों की तरह खिल उठती थी।

फिर पवेल की 'मिट्टी में पैसा' नाम की कहानी जब अखबार में निकली तब से तो वह और भी खास तौर पर गाँववालों के सम्मान का पात्र बन गया।

कारखाने के पिछवाड़े, उसके लगभग चारों ओर अपनी सड़ायँध का दायरा फैलाती हुई, एक बड़ी दलदल थी, जिसमें सनौवर और देवदार के पेड़ थे। गर्मी के मौसम में यह दलदल जर्द और हरे रंग की मोटी-मोटी गाद से ढक जाती थी, जिसमें से मच्छर निकल-निकलकर गाँव में बुखार फैलाते थे। वह दलदल कारखाने की जमीन पर थी। कारखाने के नये मैनेजर ने इस दलदल से मुनाफा पैदा करने के ख्याल से उसको सुखाकर उससे निकलनेवाले ईंधन की अच्छी फसल को बेचने का निश्चय किया। उसने कारखाने के तमाम मजदूरों को बुलाकर समझाया कि दलदल साफ हो जाने से गाँव की आबहवा सुधर जायगी, जिससे सबके स्वास्थ्य को फायदा पहुँचेगा। अस्तु, उसने प्रत्येक मजदूर की मजदूरी के एक रूबल[1] में से एक कोपेक[2] दलदल की सफाई के खर्च के

---

१ व २ रूसी सिक्कों के नाम।

लिए काट लेने का हुक्म दिया। मजदूरों को यह बात बुरी लगी और वे बिगड़े। खासकर उन्हें यह बात बुरी लगी कि दफ्तर के क्लर्कों के वेतन में से एक पाई भी नहीं काटी गई थी।

शनिवार के दिन जब मैनेजर का यह नया हुक्म निकला, पवेल बीमार था। काम पर न जाने से उसे इस नये हुक्म की कोई खबर नहीं थी। दूसरे दिन गिरजे की प्रार्थना के बाद, नाटा और चालाक, बूढ़ा सिजोव नाम का न्यारिया एक दूसरे शैतान-सूरत मखोटिन नाम के लुहार को साथ लेकर पवेल के पास आया और मैनेजर के नये निश्चय का उसको हाल सुनाया।

'हममें से कुछ ने मिलकर', सिजोव ने गम्भीरता से पवेल से कहा—आपस में इस बात पर चर्चा की और सब भाइयों ने मिलकर हमें तुम्हारे पास इसलिए भेजा है कि तुम्हीं हममें एक जानकार हो। क्या कोई ऐसा कानून है, जिसके अनुसार मैनेजर को हमारे पैसों से मच्छ मारने का अधिकार हो ?

'देखो !' मखोटिन अपनी छोटी-छोटी आँखें चमकाकर बोला—तीन वर्ष हुए, इन ठगों ने मजरों के लिए एक गुसलखाना बनाने के लिए इसी प्रकार का कर लगाया था। तीन हजार आठ सौ रूबल गरीब मजदूरों की मजदूरी से काटकर इकट्ठे किये गये थे, परन्तु कहाँ हैं वे रुपये ? और कहाँ है गुसलखाना ?

पवेल ने उनको समझाया कि यह कर किसी प्रकार न्याय-संगत नहीं है। दलदल साफ कराने से तो कारखानेवालों को ही अधिक फायदा होगा। यह सुनकर वे दोनों वहाँ से क्रोध में भरे चले गये।

मा जब उन दोनों को दरवाजे तक पहुँचाकर लौटी तो हँसकर पवेल से कहने लगी—पाशा, अब तो बूढ़े भी तुम्हारी सलाह लेने आते हैं। परन्तु मा की बात का कोई उत्तर न देकर पवेल मेज पर बैठकर लिखने लगा। कुछ देर बाद वह मा से बोला—मा, फौरन यह खत ले जाकर शहर में दे दो।

'क्या इसमें कुछ खतरे की बात है ?' मा ने पूछा।

'हाँ ! वहाँ हम लोगों का एक अखबार छपता है। वह 'मिट्टी में पैसा' नाम की कहानी इस अखबार के अगले अङ्क में अवश्य छपनी चाहिए।'

'मैं अभी जाती हूँ।' चादर ओढ़ती हुई मा बोली। इस प्रकार का यह पहला ही काम था जो पवेल ने अपनी मा को सौंपा था। मा को पवेल के इस प्रकार उससे खुलकर बातें करने पर और यह जानकर कि वह भी उसके काम में सहायक हो सकती है, बड़ी प्रसन्नता हुई।

'मैं अच्छी तरह समझती हूँ, पाशा !' वह कहने लगी—यह तो सरासर लूट है ! शहर के उस आदमी का क्या नाम है ? यगोर आइवानोविश ?

'हाँ' पवेल ने हँसते हुए कहा।

मा शाम को बहुत देर में शहर से बहुत थकी हुई लौटी। परन्तु उसे बड़ा सन्तोष था।

'मैं सशेन्का से भी मिली;' मा बेटे से लौटकर बोली—उसने तुम्हें प्रणाम कहा है। यगोर आइवानोविश बड़ा सीधा है। बड़ा ही मसखरा है। हमेशा हँसता रहता है।

'मुझे खुशी है, तुम उन लोगों को पसन्द करती हो।' पवेल ने धीरे से कहा।

'वे लोग सरल स्वभाव के हैं, पाशा! सरल स्वभाव के लोग अच्छे होते हैं। वे सबको सम्मान की दृष्टि से देखते हैं।'

सोमवार को भी पवेल काम पर नहीं गया। उसका सिर दुखता था। दोपहर को खाने की छुट्टी के समय फेड्या माजिन बेतहाशा दौड़ता हुआ पवेल के पास आया। वह घबराया हुआ हाँप रहा था और खुश और थका हुआ था—चलो-चलो! सारा कारखाना बिगड़ खड़ा हुआ है। तुम्हें बुलाया है। सिजोव और मखोटिन कहते हैं कि तुम्हीं अच्छी तरह उन्हें समझा सकते हो। बाप रे! बड़ा गुल-गपाड़ा मच रहा है!

पवेल उठकर चुपचाप कपड़े पहिनने लगा।

'स्त्रियों की एक भीड़ इकट्ठी हो गई है, और वे चीख रही हैं।'

'मैं भी आऊँगी।' मा पवेल से बोली—तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है। और लोग कहाँ हैं? वे क्या करते हैं? मैं भी चलती हूँ!

'आओ।' पवेल ने उससे संक्षेप में कहा।

ये लोग सड़क पर चुपचाप, परन्तु जल्दी-जल्दी बढ़े। मा घबराहट और जल्दी-जल्दी चलने के कारण हाँपने लगी। उसे लग रहा था कि कोई महान घटना होनेवाली है। कारखाने के द्वार पर स्त्रियों की एक भीड़ चिल्ल-पों मचा रही थी। यह तीनों कारखाने के अहाते में घुसे तो देखते हैं कि चारों तरफ जोश में भरे हुए लोगों की भीड़ जमा हो रही है। मा ने देखा कि सब लोग लुहारखाने की दीवार की तरफ मुँह किये खड़े हैं, जहाँ पर सिजोव, मखोटिन, व्यालोव और पाँच-छः और प्रभावशाली मजदूर पक्के फर्श पर पड़े हुए पुराने लोहे के ढेर पर खड़े हुए हाथ हिला रहे थे।

'व्लेसोव आ रहा है!' किसी ने चिल्लाकर कहा।

'व्लेसोव! इधर ले आओ!'

पवेल को पकड़कर आगे की तरफ ढकेल दिया गया, और मा अकेली भीड़ में पीछे रह गई।

'खामोश! खामोश!' चारों तरफ से आवाजें आईं। निकट ही में राइबिन बोलता सुनाई दिया—पैसे के लिए नहीं, न्याय के लिए हम लड़ते हैं। हमें पैसों से इतना प्रेम नहीं है, क्योंकि हम जानते हैं कि हमारे पैसे दूसरों के पैसों से अधिक गोल नहीं होते हैं। हाँ, वे अधिक भारी जरूर होते हैं, क्योंकि उनमें मैनेजर के पैसों से अधिक खून होता है। यह जरूर सच है।

इन शब्दों का लोगों पर बड़ा प्रभाव पड़ा। चारों ओर कोलाहल हो उठा—ठीक कहा। वाह, राइबिन वाह!

'खामोश! बेवकूफ कहीं का!'

'ब्लेसोव आ गया।'

लोगों की आवाजों के उठते हुए महान कोलाहल में कारखाने की मशीनों की खड़ाम्-खड़ाम् और भाप की भक-भक और चमड़े की पेटियों की फट-फट डूब गई थी। चारों तरफ से दौड़-दौड़कर हाथ हिलाते हुए लोग आ रहे थे और आपस में बहस करते हुए और जली-भुनी सुनाते हुए तीक्ष्ण शब्दों में एक दूसरे को उत्तेजना दे रहे थे। उनके हृदयों की सुषुप्त क्रोधाग्नि, जो बाहर निकलने का मार्ग न मिलने से इतने दिनों तक उनकी छातियों के भीतर सोती थी, आज एकाएक जगकर, बाहर निकलने का मार्ग ढूँढ़ती हुई मुख-मार्ग से शब्दों की बौछार में फट पड़ी थी और यह क्रोधाग्नि मानों एक महान पक्षी की तरह अपने रंग-बिरंगे पंख फैलाती हुई और उनको एक दूसरे से टकराती हुई आकाश में ऊँची उठ रही थी। एक नया स्वरूप पाकर इस क्रोधाग्नि की ज्वालाएँ दावानल की तरह भड़क उठी थीं। गर्द और धुएँ का एक बादल भीड़ के ऊपर छा रहा था। लोगों के मुख अग्नि की तरह लाल हो रहे थे। पसीने के काले-काले बिन्दु उनके गालों पर होकर बह रहे थे। धूम्ररंजित चेहरों में उनकी आँखें दमक रही थीं और दाँत चमक रहे थे।

पवेल सिजोव और मखोटिन के पास पहुँचकर बोला—बन्धुओ!

मा ने देखा कि पवेल का चेहरा पीला हो गया है और उसके होंठ काँप रहे हैं। वह आपे में न रही और आगे को धक्का देकर भीड़ चीरती हुई बढ़ी।

'किधर जाती है, बुढ़िया?'

उसने लोगों को क्रोध से पूछते हुए सुना। और चारों तरफ से उसको धक्के लगे। परन्तु वह रुकी नहीं और भीड़ को अपनी कुहनियों और कन्धों से ढकेलती हुई आगे को बढ़ती गई। अपने बेटे के पास ही रहने की लालसा के वशीभूत वह धीरे-धीरे भीड़ में से रास्ता करती हुई पवेल की तरफ बढ़ने लगी। जो शब्द पवेल के लिए इतना गंभीर और अर्थमय था, उस बन्धु शब्द को मुख से उच्चारकर वह वीर-रस के आनन्द में डूब गया, जिससे एक क्षड़ के लिए उसका कंठ रुँध गया। फिर अपने विश्वासों के लिए मर मिटने और प्रजा के सामने अपना दिल खोलकर रख देने की तीव्र इच्छा ने उसके हृदय को दबोचा और सत्य की विजय के स्वप्न ने उसके मन में आशा का प्रकाश किया।

'बन्धुओ!' उसने दुहराया और इस शब्द की शक्ति और आनन्द को अपने हृदय में संग्रह करता हुआ बोला—हमीं लोग गिरजों और कारखानों को खड़ा करते हैं। हमीं जंजीरों और सिक्कों को गढ़ते है। हमीं खिलौनों और मशीनों को बनाते हैं। हमी वह जीवित शक्ति है जो दुनिया को जन्म से मरण तक खिलाती-पिलाती, पालती-पोसती और हँसाती है।

'ठीक, ठीक!' राइविन ने चिल्लाकर कहा।

'हमेशा और हर जगह काम करने में तो सबसे आगे, परन्तु जीवन में सबसे पीछे

हम रहते हैं। किसे हमारी चिन्ता है ? किसे हमारे हितों की फिक्र है ? कौन हमें मनुष्य समझता है ? कोई नहीं !'

'कोई नहीं !' भीड़ से प्रतिध्वनि आई।

पवेल सँभलकर शान्ति-पूर्वक सरल शब्दों में समझाने लगा। भीड़ धीरे-धीरे उसके चारों ओर सिमटकर एक काली और मोटी सहस्र शिर की काया बन गई थी, जो अपने सहस्रों नेत्रों से उसके चेहरे को ध्यान-पूर्वक घूर रही थी और चुपचाप, विचार-पूर्वक उसके शब्दों को सुन-सुनकर हड़प रही थी।

'और हम लोगों का जीवन तब तक हरगिज नहीं सुधरेगा, जब तक कि हम सब एक दूसरे को अपना बन्धु नहीं समझेंगे, जब तक कि हम अपने अधिकारों के लिए सारे बन्धुओं का एक परिवार बनाकर नहीं लड़ेंगे।'

'मतलब की बात कहो !' मा के पास से किसी ने उजड्डता से चिल्लाकर कहा।

'बीच में मत बोलो ! चुप !' चारों तरफ से दबी आवाजें आईं। कालिख से रँगे हुए चेहरे, क्रोध और शंका से फूलकर आगे को लटक आये थे, और बीसियों आँखें गम्भीरता से ध्यान-पूर्वक पवेल का मुँह देख रही थीं।

'समाजवादी है ; मगर मूर्ख नहीं है।' कोई कहता हुआ सुनाई दिया।

'बोलता खूब निर्भयता से है !' एक लम्बा, लूला मजदूर मा के कन्धे पर थपकी देकर बोला।

'बन्धुओ, उस लोभी सत्ता के विरुद्ध, जो हमारी मेहनत और मजदूरी के बल पर मजे उड़ाती है, लड़ने का यही समय है। अब अपनी आत्म-रक्षा के लिए लड़ने का समय आ गया है। और हम सबको अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि सिर्फ हमीं अपनी मदद कर सकते हैं, दूसरा कोई हमारी मदद नहीं करेगा। यदि हमको अपने शत्रु पर विजय प्राप्त करनी है तो हममें से हर एक को यह महामन्त्र सीखना पड़ेगा कि मैं सबका हूँ और सब मेरे हैं।'

'ठीक कहता है, बन्धुओ !' मखोटिन ने चिल्लाकर कहा—सत्य वचनों को सुनो ! और यह कहकर उसने अपने हाथों को झपटकर फैलाया और हवा में मुक्का हिलाया।

'मैनेजर को बाहर बुलाना चाहिए।' पवेल बोला—और उससे पूछना चाहिए।...

यह सुनकर आँधी का-सा झोंका खाकर भीड़ इधर-उधर झूमी और एक साथ बहुत-सी आवाजें आईं—मैनेजर ! मैनेजर ! मैनेजर को बुलाओ ! मैनेजर से पूछो !

'अपने प्रतिनिधियों को मैनेजर को बुलाने के लिए भेजो। उसको यहीं बुलाओ।'

'नहीं, नहीं, उसको यहाँ बुलाने की कोई जरूरत नहीं है।'

मा धक्का देती हुई बिलकुल सामने जा पहुँची थी और मुँह उठाकर अपने लड़के को ताक रही थी। वह अभिमान से फूली न समाती थी, क्योंकि उसका लड़का बड़े, बढ़े, सम्मानित मजदूरों के बीच में खड़ा सबको समझा रहा था और सब उसकी बातों को सुन-सुनकर स्वीकार कर रहे थे। मा को इस बात की भी बड़ी खुशी हो रही थी कि

पवेल इतनी गम्भीरता और सरलता से, दूसरों की भाँति क्रोध न दिखाता हुआ और गाली-गलौज न करता हुआ बोल रहा था। यद्यपि चिल्लाने, क्रोध करने और गालियों की, टीन पर ओलों की बौछारों की तरह, चारों तरफ से झड़ी लगी हुई थी। पवेल अपने ऊँचे स्थान से खड़ा हुआ नीचे की भीड़ को देखता था और आँखें फाड़-फाड़कर मानों उनमें कोई चीज ढूँढ़ता था।

'प्रतिनिधि!'

'सिजोव को भेजो!'

'व्लेसोव को!!'

'राइविन को भी! वह भी खूब बोलता है!'

अन्त में सिजोव, राइविन और पवेल को मैनेजर से मिलने के लिए मजदूरों की ओर से प्रतिनिधि चुना गया। मैनेजर को बुलाने के लिए यह लोग जाने ही वाले थे कि इतने में भीड़ में से धीमी-धीमी आवाजें आईं—वही स्वयं आ रहा है!

'मैनेजर?'

'ओहो!'

एक लम्बे कद, पतले शरीर, नुकीली दाढ़ी, लम्बे चेहरे और मिचकनी आँखों के मनुष्य के लिए भीड़ ने छटकर रास्ता किया। 'हाँ, जाने दो!' वह हाथ के इशारे से लोगों को बिना छुए ही हटाता हुआ कह रहा था। मनुष्यों पर शासन करनेवाले अनुभवी मनुष्य की तीव्र दृष्टि से मजदूरों के चेहरों को जैसे ही उसने गौर से देखा, वैसे ही वे टोप उतार-उतारकर उसको सलाम करने लगे। परन्तु उनके सलामों का जवाब न देते हुए वह उनके पास से निकलता हुआ चला गया। उसको अपनी तरफ आता देखकर लोग चुप हो गये और सटपटाये-से मुस्करा-मुस्कराकर बगलें झाँकते हुए बड़बड़ाने लगे, जिस प्रकार नटखट बच्चे अपनी शरारत के लिए क्षमा-प्रार्थी होते हैं।

मा के पास से निकलते हुए उसने मा को भी एक तीव्र दृष्टि से घूरा और जाकर लोहे के ढेर के सामने खड़ा हो गया। ऊपर से किसी आदमी ने उसको लेने के लिए हाथ बढ़ाया, परन्तु उसने हाथ को नहीं पकड़ा। अपने शरीर को जोर से उछालकर वह स्वयं ढेर के ऊपर चढ़ गया और वहाँ पहुँचकर पवेल और सिजोव के सामने जाकर खड़ा हो गया। फिर उसने अपने सामने खड़ी हुई शान्त भीड़ को चारों तरफ निगाह दौड़ाकर देखा और पूछा—यह भीड़ यहाँ क्यों इकट्ठी है? तुम लोगों ने काम क्यों बन्द कर दिया है?

उसके इस प्रश्न पर कुछ क्षण के लिए खामोशी छा गई। सिजोव ने हवा में अपनी टोपी हिलाई और कन्धे मटकाते हुए सिर नीचा कर लिया।

'जवाब क्यों नहीं देते?' मैनेजर ने फिर पूछा।

पवेल मैनेजर की तरफ बढ़ा और सिजोव और राइविन की तरफ इशारा करते हुए बोला—हम तीनों को सब बन्धुओं ने आपसे यह कहने का अधिकार दिया है कि आपने मजदूरी में से पैसे काटने का जो हुक्म निकाला है, उस हुक्म को आप रद्द कर दें।

'क्यों?' मैनेजर ने बिना पवेल की तरफ देखे ही पूछा।

'हम इस कर को न्याय-युक्त नहीं समझते हैं!' पवेल ने जोर से उत्तर दिया।

'अच्छा, तो तुम मेरे दलदल साफ करने के निश्चय को मजदूरों की जेब कतरने का सिर्फ एक जरिया समझते हो? तुम्हें यह विश्वास नहीं है कि मैं उनकी दशा सुधारना चाहता हूँ? क्यों?'

'हाँ!' पवेल ने उत्तर दिया।

'और तुम भी ऐसा ही समझते हो?' मैनेजर ने राइबिन से पूछा।

'हाँ, मैं भी ऐसा ही समझता हूँ।'

'और आपका क्या विचार है, मेरे लायक दोस्त?' मैनेजर ने सिजोव की तरफ घूमकर पूछा।

'मेरी भी आपसे यही प्रार्थना है कि हमारे पैसे कृपया हमारी गाँठ में ही रहने दीजिए।' इतना कहकर फिर सिर झुकाकर सिजोव अपराधी की भाँति मुस्कराने लगा। मैनेजर ने फिर एक बार भीड़ पर अपनी निगाह दौड़ाई और कन्धे मटकाते हुए पवेल की तरफ घूमकर बोला—तुम तो काफी समझदार आदमी मालूम होते हो। तुम्हें मेरे कार्य की उपयोगिता नहीं दीखती?

पवेल ने जोर से जवाब दिया—अगर कारखाना अपने खर्च से दलदल साफ करवाये तो हम समझ सकते हैं।

'यह कारखाना है, खैरातखाना नहीं है।' मैनेजर ने रुखाई से कहा—मैं तुम सब को हुक्म देता हूँ कि फौरन जाकर अपने-अपने काम पर लग जाओ।

इतना कहकर वह ढेर पर से सँभलकर पैर रखता हुआ और किसी की तरफ न देखता हुआ नीचे उतरने लगा। भीड़ मे चारों तरफ असन्तोष से घुसपुस होने लगी।

'क्या है?' मैनेजर ने ठिठककर पूछा।

सभी चुप थे। फिर दूर से किसी की आवाज आई—

'तुम्हीं जाकर काम करो!'

'देखो, पन्द्रह मिनट के अन्दर अगर तुम लोग अपने-अपने काम पर नहीं लग जाओगे तो मैं तुम सबको बरखास्त कर दूँगा!' मैनेजर ने रूखे स्वर को साफ करते हुए कहा।

इतना कहकर वह पहले की तरह भीड़ में होता हुआ लौटकर चला। परन्तु अबकी बार उसके पीछे-पीछे एक धीमी-धीमो घुसपुस-घुसपुस होती जाती थी, और जैसे-जैसे वह दूर होता गया, वैसे-वैसे यह घुसपुस चिल्लाने की आवाज में तबदील होती गई।

'और कहो उससे!'

'इसी को न्याय कहते हो? यह तो और भी बुरा हुआ!'

कुछ पवेल की तरफ घूमकर चिल्लाये—कहिए कानूनी महाशय, बताइए, अब क्या किया जाय?

'बड़ी बातें करते थे, परन्तु जैसे ही वह आया, सारी बातें हवा हो गईं !'

'क्यों, व्लेसोव, बोलो, अब क्या करें !'

जब यह आवाजें बार-बार आईं, तब पवेल ने अपना हाथ ऊँचा किया और बोला—बन्धुओ, मेरा प्रस्ताव तो यही है कि जब तक हमारे पूरे दाम न मिलें, हम लोग काम पर वापिस न जायँ !

उसके इतना कहते ही चारों तरफ से क्रोध-भरी आवाजें आने लगीं :

किसी ने कहा—यह समझता है कि हम सब मूर्ख हैं !

दूसरे ने कहा—हम लोगों को ऐसा ही करना चाहिए !

तीसरे ने कहा—हड़ताल !

चौथे ने कहा—जरा-से पैसों के लिए हड़ताल !

पाँचवें ने कहा—क्यों नहीं ! हड़ताल क्यों नहीं !

छठे ने कहा—हम सब बरखास्त कर दिये जायेंगे !

सातवें ने कहा—तो फिर काम कौन करेगा !

आठवे ने कहा—दूसरे जो हैं !

नवें ने कहा—कौन हैं !—दगाबाज-द्रोही !

दसवें ने कहा—अच्छा तो अब प्रत्येक वर्ष मुझे तीन रूबल और साठ कोपेक मच्छरों के लिए देने होंगे !

ग्यारहवे ने कहा—सभी को देने होंगे !

पवेल उतरकर अपनी मा के पास जाकर खड़ा हो गया। अब उसकी तरफ किसी का ध्यान नहीं था। सब चिल्ल-पों मचाते हुए एक दूसरे से बहस में भिड़ रहे थे।

'तुम इन्हें हड़ताल पर नहीं ले जा सकते।' राइबिन ने पवेल के पास जाकर कहा—ये लोग पैसे-पैसे के लिए मरनेवाले महा कायर हैं। इनमें से तीन सौ को शायद तुम अपने साथ हड़ताल पर ले जा सको। परंतु इससे अधिक को नहीं ले जा सकोगे। इतने दिनों के इकट्ठे गोबर के ढेर को एक बार में ही उठाकर नहीं ले जाया जा सकता।

पवेल चुप रहा। उसके सामने भीड़ का विशाल काला चेहरा प्रचण्डता से झूम रहा था ; और वह उसकी ओर टकटकी लगाये हुए आशा से घूर रहा था। पवेल का दिल डर से धड़क रहा था ; क्योंकि उसको ऐसा लगता था कि उसके वचन भीड़ पर झुलसी हुई जमीन पर वर्षा की बिखरी हुई बूँदों की तरह पड़कर नष्ट हो गये थे और उनका कोई असर कहीं नहीं दीखता था। एक-एक करके मजदूर पवेल के पास आते थे और उसके व्याख्यान की प्रशंसा करते हुए हड़ताल फलीभूत होने में संदेह प्रकट करते थे। वे दूसरों की शिकायत करते हुए कहते थे कि लोगों को अपने हितों और अपनी शक्ति का कुछ भी ज्ञान नहीं है।

पवेल को अपनी कमजोरी का पता लगने पर बड़ी निराशा हुई, जिससे उसके हृदय पर बड़ी चोट पहुँची। उसके सिर में एक प्रकार की पीड़ा-सी होने लगी, और उसको

एकाएक ऐसा लगा कि वह किसी वीरान रेगिस्तान में अकेला है। अभी तक जब-जब वह अपने सत्य सिद्धांत की विजय का स्वप्न देखता था; तब-तब उसका हृदय आनंद से नाच उठता था; परंतु आज जब अपने सत्य को लोगों के सामने रखा, तब वह सत्य उसके शब्दों के आवरण में इतना फीका और इतना बलहीन प्रतीत हुआ कि उसका किसी पर कोई प्रभाव न पड़ा। इसके लिए वह अपने आपको ही दोष देने लगा। उसको लगा कि उसने अपने स्वप्न को शायद इतनी खराब और भद्दी भाषा में लोगों को बताया था कि उसके सौन्दर्य का किसी को पता नहीं लग सका था।

अस्तु, वह थका और उदास घर की तरफ लौटा। मा और सिजोव उसके पीछे-पीछे चले; और राइबिन उसके कान में घुस-पुस करता हुआ चला—तुम बोलते तो खूब हो। परंतु अभी ऐसा नहीं बोलते हो जो हृदय में घर कर सके। यही तो दिक्कत है। हृदय के अंदर चिनगारी पहुँचनी चाहिए, हृदय के बिलकुल भीतर।

'अक्ल से काम करने का वक्त आ गया है।' पवेल ने मन्द स्वर में कहा।

'पैर में जूता बैठता न हो, जूता पतला और तंग हो, पैर अंदर घुसता ही न हो; फिर भी पैर को किसी तरह उसमें घुसेड़ दिया जाय तो जूता अवश्य ही जल्द फट जायगा। यह जो दिक्कत है!' राइबिन ने कहा।

इधर सिजोव मा से कह रहा था—हम बूढ़े लोगों को अब मौत के घाट लगना चाहिए। निलोवना! अब एक नई नस्ल पैदा हो रही है। हम लोगों ने क्या जीवन बिताया! हमेशा घुटनों के बल जमीन पर रेंगे और सबके आगे गर्दन झुकाकर चले। परन्तु इन नये लोगों को देखो, या तो इन लोगों की आँखें खुल गई हैं, अथवा ये लोग हमसे भी बुरी भूल कर रहे हैं। मगर कुछ भी हो, ये लोग हम लोगों से भिन्न हैं। देखो न, कैसे वे छोकरे मैनेजर से मुँह लगाकर बातें कर रहे थे, जैसे वह उनकी बराबरी का हो। हाँ जी। आह, मेरा छोकरा माटवे भी कहीं आज जीता होता तो! अच्छा पवेल, प्रणाम। भाई, तुम लोगों के लिए लड़ते तो खूब हो। भगवान तुम्हारी सहायता करे। शायद तुम रास्ता निकाल लो। ईश्वर करे, ऐसा ही हो। इतना कहकर वह चला गया।

'हाँ, हाँ, और तुम जाकर अभी से कब्र में सो जाओ।' राइबिन बड़बड़ाया—तुम लोग आदमी नहीं हो। गढ़े भरने की मिट्टी हो; मिट्टी। तुमने देखा पवेल, आज प्रतिनिधि बनाने के लिए तुम्हारा नाम कौन चिल्ला रहे थे! वे ही जो हमेशा तुम्हें समाजवादी और बखेड़िया कहते हैं। उनका ख्याल होगा कि ऐसा करने से तुम बरखास्त कर दिये जाओगे, जिससे आगे के लिए सारा झगड़ा ही खतम हो जायगा।

'अपनी समझ के अनुसार वे ठीक हैं।' पवेल बोला।

'हाँ, एक दूसरे को फाड़नेवाले भेड़िये भी अपनी समझ के अनुसार ठीक हैं।' राइबिन ने काँपती हुई आवाज में कहा। उसका चेहरा क्रोध से लाल हो गया था।

दिन-भर पवेल बेचैन रहा, मानों वह कोई चीज, जिसका उसे पता नहीं चलता था, खो बैठा था और उसे और भी अधिक खोने का भय हो रहा था।

रात को जब मा सो रही थी और वह बिस्तर पर लेटा पढ़ रहा था, पुलिसवाले फिर आये और आकर मकान के आँगन और छत के कोठे इत्यादि हर जगह की ढूँढ़-ढूँढ़कर तलाशी लेने लगे। वे लोग क्रोध में थे। पीले चेहरेवाले अधिकारी ने पहले का-सा ही इस बार भी अशिष्ट और अपमानपूर्ण बर्ताव किया, उसे गालियाँ देने और दिल पर घाव करनेवाली तीखी बातें कहने में मजा-सा आता था। मा एक कोने में चुपचाप बैठी अपने बेटे की ओर एकटक देख रही थी। पवेल अपने मनोभावों को व्यक्त न करने का हर तरह से प्रयत्न कर रहा था। परन्तु जब अफसर हँसता था, तब पवेल की उँगलियाँ एक विचित्र ढंग से हिल उठती थीं और मा को लगता था कि अफसर का मजाक सहन कर लेना और उसको जवाब न देना पवेल के लिए बड़ा कठिन था। इस बार की तलाशी में मा को उतना भय नहीं लगा, जितना पहले लगा था। उसके हृदय में इन खाकी वर्दीवाले निशाचरों के प्रति बड़ी घृणा उत्पन्न हो गई थी, और इस घृणा में उसका सारा डर डूब गया था।

पवेल ने धीरे से मा के कान मे कहा—मुझे गिरफ्तार करेंगे।

सिर झुकाकर धीरे से मा ने उत्तर में कहा—मैं समझती हूँ।

वह सचमुच समझती थी कि पवेल ने उस रोज मजदूरों से जो कुछ कहा था उसके लिए उसको जेल में अवश्य डाला जायगा। परंतु चूँकि सारे मजदूर उसमें सहमत थे, वे सब उसका साथ देंगे। जिससे अधिक दिन तक वह जेल में नहीं रखा जायगा।

मा की इच्छा हो रही थी कि वह अपने बेटे से चिपटकर खूब रोये, परन्तु सामने खड़ा हुआ अफसर आँखें मिचकाता हुआ कुपित दृष्टि से मा की तरफ देख रहा था। उसके होंठ काँप रहे थे और उसकी मूँछें हिल रही थीं। मा को ऐसा लगा कि वह अफसर उसके रोने, गिड़गिड़ाने और हाथ जोड़ने के इन्तजार मे था। अस्तु, अपने दिल पर पत्थर रखने का और जहाँ तक हो सके, कुछ न कहने का कठिन प्रयत्न करती हुई वह धीरे से बोली—अलविदा, पाशा तुमने अपनी जरूरत की चीजें ले लीं?

'सब चीजें ले लीं मा! कोई चिन्ता न करो!'

'ईश्वर तुम्हारी सहायता करे।'

———

नवाँ परिच्छेद

पुलिस के पवेल को लेकर चले जाने के बाद मा तिपाई पर बैठ गई और आँखें बन्द करके धीरे-धीरे रोने लगी। अपनी पीठ दीवार से लगाकर और सिर पीछे को झुकाकर वह उसी तरह बैठ गई जैसे उसका पति शाम को शराब पीकर बैठा करता था। दुःख में डूबी हुई, अपनी बेबसी और निर्बलता पर कुढ़ती हुई, एक स्वर में देर तक धीरे-धीरे रोकर अपने घायल हृदय की पीड़ा उसने अपनी सिसकियों मे उँड़ेली। उसको आँखों के आगे छोटी-छोटी मूँछोंवाले अफसर का पीला चेहरा एक अमिट धब्बे की तरह लटकता था, जिसकी मिचकती हुई आँखें द्रोहपूर्ण हर्ष से उसकी ओर घूरती थीं। रोष और घृणा के भाव उसकी छाती में कहीं पर काले-काले धागों की तरह लपट रहे थे। उन निशाचरों के प्रति रोष और घृणा के भाव जो बेटे को माता की गोद से छीन-कर सिर्फ इसलिए उठा ले जाते हैं कि वह सत्य-मार्ग पर चलने का प्रयत्न करता है।

कड़ाके की ठण्ड पड़ रही थी। मेह की बौछारें खिड़की के शीशों पर तड़तड़ पड़ रही थीं। ऐसा लग रहा था कि कोई चीज दीवारों के सहारे-सहारे बाहर रेंगती थी। मा को लगा कि चौड़े, लाल-लाल, नेत्रहीन चेहरों और लम्बी-लम्बी भुजाओं के विशाल-काय खाकी वर्दीवाले, मकान के चारों तरफ सँभल-सँभलकर घूम रहे हैं। उसको लगा कि उसके कानों मे उनके जूतों मे लगे हुए लोहे की खनखनाहट की सचमुच भनक आ रही थी। अस्तु, वह सोचने लगी—मुझको भी पकड़ ले जायँ तो अच्छा है!

इसी प्रकार सुबह हो गई। मजदूरों को बुलाने के लिए कारखाने का भोंपा बजने लगा। परन्तु आज उसकी आवाज मन्द, अस्पष्ट और फीकी थी। इतने मे दरवाजा खुला और राइबिन ने प्रवेश किया। अपनी दाढ़ी से मेह की बूँदें झाड़ता हुआ वह आकर मा के सामने खड़ा हो गया और बोला—पवेल को तुमसे छीनकर ले गये, क्यों!

'हाँ, छीन ले गये! कुत्ते!' मा ने आह भरकर उत्तर दिया।

'ऐसा है!' राइबिन मुस्कराता हुआ बोला—मेरे घर की भी उन्होंने आकर तलाशी ली। मुझसे खोद-खोदकर प्रश्न किये। दिल भरके मुझे गालियाँ दीं। परन्तु इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं बिगाड़ा। पवेल को पकड़ ले गये, क्यों! मैनेजर ने आँख मारते हुए, उनकी मुट्ठी गरम की होगी, और पुलिसवालों ने कहा होगा, ठीक है। बस फिर क्या है! जरा देर में इधर से एक आदमी गायब। उन दोनों की आपस में खूब घुटती है। एक लोगों की जेबें खखोलता है और दूसरा बन्दूक लेकर खड़ा रहता है!

'तुम्हें पवेल का साथ देना चाहिए!' मा ने उठते हुए जोर से कहा—तुम्हारे सबके लिए ही वह गया है!

'किनको पवेल का साथ देना चाहिए!' राइबिन ने पूछा।

'तुम सबको !'

'तुम्हारी आशाएँ बड़ी हैं। हम लोग कुछ न करेंगे। हमारे मालिकों ने हजारों वर्ष से ताकत इकट्ठी की है। उन्होंने हमारी छातियों में कीलें भोंक दी हैं। अस्तु, हम लोग एकदम एक नहीं हो सकते। पहले हमें एक दूसरे की छाती से यह सलाखें, जो हमें एक दूसरे से अलग किये हुए हैं, खींचकर निकालनी होंगी।'

इतना कहकर वह धम-धम कदम रखता हुआ मा के दुःख को अपने अत्यन्त निराशापूर्ण शब्दों से और भी उत्तेजित करके चला गया।

एक निरर्थक, खाली लालसा के घने बादल दिन-भर मा के मन में घिरते रहे। उसने न तो चूल्हे में आग जलाई, न खाना पकाया और न चाय पी। शाम को चिराग जलने के बहुत बाद, किसी तरह रोटी का एक टुकड़ा हलक में डाला। फिर जब वह सोने के लिए बिस्तर पर जाकर लेटी तब उसे लगा कि उसका जीवन आज तक इतना दीन, इतना सूना, इतना खाली कभी नहीं हुआ था, जितना आज हो गया था। पिछले कई वर्षों से वह बराबर किसी महान् घटना, किसी भारी बात की आशा में रहती थी। उद्यमी, पौरुषी जीवन से पूर्ण नौजवान उसके चारों ओर घिरे रहते थे। और अपने बेटे का विचारपूर्ण और गम्भीर मुख देखकर मा को लगता था कि वही इस चहचहाते हुए उच्च जीवन का विधाता है। परन्तु आज उसके जाते ही सब कुछ मिट गया था। एक राइबिन के अतिरिक्त, जो मा को अच्छा नहीं लगता था, और कोई उसके घर में झाँकने तक नहीं आया था।

खिड़की के बाहर घनघोर और ठण्डी वर्षा निःश्वास लेती हुई खिड़की के शीशों से सिर मार रही थी। वर्षा की बौछारों की आवाज और छत में से टपकनेवाली बूँदों की टप-टप हवा में मिलकर एक दुखी, वेदना-पूर्ण स्वर उत्पन्न कर रही थी। सारा मकान मा को धीरे-धीरे हिलता-सा लगता था और चारों ओर की सभी वस्तुएँ उसे निरर्थक और उद्देश्यहीन लगती थीं।

इतने में द्वार पर धीमी-सी आवाज हुई। किसी ने दो बार धीरे-धीरे दरवाजा खट-खटाया। मा इन आवाजों की आदी हो गई थी। अब इन खटकों को सुनकर उसे भय नहीं लगता था। उसके हृदय में हर्ष की एक मन्द ज्योति जगी और एक अस्पष्ट आशा से वह तुरन्त उठकर खड़ी हो गई। कन्धों पर जल्दी से शाल डालकर, उसने झपटकर द्वार खोल दिया।

सेमोयलोव अन्दर घुसा। उसके साथ एक दूसरा मनुष्य भी घुसा, जिसका मुँह उसके कोट के कालर और भौंहों तक खिंचे हुए टोप मे ढका था।

'क्या, हम लोगों ने तुमको जगा दिया ?' सेमोयलोव ने बिना प्रणाम किये ही मा से पूछा। आज उसका चेहरा उसकी प्रकृति के विरुद्ध उदास और विचारशील था।

'नहीं, मैं सोई नहीं थी।' मा आशा-भरी आँखों से उन दोनों की तरफ देखती हुई बोली।

सेमोयलोव के साथी ने सिर से टोप उतारा और एक गहरी साँस लेते हुए मा के हाथ में एक पुराने और परिचित मित्र की तरह अपना चौड़ा और छोटी उँगलियोंवाला हाथ रखते हुए मोटी आवाज से कहा—प्रणाम, दादी ! तुमने मुझे नहीं पहचाना ?

'ओहो, तुम हो ?' निलोवना ने हर्ष से विह्वल होकर कहा—यगोर आइवानोविश ?

'हाँ वही, बिलकुल वही हूँ ।' उसने अपना बड़े-बड़े बालोंवाला विशाल सिर झुकाते हुए उत्तर दिया । भली प्रकृति की सूचक उसके मुख पर सहज मुस्कान थी, और उसकी छोटी और भूरी आँखों में स्पष्ट स्नेह था । सेमोवार की तरह वह गोल-मटोल और नाटे कद का था । उसकी गर्दन मोटी और बाँहें छोटी थीं । उसके चेहरे पर पालिश की-सी चमक थी और उसके गालों की हड्डियाँ उभरी हुई थीं । वह जोर-जोर से साँस ले रहा था, और उसकी छाती में से बराबर एक धीमी घुर्र-घुर्र की आवाज आ रही थी ।

'भीतर आ जाओ ! मैं पल-भर में अपने कपड़े पहनकर तैयार हुई जाती हूँ ।' मा ने कहा ।

'हम तुम्हारे पास काम से आये हैं ।' सेमोयलोव ने विचार में डूबे हुए तिरछी नजरों से उसको देखते हुए कहा ।

यगोर कमरे में घुस गया और वहाँ से बोला—निकोले आज सुबह जेल में से छूट गया, दादी ! तुम उसे जानती हो ?

'हाँ ! कितने दिन तक वह जेल में रहा ?' मा ने पूछा ।

'पाँच महीने ग्यारह दिन । वह लिटिल रूसी से मिला था । उसने आपको प्रणाम भेजा है । और पवेल ने भी आपको प्रणाम कहा है और प्रार्थना की है कि आप बिलकुल घबरायें नहीं । वह कहता है कि मुसाफिरों के आराम के लिए जिस तरह सरायें बनाई जाती हैं, उसी तरह हमारे आराम के लिए हमारे कृपालु अधिकारियों ने जेलें बना दी हैं । अच्छा दादी, अब जरा मतलब की बात पर आयें । तुम्हें खबर है, कल यहाँ कितने आदमी पकड़े गये थे ?'

'नहीं, मुझे नहीं मालूम । क्यों ? क्या पवेल के अतिरिक्त किसी और की भी गिरफ्तारी हुई है ?' मा ने पूछा ।

'पवेल का उनचासवाँ नम्बर था !' यगोर ने धीरे से कहा—और अभी लगभग दस के और पकड़े जाने की आशा है ! जैसे कि यह महाशय !

'हाँ, मैं भी पकड़ा जाऊँगा ।' सेमोयलोव ने गुर्राकर कहा ।

निलोवना को कुछ ढाढ़स हुआ । 'पवेल ही अकेला नहीं है ।' वह सोचने लगी । फिर कपड़े बदल चुकने पर वह कमरे में घुसी और वीरता से मुस्कुराती हुई कहने लगी—मैं समझती हूँ कि इतनों को पकड़ा है तो बहुत दिनों तक जेल में नहीं रखेंगे !

'ठीक कहती हो !' यगोर मा की हाँ में हाँ मिलाते हुए बोला—और अगर हम उनकी यह खिचड़ी न पकने दें तो हम लोग उनको बिलकुल बेवकूफ ही ठहरा सकते हैं । बात यों है दादी, कि अगर इन लोगों की गिरफ्तारी के बाद कारखाने में पर्चे बँटना

बन्द हो गये, तो पुलिस उसका फायदा उठायेगी और इस बात को पवेल और उसके साथियों के विरुद्ध सबूत में पेश करेगी !

'कैसे, कैसे ! ऐसा क्यों !' मा ने घबराकर जोर से पूछा ।

'बात बिलकुल साफ है, अम्माँ !' यगोर ने धीरे से कहा—कभी-कभी पुलिस भी ठीक तर्क करती है। देखो, तुम्हीं जरा सोचो ! जब पवेल बाहर था, तब तो किताबें और पर्चे बँटते थे ; जब से पवेल पकड़ा गया तब से किताबें और पर्चे कुछ नहीं बँटते हैं ! इसका मतलब यह हुआ कि पवेल ही सब कुछ करता था। क्यों न ! ओ हो ! तब तो पुलिस को उसको जीता ही खा जाना चाहिए। उन पुलिसवालों को इस बात की बड़ी चाह रहती है कि अपने चंगुल में आ जानेवाले मनुष्य को वे इतना विकृत कर दें कि उसमें मनुष्यता का कोई अंश न रह सके। एक सूखे पिंजर की तरह मनुष्यता की सिर्फ एक मर्मस्पर्शी स्मृति रह जाय !

'अच्छा, अच्छा।' मा निराशा में डूबती हुई बोली—'हे भगवान् ! अच्छा, तो फिर क्या करना होगा !

'सभी बन्धुओं को बदमाशों ने जाल में फँसा लिया है।' रसोईघर में से सेमोलोव की आवाज आई—हम लोगों को पहले की तरह ही काम जारी रखना चाहिए, जिससे हमारा कार्य जारी रहने के साथ-साथ ही हमारे बन्धुओं की जान भी बचे।

'और यह काम करने के लिए कोई आदमी नहीं है।' यगोर ने मुस्कराते हुए कहा—हमारे पास बढ़े अच्छे पर्चे और किताबें हैं। मैंने स्वयं उन्हें तैयार कराया है। मगर कारखाने में उन्हे कैसे पहुँचाया जाय, यह समस्या हमारे सामने है।

'आजकल हर आदमी की कारखाने के दरवाजे पर ही तलाशी ले ली जाती है।' सेमोयलोव बोला।

मा ताड़ गई कि मुझसे कुछ आशा की जा रही है। उसकी समझ में आ गया कि वह भी अपने लड़के की सहायता कर सकती है। अस्तु, उसने जल्दी से पूछा—अच्छा, तब ? हम लोगों को क्या करना चाहिए ?

सेमोयलोव उत्तर देने के लिए कमरे की देहरी पर आकर खड़ा हो गया :

'निलोवना, तुम उस खोंचेवाली मेरया कोरसुनोवा को तो जानती हो न !'

'हाँ, जानती हूँ। अच्छा !'

'उससे बातचीत करके देखो कि वह हमारा माल अन्दर पहुँचा सकेगी या नहीं।'

'हम लोग उसको रुपये देंगे।' यगोर बोला।

मा ने इनकार करते हुए हाथ हिलाये :

'नहीं-नहीं। वह बड़ी बक्की है। नहीं। कहीं पता चल गया कि मैं पर्चे भेजती हूँ ! इस घर से भेजे जाते हैं···नहीं, नहीं !'

फिर एकाएक किसी विचार से प्रेरित होकर वह आनन्द-पूर्वक, मन्द स्वर में कहने लगी—मुझे दो, मुझे दो ! मैं सारा प्रबन्ध कर लूँगी। मैं कोई रास्ता निकाल लूँगी।

मैं मेरया से कहूँगी कि मुझे अपने काम में सहायता करने के लिए नौकर रख ले। मुझे अपना पेट भरने के लिए कोई काम तो करना ही है न! बस, मैं उसको नौकर बनकर कारखाने में खाना ले जाया करूँगी। हाँ, हाँ, मैं सारा प्रबन्ध कर लूँगी। दिल पर हाथ रखते हुए उसने जल्दी-जल्दी विश्वास दिलाते हुए कहा—मैं सारा काम खुद अच्छी तरह पूरा करूँगी। और किसी को कोई पता नहीं चलेगा। अन्त में वह खुशी में भरकर चिल्लाई—उन्हें भी पता लगेगा कि पवेल बाहर नहीं है, तो भी पवेल का हाथ जेल में से बाहर पहुँच जाता है! हाँ जी, पता लगेगा!

तीनों हर्ष से खिल उठे। जल्दी-जल्दी हाथ मलते हुए यगोर मुस्कराया और बोला—काम बन गया! क्या कहने हैं? अरे अम्माँ, अब कुछ फिक्र मत करो, सब काम ठीक हो जायगा!

'अगर इसमें सफलता मिली तो मैं जेल में जाकर आराम से बैठूँगा।' सेमोयलोव ने हँसते और हाथ मलते हुए कहा।

'तुम बड़ी अच्छी हो अम्माँ!' यगोर ने खखारते हुए मोटी आवाज में कहा।

मा मुस्कराई। यह बात अच्छी तरह उसकी समझ में आ गई थी कि अगर कारखाने में पर्चे बराबर बँटते रहे, तो अधिकारियों को यह बात स्वीकार करनी होगी कि पवेल पर्चे नहीं बाँटता था, और अपने कार्य की सफलता में पूर्ण विश्वास होते ही उसका सारा शरीर आनन्द से काँप उठा।

'जब तुम पवेल से जाकर मिलो,' यगोर बोला—तब उससे कहना कि तुम्हारी मा बड़ी अच्छी है।

'मैं शीघ्र ही उससे मिलूँगा, विश्वास रखो!' सेमोयलोव मुस्कराता हुआ बोला।

मा ने उसका हाथ पकड़कर उत्सुकता से कहा—उससे कहना कि मैं सब काम करूँगी, जिस बात की आवश्यकता होगी, करूँगी। मैं चाहती हूँ, पवेल को भी इस बात की खबर हो जाय।

'और मान लो कि पुलिस इसको जेल में न डाले!' यगोर ने सेमोयलोव की तरफ इशारा करते हुए मा से पूछा।

मा ने एक ठण्डी साँस ली और उदास होकर कहा—तब फिर क्या किया जा सकता है! इस पर वे दोनों कहकहा लगाकर हँस पड़े। मा को उनके हँसने पर अपनी उपहसनीय भूल का पता चला। अस्तु, वह खिसियानी हँसी हँसती हुई, आँखें नीची करके बात सँभालने का प्रयत्न करती हुई कहने लगी—अपनों की चिन्ता में लोग दूसरों को भूल जाते हैं।

'यह स्वभाविक बात है।' यगोर ने कहा—मगर पवेल की ओर बिलकुल भी चिन्ता न करें। वह जेल से और भी अच्छा आदमी बनकर निकलेगा। जेल हम लोगों के लिए आराम और स्वास्थ्य की जगह है, क्योंकि इन चीजों के लिए हमें बाहर अवकाश नहीं मिलता है। मैं तीन बार जेल गया हूँ और तीनों बार, यद्यपि जेल में पढ़ने के लिए

अच्छी पुस्तकें तो नहीं दी जातीं, फिर भी मुझे अपने दिल और दिमाग के लिए बहुत-सी सामग्री मिली है।

'तुम्हें साँस लेने में कठिनाई होती है?' मा ने उसके चेहरे की तरफ स्नेह से देखते हुए पूछा।

'हाँ, उसका कुछ कारण है।' उसने उत्तर दिया और फिर ऊपर को उँगली उठाते हुए कहा—अच्छा तो फिर तय है, दादी! कल तुम्हारे पास माल भेज दिया जायगा और सदियों के अन्धकार को नष्ट करनेवाले चक्र का घूमना फिर शुरू हो जायगा। क्यों न? हमारे सत्यमार्ग की जय! वाक्-स्वतन्त्रता की जय! मातृ-हृदय की जय!

'अच्छा, प्रणाम!'

'प्रणाम!' सेमोयलोव ने तपाक से मा से हाथ मिलाते हुए कहा—अपनी मा से तो मैं कभी ऐसी बातों का जिक्र भी नहीं कर सकता। अरे नहीं बाबा! कभी नहीं।

'धीरे-धीरे सब समझने लगेंगे'—निलोवना ने उसको प्रसन्न करने की इच्छा से कहा—सबकी समझ में आ जायगा।

इन लोगों के चले जाने पर मा ने द्वार में ताला लगा लिया और कमरे के बीच में घुटनों पर बैठकर ईश्वर से प्रार्थना करने लगी। बाहर तड़-तड़ मेंह पड़ रहा था। उसकी प्रार्थना कोई शब्दों की प्रार्थना नहीं थी। वह मनुष्य मात्र के एक महान विचार में डूब रही थी—उन सभी लोगों के विचार में, जिनका पवेल ने उससे परिचय कराया था। वे सब लोग दीवार पर लगी हुई उस मूर्ति के सामने से, जिसको मा एकटक देख रही थी, एक-एक करके उसको गुजरते हुए दीखे। और वे सब-के-सब उसको बड़े सरल, एक दूसरे के अत्यन्त निकट, परन्तु फिर भी जीवन में बड़े अकेले लगे।

दूसरे दिन सवेरे ही मा मेरया कोरसनोवा के पास गई। हमेशा की तरह उस झक्की, सदा की भाँति मैली खोंचेवाली ने उसको सहानुभूति-पूर्वक प्रणाम किया।

'क्यों, दुःख करती हो?' मेरया ने मा की पीठ ठोंकते हुए पूछा—दुःख करने से क्या फायदा होगा? वे पकड़ ले गये तो ले जाने दो। कुछ नहीं बिगड़ेगा। अभी तक चोरी के लिए ही जेल में डाला जाता था, अब सत्य बात कहने के लिए भी कालकोठरी मिलती है! पवेल ने चाहे कुछ गलत भी कहा हो, परन्तु वह सभी के हित के लिए लड़ा। सब इस बात को जानते है। चिन्ता मत करो। मुँह खोलकर न कहें, परन्तु सब भले आदमी को पहचानते हैं। मैं तुम्हारे पास स्वयं ही आनेवाली थी; मगर समय नहीं मिला। मुझे खाना पकाने और बेचने से जरा भी फुर्सत नहीं मिलती। परन्तु फिर भी मैं समझती हूँ कि मरते दम तक मैं भिखारिन ही रहूँगी। भाड़ में जाय यह पेट! इसके भरने की चिन्ता से ही छुट्टी नहीं मिलती। जिस प्रकार चूहा रोटी को कुतर-कुतरकर खा जाता है, उसी प्रकार यह पेट-पोषण मेरे जीवन को खाये जाता है। दस-पाँच रुपये जैसे ही जोड़कर रखती हूँ, कोई बदमाश आकर उड़ा ले जाता है। स्त्री होना

महापाप है ! बड़ी मुश्किल है ! अकेला रहना भी मुश्किल है, और किसी के साथ रहना भी मुश्किल है !

'मैं तुमसे यह प्रार्थना करने आई थी कि अपने काम में मदद करने के लिए तुम मुझे अपना नौकर रख लो !' ल्लेसोवा ने उसकी बकवास काटते हुए कहा।

'यह कैसे !' मेरया ने पूछा। फिर मा से सारी बात समझकर उसने आखिरकार उसका प्रस्ताव सिर हिलाते हुए स्वीकार कर लिया :

'मैं तुम्हें रख लूँगी ! तुम्हे याद है, किस प्रकार मुझे छिपाकर मेरे पति से तुम मेरी रक्षा करती थीं ? अब तुम्हारी मुसीबत से मैं तुम्हारी रक्षा करूँगी। सभी को तुम्हारी मदद करनी चाहिए, क्योंकि तुम्हारा बेटा सभी के लिए कुर्बान हो रहा है। तुम्हारा लड़का बड़ा अच्छा है। सब उसको भला कहते हैं। सब उस पर रहम खाते हैं। मैं तुमसे एक बात कहती हूँ। देखो, यह गिरफ्तारियाँ करके अधिकारियों का कोई भला नहीं होने का, मेरी यह बात गाँठ लो ! देखो ना, कारखाने में क्या हो रहा है ! लोगों की बातें सुनो। सब क्रोध में हैं। मेरी मैया ! अधिकारी लोग समझते हैं कि आदमी की एड़ी पर घाव मारने से वह बहुत दूर तक नहीं चल सकेगा। परन्तु होता और ही कुछ है। दस आदमियों के चोट लगती है और सौ को क्रोध आता है। मेहनत-मजदूरी करने-वालों से लोगों को सँभलकर पेश आना चाहिए। उनमें सहन-शक्ति बहुत होती है। वे बहुत समय तक अत्याचारों को सह सकते हैं ; मगर फिर जब फटते हैं तो एकाएक ज्वालामुखी की तरह फटते भी हैं।'

———

दसवाँ परिच्छेद

इस बातचीत के परिणाम-स्वरूप दूसरे दिन ही दोपहर को मा मेरया की रोटी की दूकान के दो बर्तनों में खाना भरे हुए, कारखाने के अहाते मे बेचती दिखाई दी। मेरया स्वयं खोंचा लेकर बाजार में बेचने चली गई थी।

मजदूरों का ध्यान नये खोंचेवाली की तरफ फौरन आकर्षित हुआ। कुछ उसके पास जाकर बढ़ावा देते हुए बोले—व्यापार शुरू किया है, निलोवना!

फिर उसको सान्त्वना देते हुए वे कहने लगे कि पवेल जल्दी ही छूट जायगा; क्योंकि उसका पक्ष सत्य है। परन्तु कुछ मजदूरों ने उससे बहुत डरते-डरते सहानुभूति प्रकट की, जिससे मा के दिल मे भय भी उत्पन्न हुआ। कुछ मजदूरों ने कारखाने के मैनेजर और पुलिसवालों को खुल्लमखुल्ला कोसकर और गालियाँ सुनाकर मा का कलेजा ठण्डा करने का प्रयत्न किया। कुछ ऐसे भी थे जो उसकी तरफ दूर से ही क्रूर दृष्टि से देख रहे थे। इन्हीं में एक गोरबाव नाम का मजदूर भी था, जो दाँत पीसता हुआ उससे कहने लगा—अगर मैं गवर्नर होता, तो तेरे लड़के को फाँसी पर लटका देता। फिर देखता, लोगों को कौन बरगलाता है!

मृत्यु के ठण्डे झोंके की तरह इस धमकी ने मा को एकदम कँपा दिया। परन्तु वह कुछ न बोली और चुपचाप उसके छोटे चित्तीदार चेहरे पर दृष्टि डालकर अपनी आँखें नीची कर लीं।

मा ने देखा कि कारखाने में काफी सनसनी फैली हुई थी। छोटे-छोटे गुट्टों मे मजदूर इकट्ठे होकर जहाँ-तहाँ जोश में भरे हुए आपस में कानाफूसी कर रहे थे। मिस्त्री लोग बड़े घबराये हुए थे और हर बात में अपनी नाक घुसेड़ते फिरते थे। इधर-उधर से जली-भुनी गालियों और चिढ़े हुए अट्टहास की आवाजें भी बीच-बीच मे आती थीं।

दो पुलिसवाले सेमोयलोव को लिये हुए मा के पास से निकले! सोमेयलोव का एक हाथ जेब में था और दूसरे से वह अपने लाल-लाल बाल सँभालता हुआ जा रहा था।

लगभग सौ मजदूरों की एक छोटी भीड़ उसके पीछे-पीछे चल रही थी, जो पुलिस-वालों पर फब्तियाँ कसती हुई, उन पर तरह-तरह की गालियों की बौछारें कर रही थी।

'तुम्हारी सवारी निकल रही है, ग्रीशा!' एक मजदूर ने चिल्लाकर कहा।

'हाँ देखो, हम लोगों की कितनी इज्जत की जाती है!' दूसरे ने कहा।

'सवारी के साथ प्यादे तो होने ही चाहिएँ न!' तीसरे ने कहा और यह कहकर उसने पुलिसवालों को एक भद्दी गाली दी।

'चोरों को पकड़ने से अब कुछ लाभ नहीं होता।' एक लम्बे काने मजदूर ने जोर से चिल्लाकर कटाक्षपूर्ण स्वर में कहा—इसलिए अब भले आदमियों को पकड़ना शुरू किया गया है।

'और अब तो रात में भी नहीं आते!' एक दूसरा बोला—दिन दहाड़े आकर बड़ी बेशर्मी से पकड़कर ले जाते हैं। देखो तो इन निर्लज्ज बदमाशों को!

भीड़ की नजरों से दूर होने के लिए, चारों तरफ से पड़नेवाली गालियों की बौछारों को अनसुनी करते हुए, पुलिसवाले क्रोध में भरे हुए जल्दी-जल्दी आगे को कदम बढाने लगे। उस तरफ से तीन मजदूर लोहे की एक लम्बी सलाख अपने कन्धों पर रखे आ रहे थे। वे पुलिसवालों के बिलकुल सामने अपनी सलाख अड़ाकर चिल्लाये—देखना, खबरदार मच्छीमारो!

निलोवना के पास से होकर जब सेमोयलोव निकलने लगा तो उसने मा की तरफ सिर हिलाते हुए मुस्कराकर कहा—देखो, ईश्वर का बन्दा ग्रेगरी भी पकड़कर जा रहा है!

मा ने उसको सिर झुकाकर अभिवादन किया और चुप रही। जवान, गम्भीर, चतुर छोकरों को मुस्कराते हुए जेल जाते देखकर मा का हृदय पसीज रहा था, और उनके लिए उसके हृदय में आप-से-आप दयापूर्ण वात्सल्य-प्रेम का स्रोत फूट रहा था। अधिकारियों के विरुद्ध तीखी बातें सुनकर उसे हर्ष हो रहा था, क्योंकि मजदूरों को सिर उठाने का पाठ सिखानेवाला उसका बेटा ही था, जिसका प्रभाव मा को चारों तरफ फैलता हुआ लगता था।

कारखाने से लौटकर उसने अपना शेष दिन मेरया के घर खाना बनाने में उसकी सहायता करते हुए और उस झक्की औरत की बकझक सुनते हुए गुजारा। शाम को चिराग जल चुकने के बहुत देर बाद वह अपने घर लौटी। घर उसे बिलकुल सूना लगा; वह बड़ा ठण्डा था और काटने को दौड़ रहा था। मा मकान के कोने-कोने में घूमी, कभी यहाँ बैठती और कभी उठकर वहाँ जा बैठती; मगर उसे कहीं कुछ चैन नहीं मिला, और न यही समझ में आया कि अब आगे क्या करे। रात बढ़ने लगी थी। अस्तु, उसको चिन्ता होने लगी कि अभी तक यगोर पर्चों को लेकर क्यों नहीं आया।

खिड़की के उस पार वासन्ती हिम के धूमिल, भारी-भारी पीले पंख फड़फड़ाते हुए आ-आकर चुपचाप, धीरे-धीरे खिड़कियों के शीशों पर बैठ रहे थे; वे शीशों पर से फिसल-फिसलकर पिघलते हुए अपने पीछे शीशों पर पानी की लकीरें बनी हुई छोड़ जाते थे। मा को अपने बेटे की याद सता रही थी।

इतने में धीरे से द्वार खटका। मा ने झपटकर द्वार खोल दिया और सशेन्का ने अन्दर प्रवेश किया।

मा ने सशेन्का को बहुत दिनों से नहीं देखा था। अस्तु, सबसे पहिले मा का ध्यान उसकी अस्वाभाविक शारीरिक बाढ़ की तरफ गया।

'गुड ईवनिंग !' मा बोली—इस निर्जन रात में एक पाहुना पाकर मैं बड़ी प्रसन्न हूँ। बड़े दिनों बाद आई हो ! कहीं चली गई थीं ?

'नहीं, मैं जेल में थी।' छोकरी ने मुस्कराते हुए कहा—मैं निकोले आईवानोविश के साथ थी। तुम्हें उसकी याद है ?

'हाँ-हाँ, !' मा ने कहा—यगोर ने कल ही तो मुझसे कहा था कि वह छूट गया है। मगर तुम्हारे बारे में मुझे कुछ नहीं मालूम था। मुझसे किसी ने कहा तक नहीं कि तुम भी पकड़ी गई हो।

'कहने से क्या लाभ ? अच्छा, यगोर के यहाँ आने से पहले ही मैं कपड़े बदल डालना चाहती हूँ !' लड़की ने चारों तरफ देखते हुए कहा।

'तुम तो बिलकुल पसीने से लथपथ हो रही हो !'

'मैं पर्चे और किताबें लाई हूँ।'

'कहाँ हैं, लाओ ! मुझे दो !' मा ने बेसब्री से चिल्लाकर कहा।

'अभी लो !' छोकरी ने उत्तर दिया और यह कहकर उसने अपनी चोली खोल दी, जिसमें से पेड़ की पत्तियों की तरह झड़कर छोटी-छोटी कागज की पारसलें फर्श पर चारों तरफ बिखर गईं। मा ने उन्हें उठा लिया और हँसती हुई बोली—मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा था कि तुम इतनी मोटी कब से हो गईं ! ओहो, कितना ढेर का ढेर उठा लाई हो ! क्या तुम पैदल ही आई हो ?

'हाँ !' सशेन्का बोली। अब वह फिर सदा की भाँति पतली और नाजुक दीखने लगी थी। मा ने देखा कि उसके गाल भीतर की तरफ घुस रहे थे और उसकी बड़ी-बड़ी आँखों के नीचे काले-काले दाग पड़ रहे थे।

'तुम अभी जेल से निकली हो। तुम्हें कुछ दिन आराम करना चाहिए। मगर तुम तो इतना बड़ा ढेर लादकर सात-सात मील पैदल चलती हो !' मा ने आह भरकर सिर हिलाते हुए कहा।

'ऐसा न करें तो काम कैसे चलेगा।' लड़की ने कहा—कहो, पवेल कैसे है ? पकड़े जाने के वक्त क्या हाल था ? बहुत चिन्तित तो नहीं हो गया था ? उसने मा की तरफ न देखते हुए ही पूछा। सशेन्का अपना सिर झुकाकर बालों को ठीक करने लगी थी ; परन्तु उसकी उँगलियाँ काँप रही थीं।

'ठीक लगता था।' मा ने उत्तर दिया—वह अपने भाव चेहरे से तो कभी प्रकट होने ही नहीं देता।

'बडा बहादुर है !' छोकरी ने धीरे से कहा।

'आज तक वह कभी बीमार नहीं पड़ा।' मा ने उत्तर दिया—अरे, तुम तो काँप रही हो ? ठहरो, मैं अभी तुम्हारे लिए चाय और थोड़ा रसभरी का मुरब्बा लाती हूँ।

'अच्छा अम्माँ !' लड़की एक फीकी मुस्कराहट मुस्काती हुई बोली—मगर तुम बहुत कष्ट मत करो ! बहुत रात हो चुकी है। मैं स्वयं ही चाय बना लूँगी।

'क्या ! इस थकावट में जाकर अब तुम चाय बनाओगी !' मा ने उसे स्नेहपूर्वक झिड़का और जल्दी से रसोईघर में जाकर सेमोवार चढ़ा दिया। छोकरी भी मा के साथ-साथ रसोईघर में गई और वहाँ तिपाई पर बैठकर सिर हाथों से थामकर कहने लगी—सचमुच, मैं बहुत थक गई हूँ। आखिरकार जेल में कुछ कमजोरी हो ही जाती है। सबसे अधिक दुःखदायी वहाँ का निरर्थक काम होता है। एक सप्ताह, दो सप्ताह, पाँच सप्ताह। कहाँ तक वहाँ पड़ा रहा जाय। हम जानते हैं, कितना काम देश में करने को है। लोग ज्ञान के लिए तड़प रहे हैं। हम उनकी ज्ञान-पिपासा बुझा सकते हैं; परन्तु हमें वहाँ जंगली पशुओं की तरह पिंजड़ों में बन्द रखा जाता है। इससे सचमुच परेशानी होती है और जी बैठने लगता है।

'इस तपस्या और त्याग का बदला तुम्हें कौन देगा !' मा ने पूछा, और फिर एक आह भरकर उसने अपने आप ही उत्तर दे लिया—भगवान के सिवाय और तुम्हें कौन इसका बदला दे सकता है ! मगर तुम लोग तो उस पर भी विश्वास नहीं रखते !

'नहीं !' लड़की ने सिर हिलाते हुए सूक्ष्म उत्तर दिया।

'और मैं तुम पर विश्वास नहीं रखती !' एकाएक मा ने आवेश में भरकर कहा। फिर हाथों से लगी हुई कोयलों की कालिख को अपने कपड़ों से पोछती हुई मा श्रद्धापूर्ण वाणी में कहने लगी—तुम लोग अपने विश्वासों को स्वयं ही नहीं समझते। जिस तरह का जीवन तुम लोग व्यतीत करते हो उस तरह का जीवन बिना भगवान में विश्वास रखे कोई कैसे बिता सकता है !...

इतने में ड्योढ़ी पर किसी के पैरों की धम-धम हुई, और कुछ आवाजों की धीमी-धीमी घुस-पुस सुनाई दी। मा फौरन उठकर खड़ी हो गई। छोकरी भी खड़ी हो गई और जल्दी-जल्दी मा के कान में कहने लगी—दरवाजा मत खोलो ! देखो, अगर पुलिस हो तो यह मत कहना कि तुम मुझे जानती हो। कहना कि शायद यह छोकरी गलती से इस मकान में घुस आई और घुसते ही बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ी। फिर तुम कपड़े बदलने लगीं तो उनमें ये पर्चे और किताबें निकलीं। समझीं ?

'क्यों बेटी, ऐसा क्यों कहूँ !' मा ने स्नेह से पूछा।

'जरा ठहरो !' सशेन्का ने द्वार से कान लगाते हुए कहा—अरे, यह तो यगोर लगता है !

सचमुच वह यगोर ही था। वह पानी से लथपथ बाहर खड़ा हाँफ रहा था।

'अहा ! सेमोवार तैयार है !' वह अन्दर घुसते ही बोला—जिन्दगी में सबसे अच्छी चीज बस यही है, अम्माँ ! तुम आ गईं सशेन्का !

उसकी भारी आवाज से छोटा-सा रसोईघर एकदम भर गया था। बातें करते हुए वह धीरे-धीरे अपना लबादा उतारता हुआ कहने लगा—देखो अम्माँ, यह छोकरी पुलिस की आँखों का काँटा हो गई है। जेल में जमादार ने इसका अपमान किया तो इसने अनशन शुरू कर दिया कि जब तक जमादार मुझसे माफी नहीं माँगेगा, मैं खाना नहीं

खाऊँगी। आठ दिन तक इसने खाना नहीं खाया। मरने लगी। बड़ी नटखट है। सचमुच इसका छोटा सा पेट लोहे का बना लगता है!

'क्या कहा! आठ दिन तक बिलकुल खाना नहीं खाया!' मा ने आश्चर्य-चकित होकर पूछा।

'मुझे उस जमादार से माफी मँगानी थी न!'—लड़की ने बेफिक्री से कन्धे मटकाते हुए कहा। सशेन्का की आकृति और कठोर हठ मा को अपने लिए एक चुनौती-से लगे।

'और अगर तुम मर गई होतीं तो?' मा ने फिर उससे पूछा।

'मौत तो एक दिन सभी को आती है!' लड़की धीरे से बोली—आखिरकार उस जमादार को मुझसे माफी माँगनी ही पड़ी। कभी किसी को अपना अपमान सहन नहीं करना चाहिए। नहीं, कभी नहीं!

'हँ—ा—ाँ!' मा धीरे से बोली—और एक मेरी जैसी स्त्रियाँ हैं, जो जन्म-भर अपमान-ही-अपमान सहती रहती हैं।

'मैंने अपना बोझ उतार दिया!' यगोर दूसरे कमरे में से चिल्लाया—सेमोवार तैयार हो गया हो तो अब मुझे चाय पीने दो।

यह कहता हुआ वह आकर सेमोवार उठा ले गया।

'मेरे पिताजी दिन-भर में कम-से-कम बीस ग्लास चाय पीते थे। अस्तु, वे दुनिया में बहुत दिनों तक अच्छी तरह रहे। सत्तर वर्ष तक वे जिये और कभी बीमार नहीं पडे। वजन में भी वे तीन सौ बीस पौण्ड तक पहुँच गये थे। पेशे से वे वोस्क्रसेन्स्क ग्राम के पुजारी थे।'

'अरे, तो क्या तुम इवान के लड़के हो!' मा ने पूछा।

'हाँ-हाँ, मैं वही जीव हूँ। तुम्हे मेरे बाप का नाम कैसे मालूम हुआ?'

'क्यों, मैं भी तो उसी ग्राम की रहनेवाली हूँ।'

'मेरे गाँव की! तुम्हारे माता-पिता कौन थे?'

'तुम्हारे पडोसी! मैं सेरेगुश्न कुटुम्ब की हूँ।'

'क्या तुम लँगड़े निल की लड़की हो! तभी मुझे तुम्हारा चेहरा देखा हुआ-सा लगता था! वे मेरे कान खींचा करते थे।'

मा और यगोर एक दूसरे के आमने-सामने खड़े होकर फिर प्रश्नोत्तर करते हुए हँसने लगे। सशेन्का ने उन दोनों की तरफ देखा और मुस्कराती हुई चाय बनाने लगी। तश्तरियों की खटखट से मा को फिर वर्तमान का ज्ञान आया।

'ओहो, माफ करना! मैंने पुराने दिनों की बातों में बिलकुल अपना आपा ही खो दिया। जवानी की यादें कितनी मीठी होती हैं!'

'मुझे तुमसे माफी माँगनी चाहिए अम्माँ, कि मैं तुम्हारे घर में इस आजादी से व्यवहार करती हूँ।' सशेन्का ने कहा—मगर रात के ग्यारह बज चुके हैं, और अभी मुझे इतनी दूर जाना है।

'कहाँ जाना है ? शहर ?' मा ने आश्चर्य से पूछा।

'हाँ !'

'क्या कहती हो ? इतना अन्धकार है, ऐसी वर्षा हो रही है और तुम इतनी थकी हुई हो ! रात-भर यहीं रहो तो क्या हर्ज है ? यगोर रसोई में सो जायगा और हम-तुम दोनों यहाँ सो जायँगी !'

'नहीं, मुझे जाना होगा !' लड़की बोली !

'हाँ अम्माँ, उसे रात ही में चला जाना चाहिए। वह यहाँ नहीं रह सकती। अगर सुबह उसे किसी मुहल्लेवाले ने देख लिया तो बहुत बुरा होगा।'

'मगर वह अकेली कैसे जायगी ?'

'अकेली ?' कहकर यगोर हँसने लगा।

लड़की ने चाय ली, रोटी के एक टुकड़े पर नमक लगाया और मा की ओर देखती हुई खाने लगी।

'तुम उधर से होकर कैसे जाती हो ? तुम और नटाशा दोनों ? मैं तो नहीं जा सकती। मुझे डर लगता है।'

'इसे भी डर लगता है !' यगोर बोला—क्यों सशा, डरती हो न ?

'हाँ-हाँ !'

मा ने सशा की ओर देखा और फिर यगोर की ओर देखा। फिर धीरे से बोली—कैसी विचित्र बातें...

'एक गिलास चाय मुझे भी दो, अम्माँ !' यगोर मा की बात काटकर कहने लगा।

फिर जब सशेन्का चाय पी चुकी, तो उसने बिना कुछ कहे ही स्नेह से यगोर का हाथ दबाया और रसोईघर में चली गई। मा भी उसके साथ-साथ गई। रसोईघर में जाकर सशा मा से बोली—जब तुम पवेल से मिलो तो उससे कृपया मेरा प्रणाम कहना। सशा ने दरवाजा खोला और फिर एकदम घूमकर धीरे से मा से पूछा—क्या मैं तुम्हें चूम सकती हूँ अम्माँ ?

मा ने झपटकर उसे छाती से चिपटा लिया और खूब चूम-चूमकर उसे प्यार किया।

'धन्यवाद अम्माँ !' लड़की ने कहा और सिर हिलाती हुई चली गई।

कमरे में लौटकर मा चिन्ता से खिड़की के पास खड़ी होकर बाहर की तरफ देखने लगी। बर्फ के गीले-गीले पाले बाहर के सघन और तर अन्धकार में चारों तरफ उड़ रहे थे।

'अम्माँ, तुम्हें उस परचूनिये प्रोजोरोव की भी कुछ याद है ?' यगोर ने पूछा—वह पैर फैलाकर कैसा अपनी दूकान पर बैठता था और जोर-जोर से चाय के गिलास मे फूँक मारता था। उसका चेहरा हमेशा लाल-लाल, सन्तोषपूर्ण और पसीने से तर रहता था।

'हाँ, याद है।' मा मेज की तरफ लौटती हुई बोली और मेज पर बैठकर वह यगोर

की तरफ कातर दृष्टि से देखती हुई दया में भरकर कहने लगी—बेचारी सशेन्का ! कैसे शहर तक पहुँचेगी !

'बहुत थक जायगी ।' यगोर ने स्वीकार किया—जेल ने उसका स्वास्थ्य बहुत बिगाड़ दिया है। पहिले उसकी तन्दुरुस्ती अच्छी थी। बचपन में वह पाली-पोसी भी नजाकत से गई थी। मुझे तो ऐसा लगता है कि उसके फेफड़े बिगड़ चले हैं। उसके चेहरे से लगता है कि उसे क्षय हो चला है।

'सशेन्का कौन है ?'

'एक जमींदार की लड़की है। उसका बाप बड़ा अमीर है, परन्तु सशा के ही शब्दों में बड़ा 'बदमाश' है। मैं समझता हूँ, दादी, तुम्हें खबर होगी ही कि वे दोनों विवाह करना चाहते हैं !'

'कौन !'

'सशा और पवेल। परन्तु अभी तक उन बेचारों को कभी फुरसत ही नहीं मिल सकी है। जब वह बाहर होता है, तब वह जेल में होती है, और जब वह बाहर होती है तब वह जेल में होता है।' यगोर ने हँसते हुए कहा।

'मुझे यह अभी तक नहीं मालूम था !' मा कुछ ठहरकर बोली—पाशा तो कभी मुझसे अपने बारे में कुछ कहता ही नहीं है।

अब तो उसे छोकरी पर और भी दया आई और यगोर की तरफ क्रुद्ध दृष्टि से देखती हुई वह बोली—तुम्हें उसको घर तक पहुँचाने जाना चाहिए था !

'ऐसा करना असम्भव था !' यगोर ने धीरे से कहा—मुझे यहाँ पर अभी बहुत काम करना है, और कल प्रातःकाल से ही मुझे फिर चल पड़ना होगा और दिन-भर चलना, चलना, चलना होगा। मेरे जैसे दमे के बीमार के लिए यह कोई आसान काम नहीं है।

'सशेन्का अच्छी छोकरी है !' मा ने यगोर की बातों पर विचार करते हुए कहा। उसे चोट लग रही थी कि उसको यह अच्छी खबर अपने लड़के से न मिलकर एक अजनबी से मिली थी। अपने दुःख को छिपाने के प्रयत्न में उसने अपने होंठों को जोर से दाँतों से दबाया और चुपचाप भौंहें नीची कर लीं।

'हाँ, छोकरी अच्छी है।' यगोर ने स्वीकार करते हुए सिर हिलाया—अभी तक उसमें कुछ-कुछ अमीरों के चिह्न बाकी हैं ; परन्तु वे दिन पर दिन मिटते जाते हैं। मैं देखता हूँ, अम्माँ ! तुम उसके लिए दुखी हो रही हो। इससे क्या फायदा ? दादी, अगर तुम हम सब क्रान्तिकारियों के लिए इसी प्रकार दुःख करने लगोगी तो इतना दुःख करने के लिए कलेजा कहाँ से लाओगी ? हम लोगों का जीवन काँटों से भरा है। अभी कुछ ही दिन हुए, एक मित्र कालेपानी से लौटा था। वहाँ से लौटकर जब वह नोवगोरोड में पहुँचा तो उसकी स्त्री और बच्चा समोलेन्स्क में उसके आने की बाट देख रहे थे और जब तक वह समोलेन्स्क में पहुँचा तब तक वे दोनों मास्को की जेल में जा पहुँचे थे। अब उसकी स्त्री की कालेपानी जाने की बारी है। क्रान्तिकारी होना और विवाहित होना

बहुत बुरा है। बुरा है पति के लिए और बुरा है पत्नी के लिए। और अन्त में कार्य के लिए भी बुरा है। मेरी भी स्त्री थी, बड़ी अच्छी स्त्री थी। परन्तु पाँच वर्ष के इस प्रकार के जीवन ने उस बेचारी को कब्र में सुला दिया।—इतना कहकर उसने चाय का पूरा गिलास एक घूँट में गटगट खाली कर दिया और फिर उसी प्रकार बातें करने लगा। उसने मा को बताया कि अब तक उसने कितने वर्ष और महीने जेल और जलावतनी में गुजारे थे। बहुत-सी तरह-तरह की घटनाओं, आपदाओं, जेलखानों में कत्ल और काले-पानी की फाकेमस्ती के किस्से उसने मा को सुनाये। मा उसकी ओर टकटकी लगाये चुपचाप देख रही थी और आश्चर्य-चकित हो उसके जीवन की कहानी सुन रही थी। उसके जीवन की कहानी जो इतने दुःखों, विपत्तियों, आपदाओं, अपमानों और संकटों से पूर्ण थी; परन्तु जिसे वह सरलता से सुना रहा था।

'अच्छा, अब काम की बातें होने दो!' कहकर एकाएक उसका स्वर बदल गया और उसका चेहरा अधिक गम्भीर हो गया। उसने मा से पूछा कि कारखाने में वह किस तरह पर्चे ले जायगी। फिर उसने जिस तरह से जरा-जरा-सी बात के बारे में मा से तरह-तरह के प्रश्न पूछे, उससे तमाम चीजों के सम्बन्ध में उसका इतना ज्ञान जानकर मा को बड़ा आश्चर्य होने लगा।

कुछ देर के बाद फिर वे दोनों अपने ग्राम की बीती हुई बातें करने लगे। वह हँसता था ; परन्तु मा के विचार गुजरे हुए जमाने में चक्कर लगाते थे। उसकी बातें सुन-सुनकर मा को अपना भूतकाल एक विचित्र दलदल सा लग रहा था, जिसमें जिधर देखो, उधर पहाड़ियों की भरमार थी, जिन पर खड़े हुए बहुत-से चीड़ के वृक्ष सदा किसी भय से काँपते हुए लग रहे थे। उन पहाड़ियों पर बीच-बीच मे कुछ साल और सरों के वृक्ष भी उग रहे थे। परन्तु सरों के वृक्ष धीरे-धीरे उगते थे। और पाँच वर्ष तक पहाड़ियों की उथली और पथरीली जमीन पर खड़े रहकर, सूख-सूखकर गिर पड़ते थे और दलदल में पड़कर सड़ जाते थे। जैसे ही उसने अपने जीवन का यह चित्र देखा, एक अस्पष्ट और असह्य दुःख का भाव उसके हृदय में भर आया। साथ ही एक तीक्ष्ण, दृढ़ और गम्भीर मुखवाली छोकरी की तस्वीर भी उसकी आँखों में झूल उठी, जो अन्धकार मे, बर्फ के पालों को चीरती हुई अकेली और थकी हुई एक ओर चली जा रही थी। दूसरी ओर उसका बेटा जेल की कोठरी में लोहे के जंगलों के पीछे बैठा दिखाई दिया। वह अभी तक सोया न था, चुपचाप बैठा हुआ कुछ सोच रहा था। मगर मा के बारे में शायद वह न सोचता होगा, क्योंकि मा से भी उसके हृदय के निकट अब एक दूसरा ही शब्द था। इस प्रकार के भारी, क्रमहीन विचारों ने उलझे और बिखरे हुए बादलों की तरह उमड़कर मा के हृदय को घेर लिया। दुःख से उसका दिल बैठने लगा।

'तुम बहुत थक गई हो, मा! जाओ अब लेटो।' यगोर ने मुस्कराते हुए कहा।

मा उसको गुड नाईट कहकर धीरे-धीरे रसोईघर में चली गई। उसके हृदय में तीक्ष्ण और कँटीले भाव उमड़-उमड़कर भर रहे थे।

सवेरे नाश्ता कर चुकने के बाद यगोर ने मा से पूछा—मान लो कि तुम पकड़ी गई और तुमसे पूछा गया कि ये सब पर्चे और पुस्तकें तुम्हें कहाँ से मिले, तब तुम क्या कहोगी?

'मैं उनसे कहूँगी, तुम्हें मतलब?' मा ने मुस्कराकर कहा।

'इतने से ही वे पीछा नहीं छोड़ देंगे!' यगोर बोला—वे अपना मतलब अच्छी तरह समझते हैं। वे तुमसे बार-बार पूछेंगे और पूछते-पूछते तुम्हें थका देंगे। तुम्हारी नाक में दम कर देंगे।

'मैं उन्हे हरगिज नहीं बताऊँगी।'

'वे तुम्हें जेल में डाल देंगे।'

'बहुत अच्छी बात है! भगवान् को धन्यवाद है कि मैं कम-से-कम जेल जाने के योग्य तो हूँ।' मा ने एक गहरी साँस लेकर कहा—भगवान् को धन्यवाद दूँगी। वरना मेरी दुनिया मे किसे चिन्ता है? किसी को नहीं।

'हूँ!' यगोर ने उसकी तरफ घूरते हुए कहा—भले आदमी को अपनी चिन्ता खुद करनी चाहिए।

'मान लो कि मैं भली भी हूँ। परन्तु कोई पाठ मैं तुमसे अब सीखनेवाली नहीं हूँ।' मा हँसती हुई बोली।

यगोर चुप हो गया और कमरे में इधर-उधर टहलने लगा। फिर वह मा के पास जाकर बोला—बहुत कठिन है अम्माँ! मैं देखता हूँ, यह तुम्हारे लिए बहुत कठिन है।

'सभी के लिए कठिन है।' वह हाथ हिलाकर बोली—सम्भव है, उनके लिए, जो समझते हैं, सरल हो। परन्तु मैं भी कुछ-कुछ समझती हूँ, भले आदमी क्या चाहते हैं?

'अगर तुम समझती हो, दादी, तब तो हमे तुम्हारी भी चिन्ता करनी होगी।' यगोर गम्भीरता-पूर्वक जोर देकर बोला।

मा ने उसकी तरफ देखा और कुछ न कहकर सिर्फ हँसने लगी।

———

ग्यारहवाँ परिच्छेद

दूसरे दिन दोपहर को शान्तिपूर्वक और व्यावहारिक ढंग से मा ने किताबें और पर्चे लेकर अपनी छाती पर छिपा लिये। ऐसी होशियारी और सरलता से उसने छिपा लिये कि यगोर उसे देखकर दाँतों से अपनी उँगली दबाकर बोला—वाह अम्माँ, इतनी किताबें कपड़ों में भर लेने पर भी तुम्हारी शक्ल नहीं बदली! तुम वैसी की वैसी ही सुन्दर, लम्बी, सीधी और बूढ़ी दीखती हो, जैसी पहिले थीं। देवता तुम्हारे कार्य मे सहायक हों।

आधे घण्टे में मा कारखाने के द्वार पर जा पहुँची। वह किताबों के बोझ से दबी जाती थी; परन्तु शान्त और दृढ़ थी। कारखाने के दरवाजे पर दो सन्तरी, कामगारों की गालियों और फब्तियों से ऊबे हुए, जो कोई दरवाजे से घुसता था, उसी को खूब कोसते हुए, तलाशी लेते थे। एक तरफ एक पुलिस का सिपाही खड़ा था और उसके पास ही एक पतली-पतली टाँगों और लाल-लाल चेहरे और चलती हुई आँखों का आदमी भी था। मा कन्धे पर रखी हुई खाने की बँहगी का बाँस हिलाती हुई दरवाजे में घुसी और कनखियों से सिपाही के पास खड़े हुए आदमी की तरफ देखा। मा ने अपने मन मे समझ लिया था कि वह आदमी अवश्य खुफिया पुलिस का है।

इतने में एक लम्बा, घुँघराले बालों का मनुष्य, जिसने अपना टोप सिर के पिछले भाग पर रख लिया था, जोर से चिल्लाकर सन्तरियों से बोला—सिरों की तलाशी लो, जेबों में क्या रखा है, शैतानो!

'और तुम्हारे सिरों में जूँओं के सिवाय क्या है!' एक सन्तरी ने उसको हाजिर जवाब दिया।

'आदमी पकड़ने से तो तुम जूँएँ पकड़ने के ही अधिक योग्य हो!' वह कामगार बोला। खुफिया पुलिस के आदमी ने इस मजदूर की तरफ एक कड़ी दृष्टि डाली।

'मुझे अन्दर जाने दो!' मा बोली—देखो, मैं बँहगी के बोझ से दबी जा रही हूँ। अरे राम! मेरी कमर टूटी जा रही है।

'जा! जा!' सन्तरी चिढ़कर मा से बोला—एक तो वैसे ही हम लोग परेशान हैं, ऊपर से यह बुढ़िया बक-झक करती हुई आई है!

मा आगे बढ़ी और अपनी जगह पर जा पहुँची। वहाँ पहुँचकर उसने खाने के बर्तन जमीन पर रखे और चेहरे से पसीना पोंछती हुई चारों तरफ देखने लगी।

शीघ्र ही लुहार-बन्धु गसेव इवान और गसेव मा के पास आ पहुँचे और बड़े भाई वेसिली ने भौंहे चढ़ाते हुए जोर से पूछा—कबाब है?

'कल लाऊँगी।' मा ने उत्तर दिया।

यह इशारा पहले से निश्चय हो चुका था। दोनों भाइयों के चेहरे खिल उठे। छोटा इवान अपने पर काबू न रख सका और बोला—ओहो! मेरी सोने की मैया!

वेसिली अपनी एड़ियों पर बैठकर खाने के बर्तनों में देखने लगा और देखते-देखते पर्चों का एक पुलिन्दा उसके कपड़ों में घुस गया।

'इवान!' वह जोर से बोला—आज घर नहीं जायँगे। यहीं खाना खायँगे। यह कहते हुए जल्दी से कुछ पर्चे उसने अपने जूतों में ठूँस लिये। 'हमें अपने नये व्यापारी को भी कुछ प्रोत्साहन देना चाहिए, क्यों?'

'हाँ, ठीक है!' इवान ने स्वीकार किया और इतना कहकर जोर से हँसा।

मा ने होशियारी से चारों ओर देखा और जोर-जोर से आवाजें लगाने लगी—गोभी का शोरबा लो! ताजी सिमइयाँ लो! गरम-गरम कोफते लो!

फिर बड़ी होशियारी से, धीरे-धीरे, एक-एक पुलिन्दा निकाल-निकालकर वह दोनों भाइयों के हाथों में देने लगी। जैसे ही एक पर्चों का पुलिन्दा मा के हाथों से निकलकर उनके हाथों मे पहुँच जाता था, पुलिस अफसर का बीमार और क्रोधी चेहरा अँधेरे में दियासलाई की लौ की तरह पीला-पीला मा की आँखों के सामने चमक उठता था, और वह मन-ही-मन एक बीभत्स हर्ष से मग्न होकर मानों उससे कहती थी, यह लीजिए जनाब, पर्चे! और जब वह आखिरी पुलिन्दा दे चुकी तो सन्तुष्ट होकर उसी प्रकार मन-ही-मन बोली—और भी है जनाब, लिये जाइए!

कामगार अपने-अपने कटोरे लिये हुए मा के पास खाना खरीदने आये। परन्तु जब वे वेसिली और इवान के पास पहुँचे तो जोर-जोर से हँसने लगे। मा ने किताबें और पर्चे देना बन्द करके चुपचाप गोबी का शोरबा और सिमइयाँ देना शुरू कर दिया था। उसकी इस होशियारी पर गसेव-बन्धु मा को इस प्रकार चुटकियाँ लेने लगे—निलोवना कैसी होशियारी से चीजें देती है!

'जरूरत पड़ने पर आदमी को चूहे भी मारने पड़ते हैं!' एक कोयला झोंकनेवाला आकर मा से बोला—बदमाशों ने तुम्हारा अन्नदाता ही तुमसे छीन लिया! लाओ, तीन पैसे की मुझे भी सिमइयाँ दे दो। फिक्र मत करना, मा! भगवान् तुम्हारी मदद करेंगे।

'धन्यवाद, धन्यवाद!' मा ने मुस्कराते हुए उससे कहा।

कोयला झोंकनेवाला एक तरफ हटकर बुड़बुड़ाने लगा—धन्यवाद किस चीज का? क्या किसी से मीठी बात कहने में भी मेरी गाँठ से कुछ चला जाता है? क्यों?

'मगर मीठी बातें करे कोई किससे?'—एक लोहार मुस्कराता हुआ कहने लगा और फिर आप-से-आप आश्चर्य से कन्धे हिलाता हुआ बोला—भाइयो, तुम्हारे लिए तो काम है। जिन्दगी-भर काम करो! ऐसा यहाँ कोई कहाँ है, जिससे मीठी बातें करोगे। यहाँ कोई मीठी बातें करने योग्य ही नहीं है। हाँ जनाब, समझे!

वेसिली गसेव उठा और अपने कोट शरीर पर लपेटता हुआ बोला—खाना तो इतना गरम-गरम खाया है; मगर फिर भी बड़ी ठण्ड लग रही है, और इस प्रकार कहता

हुआ वह चला गया। इवान भी उठा और आनन्द में भरकर मुँह से सीटी बजाता हुआ चल दिया।

खुशी-खुशी निलोवना मुस्कराती हुई खाने की चीजें चिल्ला-चिल्लाकर बेच रही थी—गरम-गरम ! गरमागरम ! खट्टा शोरबा लो ! गोभी का शोरबा लो ! सिमइयाँ लो।

साथ-साथ वह सोचती जाती थी कि लड़के से भेंट होने पर अपने इस प्रथम अनुभव की बातें वह उसे किस प्रकार बतायेगी ; परन्तु पुलिस अफसर का मनहूस, घूरता हुआ, पीला-पीला चेहरा अभी तक उसकी आँखों में झूम रहा था। उसकी काली-काली मूँछें परेशानी से घूमती और मुड़ती थीं, और उसका ऊपरी होंठ ऊपर को चढ़ जाता था, जिससे उसके सफेद दाँतों की चमक, जिन्हें वह पीस रहा था, साफ दिखाई देती थी। परन्तु मा के हृदय में एक मीठी-मीठी प्रसन्नता चिड़िया की तरह चहक रही थी, जिससे वह काँपती हुई भौंहों से ग्राहकों को सँभल-सँभलकर चीजें देती हुई मन-ही-मन बुदबुदा रही थी—अभी और है, जनाब ! अभी और भी है !

दिन-भर मा हर्षातिरेक के एक नये भाव पर तैरती-सी रही। शाम को मेरया के घर से काम समाप्त करके जब वह घर लौटी और चाय पीने बैठी तो बाहर की कीचड़ को छप-छप उछालती हुई उसे कुछ घोड़ों की टापें सुनाई दीं और एक परिचित-सी आवाज भी कान में आई। वह फौरन उछलकर खड़ी हो गई और रसोईघर में से दौड़ती हुई सीधी द्वार के पास जा पहुँची। जल्दी-जल्दी कोई ड्योढ़ी में घुस रहा था। मा की आँखों के सामने एकाएक अँधेरा छा गया। अस्तु, वह चौखट पकड़कर खड़ी हो गई और पाँव से उसने दरवाजा खोला।

'गुड ईवनिङ्ग, अम्माँ !' कहती हुई एक परिचित और सुरीली आवाज उसके कानों में झनझना उठी और दो सूखे और लम्बे हाथ उसके कन्धों पर आकर रख गये।

सामने ऐन्ड्री को देखकर मा बड़ी प्रसन्न हुई ; परन्तु साथ ही उसे निराशा भी हुई, और इन दो विरुद्ध भावों के संघर्ष से उसके अन्तर में एक ऐसी अग्नि भड़की जिसकी ज्वाला से झुलसकर मा ने अपना सिर ऐन्ड्री की गोद में रख दिया। ऐन्ड्री ने मा का सिर जोर से अपने सीने से चिपटा लिया। मा के हाथ काँपने लगे थे। वह कुछ कहकर धीरे-धीरे रोने लगी। ऐन्ड्री मा के बाल सहलाता हुआ सुरीली आवाज में बोला—अम्माँ, रोओ मत ! मेरा हृदय मत दुखाओ ! मैं सच कहता हूँ, पवेल भी जल्दी ही छूट आयेगा। पुलिस के पास कोई सबूत नहीं है। सारे-के-सारे छोकरे साफ छूट आयेंगे।

अपनी लम्बी बाँहें मा के कन्धों पर रखे हुए वह उसे रसोईघर में ले गया। गिलहरी की तरह उसकी छाती से चिपटी मा अपने आँसू पोंछते हुए ऐन्ड्री के मीठे-मीठे शब्दों को एक घूँट में मानों पी गई।

'अम्माँ, पवेल ने तुम्हें प्यार भेजा है। वह बहुत अच्छा है। बड़े आनन्द से है। जेल में काफी भीड़ हो गई है। लगभग हमारे सौ आदमी, यहाँ से और शहर से मिला-

कर, जेल में भर दिये गये हैं। तीन-तीन चार-चार आदमियों को एक-एक कोठरी में रखा गया है। जेल के अधिकारी अच्छे हैं। पुलिस उन्हें बहुत काम देती है, जिससे वे थक गये हैं। वहाँ के अधिकारी कठोर नहीं हैं। सख्ती से वे कोई हुक्म नहीं देते। केवल इतना कहते हैं—देखो भाई, जितना चुपचाप रह सकते हो, रहो। हमारी मिट्टी खराब मत करो! सारा काम ठीक चलता है। हम लोग आपस में एक दूसरे से बातें करते हैं, एक दूसरे को किताबें देते हैं और एक दूसरे का खाना बाँटकर खाते हैं। बड़ी अच्छी जेल है। पुरानी और गन्दी जरूर है। परन्तु नरम और आसान भी है। वहाँ के कैदी भी अच्छे हैं। हमारी खूब मदद करते हैं। मैं, बुकिन और दो और—चार ही अभी तक छोड़े गये हैं। भीड़ बहुत बढ़ गई थी। पवेल को भी जल्द ही जरूर छुटकारा मिल जायगा। मैं सच कहता हूँ। विश्वास करो, अम्माँ! व्यसोवशचिकोव अवश्य सबसे देर में छूटेगा। सभी उससे नाराज रहते हैं। वह सबसे लड़ता है। सबको गालियाँ देता है। जेल के सिपाही तो बेचारे उसकी तरफ देखने की हिम्मत नहीं करते। मैं समझता हूँ, उस पर अवश्य किसी दिन या तो कचहरी में मुकदमा चलेगा या जेल मे मार पड़ेगी। पवेल अक्सर उसको समझाने की कोशिश करता है कि देखो, निकोले, चुप रहो! वे तेरे इस तरह गाली देने से नहीं सुधर जायँगे! मगर चिकोव गुर्राकर उत्तर मे कहता है—मारो सालो को! पवेल अच्छी तरह रहता है, वह सबसे एक-सा व्यवहार करता है और स्वयं सदा की भाँति, चट्टान की तरह दृढ़ रहता है। मेरा विश्वास है, वह जल्दी ही छोड़ दिया जायगा।

'जल्दी!' मा सँभलकर मुस्कराती हुई बोली—हाँ, मैं भी समझती हूँ, वह जल्दी ही छूट जायगा।

'अच्छा, तुम भी समझती हो! तब तो बहुत ही अच्छा है। अच्छा, मुझे चाय तो पिलाओ। कहो मा, तुम कैसी रही? कैसे अपना समय बिताया?'

वह हँसता हुआ मा की तरफ देखने लगा, जिससे वह मा को बड़ा अच्छा और अपने बहुत निकट लगा। एक स्नेहपूर्ण, परन्तु साथ ही कुछ-कुछ दुःखपूर्ण ज्योति-सी ऐन्ड्री की गोल-गोल आसमानी आँखों की गहराई में चमक रही थी।

'ऐन्ड्री, मैं सचमुच तुझे बहुत प्यार करती हूँ।' मा ने एक गहरी साँस लेकर उसके पतले-पतले बालों के बेढंगे गुच्छों से ढँके हुए चेहरे की ओर देखते हुए कहा।

'लोग मेरे जरा-से ही प्रेम से सन्तुष्ट हो जाते हैं! मै जानता हूँ अम्माँ, तुम मुझे बहुत प्यार करती हो। तुम सभी को प्यार सकती हो। तुम्हारा हृदय विशाल है।' लिटिल रूसी कुर्सी में झूलता हुआ बोला।

'नहीं, मेरा प्रेम तुम्हारे प्रति दूसरी किस्म का है।' मा जोर देकर बोली—अगर आज तुम्हारी मा भी होती तो लोग उस पर ईर्ष्या करते कि उसके तुम्हारा जैसा योग्य पुत्र है।

लिटिल रूसी ने अपना सिर मोड़ा और फिर दोनों हाथों से उसे जोर-जोर से खुजलाने लगा।

'मेरी मा है कहीं जरूर!' वह धीरे से बोला।

'तुम्हें मालूम है, आज मैंने क्या किया?' मा बोली। इतना कहकर फिर वह सवेरे कारखाने में पर्चे ले जाने की सारी कहानी उसे सुनाने लगी। यद्यपि उसे सुनाते हुए लाज और सन्तोष से उसकी आवाज रुँधी जाती थी।

पूरा किस्सा सुन चुकने पर वह एक क्षण तक आँखें फाड़-फाड़कर आश्चर्य से मा की तरफ देखता रहा। फिर उसने जोर से खखारा, जमीन पर पैर पटके, सिर खुजलाया और फिर आनन्द से विह्वल होकर चिल्लाया—आहा! अब मजाक नहीं रहा है! अब काम शुरू हो गया है। पवेल सुनकर कितना खुश होगा! ओहो! तुम तो बड़ी जबरदस्त निकलीं, अम्माँ! बड़ा ही अच्छा किया। तुम्हें नहीं मालूम, यह कितना अच्छा हुआ है! सभी के लिए अच्छा है। पवेल के लिए अच्छा है और उन सभी के लिए अच्छा जो उसके साथ पकड़े गये हैं।

वह आनन्द में भरकर अपनी उँगलियाँ चटखाता हुआ मुँह से मीठी-मीठी सीटी बजाने लगा और हर्षातिरेक से लाल होकर झुक गया। उसके इस आनन्द को देखकर मा को भी बड़ी खुशी हुई।

'मेरे प्यारे, मेरे ऐन्ड्री!' वह कहने लगी, मानों उसके हृदय से फूटकर सजीव और नैसर्गिक आनन्द से पूर्ण शब्दों का एक झरना उमड़ पड़ा हो—'मैं जीवन-भर यही सोचती थी कि हे भगवान, मैं क्यों जीती हूँ! क्या सिर्फ मार खाने और काम करने के लिए ही! मेरे पति के अतिरिक्त मेरे लिए अपनी जिन्दगी में और कुछ नहीं था। भय के सिवाय और मैं कुछ न जानती थी। मुझे यह भी नहीं मालूम कि पाशा किस तरह पलकर बड़ा हुआ, जब तक मेरा पति जीवित था, मुझे यह भी पता नहीं चला कि मैं पाशा को प्यार करती हूँ या नहीं। मेरा सारा ध्यान, मेरे सारे विचार एक ही चीज पर केन्द्रित रहते थे—अपने पति-रूपी पशु को भोजन कराना, अपने जीवननाथ की ठीक समय पर काफी और स्वादिष्ठ भोजन की सामग्री से पूजा करना, जिससे कि मैं उसके क्रोध और मार से बची रहूँ। परन्तु फिर भी मुझे यह याद नहीं पड़ता कि मैं किसी दिन भी उसकी मार से बच सकी! वह मुझे रोज बुरी तरह मारता था। इस तरह नहीं मारता था, जिस तरह कोई अपनी स्त्री को मारता है, बल्कि इस तरह मारता था, जिस तरह कोई अपने किसी घृणित शत्रु को मारता है। बीस बरस तक मैंने इसी तरह जीवन बिताया। विवाह के पहले मेरा जीवन कैसा था, वह भी मुझे याद नहीं आता। कुछ-कुछ याद जरूर है; परन्तु साफ-साफ कुछ भी याद नहीं आता। मैं इस विषय मे बिलकुल एक अन्धे की तरह हूँ। यगोर यहाँ आया था। हम दोनों एक ही गाँव के निकले! वह हमारे गाँववालों की बहुत-सी बातें करता था। मुझे अपने गाँव के मकानों की और लोगों की याद तो है; परन्तु वे कैसे रहते थे, क्या करते थे, किसका क्या हुआ और कौन कहाँ गया सो कुछ भी याद नहीं है। दो बार हमारे गाँव में आग भी लगी थी। उसकी मुझे याद जरूर है। मुझे ऐसा लगता है कि मैं भीतर से बिलकुल खोखली कर डाली गई हूँ। मेरी आत्मा

पर ताला मारकर मुहर-सी बन्द कर दी गई है, जिससे वह निरी अन्धी है, और कुछ सुन-गुन नहीं सकती।'

इतना कहकर मा ने जल्दी से एक गहरी साँस ली जो कि हिचकी बनकर उसके गले में अटक गई। फिर आगे की तरफ झुककर धीमी-धीमी आवाज में उसने कहना शुरू किया—'मेरा पति जब मर गया तब मैंने अपने लड़के पर आशा लगाई। मगर वह इस कार्य में पड़ गया। मुझे उस पर बड़ी दया आती थी, और मैं अपना दिल मसोसकर रह जाती थी। मैं सोचती थी कि यदि कहीं वह इस कार्य में मर मिटा तो मैं अकेली कैसे जिन्दगी गुजारूँगी! कैसा भयङ्कर भय मुझे लगा रहता था! जब-जब मैं उसका विचार करती थी, तब-तब मेरा हृदय दुःख से फटने लगता था।'

'हम स्त्रियों का प्रेम शुद्ध प्रेम नहीं होता। हम उसी को प्रेम करती हैं, जिसकी हमें जरूरत होती है। मगर तुमको देखो। तुम अपनी मा के लिए दुःख करते हो। तुम्हें उसकी क्या जरूरत है! तुम्हारे दूसरे साथी भी प्रजा के लिए कष्ट उठाते हैं, जेल जाते है, कालेपानी जाते हैं, लोगों के लिए अपना सिर तक देकर फाँसी पर चढ़ जाते हैं। नौजवान लड़कियाँ तक रातों मे अकेली बर्फ, कीचड़ और वर्षा में फिरती हैं। सात-सात मील शहर से चलकर हमारे यहाँ आती हैं! कौन उन्हे यह शक्ति देता है! कौन उन्हे बुलाता है! वे सच्चा प्रेम करती हैं। उनका प्रेम सच्चा है। उनका प्रेम शुद्ध है। वे अपने हृदय में विश्वास और श्रद्धा रखती हैं। हाँ ऐन्ड्री, सच, उनके हृदय में विश्वास और श्रद्धा है। परन्तु मुझको देखो, मैं उनका-सा प्रेम नहीं कर सकती। मैं केवल अपनों को ही, केवल अपने निकटवालों को ही प्रेम करती हूँ।'

'हाँ, ठीक है।' लिटिल रूसी मा की तरफ से मुँह फिराकर जोर-जोर से अपने स्वभावानुसार सिर, मुँह और आँखें मलता हुआ कहने लगा—सभी अपने निकटवालों को प्यार करते हैं। फिर वह बोला—विशाल हृदयवालों के लिए दूरवाले भी निकट हो जाते हैं। तुम अम्माँ, बहुत कुछ कर सकती हो। तुममें बड़ा मातृ-भाव है।

'ईश्वर करे, मैं कुछ कर सकूँ।' मा धीरे से बोली—मुझे तो लगता है कि ऐसा ही जीवन बिता देना अच्छा है। उदाहरण के लिए देखो, मैं तुम्हे प्यार करती हूँ। शायद मैं तुम्हे पाशा से अधिक प्यार करती हूँ, क्योंकि पाशा हमेशा चुप रहता है। वह सशेन्का से विवाह करना चाहता है। मगर देखो, उसने आज तक कभी मुझसे, यद्यपि मैं उसकी मा हूँ, इस सम्बन्ध मे एक बात भी नहीं कही।

'यह बात गलत है।' लिटिल रूसी ने उत्तर में जल्दी से कहा—मैं अच्छी तरह जानता हूँ, यह बात बिलकुल गलत है। यह जरूर ठीक है कि वे दोनों एक दूसरे को प्यार करते हैं; परन्तु विवाह! नहीं, वे विवाह नहीं करेंगे! वह तो पसन्द करेगी; परन्तु पवेल पसन्द नहीं कर सकता। वह विवाह हरगिज नहीं करेगा।

'देखो, तुम लोग कैसे विचित्र हो!' मा दुखी होकर घूमती हुई आँखों से लिटिल

रूसी की तरफ देखती हुई धीरे से बोली—देखो, तुम लोग कैसे हो ! तुम अपने आपको ही दूसरे को अर्पण किये दे रहे हो !

'पवेल बिलकुल हीरा है !' लिटिल रूसो धीमी आवाज मे बोला—वह फौलाद का बना आदमी है ।

'अब उसके जेल में चले जाने से', मा ने फिर विचार-पूर्वक कहना प्रारम्भ किया—मुझे अपना जीवन बुरा लगता है, घर सूना और भयानक लगता है ; परन्तु फिर भी अब मुझे वैसा नहीं लगता, जैसा पहले लगता था। पहले से अब मेरा जीवन बिलकुल भिन्न हो गया है । भय भी मेरा अब पहले के भय से बिलकुल भिन्न है। अब मुझे सभी पर दया आती है और सभी के लिए मेरे दिल मे भय भी होता है। मेरा हृदय अब बिलकुल बदल गया है और मेरी आत्मा की आँखें-सी खुल गई हैं। अब मेरी आत्मा को दीखता है कि दुनिया मे दुखी और सुखी दोनों ही हैं। बहुत-सी तुम्हारी बातें मैं नहीं समझती हूँ, जिससे मुझे बड़ा दुःख और क्लेश होता है। न जाने तुम लोग ईश्वर मे विश्वास क्यों नहीं करते ! मैं तो ईश्वर को नहीं छोड़ सकती। परन्तु मैं यह देखती हूँ और अच्छी तरह जानती हूँ कि तुम सब लोग सच्चरित्र और भले हो। तुम लोगों ने अपना जीवन ही लोगों की सेवा के लिए समर्पण कर दिया है। तुमने सत्य-मार्ग पर चलने के कारण अपना जीवन जान-बूझकर कण्टकमय बनाया है। जिस सत्य के लिए तुम लोग लड़ रहे हो, उसे मैं अब समझती हूँ ; जब तक दुनिया मे अमीर रहेंगे तब तक साधारण लोगों को आराम नसीब न होगा। तब तक न तो सत्य जीवन के दर्शन हो सकेंगे, न किसी को सत्य और न जीवन का आनन्द ही मिल सकेगा ! हाँ, हाँ, ऐसी, वास्तव मे ऐसा ही है । तुम लोग इस काम मे लगे हो और मैं भी तुम्हारे बीच मे रहती हूँ। कभी-कभी रात को मैं अपने भूतकाल पर विचार किया करती हूँ। मैं सोचती हूँ कि मेरी जवानी की अपार शक्ति कैसी बुरी तरह कुचल डाली गई ! मेरा जवान हृदय किस तरह मसोस डाला गया ! अब मुझे अपने ऊपर दुःख होता है, और मेरा हृदय जलने लगता है। परन्तु फिर भी अब मेरा जीवन पहले बहुत अच्छा है। मैं अब अधिक देखती और समझती हूँ और अनुभव भी करती हूँ।

लिटिल रूसो उठा और हल्के पैरों से धीरे-धीरे कमरे मे टहलने लगा। लम्बा, पतला विचारों मे डूबा हुआ वह टहलते-टहलते धीरे से बोला—खूब कहा अम्मा ! बड़ा अच्छा कहा, कर्च मे एक जवान यहूदी रहता था। वह कविता करता था। एक बार उसने एक बड़ा सुन्दर वाक्य कहा था—अज्ञान के मुर्दों को भी सत्य जिला देगा ।

वह बेचारा पुलिस के हाथो मारा गया, मगर उससे क्या ! वह सत्य को समझता था और लोगों मे सत्य का प्रचार करता था। देखो न, तुम भी एक अज्ञान की मुर्दा थीं और तुम्हें सत्य ने जिला दिया है। उसने सच ही कहा था।

'देखो, मैं बातें कर रही हूँ।' मा बोली—मैं तुमसे बातें कर रही हूँ और स्वयं ही नहीं सुन रही हूँ कि मैं क्या कह रही हूँ, क्योंकि मुझे अपने कानों पर अपनी बात सुन-

कर विश्वास नहीं होता। जीवन-भर मैं चुप ही रही। मैं सदा केवल एक ही बात का विचार करती रहती थी—कैसे दिन-भर सबसे दूर रहूँ, कैसे किसी को बिना दिखाई दिये ही अपना दिन बिता दूँ, जिससे कोई मुझे स्पर्श न करे; परन्तु अब मैं हर एक वस्तु के सम्बन्ध मे विचार करती हूँ। शायद मैं तुम्हारा कार्य अभी अच्छी तरह नहीं समझती। फिर भी तुम सब मुझे निकट लगते हो, और मुझे तुम्हारे सबके लिए दुःख होता है। मैं तुम्हारा सबका हित चाहती हूँ। और तेरा हित तो ऐन्ड्री, सच जान, मैं सबसे ही अधिक चाहती हूँ।

लिटिल रूसी ने मा का हाथ अपने हाथ में पकड़कर स्नेह से दबाया और जल्दी से अपना मुँह दूसरी तरफ फेर लिया। भावों और आवेश से थकी हुई मा चुपचाप धीरे-धीरे चाय के प्याले धोने लगी। उसकी छाती में एक वीरता का भाव भर-भरकर उसे उत्साहित कर रहा था।

कमरे मे टहलता हुआ लिटिल रूसी कहने लगा—अम्माँ, तुम व्यसोवश्चिकोव पर कभी स्नेह दिखाकर उसे जीतने का प्रयत्न क्यों नहीं करतीं? उसको मातृ-प्रेम की बड़ी जरूरत है। उसका बाप जेल मे है। वह एक बड़ा ही गन्दा और क्षुद्र आदमी है। निकोले अपनी कोठरी की खिड़की मे से जब कभी उसे जेल मे देख लेता है, तो फौरन उसे गालियाँ सुनाने लगता है। यह बहुत बुरा है। निकोले बड़ा अच्छा आदमी है। उसे कुत्तों, चूहों और सभी प्रकार के जानवरों से प्रेम है। परन्तु उसे मनुष्य पसन्द नहीं है। देखो तो, मनुष्य इस अधोगति तक को पहुँच सकता है!

'उसकी मा न जाने कहाँ चली गई। बाप चोर और शराबी है।', निलोवना ने विचार मे डूबते हुए कहा।

फिर जब ऐन्ड्री सोने के लिए चला गया तो मा ने मन-ही-मन उसके लिए प्रार्थना की और आध घण्टे बाद धीरे से पूछा—सो गये ऐन्ड्री?

'नहीं अम्माँ, क्यों?'

'कुछ नहीं! गुड नाईट!'

'धन्यवाद अम्माँ, धन्यवाद!' उसने स्नेहमय नम्रता से उत्तर दिया।

———

बारहवाँ परिच्छेद

दूसरे दिन फिर जब निलोवना कारखाने के द्वार पर खाने की बँहगी लिये हुए पहुँची तो सन्तरियों ने उसे सख्ती से रोका और उसके बर्तन जमीन पर रखकर उनकी अच्छी तरह तलाशी ली।

'मेरी खाने की चीजें ठण्डी हुई जा रही हैं!' उसके कपड़ों की तलाशी ली जाने लगी तो वह धीरे से बोली।

'बको मत!' एक सन्तरी ने क्रोध से कहा।

दूसरा सन्तरी उसका कन्धा थपथपाकर विश्वास पूर्वक बोला—किताबें और पर्चे क्या दीवार के ऊपर फेंक आई हो! क्यों!

फिर जब वह अपने स्थान पर पहुँच गई तब बूढ़ा सिजोव उसके पास आया और चारों तरफ होशियारी से देखता हुआ धीरे से बोला—मा, तुमने सुना!

'क्या?'

'पर्चों के बारे में? पर्चे फिर निकले हैं। सारे कारखाने में बाँटे गये हैं। उन गिरफ्तारियों और तलाशियों को इससे बड़ा फायदा होगा। मेरे भतीजे माजिन को जेल में डाल दिया। तुम्हारे लड़के को भी पकड़ ले गये। मगर अब मामला साफ हो गया कि वे लोग पर्चे बाँटने में नहीं थे।' फिर दाढ़ी खुजलाता हुआ वह कहने लगा—यह आदमी नहीं हैं, विचार है! विचार मक्खियाँ थोड़े ही है, जिन्हें पकड़ा और बन्द किया जा सके!

उसने अपनी दाढ़ी एक हाथ में पकड़ ली और निलोवना की तरफ देखता हुआ चलते चलते बोला—तुम मुझसे मिलने कभी नहीं आतीं? मैं समझता हूँ, तुम बड़ी अकेली होगी।

मा ने उसको धन्यवाद दिया। खाने का सामान बेचते हुए मा ने देखा कि कारखाने में अन्दर-ही-अन्दर बड़ी खलबली-सी मची हुई थी। सभी कामगार बड़े खुश लगते थे। वे छोटी-छोटी टुकड़ियों में इकट्ठे हो जाते थे और फिर अलग-अलग होकर चल देते थे, इसी प्रकार के एक झुण्ड से दूसरे झुण्ड में जा रहे थे। हर तरफ से उत्तेजित और प्रसन्न आवाजें आ रही थीं, और चारों तरफ सन्तुष्ट चेहरे दीखते थे। कारखाने की धूम्रधूसरित काली वायु में एक विचित्र जान-सी आ गई थी। कभी यहाँ से और कभी वहाँ से हर्ष और उपहास की बातें और बीच-बीच में धमकियों की आवाजें भी सुनाई दे रही थीं।

'ओ हो! मालूम पड़ता है, सत्य से पुलिस अभी कोसों दूर है।' मा ने किसी को कहते हुए सुना।

नौजवान खासकर फूले न समाते थे। परन्तु बूढ़े कामगार इधर-उधर देख-भालकर

मुस्कराते थे। कारखाने के अधिकारियों के चेहरों पर हवाइयाँ-सी उड़ रही थीं। पुलिस इधर से उधर और उधर से इधर दौड़ी-दौड़ी फिर रही थी। कामगार पुलिस को देखते ही तितर-बितर होकर धीरे-धीरे चलने लगते थे, या खड़े रहते थे तो आपस की बातचीत बन्द करके चुपचाप अधिकारियों के क्रोधित और झुँझलाये हुए चेहरों की तरफ देखने लगते थे।

सभी कामगार न जाने क्यों आज चुस्त दीखते थे। गसेव अपनी गर्दन उठाये हुए इधर-उधर घूम रहा था, और उसका भाई भी बतख की तरह टहलता हुआ कहकहे लगा रहा था। वावीलोव नाम का मिस्त्री और ईसू नाम का कारखाने का मुन्शी धीरे-धीरे चलते हुए मा के पास से निकले। नाटे कद के खूसट मुन्शी ने अपना सिर उठाया और अपने बाईं तरफ चलनेवाले मिस्त्री के झुँझलाये हुए चेहरे को देखते हुए लाल-लाल दाढ़ी हिलाकर जल्दी-जल्दी बोला—लोग हँस रहे हैं, इवान आइवानोविश! उनके लिए यह सब मजाक है। बड़े खुश दीखते हैं! मगर जैसा मैनेजर साहब कहते हैं, ये बातें बहुत भयंकर हैं, सरकार को उलट देनेवाली हैं। अब ऊपर-ऊपर खुरचने से काम नहीं चलेगा, इवान आइवानोविश, गहरा हल चलाना पड़ेगा।

वावीलोव अपनी पीठ के पीछे हाथ बाँधे हुए और मजबूती से उंगलियाँ पकड़े हुए चल रहा था।

'तुम्हारे जो दिल में आये, छापो, बदमाशो!' वह जोर से चिल्लाकर बोला—मगर खबरदार, मेरे बारे में कुछ भी लिखने की हिम्मत न करना!...

वेसिली गसेव निलोवना के पास आकर कहने लगा—आज भी मैं फिर तुम्हारे पास ही खाऊँगा। सामान तो अच्छा है न? फिर सिर झुकाये-झुकाये ही उसने आँखें मिचकाते हुए धीमे स्वर में कहा—देखो, कैसा निशाना ठीक बैठा! कमाल हो गया अम्माँ, कमाल हो गया!

मा ने उसकी तरफ नम्रता से सिर हिलाया। उसको इस बात पर अभिमान हुआ कि गाँव-भर में मशहूर उजड्ड और गुस्ताख गसेव उससे इतने मान से एकान्त में आकर बोला—कारखाने की हलचल और दौड़-धूप देखकर भी उसे आनन्द हुआ और वह अपने मन में सोचने लगी—मैं न होती तो ये लोग क्या करते!

तीन कामगार मा से कुछ दूर पर रुके और उनमें से एक निराश स्वर में बोला—मुझे तो एक भी नहीं मिल सका।

दूसरा बोला—मैं भी यार, सुनना चाहता हूँ! मैं पढ़ना तो नहीं जानता। मगर मैंने सुना है, उसमें बातें बड़े मार्के की हैं।

तीसरा अपने चारों तरफ देखता हुआ बोला—चलो, इन्जनघर में चलें। वहाँ मैं तुमको पढ़कर सुना दूँगा।

'काम ठीक चल रहा है!' गसेव आँख मारकर धीरे से मा से बोला।

शाम को निलोवना बड़ी खुश घर लौटी। आज उसने अपनी आँखों से देख लिया था कि पर्चो और पुस्तकों से लोगों में कितनी सनसनी फैलती है।

'कारखाने में लोग इस बात पर दुःख करते हैं कि उन्हे पढ़ना नहीं आता।' वह ऐन्ड्री से बोली—और एक मुझको देखो तो लड़कपन मे तो पढ़ सकती थी, मगर अब नहीं पढ़ सकती।

'फिर से सीख लो।' लिटिल रूसी ने कहा।

'अब इस उम्र मे! क्यों मेरा मजाक उड़ाते हो!'

ऐन्ड्री ने आलमारी में से एक किताब उतारी और चाकू की नोंक से एक अक्षर बताते हुए पूछा—यह क्या है!

'र' उसने हँसते हुए उत्तर दिया।

'और यह!'

'अ'

एकाएक मा को बुरा लगा और उसका जी ऊब उठा। उसे सन्देह हुआ कि ऐन्ड्री की आँखे उस पर चुपचाप हँस रही थीं। अस्तु, वह उनसे बचने का प्रयत्न करने लगी। परन्तु ऐन्ड्री की आवाज मधुर और शान्त थी। मा ने आश्चर्य से उसके चेहरे की तरफ एक बार देखा, फिर दूसरी बार घूरकर देखा। ऐन्ड्री सचमुच आतुर और गम्भीर था।

'क्या तुम सचमुच मुझे पढ़ाने का प्रयत्न कर रहे हो!' मा ने एक स्वाभाविक मुस्कराहट से पूछा।

'हाँ, हाँ।' वह जवाब मे बोला—कोशिश करो! अगर तुम्हें पहले पढ़ना आता था तो फिर शीघ्र ही आ जायगा। कोशिश करके देखो। अगर आ गया तो बहुत अच्छा है, न आया तो तुम्हारा जाता ही क्या है!

'मगर लोग कहते हैं कि मूर्ति देखने से ही कोई महात्मा नहीं बन जाता।'

'उँह।' लिटिल रूसी सिर हिलाता हुआ बोला—ऐसी कहावतों की दुनिया मे क्या कमी है? उदाहरणार्थ वह कहावत है कि जितना ही कम ज्ञान होता है, उतनी ही अच्छी नींद आती है। है न? कहावत पेट के लिए होती है, आत्मा के लिए नहीं। कहावतों की लगामें मनुष्यों पर कब्जा रखने के लिए बनाई जाती हैं। पेट को सिर्फ सन्तोष चाहिए; परन्तु आत्मा को स्वतन्त्रता की जरूरत है। यह कौन-सा अक्षर है, अम्माँ!

'म'

'देखो न, कैसा अपने आप आता जाता है! और यह!'

आँखों पर जोर देकर और भौंहे चढ़ा-चढ़ाकर वह भूले हुए अक्षरों को पहिचानने का प्रयत्न करने लगी, और इस प्रयत्न के प्रवाह मे वह ऐसी बह गई कि उसे अपनी सुध-बुध न रही। मगर शीघ्र ही उसकी आँखे थक गई। पहले तो आँखों में थकावट के आँसू आये, मगर फिर शीघ्र ही दुःख के आँसू भी बह-बहकर किताब के पन्नों पर गिरने लगे।

'मैं पढ़ना सीख रही हूँ !' वह हिचकियाँ भरकर बोली—जब मेरी जीवन की नैया किनारे आ लगी है, तब मैं पढ़ने बैठी हूँ !

'रोओ मत अम्माँ।' लिटिल रूसी ने मधुर स्वर में कहा—तुम्हारा जीवन जैसा भी बीता है, उसमें तुम्हारा क्या दोष था ! फिर भी तुम समझती हो कि तुम्हारा जीवन बुरा बीता। हजारों ऐसे भी हैं जो चाहते तो तुम्हारे जीवन से अच्छा जीवन बिता सकते थे ; मगर वे जान-बूझकर भी पशुओं का-सा ही जीवन व्यतीत करते हैं। और ऊपर से यह भी शेखी बघारते हैं कि हम मजा करते हैं। उनके जीवन में क्या है ? आज दिन-भर का काम पूरा किया और खाया और कल दिन-भर का काम पूरा किया और फिर खाया। और बस, इसी प्रकार काम करने और खाने, और खाने और काम करने मे ही उनकी जिन्दगी बीत जाती है ! हाँ, वे इसके साथ साथ बच्चे भी पैदा करते हैं। पहले तो वे बच्चों से खेलते हैं। मगर फिर जब बच्चे भी खाना माँगते हैं, तब वे उन पर क्रोध करते हैं और दांत किटकिटाकर कहते हैं : अरे पेटुओ, कहाँ से इतना खाने को तुम्हारे लिए आये ? जल्दी करो ! जल्दी-जल्दी बड़े हो और जाकर मजदूरी करो और कमाओ ! और फिर वे बेचारे बच्चों पर ही भैंसों का बोझ लाद देते हैं। बच्चे भी अपना पेट भरने के लिए काम करने लगते हैं और अपने जीवन को उसी तरह घसीटने लगते हैं जिस तरह कोई चोर चुराये हुए गूदड़ के सारे गट्ठर को घसीटता है। उनकी आत्मा को न तो कभी आनन्द ही मिलता है, और न कभी उनके दिमाग में कोई ऐसा विचार ही आने पाता है, जिससे उनका हृदय पसीजे। कुछ बेचारे भिखारियों की तरह जीवन बिताने लगते हैं—दर-दर माँगते हुए। कुछ चोर बनकर दूसरों की गाँठ कतरते हैं। सरकार ने चोरी के कानून बनाये हैं और डण्डे-बरदारों को लोगों के सिर पर रखकर उन्हें हुक्म दिया है—हमारे कानूनों की रक्षा करो। हमारे कानून बड़े अच्छे हैं। वे हमें लोगों का खून चूसने में सहायता देते हैं। लोगों का चूसने का प्रयत्न किया जाता है, तो लोग आपत्ति करते हैं। अस्तु, कानूनों को लाया जाता है, जिससे उन बेचारों की बुद्धि ही मार दी जाती है !

अपनी कुहनियाँ मेज पर टेककर विचार-पूर्वक मा का चेहरा घूरते हुए लिटिल रूसी कहने लगा—मनुष्य तो वे ही हैं जो लोगों के शरीर और बुद्धि को इस प्रकार की जंजीरों से मुक्त करने का प्रयत्न करते हैं। तुम भी अब इस महान् कार्य में अपने योग्यतानुसार भाग लेने जा रही हो।

'मैं ! मैं कैसे !'

'क्यों नहीं ! बूँदों से वर्षा बनती है। एक-एक बूँद बीज उगाने में सहायक होती है। और जब तुम भी पढ़ने लगोगी तब तो...' इतना कहकर वह चुप हो गया और हँसने लगा। फिर वह उठा और कमरे में टहलने लगा।

'हाँ, हाँ, तुमको पढ़ना अवश्य सीख लेना चाहिए ! पवेल लौटकर जब घर आयेगा तो तुम्हें पढ़ती देखकर उसे बड़ा आश्चर्य होगा।'

'ऐन्ड्री ! जवान आदमी के लिए सभी कुछ आसान होता है। परन्तु मेरी उम्र तक पहुँचकर चुकने पर सैकड़ों झंझटें खड़ी हो जाती हैं। शक्ति और इच्छा भी कम हो जाती है।'

शाम होने पर लिटिल रूसी बाहर चला गया। मा लैम्प जलाकर मेज पर आ बैठी और मोजे बुनने लगी। मगर जरा देर में वह फिर उठी और विचारहीन-सी रसोईघर मे गई। वहाँ पहुँचकर उसने बाहर के दरवाजे की साँकल लगा दी और भौंहें मटकाती हुई कमरे में लौट आई। कमरे में लौटकर उसने खिड़कियों के परदे भी गिरा दिये और अलमारी मे से एक किताब निकालकर मेज के पास फिर जा बैठी। एक बार घूमकर उसने अपने चारों तरफ देखा और फिर किताब पर झुककर होंठ चलाने लगी। गली मे जब कभी उसे कोई खटका सुनाई देता तो चौंककर किताब बन्द कर देती और उसे फौरन सुनने लगती। और फिर आँखें खोलती, बन्द करती और धीरे-धीरे बड़बड़ाती।

'इ...ज...अ।'

दीवार पर लगी हुई घड़ी का लटकन गम्भीरता से टिक-टिक-टिक-टिक करता हुआ क्षणों की मृत्यु के नगाड़े बजा रहा था।

कुछ देर मे द्वार पर किसी ने धक्का दिया। मा उछलकर खड़ी हो गई और किताब को जल्दी से अलमारी में रखकर द्वार के पास जाकर व्यग्रता से बोली—कौन है?

———

तेरहवाँ परिच्छेद

द्वार खुलने पर राइविन अन्दर घुसा। घुसते ही उसने मा को झुककर प्रणाम किया और दाढ़ी खुजलाता हुआ कमरे मे इधर-उधर देखता हुआ बोला—पहले तो तुम लोगों को बिना कुछ पूछे-पाछे ही अन्दर घुस आने देती थीं। आजकल क्या तुम बिलकुल अकेली हो ?

'हाँ !'

'अच्छा ! मैं तो समझता था कि लिटिल रूसी भी यहीं रहता है। मैंने आज उसको देखा भी था। जेल से आदमी नहीं बिगड़ता, मगर मूर्खता से जरूर बिगड़ता है।'

इस प्रकार बातें करता हुआ वह कमरे में आकर बैठ गया और मा से कहने लगा—आओ ! बैठो ! मुझे तुमसे कुछ बातें करनी हैं, कुछ कहना है। उसूल की बात तो यह है !...जैसे ही उसने यह शब्द शुरू किये, उसके चेहरे पर एक रहस्यपूर्ण भाव नाच उठा, जिससे मा का हृदय किसी भावी अनर्थ की आशंका से व्याकुल होने लगा। वह उसके सामने बैठ गई और मूक चिन्ता से उसके वचनों की प्रतीक्षा करने लगी।

···"कि हर काम के लिए रुपये चाहिएँ !' राइविन ने अपनी भारी और फटी हुई आवाज में कहना शुरू किया—पैदा होने के लिए रुपये चाहिएँ ! मरने के लिए रुपये चाहिएँ ! किताबें और पर्चे बाँटने के लिए भी रुपये चाहिएँ ! तो क्या तुम्हें मालूम है कि इन सब किताबों और पर्चों के लिए रुपये कहाँ से आते हैं ?'

'नहीं, मै नहीं जानती !' मा ने डरते हुए धीमी आवाज मे उत्तर दिया।

'मैं भी नहीं जानता। और दूसरा प्रश्न मुझे यह पूछना है कि ये पर्चे लिखता कौन है ? पढ़े-लिखे लोग ही न ? मास्टर लोग !' राइविन संक्षिप्त परन्तु निश्चय से बोल रहा था। उसकी आवाज भारी होती जा रही थी और उसका दाढ़ीदार चेहरा विचारों के वेग से लाल हो रहा था। 'देखो, ये मास्टर लोग पर्चे लिख-लिखकर बाँटते है ; परन्तु जो कुछ इन पर्चों और किताबो में लिखा होता है वह सब इन्हीं मास्टर लोगों के खिलाफ होता है ! अच्छा तो बताओ कि ये लोग अपने रुपये और समय लोगों को अपने ही विरुद्ध भड़काने मे क्यो खर्च करते हैं ? एँ ?'

निलोवना ने ऑखे मिचकाई और फिर आँखें फाड़कर डरी हुई उससे पूछने लगी—तुम क्या समझते हो ? बताओ।

'ओहो !' कुर्सी में रीछ की तरह घूमकर राइविन बोला—यही तो सारी बात है ! जब मेरे दिमाग मे यह विचार आया तब मेरा सिर भी घूम गया।

'मगर कहो तो ? तुमने क्या सोचा है ?'

'धोखा है ! निरी धोखेबाजी है ! मुझे तो लगता है कि यह सब बिलकुल धोखे-

बाजी है। मास्टर लोग कोई चाल खेल रहे हैं। मैं उनकी चाल में नहीं पड़ने का! मुझे सत्य जरूर चाहिए। मैं सत्य को समझता हूँ। मगर मैं मास्टर लोगों के जाल में नहीं पड़ूँगा। अपना मतलब पूरा करने के लिए वे मुझे आगे ढकेल देंगे और फिर मेरी लाश को कुचलते हुए, उस पर से वे उसी प्रकार अपने निश्चित स्थान के लिए उतर जायँगे जैसे पुल पर से होकर मुसाफिर चले जाते हैं।'

उसके ऐसे निराश और अविश्वासपूर्ण वचनों को सुनकर, जिन्हे उसने अपनी हठीली, भारी, जोरदार आवाज से कहा था, मा का हृदय दुःख से बैठने लगा।

'हे भगवान !' वह दुःख से बोली—सत्य क्या है ! क्या यह भी हो सकता है कि पवेल नहीं समझता ! और क्या वे सब भी जो यहाँ शहर से आते हैं, वे भी नहीं समझते ! यगोर, निकोले और सशेन्का के गम्भीर और ईमानदार चेहरे उसकी आँखों के सामने झूलने लगे और उसका दिल जोर-जोर से धड़कने लगा।

'नहीं-नहीं !' वह सिर हिलाकर अविश्वास से बोली—मै विश्वास नहीं कर सकती। वे सत्य, सम्मान और जीवन के लिए ही लड़ते हे। उनके बुरे इरादे नहीं हैं, नहीं हैं, हरगिज नहीं है !

'किसके बारे मे तुम यह कहती हो !' राइबिन ने विचार-पूर्वक पूछा।

'उन सभी के बारे मे। उनके बारे मे जिनसे मैं मिली हूँ। वे खून के व्यापारी नहीं है, हरगिज नहीं हैं।' मा के चेहरे पर आवेश से पसीना झलक आया और उसकी उँगलियाँ काँप उठीं।

'तुम ठीक जगह नहीं देखती हो, मा ! जरा उन लोगों के पीछे देखो !' राइबिन सिर झुकाकर बोला—जो इस कार्य मे लगे हैं वे स्वयं भी शायद इस सम्बन्ध मे कुछ न जानते हों। उनके हृदय मे सत्य हो सकता है; मगर उनके पीछेवाले लोग अपने स्वार्थ के लिए उनसे ऐसा काम करवा सकते हैं। लोग अपनी कब्र खुद नहीं खोदते। सदियों के अविश्वास से सने हुए किसान की अटल श्रद्धा से वह फिर जोर देकर बोला—इन मास्टर लोगों से हमारी कोई भलाई नहीं हो सकती। मेरी यह बात गाँठ बाँध लो।

'तुम्हारे दिमाग ने न जाने क्या यह खिचड़ी पका ली है !' मा ने आशंका से उससे कहा।

'मेरे दिमाग ने खिचड़ी पका ली है !' राइबिन ने मा की तरफ घूरकर कहा और फिर वह कुछ देर तक चुप रहा। मगर कुछ ठहरकर फिर वह बोला—इन मास्टर लोगों से दूर ही रहना! मैं तुमसे कहे देता हूँ ! और वह फिर निराशा और अविश्वास से चुप होकर मुरझा गया।

'अच्छा, अब मैं जाता हूँ अम्माँ !' वह कुछ देर बाद बोला—मैं भी इन लोगों में शरीक होकर कुछ काम करना चाहता था। मैं इस काम के योग्य हूँ। मैं पढ़-लिख भी सकता हूँ। मैं मेहनती हूँ; बुद्धू नहीं हूँ। और खास बात यह है कि मैं यह भी जानता हूँ कि लोगों से क्या कहना चाहिए। परन्तु अब मैं जाता हूँ। मुझे विश्वास नहीं होता।

अस्तु, मैं जाता हूँ। मैं जानता हूँ मा, लोगों की आत्माएँ गन्दी और खोटी हो गई है। सभी के दिल में ईर्ष्या और द्वेष है। सभी ठाट-बाट करना चाहते हैं; और चूँकि खाने को कम है, लोग एक दूसरे को ही खाये जाते हैं।

इतना कहकर उसने अपना सिर झुका लिया और बहुत देर तक विचार मे डूबा रहा। अन्त में वह बोला—अच्छा! मै ही अकेला गाँव-गाँव, नगले-नगले, घर-घर फिरूँगा और लोगों को जगाऊँगा। लोगों को अपने-आप ही सब कुछ समझने और अब इस कार्य में लगने की जरूरत है। बस उनके समझने-भर की देर है; फिर तो वे अपने-आप ही रास्ता निकाल लेंगे! अस्तु, मैं ही अकेला जाकर उन्हे समझाने का प्रयत्न करूँगा। उनको अपने ऊपर ही भरोसा करने के सिवाय और कोई चारा नहीं है। अपनी समझ ठीक कर लेने के अतिरिक्त और उन्हें कुछ समझना नहीं है। बस, उनके लिए यही सत्य है!

'वे तुम्हे पकड़ लेंगे!' मा धीमे से बोली।

'हाँ, वे मुझे पकड़ लेंगे, और फिर छोड़ देंगे और मैं फिर आगे बढ़ूँगा!'

'किसान ही स्वयं तुम्हारे हाथ पाँव बाँधकर तुम्हें जेल भिजवा देंगे!'

'अच्छा! अच्छा! मैं जेल मे जाकर रहूँगा। फिर छूटूँगा और फिर उसी तरह काम करूँगा। किसान एक बार मुझे बाँधेंगे, दो बार बाँधेंगे, फिर अपने-आप समझने लगेंगे कि मुझे बाँधना नहीं चाहिए; बल्कि उन्हें मेरी बात सुननी चाहिए। मैं उनसे कहूँगा—मुझ पर विश्वास मत करो। सिर्फ मेरी बात सुन लो। और यदि उन्होंने मेरी बातें एक बार भी सुन लीं तो फिर उन्हे मुझ पर विश्वास करना ही पड़ेगा।

मा और राइबिन दोनों धीरे-धीरे बोल रहे थे—मानों वे एक-एक शब्द तोल-तोल-कर कह रहे थे।

'मुझे अपनी इस जिन्दगी मे कोई मजा नहीं है, अम्माँ!' राइबिन बोला—मै इतने दिनों से यहाँ रहता हूँ और बहुत बकझक भी करता रहता हूँ। मैं कुछ-कुछ समझता हूँ। परन्तु आज भी मुझे ऐसा ही लगता है कि मैं किसी बच्चे को चिता पर रख रहा हूँ।

'तुम बर्बाद हो जाओगे। बर्बाद हो जाओगे!' मा सिर हिलाती हुई दुःख से बोली।

राइबिन की काली-काली, गहरी आँखें मा की ओर आशा से प्रश्न-पूर्वक देखने लगीं। उसका बलवान शरीर आगे को झुककर कुर्सी पर रखी हुई उसकी बाँहों पर रुक गया और उसका विशाल चेहरा उसकी काली-काली दाढ़ी के चौखटे में पीला पड़ गया। वह बोला—मालूम है, ईसा मसीह ने बीज के लिए क्या कहा था! तू मर जायगा और नये वर्ष फिर जीकर उठेगा। मैं नहीं मानता, मेरी मृत्यु आसान है। मैं चतुर हूँ। मैं दूसरों से अधिक सीधे मार्ग पर चलता हूँ। सीधे रास्ते से दूर तक पहुँच होती है। मगर मुझे दुःख होता है, न मालूम क्यों! वह कुर्सी में छटपटाया और फिर

उठकर खड़ा हो गया—अच्छा! अब मैं दूकान पर जाकर कुछ देर तक बैठूँगा। वहाँ लोगों से बातें करूँगा। लिटिक रूसी अभी तक नहीं आया? क्या वह फिर काम में मशगूल हो गया है?

'हाँ!' मा ने मुस्कराते हुए कहा—जेल से निकलते ही वे फिर अपने काम में लग जाते हैं।

'यही तो होना चाहिए! अच्छा, उससे कह देना कि मैं आया था।'

दोनों धीरे-धीरे चलते हुए और एक दूसरे की तरफ न देखते हुए इस प्रकार बातें करते-करते रसोईघर में घुसे:

'अच्छा, कह दूँगी।' मा ने वायदा किया।

'अच्छा, प्रणाम।'

'प्रणाम! तो अपना काम तुम कब छोड़ रहे हो?'

'छोड़ भी दिया!'

'तो फिर कब जा रहे हो?'

'कल पौ फटते ही। प्रणाम!'

राइबिन सिर झुकाये हुए अनमना-सा रेंगता-रेंगता भोंड़ी तरह ड्योढ़ी से बाहर निकल गया। मा एक क्षण तक द्वार पर खड़ी हुई उसके जाते हुए पैरों की आवाज और अपने हृदय में उठती हुई आशंकाओं का नाद सुनती रही। फिर वह चुपचाप कमरे में लौट गई। वहाँ पहुँचकर परदा हटाकर वह फिर खिड़की में से झाँककर बाहर की तरफ देखने लगी। काली-काली डायन-सी अँधियारी चारों तरफ फैल रही थी—मूक डायन की तरह अपना चपटा-चपटा गहरा मुँह चारों ओर को बाये हुए।

'मैं भी ऐसी ही रात्रि में रहती हूँ।' वह सोचने लगी—ऐसी ही अनन्त अँधियारी की रात्रि में! फिर उसके हृदय में काली दाढ़ीवाले गम्भीर किसान के लिए दया आई और वह सोचने लगी—कितना बलिष्ठ और बलवान है! परन्तु फिर भी वह उसी तरह असहाय और बेबस है, जैसे दूसरे!

थोड़ी देर में हँसता और उछलता हुआ ऐन्ड्री आ गया। मा ने उससे राइबिन के बारे में कहा तो वह बोला—वह जाता है! गाँवों में? अच्छा, जाने दो उसको और सत्य की भेरी बजा-बजाकर लोगों को जगाने दो। यहाँ हम लोगों के साथ रहना उसे कठिन हो रहा है।

'परन्तु वह मास्टर लोगों के बारे में जो कुछ कहता था, उसमें कुछ सत्य है?' मा ने बात घुमाते हुए पूछा—क्या यह सम्भव नहीं है कि तुम लोग छले जा रहे हो?

'तुम्हें भी चिन्ता हो उठी है, अम्माँ? क्यों?' लिटिल रूसी ने हँसकर कहा—प्यारी मा,—रुपया! काश रुपया हमारे पास होता! अभी तक तो हमें दान पर ही काम चलाना पड़ता है। देखो, निकोले इवानोविश ही पचहत्तर रुपये महीने कमाता है। उसमें से पचास वह हमें इस काम के लिए दे देता है। दूसरे भी ऐसा ही करते हैं। भूखे

विद्यार्थी तक कभी-कभी हमारे पास रुपया इकट्ठा करके भेजते हैं, जिसे वे बेचारे कौड़ी-कौड़ी करके जमा करते होंगे ! रही मास्टर लोगों की बात। उनमें कई किस्म के लोग हैं। कुछ हमें धोखा देंगे, कुछ छोड़कर भाग जायँगे, मगर उनमें जो अच्छे हैं वे जरूर हमारे साथ रहेंगे और कन्धे से कन्धा मिलाये हुए, हमारी विजय के त्यौहार तक हमारे साथ जायँगे। इतना कहकर उसने एक हाथ पर दूसरा हाथ मारा और दोनों हाथ जोर से मलता हुआ बोला—परन्तु गरुड़राज की तरह फौरन ही उड़कर तो हम उस त्यौहार तक नहीं पहुँच सकते। अस्तु, पहली मई के दिन हम लोगों ने एक छोटा-सा त्यौहार मनाने का निश्चय किया है। उस दिन बड़ा मजा आयेगा।

उसके ऐसे शब्दों और आह्लाद ने मा के हृदय से राइविन की उत्पन्न की हुई आशङ्काएँ दूर कर दीं। वह कमरे में इधर से उधर टहल रहा था और उसके पैरों की रगड़ से फर्श पर होनेवाली आवाज सुनाई दे रही थी। फिर वह एक हाथ से अपना सिर और दूसरे से छाती मलते हुए पृथ्वी की ओर देखता हुआ बोला—कभी-कभी हृदय में एक विचित्र भाव उठता है। ऐसा लगता है, जिधर देखो उधर सब बन्धु-ही-बन्धु हैं ! सभी के अन्दर एक-सी अग्नि भड़क रही है और सभी सुखी और भले हैं, और बिना हम लोग एक-दूसरे से मिले और बोले ही एक-दूसरे के भाव समझते हैं। कोई एक-दूसरे के मार्ग में आना या किसी को नीचा दीखना नहीं चाहता। क्योंकि किसी को इसकी आवश्यकता ही नहीं है। सब एक-दूसरे से मिलकर रहते हैं और सब अपने-अपने हृदय के राग जी भरकर अलापते हैं। और उनके विभिन्न राग एक महानद की सहस्र धाराओं की तरह आकर एक आनन्द की महान् गङ्गा में मिल जाते हैं, जो झूमती और मँडराती हुई आगे की तरफ जाती है। फिर जब यह विचार आता है कि भविष्य में सच-मुच ऐसा ही होनेवाला है—हम लोगों ने चाहा तो जरूर ऐसा ही होगा—तब आश्चर्य और आनन्द से हृदय पिघलने लगता है और खूब दिल भरकर रोने को जी चाहता है। आनन्द से ऐसा हृदय नाचने लगता है !

इतना कहकर वह मानों अपने अन्तर में कुछ ढूँढ़ने लगा। मा उसकी बातें ध्यान से बिना हिले-डुले सुन रही थी, जिससे कि उसकी बातों और विचार-धारा का कहीं क्रम भंग न हो जाय। मा हमेशा ही उसकी बातें ध्यान से सुना करती थी। वह औरों की अपेक्षा अधिक सीधी-सीधी बात करता था ; जिससे उसके शब्द मा के हृदय को पकड़ लेते थे। पवेल भी शायद इसी तरह भविष्य की ओर देखता था। वरना उसका ऐसा जीवन व्यतीत करने का अर्थ ही क्या था ? परन्तु वह जो कुछ भी भविष्य में देखता था, स्वयं ही देखता था। वह किसी से कुछ कहता नहीं था। मगर लिटिल रूसी, मा को लगता था, हमेशा ही अपने दिल का एक टुकड़ा हथेली पर लिये रहता था। मनुष्यता की आनेवाली विजयादशमी के त्यौहार की कहानी हमेशा उसकी जबान पर रहती थी। उसकी इस कहानी को सुन-सुनकर ही मा अपने लड़के के जीवन, कार्य और उसके साथियों के कार्यों का अर्थ समझने लगी थी।

'और फिर जब आँखें खुलती हैं।' लिटिल रूसी ने सिर हिलाते हुए अपने दोनों हाथ छोड़कर फिर कहना प्रारंभ किया—तब जिधर देखो उधर ही गन्दगी और नग्न नाच दिखाई देता है। सभी थके हुए और चिढ़े दीखते हैं। मनुष्य-जीवन सडक पर पड़ी कीचड़ की तरह रौंद डाला गया है, पैरों से बिलकुल कुचल दिया गया है!

इतना कहकर वह मा के सामने रुका और आँखों में रंज भरकर सिर हिलाता हुआ धीमी और दुखी आवाज में कहने लगा—है तो दुःख की बात! मगर आदमियों को अविश्वास करने पर बाध्य होना पडता है। मनुष्य समाज के हिस्से हो गये हैं। इस कठोर जीवन ने मनुष्यों को दो भागों में विभाजित कर दिया है। जी तो यही चाहता है कि सभी से प्रेम करें। परन्तु यह हो कैसे? कैसे हम ऐसे मनुष्यों को क्षमा करें, जो जंगली जानवरों की तरह हम पर हमला करते हैं, जो यह नहीं मानते कि हममें भी उन्हीं की तरह आत्मा है; जो हमारे मुँह पर लातें मारते हैं। हाँ-हाँ, हमारे इस मानवी मुख पर लातें! हम ऐसे मनुष्यों को कभी क्षमा नहीं कर सकते। अपने अपमान का बदला लेने के विचार से नहीं। निजी अपमान सहन किया जा सकता है; परन्तु अपमान के प्रति ढील दिखाना सरासर गलत है। हमको किसी की लातें हर्गिज न सहनी चाहिएँ, क्योंकि हमारी पीठ पर लातें चलाकर वे दूसरों की पीठ पर भी लातें मारना सीख जाते हैं।

यह कहते हुए उसकी आँखों में एक शान्त ज्योति चमकी और वह दृढ़ता से एक ओर को सिर झुकाकर पहले से अधिक दृढ़ स्वर में कहने लगा—हानिकारक वस्तु को नहीं रहने देना चाहिए, चाहे उससे तत्काल कोई नुकसान न भी होता हो; क्योंकि हम दुनिया में अकेले ही नहीं रहते हैं। आज मैं अपमान सह लेता हूँ। मैं अपने अपमान पर हँसने की सामर्थ्य रख सकता हूँ। शायद मुझे अपमान बुरा भी न लगता हो; परन्तु आज मुझ पर अपनी ताकत आजमा लेनेवाला अपराधी कल किसी दूसरे मनुष्य की खाल खींचने पर उतारू हो जायगा। अस्तु, हमें मनुष्य के भाग करने पड़ते हैं। हम अपने दिल पर पत्थर रखकर भी मनुष्य-समाज को दो भागों में विभाजित करना पड़ता है—एक भाग जालिमों का और दूसरा मजलूमों का!

मा के विचार पुलिस अफसर और सशेन्का की तरफ एक दम दौड़ गये और वह उनके बारे में सोचती हुई एक गहरा साँस लेकर बोली—जिनके सिर में कभी चोट न लगी हो वह दूसरे का दर्द कैसे समझ सकता है!

'हाँ, यह मुश्किल जरूर है!' लिटिल रूसी ने कहा—अस्तु, हमें दो दृष्टियों से देखने के लिए मजबूर होना पड़ता है। अपने सीने में हमें दो दिल रखने पड़ते हैं—एक सबको प्यार करना चाहता है, परन्तु दूसरा कहता है—ठहरो! अभी ऐसा मत करो!

मा को एकाएक अपने पति की भयावनी और विशाल शक्ल की याद एक काई से ढकी हुई चट्टान की तरह आई और फिर वह मन-ही-मन लिटिल रूसी से नटाशा का और पवेल से सशेन्का का जोड़ा मिलाने लगी।

'देखो, देखो!' लिटिल रूसी आवेश में आकर कहने लगा—प्रत्यक्ष अनर्थ है! मनुष्यों को एक ही नींव पर खड़ा नहीं किया जाता है। अच्छा तो आओ, हमीं सबको बराबर करें। सबको एक नींव पर खड़ा करें! दिमाग और हाथ दोनों जो कुछ उत्पन्न करते हैं, उसे दोनों ही में बराबर-बराबर बाँट दें। किसी को भय और ईर्ष्या या लोभ और मूर्खता की गुलामी मे न रखा जाय।

आज के बाद से मा और ऐण्ड्री आपस में प्रायः इसी प्रकार की बातें करने लगे। ऐण्ड्री को कारखाने में फिर काम मिल गया था। वह जो कुछ कमाकर लाता था, लाकर मा के हाथों मे रख देता था। मा उससे निःसंकोच उसी प्रकार रुपये ले लेती थी, जिस प्रकार वह पवेल से ले लिया करती थी। कभी-कभी ऐण्ड्री आँखें मिचकाता हुआ कहता—आओ अम्माँ, कुछ पढ़ें, क्यों!

परन्तु मा हँसती हुई हमेशा दृढ़ता से इनकार कर देती थी। ऐन्ड्री का आँखें मिच-काना उसे बुरा लगता था, और वह मन-ही-मन खिन्न होकर सोचती थी—अगर इसे मेरा इस तरह मजाक ही उड़ाना है तो फिर पढ़ने के लिए क्यों कहता है!

अक्सर ऐण्ड्री से मा कभी इस पुस्तक के और कभी उस पुस्तक के अर्थ पूछने लगी और जब वह इस प्रकार कुछ पूछती थी तो हमेशा एक तरफ को मुँह घुमाये हुए, उस पुस्तक मे अपनी उदासीनता दिखाती हुई नीरस स्वर मे पूछती थी। इससे ऐण्ड्री समझ गया कि वह अकेले में छिपकर पढ़ती है। उसकी समझ मे मा की झिझक आ गई। अस्तु, उसने फिर मा को पढ़ने के लिए बुलाना बन्द कर दिया। कुछ दिन बाद एक रोज मा उससे कहने लगी—मेरी आँख कमजोर हो चली है, ऐण्ड्री! मैं समझती हूँ, मुझे ऐनक की जरूरत है।

'अच्छा! अगले इतवार को शहर में अपने मित्र एक डाक्टर के पास तुम्हें ले चलूँगा, और तुम्हें ऐनक दिलवा दूँगा।'

मा तीन बार जेल पर पवेल से मिलने के लिए जा चुकी थी: परन्तु तीनों बार बड़ी नाकवाले लाल गालों के जेलर ने उसे पवेल से बिना मिलाये ही नम्रता से यह कहकर लौटा दिया था कि 'एक सप्ताह के बाद आना, बुढ़िया मा! एक सप्ताह के बाद देखा जायगा! अभी तो असम्भव है!'

जेलर एक गोल-मटोल और मोटा-ताजा आदमी था। उसे देखते ही मा को एक ऐसे पके हुए बेर की याद आती थी, जिसकी खाल बहुत दिन तक रखी रहने से खराब होकर सड़ने लगी हो। वह हमेशा अपने छोटे-छोटे सफेद-सफेद दाँत कुरेदता रहता था और अपनी छोटी-छोटी, हरी-हरी आँखो मे कुछ-कुछ मुस्कराता रहता था। उसकी आवाज से मित्रता और स्नेह की ध्वनि आती थी।

'जेलर नम्र है!' मा सोचती हुई लिटिल रूसी से बोली—हमेशा उसके मुख पर एक मुस्कान रहती है। मैं समझती हूँ, यह ठीक नहीं है, क्योंकि जो काम वह करता है, उसमें इस प्रकार दाँत निकालने की कोई बात मेरी समझ से बिलकुल भी नहीं है।

'हाँ, हाँ ! यह लोग ऐसे ही नम्र होते हैं। हमेशा मुस्कराते रहते हैं। जब उनसे कहा जाता है कि देखो, यह आदमी सच्चा है, बुद्धिमान है ; परन्तु हमारे लिए खतरनाक है। जाओ, इसको फाँसी पर लटका दो ! तब भी वे मुस्कराते हुए जाते है और उसे फाँसी पर चढ़ा देते हैं और फिर वे उसी तरह मुस्कराने लगते हैं।

'जिस अफसर ने हमारे यहाँ तलाशी ली थी, वह इन मीठे ठगों से कहीं अच्छा था। वह अधिक सीधा था। उसे देखकर हर एक समझ तो सकता है कि वह सरकारी कुत्ता है !'

'ये लोग मनुष्य नहीं हैं। ये लोगों के सिर तोड़ने और उन्हे बेहोश करने के लिए उपयोग किये जानेवाले लट्ठ हैं। ये वे औजार हैं, जिनके जरिये से सरकार हमारी खाल खींचती है। ये हम पर राज्य करनेवालों के हाथो मे नाचनेवाले कठपुतले हैं। इन्हें जो हुक्म मिलता है उसी को फौरन बजा लाते हैं। न तो वे कभी कुछ सोचते हैं और न कभी पूछते हैं कि 'इस हुक्म का क्या मतलब है ? इसे क्यों मानना चाहिए !'

× × ×

आखिरकार व्लेसोवा को अपने लड़के से मिलने की इजाजत मिली, और रविवार के दिन वह जेल के दफ्तर के एक कोने में चुपचाप जाकर बैठ गई। जेल का दफ्तर छोटा, तंग और अँधेरा था। कुछ और लोग भी वहाँ बैठे हुए अपने संबन्धियों से मिलने की बाट देख रहे थे। मालूम होता था कि वे लोग वहाँ पहली बार ही नहीं आये थे, क्योंकि वे एक-दूसरे से परिचित लगते थे और आपस मे धीरे-धीरे कुछ निर्जीव कानाफूसी कर रहे थे।

'तुमने सुना !' एक हट्टी-कट्टी, परन्तु मुर्झाये हुए चेहरे की स्त्री, जिसकी गोद मे एक गठरी रखी हुई थी, बोली—आज सवेरे प्रार्थना के समय पादरी ने फिर एक घड़ियाल बजानेवाले छोकरे के कान काट लिये !

एक बूढ़े आदमी ने जो पेन्शनयाफ्ता सिपाही की वर्दी मे था, जोर से खाँसते हुए उत्तर मे कहा—हाँ, कम्बखत घड़ियाल बजानेवाले छोकड़े बड़े बदमाश होते हैं।

एक नाटे कद, गन्जे सिर, छोटी-छोटी टाँगों और लम्बी बाँहों का आदमी, जिसके जबड़े बाहर की तरफ लटकते थे, कमरे मे इधर से उधर दौड़ता हुआ हर एक की बातों में जा-जाकर अपनी नाक घुसेड़ रहा था। एकाएक वह एक फटी हुई चिड़चिड़ी आवाज से बोला—हर एक चीज मँहगी होती जा रही है। सड़े गोश्त का भाव चौदह आने हो गया है ! गेहूँ ढाई गुना मँहगा हो गया है !

कैदी भी इस कमरे मे आ-जा रहे थे। उनके चेहरे फीके और निर्जीव थे। वे मोटे चमड़े के भारी-भारी बूट-जूते पहिने थे। कमरे में घुसते ही वे एकाएक आँखे चिमचिमाते थे। किसी-किसी कैदी के पाँवों मे जंजीरें भी थीं। चारों ओर की अखण्ड शान्ति, स्तब्धता और सादगी से जेल के दफ्तर में एक विचित्र भोंड़ा वातावरण छा रहा था। परन्तु साथ ही यह भी मालूम होता था कि वहाँ जो मौजूद थे, उन सबको इस वाता-

वरण में रहने की आदत थी। कुछ खामोश बैठे थे, कुछ अलसाये-से देख रहे थे। कुछ थके हुए मिलने के इन्तजार में थे। मा का हृदय उत्सुकता से काँप रहा था और वह घबराई हुई चारों तरफ निगाह दौड़ा रही थी। उसे दुनिया के इस कोने की विचित्र सादगी पर बड़ा आश्चर्य-सा हो रहा था।

व्लेसोवा के पास ही एक नाटे कद की बुड्ढी स्त्री बैठी थी, जिसके चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ गई थीं। परन्तु उसकी आँखों में अभी तक जवानी की चमक थी। उसने अपनी पतली गर्दन दूसरों की बातें सुनने के लिए झुका ली थी। वह चुपचाप चारों तरफ एक विचित्र उत्सुकता से देख रही थी।

'तुम्हारा यहाँ कौन है?' व्लेसोवा ने स्नेह-पूर्वक उससे पूछा।

'मेरा बेटा! वह विद्यार्थी था।' बूढ़ी स्त्री ने मोटे और कटु स्वर मे उत्तर दिया—और तुम्हारा कौन यहाँ है?

'मेरा भी बेटा ही है। वह कामगार था।'

'क्या नाम है उसका?'

'व्लेसोव!'

'पहले तो कभी उसका नाम नहीं सुना! कितने दिनों से जेल में है?'

'सात हफ्ते से''

'मेरा लड़का तो दस महीने से है।' बुढ़िया अभिमान से बोली।

एक लम्बी स्त्री जो काले कपड़े पहने हुई थी और जिसका मुँह पतला और पीला था, ठिठकती हुई बोली—जल्दी ही सब भले आदमियों को जेल में डाल दिया जायगा; भले आदमियों को सरकार अब आजाद नहीं देख सकती।

'हाँ, हाँ!' नाटे कद का गंजा आदमी जल्दी-जल्दी बोला—सब्र की भी हद हो चुकी है। दिन पर दिन चीजों के दाम बढ़ते जाते हैं, और मनुष्य की कीमत घटती जाती है। फिर भी कोई बात तय करने का कहीं जिक्र तक नहीं है।

'बिलकुल सच है!' पेन्शनयाफ्ता सिपाही बोला—बड़ा अन्धा-धुन्ध मच रहा है। एक सख्त और जोरदार आवाज की जरूरत है जो डाँटकर कह दे, चुप हो जाओ! बस, सिर्फ इसकी जरूरत है, एक डाँटनेवाली आवाज की।

बातचीत अधिक विस्तृत और सजीव हो चली। सभी जीवन के सम्बन्ध में अपना अपना मत कहने के लिए उतावले हो रहे थे; परन्तु सब धीमे-धीमे अर्द्ध-स्फुट स्वरों मे बोल रहे थे। मा को उनकी आवाजों में एक विद्रोह की ध्वनि लग रही थी जो कि बिलकुल नई चीज थी। अपने घरों पर यही लोग दूसरी तरह से बोलते थे। वहाँ वे समझदारी, सादगी और जोर-जोर से बोलते थे।

इतने में एक मोटे, लाल दाढ़ी के जमादार ने मा का नाम लेकर पुकारा और मा को सिर से पाँव तक देखकर अपने साथ-साथ आने के लिए इशारा किया। वह आगे-आगे लँगड़ाता हुआ चला और मा उसके पीछे-पीछे चली। मा के जी में आ रहा था

कि उसे ढकेलकर जल्दी-जल्दी चलाये। पवेल एक कोठरी में खड़ा था। मा को देखते ही वह मुस्कराया और हाथ बढ़ाकर जँगले के बाहर कर दिया। मा ने उसका हाथ पकड़ लिया और हँसने लगी और जल्दी-जल्दी आँखें मिचकाती हुई दूसरी कोई बात समझ में न आने से मीठे स्वर मे कहने लगी—कैसे हो! अच्छे तो हो?

'अम्माँ!' जमादार ने एक साँस भरकर कहा—जरा पीछे हटकर खड़ी हो जाओ। तुम दोनों को एक दूसरे से कुछ दूर रहना चाहिए। इतना कहकर उसने मुँह फाड़कर जँभाई ली।

पवेल ने मा से उसके स्वास्थ्य के सम्बन्ध में और घर का सब हाल-चाल पूछा। मा कुछ देर तक चुप रहकर पवेल की आँखों मे कोई और प्रश्न ढूँढने लगी, परन्तु वह उसे न मिला। पवेल सदा की भाँति गम्भीर था। यद्यपि उसका चेहरा फीका पड़ गया था और आँखे बाहर को निकल आई थीं।

'सशा ने तुम्हे प्रणाम कहा है!' मा ने उससे कहा।

पवेल की पलकें काँपीं और उसकी आँखें बन्द हो गईं। उसका चेहरा कोमल हो गया और उस पर एक स्वच्छ खुली हुई मुस्कान नाचने लगी। देखकर मा के हृदय में छुरियाँ-सी चल गईं।

'क्या तुम जल्दी ही छूट जाओगे?' मा ने एकाएक चोट खाकर उससे व्यग्रता से पूछा—तुम्हे जेल मे क्यो डाल रखा है? पर्चे और किताबें तो कारखाने में तुम्हारे बाद भी बँटे थे!

यह सुनकर पवेल की आँखें हर्ष से चमक उठीं।

'अच्छा! कब बँटे थे! बहुत-से थे!'

'ऐसे विषयों पर बातचीत करने की आज्ञा नहीं है।' जमादार ने सुस्ती से कहा—केवल घर की बातें करो

'और क्या ये बाहर की बातें हैं?' मा ने उसे टका-सा जवाब दिया।

'मैं यह कुछ नहीं जानता! मुझे केवल इतना हुक्म है कि ऐसी बातें नहीं हो सकतीं। कपड़े, खाने और स्वास्थ्य के विषय मे जो चाहो, बातें कर सकते हो। बस, और किसी विषय पर नहीं!' जमादार ने जोर देकर कहा; परन्तु उसकी आवाज से बिलकुल लापरवाही टपकती थी।

'अच्छा, मा!' पवेल बोला—सिर्फ घर ही की बातें करो। आज-कल तुम क्या करती हो?

मा उत्साह मे भरकर बोली—मैं कारखाने में सामान ले जाती हूँ। इतना कहकर वह मुस्कराती हुई क्षण-भर के लिए चुप हो गई और फिर कहने लगी—मेरया का खाने का सामान ले जाती हूँ—गोभी का शोरबा, खट्टा शोरबा, बर्तन और दूसरा सामान।

पवेल ताड़ गया। उसका चेहरा दबी हँसी से खिल उठा और वह सिर खुजलाता हुआ मा से इतने स्नेह से बोला जितना आज तक मा ने उसे कभी बोलते नहीं सुना

९

था—प्यारी अम्माँ ! बड़ा अच्छा है ! बड़ा अच्छा है ! तुम्हे कुछ काम करने को मिल गया, जिससे तुम्हारा समय कट जायगा । अकेले बहुत बुरा तो नहीं लगता, अम्माँ !

'जब फिर पर्चे बँटे तो उन्होंने मेरी भी तलाशी ली ।' मा अभिमानयुक्त वाणी से बोली ।

'फिर वही बातें !' जमादार ने बिगड़कर टोका—मैं तुमसे कह चुका हूँ, ऐसी बातें मना हैं । इन बातों की आज्ञा नहीं है । इसको जेल मे इसीलिए बन्द रखा है कि इसे तो इन बातों के बारे में कुछ न मालूम हो, परन्तु तुम उसे वही खबरें सुना रही हो ! देखो, फिर कान लगाकर सुन लो—ऐसी बातें करने की यहाँ इजाजत नहीं है ।

'अच्छा, छोड़ो भी मा !' पवेल बोला—जमादार अच्छा आदमी है । उसको तंग मत करो । हम दोनों की अच्छी पटती है । आज न जाने वह यहाँ कैसे है ! वरना तो ऐसे मौकों पर नायब जेलर खुद रहता है । शायद इसीलिए वह डर रहा है कि कहीं तुम मुझसे कोई ऐसी बातें न कह दो, जो तुम्हे मुझसे कायदे के अनुसार कहनी नहीं चाहिएँ !

'समय हो गया !' जमादार अपनी घड़ी देखकर बोला—चलो, बिदा लो ।

'अच्छा, धन्यवाद !' पवेल बोला—धन्यवाद अम्माँ, प्यारी अम्माँ ! चिन्ता मत करना । मैं जल्दी ही छूटकर आ जाऊँगा ।

पवेल ने मा को छाती से चिपटा लिया और चूमा । उसके इस प्रेम से मा आनन्द मे भरकर रोने लगी ।

'अच्छा, अब अलग हो जाओ !' जमादार बोला और मा को साथ लेकर बड़-बड़ाता हुआ चल दिया—रोओ मत ! वह जल्द छूट जायगा । सब छूट जायँगे । जेल बहुत भर गई है ।

घर पहुँचकर मा ने ऐन्ड्री को पवेल से जो कुछ बातचीत हुई थी, बताई । मा का चेहरा हर्ष से खिल रहा था ।

'मैंने उससे कह दिया । हाँ ! बड़ी होशियारी से कह दिया, वह समझ गया ।' एक गहरी साँस लेकर फिर वह बोली—हाँ-हाँ, वह समझ गया । नहीं तो वह इतनी स्नेह से भरी और मीठी बातें मुझसे न करता । आज तक कभी उसने मुझसे इस प्रकार की मीठी बातें नहीं की थीं ।

'अम्माँ, अम्माँ !' ऐन्ड्री हँसता हुआ बोला—दूसरे चाहे इस दुनिया में कुछ भी चाहें, मगर माताएँ केवल प्रेम की भूखी होती हैं । उनका हृदय विशाल होता है ।

'मगर देखो तो उन लोगों को, ऐन्ड्री !' मा एकाएक आश्चर्ययुक्त वाणी से बोली—वे लोग कैसे आदमी दीखते थे ! उनके बच्चे उनसे छीन-छीनकर जेल की काल-कोठरियों में डाल दिये गये थे ; परन्तु फिर भी उन्हें अधिक चिन्ता नहीं लगती थी । चुपचाप आकर इधर-उधर बैठ गये थे और मिलने का इन्तजार करते हुए आपस मे बातें कर रहे थे । तुम्हारी क्या राय है ऐन्ड्री ! अगर पढ़े-लिखे और होशियार आदमी

इस प्रकार इन चीजों के आदी हो जाते हैं तो फिर साधारण आदमियों का तो कहना ही क्या !

'हाँ, यह तो स्वाभाविक ही है।' ऐन्ड्री मुस्कराता हुआ बोला—परन्तु कानून उनके लिए इतने कठिन नहीं है, जितने हमारे लिए। उन्हे हमसे अधिक कानूनों की जरूरत है।

कानूनों की चोट जब उनके सिर पर बैठती है तो वे चिल्लाते हैं, मगर जोर से नहीं चिल्लाते, क्योंकि अपनी ही लाठी अपने सिर पर जोर से नहीं लगती। कानून कुछ हद तक उनकी एक प्रकार से रक्षा करते हैं। परन्तु हमारे लिए उन लोगों के कानून बेड़ियो की तरह हैं जो हमें जकड़कर रखने के लिए बनाये जाते हैं, जिससे कि हम उनके लातें न मार सकें।

इस बातचीत के तीन दिन बाद, संध्या के समय, मा मेज के पास बैठी हुई मोजे बुन रही थी और ऐन्ड्री एक पुस्तक मे से उसे रोमन गुलामों के विद्रोह की कहानी सुना रहा था। इतने में किसी ने जोर से द्वार खटखटाया। ऐन्ड्री ने जाकर द्वार खोला। बगल में एक गठरी दबाये हुए और टोप सिर पर पीछे की ओर खींचकर लगाये हुए घुटनों तक कीचड़ मे सना हुआ व्यसोवशचिकोव दाखिल हुआ।

'मैं इधर से जा रहा था। तुम्हारे घर में रोशनी देखकर तुम्हारा हाल-चाल पूछने के लिए घुस आया। मैं अभी सीधा जेलखाने से छूटकर चला आ रहा हूँ।'

वह एक विचित्र आवाज से बोल रहा था। उसने मा का हाथ पकड़कर जोर से हिलाया और बोला—पवेल ने तुम्हें प्रणाम कहा है, अम्माँ! फिर शङ्कित-सा कुर्सी पर बैठता हुआ, वह कमरे का अपनी सन्देह-पूर्ण और उदास दृष्टि से निरीक्षण करने लगा।

मा को वह कभी पसन्द नहीं था। उसके छोटे बालों के नुकीले सिर और छोटी-छोटी आंखों को देखकर वह हमेशा डरा करती थी। परन्तु इस समय उसको एकाएक देखकर वह खुश हुई और दमकते हुए चेहरे से मुस्कराती हुई कोमल वाणी से बोली—तुम बड़े दुबले हो गये हो। ऐन्ड्री, आओ, निकोले को चाय पिलायें।

'मैं समोवार चढ़ा रहा हूँ।' एन्ड्री ने रसोईघर मे से जवाब दिया।

'पवेल कैसा है ! क्या तुम्हारे सिवाय और किसी को भी छोड़ा है ?'

निकोले सिर झुकाकर बोला—केवल मुझी को छोड़ा है। उसने धीरे से आँखें मा की ओर उठाईं और दाँत पीसकर बोला—मैंने उनसे कहा—बस ! अब मुझे छोड़ दो। नहीं तो मैं यहाँ किसी को मार डालूँगा और खुद भी मर जाऊँगा। और उन्होंने मुझे छोड़ दिया।

यह सुनते ही मा उसकी तरफ एकाएक खिची, फिर उसकी छोटी तीक्ष्ण आँखों से आँखें मिलने पर अपनी आँखें मिचकाती हुई बोली—हूँ ! अ...च्छा।

'फेड्या माजिन कैसा है ?' ऐन्ड्री ने रसोईघर मे से चिल्लाकर पूछा—कविता लिखता है न !

'हाँ! परन्तु वह मेरी समझ में नहीं आती।' निकोले सिर हिलाता हुआ बोला—वे उसे पिंजड़े में बन्द कर देते हैं और वह पक्षी की तरह गाता है। मैं तो केवल एक बात समझता हूँ और वह यह है कि मैं अपने घर नहीं जाना चाहता।

'घर जाने को तुम्हारी तबियत कैसे हो! वहाँ तुम्हारे लिए है ही क्या?' मा ने विचारपूर्वक कहा—तुम्हारा घर सूना है। न वहाँ दिया-बत्ती है और न चूल्हे में आग ही है। तुम्हारा घर सूना और ठण्डा पड़ा है।

व्यसोवशचिकोव ऊपर की तरफ देखता हुआ चुप बैठा था। जेब में से सिगरेट का बक्स निकालकर उसने आराम से एक सिगरेट सुलगाई और खाकी-खाकी धुएँ की लच्छियाँ अपने सामने उड़ती हुई देखकर वह एक विशाल कुत्ते की तरह चिढ़कर गुर्राया—हाँ, मेरा घर ठण्डा और सूना होगा। फर्श में ठण्ड से मरे हुए खटमल और शायद चूहे भी मरे होंगे। पेलागुइया निलोवना, क्या तुम कृपया मुझे आज रात को यहीं सो जाने दोगी? उसने रुँधी हुई आवाज से मा की तरफ न देखते हुए पूछा।

'हाँ, हाँ, निकोले! इसमें पूछने की क्या जरूरत है?' मा ने जल्दी से उत्तर दिया। वह निकाले के मुँह की ओर देखकर बड़े असमञ्जस और चक्कर मे पड़ गई थी। उसकी समझ मे न आया कि उससे और क्या कहे; परन्तु निकोले ही स्वयं फिर एक विचित्र टूटे स्वर में बोला—हम ऐसे युग मे पैदा हुए हैं, जिसमे बच्चों को अपने माता-पिता पर लज्जा आती है।

'क्या?' मा ने चौंककर कहा।

उसने मा के मुख की ओर चुपचाप देखा और आँखे बन्द कर ली, जिससे मा को उसका चेचकरू चेहरा एक अन्धे आदमी का-सा लगा।

'मैंने कहा कि हम लोग ऐसे युग मे जन्मे हैं, जिसमें बच्चो को अपने माता-पिता पर लज्जा आती है।' उसने आह भरते हुए जोर से दुहराया—देखो, बुरा मत मानना। यह तुम्हारे लिए नहीं है। पवेल को तुम्हारे लिए कभी लज्जा नही करनी होगी। परन्तु मुझे अपने बाप पर लज्जा आती है। मै उसके घर मे नहीं घुसूंगा। मेरा न बाप है और न मेरा घर है। मेरे पीछे पुलिस न लगी होती तो मैं तो साईबेरिया भाग जाता। मैं समझा हूँ, मेहनती आदमी के लिए साईबेरिया मे भी काफी काम है। मैं वहाँ से कैदियो को छुड़ा-छुड़ाकर भगा दूंगा।'

मा ने फौरन ताड़ लिया कि इस मनुष्य के हृदय में असह्य वेदना हो रही है। परंतु उसकी वेदना ने मा के हृदय पर कोई चोट नहीं पहुँचाई।

'अच्छा, ऐसा है! तब तो तुम्हे अवश्य साईबेरिया जाना चाहिए।' वह यह सोचकर कि उसके चुप रहने से कहीं चिकोव को बुरा न लगे, बोली।

ऐन्ड्री रसोईघर में से मुस्कराता हुआ आया और बोला—ओहो, व्याख्यान हो रहा है।

मा उठी और यह कहती हुई चली गई—मैं अभी कुछ खाने के लिए लाती हूँ।

व्यसोवशचिकोव ने ऐन्ड्री की तरफ घूरकर देखा और एकाएक बोला—मैं समझता हूँ कि कुछ आदमियों को हमें मार डालना चाहिए।

'ओहो! किसलिए जनाब!' ऐन्ड्री ने शान्ति से पूछा।

'इसलिए कि वे मिट जायें।'

'हूँ! क्या तुम्हें लोगों की जान लेने का अधिकार है?'

'हाँ, है!'

'किसने तुम्हें यह अधिकार दिया?'

'लोगों ने ही।'

लिटिल रूसी कमरे के बीचों-बीच, जेबों में हाथ डाले हुए खड़ा था और अपनी टाँगें हिलाता हुआ निकोले को एकटक घूर रहा था। निकोले कुर्सी पर बैठा-बैठा सिगरेट फूँक रहा था, जिससे निकलनेवाले धुएँ के बादलों मे वह छिपा जा रहा था, परन्तु उन धुएँ के बादलो में से उसके चेहरे की लाली के छोटे-छोटे दाग दिखाई दे रहे थे।

'लोगो ने ही मुझे यह अधिकार दिया है।' उसने घूँसा तानते हुए फिर दुहराया—अगर वे मुझे लातें मारने का अधिकार रखते है तो मुझे भी उनको मार डालने और उनकी आँखे निकाल लेने का अधिकार है। तुम मुझे न छूओ तो मैं भी तुम्हें न छूऊँ! जिस तरह मैं रहना चाहता हूँ, मुझे रहने दो, तो मैं शान्ति से रहूँगा और किसी को न छूऊँगा। शायद मुझे जंगल में अकेला रहना पसन्द है। कहीं चश्मे के किनारे किसी पहाड़ की गुफा में एक झोंपड़ी बनाकर अकेले रहना। परन्तु बिलकुल अकेले रहना।

'अच्छा, तुम्हें ऐसा जीवन पसन्द है तो जाओ, ऐसे ही रहो!' लिटिल रूसी कन्धे मटकाकर बोला।

'अब!' निकोले ने पूछा और फिर उसने अपना सिर हिलाकर इनकार करते हुए, अपने घुटने पर एक घूँसा मारा और आप ही अपने प्रश्न का उत्तर दे लिया—अब इस तरह रहना असम्भव है।

'कौन बाधक है?'

'लोग!' व्यसोवशचिकोव ने रूखे स्वर से कहा—अब तो मेरा और लोगों का जीवन-मरण का संग हो गया है। उन्होंने मेरा हृदय घृणा मे रँगकर मुझे बुराई की डोरी से अपने साथ बाँध लिया है। बड़ा मजबूत बन्धन हो गया है। मैं उन्हे घृणा करता हूँ। अब मै उन्हे छोड़ नहीं सकता। नहीं, कभी नहीं! मैं उनकी राह में अड़ूँगा। मैं उनके जीवन का कण्टक बनूँगा। वे मेरी राह में आये और मैं उनकी राह में आऊँगा। मैं केवल अपनी जिम्मेदारी लेता हूँ, केवल अपनी, और किसी की नहीं! अगर मेरा बाप चोर है तो मैं...'

'ओह!' लिटिल रूसी धीमे स्वर में निकोले के पास जाकर आह भरकर बोला।

'और इसाय गोरबोव का, उसका तो मैं सिर एक दिन जरूर ही काटूँगा! देख लेना।'

'किसलिए ?' लिटिल रूसी ने धीमी और आतुर आवाज से पूछा।

'इसलिए कि वह सरकारी मुखबिर है। उसको किसी की मुखबिरी नहीं करनी चाहिए। उसी के कारण मेरे बाप की यह अधोगति हुई है। उसी के कारण मेरा बाप भी अब सरकारी मुखबिर बनने का विचार कर रहा है।' व्यसोवशचिकोव ने गुर्राकर ऐन्ड्री की तरफ देखते हुए कहा।

'ओह, ऐसा है!' लिटिल रूसी बोला—तब तो तुम्हें कौन दोष दे सकता है? मूर्ख भले ही दोष दें।

'बुद्धिमान और मूर्ख सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं!' निकोले ने एक गहरी साँस खींचकर कहा—देखो न, एक तुम भी तो बुद्धिमान हो! और पवेल भी बुद्धिमान है। मगर तुम जिस नजर से फेड्या माजिन या सेमोयलोव या एक दूसरे को देखते हो, उस नजर से मुझे कभी नहीं देखते। क्यों? मैं सच कहता हूँ न? खैर, मैं भी तुम्हारी बातें क्यों मानूँ? तुम सब मुझे ढकेलकर एक कोने मे रखते हो,—दूर एक कोने में...अकेला!'

'तुम्हारा दिल पका है, निकोले!' लिटिल रूसी धीमे स्वर में स्नेह-पूर्वक उसके निकट बैठता हुआ बोला।

'हाँ, मेरा दिल पका हुआ है, और उसी प्रकार तुम्हारा दिल भी पका हुआ है। परन्तु तुम्हें अपने दिल का दर्द मेरे दिल के दर्द से अधिक ऊँचा जँचता है। हम सब एक-दूसरे के लिए नीच हैं। क्यों, है न?'

यह कहकर उसने अपनी तीक्ष्ण दृष्टि से ऐन्ड्री को घूरा और दाँत पीसता हुआ जवाब का इन्तजार करने लगा। उसकी बुरी आकृति का विशाल चेहरा जकड़कर रह गया और उसके मोटे-मोटे होंठ इस तरह काँपे मानों वह आग की लपट से झुलस गये हों।

'मैं क्या कहूँ!' लिटिल रूसी ने व्यसोवशचिकोव की विरोधी दृष्टि से अपनी स्नेह-पूर्ण और उदास दृष्टि को मिलाते हुए कहा—जिस समय किसी मनुष्य के हृदय के सारे घावों से रक्त बह रहा हो, उस समय उससे बहस करना उसका अपमान करना है। मैं समझता हूँ, भैया! मैं अच्छी तरह सब जानता हूँ।

'हाँ, मुझसे बहस करना असम्भव है। मुझे बहस करना नहीं आता।' निकोले आँखें नीची करते हुए बोला।

'मैं समझता हूँ।' लिटिल रूसी बोला—हम सभी को इस प्रकार के अनुभव में से होकर गुजरना पड़ा है। हम सबको नंगे पाँवों काँटों के फर्श पर होकर चलना पड़ा है। हम सभी एक-न-एक दिन अन्धकार में इसी प्रकार मुँह बाये खड़े थे, जिस प्रकार आज तुम खड़े हो।

'तुम्हे मुझसे कुछ नहीं कहना है?' व्यसोवशचिकोव ने उससे धीरे से पूछा—कुछ भी नहीं कहोगे? मेरे दिल के अन्दर मुझे ऐसा लगता है कि मानों भेड़िये गुर्रा रहे हैं।

'मैं तुमसे कुछ नहीं कहूँगा, क्योंकि मुझे पूरा विश्वास है कि तुम भी चाहे पूरी तरह न सही, परन्तु इस संकट से पार अवश्य हो जाओगे!' ऐन्ड्री यह कहकर मुस्कराने लगा। और फिर निकोले को पीठ थपथपाकर बोला—भैया, यह तो बचपन की बीमारी है। सभी को होती है। शीतला का रोग है! सभी को इससे दुःख झेलने पडते हैं, जो बलवान होते हैं, उन्हें कम कष्ट होता है और जो कमजोर होते हैं, उन्हें अधिक। इस प्रकार की बीमारी उस समय मनुष्य को होती है, जब उसे अपने अस्तित्व का ज्ञान तो हो जाता है, परन्तु वह जीवन का अर्थ नहीं समझता और जीवन में कहीं उसे अपना स्थान ही नहीं मिलता है। जब हमें अपना स्थान ही नहीं मालूम, हमें अपनी कीमत का ही पता नहीं, तब ऐसा ही लगता है कि हम पृथ्वी पर एक अद्वितीय ककड़ी या कद्दू की तरह हैं, जिसकी तौल और मूल्य संसार में कोई नहीं जानता और जिसको हर एक केवल हड़प जाने की ही फिराक में है। कुछ दिन बाद पता चलता है कि दूसरे के हृदय भी हमारे हृदय से अधिक बुरे नहीं हैं। अस्तु, संसार अच्छा लगने लगता है। फिर अपने ऊपर शर्म भी आती है। घर की मीनार पर अपनी छोटी-सी घण्टी लेकर, जिसकी आवाज आनन्दोत्सव कीच नचनाहट में कोई न सुन सके, चढ़ने से क्या फायदा! नक्कारखाने मे तूती की आवाज कौन सुनता है? दूसरों से मिलकर चिल्लाओगे तो लोग तुम्हें भी सुनेंगे। मगर अकेले तुम्हारी आवाज इस कोलाहल में उसी प्रकार डूब जायगी, जिस प्रकार दूध मे मक्खी डूब जाती है। समझे, मेरा मतलब समझते हो!

'हाँ, शायद समझता हूँ।' निकोले सिर हिलाता हुआ बोला—परन्तु मुझे विश्वास नहीं होता।

लिटिल रूसी हँसा और उछलकर खड़ा हो गया, फिर तेजी से कमरे में इधर से उधर दौड़ने लगा।

'मुझे भी इसी तरह विश्वास नहीं होता था। उफ, तू भी निरा काठ का उल्लू ही है।'

'निरा काठ का उल्लू! क्यों?' निकोले ने उदास मुस्कराहट से लिटिल रूसी की तरफ देखते हुए पूछा।

'क्योंकि तू भी मेरी ही तरह है!'

यह सुनकर निकोले ने जोर से खखारा और अपना मुह बा दिया।

'यह क्या?' लिटिल रूसी ने उसके सामने आश्चर्य से रुककर पूछा।

'मै सोचता हूं कि जो तुम्हारा अपमान करने का प्रयत्न करे, वह बड़ा मूर्ख!' निकोले ने सिर हिलाकर कहा।

'क्यों, तुम मेरा अपमान कैसे कर सकते हो?' लिटिल रूसी ने कन्धे मटकाकर पूछा।

'मैं नहीं जानता!' व्यसोवशचिकोव ने सद्भाव अथवा शायद बड़प्पन से दाँत दिखाते हुए कहा—मैं समझता हूँ कि तुम्हारा अपमान करके आदमी को अपने ऊपर ही बड़ी लज्जा आती होगी!

'देखो-देखो ! तुम कहाँ जा पहुचे !' लिटिल रूसी ने हँसते हुए कहा।

'ऐन्ड्री !'—इतने में मा ने रसोईघर में से पुकारा—आओ, सेमोवार ले जाओ, तैयार हो गया है।

ऐन्ड्री कमरे से चला गया। व्यसोवशचिकोव ने अकेले रह जाने पर, चारों तरफ नजर दौड़ाते हुए अपने भारी और भद्दे बूट-जूतों में घुसे हुए पैरों को फैलाया। उसने अपने पैरों पर एक दृष्टि डाली और झुककर अपने मोटे-मोटे टखनों को छूआ। फिर वह अपना एक हाथ उठाकर मुँह तक लाया और ध्यान से हथेली को देखकर हाथ उलटा। उसका हाथ मोटा था, उँगलियाँ छोटी-छोटी थीं और हाथ पर पीले-पीले बाल थे। फिर हवा मे हाथ हिलाता हुआ वह उठकर खड़ा हो गया।

जब ऐन्ड्री सेमोवार लेकर कमरे में घुसा तो व्यसोवशचिकोव को उसने दर्पण के सामने खड़ा पाया। व्यसोवशचिकोव बोला—बहुत दिनों के बाद आज मैंने दर्पण में अपना मुँह देखा है। फिर वह हँसकर कहने लगा—मेरा चेहरा बड़ा भद्दा है !

'उससे क्या हुआ !' ऐन्ड्री ने एक विचित्र दृष्टि से देखते हुए पूछा।

'सशेन्का कहती है कि चेहरा हृदय का दर्पण होता है !' निकोले ने धीरे-धीरे इस वाक्य के हर शब्द का उच्चारण करते हुए उत्तर दिया।

'मगर यह बात सच नहीं है !' लिटिल रूसी ने कहा—सशेन्का की ही नाक कितनी खराब है ! उसकी गालों की हड्डियाँ भी कैंची की तरह हैं ; परन्तु उसका हृदय तारों की तरह स्वच्छ है !—इस प्रकार बातें करते हुए दोनों चाय पीने बैठ गये।

व्यसोवशचिकोव ने एक बड़ा आलू उठाया और रोटी के एक टुकड़े पर नमक लगा-कर धीरे-धीरे, ध्यान-पूर्वक, बैल की तरह वह चबा-चबाकर खाने लगा।

'अच्छा कहो, यहाँ कैसी गुजरती है !' उसने भरे हुए मुँह से पूछा।

और फिर ऐन्ड्री ने कारखाने मे समाजवाद के प्रचार-कार्य का सारा हाल जब उसे प्रसन्न होकर सुनाया तो वह क्रोधित और सुस्त होकर बोला—बहुत धीरे काम चलता है ! बड़ी देर लगती है। जल्दी होनी चाहिए।

मा ने उसकी तरफ देखा, और उसके प्रति मा के हृदय मे फिर विरोध भाव जाग्रत हुआ।

'जीवन घोड़ा तो नहीं है, जिसे तुम कोड़े लगाकर भगा सकते हो !' ऐन्ड्री ने कहा।

परन्तु व्यसोवशचिकोव दृढ़ता से सिर हिलाता हुआ कहता ही रहा—बहुत ढील होती है ! मुझसे अब नहीं रहा जाता। मैं क्या करूँ ? और यह कहकर मजबूरी से हाथ फैलाता हुआ वह उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा।

'हमें खुद सीखना है और दूसरों को सिखाना है। बस यही हमारा कार्य है।' ऐन्ड्री ने सिर झुकाते हुए कहा।

व्यसोवशचिकोव ने पूछा—और हम लोग लड़ेंगे कब !

'लड़ने का समय आने तक हमें कई बार अपने जालिमों के हाथों मरना पड़ेगा,

इतना तो मैं जानता हूँ !' लिटिल रूसी मुस्कराकर बोला—परन्तु लड़ने का दिन कब आयेगा, यह मैं नहीं जानता। हाथों से पहले हमें दिमाग को लड़ने के लिए तैयार करना है ! कम-से-कम मेरा तो ऐसा ही विचार है।

'और हृदय को !' निकोले बोला।

'हाँ-हाँ, हृदय को भी।'

निकोले चुप हो गया और फिर खाने लगा। मा तिरछी नजरों से चुपचाप उसका विशाल चेचकरू चेहरा देखने लगी। वह उसमें कोई ऐसी चीज ढूँढ़ने का प्रयत्न कर रही थी, जिससे व्यसोवसचिकोव की विराट्, चौकोर मूर्ति के प्रति उसके मन में अच्छे भाव उत्पन्न हो सकें, और इस प्रयत्न में जब उसकी छोटी-छोटी तीक्ष्ण आँखों से मा की आँखें मिल जाती थीं तो फौरन ही मा की भौंहें फड़क उठती थीं। ऐण्ड्री अपना सिर हाथों में पकड़े बैठा था। उसका जी घबरा रहा था। एकाएक वह हँसा और फिर एकाएक चुप होकर मुँह से सीटी बजाने लगा।

मा शायद उसकी घबराहट का कारण समझती थी। निकोले मेज पर चुपचाप बैठा था और लिटिल रूसी जब उससे कुछ पूछता था, तो वह प्रत्यक्ष अनिच्छा से, सूक्ष्म-सा उत्तर दे देता था।

वह छोटा कमरा, जिसमे ये लोग बैठे थे, अब इन लोगों के लिए बहुत छोटा हो गया था। उनका वहाँ दम घुटने लगा था। मा और ऐण्ड्री अपने मेहमान के चेहरे की ओर बार-बार देखते थे।

आखिरकार निकोले उठा और बोला—मैं सोऊँगा। जेल में बैठा रहता था। वहाँ दिन-भर बैठा रहना पड़ता था। एकाएक उन्होंने मुझे छोड़ दिया है। अब मैं आजाद हूँ; परन्तु मैं बहुत थका हुआ हूँ।

इतना कहकर वह उठा और रसोईघर में चला गया। वहाँ कुछ देर तक वह इधर-उधर फिरता रहा। फिर एकाएक शान्ति छा गई। मा ने उसकी आवाज सुनने का प्रयत्न किया और फिर ऐण्ड्री से कान मे कहा—उसके सिर में कोई बड़ा भयङ्कर विचार चक्कर लगा रहा है।

'हाँ, उसकी समझ मे आना कठिन हो रहा है !' लिटिल रूसी ने सिर हिलाते हुए स्वीकार किया—अच्छा मा, अब तुम भी जाकर सोओ। मै अभी कुछ देर तक पढ़ूँगा।

मा कमरे के उस कोने की तरफ चली गई, जहाँ परदे की आड़ में एक चारपाई उसके लिए पड़ी थी। ऐण्ड्री मेज पर बैठा-बैठा बहुत देर तक उसकी प्रार्थना और निःश्वासों की धीमी-धीमी आवाजें सुनता रहा। जल्दी-जल्दी किताब के पन्ने पलटते हुए ऐण्ड्री घबराहट से होंठ मलता था, और अपनी लम्बी-लम्बी उँगलियों से मूँछे मरोड़ता हुआ जमीन से पैर रगड़ता था। दीवार पर लगी हुई घड़ी का लटकन हिलता हुआ

टिक-टिक-टिक-टिक कर रहा था और हवा आ-आकर खिड़कियों से टकरा-टकराकर सिसकियाँ ले रही थी।

मा की धीमी-धीमी आवाज कहती हुई सुनाई दी—हे ईश्वर! दुनिया में इतने आदमी हैं; परन्तु सभी अपने-अपने दुःखों से दुखी हैं! आनन्द से रहनेवाले कहाँ हैं!

'जल्द ही पैदा होंगे मा, जल्द ही!' लिटिल रूसी ने कहा।

चौदहवाँ परिच्छेद

जिन्दगी के दिन अब जल्दी-जल्दी कटने लगे थे, क्योंकि उनमें कुछ मजा व रंग आ गया था। रोज गाँव में कोई-न-कोई नई घटना हो जाती थी। मा को नवीनता का भय जाता रहा था। नये-नये आदमी शाम को उसके घर पर प्रायः आते थे और ऐण्ड्री से बैठकर घुसपुस किया करते थे। काफी रात बीत जाने पर वे उठते थे और अपने कोटों के कालरों को गर्दनों पर उलटते हुए और अपने टोपों को चेहरे पर नीचे तक खींचते हुए चुपचाप सँभलते हुए, निकलते थे और निकलकर बाहर के अन्धकार में लुप्त हो जाते थे। वे सब जोश में होते थे, परन्तु उस पर वे काबू रखते थे। उनके चेहरों से ऐसा लगता था कि उनके पास समय होता तो वे अवश्य गाते और आनन्द करते; परन्तु वे हमेशा ही जल्दी में होते थे। आम तौर पर ये लोग मसखरे, परन्तु गम्भीर; मुँहफट और हँसमुख, उठती हुई उमर के नौजवान ही होते थे; परन्तु वे विचारशील और शान्त होते थे और मा को सब-के-सब, अपनी अटल श्रद्धा के कारण, एक ही लगते थे। यद्यपि उनमें हरएक के चेहरे की काट-छाँट अलग होती थी, परन्तु मा की नजरों में उन सबके चेहरों का मिलकर एक पतला, गम्भीर दृढ़ चेहरा बन जाता था, जिसकी गहरी आँखों में उसे एक अगाध स्नेह से पूर्ण वज्र भाव दीखता था, जैसा शूली पर चढ़ने के लिए जाते समय ईसा मसीह की आँखों मे था।

मा इन नौजवानों को गिनती थी और मन-ही-मन उनको एकत्र करके पवेल के चारों तरफ रखकर देखती थी कि पवेल उनकी भीड़ में शत्रुओं की आँख से छिप जाता है या नहीं।

एक दिन एक चुलबुली सी घुँघराले बालों की छोकरी ऐन्ड्री के लिए शहर से एक पारसल लेकर आई। जाते समय वह व्लेसोवा से अपनी हँसती हुई आँखों मे स्नेह भरकर बोली—प्रणाम, बहिन!

'प्रणाम!' मा ने अपनी प्रसन्नता रोकते हुए उसे जवाब दिया। लड़की को दरवाजे तक पहुँचाकर वह खिड़की के पास जाकर खड़ी हो गई और वहाँ से मुस्कराती हुई बाहर की तरफ देखने लगी। वसन्त के फूल की तरह कोमल बहिन, तितली की तरह हल्की और छोटी-छोटी टाँगों से जल्दी-जल्दी फुदकती हुई चली जा रही थी।

'बहिन!' मा के मुँह से जब वह आँखों के ओझल हो गई तब निकला। कैसी प्यारी लड़की थी! भगवान करे, इसे जीवन मे अच्छा साथी मिले!

मा की दृष्टि में शहर से आनेवाले लोगों में एक प्रकार का लड़कपन होता था, जिस पर वह बड़े-बूढ़ों की तरह मुस्कराया करती थी। परन्तु साथ-ही-साथ उसे उनकी अपार श्रद्धा देखकर आश्चर्य और आनन्द भी होता था। उनके सत्य और न्याय की विजय के

स्वप्न मा के हृदय में आशा और हर्ष उत्पन्न करते थे; परन्तु जब वह उनकी आनेवाली विजय की चर्चा सुनती थी तब वह आप-से-आप किसी अज्ञात दुःख से आहें भर उठती थी। सबसे अधिक जो बात उसके हृदय में चुभती थी, वह इन नौजवानों के जीवन की सादगी और उनका सुन्दर, महान्, विशाल आत्मत्याग था। बहुत-सी बातें जो ये लोग जीवन के सम्बन्ध में कहते थे, मा अब समझने लगी थी। उसे लगता था कि इन लोगों ने सचमुच लोगों के सारे कष्टों का स्रोत ही ढूँढ़ लिया है। अस्तु, उनके विचारों से सहमत होना उसको स्वाभाविक लगता था। परन्तु फिर भी हृदय में उसको अभी तक पूरा विश्वास नहीं होता था कि ये लोग अपने विचारों के अनुसार सचमुच जीवन की पुनर्घटना कर सकेंगे या वे दुनिया-भर के श्रमजीवियों को अपने झण्डे के नीचे ला सकेंगे। वह जानती थी कि हर एक को अपना पेट भरने की फिक्र लगी हुई है और जिसको आज पेट भरकर खाने को मिल रहा है, वह उसे हफ्ते-भर के लिए भी छोड़ने को तैयार नहीं है। अस्तु, लम्बी और कठिन राह पर चलने के लिए बहुत-से लोग तैयार न होंगे। न सबकी आँखें अन्त मे आनेवाले उस सुख के साम्राज्य को ही देख सकेंगी, जिसमें सभी एक-दूसरे के बन्धु होंगे। अस्तु, यह दाढ़ी-मूँछों और मुरझाये हुए चेहरों के भले आदमी उसे केवल बच्चे ही लगते थे और वह सिर हिला-हिलाकर सोचती थी—अरे प्यारे बच्चो! अरे प्यारे बच्चो!

परन्तु ये लोग भला और विचारशील जीवन व्यतीत करते थे, पंचायती राज्य की स्थापना की आपस मे चर्चा करते थे, सब कुछ जानने के प्रयत्न मे रहते थे; और जो कुछ स्वयं जानते थे, एक-दूसरे को बड़े परिश्रम से सिखाते थे। उनका जीवन खतरों से भरा होने पर भी प्रेमपूर्ण था, जिसको देख-देखकर मा आहें भरती हुई अपने बीते जीवन पर दृष्टि डालती थी, जो निरा निरर्थक और नीरस, एक पतले काले धागे की तरह खिंचता हुआ रहा था। परन्तु धीरे-धीरे मा को मालूम होने लगा था कि वह भी इस नये जीवन मे लाभदायक हो सकती है और इस आत्म-विश्वास से उसके हृदय में श्रद्धा और साहस आने लगा था। आज तक पहले कभी उसने अपने को किसी के लिए आवश्यक नहीं समझा था, जब वह अपने पति के साथ रहती थी तब भी वह अच्छी तरह जानती थी कि यदि वह मर गई तो उसका पति फौरन ही दूसरी औरत से विवाह कर लेगा। उसको तो सिर्फ एक स्त्री चाहिए थी, जो उसका खाना भी बना देती। वह चाहे काले बालों की होती या लाल बालो की, एक ही बात थी। बाद में जब पवेल बड़ा होकर गलियों मे खेलने लगा, तब मा ने देखा कि पवेल को भी उसकी जरूरत नहीं थी; परन्तु अब उसे लगता था कि वह एक ऐसे अच्छे कार्य में सहायता कर रही थी, जिसमें उसकी जरूरत थी। यह उसके लिए एक नवीन बात थी जिससे उसके हृदय में आनन्द होता था और उसे अपना सिर कन्धों पर सीधा लगने लगा था।

वह कारखाने में बराबर पर्चे और किताबें ले जाना अपना धर्म समझने लगी थी। उसने सन्तरियों से बचकर निकल जाने की बहुत-सी तरकीबें निकाल ली थीं। सरकारी

जासूस उसे रोज ही कारखाने में देखते थे, जिससे वे उसकी तरफ विशेष ध्यान नहीं देते थे। उसकी कई बार तलाशी भी हुई। परन्तु हमेशा कारखाने में पर्चे बँटने के दूसरे दिन। जब उसके पास पर्चे इत्यादि कुछ न होते, तब वह इस प्रकार डरी हुई-सी कारखाने में घुसती कि सन्तरियों और जासूसों को उस पर सन्देह होता और वे रोककर उसकी तलाशी लेते। अपने इस अपमान पर वह बनावटी क्रोध दिखाती और सन्तरियों को झिड़कती हुई मन-ही-मन अपनी होशियारी पर अभिमान करती और खुश होती। उसे इस प्रकार के नाटकों मे बड़ा मजा आने लगा था।

व्यसोवशचिकोव को जेल से लौटने के बाद कारखानों में काम नहीं मिला। अस्तु, वह गाँव में एक लकड़ी के व्यापारी के यहाँ काम करने लगा। दिन-भर वह काले घोड़ों की एक जोड़ जोते हुए और उनसे तख्ते और शहतीर घसिटवाता हुआ गाँव मे इधर से उधर घूमता नजर आता था। मा उसे रोज प्रायः इसी हालत मे देखती थी। बोझ के मारे घोड़े आगे की तरफ झुककर सड़क पर पाँव लथेड़ते हुए चलते थे। घोड़े बुड्ढे और कमजोर थे। उनके सिर थकावट और उदासी से हिलते थे। और उनकी निस्तेज, झुर्रीदार आँखें धीरे-धीरे खुलती और बन्द होती थीं; परन्तु उनके पीछे लटकता हुआ शहतीरों या तख्तों का ढेर जोर से खड़खड़ाता हुआ उनको झटक-झटककर आगे बढ़ाता था। घोड़ों के एक तरफ निकोले हाथ मे ढीली की हुई लगामें पकड़े, फटे कपड़े पहने, गन्दे, भारी बूट-जूते चढ़ाये और टोप को सिर के पिछले भाग पर रखे इस भोंड़ी तरह चलता था, मानों वह एक मिट्टी का ढेला हो, जो अभी-अभी जमीन से तोड़कर अलग किया गया हो। वह सिर हिलाता हुआ और अपने पैरों की तरफ देखता हुआ चलता था। इधर-उधर की किसी चीज को देखने की उसकी इच्छा नहीं होती थी। उसके घोड़े सामने से आनेवाले लोगों और गाड़ियों से अक्सर टकरा जाते थे। जिससे बर्रों के छत्ते की भिन-भिनाहट की तरह उस पर चारों ओर से गालियों और डाँट-डपट की बौछारें पड़ने लगती थीं, जिनसे आकाश-मण्डल गूँज उठता था; परन्तु वह न तो सिर उठाकर किसी की तरफ देखता था और न किसी को उत्तर देता था। चुपचाप मुंह से एक हृदय-विदारक सीटी बजाता हुआ और घोड़ों पर बुड़बुड़ाता हुआ चला जाता।

ऐन्ड्री के पास मा के घर पर पर्चे, पुस्तकें और विदेशी पत्र इत्यादि पढ़ने के लिए जब दूसरे बन्धु इकट्ठे होते थे, तब निकोले भी आता था और एक कोने मे बैठकर चुपचाप घण्टे-दो घण्टे तक उनकी बातें सुना करता था। पढ़ना खत्म होने पर दूसरे नौजवान लम्बी-लम्बी बहसों मे पड़ जाते थे; परन्तु व्यसोवाशचिकोव उन बहसों मे कोई भाग नहीं लेता था। वह चुपचाप सबके बाद तक ठहरा रहता था और अकेला रह जाने पर ऐन्ड्री से त्योरियाँ चढ़ाकर पूछता था—मगर सबसे अधिक दोषी कौन है? जार ही न?

'नहीं निकोले, जार नहीं। जिस आदमी ने सबसे प्रथम दुनिया मे कहा कि 'यह मेरा है!' वह दोषी था। परन्तु उस आदमी को मरे हजारों वर्ष हो चुके हैं। उससे

कीना रखने से अब कुछ फायदा नहीं निकल सकता।' लिटिल रूसी उससे विनोद-पूर्वक कहता। परन्तु इतना कहकर उसकी आँखों में घबराहट के चिह्न दीखने लगते।

'और यह धनवान् लोग और उनके हिमायती! क्या यह लोग भी दोषी नहीं हैं?'— निकोले बेसब्री से पूछता।

लिटिल रूसी अपना सिर हाथ से थपथपाने लगता और फिर मूँछें मरोड़ता हुआ, देर तक, सरल भाषा में, निकोले को जीवन और मनुष्यों के विषय में समझाने की कोशिश करता। परन्तु चूँकि उसकी बातों से ऐसा लगता था कि पूरा समाज ही दोषी है। निकोले को सन्तोष नहीं होता था। वह अपने मोटे-मोटे होंठ चबाते हुए, सिर हिला-हिलाकर कहता—नहीं, मैं यह नहीं मान सकता! यह बात मेरी समझ में नहीं आती। और वह असन्तुष्ट और उदास उठकर घर चला जाता। एक बार वह जोर देकर बोला—नहीं जी, कोई तो दोषी जरूर है। मुझे पूरा विश्वास है, कुछ लोग जरूर दोषी हैं।—मा ने कहा—कारखाने का मुन्शी, इसाय, एक दिन हम लोगों के लिए कह रहा था—इन्हें गहरे हल से बंजर जमीन की तरह जोतना चाहिए। बिलकुल दया नहीं दिखानी चाहिए।

मा की बात सुनते ही ऐन्ड्री और निकोले चुप हो गये। कुछ देर चुप रहकर निकोले ने पूछा--इसाय ऐसा कहता था?

'हाँ, इसाय बड़ा खराब आदमी है। वह मुखबिरी करता है। हर जगह से खबरें लेता फिरता है। अब वह इधर भी आने लगा है। आकर हमारी खिड़कियों से झाँका करता है।'

'तुम्हारी खिड़कियों से झाँकता है!'

मा अपने बिस्तर पर लेटी थी, जिससे उसे निकोले का चेहरा नहीं दीख रहा था। परन्तु उसे लगा कि उसने निकोले से बहुत कुछ कह डाला था, क्योंकि लिटिल रूसी ने जल्दी से मा की बात काटकर निकोले को शान्त करने का प्रयत्न करते हुए कहा—क्या हुआ! झाँकने दो। उसे काम कम रहता है, और फुरसत काफी रहती है। वह इसी प्रकार अपना समय बिताता फिरता है।

'नहीं, नहीं, ठहरो!' निकोले बोला—देखो! यह आदमी दोषी है!

'काहे का दोषी है!' लिटिल रूसी ने रूखे स्वर में पूछा—अपनी मूर्खता का?

परन्तु व्यसोवशचिकोव उसको उत्तर देने के लिए भी न ठहरा। फौरन वहाँ से उठकर चल दिया।

लिटिल रूसी दुखी होकर कमरे में धीरे-धीरे टहलने लगा। उसने सदा की भाँति पैरों के जूते उतार दिये थे, जिससे मा की नींद में विघ्न न पड़े। परन्तु मा सोई नहीं थी। निकोले के जाते ही वह चिन्ता से बोली—मुझे इस आदमी से बड़ा डर रहता है। वह बिलकुल एक पचती हुई भट्टी की तरह है जो सेंकती नहीं, जलाती है।

'हाँ!' लिटिल रूसी कहने लगा—वह बड़े उग्र स्वभाव का छोकरा है! इसाय के

सम्बन्ध में, मा, उससे कभी बातें करना ठीक नहीं! इसाय सचमुच मुखबिरी करता है; उसके लिए उसे रुपया भी मिलता है।

'उसमें आश्चर्य की बात ही क्या है? उसका बाप भी तो पुलिस में नौकर है!' मा बोली।

'निकोले उसको पकड़कर धुन डालेगा! तब क्या होगा!'—लिटिल रूसी कहता रहा—देखो, हमारे जीवन के शासकों ने जन-साधारण के मन में कैसे भाव उत्पन्न कर दिये हैं! निकोले की भाँति लोग जब उस अन्याय को समझने लगेंगे, जो उनके साथ प्रतिदिन होता है और जब वह अन्याय उन्हें असह्य हो उठेगा, तब क्या होगा! आकाश खून से रँग जायगा, और पृथ्वी रक्त के बबूले साबुन के झागों की तरह उगल उठेगी!

'बड़ा बुरा होगा, ऐन्ड्री!'—मा भयभीत आवाज से बोली।

'जो हराम का माल पेटों में ठूँसकर बैठे हैं, उन्हें वह उगलना पड़ेगा!'—ऐन्ड्री कुछ देर ठहरकर बोला—और अम्माँ, इस बहनेवाले खून की धार का एक-एक कतरा आज तक असंख्य आँखों से बहनेवाले आसुओं के सागर में मिलकर घुल जायगा!

फिर वह धीरे से हँसा और बोला—यह सब तो ठीक है। मगर इससे लाभ क्या होगा!

× × ×

अगली छुट्टी के दिन बजार से लौटकर जैसे ही मा ने ड्योढ़ी का द्वार खोला, वह जहाँ-की-तहाँ, एकाएक आनन्द से भौंचक्की खडी रह गई। कमरे मे से पवेल की आवाज आ रही थी।

'मा, आ गई!'—लिटिल रूसी चिल्लाया।

मा ने पवेल को जल्दी से मुड़ते हुए देखा और उसके चेहरे पर उसे एक ऐसा भाव चमकता हुआ दिखाई दिया, जिससे भविष्य के लिए मा को बड़ी आशा हुई।

'आ गया लौटकर—आ गया!'—कहते हुए इस आशातीत, परन्तु अचानक घटना से मा का गला रुँध गया और वह जहाँ खड़ी थी, वहीं बैठ गई।

पवेल झुककर मा की आँखों में देखने लगा। उसका चेहरा पीला हो गया था, आँखों में आँसुओं की बूँदें थीं और होंठ काँप रहे थे। एक क्षण तक इसी तरह वह चुप-चाप देखता रहा। मा भी उसकी तरफ देख रही थी और चुप थी।

लिटिल रूसी मुँह से मीठी-मीठी सीटी बजाता हुआ, सिर झुकाये हुए उनके पास से निकलता हुआ सहन में चला गया।

'धन्यवाद मा।' पवेल मीठी और गहरी आवाज में, काँपती हुई उँगलियों से मा का हाथ दबाता हुआ बोला—धन्यवाद। प्यारी मा! मेरी बड़ी प्यारी मा!

भावातिरेक से बेटे के चेहरे का रंग बदला हुआ देखकर और उसकी प्यारी मर्म-स्पर्शी आवाज सुनकर, मा आनन्द में डूब गई। वह चुपचाप पवेल का सिर सहलाती हुई अपने दिल की जोरदार धड़कन पर काबू करने का प्रयत्न करने लगी। फिर वह

मन्द स्वर में बड़बड़ाई—भगवान तुम्हारी सहायता करें, बेटा ! मैंने तुम्हारे लिए किया ही क्या है ! जो कुछ तुम हो, वह मेरी वजह से नहीं हो। तुमने अपने आप ही······

'मा, हमारे महान कार्य मे सहायता करने के लिए तुम्हें बड़ा धन्यवाद !' वह बात काटकर बोला—अपनी पेट की मा को ही अपनी आत्मिक मा भी कह सकना दुनिया में बड़ा मुश्किल है। ऐसा होना बड़ा अहोभाग्य है !

वह कुछ न बोली। चुपचाप लोभी की तरह उसके शब्दों को एक घूँट में निगल गई। अपने बेटे को, जो इतना तेजस्वी था, आज अपने इतने निकट पाकर वह मन-ही-मन उसे सराह रही थी।

'मैं चुप रहता था, मा ! क्योंकि मैं देखता था कि मेरे जीवन की बहुत-सी चीजें तुम्हें दुःख देती थीं। मैं तुम्हारे लिए दुखी होता था। परन्तु मेरी समझ मे कोई उपाय नहीं आता था। मैं असहाय था। मैं समझता था कि तुम हम लोगों को कभी पसन्द न करोगी। तुम हमारे विचारों को कभी अपना न सकोगी। तुम जिस प्रकार जिन्दगी-भर चुपचाप जुल्म सहती रही हो, उसी प्रकार चुपचाप सहती रहना पसन्द करोगी। मैं बड़ी मुश्किल मे था।'

'ऐन्ड्री ने मुझे तुम लोगों की बहुत-सी बातें समझाई।'—मा पवेल का ध्यान उसके बन्धु की तरफ खींचने के विचार से बोली।

'हाँ, उसी ने मुझे भी तुम्हारा सब हाल बताया।' पवेल ने हँसते हुए कहा।

'और यगोर भी मुझे बताया करता था। वह मेरे ही गाँव का है। जानते हो ! ऐन्ड्री तो मुझे पढ़ना भी सिखाना चाहता था।'

'हाँ, और तुमने उसकी बात का बुरा माना और चुपचाप एकान्त मे अपने आप ही पढ़ने लगीं।'

'आह, उसे यह भी पता है !' वह शरमाती हुई बोली। फिर हृदय में उमड़ते हुए हर्षातिरेक से सुखी होकर उसने पवेल से कहा—उसे भी अन्दर ही बुला लो न, वह जान-बूझकर बाहर चला गया है, जिससे हमें बातचीत मे झिझक न हो। उसके मा नहीं है।

'ऐन्ड्री !' ड्योढ़ी का द्वार खोलकर पवेल चिल्लाया—ऐन्ड्री, किधर हो ?

'इधर, लकड़ी चीरने जा रहा हूँ।'

'रहने दो। लकड़ी चीरने के लिए अभी बहुत वक्त है। यहाँ आओ।'

'अच्छा ! आता हूँ।'

मगर इतना कहकर भी वह फौरन ही नहीं आया। रसोई में घुसने पर वह गृहस्थ की तरह कहने लगा—निकोले से कहूँगा, लकड़ी ले आये। घर में बहुत लकड़ी रह गई है। देखो तो मा, पवेल कैसा अच्छा लगता है ! सरकार तो बागियों को दण्ड देने के लिए जेल में डालती है; मगर वे मोटे होकर बाहर निकलते हैं।

माँ हँसने लगी। उसका हृदय अभी तक आनन्द से नाच रहा था। उसे हर्षातिरेक

का एक नशा-सा चढ़ रहा था। परन्तु साथ ही एक विशेष चिन्ता और लज्जा के भाव से वह अपने लड़के को सदा की भाँति शान्त देखने की इच्छा भी कर रही थी कि उसके जीवन में उत्पन्न होनेवाला यह पहला आनन्द सदा के लिए ऐसा ही हरा-भरा, दृढ़ और सजीव बना रहे और बाह्य आडम्बरों में पड़कर कभी कम न हो जाय। उसने कृपण के धन की तरह झट पट अपने भावों को छिपाते हुए कहा—आओ पवेल, कुछ खा लो। सवेरे से अभी तक तुम्हें कुछ खाने को भी मिला है या नहीं ! उसने चिन्ता-युक्त शीघ्रता से पूछा।

'नहीं, मुझे कल ही जेलर ने बताया था कि मैं छूटनेवाला हूँ। अस्तु, आज सुबह से मुझसे कुछ खाया नहीं गया। आते ही पहले-पहल मैं यहाँ सिजोव से मिला।'—पवेल ने ऐन्ड्री को बताया—वह मुझे देखते ही फौरन सड़क पार करके आ गया और मुझे प्रणाम किया। मैंने उससे कहा कि अब मुझसे जरा सावधानी से मिलना चाहिए, क्योंकि मैं पुलिस की निगरानी मे रहनेवाला एक खतरनाक आदमी हूँ। परन्तु वह बोला—ऊँह, उससे क्या होता है। और फिर उसने अपने भतीजे के सम्बन्ध मे जो कुछ पूछा, वह सुनने ही योग्य है। 'फेडर का व्यवहार जेल मे ठीक तो है ?' मैंने उससे ठीक व्यवहार का अर्थ समझना चाहा तो वह बोला—वह अपने बन्धुओं के खिलाफ कोई ऐसी बातें तो नहीं बकता जो उसे नहीं कहनी चाहिएँ ? मैने जब उसे बताया कि फेड्या बड़ा सच्चा और बुद्धिमान नवयुवक है, तो वह दाढ़ी खुजलाता हुआ कहने लगा—मेरे खानदान मे कायर पैदा नहीं होते।

'वह बूढ़ा बडा बुद्धिमान है !' लिटिल रूसी सिर हिलाता हुआ बोला—उससे हमारी प्रायः चर्चा होती है। वह बड़ा अच्छा किसान है। क्या फेड्या शीघ्र ही छूट जायगा ?

'हाँ, मैं समझता हूँ, जल्द ही, किसी भी दिन छूट सकता है। मेरा तो विचार है, सभी जल्द छूट जायँगे। पुलिस के पास इसाय के सिवाय और कोई गवाही ही नहीं, और वह बेचारा कह ही क्या सकता है !

मा कमरे मे टहलती हुई लड़के की तरफ देख रही थी। ऐन्ड्री खिड़की के पास खड़ा हुआ पीठ के पीछे हाथ बाँधे पवेल की बातें सुन रहा था। पवेल भी धीरे-धीरे कमरे मे टहल रहा था। उसकी दाढ़ी बढ़ गई थी। पतले-पतले, काले-काले बालों के घूँघरदार छल्लों की गालों पर घनी उगज से उसका गम्भीर चेहरा कोमल दीखने लगा था। परन्तु उसकी काली आँखों मे वैसी ही गम्भीरता का भाव था।

'बैठ जाओ !' मा ने पवेल के सामने एक रकाबी में गरम-गरम खाना रखते हुए कहा।

खाना खाते समय ऐन्ड्री ने पवेल को राइबिन का हाल सुनाया। उसके कह चुकने पर पवेल दुखी होकर बोला—मैं यहाँ होता, तो मैंने उसे इस प्रकार हर्गिज न जाने दिया होता। वह क्या लेकर गया है ! दिल में सिर्फ एक असन्तोष की आग और दिमाग में विद्रोह।

'जो आदमी चालीस वर्ष की उम्र तक सिर्फ अपनी अन्तरात्मा के रीछों से ही लड़ता रहा हो उसे समझाना कठिन होता है।'—ऐन्ड्री ने हँसते हुए कहा।

इस पर पवेल ने उस पर कठोर दृष्टि डाली और पूछा—तो क्या तुम्हारा कहना है कि मनुष्य के दिमाग का कूड़ा-कर्कट ज्ञान के प्रकाश से भी साफ नहीं किया जा सकता!

'एकाएक हवा में मत उड़ो, पवेल! देखो, मीनार की छतरी से टकराकर कहीं तुम्हारे पंख न टूट जायँ!'—लिटिल रूसी ने उसे झिड़ककर कहा।

इसके बाद वे दोनों एक ऐसी चर्चा में भिड़ गये जो मा की समझ में नहीं आती थी। खाना खत्म हो गया; मगर उनकी चर्चा जारी रही। एक दूसरे पर शब्द-रूपी पत्थरों की वर्षा-सी कर रहे थे। कभी-कभी उनकी भाषा सरल हो जाती थी और मा की समझ में आने लगती थी।

'हमें अपनी राह पर सीधा चला जाना चाहिए। न तो दायें ही मुड़ना चाहिए और न बायें।' पवेल जोर देकर कहता।

'हाँ, हाँ! सीधे ही लाखों आदमियों की ऐसी भीड़ में घुस जाना चाहिए जो कि हमें अपना शत्रु समझती है!'

'दूसरा रास्ता ही क्या है!'

'और जनाब के ज्ञान के प्रकाश का रास्ता कहाँ गया!...'

मा उन दोनों के वाग्युद्ध को देख रही थी। उसे लगा कि पवेल किसानों की चिन्ता नहीं करता और लिटिल रूसी उनका पक्ष ले रहा था। वह यह दिखाने का प्रयत्न कर रहा था कि किसानों में भी ज्ञान का प्रचार करना चाहिए। मा की समझ में सदा ऐन्ड्री की बातें ही अधिक आती थीं, और इस समय में भी उसको वह ठीक लगा। परन्तु फिर भी जब पवेल बोलने लगता था तो मा ध्यान से, कान लगाकर, उसके शब्द सुनने का प्रयत्न करती थी कि कहीं ऐन्ड्री ने उसे अपनी बातों से नाराज तो नहीं कर दिया है; मगर वे दोनों जोर-जोर से एक दूसरे पर चिल्लाने पर भी नाराज नहीं थे।

बीच-बीच में मा पूछती थी—अच्छा पवेल, ऐसा है!

और वह मुस्कराकर उत्तर देता—हाँ, ऐसा ही है!

'देखिए, जनाब!'—लिटिल रूसी ने सद्व्यंग्य से आखिरकार कहा—आपने खाया तो खूब है; मगर चबाया अच्छी तरह नहीं है। अस्तु, आपके गले में कुछ हिलग रहा है। जाइए, मुँह-हाथ धोकर गला साफ कीजिए।

'हँसी में बातें मत उड़ाओ!' पवेल बोला।

'मैं तो चिता की तरह गम्भीर हूँ।'

मा उनकी बातों पर सिर हिलाती हुई हँसने लगी।

———

पन्द्रहवाँ परिच्छेद

वसन्त ऋतु आ रही थी। बर्फ पिघलने लगी थी, जिससे कारखाने की चिमनियाँ साफ हो-होकर फिर अपनी कालिख और मिट्टी दिखाने लगी थीं। चारों तरफ कीचड़-ही-कीचड़ हो चली थी। जिधर भी गाँववाले दृष्टि दौड़ाते थे, उधर ही कीचड़ दीखती थी। दिन पर दिन यह कीचड़ अधिक बढ़ रही थी। सारा गाँव गन्दगी और कीचड़ों से ढका हुआ लगता था। दिन-भर घरों की छतों में से धीरे-धीरे पानी टपकता रहता था और दीवारों से सील की बदबू आती थी। रात को चारों तरफ बर्फ के बड़े बड़े सफेद-सफेद गुम्बद खड़े नजर आते थे। आकाश में सूर्य प्रायः निकलता था और वह दलदल की तरफ बहकर जानेवाले चश्मों को जो ठिठक-ठिठककर बीच में खड़े रह जाते थे, फिर कलकल-कलकल करते हुए बहाने लगता था। दोपहर को गाँव से वसन्ती आशाओं के स्नेहपूर्ण, लरजते और काँपते हुए संगीत की ध्वनि आती थी।

लोग पहली मई के दिन श्रमजीवियों का उत्सव मनाने की तैयारी कर रहे थे। उस उत्सव का अर्थ समझाने के लिए कारखाने मे पर्चे बँटे और वे नौजवान भी, जिन पर इन पर्चों का कोई असर नहीं होता था, इस बार कहने लगे :

'हाँ जी, छुट्टी जरूर होनी चाहिए!'

परन्तु व्यसोवशचिकोव क्रोध से दाँत पीसकर बोला—यह आँखमिचौनी बन्द करो! अब खुल खेलने का वक्त आ गया है।

फेड्या माजिन चारों तरफ उछलता फिरता था। वह बहुत दुबला हो गया था और अपने शरीर को झटककर लकवा लग जानेवाले मनुष्य की तरह हाव-भाव और इशारों से बातें करता था। उसकी आवाज काँपती थी, जिससे वह एक पिंजड़े मे बन्द गाता हुआ लवा-सा लगता था। वह हमेशा याकोव सोमोव के साथ रहता था जो अपनी उम्र से अधिक गम्भीर और मितभाषी था।

समोयलोव की, जो जेलखाने से लाल होकर लौटा था और वेसिली गसेव और घुँघराले बालोंवाले ड्रेगूनोव और कुछ और लोगों की राय थी कि इस रोज हथियार बाँधकर निकलना चाहिए। परन्तु पवेल और लिटिल रूसी और सोमोव और दूसरे लोगों की राय मे ऐसा करने की आवश्यकता नहीं थी।

यगोर थका हुआ, पसीने से लथपथ और हाँफता हुआ, परन्तु हमेशा हँसता हुआ आता था।

'बन्धुओ, वर्तमान समाज-व्यवस्था के बदल डालने का कार्य महान है। परन्तु इस महान् कार्य को अधिक शीघ्रता से आगे बढ़ाने के लिए मुझे एक जोड़े जूतों की जरूरत है!' उसने अपने भीगे और फटे जूतों की तरफ इशारा करते हुए कहा—यह जूते इतनी

बुरी तरह फट गये हैं कि इसमें टाँके लगाने की अब जगह नहीं रही, जिससे मेरे पाँवों में रोज ठण्ड घुसती है। परन्तु मुझे पृथ्वी छोड़कर निकट से निकटवर्ती सितारे में भी तब तक जाने की हर्गिज इच्छा नहीं है, जब तक कि पुरानी समाज-व्यवस्था को इस लोक में खुल्लमखुल्ला अर्थी न निकल जाय। अस्तु, मैं बन्धु समोयलोव के हथियार बाँधकर जलूस में निकलने के प्रस्ताव का घोर विरोध करता हूँ। मैं इस प्रस्ताव में इस प्रकार का सुधार करना चाहता हूँ कि सबको हथियारों से सुसज्जित करने के बजाय मुझे एक जोड़ी जूतों से सुसज्जित कर दिया जाय, क्योंकि मेरा पक्का विश्वास है कि इससे समाजवाद की विजय में घूँसे दिखाने और आँखें निकालने से कहीं अधिक सहायता मिलेगी।

इसी प्रकार की हँसी-खेल की भाषा में वह दूसरे कामगारों को अन्य देशों के लोगों का हाल सुनाया करता था, किस प्रकार उन देशों के श्रमजीवी अपने जीवन का भार कम करने का प्रयत्न कर रहे थे। मा को उसकी कहानियाँ सुनने में बड़ा मजा आता था, और उनसे उसके हृदय पर एक विचित्र प्रभाव पड़ता था। वह सोचती थी कि शायद मनुष्य के सबसे चालाक शत्रु वही होते हैं, जो उनको क्रूरता में प्रायः छला करते हैं। उनके कद छोटे; परन्तु पेट बड़े और मुँह लाल होते हैं। वे सिद्धान्त से लोभी, चालाक और हृदय-हीन होते हैं। जार के राज्य में जब इन लोगों का जीवन कठिन होने लगा, तो इन्होंने लोगों को राजा के विरुद्ध भड़काया और लोगों ने विद्रोह करके जब राजा के हाथों से सत्ता छीन ली, तब इन जन्तुओं ने छल-छिद्र से उस सत्ता को अपने हाथों में कर लिया और लोगों को हाँककर फिर बिलों में बन्द कर दिया। बाद में लोगों ने जरा भी चूँ-चरा की तो सैकड़ों और हजारों का खून कर डाला गया।

एक बार मा ने हिम्मत करके यगोर को बतलाया कि उसकी कहानियों से उसने अपने मन में जीवन का क्या चित्र खींचा था, और उससे पूछा—क्या यह चित्र ठीक है? क्यों यगोर आइवानोविश!

वह खाँसने लगा और आँखें ऊपर को करके उसने एक साँस ली। फिर वह मा से बोला—ठीक है, अम्माँ! तुमने बिल्कुल ठीक समझा है! बिल्कुल ठीक! इतिहास की जीन पर तुमने कुछ पालिस जरूर चढ़ा दी है और कुछ बेल-बूटे भी बना दिये हैं, परन्तु उससे तुम्हारे चित्र की सचाई में कोई कमी नहीं आई है। हाँ, यही छोटे कद और बड़े पेट के जीव दुनिया में सबसे बड़े पापी और छली हैं। यही वे जहरीले कीड़े हैं जो मनुष्य मात्र को काटते रहते हैं। फ्रान्सवालों ने अपनी भाषा में इनका नाम 'बूर्जुआ' रखा है। इस शब्द को याद रखना, प्यारी अम्माँ—बूर्जुआ! उफ! किस बुरी तरह से ये जोंकें हमारे चिपकी रहती हैं! हमें दिन-रात काटती हैं और हमारे शरीर का रक्त चूसकर हमें जीवन-हीन बना देती हैं!

'क्या धनवानों से तुम्हारा मतलब है?'

'हाँ, धनवानों से! धन उनका भी दुर्भाग्य ही है। देखो न, यदि किसी बच्चे के भोजन में थोड़ा-थोड़ा ताँबा मिलाते जाओ तो उसकी हड्डियों की बाढ़ रुक जाती है,

और वह बौना ही रह जाता है। इसी प्रकार जवानी से ही किसी को सोने का कुत्ता खिलाने से उसकी जिन्दगी बर्बाद हो जाती है।'

एक बार यगोर के सम्बन्ध में बात-चीत करते हुए पवेल ने लिटिल रूसी से कहा—

मैं समझता हूँ, ऐन्ड्री, जिन लोगों के दिलों मे दुःख भरा रहता है, वे हँसा अधिक करते हैं ?

लिटिल रूसी उसकी बात सुनकर कुछ देर तक चुप रहा। फिर आँखें मिचकाता हुआ बोला—नहीं, यह सच नहीं है। वरना आज सारा रूस ही हँसता नजर आता।

नटाशा भी फिर आने लगी थी। इतने दिनों तक वह एक दूसरे शहर की जेल में बन्द थी। परन्तु उसमे कोई परिवर्त्तन नहीं हुआ था। मा देखती थी कि उसके आने पर लिटिल रूसी मे जान आ जाती थी—वह बड़ा हँसी-मजाक करने लगता था; सब पर फब्तियाँ कस-कसकर नटाशा को खूब हँसाता था। परन्तु उसके जाते ही वह अपनी अनन्त उदास तानें मुँह की सीटी में भर-भरकर बजाने लगता था, और कमरे के फर्श पर थका सा, पैर लथेड़ता हुआ, देर तक टहलता रहता था।

सशेन्का प्रायः दौड़ती हुई आती थी और हमेशा उदास और जल्दी मे दीखती थी। न जाने क्यों दिन पर दिन वह अधिक कठोर और टेढ़ी भी होने लगी थी। एक दफा पवेल उसको ड्योढ़ी तक पहुँचाने गया तो मा ने उसको इस प्रकार कहते सुना—तुम खुद ही झण्डा लेकर जाओगे ?—लड़की ने धीमे स्वर में पूछा।

'हाँ।'

'क्या यह बिलकुल निश्चय हो चुका है ?'

'हाँ, यह मेरा हक है !'

'फिर जेल जाओगे ?' पवेल चुप था। 'क्या यह सम्भव नहीं है कि···'इतना कहकर वह चुप हो गई।

'क्या ?'

'कि झण्डा कोई और ले ?'

'नहीं !' वह जोर देकर बोला।

'विचार कर लो ! तुम इतने प्रभावशाली हो ! तुम्हें लोग इतना चाहते है ! तुम और नखोदका दो ही यहाँ पर सबसे अधिक क्रान्तिकारी कार्यकर्ता समझे जाते हैं। सोचो तो, बाहर रहकर तुम आजादी की लडाई के लिए कितना काम कर सकते हो ? यह तो तुम जानते ही हो कि झण्डा लेकर निकले तो तुम्हें कई साल के लिए जलावतन कर दिया जायगा।'

मा ने लड़की की आवाज मे एक परिचित भय और दर्द की ध्वनि पाई। उसके शब्द मा के हृदय पर बर्फ के टुकड़ों की तरह आकर लगे।

'नहीं, मैंने निश्चय कर लिया है ! अब कोई विचार मेरा यह निश्चय नहीं बदल सकता !'

'अगर मैं तुमसे प्रार्थना करूँ तो भी नहीं ?...मैं...'

पवेल एकाएक कठोर होकर जल्दी से बोला—तुम्हें यह नहीं कहना चाहिए ! नहीं. तुम्हें इस प्रकार मुझसे नहीं कहना चाहिए !

'मैं भी मनुष्य हूँ !' वह धीरे से बोली।

'हाँ, मगर उच्च कोटि की मनुष्य हो।' उसने भी धीमी आवाज से उत्तर दिया। फिर वह एक विचित्र स्वर में, मानों उसका गला घुट रहा हो, बोला—तुम मेरे हृदय के इतनी निकट हो—अस्तु, तुम्हे ऐसी बात मुझसे नहीं कहनी चाहिए।

'अच्छा, अलविदा !' लड़की ने कहा।

और मा ने उसके जाते हुए पैरों की आवाज सुनी, जिससे उसने समझ लिया कि वह जल्दी-जल्दी ही नहीं, वल्कि दौड़ती हुई जा रही थी। उसकी समझ में दोनों की बात-चीत अच्छी तरह नहीं आई थी। परन्तु उनकी बातों से मा को ऐसा जरूर लगा कि उन लगों पर कोई नई आफत फिर आनेवाली है, कोई बड़ी और दुःखदायी आफत अनेवाली है। उसके विचार एक प्रश्न पर ठिठक गये, 'पवेल क्या करना चाहता है ?' मा के सारे विचार इस प्रश्न पर ठिठककर उसके दिमाग मे कीलों की तरह गड़ गये। वह चुपचाप जाकर रसोईघर में चूल्हे के पास खड़ी हो गई और अनन्त आकाश मे बाहर बिखरे हुए तारों को देखने लगी।

पवेल और ऐन्ड्रो आँगन में घुस गये। लिटिल रूसी सिर हिलाता हुआ बोला—उफ, इसाय ! इस इसाय का क्या करे ?

'हम लोगों को उसे अपना विचार छोड़ देने की सलाह देनी चाहिए।' पवेल ने रूखे स्वर मे कहा।

'जो उससे कुछ कहने जायगा उसी को वह पुलिस के हवाले कर देगा।' लिटिल रूसी ने अपना टोप एक कोने मे फेकते हुए कहा।

'पाशा, तुम क्या करनेवाले हो ?' मा ने सिर झुकाये हुए पूछा।

'कब ? अभी ?'

'नहीं, पहली मई को !'

'ओ हो !' पवेल आवाज कम करता हुआ बोला—तुमने सुन लिया ! मैं झण्डा लेकर निकलूँगा। मैं झण्डा लेकर जलूस के आगे-आगे चलूँगा। और मे समझता हूँ, इसके लिए मुझे फिर जेल मे डाल दिया जायगा।

मा की आँखे छलक आई। उसका दिल मुँह को आने लगा। पवेल ने स्नेह से उसका हाथ पकड़कर दबा लिया और कहने लगा—मुझे यह करना जरूरी है ! कृपया मुझे समझो ! मुझे इ अ ानन्द आता है !

'मैं तो कुछ नहीं कहती !' वह धीरे से उठकर बोली; मगर जैसे ही उसकी आँखें पवेल की दृढ़ आँखों से मिली, वैसे ही फिर उसका सिर झुक गया। पवेल ने मा का हाथ छोड़ दिया और एक आह भरकर झिड़की के तौर पर कहा—अरे, तुम दुखी होती

हो ! तुम्हें तो आनन्द मनाना चाहिए ! अब माताओं को हँसते हुए अपने पुत्रों को मृत्यु के मुँह में भेजने के लिए तैयार होने का समय आ गया है ।

'ठहरिए, ठहरिए !' लिटिल रूसी बड़बड़ाया—अब तो एकाएक बड़ी जोर की दुलकी भरने लगे !

'मैं तुमसे क्या कहती हूँ !' मा दुहराकर बोली—मैं तुम्हारे मार्ग में नहीं आऊँगी ! बेटा, मुझे तुम्हारे लिए जो कुछ दुःख होता है, वह तो सिर्फ माता की ममता है !

पवेल मा के पास से हट गया और मा ने उसे तीक्ष्ण और कठोर शब्दों में यों कहते हुए सुना—एक प्रेम ऐसा भी होता है जो मनुष्य के जीवन के मार्ग मे ही अड़चन बन जाता है ।

मा डर से काँपी कि कहीं और अधिक सख्त बातें कहकर वह उसके हृदय पर चोट न पहुँचाये । वह जल्दी से बोली—नहीं, पाशा ! ऐसा क्यों कहते हो ? मैं समझती हूँ ! तुम्हे यही पसन्द है ! तुम्हे अपने बन्धुओं के लिए ऐसा ही करना जरूरी है ।

'नहीं !' उसने उत्तर दिया—यह तो मैं अपने लिए ही करता हूँ । बन्धुओं के लिए तो मैं झण्डा बिना लिये भी जा सकता हूँ । परन्तु नहीं, मैं स्वयं ही झण्डा लेकर निकलूँगा ।

ऐन्ड्री द्वार पर खड़ा था, जो उसके कद के लिए बहुत नीचा था । अस्तु वह एक विचित्र प्रकार से घुटने झुकाये हुए ऐसा खड़ा था, मानों वह चौखट मे जड़ा हो, उसका एक कन्धा ऊपरी चौखट से अड़ गया था और दूसरा कन्धा और सिर बाहर की तरफ निकल आये थे ।

'कृपया अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना बन्द कीजिए !' उसने लाल आँखे पवेल पर निकालकर इस प्रकार कहा, मानों पत्थर की उस दीवार की दराज मे से कोई छिपकली घूर रही हो ।

मा को रोने की प्रबल इच्छा हुई । परन्तु वह यह नहीं चाहती थी कि उसका लड़का उसकी आँखों मे आँसू देखे । वह एकाएक बोली—अरे ! मैं वह तो बिलकुल भूल ही गई...और इस प्रकार कहती हुई वह दौड़कर ड्योढ़ी मे चली गई । वहाँ पहुँचकर वह एक कोने मे अपना सिर टेककर चुपचाप रोने लगी । और आँसुओं की धारों के साथ-साथ उसके शरीर की शक्ति भी बह गई, मानो उसके हृदय का रक्त बहकर आँसुओ मे चला गया हो ।

खुले हुए द्वार मे से पवेल और ऐन्ड्री की झगड़ती हुई आवाजों की खोखली ध्वनि मा के कानो मे आ रही थी ।

'क्यों जी, मा को कष्ट देने में तुम्हें बड़ा मजा आता है !'

'तुमको इस प्रकार मुझसे कहने का कोई अधिकार नहीं है !' पवेल चिल्लाकर उससे बोला ।

'वाह ! मैं तुम्हें बेवकूफी का काम करते देखूँ और चुप रहूँ ! तब तो मैं तुम्हारा बड़ा अच्छा बन्धु हूँ ! तुमने अपनी मा से ऐसी बातें क्यों कहीं !'

'आदमी को हमेशा सभी से साफ और सीधी बातें कहनी चाहिएँ। 'हाँ' कहना हो तो साफ 'हाँ' कहना चाहिए और 'न' कहना हो तो साफ 'न' कहना चाहिए।'

'अच्छा, मा के साथ—अपनी मा के साथ भी इस तरह बोलने की जरूरत है !'

'हर एक के साथ ! मुझे ऐसा प्रेम, मुझे ऐसी दोस्ती नहीं चाहिए, जो मेरे पैरों में उलझकर मेरे आगे चलने मे बाधक हो।'

'ओ हो ! आप बड़े वीर हैं ! जाइए, सशेन्का से भी इसी तरह कहिए ! उससे भी आपको इसी तरह कहना चाहिए था।'

'उससे भी कह दिया !'

'कैसे कहा ? जिस तरह मा से कहा, उसी तरह तुमने उससे कहा ? तुमने इस प्रकार उससे हर्गिज नहीं कहा ! उससे तुम नम्रता से बोले—स्नेह पूर्ण और मृदुल शब्दों में बोले। मैंने अपने कानो से उससे बोलते तो नहीं सुना ; परन्तु मैं जानता हूँ। तुम अपनी वीरता मा के आगे दिखाते हो। लानत है तुम्हारी इस वीरता पर !'

व्लेसोवा जल्दी से आँसू पोंछकर इस डर से कि कहीं लिटिल रूसी और पवेल मे सचमुच ही लड़ाई न हो जाय, दरवाजा खोलकर रसोईघर में काँपती और डरी हुई लौट आई।

'उफ ! कितनी ठण्ड है ! वसन्त ऋतु में भी इतनी ठण्ड है !' कहती हुई वह इधर से उधर रसोईघर मे यों ही चीजें उठा-उठाकर रखने लगी और उन दोनों की आवाजें डुबाने के लिए जोर से बोली—सभी चीजें बदल चली है। लोग गरम हो चले हैं और मौसम ठण्डा हो चला है। इस ऋतु में गर्मी हुआ करती थी, आकाश स्वच्छ होता था। सूर्य निकलता था !

कमरे मे अब खामोशी छाई थी और मा रसोई के बीचो-बीच में खड़ी हुई कान लगाये हुए सुनने का इन्तजार कर रही थी।

'सुना ?' लिटिल रूसी की धीमी आवाज फिर सुनाई दी—तुम्हे समझना चाहिए ! एक वह दिल है और एक तुम्हारा दिल है ! शैतान की फटकार हो तुम पर !

'चाय लाऊँ ?' मा ने काँपती हुई आवाज मे उन दोनों से पूछा और उनके उत्तर की बाट न देखकर अपने-आप ही अपनी आवाज की लरज समझती हुई बोली—कितनी ठण्ड मुझे लग रही है !

पवेल तीरछी नजर से मा की तरफ देखता हुआ, अपराधी की तरह मुस्कराता हुआ धीरे-धीरे उसके पास आया।

'माफ करो, अम्माँ।' वह नम्रता से बोला—मैं अभी तक निरा छोकरा ही हूँ। मूर्ख हूँ।

'मेरा दिल मत दुखाया करो।' मा दुःख से रोकर बोली और उसका हाथ पकड़कर उसने उसे अपने सीने से लगा दिया—मुझसे कुछ न कहा करो। ईश्वर तुम्हारे साथ हो। तुम्हारे जो जी मे आये सो करो ; मगर मेरा दिल न दुखाया करो। बेटे के लिए

मा दुःख करना कैसे छोड़ सकती है ! असम्भव है । मैं तुम्हारे लिए दुखी हूँ । तुम मुझे अपने हाड़-मांस की तरह प्यारे हो । तुम सब भले हो । मैं भी तुम्हारे लिए दुःख नहीं करूँगी तो और कौन करेगा ! तुम जेल जाते हो । तुम्हारे पीछे दूसरे भी जेल जाते हैं। उन्होंने भी अपना सब कुछ छोड़ दिया है पाशा, और इस कार्य मे तुम्हारे साथ यही अब उनका सर्वस्व हो गया है ।

इतना कहते-कहते, वह उत्तेजित होकर एक दुःखपूर्ण आनन्द-सागर मे गोते-सी लगाने लगी । इसके आगे उसके मुँह से कुछ न निकल सका । वह एक मूक वेदना से हाथ मलती हुई चुपचाप अपने लड़के के चेहरे की तरफ घूर रही थी और उसकी आँखों में एक असह्य आन्तरिक वेदना झलक रही थी ।

'अच्छा, मा ! क्षमा करो ! अब समझ गया !' पवेल सिर झुकाकर बड़बड़ाया, फिर मुस्कराते हुए मा की तरफ देखकर लज्जा, परन्तु आनन्द से वह बोला—मैं आज की बात कदापि नहीं भूलूँगा मा, सच मानो ।

मा ने पवेल को अपने पास से ढकेलकर हटा दिया और मुँह फेरकर स्नेहपूर्ण शब्दों में ऐन्ड्री से कहने लगी—ऐन्ड्री, कृपया तुम पवेल पर इस प्रकार मत चिल्लाया करो । तुम उससे बड़े हो, इसलिए तुमको···

लिटिल रूसो मा की तरफ पीठ किये खड़ा था । बिना मुँह फेरे हो गाता हुआ-सा बोला—ओह, हो, हा । मैं उस पर क्यों न चिल्लाऊँ ? मै तो उसको किसी दिन जरूरत पड़ने पर पीटूँगा भी ।

मा हाथ फैलाकर धीरे-धीरे उसकी तरफ बढ़ी और बोली—मेरे प्यारे, मेरे प्यारे ऐन्ड्री !

लिटिल रूसी ने फिरकर मा की तरफ देखा और फिर झट बैल की तरह सिर झुका लिया । फिर पीठ के पीछे हाथ बाँधे हुए वह मा के पास से निकलता हुआ चुपचाप रसोईघर मे चला गया और वहाँ से बनावटी क्रोध में भरकर चिल्लाया—अच्छा है ! यहाँ से तुम जल्दी ही भाग जाओ, पवेल ! नहीं तो मैं जरूर किसी दिन तुम्हारा सिर फोड़ डालूँगा । अम्माँ, मैं मजाक कर रहा हूँ । कहीं सच मत मान लेना । मैं समोवार चढ़ा रहा हूँ । मगर कोयले तो सब भीगे हुए है । हरे राम !···

इतना कहकर वह चुप हो गया । मा ने रसोई में जाकर देखा तो वह जमीन पर बैठा हुआ चूल्हे मे रखे हुए कोयलों को धौंक रहा था । मा की तरफ न देखता हुआ लिटिल रूसी फिर बोला—हाँ, अम्माँ, डरना मत । मैं पवेल पर सचमुच हाथ नहीं उठाऊँगा । तुम तो जानती हो कि मैं साधु-स्वभाव का आदमी हूँ—इतना नरम हूँ, जितना अचार की गाजर, और पवेल वीर है । तुम मत सुनना पवेल ! और मैं उसे प्यार भी करता हूँ, परन्तु उसकी वह जाकट मुझे अच्छी नहीं लगती । तुमने देखा है न आज, उसने एक नई जाकट पहनी है । उसे वह जाकट बहुत पसन्द लगती है, क्योंकि वह चारों तरफ अकड़ता हुआ फिरता है और सबको धक्का देकर चिल्लाता है—देखो,

देखो । मैंने कैसी अच्छी जाकट पहनी है ! यह सच हो सकता है कि वास्तव में आपकी जाकट बहुत अच्छी है । मगर लोगों को इस तरह धक्का दे-देकर चिल्लाने से क्या फायदा ? हम लोगों को बिना तुम्हारी जाकट के भी काफी गर्मी मिल जाती है ।

पवेल ने मुस्कराकर पूछा—यह बकझक आप कब तक करते रहेंगे ? अपने तानों से मेरी इतनी कुन्दी कर लेने पर भी अभी तक आपको सन्तोष नहीं हुआ है ?

फर्श पर पसरकर लिटिल रूसी ने अपनी टाँगें समोवार के दोनों ओर फैला दीं और पवेल की तरफ घूरकर देखा । मा द्वार पर खड़ी हुई उदास, परन्तु स्नेहपूर्ण चेहरे से ऐन्ड्री की लम्बी और झुकी हुई गर्दन और उसके सिर की गोलाई को ध्यान से देख रही थी । उसने अपना शरीर पीछे को झुकाकर दोनों हाथ जमीन पर टेकते हुए, प्रेम से दमकते हुए चेहरे से, आँखें मिचकाते हुए, बड़ी धीमी और हृदयविदारक आवाज से कहा—तुम लोग भले हो । सचमुच बड़े भले हो ।

पवेल ने झुककर लिटिल रूसी का हाथ पकड़ा ।

'मेरा हाथ पकड़कर मुझे मत उठाओ ।' लिटिल रूसी मोटी आवाज से बोला—तुम मुझे एकाएक छोड़ दोगे और मैं धड़ाम से नीचे गिर पड़ूँगा । हटो, दूर हो । मैं तुम्हें खूब समझता हूँ ।

'क्यों इतना शर्माते हो ?' मा विचारती हुई बोली—तुम दोनों एक-दूसरे से चिपटकर मिल क्यों नहीं जाते ? झगड़ा खत्म हुआ, अब दोनों मिलकर एक-दूसरे को प्यार कर लो ।

'क्यों, चाहते हो मिलना ?' पवेल ने कोमल स्वर में पूछा ।

'हाँ, अगर तुम मिलना चाहते हो ।' लिटिल रूसी ने उठने का प्रयत्न करते हुए उत्तर दिया ।

पवेल घुटनों पर बैठ गया और वे दोनों एक-दूसरे से लिपटकर क्षण-भर के लिए एक-दूसरे मे डूब गये ; दोनों शरीरों की आत्माएँ एक होकर मित्रता के स्नेहसागर में गोते लगाने लगीं ।

वह दृश्य देखकर मा की आँखों से आँसुओं की धारें बहने लगीं । परन्तु यह आँसू सुख के थे, जिन्हें पोंछती हुई वह झिझक से बोली—औरतों को रोना ही अच्छा लगता है । दुःख में होती हैं तब भी वे रोती हैं ; और सुख मे होती हैं तब भी रोती हैं !

लिटिल रूसी ने पवेल को धक्का देकर अपने पास से धीरे से हटाते हुए और उँगलियों से अपनी आँखों के आँसू पोंछते हुए कहा—काफी है । बछड़ों का खेल खत्म हो चुकने पर उन्हें कसाईघर में जाना पड़ता है । बड़ा खराब कोयला है । मैं तो इसे धौंक-धौंककर थक गया । कितनी खाक आँखों में भर गई है !

पवेल सिर झुकाये हुए खिड़की पर जाकर बैठ गया और नम्रतापूर्वक कहने लगा—ऐसे आँसुओं पर तुम्हें शर्म नहीं आनी चाहिए, ऐन्ड्री !

मा पवेल के पास जाकर बैठ गई। उसका हृदय कोमल और उत्तेजित भावों से भर रहा था। वह उदास थी। परन्तु प्रसन्न और शान्त थी।

'कुछ हर्ज नहीं!' वह लड़के के हाथ थपथपाती हुई बोली—ऐसा होता है। कुछ हर्ज नहीं है।

इस प्रकार के शब्द कहकर वह अपने हृदय के भावों को व्यक्त करने का प्रयत्न करने लगी, परन्तु वह उसमे सर्वथा असमर्थ रही।

'मेज पर मैं रकाबियाँ लगा दूँगा। तुम बैठी रहो मा!' लिटिल रूसी फर्श पर से उठकर कमरे मे जाता हुआ बोला—थोड़ी देर आराम करो। ऐसे धक्कों से तुम्हारा तो दिल ही हिल जाता होगा।

फिर कमरे मे से गूँजती हुई उसकी जोर से आवाज आई—अपनी शेखी बघारने से कुछ लाभ नहीं; परन्तु सच तो यह है कि हमने जीवन का आनन्द आज पाया—सच्चे मनुष्यतापूर्ण, स्नेहपूर्ण जीवन का आनन्द हमें आज मिला। इससे हमें फायदा ही होगा।

'हाँ।' पवेल ने, मा की तरफ देखते हुए कहा।

'अब हमारे लिए सभी चीजें भिन्न हैं।' मा बोली—दुःख भी भिन्न है और सुख भी भिन्न है। मेरी तो कुछ समझ मे नहीं आता। न मालूम मैं कैसे जिन्दा हूँ। मेरे जो कुछ हृदय मे उठता है, वह मैं बता नहीं पाती।

'ऐसा ही होगा, अम्माँ।' लिटिल रूसी ने कहा—क्योंकि हमारा सभी का अब एक नया हृदय बन रहा है। हमारे जीवन में एक नई आत्मा प्रवेश कर रही है। सभी के हृदय अभी तक सांसारिक हित-संग्राम की मार से जख्मी थे। सभी लोभ से अन्धे हो रहे थे और ईर्ष्या से जले जाते थे। आपस के झगड़ों, गन्दगी, झूठ और कायरता से सभी निकम्मे हो रहे थे। बीमार थे और जिन्दगी से डरते थे। अन्धों की तरह हाथ पसारे हुए इधर-उधर घूमते थे। हर एक को सिर्फ अपनी ही दाढ़ के दर्द का पता था। मगर अब वे आँखें खोलकर देखते हैं। एक मनुष्य आकर उनके जीवन को बुद्धि के प्रकाश से उज्ज्वल करता है, और उनसे पुकारकर कहता है—ओ भूली हुई भेड़ों, अब समय आ गया है, समझीं! तुम्हारा सबका हित एक है, क्योंकि तुम सभी जिन्दा रहना चाहते हो, तुम सभी उन्नति चाहते हो। यह मनुष्य अकेला होता है। अस्तु, वह जोर से चिल्लाकर लोगों को अपनी तरफ बुलाता है। उसे एकान्त शुष्क और ठण्डा लगता है। वह उसे काटने दौड़ता है। इसलिए वह अपने बन्धुओं को चिल्ला-चिल्लाकर बुलाता है, और वीर-हृदय दौड़-दौड़कर आते हैं और उससे मिलते हैं। और उसके हृदय से अपने हृदय मिलाकर एक विशाल और शक्तिशाली हृदय बनाते हैं, जिसमे से एक चाँदी की सुन्दर घण्टी की-सी टनटनाती हुई आवाज आती है—दुनिया-भर के मनुष्य एक हैं! जीवन की नींव प्रेम पर है, घृणा पर नहीं। दुनिया के लोगो! मिलकर अपना एक कुटुम्ब बनाओ! मुझे तो यह आवाज अब दुनिया-भर मे गूँजती हुई लगती है।

'हाँ, मुझे भी लगती है।' पवेल बोला।

मा ने अपने होठ दाँतों से दबा लिये, जिससे उनका काँपना रुक जाय और आँखें जोर से बन्द कर लीं, जिससे कि आँसू बाहर न निकल जायें।

'रात को जब मैं सोने लेटता हूँ या अकेले टहलने जाता हूँ, तब भी मैं यही आवाज सुनता हूँ। हर तरफ से मेरे कानों में यही आवाज आती है और मेरा हृदय आनन्द से नाचता है। और पृथ्वी भी—मुझे लगता है—अन्याय और दुःख के भार से उकताकर इस घण्टी की प्रतिध्वनि टंकारती है और हिल-हिलकर, मनुष्यों के हृदय मे होनेवाले इस नये सूर्य का आवाहन करती है।'

पवेल उठकर खड़ा हो गया और अपना हाथ ऊँचा उठाकर कुछ कहना ही चाहता था कि मा ने उसको दूसरे हाथ से खींचकर नीचे बिठा दिया और उसके कान में धीरे से कहा—ऐन्ड्री की बात काटकर कुछ न कहो।

'पता है!' लिटिल रूसी ने द्वार पर खड़े होते हुए कहा और उसकी आँखों में जगमगाती हुई ज्योति की एक आत्मा-सी जल उठी—अभी लोगों को बड़े दुःख झेलने पड़ेंगे। लोभियों के हाथों उनके रक्त की नदियाँ बहेंगी; परन्तु यह सब—मेरे सारे कष्ट और मेरा सारा रक्त, उस उज्ज्वल भविष्य के लिए मैं एक साधारण मूल्य समझता हूँ। इस मूल्य को देकर मैं गरीब नहीं हो जाऊँगा, क्योंकि मैं प्रकृति से अमीर उत्पन्न हुआ हूँ—मैं उस नक्षत्र की तरह अमीर हूँ, जो अपनी सुनहरी और रुपहली किरणों के कारण अमीर होता है। मैं सारे कष्ट झेलने को तैयार हूँ, क्योंकि मेरी अन्तरात्मा के आनन्द को कोई कष्ट दबा नहीं सकता। मेरे इस आनन्द से शक्ति की एक धारा बहती है, जिसमें मैं दुनिया को बहा ले जाऊँगा। मैं सब कुछ सह लूँगा, क्योंकि मेरे अन्तर मे एक आनन्द उमड़ रहा है, जिसको कोई मनुष्य, कोई चीज दबा नहीं सकती। इस आनन्द में शक्ति का एक महासागर है, शक्ति की एक पूरी दुनिया है।

फिर मेज पर बैठकर आधी रात तक चाय पीते हुए वे इसी प्रकार आपस में दिल खोलकर आनेवाले जीवन की बातें करते रहे।

———

सोलहवाँ परिच्छेद

जब कोई विचार मा की समझ मे साफ तौर पर आ जाता था तब वह उसका मिलान अपने जड़वत् गँवारू जीवन के किसी अनुभव से करने लगती थी। अस्तु, आज जो उसके दिल की हालत हो रही थी, वह उसे वैसी ही लग रही थी जैसी उस दिन हुई थी जब कि उसके बाप ने रूखे स्वर में उससे कहा था—अरी, क्यों इतना मुँह बिगाड़ती है! वह मूर्ख तुझसे विवाह करना चाहता है तो कर ले उससे विवाह! छोकरियों का विवाह एक दिन होना ही है! फिर उनके लड़के बच्चे भी होने ही है! और लड़के-बच्चों को माता-पिता का भार भी होना ही है!

अपने बाप के इन शब्दों को सुनकर उसे उस समय अपने सामने एक ऐसा अनिवार्य-सा मार्ग दिखाई देने लगा, जो अन्धकार मे होता हुआ किसी मरुस्थल की ओर जाता-सा लगता था। ऐसी ही परिस्थिति उसके मन की इस समय भी हो रही थी। एक भावी और अनिवार्य-सी आपत्ति की आशा करती हुई वह मन-ही-मन अदृश्य प्राणियों से बातें कर रही थी, और इससे उसकी मूक-वेदना जो रस्सी की तरह उसके हृदय को मरोड़ती थी, कुछ कम होती थी।

दूसरे दिन सवेरे, पवेल और ऐन्ड्री के काम पर चले जाने के बाद कोरसुनोवा घबराई हुई दौड़ती आई और जल्दी-जल्दी द्वार खटखटाकर मा को पुकारने लगी—इसाय का खून हो गया। आओ, जल्दी आओ।

मा काँप गई। इसाय के हत्यारे का नाम उसके दिमाग मे बिजली की तरह कौंध उठा।

'किसने उसका खून किया!' मा ने शाल ओढ़ते हुए पूछा।

'खून करनेवाला इसाय की लाश के पास बैठकर रोता थोड़े ही रहेगा! मारकर भाग भी गया।'

सड़क पर चलते-चलते मेरया मा से कहने लगी—अब फिर पुलिस चारों ओर ढूँढ़-खोज शुरू करेगी। हत्यारे की तलाश करेगी। अच्छी बात है, तुम्हारे आदमी कल रात को घर पर ही थे। मैं गवाही दे सकती हूँ। मैं आधी रात के बाद उधर से जा रही थी। उस समय मैंने खिड़की में झाँककर देखा तो तुम लोग सब मेज पर बैठे थे।

'कैसी बातें करती हो मेरया!'

'तुम्हारे आदमियों में से अवश्य किसी ने मारा होगा।' मेरया इस प्रकार बोली, मानों यह बात मानी हुई-सी थी—सभी जानते हैं कि वह तुम्हारे आदमियों की मुखबिरी करता था।

यह सुनकर मा का दम एकाएक घुटने लगा। वह अपने सीने पर हाथ रखकर जरा दम लेने के लिए ठिठकी।

'उधर क्यों जाती हो? डरो मत। जिसने खून किया होगा वह अपने किये का फल चखेगा। चलो, जल्दी चलें। नहीं तो लाश उठा ले आयँगे।'

मा बिना सोचे-विचारे चली जा रही थी और व्यसोवश्चिकोव का ध्यान रह-रहकर उसे आ रहा था।

'उसी ने मारा है।' यही एक खयाल उसके दिमाग में चक्कर लगा रहा था।

कारखाने से कुछ दूर, हाल ही में जल जानेवाली एक इमारत की जमीन पर लोगों की भीड लग रही थी। वे कोयले के ढेरों पर चढ़ते हुए अपने पैरों से राख उड़ा रहे थे और मक्खियों के झुण्डों की तरह एकत्र होते हुए भिनभिना रहे थे। भीड़ में बहुत-सी स्त्रियाँ भी थीं, और स्त्रियों से अधिक बच्चे थे। खोंचेवालों, खानसामों और पुलिस के अतिरिक्त पुलिस का दारोगा पैटलिन भी वहाँ मौजूद था, जिसकी रुपहली ऊनी दाढ़ी उसकी छाती पर पड़ी हुई लहलहा रही थी, और जिसके सीने पर बहुत-से तमगे लटक रहे थे।

इसाय की लाश जमीन पर औंधी पड़ी थी। उसकी पीठ जली हुई चौखट से सटी थी और उसका नंगा सिर दाहिने कन्धे की तरफ झुका था। उसका दाहिना हाथ पतलून की जेब में था और बाँये हाथ की उँगलियाँ मुट्ठी में धूल को जोर से पकड़े हुए थीं।

मा ने इसाय के चेहरे की ओर देखा। उसकी आँखें आधी खुली हुई, निस्तेज उसके चिरे हुए पैरों के बीच में पड़े हुए टोप को घूर रही थीं। उसका मुँह आश्चर्य से खुला था और उसका सिकुड़ा हुआ छोटा शरीर और उसका नुकीली हड्डियों का चेहरा आराम-सा कर रहा था। मा ने आकाश की तरफ देखकर एक गहरी साँस ली। जब तक वह जीता था, तब तक मा को उसके प्रति घृणा थी, परन्तु आज मा के हृदय में उसके लिए दया आ रही थी।

'कहीं खून नहीं है।' किसी ने धीरे से कहा—भीतरी मार से मारा है।

एक हट्टी-कट्टी औरत दारोगा का हाथ झटककर बोली—देखो, शायद उसमें अभी कुछ जान हो!

'हट, भाग यहाँ से!' दारोगा हाथ छुड़ाकर उस पर चिल्लाया।

'डाक्टर अभी आया था। उसने देख लिया है।'

'खतम हो चुका है।' किसी ने उस औरत से कहा।

एक व्यंग्य से भरी, जली आवाज आई—चलो, एक देश-द्रोही का मुँह बन्द हुआ! किये का ठीक ही फल मिला।

दारोगा ने जल्दी से अपने चारों ओर घिरी हुई औरतों को धक्का देकर हटाया और धमकाते हुए जोर से चिल्लाकर पूछा—यह कौन थी, जिसने ये शब्द कहे!

उसके धक्का देते ही लोग बिखर गये थे। बहुत-से तो फौरन ही भागने लग गये थे। भीड़ में किसी ने व्यंग्यपूर्ण विनोद से एक ठट्ठा लगाया।

मा कुछ देर बाद घर लौट आई ।

'किसी को भी इसाय की मृत्यु पर अफसोस नहीं है ।' वह सोचती । निकोले की विशाल मूर्ति बार-बार छाया की भाँति उसकी आँखों में आ रही थी—उसकी छोटी-छोटी आँखें आज उसे क्रूर और ठण्डी लगती थीं और वह अपना दाहिना हाथ इस प्रकार उमेठता था, मानों उसमें चोट आ गई हो ।

जब पवेल और एन्ड्री खाना खाने के लिए घर आये तो पहिला प्रश्न मा ने उससे यह पूछा—क्यों ? इसाय के खून के लिए उन्होंने किसी को पकड़ा है ?

'हमने इस सम्बन्ध में कुछ नहीं सुना ।' लिटिल रूसी ने उत्तर दिया ।

मा ने देखा कि वे दोनों दुखी और चिढ़े हुए थे ।

'निकोले का नाम तो कोई नहीं लेता ?' मा ने धीरे से पूछा ।

पवेल ने अपनी गम्भीर आँखें गड़ाकर मा की तरफ घूरा और साफ स्वर में बोला—नहीं, उसका कोई जिक्र नहीं है । उसका तो इस सम्बन्ध में कोई विचार तक नहीं करता । वह आज गाँव में था भी नहीं । कल वह नदी की तरफ गया था और तब से अभी तक वापिस नहीं आया है । मैंने उसकी तलाश भी की थी ।

'भगवान की कृपा है ।' मा ने दिल हल्का करते हुए एक साँस लेकर कहा—भगवान की कृपा है ।

लिटिल रूसी ने मा की तरफ देखा और सिर झुका लिया ।

'इसाय मरा पड़ा है ।' मा सोचने लगी—और इस प्रकार देख रहा है, मानों बेचारा भौंचक्का रह गया हो । कैसी उसके चेहरे की आकृति हो गई है, परन्तु कोई उस पर दया नहीं खाता । न कोई उसके लिए एक अच्छा शब्द कहता है । कैसा छोटा और अभागी सूरत का मनुष्य था । टूटा हुआ मिट्टी का खपरा जैसा पड़ा है, मानों वह किसी चीज पर फिसलकर गिरा हो और टूट गया हो ।

खाना खाते-खाते पवेल ने चम्मच रख दिया और बोला—यही मेरी समझ में नहीं आता ।

'क्या ?' लिटिल रूसी ने पूछा, जो अभी तक चुपचाप मेज पर उदास बैठा था ।

'किसी को भी अपने हित के लिए मारना बुरा है । हिंसक पशुओं को तो मारना मैं समझ सकता हूँ । मैं समझता हूँ कि मैं स्वयं भी एक ऐसे आदमी को जान से मार सकता हूँ जो हिंसक पशु की तरह समाज का भक्षण कर रहा हो । मगर एक ऐसे घृणित, दरिद्र जीव पर हाथ उठाना, यह मैं नहीं समझ सकता ।'

लिटिल रूसी ने कन्धे मटकाकर कहा—वह भी किसी हिंसक जन्तु से कम नहीं था ।

'मैं जानता हूँ ।'

'मच्छर को तो जरा-सा खून चूसने ही के लिए मार डालते हैं ।' लिटिल रूसी धीमी आवाज में बोला ।

'हाँ, हाँ, उसके बारे में मैं कुछ नहीं कह रहा था। मेरे कहने का केवल इतना ही अर्थ था कि यह हुआ बड़ा घृणित काम।'

'क्या!' ऐन्ड्री ने फिर कन्धे मटकाकर पूछा।

देर तक सोचने के बाद पवेल बोला—क्या तुम इस प्रकार के आदमी को मार सकते हो!

लिटिल रूसी ने अपनी गोल-गोल आँखों से उसकी तरफ देखा। मा की तरफ एक दृष्टि डाली और उदास होकर, परन्तु दृढ़ता से कहा—अपने हित के लिए तो मैं किसी को नहीं छूऊँगा। परन्तु बन्धुओं के लिए और कार्य के लिए मैं सब कुछ कर सकता हूँ। मैं मार भी सकता हूँ। अपने हाथों से अपने लड़के को भी मार सकता हूँ।

'ऐ ऐण्ड्री!' मा चौंककर बोली।

वह मुस्कराता हुआ बोला—क्या करें! हमारा जीवन ऐसा ही है।

'हॉ...ाँ!' पवेल बोला—हमारा जीवन ही ऐसा है!

एकाएक जोश में भरकर, मानों किसी आन्तरिक शक्ति का आदेश सुनकर ऐन्ड्री उठा और अपने हाथ हिलाता हुआ बोला—और रास्ता ही क्या है! हमको कभी-कभी किसी से घृणा भी करनी पड़ती है जिससे कि हम वह समय शीघ्र ही ला सकें जब सभी एक-दूसरे से हिल-मिलकर रहते होंगे। इस आनेवाले जीवन के मार्ग में जो बाधा बनते हैं, जो धन के लिए मनुष्यों को इसलिए बेचने का प्रयत्न करते हैं कि स्वयं आराम और इज्जत से रह सकें, उनको नष्ट ही कर डालना चाहिए! अगर कोई दगाबाज सच्चे आदमियों के मार्ग मे आता है और उनको दगा देने की घात मे रहता है, तो उसको नष्ट न करना दगाबाजी को प्रोत्साहित करना है। तुम कहते हो, यह पाप है! अच्छा, तो क्या इन जीवन के मालिकों को सिपाही, जल्लाद, जेलखाने, कालापानी इत्यादि सभी भयंकर हथियार हमारे विरुद्ध रखने का अधिकार है, जिनके बल पर वे चैन और आराम की जिन्दगी बिताते हैं! अगर कभी-कभी उनकी लाठी मेरे हाथों मे भी आ जाय तो मैं उसका इस्तेमाल न करूँ? क्यों न करूँ! मैं मैदान से भागनेवाला नहीं हूँ। वे हमें सैकड़ों और हजारों की संख्या मे मारते हैं। मैं भी अपने दुश्मनों मे से कम-से-कम उसको तो पकड़कर मार डालने का अधिकार रखता ही हूँ जो मेरे जीवन के सबसे निकट आता है और उसमें बाधक होता है। यह बिलकुल न्याय की बात है! मगर न्याय को थोड़ी देर के लिए दूर रखिए। न्याय की इस सम्बन्ध मे आवश्यकता नहीं है। मैं मानता हूँ, ऐसे खून से कोई परिणाम नहीं निकलता। मैं जानता हूँ, ऐसा करना व्यर्थ है, बिलकुल व्यर्थ है। सत्य की खेती उसी पृथ्वी पर लहलहाती है, जिस पर हमारा अपना रक्त बरस चुकता है। हमारे जालिमों का गन्दा रक्त उस पवित्र भूमि पर व्यर्थ जाता है। उसका वहाँ बाद मे कोई चिह्न भी नहीं मिलता। मै यह सब कुछ समझता हूँ। मगर फिर भी मैं ऐसा पाप अपने सिर पर लेने को तैयार हो सकता हूँ। अगर मैं आवश्यकता समझूँ तो खून भी कर सकता हूँ। मगर मैं यह बात केवल अपने लिए ही कहता हूँ। मेरा

अपराध मेरे साथ खतम हो जायगा। वह भविष्य पर धब्बा बनकर नहीं रहेगा और न वह किसी दूसरे का मुँह काला करेगा। उससे सिर्फ मेरा ही मुँह काला होगा।

फिर अपने सामने इस प्रकार हाथ हिलाता हुआ, मानों वह किसी चीज को अपने मार्ग में से काटकर हटा रहा हो, कमरे में इधर से उधर टहलने लगा।

मा ने उसकी ओर दुःख और भय से देखा। उसे लगा कि लिटिल रूसी के हृदय पर कोई बड़ी चोट लगी है, जिससे उसे इतना दुःख हो रहा है। हत्या-सम्बन्धी भयावने विचार उसके हृदय से जाते रहे। क्योंकि उसने सोचा कि अगर व्यसोवशचिकोव ने इसाय को नहीं मारा तो फिर पवेल के बन्धुओं में से दूसरा कोई उसे नहीं मार सकता। पवेल सिर झुकाये हुए लिटिल रूसी की बातें सुन रहा था। ऐन्ड्री जोर-जोर से कह रहा था—आगे बढ़ने के लिए कभी-कभी हमें पीछे की तरफ भी लौटना पड़ता है। इस मार्ग में हमें सब कुछ दे डालने के लिए तैयार रहना चाहिए। जीवन दे देना या काम के लिए जान दे देना तो आसान है। इससे भी अधिक देने के लिए तैयार रहना चाहिए। जीवन से भी जो प्रिय है, उसे देकर देखो कि सत्य कैसा दिन-दूना और रात-चौगुना फैलता है!

यह कहता हुआ वह कमरे के बीच में ठहर गया। उसका चेहरा एकाएक पीला पड़ गया और उसकी आँखें मिचने लगीं। उसने अपने हाथ ऊपर उठाये और उन्हें हिलाता हुआ श्रद्धा, दृढ़ता और गम्भीरता से धीमे स्वर में कहने लगा—मैं जानता हूँ, एक दिन आयेगा जब सब लोग एक-दूसरे से हिल-मिलकर रहेंगे—जैसे आकाश में तारे रहते हैं; जब एक को दूसरे की बातें संगीत की तरह मधुर लगेंगी; जब सभी मनुष्य स्वतन्त्र होंगे और अपनी-अपनी स्वतन्त्रता में महान होंगे। सब निर्भीक होकर घूमेंगे। किसी हृदय में ईर्ष्या और लोभ न होगा, जिससे मनुष्य-समाज में कोई द्वेष-भाव न होगा, बुद्धि और हृदय के बीच में कोई अड़चन न होगी। उस समय जीवन का एकमात्र उद्देश्य मनुष्य-मात्र की सेवा होगा, जिससे मनुष्य-समाज बहुत उच्च-कोटि का हो जायगा; क्योंकि स्व-तंत्र मनुष्य उच्च-से-उच्च कोटि प्राप्त कर सकता है। तब हमारा जीवन सत्य, स्वतन्त्रता और सौन्दर्य से पूर्ण होगा। वही लोग इस दुनिया में अच्छे समझे जायगे जो अपने हृदय को विस्तृत करके दुनिया-भर को प्रेम कर सकेंगे। जिनके हृदय में जितना ही अधिक प्रेम होगा और जिनकी बुद्धि जितनी ही अधिक स्वतन्त्र होगी, उतने ही वे श्रेष्ठ समझे जायँगे; क्योंकि उनके जीवन में सौन्दर्य होगा। जो लोग इस जीवन को व्यतीत करेंगे वे महान होंगे।

इतना कहकर वह चुप हो गया और सीधा होकर खड़ा हो गया। फिर घड़ी के लटकन की तरह अपने शरीर को हिलाता हुआ वह एक ऐसे गूँजते हुए स्वर में बोला, जो उसकी अन्तरात्मा से आ रहा था—

'मैं उस जीवन के लिए सब कुछ करने को तैयार हूँ। आवश्यकता होगी तो अपना कलेजा चीरकर बाहर रख दूँगा और उसे अपने पैरों से कुचल भी डालूँगा।'

उसके चेहरे पर कँपकँपी आ गई। उत्तेजना से उसकी आकृति कठोर हो गई और दो लम्बे-लम्बे आँसू गालों पर होते हुए नीचे ढुलक पड़े।

पवेल ने अपना मुँह, जो पीला हो गया था, ऊपर उठाया और आँखें फाड़कर लिटिल रूसी की तरफ देखा। मा को लगा कि कोई खास बात होनेवाली है। अस्तु, वह भी सिर उठाकर देखने लगी।

'ऐन्ड्री, तुम्हें क्या हो गया है?' पवेल ने कोमल स्वर में पूछा।

लिटिल रूसी ने सिर हिलाया और अपने शरीर को तम्बूरे के तार की तरह तानकर सीधा किया और फिर मा की तरफ देखता हुआ बोला—इसाय को मैंने मारा है!

मा उठकर खड़ी हो गई। जल्दी से दौड़कर उसके पास गई और अपने काँपते हुए हाथों से उसके दोनों हाथ पकड़ लिये। ऐन्ड्री ने अपना दाहिना हाथ छुड़ाने का प्रयत्न किया। परन्तु मा ने उसे जकड़कर पकड़ लिया था। वह आवेश मे भरकर चिल्लाई—मेरे प्यारे बेटे! चुप हो, चुप हो! कुछ नहीं हुआ है। कुछ भी नहीं। कुछ नहीं, पाशा! ऐन्ड्री बेटा! हाय! कैसा आफत का पहाड़ मुझ पर टूटा है! मेरे प्यारे! मेरे हृदय के टुकड़े!

'ठहरो मा!' लिटिल रूसी फटी हुई आवाज से बोला—मैं बताता हूँ, क्या हुआ।

'रहने दो!' उसकी ओर देखकर वह रोती हुई बोली—रहने दो, ऐन्ड्री! हमारा दोष नहीं है। भगवान की यही इच्छा होगी।

पवेल भी धीरे-धीरे बन्धु के पास आया और भीगी हुई आँखों से उसकी तरफ देखने लगा। पवेल का चेहरा एकदम पीला हो गया था। उसके होंठ काँप रहे थे। वह विचित्र प्रकार से मुस्कराता हुआ धीमे और कोमल स्वर मे कहने लगा—लाओ ऐन्ड्री अपना हाथ दो। मैं तुमसे हाथ मिलाना चाहता हूँ। सच कहता हूँ। मैं समझता हूँ, तुम्हे कितनी कठिनाई हो रही है।

'ठहरो!' लिटिल रूसी उसकी तरफ न देखकर सिर हिलाता हुआ, अपने हाथ छुड़ाने का प्रयत्न करता हुआ बोला, परन्तु मा से हाथ छुड़ा लेने पर पवेल ने उसका हाथ पकड़ लिया और स्नेह से उसे दबाते हुए अपनी तरफ खींचा।

'तुम कहते हो कि तुमने उसे मारा?' मा बोली—नहीं, तुमने हर्गिज नहीं मारा मैंने तुम्हे अपनी आँखों से भी उसे मारते देखा होता तो भी मैं विश्वास न करती।

'ठहरो, ऐन्ड्री! मा ठीक ही कहती है। यह तुम्हारे बिलकुल निश्चय के बाहर की बात थी।'

एक हाथ से ऐन्ड्री का दाहिना हाथ दबाते हुए पवेल ने अपना दूसरा हाथ उसके कन्धे पर रखा, मानों वह उसके लम्बे शरीर में होनेवाले कम्पन को रोकने का प्रयत्न कर रहा था। लिटिल रूसी ने उसकी तरफ सिर झुका दिया और टूटी हुई आवाज मे बोला—मेरा ऐसा करने का सचमुच जरा भी इरादा नहीं था। तुम तो जानते ही हो पवेल! तुम आगे चले गये और मैं इवान गसेव के साथ बातें करता पीछे रह गया

इतने में इसाय एक कोने से मुड़कर आया और खड़ा होकर हमारी तरफ देखने और मुस्कराने लगा। इवान तो अपने घर चला गया और मैं कारखाने की तरफ चला। इसाय मेरे साथ-साथ बाजू में था। इतना कहकर ऐन्ड्री रुका। उसने एक गहरी साँस ली और फिर कहने लगा—किसी ने आज तक मेरा ऐसा अपमान नहीं किया था जैसा उस कुत्ते ने किया!

मा ने लिटिल रूसी का हाथ पकड़कर मेज की तरफ खींचा और उसको झकझोरा। अन्त में जबर्दस्ती उसे कुर्सी पर बिठाकर खुद भी वह उसी के पास उसके कन्धे मे कन्धा सटाकर बैठ गई। पवेल सामने ऐन्ड्री का हाथ अपने हाथ में लिये स्नेह से उसे दबाता हुआ खड़ा।

'मैं समझता हूँ, तुम्हारे लिए वह बड़ा असह्य हो गया होगा।'

वह बोला—वह मुझसे कहने लगा—पुलिस को सबका पता है। सबका नाम उनकी किताब मे है। पहली मई से पहले ही सब जेल में ठूँस दिये जायँगे। मैंने उसे कोई उत्तर नहीं दिया। मैं सिर्फ हँस दिया। परन्तु मेरा खून उबल रहा था। वह फिर मुझसे कहने लगा—तुम तो होशियार आदमी हो। तुम्हें इस चक्कर मे नही पड़ना चाहिए। तुम्हें तो चाहिऐ कि...

इतना कहकर लिटिल रूसी चुप हो गया। दाहिने हाथ से अपना मुँह पोंछते हुए वह चुपचाप सिर हिलाने लगा और एक विचित्र सूखी चमक उसकी आँखों में चमक उठी।

'मैं समझ गया!' पवेल बोला।

'हाँ', लिटिल रूसी फिर कहने लगा—उसने कहा कि मुझे तो चाहिए कि सरकार की सहायता करूँ। लिटिल रूसी ने आवेश से हाथ हिलाकर हवा मे मुक्का घुमाते हुए कहा—सरकार! भाड़ मे जाय यह सरकार! और फिर वह दाँतों मे से साँप की तरह फुफकारा—अगर उसने मुझसे यह कहने के बजाय मेरे मुँह पर तमाचा भी मारा होता तो बेहतर होता। मेरे लिए उसका तमाचा सह लेना आसान होता और शायद उसके लिए भी वह बेहतर साबित हुआ होता। मगर जब उसने अपनी गन्दगी मेरे हृदय मे उँडेलने का प्रयत्न किया तो मैं सहन न कर सका।

ऐन्ड्री ने पवेल के हाथ से अपना हाथ छुड़ा लिया और घृणापूर्ण चेहरे से भरी हुई आवाज में बोला—मैंने उसको घुमाकर इस तरह एक तिरछा नीचा हाथ जमाया और वहाँ से चल दिया। मैंने मुड़कर भी फिर उसकी तरफ नहीं देखा। उसके गिरने की आवाज मैंने जरूर सुना, मगर वह गिरकर चुप हो गया। मुझे इस बात का गुमान भी न हुआ कि उसके इतनी चोट लग गई होगी। मैं चुपचाप, ठण्डे दिल से इस प्रकार चला गया था, मानों मैंने केवल एक मेंढक को अपने मार्ग मे से ठुकराकर हटा देने से अधिक और कुछ नहीं किया था। मगर फिर! अरे राम! उधर मैंने काम शुरू किया और इधर लोगों ने चिल्लाना शुरू किया—'इसाय का खून हो गया!' हाथ में मेरे कोई चोट नहीं आई थी; मगर मुझे ऐसा लगा, मानों वह एकदम छोटा हो गया था।

यह कहकर उसने एक तिरछी नजर से अपना हाथ देखा और बोला—जिन्दगी-भर अब यह धब्बा मेरे हाथों पर रहेगा।

'दिल साफ चाहिए, बेटा!' मा ने कोमल स्वर में बिलखकर कहा।

'मैं अपने-आपको अपराधी नहीं मानता हूँ। नहीं, हरगिज नहीं!' लिटिल रूसी ने दृढ़ता से कहा—परन्तु मुझसे यह घृणित काम हुआ है। मुझे अपने अन्तर में यह गन्दगी रखकर फिरने मे घृणा आती है। मुझे इसकी आवश्यकता नहीं थी। बिलकुल आवश्यकता नहीं थी।

'अच्छा, अब तुम्हारा क्या इरादा है?' पवेल ने उसको सन्देह की दृष्टि से देखते हुए पूछा।

'मेरा क्या इरादा है?' लिटिल रूसी ने विचारते हुए सिर झुकाकर दोहराया। फिर सिर उठाकर उसने मुस्कराते हुए कहा—मैं यह इकरार करने से तो नहीं डरता कि मैंने उसे मारा; मगर मुझे शरम आयगी। मुझे इस तुच्छ अपराध के लिए जेल जाने में शरम आयगी। परन्तु कोई और इस हत्या के लिए पकड़ा गया तो मैं अवश्य जाकर अपना अपराध स्वीकार कर लूँगा। वरना अपने-आप इकरार करने तो मैं जाऊँगा नहीं—नहीं, अपने-आप तो मैं नहीं जा सकता।

वह हाथ हिलाता हुआ उठा और कहने लगा—नहीं, मैं नहीं जा सकता। मुझे शरम आती है।

इतने मे कारखाने का भोंपा बजा। लिटिल रूसी ने एक ओर को सिरझुकाकर भोंपे की तीक्ष्ण आवाज सुनी और अपना शरीर हिलाता हुआ बोला—मैं आज काम पर नहीं जाऊँगा।

'न मै जाऊँगा!' पवेल बोला।

'मैं हम्माम मे नहाने जाता हूँ।' लिटिल रूसी मुस्कराता हुआ बोला—और फिर चुपचाप तैयार होकर वह क्रोधित और उदास हम्माम चला गया।

मा स्नेह-पूर्ण दृष्टि से उसे ताक रही थी। उसके चले जाने पर वह पवेल से कहने लगी—कुछ भी कहो, पाशा! मुझे उसके कहने पर भी विश्वास नहीं होता। और अगर मुझे विश्वास भी हो जाय तो भी मैं उसे दोषी नहीं ठहरा सकती। मैं मानती हूँ कि आदमी का खून करना पाप है, मैं ईश्वर में और ईसा मे विश्वास रखती हूँ; परन्तु फिर भी मैं यह नहीं मान सकती कि ऐन्ड्री अपराधी है। मुझे इसाय के लिए बहुत दुःख है। कैसा छोटा आदमी था। बेचारा भौंचक्का जमीन पर पड़ा था। मैंने उसे देखा तो मैं सोचने लगी कि उसने तुम्हें फाँसी पर लटकवा देने की हिम्मत कैसे की थी! मुझे उसके मारे जाने पर न तो घृणा ही हुई और न हर्ष। दुःख जरूर हुआ। परन्तु अब यह जान लेने पर कि किसके हाथों उसकी जान गई, मुझे उसके लिए वह दुःख भी नहीं रहा है।

इतना कहकर वह एकाएक चुप हो गई। कुछ देर विचार करने के बाद

वह फिर आश्चर्य से मुस्कराती हुई बोली—हे भगवान ! पाशा, सुना, मैं क्या कह रही थी !

पवेल ने कुछ नहीं सुना था। सिर झुकाये हुए चुपचाप कमरे में इधर से उधर टहलता हुआ वह सोचता-सोचता उकताकर बोला—ऐन्ड्री अपने-आपको क्षमा नहीं करेगा और किया भी तो शीघ्र ही नहीं करेगा। तुम्हारे करने के लिए बहुत काम है अम्माँ ! देखती हो, लोगों का एक-दूसरे से दुनिया में कितना सम्बन्ध है ! इच्छा न होते हुए भी हत्या तक करनी पड़ती है। और किसको मारना पड़ता है, ऐसे एक तुच्छ जीव को जो हमसे भी अधिक अभागा था, क्योंकि वह मूर्ख था। पुलिस, जासूस यह सब हमारे शत्रु जरूर हैं; परन्तु फिर भी वे हमारे-तुम्हारे जैसे ही आदमी हैं। उनका खून भी उसी तरह चूसा जाता है, जैसे हमारा। उनकी भी उसी तरह मनुष्यों में गिनती नहीं की जाती, जिस तरह हमारी नहीं की जाती। सबका एक-सा ही हाल है; परन्तु फिर भी लोगों का एक हिस्सा दूसरे हिस्से के विरुद्ध कर दिया गया है, क्योंकि उनको भय से अन्धा बना दिया गया है। इस प्रकार हाथ-पाँव बाँधकर उन्हे निचोड़ा जाता है, उनका खून चूसा जाता है। मनुष्यों को औजार बना दिया जाता है। उनका दिल पत्थर कर दिया जाता है, और इस तरीके का नाम रखा जाता है, सभ्यता और सरकार !

यह कहता हुआ वह चलकर मा के पास गया और दृढ़ता से कहने लगा—यह बराबर अपराध है अम्माँ ! लाखों मनुष्यों के मारने का और लाखों आत्माओं के नाश कर डालने का भयंकर अपराध ! समझती हो ! वे आत्मा ही को मार देते हैं। उनके और हमारे बीच में अन्तर देखती हो ! ऐन्ड्री ने बिना समझे एक मनुष्य को मार दिया, जिसके लिए उसे बड़ी ग्लानि है, लज्जा है, दुःख है। मुख्य बात यह है कि वह उस ग्लानि से मरा जा रहा है, परन्तु हमारे शासक, हमारे जीवन के विधाता, रोज शान्ति-पूर्वक, ठण्डे दिल से, निर्दयता-पूर्वक, हजारों का खून करते हैं और उनके हृदय में जरा-सी खटक भी नहीं होती। वे हँसते हुए दूसरों की जान लेते हैं। और क्यों ! सिर्फ इस-लिए वे दूसरों का गला घोटते हैं कि उनके घर का काठ-कबाड़ सुरक्षित बना रहे। उनकी मेज-कुर्सी, उनका चाँदी-सोना, उनकी दस्तावेजें इत्यादि जो उनको मनुष्यों के मालिक बनने में सहायक होती हैं, कायम रहें। सोचो तो अपनी आत्मा और शरीर की रक्षा के लिए वे लोगों की हत्या नहीं करते, बल्कि अपने धन-धाम को कायम रखने के लिए वे लोगों का खून करते हैं, और उनकी आत्माओं तक को हनते हैं। उन्हें अपने अन्तर की रक्षा की फिक्र नहीं होती, केवल बाह्य की ही फिक्र होती है।

पवेल ने झुककर मा के हाथ अपने हाथ में ले लिये और उन्हें हिलाता हुआ बोला—जिस दिन मा, तुम्हारी समझ में हमारे जीवन की जड़ता, गन्दगी, लज्जा और घृणा आ जायगी, उसी दिन तुम हमारा सत्य मार्ग भी समझ लोगी। तब तुम्हारी समझ में आयेगा कि हमारा सत्य कितना महान् और भव्य है !

मा आवेश में आकर उठी। उसके मन में आया कि अपने हृदय को अपने लड़के के हृदय में डुबा दे और दोनों हृदयों को मिलाकर उनसे एक जगमग ज्योति जगावे।

'ठहरो, पाशा, ठहरो!' वह हाँपती हुई बड़बड़ाई—मैं मनुष्य हूँ। मैं भी समझती हूँ। ठहरो।

इतने में ड्योढ़ी मे किसी के घुसने का जोर से आहट हुआ। दोनों चौंककर एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे।

'अगर ऐन्ड्री के लिए पुलिस आई हो तो!' पवेल ने झुककर मा के कान में कहा।

'तो मैं कहूँगी कि मै कुछ नहीं जानती!' मा ने पवेल के कान में उत्तर देते हुए कहा—हे भगवान!

———

सत्रहवाँ परिच्छेद

दरवाजा धीरे से खुला और उसमें प्रवेश करने के लिए झुकता हुआ राइबिन घुसा।

'मैं आ गया।' वह सिर उठाकर, मुस्कराता हुआ बोला।

वह एक छोटा बालों का ओवरकोट पहने था जिस पर बहुत-से तारकोल के धब्बे थे। काले-काले दस्तानों की एक जोड़ी कमर में उसकी पेटी में लटक रही थी और उसके सिर पर बालों की एक टोपी थी।

'अच्छे तो हो, पवेल ! तुम्हें छोड़ दिया ? कैसी हो, निलोवना ?'

'ओहो, तुम हो ? राइबिन, तुम भी आ गये ! बड़ा अच्छा हुआ !'

धीरे-धीरे ओवरकोट उतारता हुआ राइबिन बोला—हाँ, मैं आ गया। तुम लोग धीरे-धीरे सद्गृहस्थ बनते जा रहे हो, और मैं उसका बिलकुल उल्टा होता जा रहा हूँ। क्यों, है न ठीक ?

फिर अपने गले पर चढ़ी हुई कमीज को ठीक करता हुआ वह कमरे में से ध्यान-पूर्वक देखता हुआ निकला और कहने लगा—तुम्हारे घर मे सामान तो नहीं बढ़ा ; परन्तु किताबें बहुत बढ गई हैं। अच्छा, तो यही तुम्हारा सबसे कीमती समान है। सचमुच, पुस्तकें बड़ी प्रिय होती हैं। अच्छा, कहो तो तुम लोगों का हाल क्या है ?

'काम चला जा रहा है।'—पवेल ने कहा।

'हाँ ?' राइबिन बोला।

'जोत-जोतकर बो रहे है '

'ऊँचे-खाले मे सभी जगह !'

'डींग हाँकना आसान है।'

'फसल कब कटेगी ?'

'हम लोग पहली मई को श्रम-जीवियों का त्यौहार मनाने जा रहे हैं।'

'अच्छा, छुट्टी मनाने जा रहे हो ?'

'थोड़ी चाय पियोगे ?' मा ने राइबिन से पूछा।

'हाँ, चाय पियूँगा। एक-दो घूँट ताड़ी भी चढ़ा सकता हूँ; और अगर थोड़ा-सा खाना भी ले आओगी तो उसको भी खा लूँगा। तुम लोगों से मिलकर मे बड़ा खुश होता हूँ। सच कहता हूँ।'

'और तुम्हारी कैसी गुजरती है, माइकेल इवानोविश ?' पवेल ने राइबिन के सामने बैठते हुए पूछा।

'साधारणतः अच्छी गुजरती है। इडिलजिईब में मैं बस गया हूँ। तुमने इडिलजिईब का भी नाम सुना है ? अच्छा गाँव है। साल में वहाँ दो मेले होते हैं। दो हजार से

अधिक की बस्ती है। लोग वहाँ भी अच्छे नहीं हैं, जमीन की भी कमी है। सब पट्टों पर उठी हुई है और खराब है।'

'क्या तुम वहाँ के लोगों से चर्चा किया करते हो?' पवेल ने उत्साह में आकर पूछा।

'मैं मुँह बन्द करके कहीं नहीं रहता। तुम्हारे सब पर्चे मेरे पास हैं। मैं यहाँ से चौंतीस पर्चे लेता गया था, परन्तु आमतौर पर मैं प्रचार बाइबिल के द्वारा करता हूँ। उसमें से मुझे हर मौके के लिए कुछ मसाला मिल जाता है। बाइबिल काफी मोटी किताब है। सरकारी किताब भी है और धार्मिक-मण्डल की तरफ से प्रकाशित की गई है। अस्तु, उस पर विश्वास करना भी लोगों को आसान होता है।' उसने पवेल की तरफ आँख मारी और फिर हँसकर कहने लगा—परन्तु वह काफी नहीं है। अस्तु, मैं यहाँ तुम्हारे पर्चे और किताबें लेने आया हूँ। एफिम भी आया है। हम लोग गाड़ियों से तारकोल ढो रहे हैं। तुमसे मिलने के लिए इधर होकर निकल आये, परन्तु एफिम के आने से पहले ही मुझे किताबें दे दो। उसे बहुत बताने की जरूरत नहीं है।

'मा' पवेल बोला—जाकर कुछ किताबें ले आओ। कहना कि एक गाँव के लिए चाहिए, जिससे वे तुम्हें उचित साहित्य दे दें।

'अच्छा, सेमोवार अभी क्षण-भर में तैयार हो जायगा। उसके बाद मैं जाऊँगी।'

'तुम भी इस कार्य में घुस गईं, निलोवना!' राइबिन ने मुस्कराकर पूछा—बड़ा अच्छा किया! हमारे यहाँ किताबों के लिए बहुत-से उम्मेदवार उत्सुक रहते हैं। एक शिक्षक ने सबको उनका शौक लगा दिया है। है तो वह भी पढ़ा-लिखा, मगर लोग कहते हैं, अच्छा आदमी है। गाँव से सात कोस दूर एक शिक्षिका भी रहती है; मगर वहाँ लोग जब्त किताबें नहीं पढ़ते। सब कानून और सरकार से डरनेवाली भेड़ें हैं। वहे डरते हैं। मैं जब्तशुदा चुभती हुई, नुकीली, किताबें चाहता हूं, जो गाँववालों के हृदयों में घर कर लें, लोगों की उँगलियों की दराजों में होकर यह पुस्तकें मैं उनके हाथों में पहुँचा दूँगा। पुलिस या गाँव का पादरी इस साहित्य को जब देखेंगे तो वे यही समझेंगे कि शिक्षक लोग बांटते होंगे, और मैं मजे से बचा रहूँगा।

इतना कहकर अपनी कठोर व्यवहार-बुद्धि पर अपने-आप खुश होकर वह दाँत निकालने लगा।

'हाँ।' मा ने उसको देखते हुए सोचा—कैसा रीछ-सा दीखता है! कैसा बैल की तरह हिलता है!

'पवेल उठा और कमरे में टहलता हुआ असन्तोष से बोला—हम तुम्हें किताबें तो दे देंगे; मगर जो कुछ तुम करना चाहते हो वह ठीक नहीं है, माइखेल इवानोविश!

'क्यों ठीक नहीं है?' राइबिन ने आश्चर्य से आँखें फाड़कर पूछा।

'अपने कामों की जिम्मेदारी तुम्हें अपने ऊपर लेनी चाहिए। इस प्रकार काम करना ठीक नहीं है कि तुम्हारी करतूतों के लिए दूसरों को दुःख उठाना पड़े!' पवेल ने कठोर स्वर में उससे कहा।

राइविन नीचे की तरफ देखने लगा। फिर सिर हिलाकर बोला—मेरी समझ में तुम्हारी बात नहीं आई!

'अगर शिक्षकों पर संदेह होता है'—पवेल राइविन के सामने खड़ा होकर बोला—तो उनको जब्त साहित्य के बाँटने के अपराध में जेल मे डाल दिया जायगा। क्यों?

'हाँ, अच्छा तो क्या हुआ?'

'मगर साहित्य तो तुम बाँटते हो। वे नहीं। तुमको जेल जाना चाहिए।'

'तुम तो बडे अजीब आदमी हो!' राइविन ने मुस्कराते हुए अपने घुटनों पर हाथ मारकर कहा—मुझ मूढ़ किसान पर कौन इन बातों का संदेह करेगा? ऐसा कैसे हो सकता है? किताबें लिखना और पढ़ना तो शिक्षकों काम है। उन्हें उनके लिए उत्तर देना होगा।

मा को लगा कि पवेल राइविन को नहीं समझ रहा है, क्योंकि वह आँखे चढ़ा रहा था, जो उसके क्रोध का चिह्न था। अस्तु, वह नम्र स्वर में बोली—माइखेल इवानोविश इस प्रकार काम काम करना चाहता है कि यह तो काम करता रहे और दण्ड मिले दूसरों को!

'हाँ हाँ, ठीक समझीं!' राइविन दाढ़ी खुजलाता हुआ बोला।

'मा', पवेल ने रुखाई से पूछा—मान लो, हमारा कोई साथी, ऐन्ड्री ही, मेरे पीछे कोई काम करे और मैं उसके लिए जेल में डाला जाऊँ तो तुम्हें कैसा लगेगा?

मा चौंक पडी और घबराकर सिर हिलाती हुई बोली—नहीं-नहीं, एक बन्धु के प्रति दूसरा ऐसा नहीं कर सकता है।

'अच्छा, हाँ!' राइविन कहने लगा—अब मैं तुमको समझा, पवेल! और फिर मा की तरफ विनोद से आँखे मारता हुआ बोला—यह बारीक बात है अम्माँ! और फिर पवेल की तरफ मुड़कर उसे समझाता हुआ बोला—तुम्हारे विचार अभी इस विषय मे बड़े कच्चे हैं, भाई! गुप्त कार्य मे मान-अपमान नहीं होता। देखो, पहले तो वे उन्हीं को जेल मे डालेंगे जिनके पास किताबें निकलेंगी, शिक्षकों को नहीं। दूसरे ये शिक्षक लोगों को पढने के लिए केवल वे ही पुस्तकें देते हैं जो अभी तक जब्त नहीं हैं। यह तो तुम जानते ही हो कि उनमें भी वैसी ही बाते होती हैं जैसी हमारे जब्त साहित्य में होती हैं। केवल उनकी भाषा दूसरी होती है। सत्य तो गिने-चुने ही हैं। उनको चाहे जैसे कहो। मेरे कहने का मतलब यह है कि वे लोग भी वही चाहते हैं जो मैं करता हूँ। मगर वे गलियों में होकर जाते है और मैं सीधा राजपथ पर चलता हूँ। तीसरे, भाई, मुझे उनसे सरोकार ही क्या है? पैदल और घुड़सवार साथ-साथ कैसे सफर कर सकते हैं? अपने किसी किसान भाई के साथ शायद मैं भी ऐसा न करूँ। मगर यह लोग, एक शिक्षक और दूसरी एक जमींदार की छोकरी, यह लोगों के उद्धार की चिन्ता कैसे कर सकते हैं? यह मेरी समझ में नहीं आता। इन मास्टरों, इन बाबू लोगों के विचार मुझ जैसे किसान की समझ में नहीं घुसते। मैं जो कुछ स्वयं करता हूँ, वह तो मैं अच्छी

तरह समझता हूँ ; मगर यह लोग क्या करना चाहते हैं, वह मेरी समझ में नहीं आता। हजारों वर्षों से वे लगातार हमारे मालिक रहते आये हैं, और किसानों को चूसते और उनकी खाल खींचते आये हैं। एकाएक अब उन्हें किसानों की आँखें खोलने की चिन्ता क्यों हो गई है ! भाई, मैं पुराणों पर विश्वास नहीं करता और यह मुझे बिलकुल पुराणों की-सी बातें लगती हैं। अस्तु, मुझे उनमें विश्वास नहीं होता। इन लोगों का व्यवहार मुझे विचित्र लगता है। शरद् ऋतु मे यात्रा करते समय बहुत-से जीव सड़क पर सामने से जाते दीखते हैं। परन्तु वे क्या होते हैं—भेड़िया या लोमड़ी, या साधारण कुत्ते, कुछ भी समझ मे नहीं आता। ऐसे ही मुझे यह शिक्षित लोग दीखते हैं।

मा ने बेटे की तरफ देखा। पवेल के चेहरे पर उदासी थी।

राइबिन की आँखें चमक रही थीं। वह उँगलियों से अपनी दाढ़ी सुलझाता हुआ पवेल की तरफ देख रहा था। उसका भाव गम्भीर था और उसके चेहरे पर आवेश था।

'मेरे पास खेल के लिए समय नहीं है।' वह बोला—जीवन कठोर है। हम कुत्तों के घरों में रहते हैं, मुर्गियों के दर्बों मे नहीं, और कुत्तों का हर झुण्ड अपनी आदत के अनुसार दूसरे झुण्ड पर भूँकता है।

'कुछ बाबू लोग ऐसे भी तो हैं'—मा ने कुछ परिचित चेहरों को याद करते हुए कहा—जो गरीब लोगों के लिए जान देते हैं, उनके लिए जिन्दगी-भर जेल की यातनाएँ सहते हैं ?

'उनके विचार और कामों मे अन्तर होता है।' राइबिन बोला—किसान अमीर होने पर बोहरा बन जाता है और बोहरा गरीब हो जाने पर किसान बन जाता है। इच्छा से अथवा अनिच्छा से, जब गाँठ मे दाम ही नहीं होते तब आत्मा स्वच्छ रखनी ही पड़ती है। तुम्हें याद होगा, पवेल, तुमने मुझे समझाया था कि जो मनुष्य जैसा जीवन व्यतीत करता है, वैसे ही उसके विचार हो जाते हैं। अगर कामगार कहता है 'हाँ' तो मालिक कहेगा 'नहीं' और अगर कामगार कहेगा 'नहीं' तो मालिक को अपनी पशुवृत्ति के वश होकर कहना पड़ेगा 'हाँ'। दोनों के स्वभाव एक दूसरे के विरुद्ध हैं। किसान का एक अलग स्वभाव होता है और बोहरे, बाबू, मालिक का दूसरा। जब किसान को भरपेट रोटी मिलती है तब बोहरेजी और बाबूजी को रात को नींद आना कठिन हो जाता है। हाँ, द्रोही सभी जगह होते हैं। मैं सारे किसानों का पक्ष नहीं लेता।

राइबिन गम्भीरता से उठा। उसका चेहरा लाल हो गया था और उसकी दाढ़ी काँप रही थी। मानों वह भीतर-ही-भीतर दाँत पीस रहा था। फिर वह धीमी आवाज में कहने लगा—पाँच वर्ष तक मैं एक कारखाने से दूसरे कारखाने मे फिरा। सभी कारखानों की खाक छानता फिरा। गाँव से मेरा नाता टूट गया। जब मैं गाँव मे लौटकर गया और वहाँ की हालत देखी तब मुझको मालूम हुआ कि अब मुझे पहले की तरह वहाँ रहना असम्भव है। मैंने समझ लिया कि अब मैं वहाँ नहीं रह सकता। तुम यहाँ रहते हो। तुम्हें क्या पता, भूख कैसी होती है ! तुम्हें उसकी भयङ्करता का क्या पता ! परन्तु

वहाँ मनुष्यों के पीछे-पीछे भूत की तरह लगी फिरती है। उन्हें रोटी मिलने की कोई आशा नहीं होती। अस्तु, यह भूख उनकी आत्मा को ही खा जाती है। उनके मुँह पर से मनुष्यता के चिह्न नष्ट हो जाते हैं। वे जीते नहीं। भूख और आवश्यकताओं से धीरे-धीरे घुलते हैं। इस पर भी उनके चारों ओर सरकारी अफसर घिरे हुए कौओं की तरह ताक लगाये रहते हैं कि कहीं उनके पास कोई टुकड़ा बच तो नहीं गया है। एक-आध टुकड़ा जो रह जाता है, उसे भी वे मौका पाकर झपट ले जाते हैं, और ऊपर से उनके मुँह पर एक-दो धौल भी जमाते जाते हैं।

राइबिन ने चारों तरफ देखा और पवेल की तरफ झुकते हुए अपने हाथ मेज पर रखकर बोला—मैं गाँव का यह जीवन देखकर घबराया और परेशान हो गया। मैंने उससे मुँह मोड़ लेना चाहा; मगर न मोड़ सका। खैर, किसी तरह मैंने अपनी ग्लानि पर आखिरकार विजय पाई। 'छोकरापन है।' मैं कहने लगा—भावों के उद्वेग में नहीं बह जाना चाहिए! यहीं रहूँगा। मालिकों का पेट भरने के लिए रोटी नहीं कमाऊँगा, बल्कि ऐसी अच्छी खिचड़ी पकाऊँगा कि वे भी याद करें। अब मैं अपने हृदय में गरीबी का दर्द और एक आततायी की-सी घृणा दबाये फिरता हूँ। आम लोगों पर जो जुल्म हो रहे हैं, वे छुरियों की तरह मेरे हृदय में बराबर चुभते रहते हैं।

यह कहते-कहते उसके माथे पर पसीना झलक आया। उसने अपने कन्धे मटकाये और धीरे से पवेल की तरफ झुककर अपना काँपता हुआ एक हाथ उसके कन्धे पर रखा—मेरी सहायता करो! मुझे ऐसा साहित्य दो, जिसे एक बार पढ़ लेने पर फिर आदमी को चैन से सोना हराम हो जाय! उसके दिमाग में काँटे घुमेड़ दो। अपने उन मित्रों से कहो, जो तुम्हारे लिए साहित्य लिखते हैं, कि गाँववालों के लिए भी लिखें। ऐसा दहकता हुआ सत्य लिखें जो गाँववालों को जलायें, जिससे लोग दौड़-दौड़कर मरने को तैयार होकर मैदान में आगे आयें।

उसने अपना हाथ ऊपर को उठाया और हर एक शब्द पर जोर देता हुआ फटी हुई आवाज में कहने लगा—मौत का मौत से बदला चुकाओ। ऐसी मौत मरो जिससे लोगों को जीवन मिले! हजारों को इसी तरह मरना चाहिए, जिससे पृथ्वी पर बसनेवाले लाखों को फिर से जीवन मिले। समझे! मर मिटना तो आसान है, मगर लोगों में जान आनी चाहिए। वह दूसरी बात है। हम लोगों को विद्रोह खड़ा करना चाहिए।

इतने में मा समोवार लेकर आ गई और वह राइबिन के मुँह की ओर आश्चर्य से देखने लगी। उसके कठोर, जोरदार शब्दों से मा के हृदय पर चोट पहुँची। उसकी आकृति, हाव-भाव और बातों से मा को अपने पति की स्मृति हो आई, क्योंकि वह भी इसी प्रकार दाँत निकालकर हाथ हिलाता हुआ बाँहे चढ़ाया करता था। उसके हृदय में भी इसी प्रकार का मूक असन्तोष धधकता रहता था। राइबिन उसकी तरह चुप नहीं रहता था। राइबिन बोलता था, जिससे वह उससे कम भयंकर लगता था।

'हाँ, यह बड़ा जरूरी है।' पवेल सिर हिलता हुआ बोला—हमको गाँवों के लिए

भी एक अखबार निकालने की जरूरत है। इसमें तुम मसाला दो। हम गाँवों के लिए भी एक अखबार निकालेंगे।

मा ने बेटे की तरफ मुसकराते हुए सिर हिलाया। वह चुपचाप कपड़े पहनकर तैयार हो गई थी और अपने काम पर जाने के लिए तैयार थी। कुछ देर में वह चली गई।

'अच्छा! हाँ-हाँ, निकालो। मैं तुम्हें बहुत-सा मसाला दूँगा। परन्तु ऐसी साधारण भाषा में लिखना कि निपट मूर्ख भी समझ ले।' राइबिन जोर से बोला। फिर एकाएक पवेल के पास से पीछे को हटकर, वह सिर हिलाता हुआ बोला—ओहो, काश मैं यहूदी होता। यहूदी दुनिया में सबसे श्रद्धालु होते हैं। देखो न, इसायानवो और जौब नाम का रोग! ईसा मसीह के शिष्यों से भी अधिक श्रद्धालु थे। उनके शब्दों को सुनकर लोगों को रोमांच हो जाता था। ईसा के शिष्य ऐसी वाणी नहीं बोल सकते थे। नवी शास्त्रों में श्रद्धा नहीं रखते, वे अपने-आपमें श्रद्धा रखते हैं। उनका ईश्वर उन्हीं के भीतर होता है। ईसा के शिष्यों ने मठों की स्थापना की। परन्तु मठ ही कानून बन गये। मनुष्य को अपने-आपमें विश्वास होना चाहिए, कानूनों पर नहीं। मनुष्य की आत्मा में ईश्वर का अस्तित्व होता है। यह मनुष्य पृथ्वी पर पुलिस कप्तान अथवा गुलाम के स्वरूप में नहीं आता है। कानून मनुष्य से नीचा होता है।

इतने में रसोई का द्वार खुला और कोई अन्दर घुसा।

'यह एफिम है!' राइबिन रसोईघर में देखता हुआ बोला—यहाँ आओ, एफिम! पवेल! देखो, सोच लो! खुद विचार कर लो। यह सोचने की बात है। यह एफिम है और इनका नाम पवेल है। इनके बारे में मैंने तुमसे कहा था।

एक हलके बालों का विशाल मुखवाला नौजवान, एक छोटा-सा बालों का ओवर कोट पहने हुए पवेल के सामने दोनों हाथों में अपनी टोपी लिये हुए आकर खड़ा हो गया। उसका शरीर गठा हुआ और देखने में मजबूत था। उसने अपनी भूरी आँखों से पवेल पर एक तिरछी नजर डाली और फटी हुई आवाज में पवेल से पूछा—कहिए, मिजाज तो अच्छा है! और फिर पवेल से हाथ मिलाकर अपने घुंघराले बाल दोनों हाथों से ठीक किये। फिर उसने कमरे में चारों तरफ निगाह दौड़ाकर देखा और किताबों की आलमारी पर निगाह पड़ते ही धीरे-धीरे उसकी तरफ बढ़कर गया।

'सीधा उधर ही!' राइबिन पवेल की तरफ आँख मारते हुए बोला।

एफिम किताबें देखता हुआ बोला—यहाँ तो बहुत-सी पढ़ने की सामग्री है। परन्तु मैं समझता हूँ, यहाँ तुम्हारे पास पढ़ने के लिए काफी समय नहीं रहता होगा। गाँव में लोगों के पास पढ़ने को बहुत समय रहता है।

'मगर शायद इच्छा कम रहती है!' पवेल ने पूछा।

'नहीं, लोगों को इच्छा भी है।' उसने ठोड़ी खुजलाते हुए उत्तर दिया—आजकल का जमाना ही ऐसा है। आजकल विचार न करना कब्र में जान-बूझकर लेट जाने

की तरह है। लोग जान-बूझकर अब मरना नहीं चाहते। अस्तु, वे दिमाग से काम लेने लगे हैं। भूगर्भशास्त्र—यह क्या है?

पवेल ने उसे समझाया, 'भूगर्भशास्त्र' किसे कहते हैं।

'हम लोगों को इसकी जरूरत नहीं है।' एफिम किताब को फिर उसी जगह पर आलमारी में रखता हुआ बोला।

राइबिन ने जोर से एक आह भरी और कहने लगा—हाँ, किसान को यह जानने की इतनी इच्छा नहीं है कि जमीन कहाँ से आई, जितनी यह जानने की इच्छा है कि वह कहाँ गई? उसे यही जानने की अधिक इच्छा है कि उसके पाँवों के तले से जमीनदारों ने जमीन निकालकर अपने कब्जे में कैसे कर ली। इससे उसे कोई मतलब नहीं है कि जमीन स्थिर है अथवा घूमती है; क्योंकि उससे उसका कुछ बनता-बिगड़ता नहीं है। आप चाहे, जमीन को रस्सी से बाँधकर लटकायें, या आकाश में खूँटी पर टाँगे, किसान के लिए दोनों एक-से ही हैं। उसे तो जमीन से पेट भरने को दाने चाहिए।

'गुलामी का इतिहास' एफिम ने फिर एक किताब का नाम पढ़ते हुए पवेल से पूछा—अच्छा, क्या यह लोगों के बारे मे है?

'नहीं, यह है रूस के क्रीतदासों का वर्णन!' पवेल ने उसके हाथ मे एक दूसरी किताब देकर कहा।

एफिम ने उसे लेकर उलट-पलटकर देखा, और एक तरफ रखकर धीरे से कहा—यह तो बड़ी पुरानी किताब है।

'क्या तुम्हारे पास जमीन है?' पवेल ने उससे पूछा।

'मेरे? हाँ, मेरे पास जमीन है। हम तीन भाई हैं, और हमारे पास लगभग साढ़े दस एकड़ जमीन है। सब रेतीली है। पीतल साफ करने के लिए अच्छी है, मगर अनाज पैदा करने के लिए बिलकुल निकम्मी है।' कुछ देर ठहरकर फिर वह बोला—मैंने तो अपना पिण्ड उस जमीन से छुड़ा लिया है। क्या फायदा? उससे रोटी तक मिलती नहीं, उल्टे हाथ-पैर और बँध जाते है। अस्तु, मैं चार साल से मजदूरी करके पेट भरता हूँ। अबकी पतझड़ मे सोचता हूँ, सिपाहियो मे भरती हो जाऊँगा। परन्तु काका माइखेल कहते हैं—देखो, वहाँ मत जाना। आजकल सिपाहियों को लोगों को पीटने के लिए भेजा जाता है। मगर मेरा विचार तो जाने का है। सैकड़ों-हजारों वर्षों से सेना इसी प्रकार चली आती है। अब उसकी भी अन्त्येष्टि करने का समय आ गया है। क्यों, तुम्हारा क्या खयाल है? उसने पवेल की तरफ दृढ़ता से देखकर पूछा।

'हाँ, समय तो आ गया है।' मुस्कराहट के साथ उत्तर मिला—मगर है बड़ा कठिन। तुम्हें यह अच्छी तरह जान लेना चाहिए कि सिपाहियों से क्या कहना चाहिए और कैसे कहना चाहिए।

'वह तो सीखा जा सकता है।' एफिम ने कहा।

'और अगर अफसरों ने पकड़ लिया तो गोली से मार दिये जाओगे।' पवेल ने विचित्र प्रकार से एफिम की तरफ देखते हुए कहा।

'हाँ, वे जरा भी दया नहीं दिखायेंगे।' किसान ने सिर हिलाकर स्वीकार किया और फिर किताबें देखने लगा।

'अपनी चाय तो पी लो, एफिम! हम लोगों को जल्दी जाना है।' राइविन ने कहा।

'अभी पीता हूँ।' और एफिम ने फिर पूछा—क्रान्ति का अर्थ बलवा है न, क्यों?

इतने में ऐन्ड्री पसीने से लथपथ आया। उसका मुँह लाल था और वह उदास था। उसने बिना कुछ कहे चुपचाप एफिम से हाथ मिलाया और राइविन के पास बैठकर मुस्कराने लगा।

'क्या मामला है? तुम्हारा यह क्या हाल है?' राइविन ने उसके घुटनों पर हाथ मारकर पूछा।

'कुछ नहीं।'

'क्या तुम भी कामगार हो?' एफिम ने लिटिल रूसी की तरफ सिर हिलाते हुए पूछा।

'हाँ।' ऐन्ड्री ने उत्तर दिया—क्यों?

'आज पहली बार ही इन्होंने कारखाने में काम करनेवाला कामगार देखा है।' राइविन ने ऐन्ड्री को समझाते हुए कहा—उनका कहना है कि वे अन्य कामगारों से भिन्न होते हैं।

'ऐसा क्यों?' पवेल ने पूछा।

एफिम ने ध्यान से ऐन्ड्री की तरफ देखा और कहा—तुम्हारी हड्डियाँ नुकीली हैं। किसानों की हड्डियाँ घिसी हुई गोल-गोल होती हैं।

'किसान अपने पाँवों पर दृढ़ता से खड़ा होता है'—राइविन ने उसकी बात में अपनी बात मिलाते हुए कहा—वह जमीन पर रहता तो है : पर जिस जमीन पर वह रहता है उस पर तो उसका कब्जा नहीं होता! परन्तु फिर भी जमीन पर उसके पाँव रहते हैं। कारखाने के कामगार पक्षी की तरह उड़ते फिरते हैं। उनका कहीं घर-बार नहीं होता। आज यहाँ तो कल वहाँ। उनके स्त्री-बच्चे तक उनके साथ एक जगह पर नहीं रह सकते। जरा-सी गड़बड़ हुई कि उन्हें अपने बीवी-बच्चों से अलविदा कहना पड़ता है। किसी दूसरी जगह काम की तलाश में चला जाना पड़ता है। परन्तु किसान जहाँ बसता है, वहीं पर रहकर अपनी दशा सुधारना चाहता है। पवेल, तुम्हारी मा आ गई। इतना कहकर राइविन रसोईघर में चला गया।

एफिम पवेल के पास गया और उससे झिझकते हुए पूछा—आप मुझे इनमें से एक किताब पढ़ने के लिए दे सकेंगे?

'जरूर।'

किसान की आँखें हर्ष से चमक उठीं और वह जल्दी से बोला—मैं आपकी किताब वापिस भेज दूँगा। हमारे गाँव के लोग यहाँ पास ही तारकोल लेकर आते हैं। उनके हाथों वापिस भेज दूँगा। धन्यवाद। आजकल किताबें हमारे लिए अन्धकार में प्रकाश का काम करती हैं।

राइबिन रसोईघर में कमर पर अपना फेटा कसकर तैयार हो गया था। अस्तु, वह अन्दर आकर एफिम से बोला—आओ, चलने का समय हो गया।

'अब मेरे पास पढ़ने के लिए एक किताब है।' एफिम अन्दर-ही-अन्दर मुस्कराता हुआ सोचने लगा। उसके चले जाने पर पवेल ने उत्साहित होकर ऐन्ड्री से कहा—देखा, इन लोगों को!

'हाँ···।' धीरे से लिटिल रूसी बोला। उसके चेहरे पर घटाएँ-सी छा रही थीं। सूर्यास्त के समय की-सी घनी, काली, धीरे-धीरे चलनेवाली घटाएँ।

'माइरवेल को देखा!' मा बोली—कैसा दीखता था, मानों उसने अपनी जिन्दगी में कभी कारखाने मे काम ही न किया हो। फिर किसानी करने लगा है। कैसा भयानक लगता था!

'मुझे अफसोस है, ऐन्ड्री, तुम यहाँ नहीं थे।' पवेल ने ऐन्ड्री से, जो मेज पर बैठा हुआ उदासीन भाव से चाय के गिलास मे घूर रहा था, कहा—तुम उसकी बातें सुनते तो तुम्हें लोगो के दिलों की हालत का पता चलता। तुम हमेशा दिलों की बात करते हो। राइबिन ने बड़ा धुआँ उड़ाया। मुझे भी पछाड़ दिया। ऐसा हराया कि मुझे जवाब तक देना मुश्किल पड़ गया। कैसा लोगों पर अविश्वास करता है, कैसा उनके प्रति उसके हृदय में तिरस्कार है! मा ठीक ही कहती है। उस मनुष्य मे भयंकर शक्ति है।

'मैं देखता हूँ,' लिटिल रूसी उदास भाव से बोला—लोगों को एक नशा-सा पिला दिया गया है: परन्तु जिस दिन किसान होश मे आकर उठ खड़े होंगे, वे सब कुछ उलट-पलट डालेंगे। उन्हें साफ जमीन चाहिए। अस्तु, वे जमीन को साफ करके ही छोड़ेंगे। वे उस पर से सब कुछ ढा डालेंगे। वह धीरे-धीरे बोल रहा था जिससे प्रत्यक्ष था कि उसका ध्यान कहीं और था। मा ने उसे सँभालने के लिए उसके कन्धे पर थपथपा देकर कहा—ठीक तरह बातें क्यों नहीं करते, ऐन्ड्री?

'ठहरो अम्माँ, जरा ठहरो, मैया!' उसने नम्रता से गिड़गिड़ाते हुए कहा—कितना भयंकर लगता है! यद्यपि मेरा उसे मारने का बिलकुल इरादा नहीं था। जरा ठहरो। और फिर वह एकाएक उठकर मेज पर हाथ पटककर बोला—हाँ पवेल, जिस दिन किसान उठ खड़े होंगे, वे जमीन को अपने लिए साफ कर लेंगे। महामारी के बाद आग लगाकर जैसे जमीन को साफ करते हैं वैसे ही वे भी जो कुछ उनके मार्ग मे आवेगा उसे अग्नि में झोंक देंगे, जिससे कि उसकी राख के साथ-साथ ही उन पर होनेवाले अत्याचार भी सदा के लिए खाक में मिल जायँ।

'और फिर वे हमारे मार्ग में भी आकर अड़ेंगे।' पवेल ने धीरे से कहा।

'उसे रोकना हमारा काम है। हम लोग उनके अधिक निकट हैं। वे हम पर विश्वास करते हैं। अस्तु, वे हमारे पीछे चलेंगे।'

'जानते हो, राइबिन का प्रस्ताव है कि हमको गाँवों के लिए भी एक अखबार निकालना चाहिए !'

'अवश्य निकालना चाहिए। जितना जल्द हो सके, निकालना चाहिए।'

पवेल हँसकर कहने लगा—मैंने बुरा किया जो उसके साथ बहस नहीं की।

'अभी उससे बहस करने के बहुत-से मौके आयगे।' लिटिल रूसी बोला—तुम अपनी बन्सी बजाते रहो। जिनके पैरों में जीवन होगा और जिनके पैर पृथ्वी में गड़े न होंगे, वे तुम्हारी तान पर अवश्य नाच उठेंगे। राइबिन शायद तुमसे यह कहता कि हम लोग कहीं जमकर बैठते क्यों नहीं ! हमें उसकी जरूरत नहीं है। हमारा काम तो पृथ्वी को जोत-जोतकर उलटना-पलटना है। एक बार जोतने से वह टूटेगी, दूसरी बार जोतने से वह और ढीली पड़ेगी और उसमें से जड़ें उखड़-उखड़कर अलग हो जायँगी।

मा मुस्कराती हुई कहने लगी—तुम्हें हर बात बड़ी सरल लगती है, ऐन्ड्री !

'हाँ-हाँ, सरल तो है ही।' लिटिल रूसी बोला—जीवन की तरह सरल। और यह कहकर वह फिर उदास हो गया और कुछ क्षण बाद कहने लगा—मैं कुछ देर बाहर मैदान में जाकर टहलूँगा।

'स्नान के बाद टहलोगे ? हवा लग जायगी।' मा ने उसे चेतावनी दी।

'अम्माँ, मेरा हवा में टहलने को जी चाहता है।'

'देखो, ठण्ड लग जायगी।' पवेल ने स्नेह-पूर्वक कहा—तुम जाकर चुपचाप लेटो और सो जाओ।

'नहीं, मैं बाहर जाऊँगा।' उसने उठकर एक कपड़ा ओढ़ लिया और चुपचाप घर से बाहर निकल गया।

'उसको अपना जीवन बड़ा कठिन हो रहा है।' मा ने आह भरकर कहा।

'समझती हो, क्या बात है !' पवेल मा से बोला—यह तुम बड़ा अच्छा करती हो कि उसके बाद से तुम उससे और भी अधिक स्नेह से बोलती हो।

मा ने पवेल की तरफ चौंककर देखा और क्षण-भर सोचकर बोली—अच्छा, मगर मुझे इसका ध्यान भी नहीं था। आप-ही-आप ऐसा हो गया। मुझे उस पर बड़ा स्नेह है। मैं तुम्हें नहीं समझा सकती कि मेरे हृदय में उसके लिए कितना प्रेम है। ओह, उस पर कैसी आफत आ गई है !

'तुम्हारा बड़ा अच्छा दिल है मा !' पवेल कोमल स्वर में बोला।

'ऐसा है तो मुझे बड़ी खुशी है। मैं तुम्हारी सबकी कुछ भी सहायता कर सकूँ तो मेरा जीवन सफल होगा।'

'सब्र रखो ! तुम हमारी बड़ी सहायता करोगी।'

मा धीरे-धीरे मुस्कराती हुई कहने लगी—मैं बड़ा घबराती हूँ। बड़ा प्रयत्न करने

पर भी मेरे हृदय से डर नहीं जाता। परन्तु मेरे प्यारे बेटे! तुम्हारे मीठे-मीठे शब्दों से मेरे हृदय को बड़ी शान्ति मिलती है। उनके लिए मैं तुम्हे धन्यवाद देती हूँ।

'मा! रहने भी दो। इस सम्बन्ध मे कुछ न कहो। अपने दिल मे हो रखो। मैं तुम्हे बहुत प्यार करता हूँ। हृदय से तुम्हारा आभारी हूँ।'

मा उठकर जल्दी से रसोईघर में चली गई, जिससे उसकी आँखो के आँसू पवेल न देख सका।

———

अठारहवाँ परिच्छेद

इस घटना के कुछ दिन बाद एक रोज व्यसोवशचिकोव हमेशा की तरह फटे और ढीले-ढाले कपड़े पहने हुए उजबक-सी शक्ल बनाये एकाएक आ धमका।

'तुम नहीं जानते, इसाय को किसने मारा?' उसने भोंडी तरह झिझकते हुए पवेल से पूछा।

'नहीं!' पवेल ने उसको सूक्ष्म उत्तर दिया।

'वह आदमी बड़ा पक्का होगा। मैं स्वयं इस काम को करने का विचार कर रहा था। यह तो मेरा काम था—बिलकुल मेरे योग्य काम था।'

'बकवास मत करो, निकोले!' पवेल ने मित्र-भाव से उससे कहा।

'क्यों? बता तो, तेरा हाल क्या है?' मा प्रेम से उससे बोली—तेरा हृदय तो इतना कोमल है, मगर तू भौंकता सदा पागल कुत्ते की तरह रहता है! बता, ऐसा तू क्यों करता है?

इस समय मा को सचमुच निकोले को देखकर हर्ष हो रहा था। उसका चेचकरू चेहरा भी उसे प्रिय लग रहा था। मा को उस पर ऐसी दया आ रही थी, जैसी उसे आज तक कभी उस पर नहीं आई थी।

'मैं किसी ऐसे काम के सिवाय और किसी लायक ही नहीं हूँ।' निकोले सुस्ती से कन्धे हिलाता हुआ बोला—मैं अक्सर सोचता हूँ, दुनिया में मेरा कहाँ स्थान है। मगर मुझे पता नहीं चलता। लोगों से बातें करना नहीं जानता। मैं सब चुपचाप देखता हूँ। मुझे लोगों के अत्याचार खलते हैं, मगर मैं बोल नहीं सकता। मैं एक मूक आत्मा हूँ। इतना कहकर वह सिर झुकाये हुए पवेल के निकट गया और मेज पर उँगलियाँ खुरचता हुआ, शिकायत के ढंग पर अपने स्वभाव के विरुद्ध, बालक की तरह उदास होकर बोला—मुझे कोई कठिन काम करने के लिए दो, बन्धु! इस प्रकार का नीरस जीवन बिताना मुझे कठिन लगता है। मेरा जीवन इतना अर्थहीन, इतना निकम्मा है। तुम सब एक महान कार्य में लगे हो। और मैं देखता हूँ, तुम्हारा काम बढ़ रहा है, परन्तु मैं उस काम से बाहर हूँ। मैं तख्ते और शहतीर ही ढोता फिरता हूँ। क्या सिर्फ लकड़ी ढोने के लिए ही जीवित रहना सम्भव है? मुझे कोई कठिन काम दो।

पवेल ने उसके हाथ जकड़कर पकड़ लिये और उसको अपनी ओर खींचकर बोला—हम तुम्हें काम देंगे।

परदे के पीछे से लिटिल रूसी की आवाज आई—निकोले, मैं तुम्हें छापे का काम सिखा दूँगा। फिर तुम हमारे कम्पोजिटर का काम करना। अच्छा?

निकोले ऐण्ड्री के पास जाकर उससे बोला—अगर तुम मुझे छापे का काम सिखा दो तो मैं तुम्हें अपना चाकू भेंट में दे दूँगा।

'वाह रे तेरा चाकू!' लिटिल रूसी ने चिल्लाकर कहा और वह खिल-खिलाकर हँस पड़ा।

'सच, बड़ा अच्छा चाकू है।' निकोले जोर देकर उसे समझाने लगा। पवेल भी हँसने लगा।

व्यसोवश्चिकोव ने कमरे के बीच में ठहरकर पूछा—अच्छा! तुम मेरे ऊपर हँसते हो!

'अवश्य।' बिस्तर मे से उछलकर लिटिल रूसी ने उत्तर दिया—चलो, मैं तुम्हें समझाऊँगा! चलो, खेतों में टहलने चलें। रात बड़ी सुहावनो है। चाँदनी छिटक रही है। चलो, घूमने चलें।

'अच्छा।' पवेल बोला।

'मै भी तुम्हारे साथ आऊँगा।' निकोले ने कहा—मुझे तुम्हारा हँसना अच्छा लगता है, लिटिल रूसी!

'और मुझे तुम्हारी भेंटों के वायदे सुनने अच्छे लगते हैं।' लिटिल रूसी ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया।

जब ऐन्ड्री रसोई घर मे कपड़े पहिनने गया तो मा ने उसे झिड़का—काफी गरम कपड़े क्यों नहीं पहिनता! बीमार हो जायगा। और फिर जब वे सब घर मे से निकलकर बाहर चले गये, तो वह जाकर खिड़की पर खड़ी हो गई और वहाँ खड़ी-खड़ी देर तक उनकी तरफ देखती रही। फिर मरियम की पवित्र तस्वीर की ओर मुड़कर वह धीरे से बोली—हे भगवती, इन बच्चों की सहायता करना।

फिर उसने लैम्प गुल कर दिया और कमरे मे बिखरी हुई चाँदनी मे अकेली बैठी-बैठी प्रार्थना करने लगी।

दिन काम मे इतनी जल्द बीत जाता था कि दिन मे तो कभी उसे पहली मई का विचार भी नहीं आता था; मगर रात को, जब दिन-भर के गुल-गपाड़े और काम-धन्धे से चूर होकर, वह थकी हुई बिस्तर पर लेटती थी तब उसका ध्यान आते ही हृदय में एक तीव्र वेदना हो उठती थी और वह सोचने लगती थी—हे भगवान! जल्दी ही वह दिन भी बीत जाता।

सवेरे कारखाने की सीटी बजते ही पवेल और लिटिल रूसी जल्दी-जल्दी चाय पीते हुए और एक-आध रोटी का टुकड़ा मुँह मे डालते हुए एक-दो दर्जन काम मा को सुपुर्द करके अपने काम पर चले जाते थे। दिन-भर मा गिलहरी की तरह दौड़ती हुई खाना पकाती, पर्चों के लिए उबालकर सियाही और गोंद इत्यादि तैयार करती, और दूसरे बहुत-से काम करती। कुछ लोग पवेल के लिए खत लेकर आते थे, जिन्हें वे मा

के पास छोड़कर चले जाते थे। उनके चेहरों पर आवेश के चिह्न होते थे, जिन्हें देखकर मा के दिल में बड़ी खलबली मच उठती थी।

पहिली मई को त्योहार मनाने के लिए पर्चों के द्वारा गाँव और कारखाने में हजारों की संख्या में अपीलें बाँटी गई थीं। रोज रात को यह पर्चे मकानों की चहारदीवारियों और थाने के द्वार तक पर चिपका दिये जाते थे और हर रोज कारखाने में भी बँटते थे। सवेरे ही पुलिस के सिपाही झुँझलाते हुए, गालियाँ बकते और कसमे खाते हुए, जहाँ-तहाँ इन पर्चों को दीवारों पर से नोचते दिखाई देते थे। मगर दोपहर को फिर राहगीरों के पैरों से यह पर्चे उड़-उड़कर चिपटते थे। शहर से बहुत-से जासूस बुलवाकर कारखाने के द्वार-द्वार पर हर एक कामगार पर कड़ी दृष्टि रखने के लिए लगा दिये गये थे ; परन्तु फिर भी पर्चे बँट जाते थे। सब पुलिस के निकम्मेपन पर हँसते थे। यहाँ तक कि बूढ़े भी एक-दूसरे से मुस्कराकर कहते थे—ओहो, मजा आ रहा है, क्यों जी ?

जिधर देखो, उधर लोगों के झुण्ड इन जोशीली अपीलों के विषय में चर्चा करते नजर आते थे। चारों तरफ जीवन का सोता-सा फूट पड़ा था। अबकी बार वसन्त सबको अधिक आनन्ददायी लगता था , क्योंकि उसमे एक नवीनता थी। कुछ के लिए आवेश मे भर-भरकर भड़कानेवालों पर गालियों की वर्षा करने और उन्हे जी भरकर कोसने का वह बहाना हो गया था। कुछ के लिए इस बार का वसन्त नई-नई आशाओं के साथ साथ एक घबराहट और चिन्ता लाया था। एक दूसरे समूह के लिए, जो बहुत छोटा था, यह सब बातें आनन्ददायिनी थीं, क्योंकि यह गाँव में एक नये जीवन के चिह्न थे जो उनकी उगती हुई शक्ति का प्रमाण थे।

पवेल और ऐन्ड्री को तो रात को सोना भी कठिन हो गया था। वे प्रातःकाल कारखाने का भोंपा बजने से केवल कुछ ही देर पहले थके हुए घर लौटते थे। उनके चेहरे पीले और गले पडे हुए होते थे। मा जानती थी, वे रात-रात-भर दलदल के किनारे जंगलो मे कामगारों का सभाएँ करते थे। पुलिस के सवार गाँव मे इधर से उधर घोडे दौड़ाते फिरते थे। जासूस चारो तरफ घात लगाते थे, अकेले जानेवाले कामगारों को रोक रोककर तलाशियाँ लेते थे और झुण्डों मे जानेवालों को बिखेर देते थे ; और कभी कभी किसी-किसी को गिरफ्तार भी कर लेते थे। मा यह भी अच्छी तरह समझती थी कि उसका लड़का और ऐन्ड्री दोनों किसी भी रात को पकडे जा सकते है। कभी-कभी वह सोचने लगती थी कि शायद यही उनके लिए अच्छा भी होगा।

बड़े आश्चर्य की बात यह थी कि मुन्शी इसाय के खून की जाँच-पड़ताल एकाएक बन्द हो गई थी। दो दिन तक तो गाँव की पुलिस ने अवश्य लोगों से उसके सम्बन्ध मे पूछताछ की और आठ-दस आदमियों को बुलाया भी, परन्तु अन्त में मामला एकदम ठण्डा पड़ गया।

मेरया ने, जो पुलिसवालों से उसी प्रकार आजादी से मिला करती थी जिस प्रकार औरों से, पुलिस की राय मा को इस प्रकार बताई—अपराधी को पकड़ना कैसे सम्भव

है ! उस दिन इसाय को लगभग सौ आदमी मिले होंगे, और अधिक नहीं तो उनमें से नब्बे ने तो अवश्य ही उसको मारा होगा। इस आठ वर्ष में उसने सभी को अपना शत्रु बना लिया था।

लिटिल रूसी में बड़ा परिवर्तन हो गया था। उसके गाल बैठ चले थे, उसकी पलकें भारी होकर उसकी गोल-गोल आँखों पर लटककर उन्हें ढकने लगी थीं ; मुस्कान भी उसके मुँह पर से लुप्त होने लगी थी और नथनों से होंठ के कोनों तक दो पतली-पतली झुर्रियाँ उसके चेहरे पर पड़ने लगी थीं। अब वह साधारण विषयों पर कम बातें करता था और प्रायः किसी हृदय को जलानेवाली अग्नि की गर्मी से भड़क उठता था। केवल भविष्य का, उस महान् और सुन्दर भविष्य का, जिसमें वे सब मिलकर स्वतन्त्रता और बुद्धि की विजय मनाते होंगे, वह कीर्तन-सा करता रहता था, जिसे सुन-सुनकर लोग मस्त हो जाते थे। उसके शब्दों को सुनकर मा को ऐसा लगता था कि वह उस महान कीर्तिमान भविष्य के औरों से अधिक निकट पहुँच चुका था। अस्तु, वह उस भविष्य का आनन्द औरों से अधिक स्पष्ट समझता था। इसाय के खून की जाँच-पड़ताल बन्द हो जाने पर वह घृणा और दुःख से मुस्कराता हुआ कहने लगा—हम लोगों को ही वे निरा कूड़ा-कर्कट नहीं समझते, बल्कि उन लोगों के साथ भी वे कूड़ा-कर्कट का-सा ही व्यवहार करते हैं, जिन्हें वे हमारे पीछे कुत्तों की तरह लगाते हैं ! उन्हें अपने चापलूसों की भी चिन्ता नहीं है। उन्हें तो केवल अपने टकों की चिन्ता है—सिर्फ अपनी सम्पत्ति बचाने की फिक्र है ! फिर क्रोध से कुछ देर तक चुप रहकर वह बोला—मुझे जब उस बेचारे का ख्याल आता है तो बड़ी दया आती है। मेरा इरादा उसको मारने का नहीं था—बिलकुल नहीं था !

'छोड़ो भी उसका जिक्र, ऐन्ड्री !' पवेल ने सख्ती से कहा।

'तुम्हारी एक सड़ी, जर्जर चीज से ठेस लगी और वह गिरकर टुकड़े-टुकड़े हो गई !' मा धीरे से बोली।

'हाँ, ठीक है, मगर इससे सन्तोष नहीं होता।'

वह अब प्रायः इसी प्रकार की बातें किया करता था। उसके शब्द विचित्र, सार्वभौम, कड़ुए और कँटीले होते थे।

आखिरकार पहिली मई भी आ गई। सदा की भाँति हुक्म चलानेवाला कारखाने का भोंपा सुबह होते ही जोर से चीखा। मा, जिसकी रात-भर एक क्षण के लिए भी आँख नहीं लगी थी, भोंपे की आवाज सुनते ही फौरन चारपाई पर से उछलकर खड़ी हो गई। रसोई में जाकर उसने सेमोवार के नीचे फौरन आग जला दी और अपने लड़के और ऐन्ड्री को जगाने के लिए द्वार खटखटाने के लिए गई। मगर जाते-जाते उसे एकदम याद आई कि आज तो पहली मई है। अस्तु, वह हाथ हिलाती हुई उल्टे पाँवों फिरी और खिड़की पर आकर बैठ गई। वहाँ बैठकर गालों पर हाथ रखकर वह विचारों में डूब गई।

छोटे-छोटे, सफेद और गुलाबी बादलों के झुण्ड नीले आकाश को जल्दी-जल्दी पार करते हुए जा रहे थे, मानों आज बड़े-बड़े पक्षियों के झुण्ड कारखाने के भोंपे की डरावनी आवाज सुनकर भागे जा रहे थे। मा विचारों में डूबी हुई उन बादलों के टुकड़ों की तरफ देखनी लगी। उसका सिर भारी हो रहा था और आँखें रात-भर नींद न आने से जल रही थीं। परन्तु एक विचित्र शान्ति उसके अन्तर में थी। उसका हृदय साधारण चाल से चल रहा था और वह केवल नित्यप्रति की साधारण बात ही सोच रही थी।

'मैंने सेमोवार बहुत जल्दी चढ़ा दिया है। कहीं उबलकर पानी खराब न हो जाय। आज वे जरा देर तक सो लेते तो अच्छा था। दिन-रात काम करते-करते दोनों बड़े थक गये है।'

इतने में हँसती हुई सूर्य की एक किरण कमरे में आई। मा ने हाथ बढ़ाकर उसको अपनी हथेली पर ले लिया, और दूसरे हाथ से इस चमचमाती हुई बाल-किरण को स्नेह से थप-थपाया। फिर वह मुस्कराती हुई विचारों में डूब गई। कुछ देर के बाद वह उठी और सेमोवार की नलको फिराकर, आहट बचाते हुए, उसमें से गरम पानी निकाला और उससे हाथ-मुँह धोया। फिर हाथ जोड़कर जमीन पर घुटने टेककर धीरे-धीरे वह ईश्वर से प्रार्थना करने लगी। उसका चेहरा चमक रहा था और उसकी दाहिनी भृकुटी बार-बार उठती और गिरती थी।

दूसरी बार भोंपा कुछ नीचे स्वर से चिल्लाया। उसमें पहले से कम आशा थी और उसकी मोटी और सुरीली आवाज काँप रही थी। मा को लगा कि रोज से आज भोंपा अधिक देर तक बजा। इतने मे लिटिल रूसी की स्वच्छ और गूँजती हुई आवाज कमरे में से आई—पवेल, सुनते हो! भोंपा बज रहा है।

मा ने फिर नंगे पैरो के फर्श पर चलने की आवाज सुनी; और किसी ने जोर से अँगड़ाई ली।

'सेमोवार तैयार है।' मा ने जोर से चिल्लाकर कहा।

'हम लोग भी उठ रहे हैं।' पवेल ने प्रसन्नता से उत्तर दिया।

'सूर्य चढ़ आया है।' लिटिल रूसी बोला—बादल दौड़ लगा रहे हैं। परन्तु आज उनका दौड़ना व्यर्थ है। इस प्रकार कहता वह रसोई में घुसा। उसके बाल बिखर रहे थे। परन्तु अच्छी तरह सो लेने से उसका चेहरा प्रसन्न था।

'प्रणाम प्यारी मा! रात को नींद तो अच्छी तरह आई?' वह घुसते ही बोला।

मा ने पास जाकर उसके कान मे कहा—ऐन्ड्री, आज तुम पवेल के साथ ही रहना।

'जरूर। जब तक हमारे हाथ मे है तब तक विश्वास रखो, अम्माँ, हमारा एक-दूसरे से कन्धा बराबर मिला रहेगा।'

'क्या घुसपुस हो रही है?' पवेल ने पूछा।

'कुछ नहीं।' मा ने कहा।

'अम्माँ मुझसे आज अच्छी तरह मुँह-हाथ धोने को कहती है, क्योंकि वहाँ सारी

लड़कियों की निगाह मुझी पर रहेगी।' लिटिल रूसी ने ड्योढ़ी में मुँह धोने के लिए जाते हुए कहा।

'उठो, जागो, कामगार!' पवेल मन्द-मन्द स्वर में गुनगुनाया।

दिन निकलते ही हवा ने खदेड़-खदेड़कर बादलों को बिखराना शुरू कर दिया था। मा चाय की रकाबियाँ तैयार कर लगा रही थी और सिर हिलाती हुई सोचती जाती थी—दोनों कैसे विचित्र हैं! आज भी प्रातःकाल से ही हँसते और मुस्कराते हुए बातें कर रहे हैं। दोपहर को न जाने उनका क्या हो। फिर भी आश्चर्य की बात तो यह थी कि मा को अपने अन्तर में आनन्द और शान्ति का एक साम्राज्य-सा छाया हुआ लगता था।

वे बहुत देर तक मेज पर बैठे हुए चाय पीते रहे और आशा की घड़ियाँ आराम से बिताते रहे। पवेल ने अपने स्वभावानुसार, धीरे-धीरे चम्मच से चाय के गिलास में शक्कर मिलाई और एक रोटी के टुकड़े के किनारे पर ठीक तरह से नमक लगाया। लिटिल रूसी मेज के नीचे रखे हुए अपने पैर हिलाता हुआ दीवारों और छत पर खेलती हुई किरणों को देख रहा था। वह कभी अपने पाँव एक-से नहीं रख सकता था।

'जब मैं दस वर्ष का छोकरा था,' वह याद करता हुआ कहने लगा—मैं सूर्य को एक दिन गिलास में पकड़ना चाहता था। मैं गिलास में देखता हुआ धीरे-धीरे दीवार के पास गया और टकराकर धमाक से गिरा। गिलास के टुकड़ों से मेरा हाथ कट गया और खून की धार मेरे जूतों पर गिरने लगी। परन्तु इसके बाद मैं आँगन में गया और वहाँ पानी के एक गढ़े में सूरज देखा। उसको देखते ही मैं गड्ढे में कूद पड़ा और पैरों से कीचड़ में फच-फच फच-फच करने लगा, जिससे मेरे शरीर पर कीचड़-ही-कीचड़ हो गई और मुझे बड़ी मार खानी पड़ी। मैं कुछ नहीं कर सकता था। अस्तु, मैंने सूरज से चिल्लाकर कहा—मेरे नहीं लगी, ओ रे लाल बन्दर, मेरे नहीं लगी! और मैं जीभ निकालकर उसकी तरफ मुँह चिढ़ाने लगा जिससे मुझे सन्तोष हो गया।

'सूरज तुम्हें लाल क्यों लगा?' पवेल ने हँसते हुए पूछा।

'हमारे घर के सामने एक लुहार रहता था। उसके लाल-लाल सुंदर गाल थे और उसके एक विशाल लाल दाढ़ी भी थी। सूर्य भी मुझे उसी की तरह लाल-लाल लगता था।'

मा का सन्तोष जाता रहा और वह बोली—यह व्यर्थ की बातें छोड़कर अपने जलूस के प्रबन्ध के सम्बन्ध में बातें क्यों नहीं करते?

'सारा प्रबन्ध हो चुका है।' पवेल ने कहा।

'एक बार जो बात निश्चय हो चुकी, उसके बारे में बातें करना व्यर्थ है। उससे केवल दिमाग खराब होता है।' लिटिल रूसी बोला—यदि हम सब पकड़ लिये गये, तो निकोले आइवानोविश आकर तुम्हें सब बता देगा कि आगे क्या करना चाहिए। वह तुम्हारी सब प्रकार से सहायता करेगा।

'अच्छा !' मा ने एक गहरी साँस लेते हुए कहा।

'चलो, अब चलें !' पवेल ने स्वप्न-सा देखते हुए कहा।

'नहीं, अभी यहीं ठहरना ठीक है !' ऐन्ड्री ने उत्तर दिया—पुलिसवालों की आँखों को बहुत जलाने से कुछ फायदा नहीं है। वे तो तुम्हें अच्छी तरह पहचानते हैं।

इतने में फेड्या माजिन दौड़ता हुआ आया। खुशी से उसका चेहरा खिलकर लाल हो रहा था और शरीर मे रोमांच हो रहा था। उसकी खुशी देखकर उनके इंतजार की ऊब चली गई।

'शुरू हो गया !' उसने खबर दी—सब लोग कारखाने के बाहर सड़क पर खड़े हैं। उनके चेहरे कुल्हाड़ी की तरह तेज हो रहे हैं। व्यसोवशचिकोव, गसेव बन्धु और सेमोयलोव, कारखाने के दरवाजों पर खड़े हुए व्याख्यान दे रहे हैं। अधिकतर आदमी कारखाने न जाकर अपने-अपने घर लौट गये हैं। चलो, यही समय वहाँ चलने का है। दस बज चुके हैं।

'मैं जाता हूँ !' पवेल ने निश्चय से कहा।

'देखना,' फेड्या विश्वास दिलाता हुआ बोला—खाने के बाद पूरा कारखाना बाहर निकल आयगा।

इतना कहकर वह फौरन वहाँ से चला गया। मा मन्द स्वर में बोली—कैसा हवा में मोमबत्ती की तरह जलता है !

इतना कहकर वह उठी और रसोईघर में जाकर कपड़े पहनने लगी।

'तुम कहाँ जाती हो, मा !'

'तुम्हारे साथ।' उसने उत्तर दिया।

ऐन्ड्री पवेल की तरफ मूँछ मरोड़ते हुए देखने लगा। पवेल ने जल्दी से सिर के बाल ठीक किये और मा के पास गया।

'मा, मै वहाँ तुमसे कुछ नहीं बोलूँगा और तुम भी मुझसे वहाँ कुछ मत बोलना। सुना, मा ?'

'अच्छा, ठीक। ईश्वर तुम्हारे साथ हो !' वह बड़बड़ाई।

बाहर निकलकर मा ने उन लोगों की गुनगुनाहट सुनी—चिन्तित और आशापूर्ण आवाजों की गुनगुनाहट। उसने चारों तरफ, खिड़कियों और द्वारों पर लोगों की भीड़ खड़ी देखी। सब उसके लेड़के और ऐन्ड्री को ओर खड़े-खड़े घूर रहे थे। यह सब देखते ही उसकी ऑखों के सामने एक अन्धकार-सा छा गया।

लोगों ने ऐन्ड्री और पवेल का स्वागत किया। उनके स्वागत में एक विचित्रता थी। मा के कान में चारों तरफ से लोगों की घुसपुस की भनक आई—आ गये नेता।

'कौन नेता !'

'क्यों ! क्या मैंने कोई बुरी बात कह दी !'

दूसरी तरफ से कोई एक सहन में से जोश में भरकर चिल्लाया—पुलिस अभी सबको पकड़कर ले जायगी। फिर ठीक हो जायँगे।

'पकड़ ले जायँगे तो क्या होगा?' दूसरी आवाज ने उत्तर दिया।

जरा दूर पर एक रोती हुई भयभीत स्त्री की आवाज खिड़की में से आती हुई सुनाई दी—

'सोचो! क्या तुम अकेले हो? बे-घर-बार के हो? वे सब तो अविवाहित हैं। वे तो इसीलिए परवाह नहीं करते।'

और जैसे ही वे जोसीमोव के घर के पास से निकले, जो दोनों टाँगें मशीन से कट जाने के कारण कारखाने से भत्ता पाता था, वह खिड़की में से सिर निकालकर चिल्लाया—पवेल, ओ रे बदमाश! तेरा सिर काट लिया जायगा। सुनता है?

मा उसके शब्द सुनकर काँप गई और ठिठककर खड़ी हो गई। जोसीमोव की बातों से मा के मन में बड़ा क्रोध उत्पन्न हुआ। उसने लूले के मोटे, सूजे हुए-से मुँह की तरफ घूरकर देखा। परन्तु लूले ने गालियाँ देते हुए अपना मुँह खिड़की के भीतर कर लिया। मा जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाती हुई अपने लड़के के पास पहुँचकर इस बात का प्रयत्न करने लगी कि वह उससे कहीं फिर पीछे न रह जाय। पवेल और ऐन्ड्री इस प्रकार चले जा रहे थे, मानों वह कुछ देखते और सुनते ही नहीं है। वे शान्त, धीरे-धीरे, जोर-जोर से साधारण बातें करते हुए चले जाते थे। मिरोनोव, जो एक विनयी, पकी उम्र का आदमी था, और जिसे सब उसके पवित्र जीवन के कारण सम्मान की दृष्टि से देखते थे, उन दोनों के सामने आकर खड़ा हो गया।

'अच्छा, तुम भी आज काम पर नहीं गये, डेनियल आइवानोविश?' पवेल ने उससे पूछा।

'मेरी स्त्री बीमार है! और फिर आज इतनी धूमधाम का दिन है।' मिरोनोव ने बन्धुओं को घूरते हुए उत्तर दिया। फिर वह धीरे से बोला—छोकरो, सुनते हैं, आज तुम लोग बड़ा तूफान करनेवाले हो! मैनेजर की खिड़कियाँ तोड़नेवाले हो!

'क्यों, क्या हम लोगों ने भाँग खाई है!' पवेल ने कहा।

'हम लोग तो केवल झण्डियाँ लेकर गीत गाते हुए निकलनेवाले हैं।' लिटिल रूसी बोला—तुम भी हमारे गीत सुनना। वे हमारी नई श्रद्धा के गीत होंगे।

'मैं तुम्हारी श्रद्धा को जानता हूँ!' मिरोनोव विचार-पूर्वक बोला—मैं तुम्हारे पर्चे पढ़ता हूँ। तुम निलोवना, मा की तरफ आश्चर्य से मुस्कराते हुए वह बोला—क्या तुम भी विद्रोह का झण्डा खड़ा करने निकली हो!

'हाँ, मरते-मरते भी सत्य का पल्ला पकड़ने को मिल जाय तो अच्छा ही है।'

'मैं समझता हूँ,' मिरोनोव बोला—लोग सच ही कहते थे कि कारखाने के अन्दर जब्त किताबें तुम्हीं ले जाती थीं।

'ऐसा कौन कहता था?' पवेल ने पूछा।

'उँह, लोग कहते थे । अच्छा, प्रणाम । सँभलकर रहना मैय्या !'

मा धीरे-धीरे हँसने लगी। उसे यह सुनकर हर्ष हुआ कि लोग उसके सम्बन्ध में इस प्रकार की बातें करते थे। पवेल ने मुस्कराते हुए उसकी तरफ घूमकर कहा—ओहो, तुम्हें भी जेल होगी, मा !

सूरज ऊँचा चढ़ आया था, जिससे वासन्ती दिन की जीवनदायिनी ताजगी में गर्मी बढ़ चली थी। बादल धीरे-धीरे बह रहे थे और उनकी छाया पतली और पारदर्शक होती हुई, मन्द-मन्द गति से सड़कों और छतों के ऊपर रेंग रही थी। चमकती हुई धूप गाँव को साफ करती हुई दीवारों की मिट्टी और गर्द और लोगों के चेहरों की सुस्ती को झाड़ रही थी। हर आदमी और हर चीज के मुख पर प्रसन्नता झलक रही थी। आवाजें ऊँची उठ रही थीं और उनमें दूर पर होनेवाली कारखाने की मशीनों की फाँय-फाँय और खट-खट डूब-सी गई थी।

चारों ओर से, खिड़कियों से और आँगन से, तरह-तरह की आवाजें, कभी घबराई हुई और अश्लील, कभी विचार-पूर्ण और आनन्दमय, मा के कानों में आ रही थीं। अस्तु, अब उसे भी उन आवाजों के प्रत्युत्तर मे, उन्हें धन्यवाद देने और समझाने की और आज के दिन रँगीले जीवन में भाग लेने की इच्छा होने लगी।

राजमार्ग के एक किनारे पर एक छोटी-सी गली मे लगभग सौ आदमियो की एक भीड़ इकट्ठी थी और उसके अन्दर से व्यसोवश्चिकोव की आवाज गूँजती हुई आ रही थी—वे नीबू के रस की तरह हमारे शरीर से लहू निचोड़ लेते हैं। उसके शब्द लोगों पर हथौड़ों की चोटों की तरह पड़ रहे थे।

'ठीक कहते हो ! ठीक कहते हो !' कितने ही लोगों के मुँह से निकल रहा था।

'छोकरा बड़ा प्रयत्न कर रहा है।' लिटिल रूसी बोला—मैं भी जाकर उसकी मदद करूँगा। यह कहता हुआ वह आगे को झुका और पवेल उसको रोके उसके पहले ही वह अपना लम्बा और लचीला शरीर भीड़ में पेंच की तरह घुमेड़ता हुआ घुस गया। शीघ्र ही उसकी सुरीली आवाज भी आती हुई सुनाई दी—बन्धुओ, लोग कहते है कि दुनिया मे बहुत-सी जातियाँ बसती हैं—यहूदी और जर्मन, अंग्रेज और तातारी। परन्तु मैं इसमे विश्वास नहीं करता। दुनिया मे केवल दो जातियाँ बसती हैं, दो ही अनमिल जातियाँ रहती है—एक अमीर और दूसरी गरीब। लोगों के भाषा-वेष भिन्न हैं, परन्तु फ्राँसीसी, जरमन, अथवा अँग्रेज, किसी भी अमीर को देखो, सब अपने कामगारों से एक ही प्रकार का बुरा व्यवहार करते है। सब-के-सब गरीबों के लिए एक-से, प्लेग की तरह है।

भीड़ बढती जा रही थी। एक के पीछे एक का गली में आनेवालों का ताँता बँधा हुआ था। वे चुपचाप पंजों पर उचकते हुए, सारस की तरह गरदनें उठाते हुए चले आ रहे थे। ऐन्ड्री अधिक जोर से बोलने लगा—दूसरे देश के कामगरों ने इस साधारण सत्य को अच्छी तरह समझ लिया है, और आज के दिन, इस सुन्दर पहली मई के दिन, दूसरे देशों में कामगार एक-दूसरे से हिलते-मिलते हैं और आपस में भाई-चारा मनाते हैं।

वे आज के दिन अपना काम छोड़ देते हैं और सड़कों पर घूमकर अपने स्वरूप का निरीक्षण करते हैं, अपनी शक्ति का अन्दाजा करते हैं। आज के दिन उन देशों के सारे कामगारों का दिल एक दिल बनकर धड़कता है, क्योंकि उन सभी कामगारों के दिल अपनी सम्मिलित शक्ति के ज्ञान की ज्योति से जगमगाते हैं। अस्तु, उन सबके हृदय बन्धु-भाव में बँध जाते हैं, और उनमें से हर एक सभी बन्धुओं के लिए आनन्द प्राप्त करने, सबके लिए स्वतन्त्रता और सत्य प्राप्त करने के युद्ध में अपनी-अपनी जान देने के लिए तैयार हो जाता है!

'पुलिस!' किसी ने इतने में चिल्लाकर कहा।

उन्नीसवाँ परिच्छेद

राजमार्ग से चार पुलिस सवार चाबुक घुमाते हुए गली में घुसे और भीड़ की तरफ बढ़ते हुए चिल्लाये—भागो ! भागो !

'क्या बातें कर रहे हो ?'

'कौन बोल रहा है ?'

सवारों को देखते ही लोगों की त्योरियाँ चढ़ गईं । बड़ी नाराजगी और अनिच्छा से उन्होंने उनके घोड़ों को आगे बढ़ने के लिए रास्ता दिया । कुछ लोग चहारदीवारियों पर चढ़ गये और वहाँ से फब्तियाँ कसने लगे—सूअर, घोड़ों पर बैठे हैं ! कैसे गुर्राते हैं ! और एक ठनकती हुई आवाज ने उन्हें चिढ़ाकर कहा—आओ, पकड़ो, हम हैं नेता !

लिटिल रूसी गली के बीच मे अकेला खड़ा रह गया था । सवारों के दो घोड़े अयाल बिलाते हुए उसकी ओर झुके, जिससे वह एक तरफ को हट गया । इतने में मा ने उसका हाथ पकड़कर बड़बड़ाते हुए उसको अपनी तरफ खींचा ।

'तुमने तो वायदा किया था कि तुम पाशा के साथ-साथ रहोगे ? मगर यहाँ तो तुम अकेले ही चाकू को धार से भिड़े जा रहे हो ।'

'अपराध हुआ ।' लिटिल रूसी ने पवेल की तरफ मुस्कराते हुए कहा—ओहो ! देखो तो दुनिया मे कितनी पुलिस है !

'हाँ, हाँ !' मा बड़बड़ाई और एक भयंकर और कुचल डालनेवाली थकान ने एकाएक उसके हाथ-पैर ढीले कर दिये । उसकी आँखों के सामने अन्धकार छा गया । उसके हृदय के अन्दर उदासी और हर्ष एक विचित्र आँखमिचौनी-सी खेल रहे थे और उसकी बड़ी इच्छा हो रही थी कि दोपहर की छुट्टी खत्म होने का भोंपा जल्द ही बज जाता ।

फिर यह लोग चलते हुए गिरजाघर के पास के चौराहे पर जा पहुँचे, जिसके अहाते में चारों तरफ बहुत भीड़ हो रही थी । कुछ लोग खड़े थे, कुछ जमीन पर बैठे थे और लगभग पाँच सौ हँसमुख नौजवान और चहचहाती हुई स्त्रियाँ अपने बच्चों को साथ लिये बहुत लोगों के झुण्डों के चारों तरफ तितलियों की तरह दौड़ती हुई फिर रही थीं । भीड़ इधर से उधर झूम रही थी । लोग बार-बार सिर उठा-उठाकर चारों तरफ देखते थे । वे किसी चीज का बड़ी उत्सुकता से इन्तजार कर रहे थे ।

'मिटेन्का !' एक स्त्री का मधुर स्वर बहता हुआ कान में आया—अरे ! अपने ऊपर जरा रहम कर !

'चुप हो !' उसे कठोर उत्तर मिला ।

गम्भीर सिजोव शान्त और दिल पर चोट करनेवाले शब्दों में किसी से कह रहा

था—नहीं! हमें अपने बच्चों का साथ हरगिज नहीं छोड़ना चाहिए! वे हमसे अधिक बुद्धिमान हो गये हैं। वे हमसे अधिक वीर जीवन व्यतीत करते हैं। दलदल में पड़ने से हमारे पैसे किसने बचाये, उन्होंने! वह हमें कभी भूलना नहीं चाहिए। उसके लिए बेचारे जेल तक घसीटे गये, परन्तु लाभ हमें मिला। सभी गाँववालों को लाभ हुआ।

इतने में कारखाने का भोंपा बजा और उसकी गर्जती हुई आवाज में भीड़ की बातें डूब गईं। लोग एकाएक भड़के। जो लोग बैठे थे वे खड़े हो गये। पल-भर के लिए चारों ओर मृत्यु का-सा सन्नाटा छा गया। सब एकटक देखने लगे। बहुतों के चेहरे भय से पीले भी पड़ गये!

'बन्धुओ!' पवेल की दृढ़ आवाज गूँजती हुई आई।

उसकी आवाज सुनते ही मानों मा की आँखों में एकाएक सूखा और गरम कुहरा भर गया जिससे वह जलने लगी। परन्तु उसने फौरन ही अपने शरीर को झटककर शक्ति संचित की और झपटकर अपने बेटे के पीछे जा खड़ी हुई। लोग पवेल की तरफ मुड़े और उसकी तरफ ऐसे बढ़े जैसे चकमक पत्थर की तरफ लोहे का बुरादा खिंचकर जाता है।

'भाइयो! इस जीवन को त्यागने का अब समय आ गया है। अपने इस लोभ, द्वेष और अन्धकारमय जीवन को त्यागने का, इस हिंसा और इस असत्य के जीवन को त्यागने का—इस जीवन को जिसमें हमारे लिए सुख से रहने को कहीं स्थान नहीं है, जिसमें हम मनुष्य नहीं समझे जाते हैं।'

इतना कहकर वह ठिठका। लोग चुपचाप उसकी तरफ को बढ़ रहे थे। मा आँखें फाड़-फाड़कर अपने लड़के को देख रही थी और उसे उसके चेहरे में इस समय केवल नेत्र ही दीख रहे थे—उसके अभिमानपूर्ण, वीर और जलते हुए नेत्र।

'बन्धुओ! आज हमने साफ-साफ बता देने का निश्चय किया है कि हम कौन हैं। आज यहाँ पर हम अपना झण्डा फहराते हैं, अपना बुद्धि, सत्य और स्वतंत्रता का झण्डा! देखिए, अब मैं झण्डा फहराता हूँ।'

एक सफेद, पतला बाँस हवा में चमका और फिर नीचे झुककर जमीन से लग गया। क्षण-भर के लिए इस प्रकार आँखों से ओझल होकर लोगों के उठे हुए सिरों के ऊपर फिर कामकारों का विशाल झण्डा एक बड़े लाल पक्षी की तरह पांव फैलाकर उड़ने लगा।

पवेल ने जैसे ही हाथ ऊँचा करके बाँस हिलाया वैसे ही एक दर्जन हाथों ने लपककर झण्डे के चिकने और सफेद बाँस को थाम लिया। इनमें एक हाथ मा का भी था।

'कामगार जिन्दाबाद!' पवेल चिल्लाया, और सैकड़ों कण्ठों से यही आवाज गूँज गई।

'जिन्दाबाद! समाजवादी स्वतंत्र कामगारों की टोली जिन्दाबाद! हमारी टोली जिन्दाबाद! बन्धुओ, हमारी जननी जिन्दाबाद!'

चारों तरफ से गुनगुनाती हुई भीड़ उमड़ पड़ी—जो लोग झण्डे का अर्थ समझते थे, वे धक्का देते हुए उसके पास पहुँच गये। माजिन, सेमोयलोव और गसेव बन्धु पवेल से सटे खड़े थे। निकोले सिर झुकाये हुए भीड़ में आगे को रास्ता कर रहा था। कुछ दूसरे अनजान दमकती हुई आँखों के नौजवान भी मा को धक्का देकर आगे बढ़ रहे थे।

'दुनिया के कामगार जिन्दाबाद!' पवेल फिर चिल्लाया।

और आनन्द और शक्ति में बढ़ती हुई, आत्मा को जगा देनेवाली इस जयघोष की फिर हजारों कण्ठों से जोर से प्रतिध्वनि आई।

मा ने एक हाथ से पवेल का हाथ जोर से पकड़ा और दूसरे से लिटिल रूसी का। आँसुओं को रोकने के प्रयत्न में उसकी साँस फूल रही थी। फिर भी उसने आँसू नहीं गिराये। परन्तु उसके पैर काँपे और थरथराते हुए होंठों से वह चिल्लाई—अरे मेरे बच्चो! ठीक कहते हो! उधर देखो!

निकोले के चेचकरू चेहरे पर एक चौड़ी मुस्कराहट फैल रही थी। उसने झण्डे को घूरकर एक बार देखा और उसकी तरफ हाथ फैलाकर कुछ गरजा। फिर उसी हाथ से मा की गर्दन पकड़कर उसने मा को चूम लिया और खिलखिलाकर हँसने लगा।

'बन्धुओ!' लिटिल रूसी लोगों की आवाजों को अपनी गूँजती हुई आवाज से दबाता हुआ बोला—बन्धुओ! देखो, अब हमारे नये देवता की पवित्र सवारी निकलना प्रारम्भ होती है। हमारा सत्य और ज्ञान का देवता! बुद्धि और भलाई का देवता! हमें यह झण्डा लेकर बन्धुओ, एक लम्बी और कठिन राह पार करनी है। हमारा लक्ष्य दूर है, बड़ी दूर है। और काँटों का ताज बहुत निकट है। जिन्हें सत्य की शक्ति में श्रद्धा न हो, जिन्हे सत्य के लिए अन्त तक लड़ने की हिम्मत न हो, जिन्हे अपने-आप पर विश्वास न हो और जो कष्टों से डरते हों वे तुममे से अलग हो जायँ। हम उन्हीं को बुलाते हैं, जिन्हें हमारी विजय में विश्वास हो। जो हमारा लक्ष्य नहीं देख सकते, वे हमारे साथ न आये। उनके लिए हमारे साथ आने मे दुःख-ही-दुःख है। एक कतार में हो जाओ, बन्धुओ! पहिली मई का हमारा त्यौहार जिन्दाबाद! स्वतन्त्र कामगारों का त्यौहार जिन्दाबाद!

भीड़ और भी नजदीक खिंच आई। पवेल ने झण्डा हिलाया और वह हवा में फैलकर फहराने लगा—धूप की तरह मुस्कराता हुआ, लाल और चमकीला कामगारों का वह झण्डा!

'पुरानी दुनिया को खत्म करो!' फेड्या माजिन की गूँजती हुई आवाज आई; और बहुत-से लोग चिल्लाने लगे—पुरानी दुनिया को खत्म करो! पुरानी दुनिया का नाश हो! एक महान तरंग की तरह यह ध्वनि चारों ओर फैल गई। फिर एक आवाज आई, 'आओ अब अपने पैरों से हम पुरानी दुनिया की धूल झाड़ दें!'

मा माजिन के पीछे-पीछे सूखे होंठों से मुस्कराती हुई चली जा रही थी, और उसके

सिर के ऊपर से अपने लड़के और झण्डे की तरफ एक टक देख रही थी। उसके चारों ओर ताजे, जवान और हँसते हुए चेहरे चमक रहे थे, जिनकी आँखों में बिजलियाँ-सी दमक रही थीं, और उन सबके ऊपर उसका लड़का और ऐन्ड्री थे। वह उन दोनों की आवाजें सुन रही थी—ऐन्ड्री की मधुर और सुरीली आवाज के साथ-साथ उसके लड़के का संगीतमय स्वर मिला हुआ बार-बार आ रहा था।

'उठो, जागो, कामगार !

भूखे बन्दी, लो तलवार !'

और लोग शोर मचाते हुए झण्डे की ओर दौड़ रहे थे और सबके साथ मिलते हुए आगे की तरफ बढ़ रहे थे। उनके स्वर भी इसी क्रान्ति-गीत के विशाल स्वर में मिल रहे थे।

मा ने यह गीत पहले भी सुना था। प्रायः वह दबी हुई जबान से गाया जाता था। लिटिल रूसी प्रायः उसे अपने मुँह की सीटी मे बजाया करता था। परन्तु आज मा को ऐसा लग रहा था कि उसने आज पहली ही बार यह संग्राम में जुड़ने की पुकार सुनी थी...

'हम जाते हैं दुखियों से जुड़ने !'

गीत बह रहा था और उसके प्रवाह में लोगो के पाँव उखड़े जा रहे थे।

किसी का चेहरा घबराया हुआ मगर प्रसन्न, मा के साथ-साथ चल रहा था और एक काँपती और सिसकती हुई आवाज गिड़गिड़ाकर कह रही थी—अरे मिटिया! कहाँ जाता है ?

मा चलते-चलते हस्तक्षेप करती हुई बोली—जाने दो उसे ! मत घबराओ ! क्यों डरती हो ? पहले मुझे भी इसी तरह डर लगता था। देखो, मेरा लड़का सबसे आगे है, वह जो झण्डा लेकर चल रहा है, वही मेरा लड़का है।

'अरे जल्लादो ! किधर जा रहे हो ? उधर सिपाही खड़े हैं।' एकाएक मा का हाथ अपने सूखे हाथों में पकड़कर वह लम्बी-पतली स्त्री चिल्लाई—हाय राम ! यह नये पन्थ-वाले कैसा गाते हैं। मिटिया भी उनके साथ गा रहा है।

'दुःख मत करो।' मा बड़बड़ाई—यह बड़ा पवित्र काम है। विचार तो करो, ईसा भी संसार मे न आया होता, यदि पहले लोग उसके लिए मरे न होते।

इतने में सिजोव मा के पास आया। उसने अपना टोप सिर पर से उतार लिया और उसे गीत की ताल के अनुसार हिलाता हुआ बोला—आहो, खुल्लम-खुल्ला जा रहे हैं मा ; और एक गीत भी बना लिया है। आह। कैसा गीत है, अम्माँ। सुनती हो ?

'राजा को सेना चाहिए, दो अपने लड़कों की भेंट—'

गीत चल रहा था। सिजोव जोश मे भरकर बोला—किसी का डर नहीं है इन्हें। हाय, काश मेरा लड़का भी आज जिन्दा होता। मगर वह तो कब्र में सोता है। कार-खाने ने उसकी जान बहुत जल्द ले ली।

उसकी बातें सुनकर मा का दिल जोर से धड़कने लगा और उसकी चाल धीमी पड़ गई। फिर कुछ देर मे मा को एक जोर का धक्का लगा, जिससे वह एक दीवार से जा लगी। भीड़ का झुण्ड-का-झुण्ड उमड़ता हुआ उसके पास से गाता हुआ निकल गया—उठो, जागो, कामगार!

मा ने देखा कि भीड़ मे बहुत-से आदमी थे और यह देखकर उसे हर्ष हुआ।

ऐसा लग रहा था कि एक महान् दुन्दुभी गरजती हुई लोगों को उभाड़ रही थी, किन्ही के हृदय में वह लड़ने की इच्छा जगा रही थी, किन्हीं के मन में वह एक अस्पष्ट आनन्द की हिलोर उठा रही थी, किन्ही के अन्तर मे वह एक प्रकार की ज्वलन्त अधीरता और आतुरता जगा रही थी और किन्हीं को वह एक नई बात की चेतावनी दे रही थी। कुछ लोगों के हृदय मे आशा और चिन्ता का द्वन्द्व-युद्ध हो रहा था। वर्षो की उनके हृदयों मे एकत्र वेदना आज उनका गीत बनकर उमड पड़ी थी।

सब लोग सामने की तरफ देख रहे थे, जिस तरफ उनका लाल-लाल झण्डा हवा में पक्षी की तरह मँडराता हुआ फहरा रहा था। सभी कुछ-न-कुछ कहते हुए चिल्ला रहे थे। परन्तु उनके सब व्यक्तिगत स्वर उस गीत मे डूब गये थे, उनके इस नये गीत में, जिसमे पुराने भक्तों के गीतों के दुःख-पूर्ण स्वरो का अश नहीं था। उनका यह नया गीत उस आत्मा की आवाज नही थी, जो अकेली अन्धकार-पूर्ण मार्गों में घबराई और दुखी भटकती फिर रही हो अथवा जो भूख से कुचली हुई, भय से दबी हुई व्यक्तित्व-हीन और क्रांति-हीन हो। उनके संगीत में विकास के प्रयत्न मे छटपटानेवाली शक्ति की आह भी नहीं थी। न वह किसी ऐसे चिढ़ हुए साहस की पुकार थी जो अच्छा और बुरा सब कुछ कुचल डालने के लिए तैयार हो गया हो। न केवल स्वतंत्रता के लिए स्वतंत्रता छीनने के मूल पाशविक भाव का ही उनका संगीत दिग्दर्शन था। न वह बुराई का बदला लेने के भाव की हुँकार थी, जो नष्ट-भ्रष्ट कर डालने की शक्ति तो रखती है, परन्तु कुछ बनाने की शक्ति नहीं रखती। उनके गीत म पुरानी दुनिया को गुलामी की बातों मे से एक भी नहीं थी। वह तो सीधा, धारा-प्रवाह बहाता हुआ, एक नई फौलादी शक्ति की घोषणा करता हुआ, एक शान्त चुनौती दे रहा था। सादा और साफ वह लोगो को अपने पीछे एक ऐसी अनन्त राह पर जा एक दूरवर्ती लक्ष्य की ओर जा रही थी, खींचे लिये जा रहा था। परन्तु साथ-ही-साथ वह साफ तौर पर पुकार-पुकारकर उस राह की कठिनाइयाँ भी बताता जाता था। उनके इस सगीत से उत्पन्न होनेवाली निश्चल अग्नि मे एक पहाड़-सा पिघल रहा था—लोगों के उन दुःखों का काला पहाड़ जिन्हे वे आज तक सहते आये थे, उनके स्वाभाविक भावों का काला बोझ और उनका भविष्य का गन्दा भय, सभी घुल-घुलकर उसमें बहे जा रहे थे।

'सब मिलकर एक हो गये हैं।' किसी ने आनन्द से गरजकर कहा—ओ-हो-हो...

प्रत्यक्ष था कि इस मनुष्य के अन्तर मे ऐसे विशाल भाव उठ रहे थे, जिन्हें वह साधारण शब्दों में व्यक्त करने में असमर्थ था। अस्तु, वह कठिन कसम खाकर ही चुप

हो गया था। मगर द्वेष—एक गुलाम का अन्धा और काला द्वेष—उसके दाँतों में से होकर गरम-गरम बाहर निकल पड़ा था। प्रकाश पड़ने पर विघ्न होने के कारण उसके द्वेष ने साँप की तरह फुफकारकर शब्दों का जहर उगल दिया था।

'बदमाशो!' कोई मनुष्य टूटी हुई आवाज मे एक खिड़की पर से चिल्लाया और धमकाता हुआ घूँसा दिखाने लगा।

एक चीखती हुई आवाज मा के कानों को पार कर गई—शाहंशाह के खिलाफ विद्रोह! हुजूर फैज मंजूर जार के खिलाफ विद्रोह! नहीं-नहीं, हरगिज नहीं!

जोश में भरे हुए लोग जल्दी-जल्दी मा के पास से होते हुए गुजर रहे थे। स्त्री-पुरुषों का लावा की तरह एक महानद बहा जा रहा था, जो संगीत के प्रवाह मे सबको बहाये लिये जा रहा था; अपने आगे के मार्ग में से सब कुछ हटाता चला जा रहा था।

मा के हृदय मे बड़ी तीव्र इच्छा हो रही थी कि चिल्लाकर भीड़ से कहे—अरे, मेरे प्यारे बच्चो!

अपने से बहुत दूर, उस तरफ, जहाँ लाल-लाल झण्डा फहरा रहा था, मा ने बिना देखे ही अपने लड़के को मानो देखा और उसका विशाल माथा और श्रद्धा की ज्वलन्त अग्नि से चमकती हुई उसकी आँखें मा के सामने आप-से-आप आ गईं। मा अब भीड़ के सबसे पिछले भाग मे पड़ गई थी और लोग धीरे-धीरे निश्चिन्त, शान्त और उत्सुकता से सामने देखते हुए—उन तमाशबीनों की तरह शान्त, जो जानते है कि तमाशे का अन्त कैसे होगा—विश्वासपूर्ण, आपस मे इस प्रकार बातें करते हुए आगे की तरफ बढ़े जा रहे थे:

'पैदल सिपाहियों का एक दस्ता स्कूल के पास खड़ा है। दूसरा कारखाने के पास है।'

'गवर्नर भी आ गया है!'

'सच कहते हो?'

'हाँ, हाँ, मैंने अपनी आँखों से देखा है। वह भी यहीं है।'

किसी ने मजाक से गाली देते हुए कहा—उन्हें अब हमारा डर होने लगा है, क्यों? सिपाही आये है और साथ मे गवर्नर अपने...

'प्यारे बच्चो!' मा के हृदय मे धुकधुकी बढ़ रही थी। उसके चारों तरफ आवाजें निर्जीव और ठण्डी पड़ने लगी थी। वह भीड से दूर रह जाने के डर से जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाती हुई आगे की तरफ बढ़ी। भीड़ आगे जाकर ठिठकने लगी थी, जिससे मा को उसके पास पहुँचने मे देर नहीं लगी।

एकाएक ऐसा लगा कि भीड़ का अगला भाग किसी चीज मे टकराया, जिससे भीड़ भय से भिनभिनाती हुई पीछे की तरफ हटी। गीत का स्वर काँपकर जल्दी-जल्दी ऊँचा उठा; मगर फिर लोगों के विभिन्न स्वर, एक सघन हिलोरे में आगे बढ़ने से ठिठके और संघ-गीत से वे अलग होने लगे। इधर-उधर से कुछ आवाजें गीत को पहली ऊँचाई पर उठाती हुई उसे आगे बढ़ाने का प्रयत्न कर रही थीं—

'उठो, जागो कामगार !

भूखे बन्दी, लो तलवार !'

मा को भीड़ के आगे क्या हो रहा था, कुछ दीखता नहीं था। परन्तु वह भाँप गई थी। अस्तु, वह अपनी कुहनियों से भीड़ में रास्ता बनाती हुई आगे की तरफ बढ़ी।

बीसवाँ परिच्छेद

'बन्धुओ !' पवेल की आवाज मा के कानों मे आई।

'सिपाही भी हमारी ही तरह आदमी हैं। वे हमको नहीं मारेंगे। क्यों मारेंगे? क्या वे हमे इसी लिए मारेंगे कि हम उस सत्य का प्रचार करते हैं जो सभी के लिए आवश्यक है? हमारा सत्य उनके लिए भी आवश्यक है। अभी वे उसे नहीं समझते हैं; परन्तु शीघ्र ही समय आयेगा जब वे भी हमारे साथ उठ खड़े होंगे और लुटेरों और कज्जाकों के उस झण्डे के नीचे न चलकर जिसे असत्यवादी पशुवृत्ति के लोग उन्हें मान और मर्यादा का झण्डा बताते हैं, वे हमारे सत्य और स्वतन्त्रता के झण्डे के नीचे चलेंगे। हमें आगे की तरफ बढ़ना चाहिए, जिससे कि वे भी हमारा सत्य जल्दी ही समझ लें। आगे की तरफ, बन्धुओ! आगे की तरफ बढ़ो !'

पवेल की आवाज दृढ़ थी। उसके शब्द हवा में गूँजते हुए साफ सुनाई दे रहे थे। परन्तु भीड़ छँट चली थी। एक-एक करके लोग इधर-उधर हो चले थे। कुछ चहार-दीवारियों से जा लगे थे। भीड़ की शक्ल अब एक कील की तरह पतली हो चली थी जिसकी नोंक पर पवेल था; उसके हाथों में श्रमजीवियों का लाल झण्डा फहरा रहा था।

गली के उस छोर पर, मैदान का रास्ता रोके हुए मा ने एक छोटी खाकी आदमियों की दीवार-सी देखी, जो सब बिलकुल एक दूसरे की तरह थे और जिनके चेहरे नहीं दीखते थे। उनके कन्धों पर रखी हुई संगीनें एक तीक्ष्ण और कँटीली मुस्कान मुस्करा रही थीं। खाकी आदमियों की इस अटल दीवार की तरफ से मानो बर्फीली हवा का एक ठण्डा झोंका आकर भीड़ पर लगा जो मा की छाती से टकराता हुआ उसके हृदय मे तीर की तरह घुस गया।

मा रास्ता बनाती हुई भीड़ में घुसी चली जा रही थी। भीड़ के लोग उसे परिचित-से लग रहे थे। आखिरकार वह उन पर जाकर टिक गई और एक लम्बे, लँगड़े, मुँछ-मुण्डे मनुष्य से टकराई। उसने सिर घुमाकर मा पर एक कठोर दृष्टि डाली और सख्ती से पूछा—तुम कौन हो? क्या चाहती हो?

'मैं पवेल व्लेसोव की मा हूँ!' मा ने उत्तर में कहा और यह कहते हुए उसके घुटने काँपे और नीचे का होंठ खुल गया।

'ओ हो!' लँगड़ा बोला—अच्छा!

'बन्धुओ!' पवेल इतने में चिल्लाया—जिन्दगी-भर आगे की तरफ बढ़ो! हमारे लिए दूसरा कोई मार्ग नहीं है! गाओ! गाओ!

हवा में सन सनी फैल रही थी। झण्डा और ऊँचा उठा और झूमा और फिर सिपा-

हियों की दीवार की तरफ झपटते हुए कुछ लोगों के ऊपर लहराता हुआ आगे बढ़ा। मा यह देखकर काँपी और आँखें मूँदती हुई चिल्लाई—हाय रे ! हाय रे !

पवेल, ऐन्ड्री, सेमोयलोव और माजिन के अतिरिक्त भीड़ में से और कोई अब आगे की तरफ नहीं बढ रहा था।

फेड्या माजिन की लड़खड़ाती हुई आवाज धीमी-धीमी हवा मे काँपती हुई आ रही थी। उसने एक नया गीत गाना प्रारम्भ कर दिया था—मरते दम तक...

और उसके उत्तर मे दूसरे बन्धुओं की भारी और दबी हुई आवाजों ने गीत के पद का दूसरा भाग गाया—वीर लड़े तुम ! परन्तु इसके बाद के शब्द दो गहरे निःश्वासों मे डूब गये। वे लोग और आगे को बढ़े ; हर एक कदम की आहट सुनाई पड़ रही थी। और उनके साथ-साथ उनका नवीन गीत भी दृढ़ और निश्चल आगे बढ़ रहा था—तुमने जीवन उन पर वारे...

फेड्या की आवाज गाती हुई एक चमकीले रेशमी फीते की तरह हिलती हुई हवा मे लहरा रही थी।

'ओ...हो...हो...ो !' किसी ने उनका मजाक उड़ाते हुए हँसकर कहा—मर्सिया गा रहे है। कुत्ते कहीं के !

'मारो इस बदमाश को !' क्रोध में भरकर किसी ने उसके उत्तर में कहा।

मा छाती से अपने हाथ चिपटाये हुए खड़ी थी। उसने अपने चारो ओर घूमकर देखा तो भीड़, जो अभी तक काफी घनी थी, अनिश्चित होकर खड़ी हो गई थी ; और दस-बारह बन्धुओं को झण्डा लेकर अपने मे से निकलकर जाते हुए चुपचाप देख रही थी। इन दस-बारह बन्धुओं में से भी हर अगले कदम पर एक उछलकर इस प्रकार एक तरफ को चल देता था, मानों सड़क के बीच का हिस्सा ऐसा तप रहा था कि उसके तलुए झुलस गये हों।

'जालिम के दिन पूरे होंगे !' फेड्या के मुख से गीत के शब्द गूँजते हुए आ रहे थे और 'भूखे जिस दिन उठ बैठेंगे !' गाती हुई जोरदार, श्रद्धापूर्ण आवाज चुनौती देती हुई, संघ-ध्वनि में उसका समर्थन कर रही थी।

परन्तु संगीत का मधुर प्रवाह एकाएक इन शब्दों से भंग हुआ—देखो, वह हुक्म दे रहा है।

'सिपाहियो, संगीनों से हमला करो !' अफसर की सामने से चीरती हुई आवाज आई।

और फौरन संगीनें हवा में उठकर चमकती हुई घूमीं ; फिर वे नीचे को गिरीं और झण्डे का मुकाबला करने के लिए आगे बढ़ीं।

'मार्च !' अफसर ने चिल्लाकर कहा।

'आये !' कहता हुआ मा के पास खड़ा हुआ लँगड़ा जेबों मे हाथ डालकर एक तरफ को भागा।

मा एकटक सामने देख रही थी। सिपाहियों की खाकी कतार हिलती हुई पूरी सड़क पर फैल गई और अपने आगे चमकती हुई संगीनों की तीक्ष्ण दाँतों की कंघी बनाकर आगे की तरफ चुपचाप बढ़ी। कुछ आगे बढ़कर यह कतार फिर ठिठकी और मा अपने लड़के के पास पहुँचने के लिए जल्दी से लपकी। मा ने आगे पहुँचकर देखा कि ऐन्ड्री पवेल के सामने उसके शरीर को अपने भारी शरीर से ढाँके हुए खड़ा है। 'मेरे सामने से हटकर एक तरफ खड़े हो!' पवेल ने जोर से चिल्लाकर ऐण्ड्री से कहा; परन्तु ऐन्ड्री गाता हुआ वहीं खड़ा रहा। वह पीठ के पीछे हाथ बाँधे और अपना सिर उठाये हुए निश्चल खड़ा था। पवेल ने चिढ़कर उसे कन्धे से धक्का दिया और फिर चिल्लाकर कहा—मेरे बाजू मे खड़े हो! झण्डे को आगे होने दो!

'भाग जाओ!' इतने मे एक छोटे अफसर ने अपनी किरच घुमाते हुए पतली आवाज में चिल्लाकर कहा। और उसने अपने पैर उठाकर बिना घुटने झुकाये, उन्हें झुँझलाकर जमीन पर जोर से पटका। मा का ध्यान उसके जूतों की चमकीली पालिश के रंग की तरफ गया।

इस अफसर से जरा पीछे, एक तरफ को हटा हुआ, एक दूसरा लम्बा, बड़ी-बड़ी सफेद मूँछों का मनुष्य भी खड़ा था। वह एक लम्बा, भूरे रंग का ओवरकोट पहिने था, जिस पर लाल-लाल चौड़ी किनारी लगी थी और उसकी पतलून पर पीली-पीली धारियाँ थीं। उसकी आकृति भारी थी। लिटिल रूसी की तरह वह भी पीठ के पीछे हाथ बाँधे हुए खड़ा था। उसने अपनी मोटी और भूरी भौंहे ऊपर को चढ़ाते हुए पवेल की तरफ देखा।

मा आकाश की तरफ देख रही थी। हर साँस के साथ उसकी छाती मे एक रुदन उठ रहा था और उसका फूट-फूटकर रोने को जी चाहता था। उसका दम-सा घुट रहा था। परन्तु फिर भी किसी कारण से वह अपने आपको सँभाले हुए थी। उसके हाथ छाती पर थे। बार-बार भीड़ के धक्के लगने से वह लड़खड़ा रही थी। परन्तु इसी दशा मे वह विचार-हीन और संज्ञा-हीन-सी आगे बढ़ी चली जा रही थी। उसे लग रहा था कि उसके पीछे भीड़ छँटती जा रही थी; सिपाहियों की तरफ से आनेवाले ठण्डी हवा के झोंके ने उन्हे पतझड़ की पत्तियों की तरह बिखरा दिया था।

परन्तु लाल झण्डे के नीचे जो लोग अभी तक थे, वे खिच-खिचकर और भी एक-दूसरे के निकट होते जाते थे। उनके सामने सिपाहियों के चेहरे, सड़क-भर की चौड़ाई पर फैले हुए साफ दिखाई दे रह थे। वे राक्षसों की तरह चपटे, गन्दे, पीले-पीले एक कतार में फैले हुए लगते थे, जिनमे तरह-तरह की आँख जड़ी हुई-सी दीखती थीं, और उनके आगे की नई संगीनें अपने तेज दाँत चमका रही थीं। संगीनें लोगों के सीनों की तरफ बढ़ी हुई थीं, यद्यपि वे अभी तक सीनों को छू नहीं रही थीं। परन्तु संगीनों को अपनी तरफ बढ़ता देखते ही भीड़ के लोग एक-दूसरे से अलग हो-होकर, एक दूसरे को धक्का देते हुए बिखरने लगे थे।

अपने पीछे मा भागनेवालों के पैरों की आवाजें सुन रही थी। वे दबी और घबराई हुई आवाजों में चिल्ला रहे थे—भागो, भागो !

'व्लेसोव, भागो !'

'लौट आओ, पवेल !'

'झण्डा गिरा दो, पवेल।' व्यसोवश्चिकोव ने घबराकर कहा—लाओ, मुझे दो ! मैं छिपा दूँ।

यह कहकर उसने झण्डे का बाँस पकड़ा औ झण्डा पीछे को फिरा।

परन्तु पवेल ने उसे ललकारकर कहा—छोड़ दो !

निकोले ने पवेल की ललकार सुनते ही झंडा छोड़कर हाथ पीछे खींच लिये, मानो वे आग की लपट से झुलस गये हो। संगीत अब बन्द हो गया था और कुछ लोग घिर-कर पवेल के चारों ओर एकत्र हो गये थे। वह उनको चीरता हुआ आगे को बढ़ा और उसको इस प्रकार बढ़ता हुआ देखकर चारों तरफ एकदम सन्नाटा छा गया।

अब झण्डे को घेरकर खड़े होनेवाले बीस से अधिक आदमी नहीं थे। परन्तु वे निश्चल खड़े थे। मा को बड़ा भय लग रहा था और झण्डे के पास खड़े रहनेवालों से कुछ कहने को भी जी चाह रहा था। अस्तु, उसकी इच्छा हुई कि उन्हीं मे जाकर वह भी मिल जाय।

इतने मे लम्बे और बूढ़े अफसर की तुली हुई आवाज सुनाई दी—सरदार, उनसे झंडा छीन लो ! झण्डे की तरफ उसने इशारा करते हुए कहा, और एक छोटे कद के अफसर ने पवेल की तरफ झपटकर उसके हाथ से झण्डा छीनने का प्रयत्न करते हुए चिल्लाकर कहा—इसे नीचे गिराओ !

लाल झण्डा हवा में काँपा। दाहिने झुककर बाँये को झुका और फिर और भी ऊँचा उठ गया। छोटा अफसर एकाएक उछलकर पीछे हट गया और जहाँ खड़ा था वहाँ जमीन पर बैठ गया, निकोले घूँसा ताने हुए मा के पास से निकलता हुआ भागा।

'पकड़ो ! पकडो !' बूढ़ा अफसर जमीन पर पैर पटक-पटककर जोर से दहाड़ा। कुछ सिपाही उसका हुक्म सुनकर आगे को झपटे ; एक सिपाही बन्दूक घुमाता हुआ लपका।

झण्डा काँपता हुआ फिर झुका और खाकी सिपाहियों मे लुप्त हो गया।

'हाय रे !' किसी के कराहने की आवाज आई, जिसको सुनते ही मा जंगली जान-वर की तरह अपना गला फाड़कर चीखी। इतने में सिपाहियों की भीड़ के उस पार से पवेल की आवाज आई—मा, अलविदा ! प्यारी मा, अलविदा !

'जिन्दा है ! मुझे याद करता है !' मा के हृदय मे यह दो विचार तीर की तरह घुस गये।

'अलविदा, प्यारी अम्माँ !' ऐन्ड्री की आवाज भी आई।

हाथ हिलाती हुई मा अपने पञ्जो पर खड़ी होकर उन दोनों को देखने का प्रयत्न करने लगी। ऐन्ड्री का गोल-गोल चेहरा सिपाहियों के सिरों के ऊपर से उसे दिखाई दिया। वह मुस्कराता हुआ मा को सिर झुका-झुकाकर अभिवादन कर रहा था।

'आह, मेरे लाड़ले ! मेरे ऐन्ड्री ! मेरे पाशा !' मा जोर से चिल्लाई ।

'अलविदा बन्धुओ !' सिपाहियों के बीच में से वे दोनों फिर चिल्लाये ।

उत्तर में एक टूटी, बहुरंगी प्रतिध्वनि हुई जो खिड़कियों और छतों पर भी गूँजती हुई चली गई ।

मा को लगा कि कोई उसकी छाती मसोस रहा है । इतने में उसने अपनी आँखों के सामने छाये हुए अन्धकार में से उस छोटे अफसर का चेहरा देखा जो क्रोध से लाल होकर तना खड़ा था और मा से चिल्लाता हुआ कह रहा था—हट जा यहाँ से, बुढ़िया !

मा ने उसकी ओर तिरस्कार से घूरकर देखा । उसके पैरों के पास झण्डे का बाँस दो टुकड़ों मे टूटा हुआ पड़ा था ; एक टुकड़े में लाल कपड़े का एक चीथड़ा लिपटा था । मा ने झुककर उसे उठाया ; परन्तु अफसर ने फौरन झपटकर उसके हाथों से वह छीन लिया और उसे एक तरफ फेंकता हुआ पैर पटककर चिल्लाया—भाग जाओ यहाँ से ! मेरी बात नहीं सुनती ?

इतने में एक गीत सिपाहियों के मध्य में से उठा और इस प्रकार गाया जाने लगा—उठो, जागो, कामगार !

हर चीज घूमती हुई, चक्कर लगाती हुई और काँपती हुई लग रही थी । गीत शुरू होते ही फिर एकाएक एक मोटी और भयङ्कर तार के खम्भों से निकलनेवाली गुनगुनाहट का-सा शोर हवा में भर गया, जिसको सुनते ही अफसर उछलकर पीछे की तरफ मुड़ा और क्रोध में भरकर चिल्लाया—वह गाना बन्द करो, सारजेन्ट क्रेयनोव !

मा लड़खड़ाती हुई फिर झण्डे के बाँस के टुकड़े की तरफ बढ़ी, जिसे अफसर ने एक तरफ फेंक दिया था और झुककर उसे उठा लिया ।

'गाना बन्द करो !' जोर से एक आवाज ने डाँटकर कहा । और गरजते हुए गीत का राग टूटकर फिर बन्द हो गया । इतने में किसी ने मा के कन्धे पकड़कर उसको पीछे की तरफ मोड़ दिया और पीछे से ढकेलते हुए कहा—जाओ, भागो ! रास्ते मे से हटो ! मा ने मुड़कर देखा तो अफसर उस पर चिल्ला रहा था ।

करीब दस कदम पर मा ने लोगों की एक भीड़ देखी जो चिल्लाते, बुड़बुड़ाते और सीटी बजाते हुए सड़क पर से पीछे हट रहे थे । उनमें से बहुत-से सड़क से भाग-भागकर इधर-उधर के अहातों मे घुस रहे थे ।

'भाग जा, शैतान !' एक बड़ी-बड़ी मूँछोंवाले जवान सिपाही ने मा के कान मे चिल्लाकर कहा, और उसने मा के शरीर को अपने शरीर से रगड़ते हुए मा को सड़क के एक तरफ ढकेल दिया । मा झण्डे के बाँस का सहारा लेती हुई आगे बढती चली गई । वह जल्दी-जल्दी परन्तु छोटे-छोटे कदम रखती हुई जा रही थी, उसके पाँव बैठे जाते थे और वह इस भय से दीवारों से चिपट-चिपटकर चल रही थी कि कहीं गिर न पड़े । आगे से लोग हटकर उसके बाजू में आ रहे थे और पीछे से सिपाही चिल्ला रहे थे—भागो ! भागो !

इतने में सिपाही चिल्लाते हुए मा के आगे निकल गये । मा ठहर गई और उसने

घूमकर अपने चारों ओर देखा। सड़क के उस छोर पर पहुँचकर सिपाही एक कतार मे बिखरकर खड़े हो गये। उन्होंने मैदान का, जो बिलकुल खाली था, रास्ता बन्द कर लिया। और उनसे कुछ आगे दूसरे सिपाही लोगों की तरफ अब भी बढ़ रहे थे। मा ने पीछे की तरफ लौटना चाहा; परन्तु बिना समझे-बूझे वह आगे की तरफ बढ़ी चली गई और एक तंग गली के पास जा पहुँची जो बिलकुल खाली थी। वह उसी में घुस गई। गली मे रुककर उसने दुःख से एक निःश्वास लिया और कान लगाकर सुना कि चारों तरफ क्या हो रहा है। आगे की तरफ से कुछ आवाजे आ रही थीं। अस्तु, वह बॉस का सहारा लेती हुई उसी तरफ को बढ़ी। उसकी भौंहे ऊपर-नीचे हो रही थीं और वह पसीने से बिलकुल तर थी। उसके होंठ काँप रहे थे और हाथ हिल रहे थे। कुछ शब्द उसके हृदय में चिनगारियों की तरह उठ-उठकर उसके मन में चीखने के लिए आग्रह कर रहे थे।

आगे चलकर गली एकदम बाईं तरफ को मुड़ी और मोड़ पर पहुँचकर मा ने लोगों की एक घनी भीड़ देखी। उसमे से कोई उच्च स्वर में दृढ़ता से कह रहा था—संगीनों से सीना अड़ा देने का क्या उन्हें शौक है ! क्यों !

'देखो न ! सिपाही उनकी तरफ बढ़ रहे थे और वे निर्भयता से उनके सामने खड़े थे। क्यों ?'

'पाशा व्लेसोव को देखो !'

'और लिटिल रूसी को देखो !'

'हाँ, कैसा चुपचाप पीठ-पीछे हाथ किये, मुसकराता हुआ, शरीर को आगे की तरफ बढ़ाये हुए खड़ा था।'

'मेरे लाड़लो ! मेरे बच्चो !' मा भीड़ मे घुसती हुई चिल्लाई। लोगों ने आदर से उसके लिए रास्ता किया। किसी ने हँसकर कहा—देखो तो, उसके हाथ मे झण्डा है।

'चुप !' दूसरे आदमी ने उसे डाँटते हुए कहा।

मा हाथ फैलाकर चिल्लाई—ईसा मसीह के नाम पर मेरी बात सुनो ! तुम सब प्यारे लोग हो। तुम सब अच्छे लोग हो। अपने हृदय खोलो। निर्भयता से चारों ओर निश्शंक आँखे फिराकर देखो। हमारे बच्चे दुनिया के लिए जा रहे हैं। हमारे बच्चे अपना रक्त सत्य के लिए देने जा रहे हैं। उनके सच्चे हृदय हमें एक नया मार्ग दिखाते हैं—एक सीधा और चौड़ा मार्ग जो सभी को आराम देगा। तुम्हारे लिए, तुम्हारे बाल-बच्चों के लिए ही उन्होंने अपने जीवन इस पवित्र कार्य की वेदी पर चढ़ाये हैं। वे हमारे सबके लिए एक नया जीवन चाहते हैं—सत्य और न्याय का जीवन—जो सभी के लिए भलाई का जीवन होगा।

मा का हृदय फटा जा रहा था। उसका दिल बैठ रहा था और उसका तालू सूखा जाता था। उसके अन्तर मे नये-नये शब्द जन्म ले रहे थे—ऐसे महान् और सर्वव्यापी प्रेम के शब्द जो उसकी जबान को झुलसाये डालते थे और उसे उकसा-उकसाकर अधिक स्वतन्त्र और बलवान बना रहे थे। मा ने देखा, लोग उसके शब्द ध्यानपूर्वक सुन रहे

हैं, क्योंकि सब चुपचाप थे। मा को ऐसा लगा कि वे उसके शब्दों पर विचार करते हुए उसकी तरफ बढ़ रहे हैं और उसके निकट होते जाते हैं। अस्तु, मा के मन में इच्छा हुई—और यह इच्छा उसके हृदय में बिलकुल स्पष्ट थी—कि इन लोगों को लेकर अपने लड़के के पीछे जाय—अपने लड़के के पीछे और ऐण्ड्री के पीछे और उन सब लोगों के पीछे जो सिपाहियों के हाथों गिरफ्तार होकर अकेले हो गये थे और जिनका साथ भीड़ ने अब छोड़ दिया था। चारों तरफ से क्रोधपूर्ण चेहरों को अपनी ओर ध्यानपूर्वक देखते हुए देखकर वह मधुर आवाज में उनसे दृढ़ता से बोली—देखो, देखो! हमारे बच्चे दुनिया के आनन्द की खोज में जा रहे हैं। वे सभी के हित के लिए और भगवान के उस सत्य सिद्धान्त की पूर्ति के लिए जा रहे हैं, जिस सत्य सिद्धान्त के विरुद्ध द्वेषी, झूठे और लोभी मनुष्य हमें पकड़ते, बाँधते और दबाकर रखते हैं। मेरे प्यारे लोगो! तुम्हारे लिए ही उन हमारे लख्तेजिगरों ने, उन हमारे दिल के टुकड़ों ने सिर उठाया है। तुम्हारे सबके लिए, सारे संसार के लिए, सारे कामगारों के लिए ही उन्होंने आगे कदम बढ़ाया है। उनसे दूर मत भागो। उनके विरुद्ध मत जाओ। उनका साथ मत छोड़ो। अपने बच्चों को अकेला मार्ग में छोड़कर मत भागो। वे तुम सबको सच्चा मार्ग दिखाने और तुम सबको उस मार्ग पर ले जाने के लिए ही खुद आग मे कूद पड़े है। उन पर दया खाओ। अपने बच्चों को प्यार करो, उनको हृदय से समझो, अपने बेटों के हृदय पर विश्वास करो, क्योंकि उन्होंने तुम्हें सत्य का दर्शन कराया है। उनमें सत्य की ज्योति जग-मगाती है। वे सत्य के लिए जान देने को तैयार हैं। उन पर विश्वास करो।

इस प्रकार कहते-कहते मा का कण्ठ भर आया और वह लड़खड़ाई। एकदम उसके शरीर से जान-सी निकल गई। परन्तु किसी ने झपटकर उसका हाथ पकड़ लिया, जिससे वह गिरती-गिरती बच गई।

'वह भगवान के वचन बोल रही है।' एक मनुष्य ने भारी आवाज में आवेश से चिल्लाकर कहा—सत्य बचन कह रही है, भले लोगो! ध्यान से सुनो।

एक दूसरा आदमी मा पर दया खाकर बोला—देखो, बेचारी मरी जा रही है।

'मरी जा रही है कि हमारे मुँह पर मार रही है! मूर्खो! जरा समझो।' किसी ने उसे घृणापूर्ण उत्तर दिया। इतने में एक जोरदार, काँपती हुई आवाज भीड़ के ऊपर उठती हुई बोली—ऐ सच्ची श्रद्धा के लोगो! मेरे मिटिया बेचारे ने क्या बिगाड़ा है! वह अपने प्रिय बन्धुओं के पीछे ही तो गया है। यह सच कहती है। हम अपने बच्चों को क्यों छोड़ें। उन्होंने किसी का क्या बिगाड़ा है?

मा यह शब्द सुनकर काँप गई और चुपचाप आँसू बहाने लगी।

'अब घर जाओ निलोवना! जाओ मैय्या! तुम बहुत थक गई हो।' सिजोव ने जोर से कहा।

उसके चेहरे का रंग उड़ा हुआ था और उसकी बिखरी हुई दाढ़ी काँप रही थी। एकाएक भौंहें चढ़ाते हुए उसने अपने चारों ओर एक कठोर दृष्टि डाली और सोचा

तनकर खड़ा हो गया। फिर साफ आवाज में दृढ़ता से बोला—मेरे लड़के मैटवे को कारखाने ने कुचल डाला। सो तो तुम जानते ही हो। परन्तु वह आज जिन्दा होता तो मैं उसे स्वयं आज उन आगे जानेवालों के साथ भेजता। मैं खुद उससे कहता—जा मैटवे, तू भी उनके साथ जा। उनका कार्य सच्चा है। वे सत्य के मार्ग पर जा रहे हैं।

इतना कहकर वह एकदम चुप हो गया, और एक क्रोधपूर्ण शान्ति लोगों पर छा गई। वे एक महान और नवीन प्रकार के बवण्डर में पड-से गये। परन्तु उन्हें भय नहीं लग रहा था। सिजोव ने फिर हाथ ऊँचा करके हिलाते हुए कहना शुरू किया—मैं जो कहता हूँ वह एक बूढ़े आदमी के वचन है। तुम मुझे जानते हो? मैं यहाँ उन्तालीस वर्ष से काम करता हूँ। तिरपन वर्ष की मेरी उम्र हो चुकी है। मेरा भतीजा भी, जो एक सीधा, सच्चा और बुद्धिमान छोकरा है, आज पकड़ा गया है। वह भी सबके आगे, पवेल के साथ था—बिलकुल झण्डे के पास था। सिजोव ने फिर अपना हाथ हिलाया और झुककर मा का हाथ अपने हाथ में पकड़कर बोला—इस देवी ने सत्य कहा है। हमारे बच्चे सम्मान और बुद्धि का जीवन व्यतीत करना चाहते हैं। और हम उन्हें छोडते हैं! उन्हें अकेला छोडकर अपने घर चले आते हैं। क्यों? जाओ निलोवना, अब घर जाओ'

'मेरे लाडलो!' मा आँखों में आँसू भरे हुए उन सबकी ओर देखती हुई बोली—जीवन हमारे बच्चों के लिए है, सारी पृथ्वी उनके लिए है।

'जाओ, निलोवना! यह लाठी सहारे के लिए ले लो!' सिजोव ने मा को झण्डे का टूटा हुआ बाँस देते हुए कहा।

लोग मा की ओर दुःख और सम्मान की दृष्टि से देख रहे थे। वह चली और समवेदना की एक गुनगुनाहट भी उसके साथ-साथ चली। सिजोव आगे-आगे चुपचाप उसके मार्ग से लोगों को हटाता जाता था। लोग चुपचाप एक तरफ को हटते जाते थे। उनके मन में आँखें मूँदकर चुपचाप मा के पीछे-पीछे जाने की इच्छा हो रही थी। अस्तु, वे धीरे-धीरे आपस मे दबी जबान में बातें करते हुए, उसके पीछे चले जा रहे थे। घर के द्वार पर पहुँचकर मा उनकी तरफ मुडी और बाँस का सहारा लेते हुए उसने उनकी तरफ सिर झुकाकर उनका आभार माना।

'आपको धन्यवाद!' मा ने मधुर आवाज मे कहा और उस विचार को याद करती हुई, जो अब उसके हृदय में अच्छी तरह घर कर चुका था, मा बोली—हमारा प्रभु ईसा भी इस संसार मे न आता, यदि लोगों ने उसके लिए प्राण न दिये होते।

भीड़ चुपचाप मा की ओर देख रही थी।

मा ने फिर एक बार उसकी तरफ सिर झुकाया और घर के अन्दर चली गई। सिजोव भी सिर झुकाये हुए उसके पीछे-पीछे घुस गया।

लोग द्वार पर खड़े-खड़े आपस मे कुछ देर तक बातें करते रहे। फिर धीरे-धीरे वे भी चुपचाप बिखर गये।

इक्कीसवाँ परिच्छेद

दिन-भर मा नाना प्रकार के विचारों में डूबती और उछलती रही। पूरा दिन उसका एक प्रकार के मानसिक और शारीरिक ताप में बीता। उसकी आँखों में उन सब नवयुवकों की शक्लें नाचती थीं, झण्डा चमकता था, संगीत कानों में गूँजता था, छोटा अफसर एक सफेद धब्बे की तरह इधर-उधर कूदता फिरता था और जलूस के तूफान मे पवेल का ढला हुआ तेजस्वी चेहरा और ऐन्ड्री की मुस्कराती हुई आसमानी आँखें साफ नजर आती थीं।

दिन-भर वह कमरे में इधर से उधर, उधर से इधर टहलती रही। कभी खिड़की पर बैठकर सड़क की तरफ देखती थी। कभी नीची आँखें करके फिर टहलने लगती थी, और जरा-जरा देर मे चौंककर वह लक्ष्यहीन-सी बार-बार किसी वस्तु की खोज मे इधर-उधर देखती थी। उसने कई बार पानी पिया, मगर उसकी प्यास नहीं बुझी। वेदना और अपमान की उसके हृदय में धधकनेवाली अग्नि कम न हुई। आज के दिन के टूटकर दो टुकड़े हो गये थे। दिन का प्रारम्भ स-अर्थ और सन्तोषमय हुआ था, परन्तु, उसका अन्त एक अन्धकारमय मरुस्थल में हो रहा था, जो उसकी आँखों के सामने अनन्त तक फैला लगता था। उसके जड़ और परेशान मस्तिष्क मे बार-बार एक ही प्रश्न घूम-घूमकर उठता था—अब आगे क्या होगा!

कोरसनोवा मा के पास आई। वह हाथ हिला-हिलाकर, चिल्ला-चिल्लाकर खुशी से कूदी और नाची, उसने जोर-जोर से जमीन पर पैर पटके, इशारे किये, वायदे किये और किसी को हवाई धमकियाँ भी दीं। परन्तु इन सबका मा पर कोई असर न हुआ।

'ओहो!' उसने मेरया को चहकते हुए सुना—आखिरकार कारखाने के लोग उठे। सभी लोग उठे।

'हाँ!' मा ने उससे धीरे से सिर हिलाते हुए कहा। परन्तु मा की आँखें किसी अदृश्य चीज पर गड़ी हुई थीं जो भूत में मिल चुकी थी, जो ऐन्ड्री और पवेल के उससे जुदा होते ही उससे अलग हो गई थी। मा को रोना तक असम्भव हो गया था। उसका हृदय एकदम खाली हो गया था, होंठ सूखे जा रहे थे और तालू चटख रहा था। उसके हाथ थरथराते थे और एक ठण्डी, धीमी कँपकपी पीठ मे से होती हुई सारे शरीर को हिला रही थी।

सन्ध्या के समय पुलिस आई और मा ने बिना आश्चर्य अथवा भय के उसका सामना किया। पुलिसवाले चुपचाप, एक विचित्र दिखाव के साथ, मुँह पर बनावटी हर्ष और संतोष का भाव लिये हुए, घर मे घुसे। पीले मुँहवाले अफसर ने खीसें निकालते

हुए मा से कहा—कहो, अच्छी तो हो ! तीसरी बार तुम्हारे यहाँ आने का मुझे सौभाग्य मिल रहा है, क्यों ?

वह चुप रही और अपनी खुश्क जबान होंठों पर फिराने लगी। अफसर ने बहुत-सी बातें कीं। मा को एक पूरा धार्मिक व्याख्यान ही सुना डाला। मा ने देखा कि अफसर को अपने शब्द सुन-सुनकर स्वयं बड़ा आनन्द हो रहा था; परंतु मा पर उनका कोई असर न हुआ। उसके कान पर जूँ भी न रेंगी। उसे वे शब्द केवल वर्षा ऋतु के झींगुरों की झिनझिनाहट की तरह लगे। मगर जब वह कहने लगा कि यह तुम्हारा ही दोष है अम्माँ, जो कि तुम अपने लड़के के हृदय में ईश्वर और शाहंशाह जार के प्रति प्रेम और भक्ति पैदा नहीं कर सकीं, तब मा ने द्वार में खड़े होकर अफसर की तरफ देखते हुए, उदासीनता से कहा—हाँ, हमारे बच्चे हमारा न्याय करेंगे; और उन्हें इस प्रकार राह में छोड़ देने के लिए वे हमें दण्ड देंगे।

'क्या—?' अफसर चिल्लाया—जरा जोर से कहो।

'मैंने कहा कि हमारे बच्चे हमारा न्याय करेंगे।' मा ने आह भरते हुए दुहराया।

अफसर क्रोध से जल्दी-जल्दी कुछ बड़-बड़ाने लगा। परंतु उसके शब्द मा के चारों ओर मक्खियों की तरह केवल भिनभिनाते ही रहे। मा पर उनका कोई असर नहीं हुआ। मेरया कोरसनोवा को भी तलाशी का एक गवाह बनाकर पुलिस ले आई थी। वह मा के पास खड़ी थी। मगर वह मा की तरफ आँख उठाकर नहीं देखती थी; जब अफसर उससे कोई प्रश्न पूछता था, तो वह फौरन, जल्दी से, अदब से सिर झुकाकर, उत्तर देती थी—मुझे नहीं मालूम हजूर, मैं तो एक सीधी-सादी मूर्ख औरत हूँ। मैं मूर्ख, खोमचा लगाकर किसी प्रकार अपना पेट पालती हूँ। मैं कुछ जानती नहीं।

'अच्छा तो बको मत !' अफसर उसे डाँटकर कहता।

उसको अफसर ने निलोवा के शरीर की तलाशी लेने का हुक्म दिया तो उसने अपनी आँखें मिचकाईं और आँखें फाड़कर, डरी हुई अफसर से बोली—मैं ऐसा नहीं कर सकती, हजूर।

इस पर अफसर जमीन पर पैर पटककर उस पर चिल्लाया और मेरया ने आँखें नीची करके गिड़गिड़ाते हुए मा से धीरे से कहा—अच्छा, क्या किया जाय ? दे दो तलाशी निलोवना !

फिर जब वह मा के कपड़ों की तलाशी लेने लगी तो उसका मुँह लाल हो गया, और वह बड़बड़ाई—कुत्ते कहीं के !

'क्या बड़-बड़ कर रही है !' अफसर ने उस कोने की तरफ, जहाँ वह तलाशी ले रही थी, देखते हुए उससे ललकारकर पूछा।

'स्त्रियों के मामले की बात है, हजूर !' मेरया ने घबराकर लड़खड़ाती हुई जबान से उत्तर दिया।

तलाशी के वारण्ट पर हस्ताक्षर करने का हुक्म मिलने पर मा ने चमकते हुए अक्षरों में उस पर लिखा हुआ देखा—पेलागुइया निलोवना, एक मजदूर की विधवा।

तलाशी लेकर पुलिसवाले चले गये। मा खिड़की पर जाकर खड़ी हो गई। छाती पर हाथ बाँधकर, भौंहें चढ़ाये, वह टकटकी बाँधकर आकाश में देखने लगी। उसके होंठ दाँतों मे दबे थे, और वह अपने जबड़े इतने जोर से भींचे हुए थी कि उके दाँसतों में दर्द हो उठा। लैम्प का तेल जलकर खत्म हो गया था। अस्तु, बत्ती भभककर एक क्षण के लिए जली और फिर बुझने लगी। मा ने लैम्प फूँककर गुल कर दिया और जैसे पहले खड़ी थी, वैसे ही जाकर अन्धकार मे खड़ी हो गई। उसके हृदय मे किसी के प्रति द्वेष का भाव नहीं था। न उसके मन मे किसी हानि की आशङ्का थी। एक काला, ठण्डा, उदासी का बादल उसकी छाती मे उमड़-उमडकर उसके हृदय की धड़कन रोकने का प्रयत्न कर रहा था और उसका मस्तिष्क निरा शून्य था। बहुत देर तक वह खिड़की पर इसी दशा मे खड़ी रही। खड़े-खड़े उसके पाँव और देखते-देखते आँखें थक चलीं। उसने मेरया को खिड़की के पास रुककर पूछते हुए सुना - गई, निलोवना! अच्छा सोओ, अभागी, मुसीबतजदा औरत, सोओ! वे दुष्ट सबको सताते हैं, बदमाश! अन्त मे कपड़े बदलकर वह चारपाई पर जा लेटी और लेटते ही उसे गाढ़ी निद्रा ने आ घेरा, जैसे कि वह किसी गहरी खाई मे कूद पड़ी हो। सोकर वह स्वप्न देखने लगी। स्वप्न मे उसने देखा कि शहर को जानेवाली सड़क के किनारे दलदल के उस पार पीली रेत की एक पहाड़ी है। उस पहाड़ी से सटा हुआ एक रास्ता है, जो नीचे की खाई में चला जाता है। जहाँ से रेत ऊपर को ढोई जा रही है, वहाँ पवेल खड़ा है और ऐन्ड्री की आवाज से अपनी आवाज मिलाकर गा रहा है:

'उठो, जागो, कामगार!'

मा पहाड़ी के पास होती हुई शहर की सड़क पर गई और माथे पर हाथ टेककर उसने अपने लड़के की तरफ देखा। आकाश के विरुद्ध पवेल की प्रतिमा कटी हुई साफ दीखती थी। मा उसके पास जाने का निश्चय नहीं कर सकी। मा को लज्जा आ रही थी, क्योंकि वह गर्भ मे थी, और एक बच्चा उसकी गोद मे भी था। आगे बढने पर मा ने एक मैदान देखा जिसमे लड़के गेंद खेल रहे थे, बहुत-से लड़के थे, और उनकी गेंद लाल रंग की थी। बच्चा मा की गोद मे से उछलकर उन लड़कों की तरफ जाने के लिए जोर-जोर से रोने लगा। मा उसे चुप करने के लिए दूध पिलाने मुड़ी तो देखती है कि बहुत-से सिपाही पहाड़ी पर आ पहुँचे हैं और उन्होने उसकी तरफ संगीनों का मुँह कर दिया है। अस्तु, वह तुरन्त उस गिरजाघर की ओर लपकी जो मैदान के बीचों-बीच मे सफेद-सफेद बादलों का बना हुआ-सा खड़ा था और जिसकी चोटी आकाश से जा लगी थी। गिरजे मे किसी की अन्त्येष्टि-क्रिया हो रही थी। एक चौड़े काले बकस मे, जो मजबूती से बन्द कर दिया था, लाश रखी हुई थी। पादरी सफेद लबादा पहने हुए झूम-झूमकर गा रहा था:

'प्रभु ईसा मुर्दों में से उठ बैठे !'

पादरी के हाथ में धूपबत्तियाँ जल रही थीं ; उसने मा को झुककर प्रणाम किया और उसकी तरफ देखकर मुस्कराया। पादरी के बाल चमकीले लाल-लाल थे और उसका चेहरा सेमोयलोव की तरह हँसमुख था। गिरजे के गुम्बद के छोर से मोटी-मोटी किरणें पृथ्वी पर पड़ रही थीं, और गिरजाघर के गवैये मिलकर मधुर स्वर से गा रहे थे—प्रभु ईसा मुर्दों मे से उठ बैठे !

'इन लोगों को गिरफ्तार करो !' पादरी गिरजे के बीचो-बीच में एकाएक खड़ा होकर चिल्लाया। उसके शरीर पर से पूजा-पाठ के वस्त्राभूषण गायब हो गये और सफेद-सफेद कठोर मूँछें उसके मुँह पर निकल आईं। लोग गिरजे में से उठकर भागने लगे। घण्टा बजानेवाला घंटा फककर, लिटिल रूसी की तरह अपने सिर को हाथों में पकड़कर भागा। मा के हाथों से बच्चा छूटकर दौड़ते हुए लोगों के पैरों पर जा गिरा। लोग एक नंगे बच्चे को रास्ते में सामने पड़ा देखकर, डरकर उसके बाजू में होकर भागने लगे और मा घुटनों पर बैठकर चिल्लाती हुई उनसे प्रार्थना करने लगी—बच्चे को छोड़कर मत भागो। उसे अपने साथ लिये जाओ।

'प्रभु ईसा मुर्दों मे से उठ बैठे !' इतने मे उसने देखा कि लिटिल रूसी पीठ-पीछे हाथ बाँधे मुस्कराते हुए गा रहा है :

'प्रभु ईसा मुर्दों मे से उठ बैठे !'

लिटिल रूसी ने झुककर बच्चे को उठा लिया और लकड़ियों से भरी हुई एक गाड़ी पर रख दिया, जिसको धीरे-धीरे हाँकता हुआ निकोले धीरे-धीरे हँसता हुआ चला रहा था।

निकोले मा से कहने लगा—मुझे सख्त मशक्कत दी गई है।

सड़क पर कीचड़ हो रही थी। लोग मकानों की खिड़कियों में से सिर निकाले सीटियाँ बजा-बजाकर चिल्ला रहे थे और हाथ हिला रहे थे। आकाश स्वच्छ था और सूरज जोर से चमक रहा था। छाया कहीं नाम को नहीं थी।

'आओ, मा !' लिटिल रूसी उससे बोला—ओहो ! कैसा अच्छा जीवन है !

इतना कहकर लिटिल रूसी जोर से गाने लगा और दूसरी सब आवाजें उसकी दयार्द्र, हँसती हुई आवाज मे डूब गईं। मा उसके पीछे-पीछे चलती हुई उसे उलाहना देने लगी—क्यों, मेरा मजाक उड़ाता है !

परन्तु एकाएक उसके पाँव लड़खड़ाये और पाताल की तरफ जानेवाली एक खाई में वह गिरी और गिरते हुए उसके कानों में भयंकर चीत्कारों की एक ध्वनि आई।

उसकी आँख खुल गई और जागकर उसने देखा कि वह पसीने से लथपथ और काँप रही है। उसने कान लगाकर अपनी छाती के भीतर होनेवाले शोर को सुनने का प्रयत्न किया, परन्तु अपने अन्तर की शून्यता पर उसे स्वयं बड़ा आश्चर्य हुआ। कारखाने का भोंपा जोर-जोर से बार-बार चीख रहा था। उसकी आवाज से मा ने समझा

कि वह उसकी दूसरी पुकार थी। कमरा जैसा पुलिसवाले छोड़ गये थे, वैसा ही उल्टा-पल्टा पड़ा था। किताबें और कपड़े बिखरे पड़े थे। हर चीज पड़ी थी और फर्श की गर्द पैरों से कुचली हुई थी।

मा उठी और बिना मुँह धोये या प्रार्थना किये ही कमरा ठीक करने लगी। इतने में रसोईघर में रखे हुए लाल टुकड़े से लिपटे हुए बाँस पर उसकी नजर पड़ी। उसने गुस्से से झपटकर उसे उठाया और चूल्हे में फेंकने का इरादा किया। परन्तु फिर उसने एक विश्वास भरकर झण्डे का टुकड़ा बाँस में से निकाल लिया और उसे सम्हालकर तह करके जेब में रख लिया। फिर उसने ठण्डे पानी से घर-भर की खिड़कियाँ धोईं और फर्श धोया और अन्त में अपने मुँह-हाथ धोये। फिर कपड़े बदलकर वह सेमोवार चढ़ाकर रसोईघर की खिड़की में जा बैठी और फिर वही प्रश्न उसके दिमाग में चक्कर लगाने लगा—अब आगे क्या होगा ! मुझे और क्या करना होगा !

इतने में उसे ध्यान आया कि अभी तक उसने प्रार्थना नहीं की थी। अस्तु, वह मूर्तियों के पास गई और उनके सामने कुछ क्षण खड़ी रहकर फिर खिड़की पर जा बैठी। उसका हृदय बिलकुल शून्य था।

दीवार पर लगी हुई घड़ी का लटकन, जो सदा जोर से बजकर यह कहता-सा मालूम होता था—'मुझे अपने लक्ष्य पर पहुँचना है ! मुझे अपने लक्ष्य पर पहुँचना है !' आज बहुत धीरे-धीरे टिक-टिक कर रहा था। मक्खियाँ अनिश्चित-सी भिनभिना रही थीं, मानों कुछ करने के विचार में थीं।

एकाएक उसे एक दृश्य स्मरण हो आया जो उसने अपनी जवानी में एक बार देखा था। गाँव के एक पुराने बाग में एक बड़ा तालाब था। उसमें कमल बहुत खिलते थे। पतझड़ के दिनों में एक दिन वह इस तालाब के किनारे टहल रही थी। तालाब के बीच में उसने एक नाव देखी। तालाब उदास और शान्त था, और नाव उसके काले पानी पर गोंद से चिपकाई हुई-सी लगती थी। पानी पर बहुत-सी पीली-पीली पत्तियाँ बिखरी हुई पड़ी थीं। उस बिना केवट और बिना पतवार की नाव से, जो अकेली और निश्चल, मरी हुई पत्तियों और सुस्त पानी के बीच में खड़ी थी, एक अपार उदासी और स्पष्ट भाग्य-हीनता के भाव की लहर आ रही थी। मा तालाब के किनारे खड़ी-खड़ी बड़ी देर तक विचार करती रही कि इस नाव को किसने और क्यों किनारे से ढकेलकर वहाँ तक पहुँचा दिया है। आज उसे लग रहा था कि वह स्वयं उसी नाव की तरह थी, जो उस समय उसे एक ऐसे कफन की तरह लगी थी जो किसी मुर्दे के इन्तजार में हो। उसी दिन शाम को मा ने यह भी सुना था कि बाग के मालिक के एक मुनीम की स्त्री ने जो एक छोटी-सी औरत थी और बाल बिखेरे हमेशा जल्दी-जल्दी चला करती थी—उस तालाब में डूबकर जान दे दी थी।

मा इन विचारों को मानों अपने दिमाग से हटाने की चेष्टा में आँखे मलने लगी; परन्तु उसके विचार एक बहुरङ्गी फीते की तरह उसके आगे फड़फड़ाते ही रहे। पिछले

दिन की घटनाओं के विचार में डूबी हुई वह बड़ी देर तक इसी प्रकार बैठी रही और उसकी आँखें चाय के एक प्याले पर गड़ी रहीं, जिसकी चाय ठण्डी हो चुकी थी। धीरे-धीरे उसके मन में किसी बुद्धिमान और सादे मनुष्य से मिलने और उससे बातचीत करने की इच्छा हुई।

उसकी इस इच्छा के जवाब में ही मानों निकोले आइवानोविश खाना खाने के बाद उससे मिलने आया; परन्तु उसको घुसते देखते ही वह इतना डर गई कि उसके प्रणाम का उत्तर भी न दे सकी।

'अरे, भाई,' वह धीरे से बोली—तुम्हारे यहाँ आने की आवश्यकता नहीं थी अगर तुम भी यहाँ पकड़े गये तो पाशा नहीं बचेगा। तुम बड़े लापरवाह हो! अगर तुम्हें पुलिस ने यहाँ देख लिया तो तुम जरूर पकड़े जाओगे।

निकोले ने मा का हाथ जोर से दबाकर पकड़ लिया और अपना चश्मा सँभालकर नाक पर चढ़ाते हुए सिर उसकी तरफ झुकाकर मा को जल्दी-जल्दी समझाने लगा:

'मैंने पवेल और ऐन्ड्री से वायदा किया था कि उनके पकड़े जाने के दूसरे ही दिन मैं तुम्हें यहां से हटाकर शहर में रख आऊँगा।' वह नम्रता-पूर्वक परन्तु दुःख से बोल रहा था—क्या तुम्हारे घर की तलाशी हुई थी?

'हाँ, हुई थी। कोना-कोना छान डाला गया था, हर चीज को टटोला और सूँघा गया। उन लोगों को न तो लज्जा है, न उनके अन्तरात्मा है!' मा ने घृणा से कहा।

'उन्हें लज्जा से क्या काम?' निकोले ने कन्धे हिलाकर कहा और उसने मा को शहर जाने की आवश्यकता समझाई।

उसकी स्नेह-पूर्ण, हितचिन्तक बातों ने मा का दिल हिला दिया। वह उसकी तरफ धीरे-धीरे मुस्कराती हुई देखने लगी और वह जो विश्वास का भाव उसके हृदय में पैदा कर रहा था, उस पर वह आश्चर्य करने लगी।

'अगर पाशा की ऐसी ही इच्छा है,—मैं तुम्हें कोई तकलीफ नहीं दूँगी।'

'उस बात की फिक्र न करो, मा! मैं अकेला रहता हूँ, केवल मेरी बहन कभी-कभी आ जाती है।'

'मगर मैं वहाँ करूँगी क्या?' मा ने सोचते हुए जोर से कहा।

'अगर तुम कुछ करना चाहती हो, तो तुम्हें वहाँ काम भी करने को मिल जायगा।'

मा के काम का विचार अब बिलकुल अपने लड़के, ऐन्ड्री और उनके बन्धुओं के काम से सम्बद्ध हो चुका था। मा निकोले की तरफ बढ़ी और उसकी आँखों में देखते हुए उसने पूछा—हाँ! तुम कहते हो, वहाँ मुझे काम भी मिल जायगा!

'मेरी गृहस्थी छोटी-सी है। मैं अविवाहित हूँ।'

'मेरा मतलब वैसे काम से नहीं है। गृहस्थी का काम मैं नहीं चाहती।' वह धीरे से बोली—मेरा मतलब दुनिया के काम से है।

और उसने एक उदास निःश्वास लिया। निकोले के उसका मतलब न समझने से मा के हृदय पर चोट लगी और उसे बुरा लगा। निकोले उठा और मा की तरफ झुककर मुस्कराता हुआ विचार-पूर्वक बोला—अगर तुम्हारी इच्छा होगी तो वहाँ तुम्हें दुनिया का काम भी करने को मिल जायगा।

मा के दिमाग में तीर की तरह सीधा विचार आया—एक बार मैं पवेल की सहायता करने में सफल हुई थी। शायद फिर मैं सफल हो जाऊँ। जितने अधिक लोग उसके कार्य्य में शामिल होंगे, उतना ही अधिक उसका सत्य लोगों को साफ-साफ दीखेगा।

परन्तु यह विचार ही उसकी उस समय की इच्छा का उद्वेग और जटिलता का पूर्णतः दिग्दर्शन नहीं करा सकता।

'मैं क्या कर सकती हूँ!' उसने धीरे से निकोले से पूछा।

निकोले ने कुछ देर तक विचार किया और फिर क्रान्तिकारी कार्य के दाँव पेच वह मा को समझाने लगा। दूसरी बातों के साथ-साथ उसने एक यह बात भी कही, तुम पवेल से मिलने जाओ तो उससे उस किसान का पता भी मालूम कर सको तो बड़ा अच्छा हो, जिसने गाँववालों के लिए एक अखबार निकालने के लिए कहा था।

'मैं उसे जानती हूँ!' मा ने खुश होकर कहा—मैं जानती हूँ, वह कौन है और कहाँ रहता है। मुझे अखबार दो, मै उसे दे आऊँगी। मैं उसे किसानों मे ढूँढ़ लूँगी और जैसा तुम कहोगे वैसा ही करूँगी। वहाँ किसको ख्याल होगा कि मैं जब्त साहित्य लिये जाती हूँ! मैं कारखाने मे पर्चे ले जाती थी। कई मन पर्चे मैने कारखाने के अन्दर भगवान की कृपा से पहुँचा दिये थे।

मा के मन में पीठ पर पर्चो का बोरा लादे, हाथ में लाठी लिये, जंगलों और गाँवों को पार करते हुए, सड़कों पर यात्रा करने की इच्छा हुई।

'भैय्या, प्यारे भैय्या, तुम मेरे लिए ऐसा प्रबन्ध कर दो कि मैं इस कार्य मे भाग ले सकूँ। तुम जहाँ कहोगे वहाँ मैं जाऊँगी। मैं गरमी में चलूँगी; मरते दम तक चलती रहूँगी। मगर सत्य-मार्ग की यात्री जरूर बनूँगी। क्यों, यह मेरी जैसी एक स्त्री के लिए सौभाग्य की बात है न! यात्रियों का जीवन सुन्दर होता है। वे दुनिया में फिरते हैं। उनके पास कुछ नहीं होता। उनको रोटी के अतिरिक्त किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं होती। कोई उनसे बुरी बात नहीं कहता। वे चुपचाप, अकेले पृथ्वी पर विचरते हैं। उन्हीं की तरह मैं भी विचरूँगी। मैं ऐन्ड्री और पाशा के पास जाऊँगी। जहाँ वे होंगे, वहीं मैं भी जाऊगी।'

फिर जब माँ ने अपने-आपको प्रभु ईसा के नाम पर गाँवों की खिड़की-खिड़की और द्वार-द्वार पर भीख माँगते और दर-दर भटकते हुए विचारा तो उसके मुँह पर उदासी छा गई।

निकोले ने कोमलता से मा का हाथ थाम लिया और धीरे-धीरे अपने गरम हाथों से उसे सहलाने लगा। फिर घड़ी की ओर देखते हुए बोला—अच्छा, इसके सम्बन्ध में

फिर बातें करेंगे। मा, तुम अपने कन्धों पर बड़ा भयंकर बोझ लेना चाहती हो। जो कुछ तुम करना चाहती हो उस पर तुम्हें अच्छी तरह विचार कर लेना चाहिए।

'भैय्या, मुझे किसका विचार करना है! मुझे इस कार्य के अतिरिक्त और जीने के लिए है ही क्या! मैं किसी के और क्या काम आ सकती हूँ! पेड़ उगता है, उगकर लोगों को छाया देता है; उसकी लकड़ी लोगों को गर्मी देती है। जब मूक पेड़ भी जीवन को सहायक हो सकता है तो मैं तो मनुष्य हूँ।

'जब बच्चे, जो मनुष्यों का सर्वश्रेष्ठ रक्त होते हैं, जो हमारे दिल के टुकड़े होते हैं, अपनी स्वतंत्रता और अपना जीवन सत्य पर न्योछावर करते हैं, जब वे अपने ऊपर ज़रा भी तरस न खाकर मर मिटने के लिए आगे बढ़ते हैं, तब मैं मा होकर—क्या मैं एक तरफ खड़ी होकर तमाशा देखूँगी!'

यह कहते-कहते अपने बेटे का झण्डा लेकर भीड़ के आगे-आगे चलने का दृश्य उसकी आँखों के सामने झूलने लगा और वह कहने लगी—मैं क्या बैठी रहूँ जब कि मेरा बेटा सत्य के लिए जान दे रहा है! मैंने समझ लिया है—मैं अच्छी तरह जानती हूँ, वह सत्य के लिए लड़ रहा है। पाँच वर्ष से मैं इस अग्नि के पास रहती हूँ। मेरा हृदय भी पिघलकर जलने लगा है। मैं समझती हूँ, तुम क्या प्रयत्न कर रहे हो। मैं देखती हूँ, तुम कितना बोझ अपने कन्धों पर लेकर चल रहे हो। मुझे भी अपने साथ ले लो। ईसा के नाम पर मुझे भी ले लो, जिससे मैं भी अपने बेटे की मदद कर सकूँ। मुझे भी अपने साथ ले लो!

मा की बातें सुनकर निकोले का चेहरा पीला पड़ गया। उसने एक गहरी साँस ली और मुस्कराते हुए समवेदना-पूर्वक, ध्यान से उसकी ओर देखते हुए कहा—अपनी जिन्दगी मे पहली बार ही मैं ऐसे शब्द कानों से सुनता हूँ।

'भैया, मैं क्या कह सकती हूँ!' वह उदासी से सिर हिलाती हुई बेसब्री से हाथ फैलाकर बोली—मेरे पास अपना हृदय प्रकट करने के लिए उपयुक्त शब्द नहीं है—यह कहती हुई वह उठी और उस शक्ति की प्रेरणा से प्रेरित होकर जो उसके हृदय में जन्म ले रही थी, जो उसे अपने नशे में मस्त कर रही थी और जिसने अपनी हृदय की ग्लानि प्रकट करने के लिए उसकी जबान खोल दी थी, वह कहने लगी—यदि मेरे पास शब्द होते तो मैं हजारों को रुलाती। मेरे शब्द सुनकर अत्याचारी और निर्दयी भी काँप उठते। मैं उन्हें वैसा ही विष का प्याला पिलाती, जैसा उन्होंने प्रभु ईसु को पिलाया था, जैसा प्याला वे आजकल हमारे बच्चों को पिला रहे हैं। उन्होंने मा के हृदय पर घाव किये हैं, मा के!

निकोले उठा और काँपते हुए हाथों से अपनी छोटी दाढ़ी खींचता हुआ, एक अपरिचित स्वर में बोला—अम्माँ, वह दिन भी जल्द आयेगा।

इतना कहकर उसने चौंककर घड़ी की तरफ देखा और जल्दी से पूछने लगा—अच्छा तो फिर यह तय है? तुम शहर मे मेरे यहाँ आ जाओगी?

मा ने चुपचाप स्वीकृति देते हुए सिर हिलाया।

'कब? जितना शीघ्र हो सके, आ जाओ।' वह कोमल स्वर में कहने लगा—मुझे तो तुम्हारी चिन्ता रहेगी, सच!

मा उसकी ओर आश्चर्य से देखने लगी। वह उसकी कौन थी, जिसकी उसे चिन्ता थी! सिर झुकाये, लज्जा से मुस्कराता हुआ, वह मा के सामने एक सादी काली बण्डी पहने हुए झुका हुआ खड़ा था।

'तुम्हारे पास खर्च के लिए कुछ है?' उसने आँखे नीची करते हुए मा से पूछा।

'नहीं, कुछ नहीं।'

निकोले ने जल्दी से जेब में से बटुआ निकाला और उसे खोलकर मा को दे दिया।

'यह लो, इसमें से जितना चाहिए, ले लो।'

मा मुस्कराने लगी और सिर हिलाती हुई बोली—तुम लोगों की सभी बातें दूसरों से भिन्न है। तुम्हारे लिए धन भी कोई चीज नहीं है, लोग धन प्राप्त करने के लिए सब कुछ करते हैं। अपनी आत्मा तक का हनन कर डालते हैं; मगर तुम्हारे लिए रुपया ठीकरी की तरह है। वह केवल ताँबे और कागज के टुकड़े हैं, और शायद तुम लोग उन पर रहम खाकर उन्हें अपने पास रख लेते हो!

निकोले हँसने लगा।

'रुपया सचमुच बड़ी झंझट की चीज है। लेना और देना दोनों ही बुरे हैं।'

उसने मा का हाथ पकड़ लिया और स्नेह से उसे दबाते हुए फिर पूछा:

'अच्छा तो तुम जल्द ही आ जाओगी न, क्यों?'

और इतना कहकर वह चुपचाप, जैसा उसका स्वभाव था, चला गया।

चौथे दिन मा तैयार होकर निकोले के घर रहने को चली। जब उसके दोनों ट्रंक लादे हुए गाड़ी गाँव में से निकलकर मैदान मे पहुँची, तब उसने फिरकर गाँव की तरफ देखा और एकाएक उसे ऐसा लगा कि वह हमेशा के लिए वहाँ से विदा हो रही है—उस जगह से विदा हो रही है जहाँ उसने अपने जीवन का सबसे अन्धकारपूर्ण, सबसे कष्ट-पूर्ण समय व्यतीत किया था और जहाँ उसका वह नया विभिन्न कार्यों का जीवन आरम्भ हुआ था, जिसमे हर आनेवाले दिन में जानेवाला दिन विलीन हो जाता था, जिसमें नित्य नये दुःखों और नये सुखों, नये विचारों और नये भावों का अनुभव होता था।

गाँव का कारखाना एक बड़े भयावने काले मक्कड़ की तरह आकाश मे चिमनियाँ उठाये हुए फैला पड़ा था। उसके चारों तरफ एक मंजिल के छोटे-छोटे, सफेद-सफेद मकानों की कालिख से ढँकी हुई जमीन पर दलदल के किनारे-किनारे कतारें थीं। वे मकान अपनी छोटी-छोटी खिड़कियों से एक दूसरे को बड़ी उदासी से देखते थे। उनके ऊपर गिरजाघर कारखाने की तरह ही अपना लाल-लाल मुँह ऊँचा किये खड़ा था। परन्तु गिरजाघर की मीनार कारखाने की चिमनी से नीची लगती थी।

मा ने दुःख से एक निःश्वास लिया और अपनी कुरती का गला ढीला किया, क्योंकि वह उसका गला घोंट रहा था। मा के हृदय में उदासी भर रही थी, परन्तु यह उदासी ग्रीष्म के दिन की तपी हुई खाक की तरह सूखी थी।

गाड़ीवान घोड़े की लगामें झटक-झटककर उसे डाँट रहा था। उसकी टाँगे टेढ़ी थीं, कद छोटा था, सिर पर बाल बहुत कम थे और आँखें मुरझाई हुई थीं। झूमता हुआ वह गाड़ी के साथ-साथ इस प्रकार चल रहा था, मानो उसे इस बात की जरा भी चिन्ता नहीं थी कि गाड़ी दायें को जाती है, या बायें को।

'टिक-टिक ! टिक-टिक !' चिल्ला-चिल्लाकर वह घोड़ों को हाँकता हुआ, मिट्टी में सने बूट जूतों में घुसी हुई अपनी टेढ़ी-मेढ़ी टाँगों से अजब तरह से चल रहा था, जिसे देखकर हँसी लगती थी। मा बार-बार गाँव की तरफ देखती थी और वह भी उसे अपनी आत्मा की तरह ही शून्य लगता था।

'कहीं जाओ मैय्या, सभी जगह रोटियों के एक-से ही लाले हैं !' गाड़ीवान उदासीनता से बोला—गरीबी से बचने का कोई रास्ता नहीं है। सभी रास्ते गरीबी की तरफ ले जाते हैं। गरीबी से दूर एक भी रास्ता नहीं ले जाता !

उसका मुरझाया हुआ घोड़ा सिर झुकाये हुए सूखी जमीन पर जोर-जोर से पैर लथेड़ रहा था, जिसके पाँवों के नीचे धीरे-धीरे मिट्टी के टूटने की आवाज आ रही थी। चूलों में तेल न लगने से गाड़ी के पहिये चरचर-चरचर बोल रहे थे।

———

बाईसवाँ परिच्छेद

निकोले आइवानोविश एक शान्त और अकेली गली में एक बहुत पुरानी दो-मंजिला इमारत के एक भाग में रहता था। उसने तीन कमरे किराये पर ले रखे थे, जिनके आगे एक छोटा, घना बाग था। आस्मानी रंग की झाड़ियों की शाखाएँ और सनोबर के वृक्ष हिल-हिलकर अदा से उसकी खिडकियों पर झाँकते थे। उसका स्थान शान्त होने के साथ स्वच्छ भी था। वृक्षों की मूक छायाएँ कमरों के फर्श पर नाचती थीं। दीवारों पर किताबों से भरी हुई आलमारियाँ और गम्भीर कठोर मनुष्यों की तस्वीरें लगी थीं।

'अम्माँ, यहाँ तुम आराम से रह सकोगी?' निकोले ने मा को एक छोटे कमरे में ले जाकर, जिसकी एक खिडकी बाग की तरफ थी और दूसरी घास से भरे हुए मैदान की तरफ, उससे पूछा। इस कमरे की दीवारों पर भी किताबों की आलमारियाँ लगी थीं।

'मैं रसोईघर में ही ठीक रहूँगी।' वह बोली— —छोटे-से रसोईघर में रोशनी खूब आती है और वह साफ भी है। परन्तु मा को लगा कि उसका यह उत्तर सुनकर वह डर-सा गया, और उसके बहुत जोर देने पर जब मा ने कमरे में ही रहना स्वीकार कर लिया तो उसका चेहरा खिल गया।

उन तीन कमरों में एक विचित्र वातावरण था। उनमें साँस लेना आसान और आनन्दप्रद था। और उनमें आवाज़ें अपने-आप ही शायद इस विचार से धीमी रहती थीं कि दीवारों पर से घूरने वाले महानुभावों की शान्त विचार-तल्लीनता में जोर से बोलने से कहीं विघ्न न पड़े।

'इन फूलों को पानी नहीं मिलता है।' मा ने खिड़कियों में रखे हुए गमलों की मिट्टी टटोलते हुए कहा।

'हाँ, हाँ' उनका मालिक अपराधी की तरह बोला—मैं उन्हें बहुत चाहता हूँ. परन्तु उनकी देख-रेख के लिए मेरे पास समय नहीं रहता।

मा ने देखा कि निकोले भी अपने सुन्दर कमरों में सँभलकर आहट करके चलता-फिरता था, मानो वह भी वहाँ मेहमान ही था और वहाँ जो कुछ रखा था, वह सब उससे बहुत दूर था। वह कमरे में रखी हुए चीजों में से किसी चीज को उठा लेता और उसे ध्यान से देखने लगता था—उसको अपने मुँह के पास लाता और दाहिने हाथ की पतली-पतली उँगलियों से चश्मा ठीक करता हुआ आँख चढ़ाकर बड़े ध्यान से उसे देखता। उसकी चाल-ढाल से ऐसा लगता था कि वह भी मानों पहली बार ही उस कमरे में घुसा था जिससे वहाँ की हर एक चीज उसके लिए भी वैसी ही अपरिचित और विचित्र थी, जैसी मा के लिए। यह देखकर मा की झिझक शीघ्र ही जाती रही और वह भी निकोले के पीछे-पीछे चलती हुई चीजों को देख-देखकर उससे उनकी आवश्यक-

ताओं और इस्तेमाल के बारे में पूछने लगी। और निकोले मा को उस अपराधी की तरह उत्तर देने लगा जो यह जानता हुआ भी कि वह सदा ही अनुचित काम करता है, अपनी आदत से मजबूर होता है।

फूलों में पानी दे चुकने और पियानो पर बिखरे हुए संगीत के पन्नों को ठीक करके, सेमोवार की तरफ देखती हुई मा बोली—इस पर कलई की जरूरत है।

निकोले ने अपनी उँगली सेमोवार की धातु पर फिराकर नाक से लगाई और इतनी गम्भीरता से मा की तरफ देखा कि मा को अपने पर काबू रखना मुश्किल हो गया और वह मुस्कराने लगी।

रात को जब मा सोने के लिए लेटी और आज के बीते हुए दिन पर विचार करने लगी, तो तकिये से सिर उठा-उठाकर वह चारों तरफ आश्चर्य से देखने लगी। परन्तु उसे जरा भी झिझक नहीं लग रही थी। वह निकोले के विषय में चिन्तित थी और जो कुछ बन सके, उसके लिए करना चाहती थी, जिससे उसके एकाकी जीवन में कुछ आनन्द आये।

निकोले की लज्जा और निपट अज्ञानता पर मा को तरस आता था, और उसका ध्यान आते ही वह एक गहरी साँस लेकर मन-ही-मन मुस्कराने लगी। फिर मा के विचार ऐन्ड्री और पवेल की तरफ दौड़े और उसे फेड्या की जोरदार गूँजती हुई आवाज की याद भी आई। धीरे-धीरे पहली मई का सारा दृश्य उसकी आँखों के सामने आ गया। परन्तु आज उस दृश्य से नवीन स्वर और नवीन विचारों की तरंगें उठती लग रही थीं और आज के दिन की तरह ही विचित्र लगती थीं। इन नये विचारों और नई कठिनाइयों से परेशान होकर वह बेहोश होकर जमीन पर तो नहीं गिर पड़ी थी, परन्तु वे उसका दिल मानों हजारों सूइयों से छेद-छेदकर उसके अन्दर एक ऐसा शान्त क्रोध उत्पन्न कर रही थीं जो उसकी आँखें खोल रहा था और उसकी कमर सीधी कर रहा था।

'बच्चे दुनिया का सामना करने के लिए जा रहे हैं।' वह शहर की अपरिचित रात की आवाजें सुनती हुई विचार करने लगी। वह आवाजें दूर से आनेवाली आहों की तरह खिड़कियों में होकर आ रही थीं। वे बाग की पत्तियों को हिलाती हुई धीरे-धीरे कमरे में आकर खत्म हो जाती थीं।

सवेरे बड़े अँधेरे ही उसने उठकर सेमोवार को अच्छी तरह साफ किया और उसके नीचे आग जलाकर उसमें पानी भर दिया। फिर चुपचाप चाय की रकाबियाँ लाकर मेज पर रख दीं और रसोईघर में बैठकर निकोले के उठने का इन्तजार करने लगी। कुछ देर बाद उसने निकोले को खाँसते सुना और वह एक हाथ मे चश्मा पकड़े हुए और दूसरे से गला थामे हुए द्वार मे दिखाई दिया। मा ने उसके प्रणाम का उत्तर देकर सेमोवार ले जाकर कमरे में रख दिया। निकोले मुँह धोने लगा और मुँह धोने में फर्श पर पानी फैला दिया और साबुन और दाँत का ब्रुश भी नीचे गिरा दिया, और अपने इस फूहड़पन पर अपने-आप असन्तोष से बड़बड़ाने लगा।

फिर जब वे दोनों चाय पीने बैठे तब उसने मा से कहा—मैं जेम्सटवो बोर्ड में काम करता हूँ—बड़ा दुःखदायी काम है। मैं देखता हूँ, किस तरह किसान दिन पर दिन तबाह होते जा रहे हैं।

और मुस्कराते हुए उसने अपराधी की भाँति दुहराया—हाँ, ऐसा ही है। मैं रोज देखता हूँ। बेचारों को भर-पेट रोटी नसीब नहीं होती जिससे अल्पायु में ही वे कब्र में जा सोते हैं। भूखे मरने से उनके बच्चे भी कमजोर और बीमार पैदा होते हैं और पतझड़ की मक्खियों की तरह कुछ दिन जीवित रहकर वे भी मर जाते हैं। हम यह सब रोज अपनी आँखों से देखते हैं। हम इस तबाही के कारण भी अच्छी तरह जानते हैं; परन्तु हमें सिर्फ यह दृश्य देखने के लिए ही एक अच्छा वेतन दिया जाता है। यही हमारा काम है। बस, यही हम करते हैं।

'तुम नौकरी करते हो! विद्यार्थी नहीं हो?'

'नहीं। मैं पहले एक गाँव में शिक्षक था। मेरा बाप व्याटका में एक कारखाने का मेनेजर था, और मैं शिक्षक बना। परन्तु गाँव के किसानों को पुस्तकें पढ़ने को देता था, जिसके लिए मुझे जेल हो गई। जेल से छूटकर मैंने एक किताबों की दूकान पर नौकरी कर ली, परन्तु वहाँ भी सँभलकर न रहने से मुझे फिर पकड़ लिया गया और जलावतन करके साईबेरिया भेज दिया गया। वहाँ मेरा अधिकारियों से झगड़ा हो गया और मुझे श्वेत सागर के किनारे भेज दिया गया, जहाँ मुझे पाँच वर्ष तक रक्खा गया।'

उसकी आवाज शान्त और धूप से भरे हुए कमरे में भी चमकती-सी लगती थी। मा इसी प्रकार के बहुत-से किस्से सुन चुकी थी। परन्तु उसकी समझ में यह नहीं आता था कि उनको इस शान्त भाव से क्यों कहा जाता था! क्यों लोगों को इस प्रकार कष्ट देने के लिए किसी खास व्यक्ति को दोष नहीं दिया जाता था! क्यों इन कष्टों को अनिवार्य्य-सा मान लिया जाता था!

'मेरी बहन आज आनेवाली है।' निकोले ने कहा।

'क्या वह विवाहिता है?'

'विधवा है। उसके पति को भी जलावतन करके साईबेरिया भेज दिया गया था। वहाँ से वह निकल भागा। परन्तु रास्ते में उसे ठण्ड लग गई, जिससे उस बीहड़ प्रदेश में ही दो वर्ष हुए उसकी जीवनलीला समाप्त हो गई।'

'क्या, तुम्हारी बहन तुमसे छोटी है?'

'नहीं, वह छः वर्ष मुझसे बड़ी है। उसका मैं बड़ा आभारी हूँ। तुम स्वयं देखोगी कि वह कैसा सुन्दर बाजा बजाती है। यह उसी का पियानो है। यहाँ पर उसकी बहुत-सी चीजें रखी हैं। मेरी किताबें—'

'वह कहाँ रहती है?'

'हर जगह।' उसने मुस्कराकर उत्तर दिया—जहाँ कहीं एक क्रान्तिकारी वीर की जरूरत होती है, वहीं वह जा धमकती है।

'वह भी इस कार्य में शामिल है ?'

'हाँ, हाँ ।'

निकोले थोड़ा देर बाद अपने काम पर चला गया और मा विचार करने लगी—उस कार्य का विचार जिसमें लोग दिन को रात और रात को दिन किये हुए शान्ति और दृढ़ता से इस प्रकार लगे हुए थे । और इन लोगों के सम्मुख वह अपने-आपको अन्धकार में स्थित एक पर्वत की तरह खड़ा पाती थी ।

दोपहर को एक लम्बी, गठे हुए शरीर की स्त्री आई । जैसे ही मा ने उसे अन्दर लेने के लिए द्वार खोला, वैसे ही उसने घुसते ही अपना बेग जमीन पर पटककर व्लेसोवा का हाथ जल्दी से पकड़कर पूछा—तुम्हीं पवेल की मा हो ?

'हाँ, मैं ही हूँ ।' मा ने नवागन्तुक स्त्री का ठाट देखकर शर्माते हुए उत्तर दिया

'मैंने भी ऐसा ही समझा था ।' शीशे के सामने टोप उतारती हुई वह बोली—हमारी पवेल से बहुत दिनों से जान-पहिचान है । वह तुम्हारे सम्बन्ध में प्रायः हमसे बातें किया करता था ।

स्त्री की आवाज कुछ सुस्त थी और वह धीरे-धीरे बोल रही थी ; परन्तु उसकी चाल-ढाल तीव्र और उग्र थी । उसके विशाल, स्वच्छ, भूरे नेत्र जवानी से मुस्कराते थे परन्तु उसकी कनपटियों पर पतली-पतली झुर्रियाँ दीखने लगी थीं और कानों के ऊपर कुछ भूरे बाल भी चमकने लगे थे ।

'मुझे भूख लगी है । एक प्याला कहवे का मुझे पिला सकती हो ?'

'हाँ, हाँ, अभी लो ।' और मा ने कहवे का सामान आलमारी पर से उतारते हुए धीरे से पूछा—पाशा मेरे बारे में बातें करता था ?

'हाँ-हाँ, बहुत बातें करता था ।' उसने एक छोटी सी चमड़े की डिबिया निकाली और उसमें से एक सिगरेट निकालकर जलाते हुए पूछा—तुम्हें उसकी बड़ी चिन्ता रहती है, क्यों ?

मा स्प्रिटलैम्प की काँपती हुई नीली लौ की तरफ देखती हुई मुस्कराने लगी उसकी झिझक उसके मन में उमड़नेवाले आनन्द में डूब गई थी और वह मन-ही-मन कह रही थी—अच्छा ! मेरा बेटा मेरे बारे में बातें करता था ! फिर मा ने स्त्री से कहा—तुमने पूछा कि क्या मैं पाशा की चिन्ता करती हूँ ? हाँ, करती तो हूँ । मगर अब यह जानकर कि पाशा अकेला नहीं है, और न मैं ही अकेली हूँ, उतनी चिन्ता नहीं है, जितनी वैसे होती । फिर उसकी तरफ देखते हुए मा ने पूछा—तुम्हारा नाम क्या है ?

'सोफया ।' उसने उत्तर में कहा, और उसने मा से काम की बातें शुरू कर दीं—सबसे आवश्यक बात यह है कि बन्धुओं को बहुत दिनों तक जेल में नहीं रहना चाहिए । जितना जल्द हो सके, उनका अभियोग प्रारम्भ हो जाना चाहिए । उनको जलावतनी हो गई तो पवेल को वहाँ से भगा लायेंगे । साईबेरिया में पड़ा-पड़ा वह क्या करेगा । यहाँ उसकी बड़ी जरूरत है ।

मा अविश्वास से सोफिया की तरफ देखने लगी, जो जले हुए सिगरेट के टुकड़े को फेंकने के लिए जगह ढूँढ़ रही थी, और जिसने उस टुकड़े को अन्त में एक फूलों के गमले में फेंक दिया।

'अरे, उससे फूल खराब हो जायँगे।' मा के मुँह से एकाएक निकल गया।

'माफ करो। निकोले भी मुझसे सदा यही कहता है।' उसने जला हुआ सिगरेट का टुकड़ा गमले में से उठाकर खिड़की के बाहर फेंकते हुए कहा। मा ने उसकी तरफ शर्माकर देखा, और दोषी की तरह बोली—माफ करो। मेरे मुँह से निकल गया। मैं तुम्हें कुछ सिखाने के योग्य नहीं हूँ।

'क्यों नहीं? मैं लापरवाह हूँ। तुम मुझे क्यों नहीं सिखा सकती?' सोफिया ने कन्धे हिलाते हुए धीरे से पूछा—मैं समझती हूँ। परन्तु हमेशा भूल जाती हूँ। कितनी बुरी बात है। जले हुए सिगरेट के टुकड़ों को जहाँ-तहाँ, हर जगह फेंकना और हर जगह राख फैलाना बड़ी बुरी आदत है। विशेषकर स्त्री के लिए। घर में सफाई किसी परिश्रम का फल होती है, और सब प्रकार के परिश्रम का सम्मान करना चाहिए। अच्छा, कहवा तैयार हो गया? धन्यवाद! परन्तु! परन्तु एक ही प्याला क्यों बनाया? तुम नहीं पियोगी? और एकाएक उसने मा के कन्धे पकड़कर उसे अपनी ओर खींचा और उसकी आँखों में देखते हुए आश्चर्य से पूछा—क्यों, तुम इतना शर्माती क्यों हो?

मा ने मुस्कराते हुए जवाब दिया—मैंने तो अभी-अभी तुम्हें सिगरेट फेंकने के लिए झिड़का भी। क्या यह मेरे शर्माने का नतीजा था? मा का आश्चर्य उसके चेहरे पर व्यक्त था। 'कल ही मैं तुम्हारे घर आई हूँ, और मैं ऐसे व्यवहार करती हूँ, मानों मैं अपने ही घर हूँ और तुम्हें वर्षों से जानती हूँ। मुझे किसी का भय नहीं है। जो मेरे दिल में आता है, कह देती हूँ। यहाँ तक कि तुम्हारे दोष निकालती हूँ।'

'ऐसा ही होना भी चाहिए।'

'मेरा सिर चक्कर खा रहा है, मुझे आश्चर्य हो रहा है। मैं कितना बदल गई हूँ! पहले जब तक मैं किसी के साथ बहुत दिनों तक नहीं रहती थी, तब तक मुझे उससे दिल खोलकर बातें करने की हिम्मत नहीं होती थी। और अब मेरा हृदय ऐसा खुल-सा गया है कि मैं वे बातें तुरन्त कह उठती हूँ, जिनको किसी से इस प्रकार कहने का मैं पहले कभी स्वप्न भी नहीं देख सकती थी। और इतना ही नहीं, मैं बहुत कुछ कर डालती हूँ।' सोफिया ने प्रेम-पूर्ण दृष्टि से मा की तरफ देखते हुए एक दूसरा सिगरेट जलाया। 'हाँ, तुम पवेल को जलावतनी से भगा देने की बात कर रही थीं। मगर वहाँ से भागकर वह कैसे रह सकेगा?' मा ने आखिरकार अपने उस विचार को व्यक्त किया जो उसके दिमाग में चक्कर लगा रहा था।

'वह तो कठिन नहीं है।' सोफिया एक प्याले में अपने लिए कहवा भरती हुई बोली—जिस प्रकार और बीसियों भागे हुए लोग रहते हैं, उसी प्रकार वह भी रहेगा। मुझे अभी एक ऐसा आदमी मिला था, और मैं उसे एक जगह पहुँचाकर आ रही हूँ।

एक दूसरे बड़े काम के आदमी को, जो दक्षिण में हमारा काम करता था, पाँच वर्ष के लिए जलावतन किया गया था ; मगर वह वहाँ दो-तीन मास ही रहा। इस काम के लिए ही तो मैं इस ठाट-बाट से दीखती हूँ। वरना क्या तुम समझती हो, मैं सदा ऐसे ही कपड़े पहिनती हूँ ? यह ठाट-बाट और दिखावा मुझे असह्य है। मनुष्य स्वभाव से सादा है और सादा ही उसका वेश होना चाहिए। सुन्दर हो, परन्तु सादा।

मा ने टकटकी लगाकर उसकी ओर देखा और मुस्कराकर सिर हिलाते हुए विचार पूर्वक कहा—ऐसा लगता है कि उस दिन ने—उस पहली मई के दिन ने—मुझे बदल दिया है, मैं बड़ी दुविधा में पड़ गई हूँ। मुझे ऐसा लगता है कि एक साथ ही मैं दो सड़कों पर चल रही हूँ। जरा देर मे मेरी समझ में सब कुछ आने लगता है और जरा ही देर में बिलकुल अन्धकार मे डूब जाती हूँ। देखो, तुम्ही को लो। मैं देखती हूँ, तुम अच्छी तरह जीवन बितानेवाले घर की श्रीमती हो ; परन्तु तुम इस कार्य मे लगी हो, तुम पाशा को जानती हो और उसका आदर करती हो। धन्य है तुम्हें।

'मुझे क्यों ? धन्य तो तुम्हें है !' सोफिया ने हँसकर कहा।

'मुझे ! मैंने पाशा को इस कार्य के लिए तैयार करने के लिए कुछ नहीं किया।' मा ने एक आह भरकर कहा—इस वक्त जब मैं बोल रही हूँ, वह हठ से कहती रही—इस वक्त तो मुझे सब सादा और आसान लग रहा है। परन्तु फिर भी एकाएक यह सादी और आसान चीजें मेरी समझ के बाहर हो जाती हैं, और मैं चुप हो जाती हूँ। परन्तु पहले मैं सदा ही भयभीत रहती थी। अपनी जिन्दगी-भर में किसी-न-किसी चीज के भय में ही रही। परन्तु अब जब कि इतनी बहुत-सी बातें डरने के लिए हैं, मुझे बहुत कम डर लगता है। ऐसा क्यों है ? मैं नहीं समझ सकती। इसके बाद उपयुक्त शब्द जबान पर न आने के कारण मा चुप हो गई। सोफिया ने उसकी तरफ गम्भीरता से देखा और उसके बोलने का इन्तजार करने लगी। परन्तु मा को क्षुब्ध और भाव व्यक्त करने के लिए उपयुक्त शब्द न मिलते देखकर आखिरकार उसने ही बातचीत फिर प्रारम्भ की—एक दिन ऐसा आयेगा जब तुम सब कुछ समझने लगोगी। सबसे मुख्य वस्तु जो मनुष्य को श्रद्धा और शक्ति देती है, ऐसा काम होता है जिसमे वह उसे भला जानकर जी-जान से तल्लीन हो सके और जो सभी के हित के लिए हो। ऐसा प्रेम भी इस दुनिया मे है। दुनिया में सभी चीजें हैं और प्रेम करने के भी सभी अधिकारी हैं। अच्छा, अम्माँ, अब यह ठाट-बाट मैं उतार दूँ। बहुत देर इसे चढ़ाये हो गई है।

सिगरेट का टुकड़ा चाय के प्याले की रकाबी में रखकर, उसने सिर हिलाया और उसके सुनहरे बाल लहराते हुए पीछे को फैल गये। मुस्कराती हुई वह उठी और कपड़े बदलने के लिए चली गई। मा ने उसको उठकर जाते हुए देखा। फिर मा ने एक निःश्वास लिया और फिर घूमकर उसकी तरफ देखा। मा के विचार एक जगह ठिठककर रह-से गये थे और वह अर्ध-निद्रित-सी कष्टपूर्ण शान्ति में मेज पर से रकाबियाँ एकत्र करने लगी।

चार बजे निकोले लौटा। तब यह लोग खाना खाने बैठे। सोफिया बीच-बीच में हँसती हुई उन्हें आज का हाल सुनाने लगी—कैसे उसने जेल से भागे हुए मनुष्य को छिपाया, कैसा उसे छिपाने के लिए जाते हुए उसे जासूसों का डर लग रहा था, कैसे वह रास्ते में जो कोई उसे मिलता था उसी को जासूस समझती थी, और कैसा उस भागे हुए आदमी ने विनोदपूर्ण व्यवहार किया। उसकी बातें मा को उस कारीगर की शेखी-सी लगीं जो कारीगरी का कोई कठिन काम सफलता-पूर्वक समाप्त कर चुकने पर अपने ऊपर बड़ा सन्तुष्ट होता है। अब उसने एक सफेद, गरम, कन्धों से पैरों तक नीचा चुन्नटदार लहलहाता हुआ लबादा पहन लिया था। वह उस पर बड़ा अच्छा लगता था। इस वेश में उसका कद अधिक लम्बा और उसकी आँखें अधिक काली और उसकी चाल-ढाल कम घबराई हुई लगती थी।

'देखो, सोफिया!' निकोले खाना खाने के बाद बोला—तुम्हारे लिए एक और काम भी है। तुम्हें मालूम ही है, हम लोगों ने गाँवों के लिए एक अखबार निकालने का निश्चय किया था। परन्तु गिरफ्तारियाँ हो जाने से उन गाँववालों से हमारा सम्बन्ध टूट गया था। निलोवना उस आदमी को जानती है जो हमारे अखबार गाँवों में बाँटने का जिम्मा लेने को तैयार है। तुम निलोवना के साथ जाकर उससे जान-पहिचान कर लो। जितना शीघ्र हो सके, वहाँ हो आओ।

'बहुत अच्छा।' सोफिया बोली—चलोगी, निलोवना?

'जरूर चलूँगी!'

'कितनी दूर है?'

'लगभग पचास मील है।'

'अच्छा, अब मैं जरा बाजा बजाऊँगी। तुम्हें संगीत से शौक है, निलोवना?'

'मेरी चिन्ता मत करो। जो तुम्हारे जी में आये सो करो, मानों मैं घर में हूँ ही नहीं।' मा ने सोफा के एक कोने में बैठते हुए कहा। मा ने देखा कि भाई और बहन उसका ध्यान न करके अपने-अपने काम में लग गये। फिर भी बीच-बीच में बार-बार उनकी बातों में भाग लेने लगती थी, मानों वे अव्यक्त रूप से उसे अपनी बातों में खींच लेते थे।

'सुनो, निकोले, यह ग्रीग का बनाया हुआ गीत है। मैं आज ही इसे लाई हूँ। खिड़की बन्द कर दो।' इतना कहकर लड़की ने पियानो खोला और धीरे से बायें हाथ की उँगलियाँ उसके परदों पर रखीं, जिनके रखते ही पियानो के तारों ने एक घनी और रसीली तान छेड़ दी। पियानों का दूसरा स्वर एक गहरी, लम्बी साँस लेता हुआ, पहले से मिला और उन दोनों स्वरों से मिलकर एक महान् और विस्तृत स्वर उठा जो अपने भार से स्वयं थरथराने लगा। नये-नये और विचित्र स्पष्ट स्वर उसके दाहने हाथ की उँगलियों के नीचे से बज-बजकर निकलने लगे, और भयभीत-से चारों तरफ उड़-उड़कर भागने, घूमने, झूमने और आपस में एक-दूसरे से डरे हुए पक्षियों के एक झुण्ड की

तरह सिर टकराने लगे। मन्द भूमिका में नपे-तुले, मधुर, तूफान से थकी हुई समुद्र की लहरों के राग की भाँति, अर्ध स्वर पियानो से उठ रहे थे। कोई स्वर चिल्लाकर एक ऊँचा, क्षुब्ध, दुःखपूर्ण विग्रह का चीत्कार-सा करता, ललकारता, बेबसी और तकलीफ से प्रार्थना-सी करता और अन्त में निराश होकर चुप हो जाता। फिर कुछ देर में अपनी दुखभरी तानें सुनाने लगता, जो कभी गूँजती हुई और साफ होती थीं, और कभी दबी हुई और उदास होती थी। और इस स्वर के प्रति-उत्तर में मन्द स्वर की मोटी तरंगे उठती थीं जो विशाल और गूँजती हुई, विरक्त और निराश-सी होती थीं—और वे इस भयङ्कर राग में मिली हुई प्रार्थनाओं, आहों, ललकारों को और गूँजती हुई वेदनाओं को अपने प्रवाह और गहराई में डुबा देती थीं। कभी यह राग एकदम ऊपर को उड़ता हुआ, सिसकियाँ लेता और विलाप करता-सा लगता था और कभी एकदम नीचे को गिरता, धीरे-धीरे रेंगता और घने, थरथराते, झनझनाते हुए, स्वरों की तरङ्गों पर इधर-उधर झूलता, लड़खड़ाता हुआ, उनमें लुप्त हो जाता था। और फिर एकाएक एक निराश, शान्त, सम, मृदुल स्वर मे फूट फूटकर वह कमरे में फैलता और गूँजता हुआ, पिघल-पिघलकर, रसीले स्वरों की विशाल झनकारों में घुल-मिल जाता, जो जोर से शान्त और अथक निःश्वास भरती थीं।

पहले इन स्वरों ने मा पर कोई असर नहीं किया; क्योंकि वे उसकी समझ में ही नहीं आते थे। वे उसे केवल एक गूँजती हुई अव्यवस्थित झंकार-सी लगीं। उलझे हुए स्वरों में से जान-पहचान लेना उसके कानों के लिए असम्भव था। अस्तु, वह अर्ध-निद्रित-सी निकोले की ओर, जो पलथी मारे सोफा के उस किनारे पर बैठा था, और सोफिया की कठोर मुद्रा को जिसका सिर सुनहरे बालों से ढका था, देख रही थी। धूप चमचमाती हुई कमरे में पड़ रही थी। एक किरण, विचारों में मग्न-सी काँपती हुई, पहले उसके बालों और कन्धों पर आकर बैठी और फिर पियानो के परदों पर होती हुई जाकर उसकी उँगलियों के नीचे नाचने लगी। खिड़की के बाहर वृक्ष की शाखाएँ झूम रही थीं। कमरे में संगीत भर रहा था। न जाने क्यों इन सबमें मा का दिल हिल गया। एक ही ऊँचाई के तीन स्वर फेड्या माजिन की गूँजती हुई आवाज की तरह अपने प्रवाह में बहते हुए चश्मे में पड़ी तीन रुपहली मछलियों की तरह चमक रहे थे। बीच-बीच में दूसरे स्वर भी आकर उन स्वरों से मिल जाते थे और गीत को इतना सादा बना देते थे कि हृदय दया और उदासी से भर जाता था। मा इन स्वरों की बाट देखने लगी। उनकी ध्वनि का वह इन्तजार करने लगी। गरजते हुए स्वरों की अव्यवस्था में से चुनकर केवल इन तीन स्वरों का संगीत ही उसके कान सुनने लगे और शेष संगीत के लिए वे बहरे बने रहे।

और न जाने क्यों इस संगीत को सुनते हुए उसकी आँखों के आगे अपने धुँधले अतीत के भूले हुए अत्याचारों का चित्र खिंचने लगा।

उसे एक दिन की याद आई जब उसका पति रात को बड़ी देर से नशे में चूर घर

लौटा था और उसका हाथ पकड़कर उसे चारपाई पर से नीचे फेंककर और उसकी कोख में एक ठोकर लगाकर बोला था—निकल जा! मैं तुझसे थक गया हूँ! जा, अभी निकल जा! और उसकी मार से बचने के लिए उसने अपने दो वर्ष के बच्चे को जल्दी से उठाकर ढाल की तरह अपने ऊपर रख लिया था, और नङ्गा बच्चा एकदम डरकर और ठण्ड से घबराकर रोने और हाथ-पैर पटकने लगा था।

'निकल जा!' उसके पति ने गरजकर फिर कहा था और वह उछलकर उठ खड़ी हुई थी और दौड़कर रसोईघर में जाकर एक जाकेट कन्धों पर डालकर, बच्चे को शाल से ढाँकती हुई, चुपचाप नंगे पाँवों, बदन पर केवल एक कमीज और जाकेट पहने घर से निकलकर सड़क पर जा खड़ी हुई थी। मई का महीना था। रात सुहावनी थी। ठण्डी और सीली सड़क की मिट्टी उसके पैरों में चिपक-चिपककर उँगलियों के बीच में घुसने लगी थी। बच्चा रोकर हाथ-पैर पटक रहा था, जिससे उसने अपनी छाती खोलकर बच्चे को अपने शरीर से चिपटा लिया था, और बच्चे को पुचकारती हुई, भयभीत सड़क पर आगे को बढ़ने लगी थी। इतने में पूर्व दिशा में प्रकाश होने लगा था, जिससे उसे डर और लज्जा होने लगी थी कि कोई घर से बाहर निकल आया तो उसे इस अर्धनग्न अवस्था में देखेगा। अस्तु, वह दलदल की ओर वहाँ जाकर घने वृक्षों की छाया में जमीन पर बैठ गई थी और वहाँ बड़ी देर तक वह बैठी-बैठी निश्चल आँखों से टकटकी लगाये, आँखें फाड़-फाड़कर अन्धकार में देखती हुई, दबी जबान से एक उदास लोरी अपने बच्चे को सुलाने और साथ-ही-साथ शायद अपने दिल को बहलाने और अपने प्रपीड़ित हृदय के लिए अलापने लगी थी।

फिर जब एक सफेद पक्षी उसके सिर के ऊपर से झपटकर उड़ता हुआ निकल गया था, तब उसकी निद्रा भङ्ग हुई थी और वह दिन निकला देखकर फौरन खड़ी हुई थी और ठण्ड से काँपती हुई घूँसों की मार और अपमान सहने के लिए घर लौट गई थी।

इतने में अन्तिम बार पियानो के एक भारी और गूँजते हुए तार ने एक गहरा, उदासीन और ठण्डा निःश्वास-सा लिया और यह निःश्वास उठता हुआ आकाश में लुप्त हो गया।

सोफिया ने सिर फिराकर भाई से कोमल स्वर में पूछा—क्यों, संगीत पसन्द आया?

'बहुत अच्छा!' उसने सिर हिलाते हुए कहा—बहुत पसन्द आया।

सोफिया ने मा के चेहरे की ओर भी घूमकर देखा; परन्तु उससे वह कुछ न बोली।

'लोग कहते हैं,' निकोले ने सोचते हुए और सोफा पर पीठ टेकते हुए कहा—कि संगीत को सुनते समय कोई विचार नहीं करना चाहिए। परन्तु मैं ऐसा नहीं कर सकता।

'मैं कर सकती हूँ।' सोफिया ने तार की एक सुरीली झनकार करते हुए कहा।

'मैं जो अभी संगीत सुन रहा था उसमें मुझे ऐसा लग रहा था कि मानों लोग ललकार-ललकारकर प्रकृति से प्रश्न पूछते हैं। वे विलाप करते हुए, कराहते और क्रोध

से झुँझलाकर चिल्लाते हैं—यह क्यों है ? परन्तु प्रकृति उन्हें कोई उत्तर नहीं देती, और चुपचाप अपनी सृजनक्रिया में लगी रहती है, मानों वह अपनी खामोशी से ही उन्हें जवाब देती है—मुझे खुद नहीं मालूम है कि यह सब क्यों है !

मा ने निकोले की बातें सुनीं। मगर उसकी समझ में वे नहीं आईं ; न उन्हें समझने की उसकी इच्छा ही हुई। उसके अन्तर में अतीत की स्मृतियाँ प्रतिध्वनित हो रही थीं, और वे संगीत सुनने के लिए आतुर थीं। उनके साथ-साथ उसके हृदय में यह विचार भी उठ रहा था—एक इन लोगों का जीवन है। भाई और बहन मित्रों की तरह शान्ति और आनन्द से रहते हैं। इनके घर में सगीत है, पुस्तकें हैं। यह एक-दूसरे को गालियाँ नहीं देते। नशा नहीं करते। न अपने आराम के लिए दूसरों से लड़ते हैं। इनको एक-दूसरे का अपमान करने की इच्छा ही नहीं होती, जैसी नीचे की श्रेणी के लोगों को होती है।

सोफिया ने एक सिगरेट जलाया और जल्दी-जल्दी उसे पीती हुई धुआँ उड़ाने लगी।

'यह कोस्टया का प्रिय गीत था।' वह निकोले से कहने लगी और उसके मुँह से उठते हुए धुएँ के बादलों ने जल्दी से उसके चेहरे को नकाब से ढँक लिया। फिर उसने एक मन्द और विलाप-पूर्ण तान छेड़ते हुए कहा—मुझे उसको संगीत सुनाने में कैसा मजा आता था ! तुम्हें याद है, संगीत को वह भाषा में कितनी अच्छी तरह समझाया करता था ! इतना कहकर वह रुकी और फिर मुस्कराती हुई बोली—वह कितना भावुक था ! कैसे सुन्दर सागर की तरह विशाल उसके भाव थे ! कैसा पूर्ण मनुष्य !

'अपने पति को याद करती है !' मा आश्चर्य से सोचने लगी—और साथ-साथ मुस्कराती भी है !

'कितना सुख उस मनुष्य ने मुझे दिया !' सोफिया धीमी आवाज से, मधुर संगीत के-से स्वर में बोली—उसमें कितना जीवन था ! सदा आनन्दी और सजीवन, बच्चों की तरह हँसता रहता था।

'बच्चों की तरह !' मा ने अपने मन में उसके शब्द दुहराये, और इस प्रकार सिर हिलाया मानों वह उसकी इस बात से सहमत थी।

'हाँ !' निकोले अपनी दाढ़ी खुजलाता हुआ बोला—उसकी आत्मा सदा ही गाती-सी रहती थी।

'जब मैंने पहले-पहल यह गीत उसे सुनाया था, तब उसने उसका अर्थ यों किया था।' सोफिया ने घूमकर भाई की तरफ देखा, और धीरे से हाथ फैलाते हुए, धुएँ के आसमानी बादलों में घिरी हुई, मन्द, हर्षित स्वर में कहने लगी—कहीं बहुत दूर निर्जन उत्तरी सागर में, भूरे और ठण्डे आकाश के नीचे, एक जनहीन काला द्वीप है। उस द्वीप की एक बीहड़ हिमाच्छादित पहाड़ी का चिकना चमकीला और सपाट किनारा भूरी झागदार लहरों में सीधा घुसा चला गया है। नीली-नीली बर्फ के बड़े-बड़े टुकड़े शत्रुओं की तरह जलराशि के ऊपर झूमते हुए उस काली पहाड़ी से जाकर टकराते हैं,

और उस निर्जन सागर की श्मशान-शान्ति में उनकी टक्करों का अट्टहास गूँजता है। नीली बर्फ के ये हिमगिरि इस अगाध जलराशि पर बहुत दिनों से इसी प्रकार बहते हैं, और उनसे आ-आकर टकरानेवाली सागर की मौजें उन्हें पहाड़ियों की तरफ ले जाती हैं, और स्वयं पहाड़ी के किनारों से टकरा-टकराकर अथवा एक-दूसरे के सिर टकराकर वे दुखी आवाज से उदास होकर पूछती हैं—यह सब क्या है ! यह सब क्यों है !

इतना कहकर सोफिया ने सिगरेट फेंक दिया और पियानो की तरफ मुड़कर वह गूँजती हुई विलाप की तानें बजाने लगी—उन एकान्तवासी हिमगिरियों के विलाप की तानें जो उत्तरी सागर के उस दूरवर्ती निर्जन टापू के चारों ओर टकरा-टकराकर बहते हुए चिल्लाते थे।

संगीत का अर्थ सुनकर मा के हृदय में एक असह्य उदासी छा गई; क्योंकि इस अर्थ का उसे अपने भूतकाल से एक विचित्र सम्बन्ध लगा—अपने उस भूतकाल से जिनके विचारों में वह डूबी हुई बैठी थी।

'संगीत में जो चाहो सुन सकते हो।' निकोले ने आहिस्ता से कहा।

सोफिया ने मा की तरफ मुड़कर पूछा—तुम्हें मेरा शोर बुरा तो नहीं लगता !

मा अपने पर काबू न रख सकी और थोड़ा-सा झुँझलाकर बोली—मैं तो तुमसे पहले ही कह चुकी हूँ कि मेरी चिन्ता तुम मत करो और जो तुम्हें अच्छा लगे वह करो। मैं यहीं बैठी तुम्हारा संगीत सुनती थी। परन्तु मैं अपने बारे में सोच रही थी।

'नहीं, तुम्हें संगीत भी समझना चाहिए।' सोफया बोली—स्त्री का संगति के बिना काम नहीं चलता, विशेषकर जब वह दुःख में होती है।

इतना कहकर उसने जोर से पियानो के तारों पर हाथ मारा, जिनसे गूँजती हुई एक ऊँची चीत्कार-सी निकली, मानों किसी ने एकाएक उन्हें कोई भयंकर समाचार सुना दिया हो, जिससे उनका हृदय बिंध गया हो और वे यह दुखी चीत्कार करते हों। इस नये राग में ऐसा लगता था, मानों युवक की आवाजें भय से काँप रही थीं और लोग घबराये हुए जल्दी-जल्दी दौड़ रहे थे। फिर एकाएक एक क्रोधित चीत्कारपूर्ण ऊँचे स्वर ने ऊपर उठकर दूसरी सब आवाजों को अपने चीत्कार में डुबा दिया, जिससे साफ लगा कि दुःख का कोई पहाड़ टूट पड़ा था। इस दुःख का मुख्य कारण किसी का अपमान लगता था, क्योंकि संगीत के स्वर उस पर टंकार-टंकारकर क्रोध दिखा रहे थे। फिर दयावान और बलवान मनुष्य के मधुर स्वर-से उसमें से निकले जो ऐण्ड्री की तरह एक अलाप अलापकर अपने-आपको ललकार और उसका रहे थे। यह स्वर भारी, सुस्त और चिढ़े हुए थे।

सोफिया ने तानें ऊपर को उठाईं और उन्होंने मा को बेचैन कर दिया। मा के मन में संगीत का अर्थ पूछने की इच्छा हो रही थी, और उसके हृदय में तरह-तरह के भाव और विचार उठ रहे थे। दुःख और चिन्ता के बाद सुख और शान्ति के भाव और विचार आते थे। संगीत के स्वरों के साथ कमरे के अन्दर अव्यक्त पक्षियों का झुण्ड-सा

उड़ रहा था, जो कोने-कोने में घुसता फिरता था और मा के हृदय पर प्यार से पंख रख-कर कभी उसे सुखी करता था और कभी जोर-जोर से थपेड़े लगाकर उसे दुखी कर देता था। मा के हृदय में जो भाव इस समय उठ रहे थे, उन्हें शब्दों में बताना असम्भव है। वे उसके हृदय को चिन्तापूर्ण आशाओं से उत्साहित करते थे, और दृढ़ता से चूम-चूम-कर थपथपा रहे थे।

मा के मन में आया कि इन दोनों भाई-बहन से और सभी से अच्छी-अच्छी बात करे। फिर वह धीरे-धीरे मुस्कराती हुई संगीत के नशे में मस्त-सी सोचने लगी कि इन भाई और बहन की सहायता के लिए मैं कौन-सा काम कर सकती हूँ और उसकी आँखें उनको सहायता करने के लिए उपयुक्त वस्तु की खोज में इधर-उधर देखने लगीं। परंतु उसे उस कमरे में कोई ऐसी चीज नहीं दीखी। अस्तु, वह उठकर रसोई में चली गई। और वहाँ जाकर चुपचाप सेमोवार आग पर रख दिया। परन्तु इससे उसके मन को संतोष नहीं हुआ। उसके अन्तर में एक संग्राम-सा छिड़ा हुआ था। आखिरकार प्यालों में चाय भरती हुई वह चिढ़ी हुई मुस्कराहट से कहने लगी—हम निचले वर्ग के लोग भी सब खूब महसूस करते हैं। परन्तु अपने दिल की बातें जाहिर करना हमारे लिए कठिन होता है। हमारे विचार हमारे भीतर ही तैरते रहते हैं। हमें लज्जा भी आती है कि हम समझते हुए भी बोल नहीं सकते, और इस लज्जा के कारण अपने इन विचारों पर और उन कारणों पर जो उन विचारों को उत्पन्न करते हैं, हम मन-ही-मन क्रोध करते हैं और उन्हें अपने मन से दूर भगा देने का प्रयत्न करते हैं, क्योंकि तुम जानते ही हो, हमारा जीवन बड़ा कष्टमय होता है, हमें चारों ओर से लातें और घूँसे मिलते रहतेहैं और हमें आराम और शान्ति की हार्दिक इच्छा रहती है। अस्तु, जब यह विचार आकर हमारी आत्मा में उथल-पुथल मचाकर हमें उकसाते हैं तो हम उनसे दूर भागने का प्रयत्न करते हैं।

निकोले सुनता हुआ सिर हिला-हिलाकर जल्दी-जल्दी अपना चश्मा साफ करने लगा था। सोफिया अपना बड़ी-बड़ी आँखें फाड़-फाड़कर मा की ओर देख रही थी और सिगरेट पीना भूल गई थी। सिगरेट रखा-रखा जलकर खाक होने लगा था। वह पियानो की तरफ से मा की तरफ आधी मुड़ी हुई बैठी बड़ी सुन्दर और लचीली लगती थी और बीच-बीच में, जब मा अपने नवीन भावों और विचारों को सरल मर्मस्पर्शी शब्दों में जल्दी-जल्दी प्रकट लरने लगती थी तब धीरे से अपने दाहिने हाथ की पतली-पतली उँगलियाँ बाजे पर रख देती थी, जिससे उसके तारों से एक मन्द और गम्भीर ध्वनि नजाकत से उठती हुई मा की आवाज से मिलने लगती थी। मा कह रही थी—हाँ, अब मैं अपने विषय में और अपने वर्ग के लोगों के विषय में कुछ जरूर कह सकती हूँ, क्योंकि अब मैं समझती हूँ, जीवन किसे कहते हैं—मैंने यह तब से समझना प्रारम्भ किया है, जब से मैं तुलना करने योग्य हुई हूँ। पहले तो अपने जीवन से तुलना करने के लिए मेरे पास कोई था ही नहीं। हमारे गाँव में सभी लोग एक-सा ही जीवन व्यतीत

करते थे। परन्तु अब जब मैं यह देखती हूँ कि दूसरे किस प्रकार जीवन व्यतीत करते हैं और फिर मैं अपने जीवन पर नजर डालती हूँ तो मुझे अपने अतीत की स्मृति भी बड़ी दुःखदायिनी हो जाती है। परन्तु उस काल को लौटाना अब सम्भव नहीं है, और सम्भव भी हो जाय तो मेरी बीती हुई जवानी फिर कैसे लौट सकती है! मुझे अब लगता है कि मैं जीवन के विषय में बहुत-कुछ समझने लगी हूँ। देखो न, मैं तुम्हें देखती हूँ, और तुम्हें देखते हो मुझे तुम्हारे सब साथियों की जिन्हें मैं देख चुकी हूँ, याद आती है। इसके बाद उसने अपनी आवाज नीची कर ली और कहने लगी—सम्भव है कि मैं ठीक नहीं कहती। शायद मुझे इन बातों के कहने की आवश्यकता भी नहीं है, क्योंकि तुम सब स्वयं ही जानते हो। परन्तु तुम्हारे सामने अपना दिल खोलने की इच्छा हो रही है, क्योंकि तुमने मुझे अचानक ही अपने बराबर में बैठा लिया है। तुम्हें मेरी क्या जरूरत है! मैं तुम्हारे किस काम की हूँ! तुम्हें मेरे साथ से कोई आनन्द नहीं मिल सकता! यह सब अच्छी तरह जानती हूँ और यह जानकर मेरा हृदय विशाल बनता है। धन्य है भगवान को! हे भगवान मेरा हृदय भलाई में इसी प्रकार दिन-दूना रात-चौगुना बढ़ता रहे और मैं हर एक के लिए सदा भलाई की इच्छा करती रहूँ। तुम लोगों ने मुझ पर बड़ा उपकार किया है और मैं समझती हूँ, उसके लिए मैं तुम्हें इसी प्रकार धन्यवाद दे सकती हूँ। इतना कहकर आनन्द के आँसुओं से उसका गला रुँध गया और मुस्कराती हुई आँखों से उनकी ओर देखती हुई कहने लगी—मैं तुम्हारे सामने अपना हृदय खोलकर रख देना चाहती हूँ, जिससे तुम स्वयं देख सको कि मैं तुम्हारे हित की कितनी इच्छुक हूँ।

'मैं देख रहा हूँ।' निकोले ने धीमी आवाज से कहा—तुम हमारी विजय के त्योहार की तैयारी कर रही हो!

'जानते हो, मैं अभी क्या सोच रही थी!' मा ने मुस्कराते हुए आवाज नीची करके पूछा—मैं अभी सोच रही थी कि मुझे एक बड़ा खजाना मिल गया है, मैं बड़ी अमीर हो गई हूँ और इस खजाने में से मैं सबको खूब दान दूँगी। हो सकता है, यह मेरी मूढ़ता का कोरा स्वप्न हो।

'ऐसे मत कहो।' सोफिया ने गम्भीरता से कहा।

'तुमको अपने भाव प्रकट करने में शर्माना नहीं चाहिए।'

'अस्तु मा फिर कहने लगी। वह सोफिया और निकोले को अपनी कहानी सुनाने लगी—अपनी गरीबी के जीवन के अत्याचारों और सहनशीलता की कहानी वह उन्हें दिल खोलकर सुनाने लगी। कहते-कहते एकाएक वह रुक गई। उसे लगा कि वह भटकी जा रही थी—अपनी कहानी छोड़कर किसी दूसरे की कहानी सुनाने लगी थी। परन्तु फिर वह सरल, द्वेषहीन शब्दों में होठों पर एक उदास मुस्कराहट लिये हुए, अपने जीवन के उन दुखी दिनों का मर्मस्पर्शी चित्र खींचने लगी—कैसे उसका पति रोज उसे पीटता था! और सुनते-सुनते उसे उन छोटे-छोटे कारणों पर जिनके लिए उसका पति

रोज उसे इतना ठोंकता था और उन छोटे कारणों को मेट देने की अपनी निपट असमर्थता पर स्वयं आश्चर्य होने लगा।

भाई और बहन चुपचाप ध्यान से उसकी कहानी सुन रहे थे जो एक ऐसी स्त्री की अलंकारहीन कहानी थी, जो पशु समझी जाती थी और जो स्वयं भी चुपचाप अपने-आपको बहुत दिनों तक वैसा ही समझती रही थी। उनको लग रहा था कि उसकी कहानी हजारों और लाखों मनुष्यों के जीवन की कहानी है। वह एक सीधी-साधी सामान्य स्त्री थी। परन्तु उसी की तरह सीधे और सामान्य मनुष्य दुनिया में बहुत रहते हैं। अस्तु, मा की कहानी ने उन सबकी कहानी बनकर उनके हृदय में एक विशाल रूप धारण कर लिया था।

निकोले, अपनी कुहनियाँ मेज पर टेके और हाथों पर सिर झुकाए हुए, बिना हिले-डुले मा की ओर टकटकी बाँधे अपने चश्मे में देख रहा था। वह बड़े ध्यान में था, जिससे उसकी आँख चढ़ रही थीं। सोफिया कुर्सी पर पीछे को झुकी हुई बैठी थी—कभी वह काँप उठती थी और कभी अपने आप बड़बड़ाती हुई मानो 'न न!' करती हुई सिर हिला उठती थी। उसका चेहरा पीला पड़ रहा था। और आँखें भीतर को धँस गई थीं।

'एक बार मैंने भी अपने जीवन को दुखी समझा था। उस समय मुझे अपना जीवन ज्वर की भाँति तपता हुआ लगता था।'— सोफिया ने सिर झुकाते हुए कहा—उस समय की बात है, जब मैं जलावतन थी और एक छोटे-से कस्बे में अकेली रहती थी। न तो मेरे पास उस समय करने के लिए कोई काम ही था, और न अपने सिवाय सोचने के लिए ही कुछ और था। अस्तु, मैं अपने सारे कष्टों को एक ढेर में एकत्र करके तौला करती थी, क्योंकि मेरे पास और कोई बेहतर काम करने को था ही नहीं। मैं अपने पिता से जिसे मैं बहुत चाहती थी, लड़ चुकी थी। स्कूल की नौकरी से निकाल दी गई थी, जिसका अपमान असह्य लगता था; निकट के एक अपने बन्धु ही की दगाबाजी से मेरे पति को जेल की सजा और मुझे जलावतन हो चुकी थी, और आखिरकार मेरे पति की मृत्यु भी हो गई थी। परन्तु मेरे यह सारे कष्ट और उनके दसगुने भी शायद तुम्हारे दुखी जीवन के एक मास के बराबर भी नहीं हो सकेंगे, निलोवना! तुम्हारी नित्य प्रतिदिन की वेदनाएँ वर्षों तक तुम्हारा गला घोंटती रहीं। न जाने कहाँ से लोग इतनी सहनशक्ति लाते हैं!

उनकी सहने की आदत पड़ जाती है।' मा ने एक गहरा निःश्वास भरते हुए उत्तर दिया।

'मैं सोचता था कि मैं ऐसे जीवन को जानता हूँ।' निकोले ने कोमल स्वर में कहा—परन्तु जब मैं उसकी कहानी अपने कानों से सुनता हूँ, सिर्फ किताबों में उसकी कहानी पढ़कर अपने अपूर्ण विचार नहीं बना लेता—बल्कि उसकी जीती-जागती प्रतिमा अपने सामने देखता हूँ, तब वह बड़ा ही भयंकर लगने लगता है। उसके एक-एक क्षण ऐसी बीभत्स शून्यता से भरे लगते हैं, जो पलों को वर्षों के बराबर बना देते हैं।

इसी प्रकार देर तक विचार-पूर्वक शान्तिमय चर्चा होती रही, जिसमें सामान्य लोगों के जीवन के सभी पहलुओं पर बातें हुईं। मा विचारों में डूबी हुई अपने धुँधले अतीत के नित्यप्रति के अत्याचारों की उस मूक क्रूरता का, जिसमें उसका यौवनकाल डूब चुका था, अपने मन में एक चित्र खींच रही थी। आखिरकार वह बोली—अरे, मैंने कितनी बकझक कर डाली! सोने के लिए इतनी देर हो गई है! अपनी पूरी कहानी तो मैं तुम्हें कभी न सुना पाऊँगी!

भाई और बहन चुपचाप उठकर सोने के लिए चले। मा को लगा कि निकोले ने उसे रोज से अधिक झुककर प्रणाम किया और अधिक दृढ़ता से उसका हाथ दबाया। सोफिया मा के साथ-साथ मा के कमरे के द्वार तक गई और द्वार पर खड़ी होकर स्नेह से उससे बोली—अच्छा मा, अब आराम करो। आशा है रात को नींद अच्छी तरह आयेगी!

सोफिया के शब्द स्नेह से सने और उसकी भूरी-भूरी आँखें प्रेम से मा को चूम-सी रही थीं। मा ने उसका हाथ अपने हाथों में पकड़ लिया और उसे स्नेह से दबाकर कहने लगी—धन्यवाद तुम्हें! तुम बड़े अच्छे लोग हो!

तेईसवाँ परिच्छेद

तीन दिन तक मा इसी प्रकार की निकोले और सोफिया से बातें करती रही। वह उन्हें रोज अपनी बीती सुनाती थी, जो उसकी जग उठानेवाली आत्मा में से अपसे-आप निकलती थी और उसे विचलित करती थी। भाई और बहन दोनों उसकी बात बड़े ध्यान से सुनते थे, जिससे उसका हृदय और भी खुल गया था, और वह अपने पुराने जीवनके तंग और अँधेरे पिंजड़े से मानो मुक्त हो गई थी।

चौथे दिन, बहुत सवेरे ही मा और सोफिया निकोले के सामने किसान स्त्रियों के वेश में आ खड़ी हुई, वे बहुत थोड़े कपड़े पहने थीं। उनके कन्धों पर बोरे लटकते थे और हाथ में लाठियाँ थीं। इस वेश में सोफिया का कद छोटा लगता था और उसका पीला-पीला चेहरा अधिक गम्भीर लगता था।

तुम तो ऐसी लगती हो मानो जिन्दगी भर यात्री ही रही हो!' निकोले ने बहन को विदा करते हुए स्नेह से उसका हाथ दबाकर कहा। मा का ध्यान उन दोनों के सादे और सात्विक सम्बन्ध की ओर आकर्षित हुआ, जिसकी अभी तक वह आदी नहीं हो सकी थी। बात-बात पर (वे एक दूसरे का) चुम्बन अथवा आपस में दिखावटी लाड़-प्यार की बातें एक दूसरे से नहीं कहते थे। परन्तु उनका एक दूसरे के प्रति सच्चा, सहृदय और स्नेहपूर्ण व्यवहार था। मा ने जो जीवन बिताया था, उसमें लोग एक दूसरे का चुम्बन तो बहुत करते थे और प्रेम के दिखावटी शब्द भी बहुत बोलते थे, परन्तु फिर भी सदा एक दूसरे को काट खाने के लिए भूखे कुत्ते की तरह झपटते थे।

दोनों निकोले से विदा होकर चुपचाप सड़क पर आईं और शहर को पार करती हुई बाहर खुले में पहुँचीं। यहाँ से एक पुरानी चौड़ी सड़क जिसके दोनों तरफ वृक्षों की कतारें थीं, गाँवों की ओर जाती थी। वे दोनो साथ-साथ उसी पर चलने लगीं।

'थकोगी तो नहीं?' मा ने पूछा।

'तुम समझती हो मैं चल नहीं सकती? कितनी बार मुझे इसी तरह चलना पड़ता है! मेरे लिए यह कोई नया काम नहीं है।'

फिर हँस-हँसकर वह मानो अपने लड़कपन की शैतानियों की कहानियाँ सुना रही हो, मा को अपने क्रान्तिकारी कामों की कहानियाँ सुनाने लगी—कैसे उसे कई बार नाम बदलकर रहना पड़ा था; जाली कागजों को काम में लाना पड़ा था; जासूसों से छिपाने के लिए तरह-तरह के वेश रखने पड़े थे; सैकड़ों-हजारों गैरकानूनी पर्चे और किताबें शहरों में होकर ले जानी पड़ी थीं; जलावतनी से बन्धुओं को भागने का प्रबन्ध करना पड़ा था; और उन्हें लेकर विदेशों को जाना पड़ा था। कैसे एक बार उसने अपने घर में एक गैरकानूनी छापाखाना बना लिया था, और जब उसकी खबर पाकर

पुलिस तलाशी लेने आई थी तब वह उनके घर में घुसने के एक मिनट पहले ही—जब कि मेहमान द्वार की सीढ़ियों पर ही चढ़ पाये थे—वह एक नौकरानी का भेष बनाकर भाग जाने में सफल हुई थी। द्वार पर वह पुलिस से मिली, परन्तु उसके सिर ओढ़नी तक नहीं थी, सिर्फ एक रूमाल बालों पर बँधा था और हाथ में मिट्टी के तेल का एक डिब्बा था; और इसी प्रकार शहर के एक छोर से दूसरे छोर तक वह कड़कड़ाते हुए जाड़े में चली गई थी। इसी तरह दूसरी बार जब वह एक नये शहर में मित्रों से मिलने गई और जीने की सीढ़ियों पर चढ़ने लगी, तो सामने उनके घर में तालाशी होती देखी। पीछे लौटना खतरनाक था। अस्तु, बिना ठिठके उसने फौरन नीचे की मंजिल की घण्टी बजाकर द्वार खुलवा लिया और अपना बेग लिये हुए अनजान आदमियों के घर में दाखिल हो गई, और उन्हें अपनी परिस्थित समझाकर कहा—तुम चाहो तो मुझे पुलिस के हवाले कर सकते हो! परन्तु मैं नहीं समझती कि ऐसा तुम करोगे!

वे बेचारे बड़े डरे; रात भर उन्हें नींद नहीं आई; क्षण-क्षण पर उन्हें पुलिस के आकर द्वार खटखटाने का भय लगता रहा। परन्तु फिर भी वे उसे पुलिस के हाथों में दे देने का निश्चय नहीं कर सके। और दूसरे दिन वे सोफिया के साथ मिलकर पुलिस की मूर्खता पर खूब दिल खोलकर हँसे।

किस प्रकार उसने एक बार एक भक्त यात्री के वेश में, उसी ट्रेन में, यहाँ तक कि उसी डिब्बे में जिसमें उसकी घात में जानेवाला एक पुलिस का जासूस बैठा था, यात्रा की थी; और जासूस ने बड़ी शेखी बघारते हुए उसे बतलाया था कि वह किस होशियारी से उसकी खोज कर रहा था। उसने सोफिया से बड़ी होशियारी से कहा था—वह स्त्री इसी गाड़ी से जा रही है! सेकण्ड क्लास में है। परन्तु जब गाड़ी खड़ी होती थी और वह बाहर जाकर देखता था तो लौटकर कहता था—दिखाई नहीं पड़ती! सोती होगी! आखिरकार वे भी तो थक जाते हैं! उनका जीवन भी हमारी तरह ही कठोर है!

मा सोफिया के किस्से सुनकर हँस रही थी, और उसकी ओर स्नेहपूर्ण दृष्टि से देख रही थीं। लम्बी और शान्त सोफिया सड़क पर आनन्द में मग्न एक-सी चाल से दृढ़तापूर्वक चली जा रही थी। उसकी चाल से, शब्दों से, और आवाज से—जो जरा सुस्त, परन्तु फिर भी जोरदार थी—उसके सीधे और सुडौल शरीर से, एक अच्छी शक्ति, आनन्दपूर्ण साहस, और विकास और स्वतन्त्रता की प्यास छलकती थी। उसकी आँखें प्रत्येक वस्तु को यौवनपूर्ण दृष्टि से देखती थीं और उसे हमेशा ही कोई-न-कोई ऐसी चीज दीखती रहती थी, जिससे उसका हृदय बालक की भाँति हँसता रहता था।

'देखो, कैसा अच्छा सालू का पेड़ है।' उसने एक सालू के पेड़ की ओर इशारा करते हुए मा से कहा।

मा ने ठिठककर पेड़ की तरफ देखा। वह सालू का पेड़ दूसरे साधारण पेड़ों की तरह था—न उनसे अधिक ऊँचा था और न मोटा, परन्तु सोफिया उसे देखकर बड़ी खुश हो रही थी।

'हाँ,—हाँ, अच्छे पेड़ हैं !' मा ने मुस्कराते हुए कहा।

'सुनो, सुनो ! लवे की आवाज आ रही है !' सोफिया एकाएक सिर उठाकर आकाश के मस्त गवैये की तरफ देखने लगी, उसकी भूरी-भूरी आँखें स्नेह से चमक उठीं, और उसका शरीर उस अदृश्य और दूर आकाश की ऊँचाई से आनेवाले संगीत को मिलने के लिए पृथ्वी से ऊपर को उठता हुआ-सा लगा। चलते-चलते कभी झुककर, खेत में से एक फूल तोड़ लेती थी और अपनी नाजुक पतली पतली उँगलियों से उसे छूकर, काँपती हुई उनकी पंखुड़ियों को सहलाती थी, और धीरे-धीरे एक मधुर और सुन्दर राग गुनगुनाती थी।

आकाश में वसन्त-ऋतु का दयावान् सूर्य चमक रहा था। जिससे आकाश के गहन नीलवर्ण में एक मृदुल आभा छा रही थी। सड़क के दोनों ओर साखू का घना बन फैला हुआ था, और हरे-हरे खेत लहलहाते थे, जिनमें से पक्षी तानें छोड़ रहे थे ! बड़ा उत्तेजक वातावरण था जो स्नेह से मुँह पर गरम-गरम थपकियाँ-सी लगा रहा था, और यह सब दृश्य मा का हृदय खींच-खींचकर उस तेजस्वी नेत्रों की ओजस्वी स्त्री के अधिक निकट कर रहा था। वह सोफिया के साथ-साथ चलने के प्रयत्न में, उससे सटी हुई चलने का प्रयत्न कर रही थी, मानो उससे सटकर वह उसका तेज और उत्साह अपने अन्दर भर लेना चाहती थी।

'तुम बहुत कम उम्र की लगती हो।' मा ने निःश्वास लेते हुए उससे कहा।

'नहीं, मैं बत्तीस वर्ष की हो चुकी हूँ !'

व्लेसोवा ने मुस्कराकर कहा—मेरा मतलब वर्षों से नहीं था। तुम्हारा चेहरा देखकर, तुम्हारी उम्र बहुत कम लगती है। तुम्हारी आँखें और तुम्हारी आवाज इतनी तेजस्वी और इतनी वसन्ती है कि तुम अभी निरी छोकरी ही लगती हो। तुम्हारा जीवन इतना कठोर और कष्टमय होते हुए भी तुम्हारा हृदय हँसता रहता है।

'हृदय हँसता है।' सोफिया ने विचारते हुए दुहराया—अच्छा वाक्य तुमने कहा ; बहुत सादा और सुन्दर ! तुम समझती हो मेरा जीवन कठोर है ! परन्तु मुझे तो वह कठोर नहीं लगता ! मैं इससे अच्छे और अधिक आनन्दमय जीवन की कल्पना नहीं कर सकती।

'और सबसे अधिक आनन्द और आश्चर्य की बात यह है कि तुम लोगों ने मनुष्यों के हृदय में पैठने के मार्ग न जाने कहाँ से जान लिये हैं। जो तुमसे मिलता है, वह अपनी सारी बातें, निर्भय और निश्शङ्क होकर, तुम्हारे सामने दिल खोलकर, रख देता है—मानो आप से आप ही हृदय अपने पट खोलकर तुमसे मिलने को दौड़ता है। मैं सोचती हूँ तुम लोग दुनिया की बुराइयों पर विजय प्राप्त कर लेते हो—सम्पूर्ण विजय।

'हमारी विजय अवश्यम्भावी है, क्योंकि हम दुनिया के श्रमजीवियों के साथी हैं। सोफिया ने विश्वासपूर्वक कहा—अपनी काम करने की शक्ति में और अपने सत्य की विजय में श्रद्धा हम उन लोगों से प्राप्त करते हैं—दुनिया के श्रमजीवी ही हमारी

आत्मिक और शारिरिक शक्ति का अखण्ड भण्डार है। श्रमजीवियों को जो संसार की प्रजा हैं, सब कुछ सम्भव है—वे सब कुछ कर सकते हैं। केवल उनकी चेतना को उनकी आत्मा को जगा देने की आवश्यकता है, उनकी उस महान् बाल-आत्मा को जिसको अभी तक विकास और उदय की स्वतंत्रता नहीं दी गई है।' सोफिया कोमल स्वर में इस प्रकार सरलता से बोलती हुई, मुड़ती हुई सड़क के किनारे से, विचारों में मग्न उस तरफ को देखने लगी जिधर चमकते हुए धुएँ का एक काँपता हुआ दल बादल से उठ रहा था।

सोफिया के शब्दों ने मा के हृदय में एक मिश्रित भाव उत्पन्न किया—न जाने क्यों मा को सोफिया पर तरस आ रहा था। परन्तु उसका यह भाव बुरा नहीं था। क्योंकि वह अति परिचय में से उत्पन्न नहीं हुआ था। साथ ही उसे आश्चर्य भी हो रहा था कि एक अच्छे घर की श्रीमती पीठ पर इतना बोझ लादे पैदल चल रही थी। अस्तु, उसने सोचते हुए सोफिया से कहा—तुम्हारी इस मेहनत का तुम्हें कौन इनाम देगा!

सोफिया— ने मा के विचार का अभिमान से उत्तर दिया—हमें अपनी मेहनत का इनाम मिल चुका है। क्योंकि हमें एक ऐसे जीवन का पता लग गया है जो हमें सन्तोष देता है। हम इस विशाल, सम्पूर्ण जीवन का अपनी आत्मा का द्वार खोलकर आनन्द लूटते हैं। इससे अधिक और हमें क्या चाहिए! सुगन्धित वायु से फेफड़े भरती हुई वे चली जा रही थीं, जल्दी-जल्दी नहीं, परन्तु एक अच्छी, बधी हुई चाल से। मा को लग रहा था कि वह तीर्थ-यात्रा को जा रही है उसे अपना बचपन याद आ रहा था जब वह बड़े हर्ष से, छुट्टियाँ होने पर, एक दूरवर्ती गाँव में जाकर एक आश्चर्य-जनक मूर्ति का दर्शन किया करती थी।

बीच-बीच में सोफिया आकाश और प्रेम के बारे में नये-नये और विचित्र गीत गुन-गुनाने लगती थी, अथवा एकाएक खेतों, बनों और रूस की गगा बोल्गा नदी के संबंध में गा उठती थी। मा मुस्कराती हुई, राग की ध्वनि अथवा गीत की अन्तकड़ी की टेक में सिर हिलाती हुई, संगीत में बहती हुई उसे सुनने लगती थी और उसकी छाती में एक मृदुल, उदासीन उष्णता, एक छोटी पुरानी वाटिका में ग्रीष्म ऋतु की रात्रि के वातावरण की तरह भर जाती थी।

इसी प्रकार चलते-चलते तीसरे दिन वे उस गाँव में जा पहुँचीं। मा ने खेत में काम करनेवाले एक किसान से कोलतार के कारखाने का पता पूछा, और कुछ देर में वे एक ऐसे ढालू और जंगली रास्ते पर पहुँचीं, जिसमें वृक्षों की निकली हुई जड़ें ऊपर चढ़ने के लिए सीढ़ियों का काम दे रही थीं, और जो छोटी गोल-गोल कुञ्ज में होकर जाता था, जिसमें कोयले की कालिख और तारकोल से सने हुए लकड़ी के टुकड़ों के ढेर लग रहे थे।

इसी कुञ्ज में बाँसों और वृक्षों की शाखाओं से बने हुए एक छप्पर के बाहर, तीन तख्तों की एक मेज पर, जिसके तख्ते केवल एक चौखटे पैर रखे हुए थे, राइबिन बैठा था। वह बिल्कुल काला भुच्च हो रहा था, काला-कनूटा, कमीज के बटन खुल रहे थे,

जिससे सीना नजर आता था। उसके पास यफेम और दो नवयुवक और बैठे थे। उन्होंने उसी समय खाना प्रारम्भ किया था। पहिले राइविन की नजर ही इन दोनों स्त्रियों पर पड़ी और आँखों पर हाथ रखकर प्रकाश बचाता हुआ वह चुपचाप उनके पास पहुँचने का इन्तजार करने लगा।

'कैसे हो, भाई मिखेल ?' मा दूर से ही उसे देखकर चिल्लाई।

वह उठकर खड़ा हो गया और धीरे-धीरे उनकी ओर बढ़ा। मा को पहिचानते ही वह एकदम रुक गया और मुस्कराता हुआ अपना काला हाथ दाढ़ी पर फेरने लगा।

'हम दोनों तीर्थयात्रा पर जा रही हैं।' उसके पास जाकर मा कहने लगी—सोचा कि रास्ते में तुमसे भी मिलती चलूँ। यह मेरी मित्र ऐना है।

मा इतना कहकर अपनी होशियारी पर अभिमान करती हुई सोफिया के गम्भीर और कठोर चेहरे की ओर आँखें फाड़कर देखने लगी।

'तुम अच्छी तो हो ?' राइविन ने दाँत निकालकर मुस्कराते हुए मा से हाथ मिलाकर पूछा और सोफिया को सिर झुकाकर अभिवादन किया। फिर वह कहने लगा—झूठ मत बोलो। यह शहर नहीं है। यहाँ झूठ बोलने की जरूरत नहीं है। यह लोग अपने आदमी हैं, बहुत अच्छे आदमी हैं।

यफेम, मेज पर बैठा-बैठा यात्रियों को घूर-घूरकर देख रहा था। उसने अपने साथियों के कान में कुछ कहा। और जब स्त्रियाँ चलकर मेज के पास पहुँचीं तब उसने उठकर, चुपचाप झुककर उन्हें प्रणाम किया, परन्तु उसके साथी वैसे ही बैठे रहे, मानो उन्होंने मेहमान को देखा ही न हो।

'हम लोग यहाँ साधुओं की तरह एकान्त में रहते हैं।' राइविन मा का कन्धा थपथपाता हुआ बोला—हमारे पास यहाँ कोई नहीं आता। हमारा मालिक गाँव से बाहर गया है। मालकिन अस्पताल में बीमार पड़ी हैं, और मैं ही एक प्रकार से यहाँ का मैनेजर हूँ। मेज पर बैठो। तुम्हें भूख लगी होगी। यफेम, मेहमानों के लिए थोड़ा दूध लाओ।

यफेम दूध लाने के लिये छप्पर में चला गया। यात्रियों ने अपने कन्धों पर से बोरे उतारे—एक लम्बे, पतले मनुष्य ने मेज पर से उठकर उनकी इस काम में मदद की। दूसरा, मेज पर कुहनी ठेके, विचारपूर्वक उनको देख रहा था और सिर खुजलाता हुआ धीरे-धीरे एक गीत-सा गुनगुना रहा था।

ताजे तारकोल और सड़ी हुई पत्तियों की इतनी बुरी बदबू आ रही थी कि नवागन्तुकों का सिर चमक उठा।

'यह याकोब है।' राइविन ने लम्बे मनुष्य की ओर इशारा करते हुए कहा और यह इगनेटी है। कहो तुम्हारा लड़का तो अच्छा है ?'

'मेरा लड़का जेल में है।' मा ने निःश्वास लेते हुए कहा।

'फिर जेल में ! मैं समझता हूँ, उसे जेल बड़ी अच्छी लगती है।'

इगनेटी ने गुनगुनाना बन्द कर दियाँ और याकोब ने मा के हाथ से लाठी लेते हुए कहा—बैठो, भैय्या !

'हाँ तुम भी बैठती क्यों नहीं !' राइबिन ने सोफिया से कहा।

सोफया एक पेड़ की डाल पर बैठकर राइबिन को ध्यान और गम्भीरता से देखने लगी।

'कब उसे पकड़ा !' राइबिन ने मा के सामने बैठकर सिर हिलाते हुए पूछा और बोला—तुम्हारी तकदीर खराब है, निलोवना।

'हाँ, खैर !'

'शायद तुम उसकी आदी होती जाती हो !'

'आदी तो नहीं हो गई हूँ, मगर किया क्या जाय !'

'अच्छा, अपने लड़के की गिरफ्तारी का हाल सुनाओ !'

इतने में यफेम एक मटकी में दूध ले आया और मेज पर से प्याला उठाकर पानी से धोया और उसमें दूध भरकर, मेज के उस पार बैठी हुई सोफिया को दिया। वह चुपचाप अपना काम करता हुआ मा की बातें सुन रहा था। जब मा सारा हाल कह चुकी तो सब कुछ देर के लिए चुप हो गये और एक दूसरे की ओर ताकने लगे। इगनेटी, मेज पर बैठे-बैठे, अपने नाखूनों से तख्तों पर एक चित्र खींच रहा था। यफेम राइबिन के पीछे, उसके कन्धों पर कुहनियाँ रखे खड़ा था। याकोब पेड़ के एक तने से पीठ टेके छाती पर हाथ बाँधे, सिर झुकाये खड़ा था। सोफिया चुपचाप किसानों की तरफ देख रही थी।

'हाँ।' राइबिन क्रोध से आवाज लथेड़ता हुआ बोला—तो उन्होंने अब ऐसा निश्चय किया है—खुल्लमखुल्ला आगे बढ़ने का।

'अगर हम लोग भी यहाँ ऐसा ही करें।' यफेम ने चिढ़ी हुई मुस्कराहट से कहा—तो हम किसानों को तो खाल खिंचवाकर भुस ही भरवा दिया जाय।

'जरूर।' इगनेटी ने सिर हिलाते हुए स्वीकार किया—मैं भी उस कारखाने में ही काम करने जाऊँगा। वहाँ हाल अच्छा लगता है।

'तुमने कहा, पवेल का मुकदमा शुरू होनेवाला है !' राइबिन ने पूछा।

'हाँ, मुकदमा चलाने का निश्चय हो गया है।'

'क्या सजा होगी ! कुछ सुना है !'

सख्त, मशक्कत अथवा आजन्म साइबेरिया का कालापानी। मा ने कोमल स्वर में कहा। मा का उत्तर सुनते ही तीनों नौजवानों ने एक साथ उसकी ओर देखा और राइबिन ने सिर झुकाते हुए धीरे से पूछा—और जब उसने यह सब किया था, तब क्या वह जानता था कि उसे ऐसी सजा मिलेगी !

'मैं नहीं जानती, परन्तु मैं समझती हूँ कि वह जानता था।'

'हाँ, वह जानता था।' सोफिया ने जोर से कहा।

सब चुप हो गये ; एकाएक ऐसे चुप हो गये, मानो वे किसी ठण्डे विचार में डूब गये हों।

'हाँ।' कुछ देर में राइबिन धीरे-धीरे गम्भीरता से बोला—मैं भी समझता हूँ, वह जानता था। गम्भीर मनुष्य हमेशा कूदने से पहले अपने आगे देख लेता है। देखो यारो देखते हो! वह जानता था कि वह संगीनों का शिकार हो सकता है, कालेपानी भेजा जा सकता है, परन्तु फिर भी वह आगे गया। उसने आगे जाना आवश्यक समझा और वह गया। अगर उसकी मा भी रास्ते में आकर लेटी होती, तो भी वह उसके ऊपर पैर रखकर निकल जाता, मगर जाता अवश्य। क्योंकि निलोवना, क्या वह तुम्हारे ऊपर पैर रखता हुआ नहीं निकल जाता!

'जरूर निकल जाता।' मा ने काँपते हुए चारों तरफ देखकर उत्तर दिया और उसने एक गहरी साँस ली। सोफिया चुपचाप मा का हाथ पकड़कर थपथपाने लगी।

'यह आदमी है।' राइबिन अपने साथियों की ओर देखता हुआ दबी आवाज़ में बोला। वे सब चुप थे। सूर्य की पतली-पतली किरणें सुगन्धित और घने वायुमण्डल में सुनहरी फूलों की तरह हिलती हुई फैल रही थी। एक ओर से अपनी वीरता में पूर्ण विश्वास दिखानेवाली एक कौवे की काँय-काँय सुनाई दी। मा उसकी ओर फिरकर देखने लगी। उसे पहली मई की याद रह-रहकर आ रही थी। और अपने लड़के और ऐण्ड्री के लिए उसे दुःख हो रहा था।

निकुञ्ज में बहुत-से टूटे पीपे और उखेड़कर निकाली हुई तनों की मुर्दा और टूटी जड़ें, और लड़की के टुकड़े फैलें पड़े थे। घने साखू और साल के वृक्ष इस खुली हुई जगह को घेरे हुए चारों ओर इस प्रकार झुक रहे थे मानो वे इस सब कूड़े-कर्कट को झाड़कर फेंक देने की ताक में थे।

एकाएक याकोब पेड़ का सहारा छोड़कर हटा और आगे बढ़कर एक तरफ खड़ा हो गया, और सिर हिलाता हुआ रूखी आवाज़ में बोला—अच्छा तो अब हम यफेम के साथ फौज में नौकरी करने जायँगे तो पवेल की तरह मनुष्यों को मारने के लिए हमारा उपयोग किया जायगा!

'और तुमने क्या सोचा था! और किसके खिलाफ तुम्हारा उपयोग किया जायगा!' राइबिन ने उसे टका-सा जवाब दिया। 'हमारे ही हाथों तो हम लोगों का गला घुटवाया जाता है। यही तो तमाशे की बात है।'

'कुछ भी हो, मैं फौज में जरूर भर्ती होऊँगा।' यफेम ने हठ से कहा।

'तुझे रोकने का कौन प्रयत्न कर रहा है!' इगनेटी बोला—जा न! और उसने यफेम की आँखों से आँखें भिड़ाकर देखते हुए मुस्कराकर कहा—जब तुझको मुझ पर गोली चलाने का हुक्म मिले, तो ठीक सीने पर ही वार करना। अच्छा! और अपनी संगीन से थोड़ा-सा ही जख्म लगाकर मत रह जाना, मुझे मार जरूर डालना।'

'बहुत अच्छा! सुन लिया!' यफेम ने तपाक से उत्तर दिया।

'देखो, यारो !' राइबिन अपने साथियों की ओर देखते हुए, हाथ से मा की तरफ इशारा करते हुए कहने लगा—देखो, एक यह स्त्री है, जिसका लड़का पकड़ा जा चुका है।

'इस प्रकार मेरा जिक्र क्यों करते हो ?' मा ने धीमी और दुखी आवाज़ में पूछा।

'इसकी आवश्यकता है !' उसने क्रोध से उत्तर दिया—यह जानना जरूरी है, जिससे तुम्हारे बाल व्यर्थ में ही सफेद न हों, तुम्हारे दिल दुखने का फल हो। देखो, भाइयो ! इस स्त्री का लड़का पकड़ा गया है, मगर फिर भी क्या यह उससे डर गई है ? निलोवना, तुम किताबें लाई हो न ?

मा ने उसकी ओर देखा और जरा ठिठककर कहा—हाँ लाई हूँ।

'यह बात !' राइबिन मेज पर मारकर बोला—जैसे ही मैंने तुम्हें देखा था, मैं समझ गया था। वरना तुम्हें यहाँ आने की जरूरत ही क्या थी ? उसने फिर अपने साथी नौजवानों को घूरकर देखा और भौंहें चढ़ाते हुए गम्भीरता से बोला—देखते हो ? लड़का पकड़ लिया जाता है, तो मा आकर उसकी जगह पर काम करने लगती है।

फिर उसने एकाएक मेज पर अपने दोनों हाथ जोर से पटके और अकड़ता हुआ भयङ्कर रूप बनाकर कहने लगा—वे...उसने एक बुरी गाली देते हुए कहा—वे नहीं जानते कि उनके अन्धे हाथ कौन-से बीज बो रहे हैं ! उन्हें तो तब पता चलेगा जब हम पूरी तरह सङ्गठित हो जायँगे और हम उनको निकम्मी घास की तरह काट-काटकर फेंकना प्रारम्भ करेंगे ! तब उन्हें खबर पड़ेगी !

मा उसकी बातें सुनकर डरी। उसने राइबिन की ओर देखा—उसके चेहरे का रङ्ग एकदम बदल गया था। उसका चेहरा फीका पड़ गया था, दाढ़ी बुरी लग रही थी और गालों की हड्डियाँ बाहर को निकल-सी आई थीं। आस्मानी और सफेद रङ्ग की उसकी आँखों में लाली आ गई थी, मानों वह बहुत दिनों से सोया न हो। उसकी नाक, पहले से पतली और मुड़ी हुई तलवार की तरह टेढ़ी और तेज लग रही थी। उसकी लाल तारकोल से सनी हुई कमीज का गला खुला हुआ था, जिससे उसके गले की सूखी हड्डियाँ और छाती के बाल दिखाई पड़ रहे थे। सारी आकृति उसकी पहले से अधिक भयावनी हो गई थी और उसकी जलती हुई आँखों से चिनगारियाँ निकल-निकलकर उसके सूखे गहरे गालों पर एक अजेय और उदासीन क्रोध की आग सुलगा रही थीं। सोफिया के चेहरे का रंग उड़ गया था और वह चुपचाप किसानों को देख रही थी। इगनेटी ने सिर हिलाते हुए भौंहें चढ़ा ली थीं, याकोब फिर दीवार के पास खड़ा होकर क्रोध में भरा हुआ अपनी काली-काली रँगी हुई उङ्गलियों से तख्तों से खपच्चियाँ उधेड़ने लगा था और यफेम मा के पीछे धीरे-धीरे टहलता हुआ मेज की लम्बाई नाप रहा था।

'उस दिन।' राइबिन कहने लगा—एक सरकारी अफसर ने मुझे बुलाया, और मुझसे पूछा—क्यों बे गधे, तू पादरी साहब से क्या कहता था ? क्यों, मैं गधा कैसे हूँ ? मैंने कहा—लोहू का पसीना करके अपनी रोटी कमाता हूँ, और किसी का कोई बुरा

नहीं करता। मेरे इतना कहते ही वह जोर से मुझ पर चिल्लाया और मेरे मुँह पर एक थप्पड़ मारा और तीन दिन और तीन रात मुझे हवालात में रहना पड़ा। यह कहते-कहते राइविन को बहुत क्रोध आ गया और वह चिल्लाने लगा। इस तरह लोगों से बोलते हो, क्यों बदमाशो ! क्षमा की आशा मत रखना, दुष्टो ! मुझ पर जो अत्याचार तुमने किये हैं, उनका बदला लिया जायगा ! मैं न ले सका, तो कोई दूसरा लेगा। तुमसे न लिया जा सका तो तुम्हारी सन्तान से लिया जायगा ! मगर लिया जरूर जायगा, याद रखना ! तुम्हारे लोभ ने लोगों को अपने फौलादी पंजे में जकड़ लिया है। तुमने मनुष्यों में द्वेष-भाव का बीज बोया है। क्षमा की आशा मत रखना !

राइविन का क्रोध उबल-उबलकर उफन रहा था और उसकी आवाज ऐसी बदल गई थी कि मा को उससे भय लग रहा था। मगर राइविन नीचे स्वर में कहता रहा—मैंने पादरी से कहा ही क्या था ! उपदेश दे चुकने के बाद उस दिन पादरी किसानों के साथ बैठकर बातें करने लगा। कहने लगा कि साधारण लोग भेड़ों के समान होते हैं, जिससे उन्हें सदा ही एक गड़रिये की आवश्यकता रहती है। मैंने विनोद में उससे कहा—परन्तु यदि लोमड़ी को जंगल का गड़रिया बना दिया जाय, तो जंगल में पंख तो बहुत फैले हुए दिखाई देंगे ; मगर पक्षी नजर नहीं आयेंगे। इस पर पादरी ने मुझ पर एक वक्र दृष्टि डाली और लोगों को समझाने लगा कि उनको सन्तोष रखना चाहिए और रोज ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि उन्हें संतुष्ट रहने की शक्ति दे। मैंने उससे कहा कि हम लोग प्रार्थना तो रोज करते हैं, परन्तु शायद ईश्वर के पास हमारी प्रार्थनाएँ सुनने के लिए समय नहीं है, क्योंकि हमारी प्रार्थनाओं का कोई असर नहीं होता। इस पर पादरी ने मुझसे पूछा कि मैं कौन-सी प्रार्थना करता हूँ। मैंने कहा कि और सब की तरह मैं भी केवल एक ही प्रार्थना किया करता हूँ—हे भगवान्, हमारे मालिकों को ईंटें ढोना, पत्थर खाना, और लकड़ी उगलना सिखा दो ! परन्तु पादरी ने मुझे यह वाक्य पूरा भी नहीं करने दिया—

'क्यों जी, क्या तुम भी श्रीमती हो !' राइविन ने अपनी बात कहना बन्द करके एकाएक सोफिया से पूछा।

'क्यों, तुम्हें कैसे संदेह हुआ कि मैं श्रीमती हूँ !' सोफिया ने उसके इस एकाएक प्रश्न से चौंककर राइविन से पूछा।

राइविन ने हँसते हुए कहा—हो न हो उस नक्षत्र में तुम जन्मी तो जरूर थीं। क्यों ! क्या तुम समझती हो, सिर पर एक गवरून का रूमाल बाँध लेने से लोगों की आँखों से अमीरी के धब्बे छिपाये जा सकते हैं ! पादरी अपने शरीर पर मूँज के कपड़े भी लपेटकर आये तो भी फौरन ही पहचान लिया जायगा। देखो न अभी तुम्हारी कुहनियाँ भीगी मेज पर पड़ गई थीं, जिससे तुम चौंक पड़ी और मुँह बनाने लगीं, तुम्हारी पीठ भी बड़ी सीधी है जो किसी श्रमजीवी स्त्री की नहीं हो सकती।

मा को डर हुआ कि वह अपनी भारी आवाज और शब्दों की बौछार से कहीं

सोफिया का अपमान न कर दे। अस्तु, वह जल्दी से गम्भीर स्वर में उससे बोली—यह मेरी मित्र है। हमारे इस कार्य्य में काम करते-करते इनके बाल सफेद हो गये हैं। तुम बड़े......

राइविन ने एक गहरी साँस भरकर मा की बात काटते हुए कहा—क्यों, क्या जो कुछ मैंने अभी कहा, वह इनके लिए अपमानजनक था ?

सोफिया ने रुखाई से राइविन की ओर देखते हुए पूछा, तुम मुझसे कुछ कहना चाहते थे ?

'मैं ? हाँ कुछ दिन से यहाँ एक नया आदमी आ गया है। वह याकोव का चचेरा भाई लगता है। उसको क्षयरोग हो गया है। मगर वह कारखाने से कुछ सीखकर लौटा है। उसे भी यहाँ बुला लें ?'

'बुला लो ! क्यों नहीं, जरूर बुला लो ?' सोफिया ने जवाब में कहा।

राइविन ने भौंहें चढ़ाते हुए सोफिया की ओर देखा। और फिर अपनी आवाज़ नीची करते हुए यफेम से कहा—यफेम, तुम उसके पास जाओ और उससे कह आओ कि शाम को वह भी यहाँ आये।

यफेम छप्पर में घुसकर अपनी टोपी निकाल लाया और फिर चुपचाप बिना किसी की ओर देखते हुए, वह धीरे-धीरे चलता हुआ पेड़ों में अदृष्य हो गया। राइविन ने उसकी ओर देखते हुए सिर हिलाकर, सुस्ती से कहा—उस आदमी को बड़ी वेदना है। वह जिद्दी है। वह फौज में भर्ती होना चाहता है और उसके साथ याकोव भी जाना चाहता है। मगर याकोव कहता है, मुझसे फौज में काम नहीं होगा। काम उस आदमी से भी वहाँ न होगा। परन्तु फिर भी वह जाना चाहता है। उसका एक मतलब है। उसका खयाल है कि वहाँ पहुँचकर वह सिपाहियों को उभाड़ सकेगा। परन्तु मेरा उससे कहना है कि सिर की टक्कर से दीवार नहीं तोड़ी जा सकती। हाथों में संगीनें लिए वे जाते हैं—कहाँ, उन्हें पता भी नहीं। अपने विरुद्ध वे बेचारे चलते हैं ! आदमी को बड़ी वेदना है। इगनेटी उसे व्यर्थ में तंग करता है।

'नहीं जी, उसका विचार व्यर्थ है !' इगनेटी ने दृढ़ता से भौंहें चढ़ाकर राइविन की तरफ से मुँह फेरे हुए कहा—वहाँ जाकर वह भी बदल जायगा। जैसे और सिपाही हैं, बिलकुल वैसा ही वह भी कुछ दिन में बन जायगा।

'नहीं, ऐसा उसके लिए नहीं कह सकते।' राइविन ने विचारते हुए उत्तर दिया—मगर हाँ, फौज से कुछ दिन के बाद भाग जाना ही अच्छा होगा ! रूस इतना बड़ा देश है। कहाँ उसका पता लगेगा ? पासपोर्ट ले ले और एक गाँव से दूसरे गाँव मे भागता रहे !

'मैं तो यही करनेवाली हूँ।' याकोब अपने पाँव पर लकड़ी की एक खपची धीरे से मारकर बोला—एक बार सरकार के विरुद्ध जाने का निश्चय किया, तो फिर बस सीधा जाना चाहिए।

इसके बाद कुछ देर के लिए बातें बन्द हो गईं। मधुमक्खियाँ और बरें उस

निकुञ्ज के दम घोटनेवाले वातावरण में भिनभिनाती हुई चक्कर लगा रही थीं। वृक्षों पर चिड़ियाँ चहचहा रही थीं। किसी दूर के एक खेत से भभकती हुई गीत की ध्वनि आ रही थी। कुछ देर बाद राइविन बोला—अच्छा, अब काम की बातें करें। तुम थोड़ी देर आराम करोगी? देखो याकोब छप्पर के भीतर जो तख्ते बिछे हैं, उन पर इन लोगों के लेटने के लिए कुछ पुआल डाल दो। मा, लाओ वे किताबें तो दो! कहाँ हैं!

मा और सोफिया अपने बोरे खोलने लगीं। राइविन ने झुककर बोरों में देखा और सन्तोष से बोला—बहुत ठीक है। अच्छा है। अच्छा है—बहुत-सी किताबें हैं, वाह-वाह! क्या तुम इस काम में बहुत दिनों से लगी हुई हो? तुम्हारा नाम क्या है? उसने सोफिया से घूमकर पूछा।

'मेरा नाम ऐना आइवानोवना है। बारह वर्ष से मैं इसी काम में हूँ। क्यों?'

'कुछ नहीं।'

'क्या तुम्हें जेल भी हो चुकी है?'

'हाँ।'

राइविन चुप हो गया। फिर किताबों का एक बण्डल हाथ में लेकर दाँत निकालता हुआ उससे बोला—मेरी बातों का बुरा मत मानना। किसान और श्रीमन्त लोग तारकोल और पानी की तरह भिन्न हैं। उनका मिलकर एक हो जाना कठिन है। वे एक दूसरे से अलग रहते हैं।

'मैं श्रीमन्त लोगों में से नहीं हूँ। मैं तो केवल एक मनुष्य हूँ।' सोफिया ने धीरे से हँसते हुए उत्तर दिया।

'हो सकता है। मुझे विश्वास करना कठिन लगता है, मगर सुनते हैं ऐसा भी होता है। लोगों को मैंने यहाँ तक कहते सुना है कि एक भेड़िया कुत्ता बन गया था। अच्छा, मैं यह किताबें छिपा दूँगा।'

इगनेटी और याकोब बढ़कर उसके पास गये और दोनों हाथ बढ़ाकर बोले—लाओ, थोड़ी हमें भी दो।

'क्या सब एक-सी ही हैं?' राइविन ने सोफिया से पूछा।

'नहीं, कई तरह की हैं। एक अखबार भी है।'

'ओहो! तब तो बहुत अच्छा है!'

तीनों आदमी किताबें उठाकर जल्दी से छप्पर में घुस गये।

'इस किसान के दिल में आग धधक रही है। मा धीरे से, राइविन की तरफ विचार-पूर्वक देखती हुई बोली।

'हाँ।' सोफिया ने उत्तर में कहा—मैंने ऐसा चेहरा आज तक नहीं देखा था—ऐसा शहीदी चेहरा! चलो, हम भी अन्दर चलें। देखें तो वे क्या करते हैं!

और जब वे उठकर द्वार के पास पहुँची तो उन्होंने देखा कि तीनों बड़े ध्यान से अखबार पढ़ने में व्यस्त थे। इगनेटी एक अखबार अपने घुटनों पर फैलाये तख्ते पर

बैठा था और उसकी उँगलियाँ सिर के बालों में जल्दी-जल्दी दौड़ रही थीं। उसने सिर उठाकर स्त्रियों की तरफ एक सरसरी नजर से देखा और फिर झुककर अखबार पढ़ने लगा। राइबिन खड़ा हुआ, जिससे कि छप्पर के एक छेद में से आनेवाली सूर्य की किरणें उसके अखबार पर पड़ सकें, पढ़ रहा था और पढ़ते-पढ़ते उसके होंठ हिल रहे थे। इगनेटी घुटनों पर झुका हुआ, तख्तों से छाती चिपटाये पढ़ रहा था।

सोफिया को इन लोगों की सत्य के प्रति इतनी जिज्ञासा बहुत अच्छी लगी और वह प्रसन्न होकर मुसकाने लगी। वह छप्पर में सँभलती हुई घुसी और एक कोने में मा के पास बैठकर और उसके कन्धे पर अपनी बाँह टेककर चुपचाप उन किसानों को घूरने लगी।

'काका माइखेल, इन गरीब किसानों पर बड़ी सख्ती होती है।' याकोव अखबार पढ़ता हुआ उसकी तरफ से बिना मुँह फिराये ही बड़बड़ाया।

राइबिन ने घूमकर उसकी तरफ देखा और मुसकराते हुए व्यंगपूर्ण उत्तर दिया—हम पर सख्ती करनेवाले हमारे बड़े प्रेमी हैं। प्रेमी अपमान भी करते हैं! उन्हें सब कुछ करने का अधिकार होता है।

इगनेटी ने एक गहरी साँस ली और सिर उठाकर व्यंग से मुसकराया और आँखें बन्द करते हुए झुँझलाकर कहने लगा—इसमें लिखा है, किसान आदमी की तरह नहीं रहता है। यह सच है। इतना कहकर उसके सादा और खुले चेहरे पर दुःख की एक छाया झलकी और वह बोला—आकर देखो! एक दिन मेरी खाल पहनकर देखो, मेरे शरीर में घुसकर रहो, तब तुम्हें मालूम होगा, हमारी क्या दशा है। बड़ी-बड़ी बातें करनेवाले बुद्धिमानो!

'मैं लेटूँगी।' मा ने धीरे से कहा—मैं बड़ी थक गई हूँ। मेरा सिर घूम रहा है। और उसने सोफिया से पूछा—तुम अभी नहीं लेटना चाहती क्या?

'नहीं, मेरी अभी सोने की इच्छा नहीं है।'

मा तख्ते पर फैलकर लेट गई और कुछ ही देर में उसे नींद आ गई। परंतु सोफिया उसके पास बैठी-बैठी उन किसानों का पढ़ना देखती रही। मक्खियाँ आकर मा के चेहरे पर भिनभिनाने लगती थीं तो वह प्यार से उन्हें उड़ा देती थी।

राइबिन ने आकर पूछा—मा सो गई?

'हाँ।'

वह एक क्षणभर चुपचाप, मा के चेहरे की तरफ टकटकी लगाये देखता रहा और फिर नम्रता से बोला—यह शायद पहली ही मा है, जो अपने लड़के के कदमों पर चली है—पहली ही मा है।

'देखो, कहीं उसकी नींद में हमारी बातों से विघ्न न पड़े। चलो, बाहर चलें।' सोफिया ने उससे कहा।

'हमें अभी बड़ा काम करना है। तुमसे बातें करने को जी तो बहुत चाहता है, परंतु शाम को निश्चिन्त होकर करेंगे। चलो, भाई, चलें!'

चौबीसवाँ परिच्छेद

सोफिया को छप्पर में छोड़कर तीनों किसान चले गये। कुछ देर में दूर से बैलों के मारने की आवाज़ें आती हुई सुनाई दीं; जिनकी प्रतिध्वनि उस निकुञ्ज में फैल गई। अर्धनिद्रित-सी एक स्वप्न में डूबी हुई बन की सुगन्धित और नशीली वायु सूँघती हुई सोफिया छप्पर के द्वार पर बैठकर एक गीत गुनगुनाने लगी और सन्ध्या के आने की बाट देखने लगी जो धीरे-धीरे उस जंगल को अपने आँचल में ढाँक रही थी। उसकी भूरी-भूरी आँखें किसी बात पर मृदुलता से मुसकरा रही थीं। सूर्य की लाल-लाल किरण झुकती हुई लेट गईं और चिड़ियों का जोर-जोर से चहचहाना बन्द हो गया। वन में अंधियारी छाने लगी जिससे वह और भी घना लगने लगा। निकुञ्ज को चारों ओर से घेरकर खड़े होनेवाले वृक्ष आगे बढ़ आये और सोफिया को स्नेह से आलिंगन करते हुए उन्होंने अपनी छायाओं से ढाँक लिया। जंगल से लौटती हुई गायों के रँभाने की आवाज़ दूर से आ रही थी। तारकोल ढोने का काम करनेवाले चारों किसान दिनभर का काम खत्म करके सन्तुष्ट अपने घर लौटे।

उनकी आवाज़ें सुनकर मा जग गई। वह छप्पर से अँगड़ाई लेती और मुसकराती हुई बाहर निकली। राइविन दोपहर से इस समय अधिक शान्त और कम उदास था। उसका आवेश दिन-भर की थकान में डूब गया था।

'इगनेटी!' राइविन बोला—आओ चाय पी लें। हम लोग बारी-बारी से अपनी गृहस्थी का काम करते हैं। आज खिलाने-पिलाने की बारी इगनेटी की है।

'आज मैं बड़ी खुशी से अपनी बारी का काम करूँगा!' इगनेटी बाहर खुली जगह में आग जलाने के लिए लकड़ियाँ और पत्तियाँ इकट्ठी करता हुआ बोला।

'हमको आज अपने मेहमानों का भी ख्याल तो है।' यफेम सोफिया के पास बैठता हुआ बोला।

'मैं भी तुम्हारी मदद करूँगा, इगनेटी!' याकोव ने कोमलता से कहा।

इतना कहकर याकोव राख में पकाई हुई एक बड़ी बाटी निकाल लाया और उसको काट-काटकर उसके टुकड़े मेज पर रखने लगा।

'सुनो!' यफेम बोला—तुमने खाँसने की आवाज़ सुनी?

राइविन ने कान लगाकर सुना और सिर हिलाता हुआ सोफिया से बोला—हाँ, वह आ रहा है! हमारा गवाह आ रहा है! मैं उसे लेकर शहरों-शहरों जाऊँगा, और उसे बाजारों में खड़ा कर लोगों को दिखाऊँगा, जिससे कि लोग उसकी बातें सुनें। वह हमेशा एक ही बात कहता है। मगर हर एक को उनकी वह एक बात सुननी चाहिए।' वृक्षों की छायाएँ और भी निकट होने लगी थीं और आकाश की लाली घनी हो गई थी। चारों

तरफ से आनेवाली आवाजें धीमी पड़ गई थीं। सोफया और मा चुपचाप किसान जो कुछ कर रहे थे, देख रही थीं। वे चारों धीरे-धीरे थके हुए एक विचित्र प्रकार की सावधानी से अपना काम कर रहे थे, और साथ-साथ ध्यान-पूर्वक स्त्रियों की तरफ देखते हुए उनकी बातें भी गौर से सुन रहे थे।

एक लम्बे, झुके हुए मनुष्य ने जंगल में से निकलकर, हाथ में मजबूती से पकड़ी हुई एक छड़ी का सहारा लेकर धीरे-धीरे बढ़ते हुए निकुञ्ज में प्रवेश किया। उसके भारी और भर्राये हुए निःश्वासों की खुर्र-खुर्र दूर से सुनाई देती थी।

'वह आया सेवली!' याकोव बोला।

'हाँ, आ गया मैं!' आदमी ने भर्राये हुए स्वर में कहा और वह रुककर खाँसने लगा।

एक ढीला-ढाला एड़ियों तक नीचा कोट उसके शरीर पर पड़ा था और उसके सिर पर रखे हुए गोल सिकुड़े हुए टोप के नीचे से पतले-पतले सूखे, सीधे और पीले बालों के लच्छे लटक रहे थे। एक हल्की छोटी दाढ़ी उसके पीले, हड्डीदार चेहरे पर बिखरी हुई उगी थी। उसका मुँह आधा खुला था और आँखें माथे के नीचे दो गहरे गढ़ों में घुसी हुई थीं। उसकी आँखों में बेचैनी झलकती थी।

राइबिन ने उसका सोफया से परिचय कराया तो उसने कहा—मैंने सुना है, तुम गाँववालों के लिए पुस्तकें लाई हो?

'हाँ, लाई तो हूँ।'

'गाँववालों की तरफ से मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ। गाँववाले अभी तक अपने-आप सत्य साहित्य ढूँढ़कर नहीं पढ़ सकते। न वे अभी तक धन्यवाद देना ही जानते हैं। अस्तु मैं, जिसने यह बातें कुछ समझी हैं, उनकी तरफ से तुम्हें धन्यवाद देता हूँ।' इतना कहकर फिर वह जल्दी-जल्दी साँसें लेने लगा—छोटी-छोटी, उत्सुक साँसें उसके सूखे होठों के बीच में से अजीब ढंग से खिंच रही थीं। उसकी आवाज मानों टूट गई थी और उसके कमजोर हाथों की उँगलियाँ, जिनकी हड्डियाँ दीखती थीं, उसकी छाती पर रेंगती हुई कोट के बटन लगाने का प्रयत्न कर रही थीं।

'तुम्हारे लिए इस समय जंगल में बाहर आना अच्छा नहीं है। देखो न, यहाँ जंगल में इस समय कितनी सील और ऊब है।' सोफया उससे बोली।

'मेरे लिए अब कोई चीज अच्छी नहीं है।' उसने हाँपते हुए उत्तर दिया—केवल एक मृत्यु ही अच्छी है!

उसकी बातें सुनकर दुःख होता था और उसे देखकर मन में आप-से-आप एक दया का भाव उठता था जो अपने को असहाय पाकर क्रोध का रूप धारण कर लेता था।

अलाव में रखी लकड़ियों का ढेर दहककर जला और उसकी लपटों की रोशनी में चारों तरफ की चीजें काँपने और हिलने लगीं और वृक्षों की छायाएँ डरकर जंगल की तरफ भागीं। इगनेटी का गोल-गोल फूले हुए गालों का चेहरा आग के उस पार

चमक रहा था। क्षण-भर में लपटें खत्म हो गईं और हवा में धुएँ की गन्ध भर गई। वृक्षों की छायाएँ फिर लौट आईं और कुञ्ज के ऊपर छाये हुए कुहरे से मिलकर ध्यानपूर्वक चुपचाप मानों बीमार के रुँधे हुए गले से निकलनेवाले शब्दों को सुनने लगीं।

'परन्तु हाँ, मेरे प्रति जो अपराध हुआ है, उसके साक्षात् प्रमाण की दृष्टि से मैं अभी भी लोगों का कुछ भला कर सकता हूँ। मुझे देखो, मेरी उम्र अभी अट्ठाईस वर्ष की है। परन्तु मैं क़ब्र में घुस चुका हूँ। दस वर्ष पहले अपने हाथों से पाँच सौ पौण्ड वजन आसानी से उठाकर मैं अपने कंधों पर लाद लिया करता था। अपनी इस शक्ति से मैं सोचता था कि मैं बड़े मजे से सत्तर वर्ष तक दुनिया में जीवित रह सकता हूँ और इस बीच में काल मेरे पास फटक भी नहीं सकता; परन्तु अभी मैंने सिर्फ दस वर्ष ही गुजारे हैं और आगे जाना असम्भव हो गया है। मालिकों ने मुझसे बोझ ढुलवा-ढुलवाकर मेरा जीवन ही मुझसे लूट लिया है। उन्होंने दस वर्ष मुझसे लगातार मेहनत करवा करके मेरे जीवन के चालीस वर्ष मुझसे छीन लिये हैं; हाय, उन्होंने मेरी जिन्दगी के चालीस वर्ष मिट्टी में मिला दिये।'

'बस, यही इसका गीत है।' राइबिन ने सुस्ती से सोफ़िया से कहा।

अलाव की आग फिर भड़की; परन्तु अबकी बार वह और भी जोरदार और साफ थी। वृक्षों की छायाएँ फिर जंगलों की तरफ भागीं, परन्तु क्षण ही भर में वे फिर लौटकर अलाव की तरफ लपकीं और काँपती हुई अग्नि के चारों ओर चुपचाप आश्चर्य-चकित-सी नाचने लगीं। नीचे अलाव की लकड़ियाँ चट-चट करती थीं और ऊपर से वृक्षों की पत्तियाँ मृदुल सरसर स्वर करती थीं और गरम वातावरण से मानों घबराकर हँसोड़ और चंचल अग्नि की लाल और पीली जिह्वाएँ खिलवाड़ करती हुई ऊपर को चिनगारियाँ उड़ाती थीं। वृक्षों की जलती हुई पत्तियाँ भी उड़ती फिरती थीं। नभोमण्डल से तारे चिनगारियों की तरफ मुस्करा-मुस्कराकर मानों उन्हें अपने पास बुला रहे थे।

'यह मेरा ही गीत नहीं है। हजारों दूसरे आदमी भी यही गीत गाते हैं। परन्तु वे बेचारे चुपचाप अपने मन-ही-मन में गाते हैं, क्योंकि वे नहीं जानते कि उनके अभागे जीवन से दूसरों को कितना पाठ मिल सकता है। कितने लोग इस दुनिया में मेरी तरह अपने रक्त का पसीना बनाते-बनाते अभागे, अपाहिज और अपङ्ग होकर चुपचाप भूखों मर जाते हैं। यह बात जोर से चिल्लाकर कहने की आवश्यकता है। हाँ भाइयो, जोर से चिल्लाकर कहने की आवश्यकता है।' इतना कहते-कहते उसे खाँसी का एक दौरा फिर हो आया और वह झुककर खाँसने और काँपने लगा।

'क्यों जी?' यफ़ेम ने पूछा—मेरा दुर्भाग्य तो मेरी चीज है। दूसरों को तो मेरा आनन्द देखना चाहिए!

'बीच में मत बोलो!' राइबिन ने उसे फटकारकर कहा।

'तुम्हीं तो कहते थे कि मनुष्य को अपनी मुसीबतों की डींग नहीं हाँकनी चाहिए।' यफेम ने राइविन की तरफ क्रोध से मुँह बनाकर कहा।

'वह दूसरी बात है। सेवली की मुसीबत सर्व-साधारण की मुसीबत है, केवल उसी की नहीं। उसकी बिलकुल दूसरी बात है।' राइविन ने गम्भीरता से कहा—इस बेचारे को पाताल में ढकेलकर उसका वहाँ गला घोंटा गया है और वह वहाँ से चिल्लाकर दुनिया से कहता है—खबरदार भाइयो, इधर मत आना।

याकोब ने एक बर्तन लाकर मेज पर रखा और बीमार से कहा—लो, सेवली, मैं तुम्हारे लिए थोड़ा दूध लाया हूँ। इसे पी लो।

सेवली ने इनकार करते हुए सिर हिलाया। परन्तु याकोब ने जबरदस्ती, बाँह पकड़कर उसे उठाया और मेज के पास ले गया।

'देखो जी,' सोफया राइविन को झिड़ककर बोली; क्योंकि उसे बुरा लग रहा था—तुमने इस आदमी को यहाँ बुलाकर उसे क्यों कष्ट दिया? यहीं वह मर जाय तो?

'मर जाने दो।' राइविन ने उत्तर दिया—वह लोगों के बीच में मरे तो अच्छा है। एकान्त में मरने से लोगों के बीच में मरना आसान है। मरते दम तक उसे अपनी बीती कहने दो। उसका जीवन यों ही तबाह हो गया है। दूसरों की भलाई के लिए भी उसे कुछ कष्ट उठा लेने दो। इसमें कुछ हर्ज नहीं।

'मुझे लगता है, तुम्हें इसमें बड़ा मजा आता है।' सोफया बोली।

'मजा तो मालिकों को आता है। ईसा सलीब पर चढ़कर कराहता है तो वह खुश होते हैं। हम तो एक अभागे मनुष्य के अनुभवों से पाठ सीखना और तुम्हें भी कुछ पाठ सिखाना चाहते हैं।'

मेज पर बैठकर बीमार ने फिर बोलना प्रारम्भ किया—मालिक काम कराकर लोगों को मारते हैं। क्यों? वे लोगों के जीवन नष्ट करते हैं! काहे के लिए? बताओ? मेरे मालिक के नेफीडोव के कपड़े के कारखाने में लगातार काम करते-करते मेरी जिन्दगी नष्ट हो गई और मेरे मालिक ने मेरी मेहनत से रुपया कमाकर अपनी प्रिया को सोने का एक बहुमूल्य शृङ्गारदान भेंट किया, जिसमें शृङ्गार की सभी चीजें सोने की थीं। इस शृङ्गारदार का सोना मेरे खून से रँगा था। वह मेरे जीवन की लूट थी। उसी के लिए मेरा जीवन मुझसे छीन लिया गया था। एक आदमी मुझे काम करा-कराकर मार डालता है—सिर्फ इसलिए कि वह अपनी प्रिया को मेरे खून की भेंट देकर उसे प्रसन्न कर सके। मेरे खून की भेंट चढ़ाकर मेरे मालिक ने अपनी प्रिया के लिए एक सुवर्ण का शृङ्गारदान खरीदा था।

'मनुष्य ईश्वर का प्रतिबिम्ब है न?' यफेम मुस्कराता हुआ बोला—देखिए, उस प्रतिबिम्ब का कितना अच्छा उपयोग किया जाता है।

'अच्छा, अच्छा, कहे जाओ अपनी कहानी। चुप मत हो।' राइविन मेज पर हाथ मारकर बेसब्री से बोला।

'चुपचाप मत सहो !' याकोब ने धीरे से कहा। इगनेटी मुस्करा रहा था। मा ने देखा कि तीनों किसान बोलते कम थे ; परन्तु उनकी ज्ञान के लिए भूखी आत्माएँ अतृप्त ध्यान से उस बीमार की बातें सुनती थीं। जब राइविन बोलने लगता था तो वे उसके चेहरे की तरफ घूरने लगते थे और सेवली की बातें सुनकर उनके चेहरों पर एक विचित्र तीखी-सी मुस्कान खेलने लगती थी। उनके हाव-भाव से उसके हृदय में बीमार के लिए दया का भाव नहीं लगता था।

सोफया की ओर झुककर मा ने उसके कान में पूछा—क्या वह बीमार जो कहता है, वह सच है ?

सोफया ने जोर से उत्तर दिया—हाँ, सच है। अखबारों में भी ऐसी भेंटों की खबरें छपती हैं। अभी मास्को में ही ऐसा हुआ था।

'और उस आदमी को फाँसी पर नहीं लटकाया गया ?' राइविन ने पूछा—ऐसे आदमी को फाँसी देनी चाहिए। सबके सामने खड़ा करके उसकी खाल खींचनी चाहिए और उसका अपवित्र, गन्दा मांस कुत्तों को खिला देना चाहिए। जिस दिन लोग समझकर उठ खड़े हुए, ऐसे आदमियों की शामत आ जायगी। लोग अपने ऊपर होनेवाले अत्याचार को बहा देने के लिए ऐसे आदमियों के रक्त की नदियाँ बहा देंगे ; क्योंकि वह रक्त उनका है—उनकी रगों में से खींचा गया है और वे उनके मालिक हैं।

'बड़ी ठण्ड है !' बीमार बोला। याकोब उसको सहारा देकर आग के पास उठाकर ले गया। अलाव में पड़ी हुई लकड़ियों का ढेर एक-सा भक-भक जल रहा था, और वृक्षों की छाया मुखहीन डायनों की तरह अग्नि के चारों ओर काँपती हुई नाच रही थी। सेवली पेड़ के एक गिरे हुए तने पर बैठ गया और उसने खाँसते हुए, अपने खुश्क, पारदर्शी हाथ अग्नि की तरह फैला दिये। राइविन अपना सिर एक तरफ को झुकाकर धीरे से सोफया से बोला—इसका किस्सा तुम्हारी किताबों से अधिक बाअसर है, उसे सुनना चाहिए। मशीन से किसी कामगार का हाथ कट जाता है या वह उसमें उलझकर मर जाता है, तब तो लोगों को समझाया जा सकता है कि कामगार का ही दोष था। मशीन और मालिक का नहीं। परन्तु जब एक आदमी का खून चूसकर उसकी इस तरह खाल्ड़ निकालकर फेंकी जाती है, तब लोगों को यह समझना कठिन है कि इसमें भी उसी का दोष था। कोई किसी का कत्ल कर डाले, यह मैं समझ सकता हूँ। परन्तु केवल अपने मनोरंजन के लिए किसी का खून चूसना मैं नहीं समझ सकता। गरीब लोगों का खून क्यों चूसा जाता है ? कुछ लोगों के विनोद के लिए ही न ? केवल कुछ लोगों के मनोरंजन के लिए ही न ? इसी लिए न कि कुछ आदमी पृथ्वी पर आनन्द से रह सकें और हमारे खून की कमाई से अपने लिए अच्छी-अच्छी चीजें मुहय्या कर सकें ! स्त्रियाँ, घोड़े, चाँदी के चम्मच, सोने की रकाबियाँ और अपने बच्चों के लिए तरह-तरह के बहुमूल्य खिलौने ! हम काम करें, दिन काम, रात काम और जिन्दगी-भर काम-ही-काम। सुबह से शाम तक जी-तोड़ मेहनत करें, और वे हमारी कमाई की दौलत

अपने घरों में जमा करें और उससे खरीदकर अपनी प्यारी को एक सोने का शृङ्गारदान भेंट करें। क्यों इसी लिए न ?

मा ने उसकी बातें सुनीं और उसकी तरफ देखते हुए अपने सामने के अन्धकार में उसे फिर एक बार वही सड़क जाती हुई दिखलाई दी, जिस पर पवेल और उसके दूसरे सब साथी जा रहे थे। ब्यालू कर चुकने पर वे लोग फिर अलाव के चारों ओर आ बैठे। सामने आग में जलती हुई लकड़ियाँ जल-जलकर खत्म हो रही थीं और पीछे अँधियारी का बादल लटक रहा था, जिसमें सारा वन और आकाश डूब गया था। बीमार आँखें फाड़-फाड़कर आग की तरफ घूरता था और बार-बार खाँसता था, जिससे उसका सारा शरीर काँप जाता था। मानों उसका बचा-खुचा जीवन उसकी छाती में से निकल भागने के लिए बेसब्री से झगड़ता था और उसके बीमारी से जर्जर और शुष्क शरीर को शीघ्र से शीघ्र छोड़ देने के लिए उत्सुक था।

'शायद छप्पर के अन्दर बैठें तो तुम्हें आराम मिले, सेवली !' याकोव ने झुककर उससे पूछा।

'नहीं जी !' कठिनाई से उसने उत्तर दिया—मैं यहीं बैठूँगा। तुम लोगों के पास बैठने के लिए अब मेरे पास अधिक समय नहीं रह गया है, जो थोड़ा समय रह गया है, उसे तुम्हारे पास गुजारूँ तो अच्छा है। इतना कहकर वह चुप हो गया और फिर आँखें फाड़कर सबकी तरफ घूरता हुआ एक रूखी मुस्कान से बोला—मुझे तुम्हारे पास बैठना अच्छा लगता है। मैं तुम लोगों को देखता हूँ तो मुझे विचार आता है कि शायद तुम लोगों के कष्टों का बदला ले सको जिनका जीवन मेरी तरह लूट लिया गया। शायद उन सबके खून का बदला तुम चुकाओ, जिन्हें लोभ ने तबाह और बरबाद कर डाला।

वे उसकी बातें सुनकर सुन्न हो गये थे। किसी ने उसकी इस बात का उत्तर नहीं दिया। बीमार बातें करते-करते ऊँघने लगा था और उसका सिर छाती पर झुककर झूलने लगा था।

राइबिन उसकी तरफ देखता हुआ उदासी से बोला—वह हमारे पास आकर यों ही रोज बैठता है और हमेशा हमें अपने दुःख की कहानी सुनाता है। इसका बस एक ही राग है, जिसे यह दिन-रात अलापता है कि पूँजीवाद में मनुष्य-जीवन निरर्थक है।

'और तुम कौन-सी दूसरी कहानी या राग सुनाना चाहते हो ?' मा ने विचारते हुए कहा—जब कि हजारों मनुष्यों का रोज इसी लिए खून बहाया जाता हो कि थोड़े-से मालिक और अमीर लोग अपने आराम, दिखावे और मौज-मजे पर रुपये बहा सकें, तो तुम और क्या सुनने की आशा रखते हो ?

'इसकी बातें सुनते-सुनते जी ऊब उठता है।' इग्नेटी ने धीमें से कहा—एक ही बात यह बार-बार दुहराता है, जिसे सुनकर भूलना कठिन हो जाता है।

'परन्तु उसकी सारी कहानी ही उसकी उस एक बात में समाई हुई है। वही उसके

सारे जीवन की कहानी है, यह क्यों भूल जाते हो ?' राइविन ने क्रोध से इगनेटी को जवाब दिया।

इतने में बीमार ने सिर घुमाया और आँखें खोलकर जमीन पर लेट गया। याकोब उठा और छप्पर में से दो छोटे ओवरकोट लाकर चुपचाप उसने उनसे अपने चचेरे भाई को ढाँक दिया और फिर सोफया के वास्ते उठकर बैठ गया।

प्रसन्नमुख लाल वर्ण अग्निदेव के चिढ़े हुए चेहरे की मुस्कराहट का प्रकाश चारों ओर की काली वस्तुओं पर पड़ रहा था और ज्वालाओं की सर-सर और चटचट में से एक वेदनापूर्ण स्वर निकल रहा था।

सोफया संसार में लोगों के जीवन के लिए होनेवाले संग्रामों की बातें उन्हें सुनाने लगी—कैसे किसी जमाने में जरमनी के किसान अपना जीवन सुखी बनाने के लिए लड़े, आयरलैंड के किसानों के भाग्य का कैसे निबटारा हुआ, फ्रान्स के कामगारों ने अपनी स्वाधीनता के लिए कैसे लड़ाइयाँ लड़ीं इत्यादि, इत्यादि। अँधियारी रात की मखमली चादर से ढँके हुए वन की, मूक वृक्षों से घिरी हुई उस कुञ्ज में चञ्चल अग्निदेव के सम्मुख वे ऐतिहासिक घटनाएँ, जिन्होंने संसार को हिला डाला था, जीवित होकर नाचने लगीं। एक जाति के बाद दूसरी जाति की स्वाधीनता के लिए रक्त-रंजित लड़ाइयों की चर्चाएँ हुईं। सत्य और स्वाधीनता के लिए जान हथेली पर रखकर लड़नेवाले वीरों के नाम याद किये गये।

सोफया की कुछ-कुछ शिथिल हो चलनेवाली आवाज किसी अतीत की एक मृदुल प्रतिध्वनि की तरह उन्हें लगती थी, जिससे उन्हें आशा होती थी और अपने ऊपर विश्वास होता था। पूरी मण्डली संसार में बसनेवाले अपने दूसरे बन्धुओं की महान् लड़ाइयों की गाथा संगीत की तरह ध्यान-पूर्वक सुन रही थी। वे लोग सोफया के पतले और पीले चेहरे की ओर देखते थे और बीच-बीच में उसकी भूरी आँखों की मुस्कान के प्रति-उत्तर में मुस्कराते थे। उन्हें संसार के लोगों की स्वाधीनता और समता के लिए अनन्त लड़ाई अपने सामने छिड़ी हुई स्पष्ट दीखी, और वह उन्हें पहले से अधिक पवित्र लगी। उन्होंने अपनी इच्छाओं और इरादों को भूतकाल की रक्त-रंजित जमीन पर अपरिचित लोगों के साथ घूमते हुए पाया, और वे अपने अन्तर में, बुद्धि और हृदय में, संसार से मिलकर एक होने लगे। उन्हें अतीत में भी मित्र दीखे, जिन्होंने एकमत होकर किसी समय पृथ्वी पर अपना अधिकार करने का निश्चय किया था, और जिन्होंने अपने इस पवित्र निश्चय की वेदी पर अपार त्याग की भेंटें चढ़ाई थीं, और उसे अपने रक्त की अंजलि देकर मनुष्य-जाति ने एक नये जीवन, एक ओज की तरफ कदम बढ़ाया था और एक सार्वभौम एकता का भाव जागृत किया था, जिसमें सबकी आत्मा मिलकर एक हो रही थी—एक नया हृदय पैदा हो गया था जो सबको प्रेम से आलिंगन करने के लिए उत्सुक हो रहा था।

'एक दिन आ रहा है, जिस दिन सारी दुनिया के कामगार सिर उठाकर, दृढ़ता से

घोषणा करेंगे : बस ! बस ! हमें यह जीवन और नहीं चाहिए।' सोफया की धीमी परन्तु जोरदार आवाज विश्वास से गूँजती हुई बोली—तब उस रोज, उन लोगों की मायावी शक्ति जिन्होंने लोभ की नींव पर अपने किले चुनवाये हैं, बालू की भीत की तरह खिसक पड़ेगी, और उनके पाँवों के नीचे से पृथ्वी निकल जायगी, उनको टिकने के लिए एक तिनके का सहारा भी न मिल सकेगा।

'हाँ, हाँ, ऐसा ही होगा।' राइविन ने सिर झुकाये हुए प्रतिध्वनि की—हमें अपने ऊपर तरस नहीं करना चाहिए। हमें अपने ऊपर विश्वास करना चाहिए। हम दुनिया को विजय करेंगे !

सब सोफया की बातें चुपचाप निश्चल होकर इस प्रकार सुन रहे थे, मानों वे उन बातों के किसी प्रवाह को तोड़ने से डरते हैं, जिसमें बहते हुए वह संसार से एक हुए जा रहे थे। हाँ, बीच-बीच में कोई सावधानी से एक लकड़ी का टुकड़ा उठाकर आग में जरूर डाल देता था और लकड़ी का टुकड़ा आग में पड़ने से जो चिनगारियाँ और धुआँ उठता था, उसे हाथ से स्त्रियों की तरफ से हटा देता था।

एक बार याकोब ने उठकर जरूर कहा कि, 'कृपया जरा ठहरिए।' और इतना कहकर वह दौड़ा और छप्पर में से ओढ़ने के लिए चादरें निकाल लाया, जिनसे इगनेटी की सहायता से उसने स्त्रियों के कन्धों और पैरों को ढँक दिया।

चादरें ओढ़ चुकने पर सोफया ने फिर बोलना प्रारम्भ किया। वह आनेवाली विजय के दिवस का चित्र खींचती हुई और श्रोताओं को अपनी शक्ति और श्रद्धा में विश्वास दिलाती हुई, उनके हृदय में उन सब भाइयों के प्रति एकता का भाव पैदा करने लगी जो बेचारे अपने मजे उड़ानेवाले मालिकों के आमोद-प्रमोद के लिए निरर्थक परिश्रम करने में अपना जीवन गँवाते हैं।

रात-भर इसी तरह की बातें होती रहीं। पौ फटने पर सोफया थककर चुप हो गई और मुस्कराती हुई, घूमकर अपने चारों ओर के विचार-पूर्ण और तेजस्वी चेहरों को देखने लगी।

'अब चलने का समय हो गया।' मा उससे बोली।

'हाँ, समय हो गया।' सोफया ने थकी हुई आवाज से कहा।

किसी ने जोर से एक निःश्वास लिया।

'मुझे तुम्हारे जाने पर दुःख होता है।' राइविन बड़े नम्र स्वर में सोफया से कहने लगा—तुम बहुत अच्छा बोलती हो। तुमने जो यह महान कार्य हाथ मे लिया है, वह हम सबको मिलाकर एक सूत्र में बाँध देगा। जब हमें यह मालूम हो जाता है कि जो हम चाहते हैं, वही हमारे दूसरे लाखों भाई भी चाहते हैं, तो हमारा हृदय विशाल होने लगता है, जिससे हमारा बल बढ़ता है।

'तुम, लोगों को भलाई का सन्देश सुनाती हो, और वे बदले में तुम्हें सूली देने के लिए तैयार हैं।' यफेन ने धीरे-से हँसते हुए कहा और एकाएक उछलकर खड़ा हो गया।

'काका माइखेल, इन्हें कोई देखे उससे पहिले ही इन्हें यहाँ से चला जाना चाहिए। हम लोग जब किताबें लोगों में बाँटेंगे तब अधिकारियों को आश्चर्य होगा कि वे यहाँ कहाँ से आईं और तब शायद किसी को इन यात्रियों के यहाँ आने की याद आ जाय।'

'अच्छा मैया, तुम्हारे कष्ट करके यहाँ आने के लिए तुम्हें धन्यवाद।' राइविन ने यफेम की बात काटते हुए कहा—जब मैं तुम्हें देखता हूँ तो मुझे पवेल की याद आती है। तुम लोगों ने बहुत ठीक मार्ग पकड़ा है।

यह कहते हुए मृदुल भाव से मुस्कराता हुआ वह उठा और मा के सामने खड़ा हो गया। हवा में ठण्ड थी; परन्तु राइविन केवल एक कमीज पहिने हुए था, जिसके गले के बटन खुले होने से उसकी छाती नीचे तक उभरी दीखती थी। मा उसके विशाल शरीर को देखती मुस्कराई और उसे सलाह देती हुई कहने लगी—कुछ और कपड़े पहन लो। बड़ी ठण्ड है।

'मैय्या, मेरे अन्तर में आग जलती है।' राइविन बोला।

तीनों नवयुवक आग के चारों ओर खड़े हुए आपस में धीरे-धीरे बातें कर रहे थे, और उनके पैरों के पास बीमार, कोट ओढ़े हुए मुर्दे की तरह पड़ा था। आकाश लाल-पीला हो रहा था और रात्रि की छायाएँ भागकर न जाने कहाँ छिप गई थीं। पेड़ों की पत्तियाँ सूर्य भगवान का आवाहन करती हुई नजाकत से हिल रही थीं।

'अच्छा तो फिर प्रणाम!' राइविन ने सोफया का हाथ स्नेह से दबाते हुए कहा—शहर में तुमसे किस प्रकार मिलना होगा!

'मेरे पास आ जाना, मैं तुम्हें इनसे मिला दूँगी।' मा ने उत्तर में कहा।

नौजवान एक साथ सोफया की तरफ बढ़े और चुपचाप लज्जापूर्ण नम्रता से उन्होंने सोफया का हाथ दबाया। उनके चेहरों से कृतज्ञता और स्नेहमय मित्रता से उत्पन्न होने-वाले संतोष का भाव टपकता था, और इस भाव को, जो नवीन होने से उनके हृदयों में एक लज्जा का भाव भरता था, छिपाने का प्रयत्न कर रहे थे। रात-भर न सोने के कारण सूखी हुई आँखों से मुस्कराते हुए वे चुपचाप सोफया की आँखों में देखते हुए कभी इस पैर का सहारा लेकर खड़े होते थे और कभी उस पैर का।

'थोड़ा-सा दूध पीकर जाओ।' याकोब स्त्रियों से बोला।

'क्या दूध है?' यफेम ने पूछा।

'हाँ, थोड़ा-सा है।'

इगनेटी ने परेशानी से सिर खुजलाते हुए कहा—कहाँ है! वह तो मुझसे फैल गया।

इस पर तीनों को हँसी आ गई। नौजवान दूध पीने की बात तो कर रहे थे; परन्तु मा को और सोफया को लगा कि वे थे किसी दूसरे विचार में, जिसके कारण उन्हें मा और सोफया के आराम का खयाल हो रहा था। इस विचार के आते ही सोफया के हृदय पर भी असर हुआ और उसे भी एक झिझक और नम्रतापूर्ण लज्जा हो आई, जिसके कारण उसके मुँह से उत्तर में केवल ये स्नेहपूर्ण शब्द निकले—धन्यवाद, बन्धुओ!

इस पर सब एक दूसरे की ओर ताकने लगे, मानों 'बन्धु' शब्द से अपने-आपको सम्बोधित होते हुए सुनकर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ हो। इतने में बीमार की सुस्त खाँसी की खुर्र-खुर्र आवाज सुनाई देने लगी। अलाव में रखी हुई लकड़ियों का ढेर जलकर राख हो चुका था।

'अलविदा!' किसानों ने दबी हुई आवाज में स्त्रियों से कहा; उनका वह दुःख-पूर्ण शब्द स्त्रियों के कानों में बड़ी देर तक गूँजता रहा।

ऊषाकाल के मन्द प्रकाश में किसानों से विदा होकर दोनों स्त्रियाँ जङ्गल की पगडण्डी पर धीरे-धीरे साधारण चाल से चलीं। मा सोफया के पीछे चलती हुई बोली—यह दृश्य बड़ा सुन्दर था, स्वप्न की भाँति सुन्दर! लोग सत्य ज्ञान के लिए उत्सुक हैं! मेरे लाड़ले! हाँ, हाँ, वे सत्य ज्ञान चाहते हैं! बिलकुल उसी तरह जैसे कि किसी बड़े त्योहार पर प्रातःकाल से ही गिरजे में लोगों की भीड़ इकट्ठी हो, और पादरी न आया हो, और चारों ओर अन्धकार और शान्ति छाई हो, ठण्ड पड़ रही हो, मूर्तियों के आगे कहीं मोम-बत्तियाँ और कहीं चिराग जलाये जा रहे हों, जिनसे धीरे-धीरे अन्धकार भाग रहा हो और देवालय में धीरे-धीरे प्रकाश फैल रहा हो।

'ठीक है।' सोफया ने उत्तर दिया—केवल देवालय या गिरजे के स्थान में हमारे काम में सारी दुनिया आती है।

'देवालय के स्थान में सारी दुनिया!' मा ने विचार-पूर्वक सिर हिलाते हुए दोहराया—कितना महान् विचार है! इस पर विश्वास करना कठिन होता है।

फिर चलती-चलती वे राइबिन, उस बीमार और दूसरे किसान नवयुवकों के बारे में बातें करने लगीं, जिन्होंने रात-भर चुपचाप बड़े ध्यान से उनकी बातें सुनी थीं, और जिन्होंने अपने भोंड़े, परन्तु प्रत्यक्ष ढङ्ग में छोटी-छोटी बातों में उनका खयाल रखकर उनके प्रति अपना स्नेह और कृतज्ञता दिखाने का प्रयत्न किया था।

जंगलों को पार करके वे चलती-चलती मैदानों में पहुँची। सूर्यदेव ने उठने का प्रयत्न करते हुए उनका स्वागत किया। परन्तु अभी तक आकाश के उस ओर की अपनी सीमा को लाँघकर वे ऊपर नहीं चढ़े थे। उन्होंने अपनी गुलाबी किरणों का पारदर्शी पंखा ही प्राची दिशा में अभी फैलाया था, जिसके प्रकाश की लाली में घास की पँखुड़ियों पर पड़ी हुई ओस की बूँदें बसन्ती बहार के रंग-बिरंगे जवाहरातों की झलकें चमक रही थीं। नींद से फौरन ही जागे हुए पक्षी, अपने आनन्दपूर्ण कलकल नाद से ऊषाकाल को सजीव कर रहे थे। कौवे काँव-काँव करते और पंख फड़फड़ाते हुए इधर से उधर उड़ रहे थे। कोयलें वृक्षों से सुरीली तानें छेड़ रही थीं। फाखता हू-हू-हू-हू करके डराने का प्रयत्न करते थे। लावे गाते हुए मानों सूर्यदेव से मिलने के लिए उड़े आते थे। रात्रि की छायाएँ पहाड़ियों पर से हटते ही उनके सामने का अन्तर भी दूर हो गया।

'किसी-किसी की बहुत-सी बातें सुनने पर भी समझ में कुछ नहीं आता और किसी की थोड़ी-सी सीधी-सादी बातों से ही बहुत-कुछ समझ में आ जाता है।' मा सोचती हुई

कहने लगी—देखो न, बीमार आदमी कैसी बातें करता था! मैंने सुना था, और अपनी आँखों से स्वयं देखा भी था कि कारखानों में कामगारों का खून चूसा जाता है। परन्तु बचपन से उसको देखते रहने की आदी हो जाने से उससे मेरे हृदय पर कोई चोट नहीं लगती थी। परन्तु आज उसकी भयङ्कर बातें सुनकर—हे भगवान, क्या सचमुच दुनिया में ऐसा होता है!—कि मजदूर पेशा लोग जीवन-भर काम कर केवल इसी लिए मरते हैं कि उनके मालिकों को अमोद-प्रमोद की सामग्री मिल सके! यह तो बड़ा अन्याय है!

मा के विचारों को उस बीमार को देखकर और उसकी बातें सुनकर एक ठेस-सी लगी थी, जिससे वे बहुत-सी छोटी-छोटी घटनाएँ और बातें उसे याद आने लगीं जिनसे वह कभी अच्छी तरह परिचित थी, परन्तु अब भूलने लगी थी। आज की घटना के प्रकाश में उन बातों का विचार करती हुई बोली—यह तो प्रत्यक्ष है कि मालिकों को हर तरह का संतोष है। मुझे याद है कि एक कारखाने का अफसर जब हमारे गाँव से होकर निकलता था, तो सबसे अपने घोड़े को सलाम करवाता था। जो ऐसा नहीं करता था, उसे वह गिरफ्तार कर लेता था। भला कहो, ऐसा करने की उसे क्या जरूरत रहती थी! ऐसी बातों का समझ में आना असम्भव हो जाता है। फिर ज़रा देर चुप रहकर मा ने एक गहरी साँस लेते हुए कहा—ऐसा लगता है कि गरीब गरीबी के कारण मूर्ख रहते हैं और अमीर लोभ के कारण।

इतने में सोफया ने धीरे-धीरे एक प्रभाती गाना शुरू कर दिया।

पच्चीसवाँ परिच्छेद

निलोवना का जीवन अब एक विचित्र शान्ति से परिपूर्ण रहने लगा था। अपने मन की इस शान्ति पर उसे कभी-कभी स्वयं आश्चर्य होता था। उसका इकलौता लड़का जेल में था, और वह जानती थी कि उसको कठोर दण्ड हो सकता है, फिर भी जैसे ही उसे अपने लड़के का ध्यान आता था वैसे ही उसे ऐन्ड्री, फेड्या और दूसरे बहुत-से उन लोगों का भी ध्यान आ जाता था, जिनको वह पहले से तो नहीं जानती थी, परन्तु अब उसको उन सबके भाग्य से अपने बेटे का भाग्य सम्बद्ध लगता था। अप्रत्यक्ष रूप से एक आप-से-आप पैदा होनेवाला भाव उसकी दृष्टि सिर्फ अपने लड़के पर ही न रख-कर चारों ओर की दूसरी वस्तुओं पर डालने के लिए बाधक था, और ऊषाकाल के सूर्य की पतली-पतली अनन्त किरणों की तरह वह हर वस्तु पर अपना प्रकाश डालता हुआ सारी वस्तुओं को एक चित्र में लाने का प्रयत्न करता था। अस्तु, निलोवना के विचार किसी एक ही वस्तु पर जमकर नहीं रह जाते थे।

सोफया अकसर कहीं चली जाती थी, और चार-पाँच दिन के बाद हँसती-खेलती लौट आती थी। कभी-कभी आने के कुछ घण्टे बाद ही फिर चल देती थी और हफ्तों गायब रहकर लौटती थी। उसका जीवन समुद्र की लहरों की तरह चलायमान था।

निकोले हमेशा अपने काम में संलग्न रहता था। वह एक रसहीन, क्रमबद्ध जीवन बिताता था। सवेरे आठ बजे चाय पीकर वह अखबार पढ़ने बैठ जाता था जिसमें से पढ़-पढ़कर वह मा को खबरें सुनाता था। डूमा अर्थात् जारकाल की रूसी व्यवस्थापक सभा में दिये हुए व्यापारियों के प्रतिनिधियों के भाषण पढ़कर वह मा को बिना द्वेष-भाव के सुनाता था और उसको शहर का जीवन अच्छी तरह से समझाता था।

उसकी बातों से मा की समझ में यह अच्छी तरह आने लगा था कि शहरों में दौलत की चक्की में किस तरह निर्दयता से मनुष्य पीसे जाते हैं। नौ बजे उठकर वह अपने दफ्तर को चल देता था।

मा घर के कमरे झाड़-बुहारकर खाना तैयार करती और नहा-धोकर साफ-कपड़े पहन लेती और कमरे में बैठकर किताबें पढ़ती या चित्र देखती। वह पढ़ने तो लगी थी, परन्तु शीघ्र पढ़ने का प्रयत्न करने से जल्द थक जाती थी, जिससे शब्दों का अर्थ सम-झना भी उसे असम्भव हो जाता। परन्तु चित्र देखने में उसे आनन्द आता था, क्योंकि वे उसके सामने एक स्पष्ट जीती-जागती, आश्चर्यजनक वस्तुओं की नई दुनिया खोल-कर रख देते थे। सुन्दर कला के नमूने, मशीनें, जहाज, इमारतें, सम्पत्ति और धनराशि, जिसकी विभिन्नता और विशालता को देखकर मा दंग हो जाता थी। इस दृश्य को देखकर मा के जीवन में भी विशालता आती थी। अब हर एक दिन उसके लिए

कोई-न-कोई नवीनता अथवा महान् आश्चर्य लेकर आता था। इस जग जानेवाली स्त्री की अतृप्त आत्मा संसार के विभिन्न सौन्दर्य और अनन्त सम्पत्ति के दृश्य देख-देखकर दिन पर दिन विकसित हो रही थी। मा को पशु-पक्षियों की तसवीरें देखकर बड़ी प्रसन्नता होती थी। वह उन पशु-पक्षियों के नाम तो नहीं पढ़ पाती थी, परन्तु उनके चित्रों से उसे पृथ्वी के सौन्दर्य, सम्पत्ति और विशालता का पता लग जाता था।

'दुनिया बहुत बड़ी है।' उसने एक दिन निकोले से खाना खाते समय कहा।

'हाँ, दुनिया बहुत बड़ी है, परन्तु फिर भी हम लोगों के लिए उसमें जगह नहीं है।' निकोले ने उत्तर में कहा।

कीड़ों, विशेषतः तितलियों के चित्र देखकर मा को सबसे अधिक आश्चर्य होता था।

'देख निकोले, यह कितने सुन्दर हैं!' वह आश्चर्य से कहती—कितना सौन्दर्य इस दुनिया में है। परन्तु हमारी आँखों से वह छिपा रहता है। हमारे पास से होकर वह गुजरता है और हमारी आँखें उसे नहीं देखतीं, हमारा जीवन क्या है? हम मिट्टी के ढेलों की तरह लुढ़क रहे हैं। न दुनिया का कुछ ज्ञान है, न किसी चीज में रस लेते हैं। सदा मन मारे रहते हैं। यदि लोगों को पता लगे कि दुनिया इतनी विशाल और धन-सम्पत्ति-पूर्ण है, और उसमें ऐसी-ऐसी आश्चर्यजनक चीजें हैं, तो उनके हर्ष और आनन्द का वारापार न रहे!

निकोले मा की आनन्दपूर्ण बातें सुन-सुनकर मुस्कराता और उसके लिए नई-नई चित्रपूर्ण पुस्तकें लाता।

सन्ध्या को प्रायः निकोले के घर पर मित्रमंडली इकट्ठी होती थी, जिसमें आमतौर पर शरीक होनेवालों में एक तो एलेक्सी वेसीलीविश होता था, दूसरा एक सुन्दर पीले मुँह, काली दाढ़ी का गम्भीर मितभाषी मनुष्य था। तीसरा रोमन पेट्रोविश था, जिसके मुँह पर मुँहासे थे और सिर गोल था और जो सदा क्रोध से होंठ काटता रहता था; चौथा आइवन डेनीलोविश था जो नाटा, पतला, तुक्कल दाढ़ी और बारीक बालों का एक जोशीला, बक्की और तेज नौजवान था। पाँचवाँ यगोर था जो सदा अपने मित्रों से अपनी बीमारी का मजाक उड़ाता रहता था। कभी-कभी दूर के शहरों से भी कुछ लोग आ जाते थे। इन लोगों में हमेशा एक ही विषय पर अर्थात् दुनिया-भर के कामगारों के सम्बन्ध में लम्बी-लम्बी चर्चाएँ होती थीं। अपने बन्धु दूसरे कामगारों की चर्चा करते-करते अक्सर बड़ी गरमा-गरमी हो जाती थी, हाथ हिलने लगते थे और चाय के प्याले पर प्याले खत्म होने लगते थे; परन्तु निकोले ऐसे शोरोगुल की परवाह न करके, चुपचाप बैठकर घोषणाएँ तैयार करता था और तैयार कर लेने पर उन्हें पढ़कर बन्धुओं को सुनाता था जो उनकी वहीं पर बड़े-बड़े अक्षरों में अपने-अपने कागजों पर नकल कर लेते थे। बाद में मा बड़ी सावधानी से बिखरे हुए फटे कागजों के टुकड़ों को एकत्र करके आग में जला देती थी।

मा सबको पीने के लिए चाय के प्याले देती थी और दुनिया के कामगारों और उनके

जीवन के सम्बन्ध में और उनमें सत्य का प्रचार करके उनकी आत्माओं को जगाने के प्रयत्नों के लिए वे लोग जैसी गरमा-गरमी से चर्चा करते थे, उस पर उसे आश्चर्य होता था। बन्धुओं के सामने केवल यही एक समस्या लगती थी, और उनके जीवन इसी एक समस्या के चारों ओर चक्कर लगाते थे। प्रायः वे क्रोध में भरकर एक दूसरे के विरुद्ध मत प्रकट करते थे और एक-दूसरे को दोष देते थे, और चिढ़े हुए चर्चा में लगे रहते थे।

मा को लगता था कि कामगारों के जीवन को वह मित्र-मण्डली से अधिक समझती थी, और जिस कार्य में वे प्रवेश करना चाहते थे, उसकी महानता उसको उनसे अधिक स्पष्ट थी।

अस्तु, मा बड़े-बूढ़े की भाँति उनको उन बच्चों की तरह देखती थी, जो दम्पति-सम्बन्ध का अर्थ न समझते हुए पति-पत्नी का आपस में एक-दूसरे से नाटक खेलते हैं।

कभी-कभी सशेन्का भी आती थी। परन्तु वह कभी देर तक नहीं ठहरती, और हमेशा बिना किसी की तरफ मुस्कराये व्यवहारू ढङ्ग से बातें करती थी। परन्तु जाते समय पवेल के सम्बन्ध में वह मा से कुछ अवश्य पूछती थी।

'कहो, पवेल कैसा है?'

'ईश्वर की कृपा है! अच्छा है। खुश है!'

'अच्छा, मिलने पर मेरा प्रणाम कहना।' वह मा से कहती हुई चली जाती।

कभी-कभी मा सशेन्का से शिकायत करती थी कि पवेल को इतने दिन जेल में पड़े हो गये हैं, परन्तु मुकदमे की तारीख ही नियत नहीं होती। सशेन्का मा की शिकायत सुनकर उदास हो जाती थी; परन्तु चुप रहती थी। चुपचाप हाथ की उँगलियाँ हिलाने लगती थी। निलोवना की उससे कहने की इच्छा होती थी—मेरी प्यारी लड़की! मैं जानती हूँ, तू पवेल को चाहती है। खूब जानती हूँ। परन्तु सशेन्का का गम्भीर चेहरा और उसके मिचे हुए होंठ और शुष्क, व्यवहारू बर्ताव शीघ्र ही मा को चुप रहने के लिए बाध्य कर देता था। सशेन्का की तरफ देखकर उससे कुछ कहने की मा को हिम्मत नहीं होती थी। अस्तु, एक आह भरकर छोकरी का बढ़ाया हुआ हाथ अपने हाथों में दबाकर मन-ही-मन कहती थी—मेरी अभागी छोकरी!

एक दिन नटाशा भी आई। मा से मिलकर उसे बड़ी खुशी हुई। वह मा से चिपट गई और उसे चूमकर अन्य बातें करते-करते धीरे से बोली, मानो उसे एकाएक याद आ गई हो—अम्माँ, मेरी मा मर गई। बेचारी अभागी मर गई। इतना कहकर उसने जल्दी से आँखों में आ जानेवाले आँसू पोंछ डाले और कहने लगी—मुझे, उसके लिए बहुत दुःख है। उसकी उम्र तो अभी पचास वर्ष की भी नहीं थी। अभी तो उसें बहुत दिन तक जीना था। * परन्तु सच तो यह है कि उसके लिए जीवन से मृत्यु ही अधिक अच्छी थी।

---

* रूस में भयंकर गरीबी होने पर भी वहाँ इतनी गरीबी नहीं थी कि लोगों की उम्रें हमारे देश की तरह कम हों।

वह हमेशा अकेली ही रहती थी—सबसे अलग और सबको अनावश्यक समझती हुई। मेरे बाप की आवाज सुनते ही वह काँप जाती थी। क्या ऐसे जीवन को जीवन कहा जा सकता है ! लोग अच्छी चीजों की आशा पर जीते हैं, उसे अपने पति की ठोकरों के अतिरिक्त और किसी चीज की आशा रखने का मौका नहीं था।

'ठीक कहती हो, नटाशा !' मा विचारती हुई बोली—लोग अच्छी चीजों की आशा पर जीते हैं, और अगर यह आशा न रहे तो फिर जीवन में क्या ! फिर स्नेह से नटाशा का हाथ थपथपाते हुए मा ने उससे पूछा—क्या तुम अकेली रहती हो ?

'हाँ !' लड़की ने धीरे से उत्तर में कहा।

मा उसका उत्तर सुनकर चुप हो गई। फिर एकाएक मुस्कराती हुई बोली—अच्छा आदमी कभी अकेला नहीं रहता। अच्छे आदमी के पास बहुत-से लोग आते रहते हैं।

नटाशा इन दिनों एक कस्बे में शिक्षिका थी। वहाँ पर एक कपड़े का कारखाना भी था। निलोवना उसको वहाँ जब्त किताबें, घोषणाओं के पर्चे और अखबार इत्यादि भेजा करती थी। सरकार से जब्तशुदा साहित्य का प्रचार करना मा ने अपना धन्धा कर लिया था। महीने में कई बार भिखारिन अथवा फीते या कपड़े बेचनेवाली का भेष बनाकर अथवा किसी धनवान व्यापारी की स्त्री या धार्मिक यात्री बनकर वह घोड़े पर या पैदल, कभी पीठ पर बोरा लादे और कभी हाथ में बेग लटकाये, इधर-उधर जाती नजर आती थी। रेलों, जहाजों, होटलों और सरायों में, हर जगह, वह बड़ी सावधानी से स्वाभाविक बर्ताव करती थी। अपरिचित मनुष्यों से भी इस प्रकार स्वयं ही बोलचाल शुरू करके मानों बहुत-कुछ दुनिया देखी और गुनी होने से उसे बड़ा आत्मविश्वास हो, वह उनका ध्यान अपने मिष्ट व्यवहार से अपनी ओर खींच लेती थी।

उसे लोगों से बातें करना अच्छा लगता था। उनके जीवन की कहानी सुनना, उनकी शिकायतें सुनना, उनकी चिन्ताएँ और उनके विलाप सुनना उसे पसन्द था। जब कभी वह किसी को अपने जीवन से अत्यन्त असन्तुष्ट पाती और उसके हृदय में वह असन्तोष देखती जो भाग्य की ठोकरों से झुँझलाकर अपने प्रश्नों का उत्तर चाहता था, तो उसका हृदय आनन्द से नाच उठता था। उसकी आँखों में मनुष्य-जीवन का विभिन्न रंगों से युक्त वह चित्र जिसमें मनुष्य चिन्ता और अशान्ति से घिरा हुआ पेट पापी के लिए ही लड़ता-लड़ता अपना जीवन व्यतीत कर देता है, दिन पर दिन समाता जाता था। अपने चारों तरफ वह स्पष्ट, भद्दी, नंगी, मुँहफट तृष्णा और लोभ का कोलाहल सुनती थी, जो मनुष्य को छलकर, लूटकर उसका खून चूसकर, जितना हो सके उतना रस उसके शरीर से खींच लेना चाहता था। वह देखती थी कि पृथ्वी पर है तो हर चीज़ की भरमार ; परन्तु फिर भी लोग भूखों मरते हैं। अनन्त सम्पत्ति के भण्डारों के पास रहते हुए भी वे बेचारे गरीबी में ही दिन बिताते हैं। शहरों में सोने-चाँदी से भरे गिरजे और मन्दिर होते हैं—जिस सोने-चाँदी की ईश्वर को, जाहिर है, कोई ज़रूरत नहीं होती और इन गिरजों और मन्दिरों के द्वार पर बाहर ठण्ड और भूख से काँपते हुए भिखारी

एक ताँबे के सिक्के की व्यर्थ आशा में खड़े रहते हैं। पहले भी मा यही वस्तुएँ अर्थात् सोने-चाँदी से भरे गिरजे और मन्दिर, जरी और रेशम के वस्त्र और गरीबों के झोपड़े और उनके चीथड़े देखा करती थी; परन्तु तब उसको यह सब चीजें स्वाभाविक लगती थीं। अब सत्य समझ लेने पर यह अन्तर उसे अखरता था और गरीबों के प्रति अपमान और सरासर अन्याय लगता था, उन गरीबों के प्रति जिनके हृदय में, वह अच्छी तरह जानती थी, गिरजों के लिए अमीरों से अधिक सम्मान और स्नेह था और जो ईश्वर के अधिक निकट थे।

ईसा मसीह के चित्रों और किस्सों से भी उसने यही समझा था कि वह गरीबों का मित्र था, क्योंकि वह गरीबों के-से सीधे-सादे कपड़े पहनता था। परन्तु गिरजों में, जहाँ गरीब अपनी आत्मा को सन्तोष देने जाते हैं, वह ईसा मसीह की मूर्ति को सलीब पर सोने की बेहूदा कीलों से जड़ा पाती थी, जिससे रेशमी और मखमली कपड़े लटकते हुए भूखों के मुँह पर से खाक उड़ाते हुए इनका मजाक उड़ाते थे। राइबिन के शब्द मा को ऐसे समय पर याद आते थे कि उन्होंने हमारे ईश्वर की भी शक्ल बदल दी है—उसको भी अपनी जात में मिला लिया है। जो कुछ उनके हाथ में पड़ता है, उसका हमारे विरुद्ध ही उपयोग करते हैं। गिरजों में हमें डराने के लिए हौआ खड़ा किया जाता है। ईश्वर को असत्य और पाखण्ड से ढँक लिया जाता है। और उसका मुख भयंकर बना दिया है, जिससे हमारी आत्मा को उससे बल न मिल सके। इस प्रकार के विचार बार-बार आने से उसने ईश्वर-प्रार्थना भी कम कर दी थी, परन्तु ईसा मसीह और उन लोगों के विषय में वह विचार अधिक करने लगी थी, जिनका नाम न लेकर भी मानों वह उनसे अब अनभिज्ञ हो। उसको लगता था, वे गरीबों की तरह ही रहते थे और अपने को मालिक समझते थे, जिससे दुनिया की सारी सम्पत्ति वे गरीबों में बाँट देना चाहते थे। ऐसे विचार मानों उसकी आत्मा में छेद करते हुए घुसे जाते थे और इन विचारों से सम्बन्ध रखनेवाली जो-जो बातें वह देखती और सुनती थी, उन्हें भी अपने हृदय से फौरन चिपटा लेती थी। इन्हीं विचारों ने उसके हृदय में अब प्रार्थना से ऊँचा स्थान ले लिया था और इन विचारों का प्रकाश मा अपने चारों ओर की अन्धकारपूर्ण दुनिया, जीवन और तमाम लोगों पर डालकर देखने का प्रयत्न करती थी।

मा को अब ऐसा लगने लगा कि ईसा मसीह, जिसे वह अभी तक भय अथवा एक ऐसे मिश्रित भाव से प्रेम करती थी, जिसमें भय, आशा, उदासीनता और हर्ष सब मिले हुए थे—अब स्वयं उसके निकट आ चला था, और वह जैसा वह पहले उसे समझती थी, नहीं था, बल्कि उससे भिन्न था। वह अब उसे अधिक ऊँचाई पर लगता था, जिससे वह उसको साफ तौर पर देख सकती थी, और अधिक तेजस्वी और अधिक आनन्द-पूर्ण भी था। मा को लगता था कि वह उसे सान्त्वना देता हुआ मुस्कराता था, और उसके अन्दर से एक जीवन का स्रोत-सा फूटकर निकल रहा था, मानों वह उसके नाम पर बहाई गई खून की नदी में नहाकर मनुष्य मात्र के लिए फिर जी उठा हो। परन्तु

वे लोग, जिनका खून इस नदी में बहाया गया था, शर्म के मारे, इस गरीबों के मित्र का नाम लेते भी झिझकते थे।

मा अपनी यात्राओं से सड़कों और गली-कूचों की बातें सुन-सुनकर हमेशा खुश और अपने कार्य की सफलता पर सन्तुष्ट और उत्साहित होकर घर लौटती थी।

'दुनिया में घूमना और दुनिया को देखना मुझे बड़ा अच्छा लगता है।' वह निकोले से शाम को घर लौटकर कहती—तुम तो हम लोगों का जीवन जानते ही हो। हमें एक तरफ को ढकेल आखिरी छोर पर कर दिया जाता है। हम लोग चोटें खाकर और जख्मी होकर भी, इच्छा न होते हुए भी, चलते हैं और सोचते हैं, यह सब क्यों होता है! हमें इस तरह धक्के क्यों दिये जाते हैं! दुनिया में सभी चीजों का जब इतना अधिक भण्डार है तो हम ही भूखे क्यों मरें! इतनी विद्या संसार में होते हुए भी हम मूर्ख और अविद्या के अन्धकार में क्यों रहें! कहाँ है वह ईश्वर, वह दयालु भगवान, जिसकी दृष्टि में न तो कोई गरीब है और न कोई अमीर है, जिसको अपने सभी बच्चों पर एक-सा स्नेह है! लोग धीरे-धीरे जीवन के इस अन्याय के विरुद्ध सिर उठा चले हैं। उन्हें लगने लगा है कि यदि उन्होंने अपनी सुधि स्वयं न ली तो असत्य उन्हें कुचलकर मार डालेगा।

यात्राओं से लौटकर मा अवकाश के समय में बैठकर फिर किताबें पढ़ती थी और चित्र देखती थी। सदा उसे कोई-न-कोई नई बात उन किताबों में मिलती थी। जीवन का चित्र उसकी आँखों के सामने दिन-दिन अधिक फैलता जाता था और प्रकृति के सौंदर्य और मनुष्य की महान सृजन-शक्ति का उसे दिन पर दिन अधिक ज्ञान होता जाता था। दफ्तर से लौट निकोले प्रायः मा को पुस्तकों के चित्रों पर टकटकी लगाये पाता था और मुस्कराता हुआ उसको हमेशा कोई-न-कोई कौतूहल-पूर्ण बातें सुनाता था। मा उसके साहस पर आश्चर्य दिखाती हुई अविश्वास से पूछती थी—क्या सचमुच ऐसा हुआ!

अपनी भविष्यवाणियों में अटल विश्वास रखनेवाला निकोले अपने चश्मे के भीतर से मा के चेहरे पर एक तीव्र दृष्टि डालता और धीरे-धीरे उसे आनेवाले उज्ज्वल भविष्य के किस्से सुनाने लगता।

'मनुष्य की इच्छाओं का अन्त नहीं आता और उसकी शक्ति भी अपार है।' वह कहता—परन्तु दुनिया आध्यात्मिक सम्पत्ति संचित करने में बड़ी सुस्त है। कारण यह है कि आजकल जो मुक्ति चाहता है, उसे धन संचित करना पड़ता है। ज्ञान संचित नहीं करना होता। परन्तु जब लोभ का नाश हो जायगा और लोग गुलाम बना देनेवाली मेहनत और मशक्कत से आजाद हो जायँगे तब...'

मा ध्यान-पूर्वक उसकी बातें सुन रही थी—यद्यपि उसके शब्दों का अर्थ अच्छी तरह उसकी समझ में नहीं आता था; परन्तु उसके शब्दों में शक्ति भरनेवाली उसके मन की श्रद्धा मा के हृदय में भी दिन-दिन घर कर रही थी।

'दुर्भाग्य से अब दुनिया में बहुत कम ऐसे आदमी हैं, जो आजाद कहे जा सकते हैं।' निकोले ने कहा। और मा की समझ में वह बात आ गई, क्योंकि वह ऐसे लोगों

को जानती थी, जिन्होंने लोभ और बुराई से आर्थिक आजादी प्राप्त की थी। वह यह भी अच्छी तरह समझती थी कि यदि दुनिया में आजाद आदमी काफी होते तो लोगों के काले अज्ञान और भयंकर जीवन में भी दयालुता, सादगी, भलाई और प्रकाश होता जो उसे कहीं नहीं दीखता था।

'मनुष्य को आज क्रूर बनने के लिए बाध्य होना पड़ता है।' निकोले ने उदास होकर कहा।

मा ने उसकी हाँ में हाँ मिलाते हुए अपना सिर हिलाया और उसे लिटिल रूसी की बातें याद आने लगीं।

छब्बीसवाँ परिच्छेद

एक दिन निकोले, जो सदा ठीक समय पर घर लौट आया करता था, बहुत देर से, अपनी आदत के विरुद्ध दफ्तर से लौटकर घर आया और घबराहट से हाथ मलता हुआ मा से बोला—सुनती हो निलोवना ! आज जेलखाने से हमारा एक बन्धु भाग गया ; परन्तु अभी तक हम लोगों को यह पता नहीं लगा कि कौन भागा है !

मा का शरीर यह खबर एकाएक सुनकर काँप उठा। वह फौरन कुर्सी पर बैठ गई और मुश्किल से सँभलते हुए उसने पूछा—कहीं पाशा तो नहीं भाग गया !

'हो सकता है। परन्तु प्रश्न तो यह है कि उसका पता कैसे लगाया जाय और कैसे उसको छिपाने में सहायता की जाय। अभी तक मैं सड़कों पर इसी ताक में फिरता रहा कि शायद कहीं वह मिल जाय। यह था तो मेरे लिए बड़ी मूर्खता का काम ; परन्तु और मैं करता तो क्या करता ! फिर सड़कों पर उसकी तलाश में घूमने जा रहा हूँ।'

'मैं भी चलूँगी।' मा ने उठते हुए कहा।

'तुम यगोर के पास जाकर तो पूछो, शायद उसे कुछ खबर लगी हो।' निकोले मा से यह कहता हुआ जल्दी से बाहर निकल गया।

मा ने झटपट सिर पर एक रूमाल बाँधा और आशा से भरी हुई घर से निकलकर सड़कों पर उड़ती हुई-सी चली। उसकी आँखों के सामने अँधेरा छा रहा था और उसका दिल जोर-जोर से धड़क रहा था ; परन्तु वह सिर झुकाये हुए आगे की तरफ दौड़ रही थी और दायें-बायें देखती भी न थी। गर्मी सख्त थी। मा की जल्दी-जल्दी चलने से साँस उखड़ गई। अस्तु, यगोर के मकान की सीढ़ियों के पास पहुँचकर वह रुक गई। थकान के मारे वह एकदम ऊपर न चढ़ सकी। खड़ी होकर दम लेने के लिए जैसे ही उसने मुँह फेरा, आश्चर्य की एक धीमी चीख मारकर उसने एक क्षण के लिए आँखें बन्द कर लीं। उसको लगा कि निकोले व्यसोवशचिकोव जेबों में हाथ डाले द्वार पर खड़ा उसकी ओर मुस्करा रहा था। परन्तु जब उसने फिर आँखें खोलीं तो वहाँ कोई नहीं था।

'मैं समझती हूँ मैंने उसे सचमुच देखा है।' वह सीढ़ियों पर धीरे-धीरे चढ़ती हुई और कान लगाकर उसकी बातें सुनने का प्रयत्न करती हुई, मन-ही-मन कहने लगी। इतने में उसने अपने पीछे किसी के धीमे-धीमे पगों की आहट सुनी और जैसे ही जीने के एक मोड़ पर खड़ी होकर वह नीचे की तरफ देखने को झुकी तो उसे फिर वही चेचक-रू चेहरा अपनी ओर मुस्कराता हुआ दिखाई दिया।

'निकोले ! निकोले !' बड़बड़ाती हुई मा उससे मिलने के लिए झपटी ; परन्तु यह जानकर कि निकोले भागकर आया था, पवेल नहीं, उसका दिल दुखा।

'जाओ, ऊपर जाओ !' निकोले ने हाथ हिलाते हुए धीमे स्वर में मा को उत्तर दिया।

अस्तु, वह जल्दी-जल्दी दौड़ती हुई सीढ़ियों पर चढ़ गई। यगोर के कमरे में घुसने पर मा ने यगोर को सोफा पर लेटा हुआ पाया। वह भौंचक उससे धीमे से बोली—निकोले जेल से भाग आया है।

'कौन-सा निकोले ?' यगोर ने तकिये से सिर उठाते हुए पूछा—दो निकोले हैं।

'निकोले व्यसोवशचिकोव। वह यहीं आ रहा है।'

'अच्छा ! अच्छा ! परन्तु मैं तो उसका स्वागत करने के लिए उठ नहीं सकूंगा !'

व्यसोशचिकोव कमरे में दाखिल भी हो चुका था। घुसते ही उसने कमरा अन्दर से बन्द कर लिया था और अपना टोप उतारकर, बालों पर हाथ फेरता हुआ, धीरे-धीरे मुस्करा रहा था। यगोर ने अपना शरीर कुहनियों पर उठाकर उसकी तरफ देखा और सिर हिलाते हुए कहा—आइए महाशय, पधारिए ! कृपया यहाँ आराम कीजिए।

बिना कुछ कहे-सुने निकोले खिलकर मुस्कराता हुआ मा की तरफ बढ़ा और उसका हाथ स्नेह से पकड़ कर दबा दिया।

'अम्माँ, मैंने तुमको न देख लिया होता तो शायद मैं जेल को फिर लौट जाता। इस शहर मे तो मैं किसी को नहीं जानता। और गाँव जाता तो फौरन ही फिर पकड़ लिया जाता। अस्तु, मैं इधर-उधर टहलता हुआ यही सोच रहा था कि मैंने बड़ी बेवकूफी की जो मैं जेल से भाग आया। इतने में मैंने तुम्हें जल्दी-जल्दी जाते हुए देखा। फिर क्या था, मैं फौरन तुम्हारे पीछे लग गया।

'परन्तु जेल से तुम कैसे निकल भागे ?' यगोर ने पूछा।

व्यसोवशचिकोव ने भोंडी तरह सोफा के एक किनारे पर बैठकर यगोर का हाथ स्नेह से दबाकर पकड़ लिया और शरमाता हुआ कहने लगा—मुझे खुद पता नहीं, मैं कैसे भाग आया ! अचानक निकल आने का मौका मिल गया। मैं जेलखाने में टहल रहा था। कुछ कैदी एकाएक अपने एक नम्बरदार को पीटने लगे। यह नम्बरदार पहले पुलिस में नौकर था और वहाँ से चोरी के अपराध मे सजा पाने के कारण निकाल दिया गया था। जेल में वह कैदियों के खिलाफ जासूसी और मुखबिरी करता था और सबकी नाक में दम किये रहता था। अस्तु, कैदियों ने उस पर हमला कर दिया था, जिससे एकाएक बड़ा शोर मच गया और सारे नम्बरदार डरकर जोर-जोर से सीटियाँ बजाने लगे। मैंने देखा, जेल का द्वार खुला है और पहरेदार नदारद हैं। मैं आगे बढ़ता हुआ चला गया। एकाएक देखता हूँ कि जेल के द्वार के बाहर मैं एक खुले मैदान में आ गया हूँ। सामने शहर दीख रहा था। मेरा दिल शहर की तरफ आकर्षित हुआ और मैं धीरे-धीरे मानों नींद में चलता हुआ इधर चला आया। शहर की तरफ बढ़ता हुआ मैं विचार करता रहा कि कहाँ जाऊँगा। पीछे मुड़कर देखा तो जेल का द्वार बन्द हो चुका था। अस्तु, मैं असमञ्जस में पड़ गया। मुझे जेल में पड़े हुए बन्धुओं का ध्यान आया जिससे

मुझे बड़ा दुःख हुआ और मैंने सोचा कि मैंने बड़ी बेवकूफी की। मैंने अपने बन्धुओं को छोड़कर जेल से भाग आने का कभी कोई इरादा नहीं किया था।

'हूँ!' यगोर बोला—जनाब को चाहिए था कि लौट जाते और इज्जत के साथ जाकर जेलखाने का द्वार खटखटाते और हाथ जोड़कर जेलर से अन्दर घुसने की इजाजत माँगते—'क्षमा कीजिए जेलर साहब!' आपको कहना चाहिए था—मेरा दिल जरा बाहर जाने को ललचा गया। मुझे अफसोस है उसके लिए। लीजिए, मैं फिर हाजिर हूँ!

'हाँ' निकोले ने मुस्कराते हुए कहा—यह भी मूर्खता ही होती। यह मैं समझता हूँ। परन्तु जो भी हो, दूसरे बन्धुओं को जेल मे बन्द छोड़कर इस प्रकार भाग आना अच्छा नहीं है। मैं उनसे बिना कुछ कहे-सुने योंही चुपचाप चला आया। रास्ते में जाता हुआ मुझे एक बच्चे का जनाजा मिल गया था, जिसके साथ-साथ मैं सिर झुकाये हुए लोगों में मिलकर चुपचाप चलने लगा और मुँह उठाकर किसी को इधर-उधर देखा तक नहीं। कब्रस्तान मे पहुँचकर मैं एक जगह बैठ गया और स्वच्छ खुली हवा फेफड़ों में भर जाने के बाद एक विचार मेरे दिमाग में आया।

'अच्छा! तुम्हारे दिमाग में एक विचार आया!' यगोर ने पूछा और एक गहरी साँस लेते हुए फिर बोला—एक विचार तुम्हारे दिमाग में भर जाने से कहीं तुम्हारे दिमाग बेचारे का दम तो नहीं घुटने लगा!

व्यसोवशचिकोव उसकी बात को बुरा न मानकर हँसता हुआ सिर हिलाकर बोला—मेरा दिमाग अब उतना कमजोर नहीं है, जितना पहले था। परन्तु तुम तो यगोर आइवानोविश, अभी तक बीमार ही बने हो!

'जिससे जो बनता है, करता है। किसी को किसी दूसरे के काम में-हस्तक्षेप करने से मतलब!' यगोर ने इस प्रकार का उत्तर देते हुए उसकी बात टाल दी और खाँसता हुआ बोला—कहे जाओ अपनी कहानी।

'मैं कब्रस्तान से उठकर अजायबघर देखने चला गया और वहाँ टहलता-टहलता सोचने लगा, अब किधर जाऊँ? मुझे अपने ऊपर क्रोध आने लगा। भूख भी बड़ी लग रही थी। कुछ भी समझ में न आया और मैं सड़कों पर घूमने लगा। भूख के मारे चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं। पुलिस के अफसरों को घूमते और सबके चेहरों की तरफ घूर-घूरकर देखते हुए मैंने देखा और मुझे खयाल हुआ कि बच्चा, इस चेहरे को लेकर बहुत देर तक इसी तरह इधर-उधर नहीं घूम सकते! जल्द ही फिर बड़ा घर देखना होगा! इतने में एकाएक सामने से निलोवना जल्दी-जल्दी जाती हुई दिखाई दीं और मैं इनके पीछे-पीछे चलता हुआ यहाँ आ गया। बस, यही मेरा किस्सा है।'

'मैंने तुम्हे देखा तक नहीं!' मा शर्माती हुई बोली।

'बन्धुओं को मेरी बड़ी चिन्ता हो रही होगी। वे आश्चर्य कर रहे होंगे कि मैं कहाँ चला गया?' निकोले अपना सिर खुजलाता हुआ कहने लगा।

'और क्या तुम्हें जेल के अफसरों के लिए दुःख नहीं होता? मैं समझता हूँ, उन्हे

भी तो तुम्हारे कारण बड़ी चिन्ता हो रही होगी !' यगोर ने उसे छेड़ते हुए कहा। फिर वह धीरे से सोफा पर करवट लेकर घूमा और गम्भीर, परन्तु स्नेह-पूर्ण शब्दों में कहने लगा—खैर, मजाक हो चुका। अब तुम्हें कहीं छिपाने की फिक्र करनी होगी। छिपाने को जितना जी चाहता था, उतना वह आसान नहीं है। मैं उठकर चल-फिर सकता तो बड़ा अच्छा होता।...इतना कहते-कहते उसकी साँस उखड़ गई और वह अपनी छाती हाथों से धीरे-धीरे मलने लगा।

'तुम तो बहुत बीमार हो, यगोर आइवानोविश !' निकोले सिर झुकाकर दुःख-पूर्ण स्वर में बोला। मा ने एक गहरी साँस ली और उस छोटे-से कमरे को जिसमें असबाब भी भरा था, चिन्तापूर्ण नेत्रों से चारों तरफ देखा।

'मेरी चिन्ता छोड़ो। अम्माँ, तुम इससे पवेल का समाचार क्यों नहीं पूछतीं ! शरमाने की क्या बात है ?' यगोर ने मा से कहा।

व्यसोवश्चिकोव खिलखिलाकर मुस्कराया और बोला—पवेल बहुत अच्छी तरह है। वह बड़ा मजबूत है। हम सब लोगों का बड़ा-बूढ़ा बनकर रहता है। वही अधिकारियों से हमारी तरफ से बातचीत करता है और उन पर हुक्म चलाता है। सब उसका आदर करते हैं। उसका कारण भी है।

ब्लेसोवा ने सिर हिलाते हुए इसकी बातें सुनीं और यगोर के सूजे हुए कुछ नील वर्ण, स्थिर और तेजहीन चेहरे की तरफ देखा जो एक विचित्र ढंग पर चपटा-सा लगता था, और जिसकी केवल आँखों में हर्ष और जीवन की झलक दीखती थी।

'मुझे कुछ खाने को दो तो बड़ा अच्छा हो। मेरे पेट में चूहे बुरी तरह लोट रहे हैं।' निकोले के मुँह से एकाएक निकला और यह कहकर वह खिसियाया-सा मुस्कराने लगा।

'अम्माँ, उस आलमारी मे रोटी रखी है। वह निकालकर इन्हें खाने को दे दो। और जरा ड्योढ़ी मे जाकर बाईं तरफ दूसरा द्वार खटखटाओ। उसमें से एक स्त्री निकलेगी। कृपया उससे कहना कि घर में जो कुछ खाने के लिए हो, बटोरकर फौरन यहाँ ले आये।'

'घर-भर का खाना बटोरकर सब यहाँ क्यों ले आये ?' निकोले ने उज्र करते हुए पूछा।

'तकल्लुफ मत दिखाओ। बहुत खाने को मेरे यहाँ होगा ही नहीं। हाँ, यह मुमकिन है कि कुछ भी न हो।'

मा ने ड्योढ़ी में आकर द्वार खटखटाया और कान लगाकर उत्तर की प्रतीक्षा करने लगी। यगोर के विषय में उसके मन में बड़ा भय और दुःख हो रहा था। मा को लगता था कि वह मृत्यु के घाट आ लगा है।

'कौन है ?' किसी ने द्वार के उस ओर से खटखटाने के उत्तर में पूछा।

'यगोर आइवानोविश तुम्हें बुलाता है।' मा ने धीरे से कहा।

'अभी आती हूँ।' एक स्त्री ने द्वार बिना खोले ही उत्तर दिया। मा ने एक पल-भर तक स्त्री की बाट देखी और जब वह न निकली तो फिर द्वार खटखटाया। अबकी बार खटखटाते ही द्वार तुरन्त खुल गया और एक लम्बी स्त्री, आँखों पर चश्मा चढ़ाये हुए जल्दी-जल्दी बाहें चढ़ाती हुई बाहर निकली। उसने मा से कर्कश स्वर में पूछा—क्या चाहती हो ?

'मुझे यगोर ने भेजा है।'

'ओहो ! अच्छा, अच्छा आओ ! हाँ, हाँ, मैं तो तुम्हें जानती हूँ !' फिर वह स्त्री बोली—कहो, अच्छी तो हो ? अँधेरे में मुझे तुम्हारी शक्ल नहीं दीखी।

निलोवना ने उसके चेहरे को गौर से देखा तो उसे याद आया कि यह स्त्री भी कभी-कभी निकोले के घर आया करती थी।

'सभी बन्धु हैं !' मा अपने मन में सोचने लगी।

स्त्री ने निलोवना को अपने से आगे चलने के लिए बाध्य किया और चलते-चलते पूछा—क्या यगोर की तबियत बिगड़ रही है ?

'हाँ, वह लेटा हुआ है। उसने तुमसे यह कहलाया है कि कुछ खाने के लिए हो तो लेती आओ।'

'खाना ! खाने की उसको तो कभी इच्छा होती नहीं !'

इस प्रकार बातें करती हुई जैसे ही दोनों स्त्रियाँ यगोर के कमरे में घुसीं तो उन्हे यह शब्द सुनाई पड़े—मैं अपने पूर्वजों से मिलने की तैयारी कर रहा हूँ, मित्र ! आ गई लियूडमिला ! देखो, यह महाशय अधिकारियों की बिना आज्ञा लिये जेलखाने से चले आये हैं। कैसे ढीठ और निर्लज्ज हैं ! पहले इन्हें खाना खिलाओ और फिर कहीं ले जाकर एक-दो दिन के लिए छिपा आओ।

स्त्री ने सिर हिलाते हुए बीमार के चेहरे की तरफ घूरकर देखा और सख्ती से बोली—इतनी बकवास क्यों करते हो यगोर ? जानते नहीं हो कि बहुत बोलने से तुम्हें नुकसान होता है ! जैसे ही यह लोग आये थे, वैसे ही तुम्हें मुझे बुला लेना था। मुझे लगता है, अभी तक तुमने अपनी दवा भी नहीं पी है। इस लापरवाही से तुम्हारा क्या मतलब है ? तुम स्वयं कहते हो, दवा की खुराक लेने के बाद तुम्हें साँस लेने में आसानी होती है। फिर भी वक्त पर दवा नहीं पी लेते। बन्धुओ, चलो मेरे कमरे में। थोड़ी ही देर में यहाँ अस्पताल से लोग इन्हे ले जाने के लिए आयेंगे।

'अच्छा, तो मुझे आखिर अस्पताल जाना ही होगा !' यगोर ने मुँह पर हाथ फेरते हुए पूछा।

'हाँ, हाँ, मैं भी तुम्हारे पास वहीं रहूँगी।'

'तुम भी वहीं चलकर रहोगी !'

'हाँ, हाँ, चुप रहो !'

यह कहते हुए उसने कम्बल से सँभालकर यगोर की छाती ढाँक दी। फिर उसने

निकोले को घूरकर देखा और अपनी आँखों से मानों शीशी की दवा नापी। बोलती तो वह साधारण स्वर में थी, जोर से नहीं ; परन्तु उसकी आवाज गूँजती थी। उसकी चाल-ढाल भी सरल थी ; चेहरा पीला था और आँखों के चारों ओर बड़े-बड़े नीले रंग के कुण्डल-से बन रहे थे। उसकी काली-काली भौंहें नाक पर आकर मिल जाती थीं, जिससे उसकी आँखें कठोर और अन्दर को धँसी हुई लगती थीं। उसका चेहरा देखकर मा के हृदय में खुशी नहीं हुई थी ; क्योंकि मा को वह हठी और कठोर लगी। उसकी आँखें भी निस्तेज थीं, और वह सदा इस प्रकार बोलती थी, मानों किसी को हुक्म देती हो।

'अच्छा, हम लोग जाते हैं।' वह बोली—मैं जल्दी ही लौट आऊँगी। तब तक तुम यगोर को एक चम्मच इस दवा में से पिला देना।

'अच्छा।' मा ने उससे कहा।

'और देखो, उसे बातें मत करने देना।' यह कहती हुई वह निकोले को साथ लेकर चली गयी।

'बड़ी प्रशंसनीय स्त्री है।' यगोर ने एक गहरी साँस लेते हुए कहा—कमाल की औरत है। इसके साथ तुम्हें काम करना चाहिए, अम्मा! देखती हो, काम करते-करते बेचारी कितनी थक जाती है। यही अपना सारा साहित्य छापने का काम करती है।

'बातें मत करो, यगोर! यह लो, दवा पी लो!' मा ने नम्रता से कहा।

यगोर ने दवा निगल ली और न जाने क्यों उसकी एक आँख ऊपर को चढ़ने लगी।

'मरना तो है ही, न बोलने से क्या होगा!' उसने मा के चेहरे की तरफ दूसरी आँख से देखते हुए और धीरे-धीरे मुस्कराते हुए कहा। मा ने चुपचाप सिर झुका लिया, क्योंकि दुःख से मा की आँखों में आँसू आ गये थे।

'कुछ फिक्र नहीं है अम्माँ! यह स्वाभाविक ही है। जीवन का आनन्द जो भोगता है, उसको मृत्यु का सामना भी करना ही होता है।'

मा ने उसका हाथ पकड़ लिया और स्नेह से बोली—कृपया यगोर, चुप रहो!

यगोर ने आँखें बन्द कर लीं, मानों वह अपनी छाती के भीतर होनेवाली गड़-गड़ाहट को सुनने का प्रयत्न कर रहा हो। फिर हठ करके बोला—चुप रहने का अब कोई अर्थ नहीं अम्माँ! चुप रहने से मुझे अब क्या फायदा होगा? मेरे इस कष्टमय जीवन की जो दो-चार घड़ियाँ बाकी हैं, उन्हें मैं एक अच्छे साथी से बात-चीत करने में बिताने का मौका क्यों चला जाने दूँ? उस दुनिया में समझता हूँ मानों इतने अच्छे साथी नहीं मिल सकेंगे।

मा ने व्यग्रता से उसकी बात काटकर उससे कहा—देखो, तुम मुझसे बातें करोगे तो वह श्रीमतीजी आकर मुझे डाँटेंगी।

'वह श्रीमतीजी नहीं है, अम्मा! वह तो एक विप्लववादी स्त्री है। एक ग्रामीण शिक्षक की छोकरी है। हाँ, वह डाँटेगी तो तुम्हें जरूर ही अम्माँ! क्योंकि वह सभी को हमेशा डाँटती रहती है।' फिर धीरे-धीरे होंठ चलाते हुए, वह अपने पड़ोसी की जीवनी मा को सुनाने लगा। उसकी आँखों में मुस्कराहट थी, जिसमें मा को लगा कि वह जान-बूझकर ठठोली कर रहा था। मा ने उसके सूजे हुए नील वर्ण चेहरे की तरफ गौर से देखा, और उसे यह जानकर दुःख होने लगा कि वह मृत्यु के बहुत निकट पहुँच चुका था।

'तुम्हारे साथी को तुरन्त ही कपड़े बदलने होंगे और इस स्थान को शीघ्र से शीघ्र छोड़कर चला जाना होगा। जाओ, उसके लिए कुछ कपड़े बाजार से खरीद लाओ। मुझे दुःख है, आज सोफया यहाँ नहीं है। लोगों को छिपाने के काम में वह बड़ी सिद्ध-हस्त है।'

'वह कल यहाँ आ जायेगी।' ब्लेसोवा अपने कन्धों पर शाल डालती हुई बोली। जब मा को कोई काम करने के लिए दिया जाता था तो उस काम को तुरन्त ही पूरा करने की उसे तीव्र इच्छा हो जाती थी और जब तक वह उस काम को पूरा नहीं कर लेती थी, तब तक किसी और चीज का विचार भी करना उसके लिए असम्भव हो जाता था। अस्तु, उसने नीची नजरों से मानों वह किसी विचार में हो, उत्साह से फौरन ही पूछा—उसके लिए किस प्रकार की पोशाक खरीदकर लाऊँ?

'किसी भी प्रकार की पोशाक से काम चल जायगा। उसे रात को निकालकर ले जायँगे।'

'रात को? रात को तो और भी खतरा होता है? सड़कों पर आदमी कम और पुलिस अधिक होती है। और उसकी शक्ल तो तुमने देखी है, खास तौर पर भोंड़ी है।'

यगोर खखारता हुआ हँसा और बोला—अभी तुम इस काम में निरी छोकरी ही हो, अम्माँ!

'क्या मैं तुम्हें मिलने अस्पताल में आ सकूँगी?' मा ने एकाएक यगोर से पूछा।

उसने खाँसते हुए सिर हिलाकर कहा—हाँ, हाँ।

लियूदमिला मा की तरफ देखकर बोली—क्या तुम भी मेरा हाथ उसकी शुश्रूषा में बटाना चाहती हो? ऐसा हो तो बड़ा अच्छा है। हम दोनों बारी-बारी से यगोर की देख-भाल अच्छी तरह से कर सकती हैं। खैर, अभी तो जल्दी जाओ।

यह कहकर उसने जोर से ब्लेसोवा का हाथ पकड़ा और मुस्कराती हुई जल्दी-जल्दी उसे बाहर ले चली।

'बुरा मत मानना अम्माँ!' वह बड़ी नम्रता से द्वार पर मा से बोला—मैं इस तरह तुम्हें यहाँ से जल्दी-जल्दी भगा रही हूँ। मैं जानती हूँ, यह मेरे लिए गुस्ताखी है। परंतु यगोर के लिए बोलना बहुत ही हानिकारक है। मुझे अभी तक उसके अच्छे हो जाने की पूर्ण आशा है। इतना कहकर उसने मा के दोनों हाथ स्नेह से पकड़कर इतने जोर

से दबाये कि मा की उँगलियों की हड्डियाँ तक चटख गईं। उसकी आँखें स्नेह से बन्द हो गई थीं।

मा को उसका माफी माँगना अच्छा नहीं लगा। अस्तु, वह बड़बड़ाने लगी—ऐसा क्यों कहती हो? भला गुस्ताखी की इसमें क्या बात है? अच्छा तो मैं अब जाती हूँ, नमस्कार!

'पुलिस के जासूसों पर निगाह रखना!' स्त्री ने धीरे से मा के कान में चलते वक्त कहा।

'हाँ हाँ, मैं समझती हूँ।' मा ने तनिक अभिमान से उत्तर में कहा। द्वार से निकलकर वह एक क्षण के लिए रूमाल ठीक करने के बहाने गली में रुकी और चारों तरफ निगाह दौड़ाकर उसने देखा कि कोई पीछा तो नहीं कर रहा है। सड़क की भीड़ में मिले हुए चलनेवाले जासूसों को पहचान लेने का उसे अभ्यास हो गया था। उनका दिखावटी लापरवाही का व्यवहार और स्वाभाविक दीखने की चेष्टा और इस दिखावे के पीछे छिपी हुई उनकी चालाकियाँ और उनकी चिन्ता और उनकी अपराधी की-सी अप्रिय दृष्टि वह अच्छी तरह पहचानती थी।

उसको कई परिचित चेहरे नजर आये। अस्तु, वह साधारण चाल से सड़क पर धीमे-धीमे चलने लगी, कुछ आगे चलकर उसने एक किराये की मोटर ले ली और उस पर बैठकर बाजार पहुँच गई। कपड़े खरीदने में भी उसने दूकानदारों से बड़ा भाव-ताव किया और बीच-बीच में अपने शराबी पति पर बड़बड़ाती हुई झुँझलाहट जाहिर करती, क्योंकि उसके लिए हर मास नये-नये कपड़े खरीदने होते थे। दूकानदारों ने उसकी इन बातों पर कोई खास ध्यान नहीं दिया। परन्तु वह अपनी इस होशियारी पर बड़ी खुश थी। सड़क पर चलते-चलते उसे विचार आया था कि पुलिस भी तो समझती होगी कि निकोले को कपड़े बदलने की जरूरत होगी। अस्तु, बाजार में जासूस अवश्य लगाये गये होंगे। वह बड़ी सावधानी से चतुराई करती हुई कपड़े लेकर यगोर के घर लौट आई। परन्तु इसके बाद उसे निकोले को लेकर शहर से बाहर जाने का काम दे दिया गया। मा और निकोले, दोनों सड़क के दोनों तरफ चले। व्यसोवशचिकोव को धीरे-धीरे, सिर झुकाये हुए नाक तक नीचा टोप खींचकर और पैरों तक लम्बे कोट के सिरों से पैर उलझा-उलझाकर चलते हुए देखकर आनन्द हो रहा था। एक अकेली गली में आगे चलकर उन्हें सशेन्का मिली। मा ने सिर हिलाकर व्यसोवशचिकोव से विदा ली, और इस काम से सफलता-पूर्वक छुटकारा पाने पर एक गहरी साँस लेती हुई अपने घर की तरफ मुड़ी।

'परन्तु पाशा और ऐन्ड्री अभी जेल में ही हैं!' वह चलती-चलती सोचकर दुखी होने लगी।

निकोले उसे देखते ही चिल्लाकर बोला—यगोर की हालत बहुत खराब हो गई है। उसको अस्पताल ले गये हैं। लियूडमिला यहाँ आई थी। तुम्हें अस्पताल बुला गई है।

'अस्पताल बुला गई है ?'

हिलते हुए हाथों से चश्मा ठीक करते हुए निकोले ने मा को जाकिट पहिनने में मदद दी और मा का हाथ स्नेह से पकड़कर दबा लिया। उसकी आवाज मन्द हो गई थी और काँप रही थी।

'हाँ, यह गठरी भी अपने साथ लेती जाओ, व्यसोवशचिकोव का प्रबन्ध ठीक कर दिया ?'

'हाँ, उसका प्रबन्ध कर दिया।'

'मैं भी यगोर को देखने चलूँगा !'

मा का सिर थकावट से चकरा रहा था। परन्तु निकोले का ध्यान आते ही उसे नाटक के पटाक्षेप की-सी चेतावनी हो गई थी।

'शायद बेचारे की मृत्यु आ गई है—मर रहा है !' यही बुरा विचार बार-बार उसके दिमाग में घूँसे-सा लगा रहा था।

परन्तु जब वह अस्पताल के सुन्दर स्वच्छ छोटे कमरे में पहुँची और यगोर को तकिये के सहारे पलँग पर बैठा हँसते हुए पाया, तब उसकी वह चिन्ता दूर हो गई। द्वार पर रुकते ही उसने यगोर को डाक्टर से भर्राई हुई, परन्तु सजीव आवाज में कहते हुए सुना था—इलाज सुधारों के समान है, डाक्टर साहब !

'बकवास मत करो !' डाक्टर ने अधिकार के स्वर में पतली आवाज से कहा।

'मगर मैं तो क्रान्तिवादी हूँ ! मुझे सुधारों से घृणा है !'

डाक्टर ने उसकी बातों की तरफ ध्यान न देते हुए विचार-पूर्वक अपनी दाढ़ी खींचते हुए यगोर के चेहरे की सूजन को हाथ से टटोलकर देखा।

मा इस डाक्टर को पहचानती थी। वह निकोले का घनिष्ठ मित्र आइवान डेवेलोविश था। मा यगोर की तरफ बढ़ी। यगोर ने जबान निकालकर मा का स्वागत किया। डाक्टर ने मुड़कर मा को देखा—ओहो, निलोवना भी आ गई ! अच्छी तो हो ! बैठो-बैठो ! तुम्हारे हाथ में यह किसकी गठरी है ?

'किताबों की होगी !'

'मगर इनको पढ़ने की इजाजत नहीं है।'

'यह डाक्टर मुझे मूर्ख ही रखना चाहते हैं।' यगोर ने मा से शिकायत करते हुए कहा।

'चुप रहो !' डाक्टर ने यगोर को हुक्म दिया और एक छोटी-सी किताब में कुछ लिखने लगा।

छोटी-छोटी और गहरी साँसें, गले में खुर्र-खुर्र करती हुई, यगोर की छाती से मानों टूट-टूटकर आ रही थीं, जिनके कारण उसके मुँह पर पसीना झलक रहा था। धीरे से अपना सूजा हुआ मुँह उठाकर उसने हथेली से उसे पोंछा। उसके सूजे हुए गाल एक विचित्र प्रकार से शिथिल-से हो रहे थे, जिससे उसके सुन्दर और विशाल चेहरे की

आकृति अस्वाभाविक हो गई थी। उसके चेहरे का रंग-रूप और ढलाई एक नीली-नीली नकाब से ढँक गई थी। केवल उसके नेत्र चेहरे की सूजन में गहरे गढ़े होने पर भी स्वच्छ और सहृदयता की मुस्कान से चमकते थे।

'ओह, तुम्हारा विज्ञान, डाक्टर! इसने तो मुझे थका डाला है। मैं अब लेट सकता हूँ कि नहीं?'

'नहीं, तुम लेट नहीं सकते।'

'अच्छा तो जैसे ही तुम यहाँ से चले जाओगे, मैं लेट जाऊँगा।'

'निलोवना, कृपया इन्हें लेटने मत देना। लेटा रहना इनके लिए बहुत बुरा है।'

मा ने सिर हिलाते हुए कहा—'अच्छा!' डाक्टर इतना कहकर धीमी-धीमी चाल से वहाँ से चला गया। उसके जाते ही यगोर ने सिर पीछे की तरफ टेक दिया और आँखें मींचकर बेहोश-सा लेट गया। उँगलियों की हरकत के सिवाय उसका शरीर बिलकुल निश्चल हो गया। उस छोटे कमरे की सफेद-सफेद दीवारों से एक प्रकार की शुष्क, ठण्डी, पीली, निराकार उदासी-सी टपकती थी। बड़ी-बड़ी खिड़कियों में से नीबू के वृक्षों के गुच्छेदार सिर बाहर से झाँक रहे थे, जिनकी घनी और खाकी छाया में आती हुई हेमन्त के पीले-पीले धब्बे चमकते थे।

'मृत्यु भी धीरे-धीरे झिझकती हुई मेरी तरफ आ रही है।' यगोर बिना हिले-डुले और आँखें खोले बोला—उसे भी शायद मेरे लिए कुछ दुःख होता है, क्योंकि मैं एक अच्छा और मिलनसार आदमी था।

'चुप रहो, यगोर!' मा ने धीरे से उसका हाथ थपथपाते हुए कहा।

'सब्र करो अम्माँ, मेरे चुप हो जाने में अब अधिक देर नहीं है।'

मिनट-मिनट पर उसकी साँस उखड़ी जाती थी और मुँह से शब्द बड़ी मुश्किल से निकलते थे; बीच-बीच में देर तक वह बेहोश भी हो जाता था; परन्तु फिर भी वह मा से इसी प्रकार की बातें करता रहा।

'तुम भी यहाँ आ गईं, यह तुमने बड़ा अच्छा किया, अम्माँ! तुमसे बातें करके और तुम्हारी आँखों का तेज देखकर मुझे बड़ा आनन्द होता है। न जाने मेरा अन्त कैसा होगा? परन्तु जब मैं सोचता हूँ कि और बन्धुओं की तरह जेल, जलावतनी और अन्य प्रकार की यातनाएँ तुम्हारी भी बाट देखती हैं तो मुझे बड़ा दुःख होने लगता है। तुम्हें जेल से डर तो नहीं लगता?'

'नहीं।' मा ने धीरे से उत्तर दिया।

'यह बहुत अच्छा है, परन्तु फिर भी जेल है बड़ी बुरी जगह। जेल ने ही मेरा यह बुरा हाल कर दिया है। सच तो यह है कि अभी तक मरने की मुझे जरा भी इच्छा नहीं है।'

'तुम बच जाओगे।' मा उससे कहने ही वाली थी कि उसके चेहरे की हालत देखकर वे शब्द मा के होठों पर ही ठिठककर रह गये।

'मैं बीमार न पड़ गया होता तो मैं भी अभी काम में लगा होता, जी-जान से काम करता होता। परन्तु इस तरह बेकार पड़े रहने से तो मर जाना ही बेहतर है। यह बेकारी का जीवन मुझे निरर्थक लगता है।'

'सच है, परन्तु सन्तोष नहीं होता!' ऐन्ड्री के ये शब्द मा को याद आये और उसने एक गहरी साँस ली। दिन-भर की दौड़-धूप से वह बहुत थक गई थी और बड़ी भूखी भी थी। नीरस, उदास और भर्राई हुई और बीमार की बुड़बुड़-बुड़बुड़ कमरे में भर रही थी; कमरे की चिकनी, ठण्डी चमकती हुई दीवारों पर उसकी आवाज़ निरस-हाय रेंग रही थी। सूर्यास्त हो चला था। डूबते हुए सूर्य के अन्धकार में तकिये पर रखा हुआ यगोर का चेहरा काला लगने लगा था।

'मेरा जी बड़ा घबराता है।' यगोर बोला और कहकर उसने आँखें बन्द कर लीं और चुप हो गया। मा ने कान लगाकर उसकी साँसों की आवाज सुनी, फिर घूमकर उसने अपने चारों ओर देखा, और कुछ देर तक चुपचाप उदासी में लीन बैठी रही। बैठे-बैठे उसकी आँख लग गई।

किसी के सावधानी से द्वार बन्द करने की दबी आहट से उसकी नींद उचटने पर उसने यगोर की स्नेह-पूर्ण आँखों को अपनी ओर देखते हुए पाया।

'मेरी आँख लग गई थी। माफ करना।' वह धीरे से यगोर से बोली।

'और मैंने अपनी बकझक से तुम्हें इतना थका दिया, उसके लिए तुम मुझे माफ करना।' यगोर ने धीरे से उत्तर में कहा। द्वार पर फिर खटका हुआ और लियूडमिला की आवाज टनटनाती हुई आई—अँधेरे में बैठकर घुसपुस करते हैं। बिजली का बटन किधर है!

कमरा एकाएक काँपकर बिजली के सफेद अप्रिय प्रकाश से भर गया। और कमरे के बीचो-बीच में काली पोशाक पहने लम्बी, सीधी, गम्भीर लियूडमिला खड़ी दिखाई दी। यगोर ने उसकी तरफ देखा और अपने शरीर को मोड़ने के लिए बड़ा प्रयत्न करते हुए हाथ सीने पर रख लिये।

'क्या कर रहे हो!' लियूडमिला उसकी हालत देखकर चिल्लाई और झपटकर उसके पास पहुँच गई। यगोर टकटकी बाँधे मा की तरफ घूर रहा था और उसकी आँखें एक विचित्र प्रकाश से बड़ी लग रही थीं।

'जरा ठहरो!' वह बड़बड़ाया और मुँह फाड़ते हुए उनसे सिर उठाने का प्रयत्न किया और एक हाथ आगे को बढ़ाया। मा ने सावधानी से उसका हाथ पकड़ लिया। परन्तु उसके चेहरे की तरफ देखते ही मा की साँस रुक गई। यगोर ने एकाएक चौंक-कर जोर से सिर पीछे की तरफ फेंका और जोर से बोला—मेरे ऊपर हवा करो, हवा!

इतना कहकर उसका शरीर एक बार काँपा और उसका सिर कन्धों पर लटक गया और उसकी फटी हुई आँखों में पलंग के ऊपर लटकनेवाली बिजली की बत्ती की मन्द-मन्द छाया दिखाई पड़ी।

'मेरे लाड़ले !' मा जोर से उसका हाथ दबाती हुई बड़बड़ाई। परन्तु उसका हाथ भारी हो चला था।

लियूडमिला पलंग के पास से धीरे-धीरे हटकर खिड़की पर जा खड़ी हुई और आकाश की ओर देखती हुई बोली—गया। यह शब्द उसने ऐसे अपरचित और गहरे स्वर में कहे थे, जैसे व्लेसोवा ने आज तक कभी उसके मुँह से नहीं सुने थे। वह सिर झुकाये, कुहनियाँ खिड़की की चौखट पर टेककर खड़ी हो गई और रूखे और चकित स्वर मे फिर एक बार बोली—चला गया। शान्त, मर्दों की तरह, मरते दम तक कभी माथे पर बल न लाया। चला गया। इतना कहकर एकाएक मानों किसी ने उसके सिर पर प्रहार किया हो, वह घुटनों पर गिर पड़ी और मुँह दोनों हाथों से ढाँककर दबाई हुई सिसकियों में फूट पड़ी।

———

सत्ताइसवाँ परिच्छेद

मा ने यगोर का हाथ उसकी छाती पर रख दिया और उसका सिर जो अभी गरम था, सँभालकर तकिये पर रख दिया। फिर चुपचाप आँखें पोंछती हुई वह लियूदमिला के पास गई। उसके ऊपर झुककर धीरे-धीरे स्नेह-पूर्वक उसका सिर सहलाने लगी। लियूदमिला धीरे से मा की तरफ मुड़ी। उसकी आँखें मुरदार और फटी हुई दीखती थीं और उनसे आँसू बह रहे थे। वह खड़ी हो गई और काँपते हुए होठों से बड़बड़ाई—मैं यगोर को बहुत दिनों से जानती थी। हम दोनों जलावतनी मे भी साथ-साथ थे। हम दोनों साथ-साथ ही पैदल वहाँ ले जाये गये थे, और फिर जेल में भी हम दोनों साथ ही रहे। कभी-कभी वह जीवन हमें असह्य हो उठता था और उससे हमें बड़ी ग्लानि होती थी। बहुतेरों की हिम्मत वहाँ रहते-रहते टूट जाती थी।

इतना कहते-कहते उसका गला रुँध गया और वह बड़े प्रयत्न से अपने-आपको सँभालते हुए, मा के मुँह के पास अपना मुँह ले जाकर मन्द स्वर में आँसू न बहाकर सिसकियों मे बड़बड़ाई—परन्तु यगोर सदा अजेय और प्रसन्न रहता था। वह सबके साथ हमेशा हँसता और विनोद करता रहता था और मर्दों की तरह अपने दुःख को अपने ऊपर छिपाये रखता, जिससे कमजोरों की भी हिम्मत बढ़ी रहती थी। वह सदा सज्जनता, सावधानी और उदारता का व्यवहार करता था। साईबेरिया में नाकारी में बैठे-बैठे मनुष्यों के मन मे बुरे-बुरे, तबियत को गिरानेवाले विचार आते थे, जिससे जीवन से घृणा होने लगती थी। परंतु उसको अपने मन पर कैसा संयम था! कितना गजब का साथी था! उससे परिचय होना सचमुच हमारा सौभाग्य था। उसका जीवन हमेशा कठिन और कष्टमय रहा। परन्तु मैं समझती हूँ, किसी ने उसके मुँह से आज तक एक शब्द कभी शिकायत का नहीं सुना होगा। मुझे उसके निकट रहने का जितना मौका मिला, उतना और किसी बन्धु को नहीं मिला। मैंने उसके दिल और उसके दिमाग से बहुत कुछ सीखा है। उसने मुझे हमेशा जितना और जब-जब उससे बन सका, जीवन मे बढ़ाया और खुद बीमारी से असमर्थ हो जाने पर भी कभी बदले में किसी सेवा अथवा शुश्रूषा की कभी ख्वाहिश नहीं की। इतना कहकर वह यगोर की लाश के पास गई और झुककर उसके मुँह को चूमा और दुःखपूर्ण टूटे स्वर में कहने लगी—हे बन्धु, हे मेरे स्नेही, हे मेरे परम मित्र, मैं तुम्हारी सारी कृपाओं के लिए हृदय से तुम्हारे प्रति कृतज्ञ हूँ। अलविदा बन्धु! वायदा करती हूँ कि तुम्हारे बाद भी मैं इसी तरह काम करती रहूँगी, जिस तरह तुम चाहते थे। कभी किसी प्रकार की शंका अपने हृदय में न लाऊँगी। जीवन-पर्यन्त इसी काम में लगी रहूँगी! अलविदा बन्धु, अलविदा!

सूखी और तीखी आहों से उसका शरीर काँपने लगा और उसने हाँफते हुए पलंग पर पड़े यगोर के शव के पैरों पर अपना सिर रख दिया। मा खड़ी-खड़ी चुपचाप गरम आँसू बहा रही थी, जो उसके गालों को जला रहे थे। किसी कारण से वह अपने आँसुओं को रोकने का प्रयत्न कर रही थी। शायद वह लियूडमिला से कुछ लाड़ के शब्द कहना चाहती थी या यगोर के सम्बन्ध में कुछ स्नेहपूर्ण दुःख के शब्द कहना चाहती थी; परन्तु वह कुछ बोल न सकी और चुपचाप अपनी आँखों से बहनेवाले आँसुओं में से यगोर के सूजे हुए चेहरे को, शान्ति-पूर्ण बन्द आँखों को जो नींद में बन्द लगती थीं, और उसके होठों पर छाई हुई मन्द और गम्भीर मुस्कान को देखती रही। यगोर के चेहरे पर ऐसी शान्त थी, मानों वह आराम से सो रहा हो। कमरे मे रूखी और निर्जीव रोशनी फैल रही थी।

इतने मे आइवान डेनीलोविश, सदा की भाँति छोटे-छोटे कदम से जल्दी-जल्दी चलता हुआ आया और कमरे में घुसते ही चौंककर बीच में ही ठिठक गया। उसने जल्दी से हाथ जेबों में घुसेड़ते हुए घबराकर पूछा—यह कब हुआ! बहुत देर तो नहीं हुई है!

दोनों में से किसी स्त्री ने उसे कोई उत्तर नहीं दिया। अस्तु, वह चुपचाप कमरे में इधर-उधर घूमने लगा। फिर माथा पोंछता हुआ वह यगोर के पास गया और उसका हाथ दबाकर देखने लगा। इस प्रकार देख चुकने पर एक तरफ हटकर वह खड़ा हो गया और बोला—कोई आश्चर्य की बात तो नहीं! उसका दिल बिलकुल छन चुका था! छः महीने पहले ही यह घटना इसे हो सकती थी!

उसने यह शब्द उच्च स्वर मे कहे थे, जो इस अवसर पर कानों को भेदते हुए घुसे थे। परन्तु वह अपनी बात परी न कह सका। उसकी आवाज एकदम टूट गई और वह पीठ से दीवार का सहारा लेकर खड़ा हो गया और अपनी पतली-पतली उँगलियों से दाढ़ी खुजलाता हुआ, आँखें मींचता और खोलता हुआ पलग के पास खड़ी हुई स्त्रियों की तरफ देखने लगा।

'एक बन्धु और गया!' वह धीरे से बड़बड़ाया।

लियूडमिला उठकर चुपचाप खिड़की के पास जाकर खड़ी हो गई और बाहर की तरफ देखने लगी। मा ने सिर उठाकर चारों तरफ देखा और एक गहरा निःश्वास लिया। पल-भर में तीनों के तीनों एक-दूसरे से सटकर खिड़की के पास खड़े हो गये और हेमन्त की उस भयावनी रात्रि के काले चेहरे को देखने लगे। वृक्षों के काले-काले शिरों के ऊपर आकाश में तारे चमक रहे थे जो आकाश और पृथ्वी के अन्तर को और भी अनन्त और गहरा कर रहे थे।

लियूडमिला ने मा का हाथ पकड़ लिया था और धीरे-धीरे अपना सिर उसके कन्धों पर रख दिया था। डाक्टर दुःख से होंठ चबाता हुआ अपने चश्मे को रूमाल से पोंछ रहा था। खिड़की के बाहर सन्नाटा था, जिसमें शहर की तरफ से आनेवाली रात

की आवाज थके हुए निःश्वासें ले रही थीं और ठण्डी वायु आ-आकर उनके मुख और कन्धों पर थपेड़े लगा रही थी। लियूडमिला का शरीर काँप रहा था और उनकी आँखों से आँसुओं की धाराएँ बह रही थीं। अस्पताल के बरामदे से कुछ घबराई हुई और उदास आवाजें आ रही थीं। परन्तु वे तीनों खिड़की के पास खड़े निश्चल अन्धकार में देख रहे थे।

मा ने अब अपनी आवश्यकता वहाँ न समझी। अस्तु, वह सावधानी से अपना हाथ लियूडमिला से छुड़ाकर और यगोर की तरफ झुककर प्रणाम करती हुई द्वार की ओर चली।

'क्या तुम जा रही हो?' डाक्टर ने धीरे से बिना मुँह फिराये ही पूछा।

'हाँ!' कहकर मा बाहर चली गई।

सड़क पर पहुँचकर उसे लियूडमिला के आँसुओं की याद फिर आई और वह उस पर तरस खाकर मन में कहने लगी—बेचारी को खुलकर रोना भी कठिन हो रहा था। फिर मा की आँखों के सामने अस्पताल के उस अत्यन्त स्वच्छ और सफेद कमरे मे, यगोर की लाश के पास खड़ी हुई लियूडमिला और डाक्टर का चित्र आया, जिससे उसके हृदय में उन दोनों के लिए दया और दुःख हुआ। अस्तु, गहरी-गहरी साँसे भरती वह अपने हृदय में उठनेवाले भावों के तूफान के कारण मानों जल्दी कदम बढ़ाती हुई चली। भीतर से एक उदास, परन्तु उत्तेजनापूर्ण शक्ति उसे जल्दी-जल्दी आगे बढ़ने के लिए प्रेरित-सी कर रही थी।

दूसरे दिन-भर तो यगोर की अन्त्येष्टि-क्रिया की तैयारी में लगी रही। शाम को सारी तैयारी कर चुकने के बाद मा, निकोले और सोफया चाय पीने बैठे, और धीरे-धीरे यगोर की बातें करने लगे। इतने में कहीं से सशेन्का हँसती और कूदती हुई आ पहुँची। वह किसी आनन्दमय आशा से भरी हुई थी और उदास वातावरण में उसके उल्लास से वहाँ के दुःखपूर्ण बैठे हुए लोग वैसे ही चौंके, जैसे अन्धकार में बैठनेवालों की आँखें एकाएक अग्नि भड़क उठने से चौंधियाँ जाती हैं। निकोले ने कुछ विचार करते हुए मेज पर उँगलियाँ गड़ाकर धीरे-धीरे मुस्कराते हुए कहा—सशा, आज तुम्हें कुछ हुआ है क्या?

'हाँ, शायद।' वह आनन्दपूर्वक हँसती हुई बोली।

मा ने चुपचाप उसकी तरफ घूरते हुए उसको एक गूँगी झिड़की दी और सोफया आश्चर्य से बोली—हम लोग अभी यगोर के सम्बन्ध में बातें कर रहे थे।

'यगोर बड़ा अच्छा आदमी है। क्यों, है न?' सशा बोली—नम्र, परन्तु शङ्का और सन्देह का शत्रु और कभी दुखी न होनेवाला; हमेशा हँसमुख रहता है। कैसा काम करनेवाला है! वह क्रांति का बड़ा चतुर चितेरा है, पूरा उस्ताद है! कैसी होशियारी से क्रान्तिकारी विचारों की रचना करता है। कैसे सरल और सचोट रङ्गों में वह सदा झूठ, हिंसा और असत्य के चित्र लोगों के सामने रखता है! उसके पास भयङ्कर को अपने

विनोद से कम भयङ्कर बना देने की एक महान् शक्ति है, जिससे जीवन की कठोरता का ज्ञान होने के साथ-साथ ही उसका भीतरी अर्थ भी मालूम हो जाता है। सदा आनन्दी रहता है। मुझ पर तो उसने बड़ा ही उपकार किया। मैं उसकी प्रसन्न आँखों को और उसके विनोद को कभी नहीं भूल सकती। जब कभी मेरे हृदय में कोई शंका उत्पन्न होती है, तब मुझे अपने ऊपर उसके विचारों के प्रभाव का पता चलता है। मैं उसे बहुत प्रेम करती हूँ।

वह धीमी आवाज से बोल रही थी और उसकी आँखों में एक उदास मुस्कराहट खेल रही थी। उसकी आँखों में वह अगम्य अग्नि, जिसे लिये हुए वह कमरे में घुसी थी, अभी तक वैसी ही झलक रही थी, जिससे उसके मन का आनन्द सबको स्पष्ट दीख रहा था।

लोग अपने भावों की दुनिया को पसन्द करते हैं और चाहते हैं, जो कभी-कभी उन्हें बड़ी हानिकारक होती है। परन्तु वे उस पर जान देते हैं, और प्रायः उसके दुःखों से भी उन्हें सुख ही मिलता है। एक ऐसा आनन्द मिलता है जो उनके हृदय में एक आग-सी लगाता है। निकोले, मा और सोफ़िया नहीं चाहते थे कि उनके बन्धु की मृत्यु ने उनके हृदय में जो दुःख का भाव भरा था, वह सशा के लाये हुए आनन्द में डूब जाय। अस्तु, अव्यक्त-रूप से अपने उस दुखी भाव को अपनी उदासी का पूरा मालिक समझते हुए उसकी पूरी मिलकियत के हक की रक्षा करने के लिए उन्होंने अपनी उदासी का प्रभाव सशा पर भी डालने का प्रयत्न किया।

'यगोर अब इस संसार में नहीं है।' सोफ़िया ने सशा की ओर ध्यान से देखते हुए कहा।

सशा ने चौंककर उसकी तरफ देखा और फिर त्योरियाँ चढ़ाते हुए सिर झुका लिया, कुछ देर तक अपने सिर के बाल हाथ से सँभालती हुई वह चुप रही।

'वह अब इस संसार मे नहीं है!' फिर उसने उनके चेहरों पर एक तीव्र दृष्टि डालते हुए कहा—इस पर एकाएक विश्वास कर लेना मुझे बड़ा कठिन लगता है।

'परन्तु है सत्य।' निकोले ने दाँत दिखाते हुए कहा। सशा उठकर कमरे में टहलने लगी और फिर एकाएक ठिठककर एक विचित्र स्वर में बोली—मर जाने का अर्थ क्या है? कौन मर गया? क्या यगोर के प्रति मेरा सम्मान मर गया? क्या उस बन्धु के लिए जो मेरे हृदय में स्नेह था वह मर गया? क्या उसके मानसिक परिश्रम की स्मृति मर गई? क्या उसका क्रान्ति के लिए सारा परिश्रम मर गया? क्या उस वीर आत्मा की याद हमारे हृदय से मर गई और उसका अब कोई चिह्न हमारे हृदय में शेष नहीं रहा? क्या यह सब भी मर गया? नहीं, हरगिज नहीं। मैं समझती हूँ, उसने हमेशा अपना सर्वश्रेष्ठ ही मुझमें भरने का प्रयत्न किया था और वह जब तक मै जीवित हूँ, हरगिज नहीं मर सकता। लोगों को किसी के सम्बन्ध में यह कहने की जल्दी नहीं करनी चाहिए कि 'वह मर गया।' वह मनुष्य, जिसने हमारे जीवन पर सत्य और सुखमय जीवन की

प्राप्ति के लिए आजन्म अथक प्रयत्न के आदर्श की अमिट छाप लगा दी है, क्या भला कभी मर सकता है ! उसकी वीर-स्मृति हमारे दिलों को कभी मुर्दा न बनने देगी और हमें यह न भूल जाना चाहिए कि जिन्दादिलों को सभी चीजें जिन्दा लगती हैं। हमें अनन्त जीवन को मनुष्य के शरीर के साथ दफ़न करने की जल्दी नहीं करनी चाहिए। गिरजा नष्ट हो जाने से क्या उसके अन्दर बसनेवाला अमर ईश्वर भी नष्ट हो जाता है !

इतना कहते-कहते वह मानों भावातिरेक से विह्वल होकर बैठ गई और मेज पर कुहनियाँ टेककर अपनी आँखों के सामने छाये हुए धुँधले अन्धकार में से अपने सामने बैठे हुए बन्धुओं के चेहरों को घूरती हुई विचारपूर्वक धीरे-धीरे बोली—शायद मैं अर्थ-हीन बातें कर रही हूँ। परन्तु मनुष्य-जीवन मुझे बड़ा आश्चर्य-जनक और चमत्कारपूर्ण लगता है। उसके मिश्रण और उसकी विभिन्नता पर मैं लट्टू हूँ। मुझे लगता है कि शायद हम लोग अपने भावों को व्यक्त करने में बड़ी कंजूसी दिखाते हैं। हम लोग विचारों की दुनिया में ही अधिक रहते हैं, जिससे हमारे जीवन को एक हद तक हानि पहुँचती है। हम केवल विचारों के स्रोत में ही बहना जानते हैं, भावों के स्रोत में बहना नहीं जानते।

'क्या तुम्हारे जीवन में कोई ऐसी बात हुई है !' सोफ़या ने मुस्कराते हुए उससे पूछा।

'हाँ, हुई है।' सशा ने सिर हिलाते हुए कहा—मैं कल रात-भर व्यसोवशचिकोव से बातें करती रही। पहले मैं उससे कभी बात नहीं करती थी। वह मुझे बड़ा उजड्ड और भोंड़ा लगता था। और निस्सन्देह वह था भी वैसा ही। वह सदा सबसे चिढ़ा हुआ और क्रुद्ध रहता था और हमेशा चक्की की पाट की तरह बीच में आकर अपनी मैं, मैं, मैं, की चक्की चलाया करता था। मुझे उसकी क्रोध-पूर्ण 'मैं, मैं, मैं' से एक प्रकार के स्वार्थ, नीचता और निराशा की बदबू आती थी। इतना कहकर वह मुस्कराने लगी; परन्तु फिर सबको अपनी जलती हुई दृष्टि से चौंकाती हुई बोली—अब वह मैं, मैं, मैं, न कहकर कहता है—बन्धुओ ! और यह शब्द उसके मुँह से सुनने में बड़ा प्यारा लगता है, वह इस शब्द को अपने हृदय से उमड़नेवाले माठे स्नेह में डुबोकर मानों उचारता है। उसमें अब आश्चर्यजनक सादगी और सहृदयता भी आ गई है, और उसको क्रान्तिकारी काम करने की धुन सवार हो गई है। उसने अपने-आपको अब समझ लिया है, और अपनी शक्ति का पता पा लिया है। उसने यह भी जान लिया है कि वह क्या नहीं है। परन्तु मुख्य बात तो यह है कि उसमें सच्चा बन्धु-भाव जाग गया है। वह विशाल और स्नेहपूर्ण बन्धुत्व का भाव, जो जीवन की सारी कठिनाइयों का मुस्कराते हुए सामना कर सकता है।

मा सशा की बातें ध्यानपूर्वक सुन रही थी। उसे इस छोकरी को जो सदा बड़ी कठोर और गम्भीर रहती थी, आज इतना कोमल, प्रसन्न और आनन्दपूर्ण देखकर

हर्ष हो रहा था। साथ-ही-साथ मा के अन्तर में यह सोच-सोचकर जलन भी हो रही थी कि न जाने पाशा का क्या हाल होगा!

'अब व्यसोवशचिकोव बिलकुल बन्धुओं के ही विचार में डूबा हुआ रहता है।' सशा बोली—और जानती हो, उसने कल मुझे किस बात की अत्यन्त आवश्यकता बतलाई! उसकी राय है कि बन्धुओं को जल्द से जल्द जेल से भगा देना चाहिए। वह कहता है कि उसके लिए यह काम बड़ा सीधा और आसान है।

सोफया ने सिर उठाकर आवेश से पूछा—और तुम्हारी क्या राय है, सशा! क्या यह सम्भव है!

मा मेज पर चाय का एक प्याला रख रही थी। सोफया का प्रश्न सुनकर उसका हाथ काँप गया। सशा ने भौंहें चढ़ा लीं; उसका जोश ठण्डा-सा हो गया। परन्तु क्षण-भर चुप रहकर वह गम्भीरतापूर्वक हर्षातिरेक से मुस्कराती हुई बोली—उसको पूरा विश्वास है कि यह काम आसानी से हो सकता है। जैसा वह कहता है, यदि वैसा ही है तो हम लोगों को इस काम के लिए प्रयत्न करना हमारा आवश्यक कर्तव्य हो जाता है। इतना कहते-कहते उसका चेहरा लाल हो गया और वह चुप होकर एक कुर्सी पर बैठ गई।

'मेरी प्यारी, मेरी लाड़ली!' मा उसकी तरफ मुस्कराती हुई सोचने लगी। सोफया भी मुस्कराने लगी और निकोले स्नेह से सशा की ओर देखते हुए धीरे-धीरे हँसने लगा। सशा ने सिर उठाकर उन सबको एक गम्भीर दृष्टि से देखा और उनके देखते ही फिर एकाएक उसका चेहरा फक हो गया और उसकी आँखें दमक उठीं। वह रूखे स्वर में चिढ़कर बोली—तुम लोग मुझ पर हँसते हो! मैं समझती हूँ, तुम्हारा ख्याल है कि उनके छुड़ाने में मेरा निजी हित है। क्यों!

'नहीं, नहीं सशा, ऐसा क्यों सोचती हो!' सोफया ने उठकर उसके पास जाकर कहा।

परन्तु लड़की बड़ी उत्तेजित हो गई थी और उसके चेहरे का रङ्ग बिलकुल उड़ गया था। वह कहने लगी—अब मैं इस सम्बन्ध में कुछ न कहूँगी। इस सम्बन्ध में आगे कुछ भी कहने के लिए अब मैं तैयार नहीं हूँ।

'ठहरो, ठहरो सशा!' निकोले ने धीमी आवाज में उससे कहा।

मा ने लड़की के दिल की बात पहले ही समझ ली थी। वह उठकर उसके पास गई और जाकर चुपचाप उसका सिर चूम लिया। सशा ने मा का हाथ पकड़कर अपने गालों पर रख लिया और अपना शर्माया हुआ चेहरा ऊपर को उठाकर मा की आँखों में आनन्द से विह्वल होकर देखनी लगी। मा चुपचाप धीरे-धीरे उसके बाल सहलाने लगी। सोफया भी सशा के पास आकर बैठ गई और अपना हाथ उसके कन्धे पर रखकर मुस्कराती हुई बोली—तुम तो बड़ी विचित्र हो!

'हाँ, मैं मूर्ख तो जरूर हो रही हूँ।' सशा ने स्वीकार किया—परन्तु छाया के पीछे कोई कब तक दौड़ सकता है!

'खैर!' निकोले ने गम्भीरता से कहा और तुरन्त ही फिर काम की बातें आरम्भ करने के लिए उन्हें झिड़कते हुए बोला—यदि उन्हें भगाना सचमुच सम्भव है तो फिर उसके सम्बन्ध में दो रायें हो ही क्या सकती हैं! परन्तु सबसे पहले हमें यह मालूम कर लेना चाहिए कि वे लोग भी भागना पसन्द करेंगे या नहीं!

सशा ने सिर झुका लिया। सोफया ने अपने मुँह में सिगरेट लगाकर उसे जलाते हुए बन्धु की तरफ देखा और हाथ झुलाकर जली हुई दियासलाई को कमरे के एक कोने में फेंक दिया।

'यह कैसे सम्भव हो सकता है कि वे लोग स्वयं भागना पसन्द नहीं करेंगे!' मा ने एक गहरी साँस भरते हुए पूछा। सोफया मा की तरफ सिर हिलाती हुई मुस्कराई और उठकर खिड़की के पास जा खड़ी हुई। मा की समझ में न आ सका कि उन लोगों को उसका प्रश्न ठीक क्यों नहीं लग रहा था। अस्तु, अवाक् वह उनके मुँह की ओर देखने लगी। जेल से भागने के विषय में मा बहुत कुछ सुनना चाहती थी।

'मैं व्यसोवशचिकोव से मिलकर बातें करूँगा।' निकोले ने कहा।

'अच्छा तो कल मैं तुम्हें बता दूँगी कि कहाँ और कब तुम उससे मिलकर बातें कर सकते हो।' सशा ने उत्तर में कहा।

'उसका अब क्या करने का इरादा है?' सोफया ने कमरे में टहलते हुए पूछा।

'अपने एक नये कारखाने में उसे कम्पोजीटर बनाकर रखने का निश्चय किया गया है। फिलहाल वह जंगल मे रहनेवाले बन्धु के साथ रहेगा।'

सशा की भौंहें नीची हो गई थीं और उसका चेहरा फिर सदा की भाँति गम्भीर और कठोर हो गया था। उसकी आवाज भी तीक्ष्ण हो गई थी। मा चाय के प्याले धोने लगी थी। निकोले ने मा के पास जाकर कहा—कल जब तुम पाशा से मिलो तो उसे मेरा एक पत्र दे देना, समझीं! हम लोगों को उन लोगों की राय भी इस विषय में जान लेनी चाहिए।

'अच्छा, अच्छा!' मा ने शीघ्रता से उत्तर दिया—मैं उसके पास तुम्हारा खत अच्छी तरह पहुँचा दूँगी। यह तो मेरा धन्धा है।

'अच्छा तो अब मैं जाती हूँ।' कहकर सशा ने चुपचाप उठकर सबसे हाथ मिलाये। उसकी आँखें खुश्क थीं और सीधी विचित्र प्रकार की एक भारी चाल से वह चलती हुई चली गई।

'बेचारी!' सोफिया ने कोमल स्वर में उसके चले जाने पर कहा।

'हाँ...ाँ,' निकोले ने उत्तर में कहा। सोफया ने अपना हाथ मा के कन्धे पर रखा और कुर्सी पर बैठती हुई मा का कन्धा धीरे-धीरे हिलाती हुई कहने लगी—क्या तुम्हें ऐसी पुत्र-वधु प्रिय न होगी! इतना कहकर सोफया मा के चेहरे की ओर देखने लगी।

'काश मैं उन दोनों को एक साथ देख पाती, एक दिन के लिए ही देख लेती!' निलोवना बोली और उसके चेहरे पर रुलाई-सी आ गई।

'हाँ, थोड़ा-सा सुख सभी के लिए अच्छा होता है!'

'परन्तु थोड़ा-सा कोई नहीं चाहता।' निकोले ने कहा—और जब सुख बहुत हो जाता है, तो वह सस्ता हो जाता है।

सोफिया उठकर पियानो के पास जा बैठी और उस पर चुपचाप मन्द स्वर में एक दुःखपूर्ण तान बजाने लगी।

———

अट्ठाइसवाँ परिच्छेद

इसके दूसरे दिन प्रातःकाल से ही बहुत-सी स्त्रियाँ और पुरुष अस्पताल के द्वार पर अपने बन्धु की लाश ले जाने के लिए आ जमे थे। पुलिस के जासूस चारों ओर मँडरा रहे थे, और कान लगाये हुए प्रत्येक आवाज को सुनने और प्रत्येक चेहरा पहचानने और ध्यान से उसका रंग-ढंग देखने का प्रयत्न कर रहे थे। सड़क के उस ओर पुलिस के कुछ हथियारबन्द आदमी कमरे में पिस्तौलें बाँधे खड़े थे। उन जासूसों का ढीठ व्यवहार, हथियारबन्द पुलिस की मुस्तैदी जो क्षण-भर में जरूरत पड़ने पर अपनी ताकत दिखा देने के लिए तैयार थी, और उनके मजाक उड़ानेवाले हँसी-ठट्ठे और मुस्कराना भीड़ को उत्तेजित कर देने के लिए काफी थे। कुछ लोग अपनी उत्तेजना छिपाने के लिए आपस में मजाक कर रहे थे। कुछ मुँह फेरकर क्रोध से जमीन की तरफ देख रहे थे, कुछ अपना गुस्सा न दबा सकने के कारण, व्यंग्य से सरकार की हरकतों और इलजाम पर हँसते हुए आपस में कह रहे थे कि देखो, सरकार लोगों से कितना डरती है—उन लोगों से जिन बेचारों के पास शब्दों के सिवाय और कोई हथियार तक नहीं है।

पतझड़ का नीला-पीला आकाश पृथ्वी के ऊपर चमक रहा था, और सड़क में जड़े हुए भूरे-भूरे पत्थरों पर वृक्षों से झड़ी हुई सूखी पत्तियाँ हवा के झोंकों से उड़-उड़कर लोगों के पैरों पर नाचती हुई लगती थीं।

मा भीड़ में खड़ी थी और चारों ओर घूम-घूमकर परिचित चेहरों को देखती और उदास होकर सोचती थी—बहुत नहीं हैं! बहुत थोड़े हैं! अस्पताल का द्वार खुला और पुष्प-मालाओं और लाल फीतों से सुसज्जित किया हुआ जनाजा बाहर निकला। उसको देखते ही सबने मानों एक इच्छा के वशीभूत होकर चुपचाप टोप उतारकर उसको अभिवादन किया। एक लम्बा लाल मुँह और काली मूँछों का पुलिस अफसर लोगों को धक्के देता हुआ अपने साथ पुलिस के कुछ आदमियों को लिये हुए और अपने भारी-भारी बूट-जूतों की चर्र-मर्र करता हुआ भीड़ में घुसा। लोग जनाजे के चारों ओर परिक्रमा बनाये खड़े थे। अफसर ने उन्हें भोंडी और भराई हुई आवाज में आदेश दिया—मिहरबानी करके जनाजे में से फीते निकाल लो!

लोग अफसर के चारों ओर घिरने लगे और हाथ हिलाते हुए एक-दूसरे को धक्का देते आगे पहुँचने का प्रयत्न करते हुए उस पर चिल्लाये। मा ने देखा, लोग घबराये और चिढ़े हुए थे और उनके चेहरों का रंग उड़ रहा था। कुछ के चेहरे लाल हो गये थे और होंठ काँप रहे थे और उनकी आँखों में आँसू आ गये थे।

'हिंसा का नाश हो!' किसी नौजवान की लरजती हुई एक आवाज आई। परन्तु वह अकेली आवाज वहाँ के कोलाहल में डूबकर खतम हो गई।

मा के हृदय पर इससे बड़ी चोट पहुँची, जिसकी वजह से उसने अपने पास में खड़े हुए एक गरीब नौजवान की तरफ मुँह फेर लिया।

'हमें अपने एक बन्धु का अपने इच्छानुसार जनाजा निकालकर उसको दफन करने की भी इजाजत नहीं है। इसका क्या मतलब है?'

कोलाहल बढ़ रहा था और रभाव जोर पकड़ रहा था। जनाजा लोगों के सिरों पर झूम रहा था और उसमें बँधे हुए रेशमी फीते हवा में फर्र-फर्र उड़ते हुए जनाजा उठानेवालों के सिरों और मुँहों पर लग रहे थे। फीतों की फर्र-फर्र आवाज वहाँ के शोरगुल के ऊपर भी सुनाई दे रही थी।

मा को मार-पीट हो जाने के डर से कँपकपी आने लगी थी। अस्तु, वह जल्दी-जल्दी नीची आवाज से अपने दायें-बायें खड़े हुए लोगों से कहने लगी—नहीं मानते हैं तो उन्हीं को बड़ा हो जाने दो। हम लोगों को उनसे झगड़ना नहीं चाहिए। जनाजे पर से फीते उतार लेने चाहिएँ। इससे अधिक हमारा क्या बिगाड़ सकते हैं?

इतने में एक गरजती हुई, तेज आवाज कोलाहल के ऊपर उठती हुई चिल्लाई—

'जिस हमारे बन्धु के तुमने कष्ट दे-देकर प्राण ले लिये, उसके साथ उसकी अन्तिम यात्रा में जाते समय तो हमें न छेड़ो!'

किसी ने—आवाज से लगता था कि किसी छोकरी ने—ऊँची, गूँजती हुई आवाज में गाना शुरू किया—

'लड़ते-लड़ते मर मिटे,
फिर भी न छोड़ी आन।'

'कृपया याकोयलीव, जनाजे में से फीते निकाल लो! झटपट तोड़ लो!' किसी ने चिल्लाकर कहा और मियानों में से तलवारों के खिंचने की झनकार सुनाई दी। मा ने डरकर आँखें बन्द कर लीं और लोगों के शोरगुल का इन्तजार करने लगी। परन्तु चारों तरफ एकदम शान्ति हो गई थी।

भीड़ घायल शेर की तरह गुर्राती हुई, अपनी निर्बलता पर झुँझलाती हुई, सिर नीचा किये आगे की तरफ बढ़ रही थी और उसके पैरों के सड़क पर चलने की आवाज सुनाई दे रही थी। आगे-आगे जनाजा, जिसके फीते उतर गये थे, झूमता हुआ चल रहा था। उसके दायें-बायें पुलिस सवार इधर-इधर दौड़ते हुए चल रहे थे। मा सड़क के किनारे की पगडण्डी पर चल रही थी। उसे अब जनाजा नहीं दीखता था, क्योंकि जनाजे के चारों ओर भीड़ का घना जमघट हो गया था, जो धीरे-धीरे बढ़ता हुआ सारी सड़क पर फैल गया था। भीड़ के पीछे भी पुलिस सवारों के सिर दिखाई देते थे, जिनके बाजू में पैदल पुलिस के सिपाही अपनी तलवारों की मूँठों पर हाथ रखे हुए चल रहे थे। चारों तरफ, जिधर देखो उधर, जासूसों की तेज आँखें, जिन्हें मा अच्छी तरह पहचानती थी, लोगों के चेहरों को घूर-घूरकर देख रही थीं।

'अलविदा, बन्धु, अलविदा!' दो सुन्दर स्वरों ने एक साथ गाते हुए कहा।

'चुप रहो, चुप रहो !' जोर से एक आवाज आई—बन्धुओ, अभी खामोश रहो।

यह आवाज तेज और आदेशपूर्ण थी। उसमें विश्वास उत्पन्न करनेवाली एक धमकी थी, जिसने फौरन ही भीड़ पर अपना काबू कर लिया। शोक का गाना बन्द हो गया और आपस की बातें धीमी पड़ गईं। केवल लोगों के पैरों की सड़क के पत्थरों पर चलने से जो आवाज हो रही थी, वही बस अपने उदास और सम स्वर से गली में गूँजती रह गई। लोगों के सिरों के ऊपर पारदर्शी आकाश में उठती हुई वह हवा में ऐसी गूँजती थी जैसी किसी दूर जगह से आनेवाली गरज की पहली आवाज गूँजती हुई आती है।

लोग अपनी जबानों पर ताला लगाये और विद्रोह को छाती में बन्द किये हुए चल रहे थे। 'क्या स्वतन्त्रता का संग्राम शान्तिपूर्ण मार्ग से लड़ा जा सकता है ?' उनके मन में विचार उठ रहा था—नहीं, वह व्यर्थ का स्वप्न है। हिंसा के प्रति घृणा और स्वतंत्रता के प्रति प्रेम की अग्नि उनके हृदय में भड़क रही थी जो उनके हृदय में रहे-सहे अहिंसात्मक संग्राम के स्वप्न को भी जलाकर राख किये देती थी। उनके पैर भारी पड़ गये थे, सिर ऊँचे उठ गये थे और उनकी आँखें ठण्डी और दृढ़ दीख रही थीं। विचारों और भावों का वेग बढ़ जाने से उनके हृदयों में निश्चय जन्म ले रहा था। प्रातःकाल की ठण्डी वायु प्रत्येक क्षण अधिक ठण्डी बनती जाती थी और लोगों के सामने से गर्दो-गुबार का एक मनहूस बादल उठाती हुई उनके कपड़ों और बालों में घुस रही थी और उनकी आँखें बन्द करके उनकी छातियों पर थपेड़े लगा रही थी।

मा को इस गूँगी अन्त्येष्टि-क्रिया पर दुःख हो रहा था, जिसमें पादरी नहीं थे, हृदय-विदारक तानें आकाश फाड़ रही थीं, जिसमें विचारपूर्ण चेहरे और चढ़ी हुई त्योरियाँ चारों तरफ दिखाई दे रही थीं और चलते हुए कदमों की आवाज जोर-जोर से सुनाई पड़ रही थी। मा के धीरे-धीरे मँडराते हुए विचार बार-बार एक प्रश्न से आकर टकराते थे। सत्य के लिए संग्राम छेड़ देनेवालो, क्या संख्या में तुम इतने थोड़े हो ! इतने कम ! और इस पर भी सरकार तुमसे इतना डरती है ! इतना तुमसे भय खाती है !

सिर झुकाये हुए मा इधर-उधर न देखती हुई चुपचाप सीधी चली जा रही थी, उसको ऐसा लग रहा था कि वे लोग यगोर के शव को दफन करने के लिए नहीं जा रहे थे ; बल्कि किसी ऐसे काम पर जा रहे थे, जिसको वह नहीं समझती थी और न समझ सकती थी।

कब्रस्तान में पहुँचकर जनाजा बड़ी देर तक कब्रों के बीच-बीच के तंग रास्तों पर घूमता रहा। अन्त में वह एक ऐसी खुली जगह पर पहुँचा जहाँ पर छोटी-छोटी रोनी सूरत की बहुत-सी सलीबें गड़ी थीं। लोग चुपचाप उन कब्रों को घेरकर खड़े हो गये। मुर्दों के मध्य में जिन्दों की यह गम्भीर शान्ति किसी विचित्र घटना की सूचक थी। मा का हृदय काँपा और आशा के बोझ से बैठने लगा। वायु सनसनाती हुई जोर-जोर से निःश्वास लेती हुई कब्रों के चारों तरफ घूम रही थी। यगोर के जनाजे पर रखे हुए फूल हिल रहे थे।

पुलिस के सिपाही एक कतार में खड़े हुए—मानों वे मृतक के सम्मान में आप वहाँ खड़े हों—अपने कप्तान की तरफ देख रहे थे। एक लम्बा, बड़े-बड़े बालों, काली भृकुटियों और पीले चेहरे का मनुष्य अपने सिर से टोप उतारकर खुदी हुई नई कब्र के पास आकर खड़ा हो गया। इतने में कप्तान का कर्कश स्वर सुनाई दिया—सज्जनो और सद्गृहस्थो!

'बन्धुओ!' काली भृकुटियों का मनुष्य गूँजती हुई आवाज में बोला।

'ठहरो, मुझे बोलने दो!' पुलिस कप्तान ने उससे चिल्लाकर कहा—पुलिस कमिश्नर के हुक्म के अनुसार मैं कोई व्याख्यान यहाँ नहीं होने दूँगा।

'मैं थोड़े-से ही शब्द बोलूँगा।' उस नवयुवक ने शान्त स्वर में पुलिस कप्तान से कहा और बोला—बन्धुओ! आओ, आज हम लोग अपने गुरु और मित्र की कब्र पर खड़े होकर चुपचाप शपथ लें कि उसकी वसीयत हम लोग कभी न भूलेंगे। अपने देश के दुर्भाग्य के मूल कारण उस निरंकुश सत्ता की, उस पिशाच-शक्ति की, जो हमें दिन-रात कुचल रही है, कब्र खोदने के लिए हममें से हर एक हमेशा ही अथक प्रयत्न करता रहेगा।'

'गिरफ्तार कर लो इसको!' पुलिस कप्तान ने चिल्लाकर कहा; परन्तु उसकी आवाज घबराई हुई आवाजों के कोलाहल में डूब गई।

'निरंकुश राज्य-सत्ता का नाश हो!' आवाजें उठीं। पुलिस भीड़ चीरती हुई उस व्याख्यानदाता की तरफ दौड़ी, जो चारों तरफ से आदमियों से घिरा हुआ, हाथ हिलाता हुआ चिल्ला रहा था—स्वतन्त्रता की जय हो। हम स्वतंत्रा के लिए जियेंगे और स्वतंत्रता के लिए मरेंगे।

मा ने भय से क्षण-भर के लिए आँखें बंद कर लीं। चारों तरफ से आनेवाली घबराई हुई आवाजों की चिल्ल-पों से उसके कानों के परदे फटे जा रहे थे। अपने पैरों के नीचे से जमीन उसे खिसकती हुई लगी। डर के मारे उसकी साँस रुकी जा रही थी। कप्तान की गुस्ताख और हुक्म चलानेवाली आवाज जोर-जोर से आ रही थी। स्त्रियाँ चिल्ला रही थीं, कब्रिस्तान के चारों ओर की लकड़ी के सीखचों की चहारदीवारियाँ चर्राकर टूटीं और बहुत-से पैरों की जमीन पर एक साथ धमाधम सुनाई दी। और एक सुरीली आवाज, दूसरी आवाजों को दबाती हुई, रणसिंघे की भाँति गरजती हुई आई—बन्धुओ! शान्त रहो! सँभलो! अपने ऊपर विश्वास रखो! मुझे जाने दो! बन्धुओ, मैं प्रार्थना करता हूँ, मुझे जाने दो।

मा ने सिर उठाकर देखा और धीरे से कुछ बड़बड़ाई। फिर हाथ फैलाकर वह बढ़ी और आप-से-आप आगे की तरफ बढ़ती हुई चली गई। कुछ ही आगे बढ़कर उसने देखा कि कब्रों के बीच में होकर जानेवाली एक पगडण्डी पर पुलिस के सिपाही लम्बे बालों-वाले नवयुवक को घेरे हुए खड़े थे और चारों ओर से उनकी तरफ से उमड़-उमड़कर आनेवाली भीड़ को पीछे की तरफ ढकेल रहे थे। उनकी सफेद-सफेद चमकती हुई नंगी

संगीनें लोगों के सिरों के ऊपर हवा में घूमती हुई उठती थीं और फिर द्वेष से फुसकार-कर पीछे की तरफ हट जाती थीं। टूटे हुए सीखचों के टुकड़े लोगों के हाथों में झूल रहे थे और झगड़ते हुए लोगों की दुःखपूर्ण आवाजें जोर-जोर से उठ रही थीं।

उस नवयुवक ने अपना पीला चेहरा ऊपर उठाया और उसकी दृढ़ और शान्त आवाज लोगों की चिढ़ी हुई आवाजों के ऊपर उठती हुई बोली—बन्धुओ! अपनी शक्ति को क्यों इस तरह नष्ट करते हो? हमारा काम लोगों के दिमागों को तैयार करना है!

उसे विजय मिली। लकड़ियाँ फेंक-फेंककर लोग भीड़ में से छँट गये। मा आगे बढ़ी। आगे बढ़कर निकोले को देखा जिसका टोप खिसककर गर्दन पर आ गया था और जो झुँझलाया हुआ लोगों को एक तरफ हटाता हुआ उन्हें इस प्रकार झिड़क रहा था—क्या तुम लोग बुद्धि से बिलकुल हाथ धो बैठे हो? शान्त हो जाओ!

मा को ऐसा लगा कि उसके एक हाथ से खून बह रहा था।

'निकोले आइवानोविच, भाग जा यहाँ से।' वह उसकी तरफ दौड़ती हुई चिल्लाई।

'किधर जा रही हो? उधर मत जाओ, वहाँ चोट खा जाओगी!' किसी ने मा से चिल्लाकर कहा।

मा रुक गई। मुड़कर देखा तो सोफया उसका कन्धा पकड़े हुए खड़ी थी। सोफया के सिर से टोप गायब था और उसकी जाकट खुली हुई थी। उसका एक हाथ मा के कन्धे पर था और दूसरे से वह एक छोकरे को जकड़कर पकड़े हुए थी। छोकरा अपने खुरचे हुए मुँह पर हाथ रखे हुई, काँपते हुए होठों से बड़बड़ा रहा था—जाने दो मुझे! कुछ नहीं है!

'इसको सँभालो। इसे अपने घर ले जाओ! यह लो रूमाल। इसके मुँह पर पट्टी बाँध दो।' सोफया जल्दी-जल्दी मा को आदेश देकर और छोकरे का हाथ मा के हाथ में थमाकर यह कहती हुई एक तरफ को भागी।

'फौरन यहाँ से भाग जाओ मा, नहीं तो तुम भी गिरफ्तार हो जाओगी।'

लोग बिखरकर कब्रस्तान-भर में फैल गये थे और उनका पीछा करते हुए पुलिस के सिपाही अपने लम्बे-लम्बे कोटों में पैर उलझाते हुए, गालियाँ बकते हुए और अपनी संगीनें हिलाते हुए कब्रों के बीच में हो-होकर दौड़ रहे थे।

'जल्दी यहाँ से भाग चलो!' मा ने उस छोकरे का रूमाल से मुँह पोंछते हुए कहा—तुम्हारा नाम क्या है?

'आइवान!' नौजवान बोला। उसके मुँह से खून निकल रहा था—कोई चिन्ता की बात नहीं है। मेरे अधिक चोट नहीं लगी है। उस बदमाश ने मेरे सिर पर तलवार की मूठ मारी। मैंने भी उसके इस जोर से एक लकड़ी का हाथ जमाया कि बच्चा 'हाय' बोल गया। छोकरा रक्त से सने हुए हाथ से घूँसा घुमाता हुआ बोला—ठहरो, हमारा

भी दिन आयगा। जिस दिन हम सब कामगार उठ बैठे, उस दिन तुम्हारा बिना लड़े ही गला घोंट डालेंगे।

'जल्दी-जल्दी चलो!' मा ने तेजी से बाँसों के दरवाजे की तरफ चलते हुए उससे कहा। मा को लग रहा था कि कब्रस्तान की चहारदीवारी के बाहर ही खेत में पुलिस उनकी ताक में अवश्य खड़ी होगी और जैसे ही वे बाहर निकले, वैसे ही वह झपटकर उन्हें पीटना शुरू कर देगी। परन्तु सावधानी से चहारदीवारी का द्वार खोलकर जब उसने शरद् ऋतु के सूर्यास्त से आच्छादित बाहर के खेतों को देखा, तो वहाँ शान्ति और एकान्त का राज्य पाया। अस्तु, वह बेफिक्र होकर उस नौजवान से कहने लगी—लाओ, तुम्हारे मुँह पर पट्टी बाँध दूँ।

'नहीं, नहीं, रहने दो! मुझे अपने मुँह के घाव खुले रखने में शर्म नहीं लग रही है। मेरी लड़ाई सम्मान की लड़ाई थी। उसने मुझे मारा, मैंने उसे मारा।'

परन्तु मा ने जल्दी-जल्दी उसके घाव पर पट्टी बाँध दी। उसके मुँह से खून बहता देखकर मा के हृदय में भय और दया हो रही थी और उसकी पट्टी बाँधते हुए गरम-गरम खून बहकर मा की उँगलियों पर जब गिरा तो वह काँप गई, फिर घायल नौजवान का हाथ पकड़कर उसे लिये वह जल्दी-जल्दी खेतों में होती हुई जाने लगी तो वह नौजवान अपने मुँह पर से पट्टी हटाकर मुस्कराते हुए मा से पूछने लगा—मगर मुझको तुम लिये कहाँ जा रही हो, बन्धु! मैं अपने घर जा सकता हूँ।

परन्तु मा ने देखा, उसे बेहोशी हो चली थी। उसके पैर लथड़ा चले थे, हाथ ऐंठ रहे थे और धीरे-धीरे वह उत्तर का इन्तजार न करके मा से प्रश्न कर रहा था—मैं लुहार हूँ। तुम कौन हो? हम तीन लुहार यगोर आइवानोविश की मण्डली में शरीक थे। हम सब मिलकर कुल बारह आदमी थे। हमारा सबका यगोर पर बड़ा स्नेह था—भगवान उसकी आत्मा को शान्ति दें, परन्तु मैं तो भगवान में विश्वास नहीं करता; क्योंकि वे कुत्ते भगवान का जाल भी हमें डराने के लिए रचते हैं जिससे कि हम सदा अधिकारियों का हुक्म मानते रहें और बिना सिर उठाये जीवन-भर कष्ट सहते रहें!

सड़क पर पहुँचकर मा ने किराये की एक गाड़ी धर ली और उसमें बिठाकर आइवान को ले चली। मा ने धीरे से उससे कहा—अच्छा, अब चुप रहो। इतना कहकर मा ने उसका मुँह अच्छी तरह रूमाल से बाँध दिया। लड़के ने अपना मुँह खोलने के लिए हाथ उठाना चाहा; परन्तु वह न उठ सका। उसका हाथ भारी होकर घुटनों पर गिर पड़ा। परन्तु वह पट्टी में से फिर भी बड़बड़ाता हो रहा—मैं नहीं भूल सकता। एक दिन बदला अवश्य लूँगा! यगोर के साथ एक और विद्यार्थी टिटोविश भी आया था। वह हमको अर्थशास्त्र सिखाता था। वह बड़ा गम्भीर और मेहनती था। वह भी गिरफ्तार हो चुका है।

मा ने छोकरे को अपनी तरफ खींचकर, उसका सिर अपनी छाती से दबा लिया जिससे कि वह अधिक बोल न सके। परन्तु इसकी आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि वह

एकाएक भारी होकर चुप हो चला था। मा घबराकर तिरछी नजरों से इधर-उधर देखने लगी। वह सोचने लगी कि अभी पुलिसवाले इधर से निकलेंगे और आइविन का बँधा हुआ सिर देखकर उसे पकड़ लेंगे और निस्सहाय दशा में उसे पाकर मार डालेंगे।

'शराबी है?' गाड़ीवान ने मुस्कराते हुए मुड़कर मा से पूछा।

'हाँ, अधिक पी गया।'

'तुम्हारा लड़का है?'

'हाँ, जूते बनाने का काम करता है। मैं रसोई बनाती हूँ।'

घोड़े के ऊपर चाबुक घुमाते हुए गाड़ीवान ने फिर सामने की तरफ मुँह कर लिया और आवाज नीची करते हुए पूछा—मैंने सुना कि अभी-अभी कब्रस्तान में झगड़ा हो गया। लोग किसी राजनैतिक आदमी को दफन करने गये थे—उनमें से किसी एक आदमी की लाश को जो सरकार का विरोध करते हैं, क्योंकि उनकी अधिकारियों से कुछ दुश्मनी है। वैसे ही आदमी उसे दफन करने भी गये होंगे। सुनते हैं कि कब्रस्तान में खड़े होकर उन्होंने चिल्लाना शुरू किया—अधिकारियों का नाश हो! अधिकारी प्रजा को बर्बाद कर रहे हैं। और इस पर पुलिस ने उन्हें मारना शुरू कर दिया। कई आदमियों को पुलिसवालों ने वहीं काटकर बिछा दिया। परन्तु पुलिसवालों को भी अच्छी तरह मजा चखने को मिल गया। इतना कहकर वह चुप हो गया, फिर दुःख से सिर हिलाता हुआ एक विचित्र स्वर में बोला—मुर्दों को भी तो नहीं छोड़ते! कब्रस्तान तक उनका पीछा करते हैं!

गाड़ी सड़क के पत्थरों पर खड़खड़ाती हुई चली जा रही थी। आइवान का सिर मा की छाती पर रखा हुआ धीरे-धीरे हिल रहा था। गाड़ीवान घोड़े की तरफ से आधा मुड़ा हुआ बैठा-बैठा कुछ सोचता हुआ बड़बड़ाने लगा—लोगों के दिल पक गये हैं। जिधर देखो उधर झगड़ा और विद्रोह दीखता है। देखो न, कल रात ही पुलिस ने हमारे मुहल्ले मे दौड़ डाली थी। रात-भर सारे पड़ोसियों को तंग करके सुबह एक लुहार को गिरफ्तार करके ले गई। सुनते हैं, उसे ले जाकर वे रात में दरिया में डुबो दगे। वह लुहार बड़ा बुद्धिमान् था—बड़ी समझ की बातें करता था। परन्तु बुद्धिमान् होना और समझ की बातें करना शायद अब अपराध हो गया है। वह हमसे आकर अक्सर कहता था—भैया, गाड़ीवान को जीवन का सुख नहीं मिलता! हम कहते थे—हाँ भाई, हमारे जीवन तो कुत्ते से भी खराब हैं।

'गाड़ी रोको।' मा ने गाड़ीवान से इतने में कहा।

एकाएक गाड़ी ठहर जाने से आइवान को झटका लगा जिससे वह जगकर कराहने लगा।

'झटका लगने से होश आ गया!' गाड़ीवान बोला—वाह री शराब! तेरे क्या कहने हैं!

आइवान ने बड़ी कठिनाई से पैर उठाकर जमीन पर रखे। उसको चक्कर आ रहे थे; परन्तु फिर भी वह कहता जाता था—कुछ नहीं है, बन्धु! मैं चल सकता हूँ।

उनतीसवाँ परिच्छेद

घर में घुसने पर उन्हें सोफ़िया मिली जिसने मुँह में सिगरेट दबाये हुए मा का ड्योढ़ी पर ही स्वागत किया। उसके कपड़ों में कब्रस्तान की धक्का-मुक्की और छीना-झपटी से झुर्रियाँ पड़ गई थीं। परन्तु सदा की भाँति आज भी वह वैसी ही वीरता और विश्वास से भरी दीखती थी। जख्मी नौजवान को सोफा पर लिटाकर उसने उसकी पट्टी धीरे से खोल दी और सिगरेट का धुआँ आँखों में भर जाने के कारण आँखें सिकोड़ती हुई सदा की भाँति हुक्म चलाने लगी।

'आइवान डेनीलोविश!' उसने पुकारकर कहा—वह लोग आ गये हैं। तुम बड़ी थक गई होगी, निलोवना! तुम वहाँ बहुत डर गई थीं, क्यों? अच्छा अब आराम करो। निकोले, जल्दी से निलोवना को चाय पिलाओ और कुछ खाने को दो।

आज की घटना से मा का सिर घूम रहा था। उसकी छाती में छुरियाँ भोंकने का-सा दर्द हो रहा था। एक गहरी साँस खींचती हुई वह बोली—मेरी फिक्र मत करो।

परन्तु उसके चिन्तित चेहरे से यह स्पष्ट था कि उसकी फौरन ही फिक्र करने और उसे दिलासा देने की बड़ी जरूरत थी।

दूसरे कमरे से इतने में दाहिने हाथ में पट्टी बाँधे हुए निकोले और सिर के बाल बिखेरे हुए डाक्टर आइवान डेनीलोविश आ गये। डाक्टर फौरन लपककर आइवान के पास पहुँच गया और उसके ऊपर झुकता हुआ बोला—पानी, सोफ़िया, पानी लाओ और साफ कपड़े की पट्टियाँ और रूई लाओ।

मा उठकर रसोई की तरफ चली। परन्तु निकोले ने उसे अपने बायें हाथ से पकड़ लिया और खाना खाने के कमरे की तरफ ले गया।

'वह तुमसे पानी लाने को नहीं कहता था। सोफ़िया से कहता था। तुम्हें बहुत तकलीफ हुई है, क्यों!'

मा ने निकोले की स्नेहपूर्ण आँखों को अपनी ओर घूरते हुए देखा और उसका सिर दबाती हुई कराहकर बोली—हाँ बेटे, बड़ा भयंकर दृश्य था। उन्होंने बन्धुओं को बहुत मारा! मारते-मारते बिछा दिया!

'मैं सब कुछ देख रहा था!' निकोले ने मा को एक प्याला चाय देते हुए और सिर हिलाते हुए कहा।

'दोनों ही पक्ष क्रोध में भर गये थे। परन्तु घबराने की कोई बात नहीं है; क्योंकि सिपाहियों ने तलवारों की चपटी ओर से ही लोगों पर वार किया। ऐसा लगता है कि सिर्फ एक ही आदमी के अधिक चोट आई है। जैसे ही मैंने उसे गिरते देखा, मैं तुरन्त उठाकर उसे भीड़ से बाहर ले गया।'

निकोले का चेहरा देखकर और उसकी आवाज सुनकर और कमरे की गर्मी और प्रकाश से ल्लेसोवा को ढाढ़स होने लगा था। अस्तु, वह निकोले की ओर कृतज्ञता से देखते हुए पूछने लगी—तुम्हारे भी चोट आई है!

'हाँ, ऐसा लगता है, गड़बड़ में मेरा सिर भी किसी चीज से टकरा गया, जिससे मेरी कुछ खाल उधड़ गई है। अम्माँ, थोड़ी चाय पियो। हवा बड़ी ठण्डी चल रही है और तुम कपड़े इतने पतले पहने हुए हो।'

मा ने चाय लेने के लिए हाथ उठाया, तो उसे अपनी हाथ की उँगलियों पर खून के काले-काले धब्बे दिखाई दिये, जिन्हें देखते ही उसका हाथ घुटुओं पर गिर पड़ा। मा ने देखा तो उसके कपड़े भी सिले हुए थे। इतने में आइवान डेनीलोविश जाकट पहने और बाहें चढ़ाये हुए आया और निकोले के मूक प्रश्न के उत्तर में कहने लगा—उसके चेहरे पर एक हल्का-सा घाव है। सिर कट जरूर गया है। परन्तु बहुत चोट नहीं लगी है। है तो वह खूब मजबूत; मगर शरीर में से बहुत-सा खून निकल जाने से कमजोर हो गया है। चलो, उसे अस्पताल ले चलें।

'क्यों? यहीं रहने दो न!' निकोले बोला।

'आज यहाँ रह सकता है; और—खैर—कल भी रह सकता है। परन्तु उसके बाद उसे अस्पताल में ही रखने में हम लोगों को सुविधा होगी। मुझे यहाँ बार-बार आने का समय नहीं मिलेगा। अच्छा, तुम इस घटना के सम्बन्ध में एक पर्चा तो अवश्य लिखोगे हो, क्यों?'

'अवश्य!'

मा चुपचाप उठकर रसोईघर में घुसने लगी।

'कहाँ जाती हो, निलोवना?' निकोले ने चिन्तापूर्वक उसे रोकते हुए कहा—सोफया ही अकेली आज सब काम करेगी।

मा जाती हुई, उसकी ओर मुस्कराकर देखती हुई कहने लगी—मेरे कपड़े खून से सन रहे हैं। बदलने जाती हूँ। इतना कहकर वह रसोईघर में घुस गई और वहाँ कपड़े बदलती हुई फिर एक बार इन लोगों के हृदयों की शान्ति और भयंकर घटनाओं का सामना करने की शक्ति के बारे में सोचने लगी, जिससे उसे साफ जाहिर होता था कि उन्होंने सत्य के मार्ग पर मर्दों की तरह चलने और जो कष्ट उस राह में आयें, उन्हे हँसते-हँसते सहने का संकल्प कर लिया था। यह सोचकर मा के हृदय में भी दृढ़ता आई और भय उसके हृदय से दूर हो गया।

फिर जब वह बीमार के कमरे में लौटी तो उसने सोफया को बीमार के ऊपर झुके हुए यह कहते हुए सुना—क्यों व्यर्थ की बातें करते हो, बन्धु!

'हाँ, हाँ, मेरे कारण तुम्हें बहुत कष्ट हुआ होगा।' वह मन्द स्वर में बड़बड़ा रहा था।

'नहीं, कुछ नहीं हुआ। चुपचाप लेटे रहो। बोलना तुम्हारे लिए अच्छा नहीं है।'

मा सोफया के पीछे आकर खड़ी हो गई और उसके कन्धों पर हाथ रखकर मुस्कराती हुई बीमार के चेहरे की ओर देखती सोफया को सुनाने लगी कि गाड़ीवान के सामने उसने कैसी बहकी-बहकी बातें की थीं, और अपनी लापरवाही से मा को कितना डरा दिया था। आइवान मा की बातें सुन सटपटाकर आँखें फिराता और होठ चाटता हुआ बीच-बीच में मन्द स्वर में कहता था—'ओह, मैं कितना मूर्ख हूँ !'

'अच्छा, अब हम लोग जाते हैं।' सोफया ने उसका कम्बल सीधा करते हुए कहा—तुम अब सो जाओ।

इतना कहकर मा और सोफया खाना खाने के कमरे में चली गईं, और वहाँ बैठकर आज की घटना के सम्बन्ध में धीरे-धीरे आपस में बातें करने लगीं। अन्त्येष्टि-क्रिया का नाटक तो खतम हो ही चुका था। अस्तु, वे भविष्य पर विश्वास रखती हुईं आगे के कार्य का प्रबन्ध सोचने लगीं। उनके चेहरों पर थकावट थी, परन्तु इरादों में वीरता थी।

अपने-अपने विषय में जिसको जो असन्तोष था, बता रहा था। कुर्सी में हिलते हुए, जोश से संकेत में डाक्टर डेनीलेविश अपनी पतली और तीक्ष्ण आवाज दबाने का प्रयत्न करता हुआ कह रहा था—प्रचार की जरूरत है! प्रचार को! प्रचार की सबसे अधिक जरूरत है। नौजवान कामगार ठीक मार्ग पर हैं। अब हमें अपने आन्दोलन का क्षेत्र आगे बढ़ाना चाहिए। कामगार ठीक मार्ग पर हैं! मैं समझता हूँ, वे बिलकुल ठीक हैं!

निकोले ने गम्भीरता से कहा—सभी तरफ से शिकायतें आ रही हैं कि काफी साहित्य नहीं पहुँच रहा है! परन्तु हम लोग अभी तक अपना एक अच्छा छापाखाना भी नहीं बना सके हैं! लियूडमिला बेचारी काम करती-करती मरी जा रही है। उसका हाथ नहीं बँटाया जायगा तो वह जरूर बीमार पड़ जायगी।

'व्यसोवशचिकोव क्या कर रहा है ?' सोफया ने पूछा।

'वह शहर में आकर नहीं रह सकता। जब तक हमारा छापाखाना नहीं बनता, तब तक वह इस काम में नहीं लग सकता, और हर हालत में उसके लिए एक और आदमी की भी जरूरत होगी।'

'क्या मैं यह काम नहीं कर सकती ?' मा ने धीरे से पूछा।

तीनों उसका प्रश्न सुनकर चुप हो गये और उसके मुँह की तरफ कुछ देर तक देखने लगे।

'नहीं, तुम्हारे लिए यह काम बड़ा कठिन होगा, निलोवना!' निकोले कहने लगा—तुम्हें इस काम मे पड़कर शहर के बाहर रहना पड़ेगा और पवेल से मिलना-जुलना भी बन्द कर देना होगा। और एक आह भरकर मा ने निकोले की बात काटते हुए कहा—पाशा को मेरे उससे न मिलने पर कोई बड़ी हानि न होगी। मुझे भी पाशा से मिलने पर बड़ा दुःख ही होता है। उसे देखते ही मेरा हृदय फटने लगता है। मुझे अपने लाल

से कोई बात तक कहने की इजाजत नहीं होती। उसके सामने मूक बनी खड़ी रहती हूँ और वे जेल के अफसर खड़े-खड़े मेरा मुँह ताका करते हैं कि मैं कोई ऐसी बात तो मुँह से नहीं निकालती हूँ, जो मुझे नहीं निकालनी चाहिए।

सोफया ने मेज के नीचे टटोलते हुए मा का हाथ पकड़ लिया और उसे अपने हाथों की पतली-पतली उँगलियों में दबा लिया। निकोले मा के चेहरे की ओर घूरता हुआ उसे समझाने की कोशिश कर रहा था कि नये छापेखाने में उसे किस तरह काम करनेवालों की ढाल बनकर रहना पड़ेगा।

'मैं समझती हूँ।' मा बोली—रसोइया बनकर वहाँ रहूँगी। मैं यह काम अच्छी तरह कर सकूँगी। मैं अच्छी तरह समझती हूँ, मुझे क्या-क्या करना होगा।

'बड़ी हठ करती हो।' सोफया बोली।

पिछले कुछ दिनों में इधर होनेवाली घटनाओं से मा का जी ऊब उठा था। अस्तु, जब उसने शहर से बाहर अर्थात् शोरगुल से दूर रहने की जरूरत सुनी तो वह मौके से फायदा उठाकर वहाँ से चली जाने के विचार से उस काम को अपने ऊपर ले लेने के लिए हठ करने लगी।

परन्तु निकोले ने बातचीत का विषय ही बदल दिया।

'क्या सोच रहे हो आइवान!' उसने डाक्टर की ओर मुँह फेरते हुए पूछा।

मेज पर से सिर उठाते हुए डाक्टर ने क्रोध से उत्तर दिया—हम लोग अभी बहुत थोड़े हैं। मैं यही सोच रहा था। हम लोगों को अब तुरन्त ही जोर-शोर से अपना कार्य आगे बढ़ाना चाहिए और पवेल और ऐन्ड्री को जेल से भागने पर राजी कर लेना चाहिए। जेल में निठल्ले बैठे-बैठे व्यर्थ समय गँवाने के लिए वे लोग नहीं हैं!

निकोले ने आँखें नीची कर लीं और कनखियों से मा की तरफ देखता हुआ अविश्वासपूर्ण सिर हिलाने लगा।

मा ने समझा कि उसके सामने उसके लड़के के विषय में बातें करते वे लोग झिझकते थे। अस्तु, वह चुपचाप उठकर अपने कमरे में चली गई।

कमरे में पहुँचकर वह पलंग पर लेट गई और आँखें खोले लेटी-लेटी वह तरह-तरह की चिन्तापूर्ण बातें सोचने लगी। दूसरे कमरे में होनेवाली घुस-पुस की धीमी-धीमी आवाज उसके कानों में आ रही थी। वह अपने लड़के को स्वतन्त्र देखने के लिए चिन्तित थी। परन्तु साथ ही पवेल को जेल से भगाकर स्वतन्त्र करने का विचार उसका दिल हिलाता था। उसको लग रहा था कि दिन-प्रति-दिन उसके चारों ओर संघर्ष बढ़ता जाता है और किसी भी दिन खुल्लमखुल्ला टक्कर हो जाने की संभावना है। लोगों का सब्र सीमा पर पहुँचा लगता था। हृदय मे एक नई आशा की ज्योति जग उठी थी। चारों तरफ जोश बढ़ रहा था और तीक्ष्ण शब्दों की बौछारें सुनाई देती थीं। प्रत्येक कोने से एक नवीन, पैर उखाड़ देनेवाला प्रवाह-सा बह उठा था। प्रत्येक क्रान्तिकारी घोषणाओं और पर्चों पर बाजारों में, दूकानों में, नौकरों में और कामगारों में खूब चर्चाएँ होती

थीं। क्रान्तिकारी की गिरफ्तारियाँ होने पर लोग जब गिरफ्तारी के कारणों की चर्चा करते थे, तो उनकी बातों में उसके प्रति एक दबी, अस्पष्ट और कभी-कभी उन्हें स्वयं अज्ञात समवेदना की झलक होती थी। क्रान्ति, समाजवाद, राजनीति इत्यादि शब्दों को, जिनके उच्चारण से कभी उसका हृदय दहल उठता था, मा अब रोज साधारण लोगों के मुँह से सुना करती थी—यद्यपि अभी भी इन शब्दों पर अकसर कहकहे लगते थे। परन्तु इन कहकहों में भी जानने की वह उत्कण्ठा स्पष्ट होती थी, जिसमें भय, आशा, मालिकों के प्रति घृणा और धमकियाँ मिली रहती थीं। घृणा और क्रान्तिकारी आन्दोलन से लोगों के अन्धकार-पूर्ण और कठिन जीवन में, जैसे पानी में कंकड़ी गिरने पर कुण्डल बनते हुए धीरे-धीरे फैलते हैं, वैसे एक विघ्न-सा उठता हुआ फैल रहा था। लोगों की सोई हुई विचार-शक्ति जागने लगी थी। प्रतिदिन की घटनाओं को लोग अब आखें खोल-खोलकर देखने और उन पर विचार करने का प्रयत्न करने लगे थे। मा को वह सब दूसरों से अधिक स्पष्ट दीखता था, क्योंकि उसने जीवन का भयङ्कर और डरावना चेहरा दूसरे से अधिक देखा था। वह इन तमाम बातों के अधिक निकट थी, क्योंकि झिझक, सङ्कट और नवीन जीवन के लिए भूख, सभी का वह सामना कर चुकी थी। अस्तु, उसे लोगों के जीवन में आनेवाले इस नये परिवर्तन पर आनन्द होता था, परंतु साथ-साथ भय भी होता था। आनन्द उसे इसलिए होता था कि जिस काम को उसके लड़के ने अपने जीवन का लक्ष्य बनाकर हाथ में लिया था, वह अब फलीभूत होने लगा था और डर उसे यह सोचकर होता था कि लड़का जेल से भाग आया तो इस संघर्ष में जो सबसे अधिक खतरनाक स्थान होगा वहीं जाकर वह स्वयं खड़ा होगा।

मा प्रायः उन महान् विचारों को अपने हृदय में उछलता और कूदता हुआ पाती थी, जो सभी के हृदय में आते हैं और आने चाहिएँ; परन्तु अपने शब्दों में वह कभी उन्हें ठीक तरह व्यक्त नहीं कर पाती थी, जिससे वे उसकी छाती में एक मूक और वज्र उदासी भरकर उसका दिल मसोसा करते थे। कभी-कभी उसकी आँखों के आगे अपने बेटे की मूर्ति आकर खड़ी हो जाती थी, जो बढ़ते-बढ़ते जिन्न की तरह आकाश तक पहुँच जाती थी, और उसके विराट स्वरूप में उसको जितने सच्चे विचार और आदर्श उसने अभी तक सुने थे, और जितने लोगों को वह स्नेह करती थी और जो-जो वीरता की कहानियाँ उसने आज तक सुनी थीं, उन सभी का दर्शन होने लगता था जिससे प्रसन्न होकर वह हृदय में फूल उठती थी और सोचने लगती थी—ठीक होगा! सब ठीक होगा! घबराने की कोई बात नहीं है। परन्तु फिर उसका मातृप्रेम एक भयङ्कर ज्वाला की तरह प्रज्वलित होकर उसके हृदय को जलाने लगता था, जिससे उसके हृदय में फूटनेवाले विश्वप्रेम के स्रोत का प्रवाह रुक जाता था और विश्वप्रेम की महान् भावना के स्थान में उसकी राख में वह तुच्छ और कुरूप विचार कीड़े की तरह रेंगता और छटपटाता हुआ आता था—हाय, मेरा लड़का बर्बाद हो जायगा! मेरा लड़का मार डाला जायगा!

बड़ी देर तक इसी प्रकार सोचती-सोचती मा की बहुत रात हो जाने पर आँख लगी और आँख लगते ही घोर निद्रा में वह डूब गई। परन्तु दूसरे दिन बड़े सवेरे ही वह उठ बैठी—उसका शरीर भारी था, और हड्डियाँ और सिर दुख रहे थे। दोपहर को जेल पहुँच-कर वह दफ्तर में पवेल के सामने जा बैठी और अपनी आँखों में भर आनेवाले आँसुओं के परदों में से उसके मरदाने चेहरे पर उगती हुई दाढ़ी को घूरती हुई अपने हाथ में दबाये हुए खत को पवेल के हाथ दे देने का मौका देखने लगी।

'मैं अच्छी तरह हूँ! और भी सब लोग अच्छी तरह हैं!' पवेल ने धीमी आवाज में मा से कहा—तुम कैसी हो?

'मैं ठीक हूँ! यगोर आइवानोविच का देहान्त हो गया।' मा ने दुःख से कहा।

'हाँ!' पवेल ने चौंककर कहा और फिर सिर झुका लिया।

'उसकी अन्त्येष्टि-क्रिया के समय पुलिस से लोगों का झगड़ा हो गया। एक आदमी गिरफ्तार भी कर लिया गया है।' मा सरल स्वभाव से कह रही थी, परन्तु पतले होंठवाले जेल के अधिकारी ने कुर्सी पर से उछलकर उसकी बात काटते जल्दी-जल्दी बड़बड़ाते हुए कहा—बस, बस! ऐसी बातें करने की आज्ञा नहीं है! कितनी बार कह चुका हूँ! तुम्हारी समझ में क्यों नहीं आता? जानतीं नहीं, राजनैतिक बातें करने की आज्ञा नहीं है!

मा भी अपनी कुर्सी पर से उठकर खड़ी हो गई, और मानों अधिकारी की बात बिलकुल उसकी समझ मे ही न आई, बोली—मैं राजनैतिक बातें तो बिलकुल नहीं कर रही थी। मैं तो एक झगड़े का हाल सुना रही थी, जो वाकई हुआ है। बिलकुल सच्चा वाकया है। एक आदमी का सिर भी फटा है।

'ठीक है, ठीक है। मगर कृपया उसके बारे में कोई बात न करिए। घरेलू बातों के सिवाय और किसी किस्म की बातें करने की इजाजत नहीं है।'

मा ने देखा, अफसर सटपटाई हुई आवाज से बोल रहा था। इतना कहकर वह फिर कुर्सी पर बैठ गया और सिर झुकाकर अपने कागजात ठीक करते हुए, उदास और थकी हुई आवाज में कहने लगा—तुम्हारी बातचीत की जिम्मेदारी मुझ पर है।

मा ने चारों तरफ देखते हुए जल्दी से खत पवेल के हाथ में थमा दिया। फिर उसने सन्तोष से एक गहरा निःश्वास लिया।

'समझ में नहीं आता कि कैसी बातें करूँ!' पवेल ने मुस्कराते हुए कहा।

'मेरी भी समझ में नहीं आता।' मा ने बैठते हुए कहा।

'तो फिर मिलने जल्दी-जल्दी क्यों आती हो?' अधिकारी ने चिढ़कर कहा—बातें तो करने की कुछ हैं नहीं। फिर भी बार-बार मिलने के लिए आते हैं, और मुझे हैरान करते हैं।

'सुनती हूँ, अभियोग शीघ्र ही शुरू हो जायगा?' मा ने जरा ठहरकर पवेल से पूछा।

'हाँ, सरकारी वकील यहाँ आया था। वह तो यही कहता था।'

'छः महीने तो जेलखाने में पड़े-पड़े तुम्हें यों ही हो गये।'

इसी प्रकार की इधर-उधर की बातें वे करने लगे। मा ने देखा पवेल उसकी ओर बड़े स्नेह से देख रहा था। पहले की तरह ही वह शान्त और गम्भीर था। कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। केवल उसकी कलाइयाँ पहले से अधिक सफेद हो गई थीं और दाढ़ी बढ़ जाने से उसकी उम्र अधिक लगने लगी थी। मा के हृदय में कोई खुशखबरी सुनाने की एकाएक बड़ी प्रचण्ड इच्छा हुई। उसने सोचा—व्यसोवशचिकोव का हाल क्यों न सुनाऊँ? अस्तु, जिस प्रकार वह बातें कर रही थी, उसी प्रकार बातें करते हुए उसने कहना शुरू किया—तुम्हारा दत्तक पुत्र मिला था। पवेल ने मा की तरफ घूरते हुए आँखों-ही-आँखों में पूछा—कौन? मा ने अपने गालों पर उँगलियाँ रखते हुए उसे समझाया—न्येचकरू व्यसोवशचिकोव!

'वह अच्छी तरह है! बड़े मजे में है! उसे शीघ्र ही काम भी मिलनेवाला है। तुम्हें याद ही होगा, उसे हमेशा काम करने की धुन सवार रहती है?'

पवेल समझ गया और कृतज्ञता-पूर्वक सिर हिलाते उसने हँसती हुई आँखों से उत्तर दिया—हाँ, हाँ, मुझे खूब याद है!

'अब ठीक है।' मा ने अपने ऊपर सन्तुष्ट और पवेल के खुश होने पर खुश होते हुए सन्तोषपूर्ण आवाज में कहा।

विदा होते समय पवेल ने मा का हाथ स्नेह में भरकर जोर से दबाते हुए कहा—धन्यवाद, अम्माँ!

इससे मा को लगा कि वह अपने पुत्र के हृदय के बहुत निकट पहुँच गई है। यह विचार आते ही उसके दिमाग में एक नशा-सा भरने लगा जिसके कारण वह मुँह से तो पवेल से कुछ न कह सकी, सिर्फ उसका हाथ जोर से दबाकर रह गई।

घर पहुँचने पर उसे सशा इन्तजार करती हुई मिली। वह प्रायः निलोवना से उस रोज मिलने अवश्य आती थी, जिस रोज मा की पवेल से मिलने की बारी होती थी।

'क्यों, पवेल कैसा है?' उसने मा से घुसते ही पूछा।

'अच्छी तरह है।' मा ने उत्तर दिया।

'तुमने उसे वह पत्र दे दिया?'

'हाँ! बड़ी चालाकी से मैंने उसके हाथ में घुसेड़ दिया।'

'उसने पढ़ा?'

'नहीं! वहाँ कैसे पढ़ सकता था?'

'हाँ, हाँ, ठीक! मैं भूल गई! अच्छा एक सप्ताह और सही। एक सप्ताह तक हमें और उसके उत्तर का इन्तजार करना पड़ेगा। तुम क्या समझती हो अम्माँ? वह मान जायगा?'

'कह नहीं सकती। मैं समझती हूँ, मान जायगा।' मा ने विचार करते हुए कहा—अगर कोई डर की बात नहीं है तो क्यों नहीं मान लेगा?

सशा सिर हिलाने लगी। फिर वह बोली—उस बीमार को क्या खाने की इजाजत है? वह खाना माँग रहा है।

'वह सब चीज खा सकता है। मैं अभी उसे खाना देती हूँ।' इतना कहकर मा रसोई की तरफ चली। सशा भी धीरे-धीरे उसके पीछे-पीछे चलती हुई बोली—मुझे बताओ अम्माँ, कहाँ है। मैं उसे दे दूँगी।

'धन्यवाद, धन्यवाद! नहीं, तुम क्यों कष्ट करोगी? मैं उसे अभी देती हूँ।'

मा ने रसोई में पहुँचकर चूल्हे पर से झुककर एक बर्तन उठा लिया और लड़की ने उसके पास पहुँचकर धीरे से कहा—ठहरो अम्माँ, सुनो!

इतना कहकर उसका मुँह पीला पड़ गया और आँखों में खुमारी छा गई और काँपते हुए होंठों से कठिनता-पूर्वक वह बड़बड़ाती हुई कहने लगी—मैं तुमसे भीख माँगती हूँ अम्माँ, वह भागने पर राजी नहीं होगा; परन्तु उसको किसी तरह राजी जरूर कर लेना। उसकी बाहर बड़ी जरूरत है। उससे कहना, उसकी बाहर बड़ी जरूरत है! काम जोर-शोर से चलाने के लिए उसकी बहुत जरूरत है! और उससे कहना कि मुझे यह भी डर है कि अन्दर पड़ा-पड़ा वह बीमार हो जायेगा। देखो न, मुकदमे की तारीख भी अभी तक निश्चित नहीं हुई है। छः महीने उसे जेल मे पड़े हो चुके हैं। मैं तुम्हारी खुशामद करती हूँ मैया, उसे किसी-न-किसी तरह राजी जरूर कर लेना।

जाहिर था, उसने बड़ी मुश्किल से ये बातें कही थीं। वह सिर उठाये सीधी खड़ी थी और दुःखी होकर एक तरफ को देख रही थी। उसकी आवाज में रस्सी की तरह गाँठें पड़ रही थीं और उसके पलक थककर गिरे जा रहे थे। अस्तु, दाँतों से होंठ चबाती हुई वह अपने हाथों को जोर से दबाकर उँगलियाँ चटखाने लगी।

मा को एकाएक उसकी ऐसी बातें सुनकर बड़ा अचम्भा हुआ। परन्तु वह छोकरी के मन पर जो बीत रही थी, अच्छी तरह समझती थी, जिसे सोचकर उसके मन मे भी उदासी भर आई। वह स्नेह से सशा को अपने हृदय से चिपटाकर बोली—मैं क्या करूँ मेरी लाडली! वह कभी किसी की नहीं सुनता। अपनी ही हठ पर चलता है।

कुछ देर तक दोनों एक दूसरी से चिपटी हुई चुपचाप खड़ी रहीं। फिर सशा ने सावधानी से मा के हाथ अपने कन्धों पर से हटाये।

'हाँ, अम्माँ, तुम ठीक कहती हो!' उसने काँपकर कहा—यह मेरी मूर्खता और दुर्बलता है। मेरा जी ऊब उठता है। इतना कहकर वह एकाएक गम्भीर स्वर में बोली—अच्छा, अब उस बीमार को कुछ खाने के लिए देना चाहिए। बड़ी देर हो गई है।

इतना कहकर क्षण-भर मे खाना लेकर वह आह्वान के पलंग के पास जा बैठी और प्रेमपूर्वक उससे पूछने लगी—क्या तुम्हारे सिर में अभी भी बहुत पीड़ा होती है?

'नहीं, बहुत पीड़ा तो नहीं होती। कुछ समझ में नहीं आता! मैं बड़ा कमजोर हो गया हूँ!' आह्वान ने सिटपिटाते हुए जवाब दिया। फिर उसने कम्बल खींचकर अपनी टाँगें ढाँक लीं और इस प्रकार आँखें बन्द करने और खोलने लगा मानों किसी प्रचण्ड

प्रकाश से वे चौंधिया रही हों। सशा यह देखकर कि उसके वहाँ बैठने से बीमार को कुछ परेशानी-सी होती है, जिससे वह खाना नहीं खा सकता, उठी और कमरे के बाहर चली गई। उसके चले जाने पर आइवान उठा और पलंग पर बैठकर उस दरवाजे की तरफ देखता हुआ, जिसमें से सशा बाहर गई थी, बड़बड़ाया—सु...न्...द...र है। बड़ी सुन्दर है।

उसकी आँखें तेजस्वी और प्रसन्न थीं। उसके दाँत सुन्दर और अच्छे ढंग पर जड़े थे। परन्तु आवाज में उसकी अभी तक प्रौढ़ता नहीं थी।

'तुम्हारी उम्र क्या है?' मा ने विचारते हुए उससे पूछा।

'सत्रह वर्ष।'

'तुम्हारे माता-पिता कहाँ हैं?'

'गाँव में। मैं दस वर्ष की उम्र से यहीं रहता हूँ। स्कूल छोड़कर मैं रोटी कमाने के लिए यहाँ चला आया था। तुम्हारा नाम क्या है बन्धु!'

बन्धु शब्द का जब कोई मा के लिए प्रयोग करता था, तो वह मुस्कराने लगती थी और उसके हृदय में प्रेम भरने लगता था।

'मेरा नाम तुम क्यों जानना चाहते हो!'

युवक सिटपिटाकर झिझकते हुए समझाने लगा—देखो, हमारे मण्डल के एक विद्यार्थी ने, जो हमें पर्चे पढ़कर सुनाया करता था, हम लोगों को एक बार पवेल की मा का हाल सुनाया था। वह भी एक कामगार है। क्या तुम उसे जानती हो? उसने हमें पहली मई को जलूस का हाल सुनाया था।

मा ने सिर हिलाते हुए अपने कान खड़े किये।

'वही पहिला मनुष्य था, जिसने हमारे दल का झण्डा पहले-पहल खुल्लमखुल्ला फह-राया था!' नवयुवक ने अभिमान से कहा और उसके इस अभिमान की प्रतिध्वनि मा के हृदय में भी हुई।

'मैं वहाँ झण्डा निकालने के समय मौजूद नहीं था। यहाँ शहर में भी हम लोग उसी प्रकार झण्डा निकालने का विचार कर रहे थे। परन्तु निकाल नहीं सके, क्योंकि हम लोग बहुत थोड़े थे। इस वर्ष जरूर निकालेंगे, जरूर।'

भविष्य में होनेवाली घटना का विचार आते ही जोश से उसका गला रुँधने लगा। वह हवा में चम्मच हिलाते हुए कहने लगा—हाँ, व्लेसोवा, मैया, मैं तुमसे पवेल की मा की बात कह रहा था। वह भी बाद में हमारे दल में शरीक हो गई थी। सुनने में वह बड़ी अद्भुत देवी है।

मा खिलकर मुस्कराने लगी। लड़के की जोश से भरी अपनी प्रशंसा सुनकर उसे आनन्द हो रहा था। परन्तु आनन्द के साथ ही उसे झिझक भी हो रही थी। उसके मन में आया कि कह दे—मैं ही तो पवेल की मा हूँ। फिर बड़ी कठिनता से उसने

अपने-आपको रोका और मन-ही-मन अपनी अवहेलना करती हुई सोचने लगी—अरी, मूर्ख बुढ़िया ! तू किस योग्य है ?

'अच्छी तरह खाओ। जल्दी अच्छे हो जाओ, जिससे शीघ्र ही फिर कार्य में लग सको।' मा एकाएक आवेश में भरकर उसकी तरफ झुकती हुई कहने लगी—अपने कार्य के लिए बलवान् और नवयुवक हाथों, पवित्र हृदयों और सच्चे दिमागों की बड़ी जरूरत है। वे ही हमारे कार्य को फैला सकते हैं। उन्हीं के बल पर हमारा महान् कार्य बुराई और नीचता से इतनी दूर रहता है।

कमरे का द्वार खुला और ठण्डी, नम, शरत् ऋतु की वायु का एक झोंका अन्दर आया, जिसके साथ-साथ मुस्कराती हुई सोफया भी अन्दर घुसी, जिसके मुँह पर सदा की भाँति वीरता झलकती थी, परन्तु जिसका चेहरा ठण्ड से लाल हो रहा था।

'सच कहती हूँ अम्माँ, जासूस लोग यहाँ मेरा उतना ही ध्यान रखने लगे हैं, जितना किसी मालदार बीबी का खाविन्द ध्यान रखते हैं। मुझे अब यह जगह छोड़ देनी पड़ेगी। कहो वेनया, कैसे हो अब ? अच्छे हो रहे हो न ? पवेल का क्या हाल है, निलोवना ? क्या सशा भी यहाँ आई है ?'

अपना सिगरेट जलाते हुए और उत्तरों की चिन्ता न करते हुए उसने प्रश्नों की बौछार लगा दी और हँसती हुई मा और उस नवयुवक का हृदय अपनी हँसी और बातों से प्रसन्न करने लगी। मा उसकी तरफ मुस्कराती हुई मन-ही-मन कहने लगी—कैसे अच्छे लोगों की संगत में मैं रहती हूँ। फिर मा ने आइवान की ओर झुककर उससे बड़े स्नेह से कहा—जल्द अच्छे हो जाओ ! थोड़ी-सी शराब पियो। वह तुम्हें फायदा करेगी। इतना कहकर वह उठी और खाने के कमरे में गई। वहाँ पहुँचकर उसने सोफया को सशा से कहते सुना—उसने तीन सौ प्रतियाँ तैयार कर ली हैं, परन्तु इतना काम करते-करते वह मर जायगी। तुम्हारे लिए वीरता दिखाने का यह मौका है ! चुपचाप कार्य करने में जो वीरता होती है, उसका आनन्द काम करने में ही मिलता है ! देखो न सशा, सबसे अधिक आनन्द तो हमें इस बात से होता है कि हम लोग इतने अच्छे लोगों के साथ रहते और उठते-बैठते हैं। वे हमारे बन्धु हैं और हम उनके साथ काम करते हैं।

'हाँ, हाँ !' लड़की ने धीरे से उत्तर दिया।

फिर शाम को चाय पीते समय सोफया मा से बोली—निलोवना, तुम्हें फिर गाँवों की तरफ जाना होगा।

'हाँ ? अच्छा ! बड़ी अच्छी बात है ! कब जाना होगा ?'

'कल ही चल दो तो बड़ा अच्छा हो ! जा सकोगी ?'

'हाँ, हाँ !'

'देखो, वहाँ पहुँचकर गाड़ी ले लेना।' फिर निकोले मा को सलाह देने लगा—और वहाँ से घोड़ों की डाक किराये पर जाती है, वह ले लेना, और वहाँ पर पहला रास्ता जो मिले उसे छोड़कर दूसरे रास्ते पर चलना ; निकोल्स्क जिले को पार करती हुई उस तरफ

जाना ; इत्यादि। निकोले के गम्भीर चेहरे पर मा को सलाह देते हुए भय और चिन्ता के चिह्न दिखाई दे रहे थे।

'निकोल्स्क होकर जाने में राह लम्बी हो जायगी। किराये के घोड़े लेने से तो बड़ा खर्च होगा।'

'देखो बन्धु, मेरी राय से तो अभी उधर नहीं जाना चाहिए। हाल ही में उधर भी शोरगुल हुआ है। कुछ गिरफ्तारियाँ भी हुई हैं। शायद एक शिक्षक पकड़ा गया है। राइबिन भाग गया, यह तो अच्छा ही हुआ ; परन्तु अभी कुछ दिन तक सावधान रहने की जरूरत है। उधर जाने के लिए अभी कुछ दिन और ठहरना चाहिए।'

'ठहरने से कोई लाभ न होगा।' निलोवना ने कहा। सोफया ने बेसब्री से मेज पर उँगलियाँ गड़ाते हुए कहा—बार-बार पर्चे बाँटते रहने की बड़ी जरूरत है। तुम्हें वहाँ जाने में डर तो नहीं लगता, निलोवना ?

'क्यों ?'

मा को उसका यह प्रश्न बुरा लगा। वह कहने लगी—मुझे कब किस बात का डर लगता था ? मैं तो पहली बार ही निर्भय थी। और अब तो...इतना कहकर उसने सिर झुका लिया। जब कभी मा से पूछा गया था, 'तुम्हें डर तो नहीं लगता है ?' 'यह काम तुम कर सकोगी ?' 'इस काम में तुम्हें कष्ट तो नहीं होगा ?' तब उसे लगता था कि उससे अन्य बन्धुओं की तरह व्यवहार नहीं किया जाता है। उससे उस प्रकार का व्यवहार नहीं किया जाता है, जिस प्रकार का एक बन्धु दूसरे से करता है। पहले तो मा एक के बाद दूसरी होनेवाली घटाटोप घटनाओं से घबराती थी ; परन्तु बाद में वह उनकी आदी हो गई थी। अब उसे काम करने की बड़ी लालसा रहती थी। इस समय भी जब गाँवों में जाने की बात चली तो वह उसके लिए लालयित हो उठी थी। अस्तु, सोफया के प्रश्न से उसे बड़ी चोट लगी और वह एक गहरी साँस भरती हुई बोली—क्या यह पूछने की भी आवश्यकता थी ! मुझे डर किसका हो सकता है ! डर तो उसे होता है, जिसके पास कुछ गँवाने को होता है। मेरे पास क्या है ! केवल मुझे अपने एक लड़के का डर रहता था। उसके कष्टों के लिए मैं जरूर डरा करती थी। परन्तु जब उसी को कष्टों का डर नहीं है, तो मुझे किसका डर होगा ?

'बुरा मान गईं ?' सोफया ने मा से पूछा।

'नहीं तो। मगर तुम लोग आपस में एक-दूसरे से तो ऐसे प्रश्न नहीं पूछते ! मुझी से क्यों पूछते हो ?'

निकोले ने सिटपिटाकर अपना चश्मा उतार लिया और फिर उसे ठीक तरह नाक पर रखते हुए वह टकटकी बाँधकर अपनी बहन के मुँह की तरफ देखने लगा। उन दोनों की झिझक और चुप्पी से मा को और भी परेशानी हुई, जिससे वह अपराधी की तरह उठकर खड़ी हो गई और कुछ कहना ही चाहती थी कि सोफया ने उसके हाथ

पकड़ लिये और उन्हें थरथराती हुई मन्द स्वर में बोली—क्षमा करो अम्माँ! फिर ऐसी गलती नहीं होगी।

मा उसकी इस क्षमा-प्रार्थना पर हँसने लगी। कुछ देर बाद तीनों एक-दूसरे से सटे हुए बैठे थे और गावों में पहुँचने का प्रबन्ध सोच रहे थे।

तीसवाँ परिच्छेद

दूसरे दिन प्रातःकाल ही मा एक घोड़ों की डाकगाड़ी में जा बैठी, जो शरद् ऋतु की वर्षा से धुल जानेवाली सड़क पर हिलती और खड़खड़ाती हुई चलने लगी। सीली पवन आ-आकर मा के मुँह पर थपेड़े लगाने लगी, और कीचड़ छपछप करती हुई उड़ने लगी। गाड़ीवान कोचबक्स पर पीछे की तरफ मुड़ा हुआ बैठा था। वह विचार-पूर्वक मिनमिनाते हुए स्वर में शिकायत करने लगा—मैं तो उससे कहता हूँ—मेरे भैया, आओ, हम लोग आपस में ही फैसला कर लें। कुछ तुम झुको, कुछ मैं झुकूँ। और हम दोनों बँटवारे के लिए तैयार भी हो जाते हैं। इतना कहकर उसने एकाएक बाईं तरफ के घोड़े को एक जोर से चाबुक जमाया और गुस्से से उस पर चिल्लाया—ओ तेरी अम्माँ...!

बड़े-बड़े कौवे शरद् ऋतु के नंगे खेतों के ऊपर उड़ते हुए ताक लगा रहे थे। ठंडी वायु जोर से बह रही थी और उसके थपेड़े उड़नेवाले पक्षी अपनी पीठों पर ले रहे थे। पवन उनके पङ्खों को बिखरा देने का प्रयत्न कर रही थी और उन्हें कहीं से कहीं पंख फड़फड़ाता हुआ उड़ाये लिये जाती थी। गाड़ीवान ने अपनी शिकायत फिर कहना शुरू की—परन्तु उसने मुझे छल लिया। मैं देखता हूँ, मेरे हिस्से में कुछ भी नहीं आया...

मा गाड़ीवान की बातें सुनती एक स्वप्न में डूबी हुई-सी बैठी थी। चुपचाप बैठे-बैठे उसके मन में एक विचार उठ रहा था, जिसमें उसको उन सारी घटनाओं की याद आ रही थी, जो उसके जीवन में पिछले कुछ वर्षों में घटी थीं। उनमें से प्रत्येक घटना को टटोलने पर उसे लग रहा था कि उसने भी उसमें क्रियात्मक भाग लिया था। इससे पहले वह जीवन से बहुत दूर रहा करती थी। उसे जीवन के किसी आदर्श और काम से कोई मतलब या संसर्ग नहीं रहता था; परन्तु अब नित नई घटनाएँ उसकी आँखों के सामने और उसकी सहायता से होती थीं, जिसका परिणाम यह हुआ था कि अब उसके हृदय में एक परेशानी रहने लगी थी, जिसमें कभी उसे अपने ऊपर अविश्वास होता था, तो कभी सन्तोष और कभी घबराहट और कभी दुःख होने लगता था।

मा को अपने चारों ओर का दृश्य धीरे-धीरे चलता हुआ लग रहा था। आकाश में भूरे-भूरे बादल एक-दूसरे का पीछा करते हुए दौड़ रहे थे। सड़क के दोनों ओर के भींगे हुए वृक्ष अपने नंगे सिरों को हिलाते हुए पानी के छींटे उड़ा रहे थे। चलते-चलते छोटी-छोटी पहाड़ियाँ नजर आती थीं जो दौड़ती हुई आँखों के सामने फैल जाती थीं। बादलों से घिरा हुआ दिन भी मानों सूर्य से मिलने के लिए दौड़ रहा था और उसे हर तरफ खोज रहा था।

गाड़ीवान की बातें, घोड़ों की घण्टियों की टन्-टन् और पवन की सन्-सन् पोष में

लरजते हुए एक क्रूर चश्मे के पानी के प्रवाह की अप्रिय ध्वनि से मिल रही थी जो धीरे-धीरे बहता हुआ मानों हवा से झगड़ रहा था।

'अमीरों को स्वर्ग में भी कम आराम लगता है। हाँ भैया, दुनिया का यही हाल है। अमीर हमारे पीछे पड़ते हैं तो भी सरकार के अधिकारी उन्हीं का साथ देते हैं।' गाड़ीवान अपनी जगह पर झूमता हुआ कह रहा था।

अड्डे पर पहुँचकर गाड़ीवान घोड़े खोलता हुआ मा से निराश स्वर में बोला—लाओ, पैसे दो। मैया, एक बार जी भरके पीने के लिए तो दे ही देना!

मा ने उसे एक रुपया निकालकर थमा दिया, जिसे हथेली पर उछालता हुआ वह कहने लगा—इसमें बारह आने की शराब पिऊँगा और चार आने का खाना खाऊँगा।

तीसरे पहर मा की गाड़ी निकोल्स्क के कस्बे में पहुँची। मा बहुत थक गई थी और ठण्ढ से ठिठुरी जा रही थी। अस्तु, गाड़ी से उतरकर वह फौरन ही एक चाय की दूकान में घुस गई और दूकानदार से चाय लाने को कहा। मा ने अपना भारी बैग तिपाई के नीचे रख लिया और बैठकर खिड़की में से बाहर मैदानों की पीली कुचली हुई घास और टाउनहाल की लम्बी-ऊँची और पुरानी अट्टालिका की तरफ देखने लगी। मैदान में बहुत-से सूअर इधर-उधर घूम रहे थे और टाउनहाल की सीढ़ियों पर एक गंजे सिर और पतली दाढ़ी का किसान बैठा हुआ चिलम पी रहा था। ऊपर आकाश में काले-काले बादलों का एक बड़ा जमघट इकट्ठा हो रहा था, जिससे बाहर का दृश्य आनन्द-पूर्ण, उदास और जी उकतानेवाला लगता था, मानों जीवन में मुँह ढाँक लेने का प्रयत्न कर रहा था।

एकाएक कस्बे का दारोगा घोड़ा दौड़ाता हुआ आया और टाउनहाल की सीढ़ियों के पास रुककर, हवा में चाबुक घुमाता हुआ उस किसान पर चिल्लाया। उसके चिल्लाने की आवाज आकर मा की खिड़की के शीशों से टकराई। परन्तु उसका अर्थ मा की समझ में नहीं आ सका। किसान उठा और उसने हाथ उठाकर किसी चीज की तरफ इशारा किया। सवार घोड़े की पीठ पर से कूदकर जमीन पर उतर आया और मुड़कर घोड़े की लगाम किसान की तरफ फेंककर लोहे की सलाख पकड़ता हुआ धीरे-धीरे सीढ़ियों पर चढ़ गया और टाउनहाल के द्वार के पास पहुँचकर अदृश्य हो गया।

फिर चारों तरफ शान्ति का साम्राज्य हो गया। केवल घोड़ा खड़ा-खड़ा अपने नालों से जमीन की मिट्टी कुरेद रहा था।

इतने में एक लड़की चाय पीने के कमरे में घुसी। एक छोटी पीले रङ्ग की चुनरी उसके कन्धों पर पड़ी थी। उसका चेहरा गोल था और उसकी आँखों में दया थी। हाथों में उसके टूटे किनारों की तश्तरियों से भरा हुआ एक थाल था, जिसके बोझ को सँभालने के प्रयत्न में वह अपने होंठ चबा रही थी। उसने सिर झुकाकर मा को प्रणाम किया। मा ने स्नेहपूर्ण शब्दों में उससे पूछा—कैसी हो, प्यारी लड़की!

'धन्यवाद, आप तो अच्छी तरह हैं!'

फिर तश्तरियाँ मा के सामने रखी हुई मेज पर लगाते हुए उसने उत्साह से कहा—अभी-अभी एक चोर पकड़ा गया है। लोग उसको पकड़कर यहीं ला रहे हैं।

'हाँ! कैसा चोर है!'

'यह तो मैं नहीं जानती।'

'उसने क्या किया था?'

'यह भी मैं नहीं जानती। मैंने केवल इतना सुना है कि एक चोर पकड़ा गया है। टाउनहाल का चौकीदार दौड़ता हुआ दारोगा के पास आया था और चिल्लाकर कह रहा था—उसको पकड़ लिया है। यहीं ला रहे हैं।'

मा ने खिड़की में से बाहर की तरफ देखा। बहुत-से किसान मैदान में जमा हो रहे थे—कुछ धीरे-धीरे जा रहे थे और कुछ जल्दी-जल्दी अपनी बण्डियों के बटन लगाते हुए लपके आ रहे थे। सब-के-सब जाकर टाउनहाल की सीढ़ियों पर रुक गये और वहाँ खड़े होकर अपनी बाईं तरफ को देखने लगे। चारों तरफ विचित्र शान्ति विराज रही थी। लड़की भी जाकर सड़क की तरफ की खिड़की पर खड़ी हो गई थी और बाहर की तरफ देख रही थी। वह भी एकाएक कमरे में से निकलकर धड़ाम से द्वार बन्द करती हुई उधर ही को भागी। मा एकाएक धड़ाका होने से काँपी और बेग को ढकेलकर तिपाई के नीचे रखकर कन्धों पर शाल डालती हुई, द्वार की ओर लपकी। उसके मन में भी दौड़कर उधर ही जाने की इच्छा हुई, जिधर लोग इकट्ठे हो रहे थे। परन्तु उसने अपने ऊपर काबू रखा और वह दौड़ी नहीं।

ज्योंही मा टाउनहाल के पास पहुँचकर उनकी सीढ़ियों पर चढ़ी, वैसे ही ठण्डी और तेज वायु का एक जोर का थपेड़ा उसके मुँह और छाती पर लगा, जिसने उसे अवाक् कर दिया और उसके पैर थरथरा दिये। देखती क्या है कि सामने के मैदान में राइविन चला आ रहा है। उसके दोनों हाथ उसकी पीठ के पीछे बँधे हुए थे और उसके दोनों ओर पुलिस के दो सिपाही अपनी लाठियाँ जमीन पर बजाते हुए चल रहे थे सीढ़ियों पर खड़ी हुई भीड़ चुपचाप उसकी तरफ देख रही थी।

मा यह बिलकुल भूलकर कि उसकी हरकत का परिणाम क्या हो सकता है, राइविन की तरफ घूरने लगी। राइविन ने कुछ कहा। मा ने उसकी आवाज सुनी, परन्तु मा के कानों तक उसके शब्द नहीं पहुँच सके, जिससे मा का हृदय शून्य और अन्धकारपूर्ण ही रहा। वह बेहोश-सी खड़ी रह गई।

कुछ क्षण के बाद होश आने पर मा ने एक गहरी साँस ली और देखा कि चौड़ी और हल्की दाढ़ी का एक किसान पास ही में सीढ़ियों पर खड़ा-खड़ा उसकी ओर अपनी नीली-नीली आँखों से घूर रहा है। मा सिटपिटाकर खाँसती हुई अपनी गर्दन मलने लगी और डरी हुई उस किसान से पूछने लगी—क्या मामला है?

'आँखें नहीं हैं। देख लो।' इतना कहकर वह किसान मुँह फेरकर चल दिया और एक दूसरा किसान आकर उसके पास खड़ा हो गया।

'अरे, चोर है। कैसा भयंकर है!' किसी स्त्री की आवाज आई।

पुलिस के सिपाही अपनी तरफ बढ़ती हुई भीड़ की तरफ बढ़ रहे थे। इतने में राइविन की भारी आवाज सुनाई दी—किसानों, मैं चोर नहीं हूँ। मैं किसी के घर में नकब लगानेवाला या किसी का घर फूँक देनेवाला नहीं हूँ। मैं असत्य के विरुद्ध लड़नेवाला हूँ। उसी अपराध के लिए मुझे पकड़ा गया है। तुमने भी उस सत्य साहित्य की बातें जरूर सुनी होंगी, जिसमें हमारे किसानों के जीवन के सम्बन्ध में सच्ची-सच्ची बातें लिखी रहती हैं? बस, उन्हीं पुस्तकों का प्रचार करने के अपराध में मुझे यह दण्ड मिल रहा है। मैंने ही वे किताबें लोगों में बाँटी थीं।

भीड़ घिरकर राइविन के निकट आ गई। उसकी आवाज सुनकर मा को कुछ ढाढ़स बँधा।

'सुनते हो?' एक किसान ने धीरे से कन्हियाते हुए अपनी नीली आँखोंवाले पड़ोसी से कहा। परन्तु उसने कोई उत्तर नहीं दिया और फिर सिर उठाकर चुपचाप मा के चेहरे की तरफ घूरने लगा। दूसरे किसान ने भी उसी तरह मा की तरफ देखा। दूसरा किसान नीली आँखोंवाले से उम्र में कुछ छोटा था। दोनों किसान फिर सीढ़ियों की तरफ मुड़कर खड़े हो गये।

'डरते हैं!' मा ने अपने मन में सोचा। फिर मा ने ध्यान से मैदान की तरफ देखा। ढाल की ऊँचाई पर से राइविन का चेहरा और उसकी चमकती हुई आँखें मा को साफ दिखाई दे रही थीं। मा की इच्छा हुई कि राइविन भी उसको देख ले। अस्तु, वह अपने पञ्जों पर खड़ी होकर गर्दन उचकाकर उसकी तरफ देखने लगी।

लोग चुपचाप राइविन की तरफ क्रोध और अविश्वास से देख रहे थे। भीड़ के पिछले भाग में सिर्फ कुछ घुस-पुस हो रही थी।

'किसानो!' राइविन ने जोर से चिल्लाकर एक विचित्र स्वर में कहा—इन पर्चों और पुस्तकों में लिखी हुई बातों पर विश्वास करो! मुझे तो शायद अब उनके प्रचार के लिए मौत की सजा हो जायगी। मुझे खूब पीटा गया है, और तरह-तरह के कष्ट देकर मुझसे पूछा जा रहा है कि वह सारा साहित्य मेरे पास कहाँ से आता था, अभी मुझे और भी पीटा जायगा, क्योंकि जिस साहित्य को मैं बाँटता था उसमें सत्य है। सच्ची दुनिया और सत्य मार्ग हमें अपने जीवन से अधिक प्यारा होना चाहिए। भाइयो, यही मेरा तुम लोगों से कहना है।

'यह क्यों ऐसी बातें कर रहा है?' सीढ़ियों के पास खड़ा हुआ एक किसान पूछने लगा। नीली आँखोंवाले ने उत्तर दिया—जो होना होगा सो होगा! मौत के मुँह से तो वह अब बच ही नहीं सकता। और मौत दो बार आती नहीं! अस्तु, वह कहने से भी क्यों जाय?

इतने में दारोगा शराब के नशे में झूमता हुआ टाउनहाल की सीढ़ियों पर दिखाई दिया। वह वहीं से चिल्लाकर बोला—इतनी भीड़ यहाँ क्यों है? कौन बोल रहा है?

यह कहता हुआ सीढ़ियों पर से नीचे की तरफ वह झपटा और राइबिन के पास पहुँचकर उसके सिर के बाल पकड़कर हिलाता हुआ बोला—तू बोल रहा था, क्यों बदमाश ! तू बोल रहा था, हैं ! क्या बक रहा था !

भीड़ छँटकर एक तरफ को हो गई और खामोश रही। मा ने निस्सहाय दुःख से सिर झुका लिया। किसी किसान ने गहरी साँस ली। राइबिन ने फिर कहा—देखो ! देखो ! देखो भाइयो !

'चुप !' कहकर दारोगा ने उसके मुँह पर जोर से एक थप्पड़ जमाया, जिससे राइबिन का सिर घूमने लगा।

'मनुष्य को पहले बाँध लेते हैं और फिर उसे मारते हैं ! निःसहाय बनाकर उससे जैसा चाहते हैं, व्यवहार करते हैं !' भीड़ में से किसी ने कहा।

'सिपाहियों, ले जाओ इसको यहाँ से ! लोगों को भी भगा दो यहाँ से !' दारोगा ने राइबिन के सामने उछल-उछलकर और कूद-कूदकर उसके मुँह, छाती और पेट पर वार करते हुए हुक्म दिया।

'इस तरह उसे मत मारो !' भीड़ में से किसी की सुस्त आवाज आई।

'क्यों मारते हो उसे !' दूसरी आवाज ने उसका साथ दिया।

'निकम्मा, काहिल, जानवर !' तीसरी आवाज ने कहा।

'चलो !' नीली आँखों का किसान सिर हिलाता हुआ बोला ; और साधारण चाल से वह और उसका साथी दोनों टाउनहाल की तरफ चले। मा ने स्नेहपूर्ण नेत्रों से उनकी ओर देखते हुए सन्तोष से एक निःश्वास लिया। दारोगा फिर धम-धम करता हुआ दौड़कर सीढ़ियों पर चढ़ गया और वहाँ से घूँसा दिखाकर लोगों को धमकाता हुआ चिल्लाया—इधर लाओ, सिपाहियो, इधर लाओ !

'नहीं ! नहीं !' भीड़ में से एक आवाज जोर से गूँजती हुई आई। मा ने घूमकर देखा। वह आवाज नीली आँखोंवाले किसान की थी। वह कह रहा था—भाइयो ! उसकी इस प्रकार दुर्गति मत होने दो ! उसको वहाँ ले जाकर वे लोग पीट-पीटकर मार डालेंगे, और फिर कह देंगे कि हम लोगों ने उसे मार डाला। उनको ऐसा मत करने दो !

'किसानो !' राइबिन दारोगा की आवाज अपनी आवाज में डुबाता हुआ गरजा—भाइयो, तुम्हें मालूम है, तुम्हारे जीवन की क्या दुर्दशा है ? जानते हो, किस तरह तुम्हें लूटा जा रहा है, किस तरह तुम्हें ठगा जा रहा है, किस तरह तुम्हारा खून चूसा जा रहा है ? तुम्हीं सब चीजों की जड़ हो ! सब कुछ तुम्हीं पर निर्भर है। दुनिया में जो कुछ शक्ति है, उसके मूल तुम हो—तुम्हीं सर्वशक्ति महाशक्ति हो ! परन्तु तुम्हारे क्या अधिकार हैं ? सिर्फ तुम्हें भूखों मरने का अधिकार है, बस एक यही अधिकार तुम्हें दिया गया है !

'बिलकुल सत्य कह रहा है, भाइयो !' कुछ आवाजों ने चिल्लाकर कहा।

'बड़े थानेदार को बुलाओ ! कहाँ हैं बड़े थानेदार ?'

'एक सवार उन्हें बुलाने के लिए गया है !'

'हमें अधिकारियों को बुलाकर लाने की क्या गरज है।'

जैसे-जैसे भीड़ बढ़ रही थी, वैसे-वैसे शोर भी बढ़ रहा था।

'बोलो ! बोलो ! कहे जाओ। हम लोग तुम्हें पिटने नहीं देंगे !'

'सिपाहियो, इसके हाथ खोल दो !'

'नहीं, भाइयो, इसकी जरूरत नहीं है !'

'खोल दो ! जल्दी खोलो !'

'देखो भाइयो, ऐसा कोई काम मत कर बैठना जिसके लिए बाद में पछताना पड़े !'

'मेरे हाथ बँधे होने से मुझे बड़ा दुःख होता है।' राइबिन ने दूसरी सब अवाजों के ऊपर गूँजती हुई आवाज में कहा—भाइयो ! मैं भागूँगा नहीं, मैं अपने सत्य मार्ग से अब मुँह नहीं मोड़ सकता। मेरे हृदय में सत्य बस गया है।

कुछ आदमी छँटकर भीड़ से अलग हो गये थे और अलग-अलग छोटे-छोटे गोल बनाये गम्भीर चेहरों से सिर हिलाते हुए आपस में कुछ बात-चीत कर रहे थे। कुछ लोग एक तरफ खड़े मुस्करा रहे थे। जोश में भरे हुए लोग जल्दी-जल्दी अपने कपड़े पहनते हुए मैदान की तरफ दौड़ते चले आ रहे थे। काले-काले झागों की तरह उफनते हुए वे राइबिन के चारों ओर एकत्र हो रहे थे और वह उनके बीच में खड़ा-खड़ा झूम रहा था। अपने हाथ जो अब खुल गये थे, सिर के ऊपर उठाकर झूमता हुआ वह भीड़ के बीच में से चिल्लाया—धन्यवाद है, मेरे लोगो ! धन्यवाद है तुम्हें ! मैंने तुम्हारे ही लिए अपने-आपको संकट में डाला है। तुम्हारा जीवन सुधारने के लिए। इतना कहकर उसने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरा और अपना एक खून से सना हुआ हाथ ऊँचा करके बोला—यह देखो, मेरा रक्त ! यह सत्य के लिए बह रहा है !

भीड़ उसकी वीरतापूर्ण बातों को, जैसी उसने आज तक पहले कभी नहीं सुनी थी, एक लोभी की तरह ध्यानपूर्वक सुन रही थी और बीच-बीच में जोर से चिल्लाकर और फिर चुप रहकर उसकी बातों का उत्तर देती थी। मा बिना विचारे ऊपर की तरफ चढ़ने लगी, क्योंकि नीचे पहुँचकर भीड़ में घिर जाने से माइखेल का चेहरा देखना उसे असंभव हो गया था। एक स्पष्ट आनन्द उसके हृदय में हिलोरें लेता हुआ उसे पुलकित कर रहा था।

'किसानो ! उस सत्य साहित्य की सदा खोज में रहना, और उसे ढूँढ़-ढूँढ़कर पढ़ना। सरकारी अधिकारियों और पण्डितों-पुजारियों की बातों में न आ जाना कि वे लोग जो हमारे लिए यह सत्य साहित्य भेजते हैं, नास्तिक हैं या बदमाश हैं। सत्य छिपा-छिपा पृथ्वी पर घूम रहा है और लोगों के हृदयों में घुस-घुसकर उसमें प्रकाश करने का प्रयत्न कर रहा है। परन्तु हमारे अधिकारियों को वह आग में तपती हुई उस छुरी की तरह लगता है, जो—वे डरते हैं, कहीं तप जाने पर उन्हीं की

गर्दन न काटे। अस्तु, वे सत्य को ग्रहण करने से डरते हैं। हमारा सत्य तुम्हारा सच्चा मित्र है, और अधिकारियों का शत्रु है—इसी लिए तो वह छिपा-छिपा रहता है।'

'ऐसा ही है! सत्य वाणी बोल रहा है!' नीली आँखोंवाला किसान चिल्लाया।

'अरे, भाई! तुम्हें अधिकारी मार डालेंगे! शीघ्र मार डालेंगे!'

'किसने तुम्हारी चुगली उनसे की?'

'पुजारी ने!' एक सिपाही ने उत्तर में कहा।

पुजारी के लिए दो किसानों के मुँह से भयंकर गालियाँ निकलीं।

'खबरदार, खबरदार!' एक दबी हुई आवाज ने चेतावनी दी।

बड़ा थानेदार भीड़ में घुस रहा था। उसका कद लम्बा, बदन गठीला और मुँह गोल और लाल था, उसके सिर पर टोपी एक तरफ़ को झुकी हुई लगी थी और उसकी मूँछें भी एक ऊपर को चढ़ी हुई और दूसरी नीचे को झुकी हुई टेढ़ी-मेढ़ी होने से उसकी आकृति टेढ़ी लगती थी, उसके मुख पर एक निर्जीव मरी-सी मुस्कान थी, जिससे उसकी मुखाकृति और भी अप्रिय लगती थी। उसका बायाँ हाथ तलवार की मूठ पर था और दाहना हवा में हिल रहा था। उसके भारी कदमों की आवाज दूर से सुनाई देती थी। भीड़ ने उसके सामने से हटते हुए उसे रास्ता दिया और एक खिन्न और कुचला हुआ भाव लोगों के चेहरों पर दिखाई दिया। एकाएक शोरगुल बन्द हो गया, मानों वह पाताल में समा गया हो।

'यह क्या गड़बड़ है?' थानेदार राइबिन के सामने खड़े होकर उसकी तरफ़ गौर से देखते हुए बोला—इसके हाथ क्यों नहीं बँधे हैं? सिपाहियो, बाँधो इसे फौरन। उसकी आवाज ऊँची, गूँजती हुई, परन्तु रसहीन थी।

'हाथ तो इसके हमने पहले ही बाँध दिये थे। परन्तु लोगों ने खोल डाले।' एक सिपाही ने थानेदार से कहा।

'लोगों ने खोल डाले! वे लोग कौन हैं?' थानेदार ने अपने सामने अर्ध-मण्डलाकार खड़ी हुई भीड़ की ओर देखते हुए कहा। उसकी आवाज वैसी ही रसहीन और रूखी थी, न तो वह ऊँची थी और न नीची। उसने फिर पूछा—लोग क्या बला हैं? उन्हें ऐसा करने का क्या अधिकार है? यह कहते उसने अपनी तलवार की मूठ का नीली आँखोंवाले किसान की छाती पर एक ठोसा मारा और बोला—तुम हो लोगों के प्रतिनिधि, क्यों चुमाकोव? और भी है कोई? क्यों मिशिन, तुम भी हो क्या? कहते हुए उसने दाहिने हाथ से किसी की दाढ़ी खींची।

'भाग जाओ कुत्तो!' फिर वह जोर से भीड़ पर चिल्लाया।

थानेदार की आवाज और चेहरे से किसी किस्म का जोश या धमकी प्रकट नहीं हो रही थी।

वह भीड़ को, श्मशान शान्ति में एक खिलौने की तरह बोलता हुआ, अपने लम्बे

और बलिष्ठ हाथों से पीछे की तरफ ढकेल रहा था। उसके सामने की भीड़ का अर्ध-मण्डल फैलकर बड़ा होने लगा था और सिर झुकने और फिरने लगे थे।

'क्यों?' उसने सिपाहियों से कहा—क्या देख रहे हो? बाँधते क्यों नहीं इसको! फिर उसने गालियाँ बकते हुए राइविन की तरफ घूमकर देखा और उससे बेफिक्री में कहा—हाथ पीठ के पीछे कर लो। सुनता है?

'मैं अपने हाथ बँधाऊँगा नहीं।' राइविन ने कहा—मैं भागूँगा नहीं। न मैं किसी पर वार करूँगा! फिर मेरे हाथ बाँधने की क्या जरूरत है?

'क्या कहा?' थानेदार ने उसकी तरफ बढ़ते हुए चिल्लाकर पूछा।

'तुम लोगों पर बड़ा अत्याचार करते हो, पशुओ!' राइविन ने ऊँचे स्वर से कहा—तुम्हारा दिन भी आ रहा है, जब तुम्हारे जुल्मों का बदला लोग तुमसे ब्याज सहित ले लेंगे!

थानेदार राइविन के सामने आकर खड़ा हो गया था और उसका ऊपर का होंठ ऊपर को खिंच गया था। एकाएक वह एक कदम पीछे की तरफ हटा और टनटनाती हुई आवाज में आश्चर्य से राइविन पर गरजकर बोला—हूँ! बदमाश! क्या कहता है! लोग बदला लेंगे? लोग? यह कहते हुए उसने तड़ाक से एक जोर का तमाचा राइविन के मुँह पर जमाया।

'मुझे मार सकते हो! मगर तुम सत्य को नहीं मार सकते!' राइविन ने उसकी तरफ बढ़ते हुए कहा—मगर तुझे मुझको इस तरह पीटने का अधिकार नहीं है, कुत्ते!

'अच्छा? मैं तुझे पीट नहीं सकता? क्यों?' कहते हुए थानेदार ने दाँत पीसकर फिर राइविन के सिर पर एक बड़े जोर का घूँसा चलाया, परन्तु राइविन ने फुर्ती से सिर बचा लिया जिससे थानेदार का वार चूक गया, और वह गिरते-गिरते बचा। इस पर किसी ने भीड़ में से थानेदार पर ठट्ठा लगाया। राइविन ने क्रोध से चिल्लाकर थानेदार से कहा—मुझे मारने की हिम्मत मत करना, शैतान के बच्चे! मैं तुमसे कमजोर नहीं हूँ। खबरदार!

थानेदार ने घूमकर देखा तो लोग उसकी तरफ बढ़ रहे थे और क्रोध से उनके चेहरे लाल थे।

'निकटा!' थानेदार पीछे की तरफ मुड़कर चिल्लाया—निकटा, किधर है? एक नाटे कद का किसान भीड़ में से निकलकर थानेदार के पास आया। वह जमीन की तरफ सिर झुकाये देख रहा था और उसके बाल बिखरे हुए थे।

'निकिटा!' थानेदार ने मूँछें मरोड़ते हुए उस किसान से कहा—लगा तो इस बदमाश की कनपटी पर एक करारा घूँसा—खूब जोर से।

किसान राइविन की तरफ बढ़ा और उसके सामने रुककर उसने घूँसा उठाया। किसान के चेहरे में आँखें गड़ाकर घूरते हुए राइविन ने लड़खड़ाती जबान से कहा—देखो, देखो लोगो, किस तरह हम पर जुल्म करनेवाले हमारे भाइयों के हाथों से ही

मरवाते हैं। देखो ! देखो ! जरा सोचो ! यह हमारा भाई है। फिर भी यह मुझे मारने के लिए तैयार है। देखते हो ?

किसान ने हाथ उठाया और सुस्ती से माइखेल के मुँह पर एक घूँसा मारा।

'अरे, निकिटा ! भगवान् को मत भूल जा !' चारों तरफ से दबी हुई आवाजें भीड़ में से आईं।

'मार ! और मार !' किसान को पीछे से धकियाता हुआ थानेदार चिल्लाया।

परन्तु किसान एक तरफ हटकर खड़ा हो गया और सिर झुकाकर गुस्से से बोला—बस !' अब मैं नहीं मारूँगा।

'क्या ?' थानेदार ने आश्चर्य से कहा और उसका चेहरा क्रोध से काँप गया। उसने जमीन पर जोर से पैर पटके और गालियाँ देता हुआ एकाएक स्वयं राइबिन पर झपटा और उस पर सड़ासड़ मुक्कों की बौछार शुरू कर दी। राइबिन के पैर लड़खड़ाये और उसके हाथ हवा में हिले। मारते-मारते क्षण भर में थानेदार ने उसे जमीन पर गिरा दिया और उसके चारों तरफ गुर्रा-गुर्राकर उछलता हुआ वह उसकी छाती, कोख और सिर पर लातों पर लातें जमाने लगा।

भीड़ में विरोध की एक गुन-गुनाहट हुई और वह हिलती हुई थानेदार की तरफ बढ़ी। जैसे ही उसने भीड़ को अपनी तरफ बढ़ता देखा, वह कूदकर म्यान से तलवार खींचकर एक तरफ खड़ा हो गया।

'अच्छा तुम्हारी यह मन्शा है, बदमाशो ! बलवा करना चाहते हो क्यों ?'

उसकी आवाज टूट गई थी और थरथरा रही थी जिससे साफ समझ में नहीं आता था कि वह क्या कह रहा है। आवाज टूटने के साथ ही उसकी हिम्मत भी टूट गई थी। उसने अपने कन्धे ऊपर की तरफ उठा लिए थे और झुककर चारों तरफ देखता हुआ और पैरों से जमीन टटोलता हुआ वह सँभल-सँभलकर पीछे की तरफ हट रहा था। इस प्रकार पीछे को हटते हुए क्रोध से, भर्राई हुई आवाज में वह चिल्लाकर बोला—अच्छा ! अच्छा ! ले जाओ छुड़ा कर उसको ! मैं लौटा जाता हूँ ! मगर नीच कुत्तो ! यह याद रखना कि जिसको तुम छुड़ाये लिए जाते हो, वह राजनैतिक अपराधी है ! हमारे शाहंशाह जार का विरोधी है। वह देश में विद्रोह की आग जगानेवाला है ! समझते हो वह शाहंशाह जार के विरुद्ध सिर उठानेवाला है। और तुम छुड़ाकर ले जानेवाले भी उसी की तरह विद्रोही हो ! याद रखना ! याद रखना !...

मा निश्चेष्ट और अवाक् इस तरह मूर्ख की भाँति आँखें फाड़े खड़ी थी, मानों वह खड़ी-खड़ी सो रही हो या कोई मूर्ति हो। भीड़ की चिढ़ी हुई, क्षुब्ध और क्रोधित आवाजें उसके दिमाग में मक्खियों के झुण्डों की तरह भिनभिनाती हुई आ रही थीं।

'उसने अपराध किया है तो उस पर अदालत में मुकदमा चलाओ !'

'हाँ ! उसको मारते क्यों हो !'

'माफ कर दो उसको, हुजूर ! माफ कर दो !'

'यह खूब रहा ! इस तरह मारने का कौन-सा कानून है !'

'हाँ जी, यह कैसे हो सकता है ! ।अगर इसी तरह सबको पीटा जाने लगा तब तो हो चुका ।'

'शैतान के बच्चे ! बड़े दुष्ट हैं ! बड़े अत्याचारी हैं !'

भीड़ अब दो भागों में बँट गई थी। भीड़ का एक भाग जो थानेदार के चारों तरफ था, चिल्लाता हुआ उसका उत्साह बढ़ाने का प्रयत्न कर रहा था ; और दूसरा भाग जो संख्या में कम था, पिटनेवाले आदमी के चारो तरफ खड़ा हुआ क्रोध से गुनगुना रहा था। कुछ आदमियों ने राइविन को पकड़कर जमीन पर से उठाया और खड़ा किया। खड़े होते ही सिपाहियों ने फिर उसके हाथ बाँधने का प्रयत्न किया।

'ठहरो-ठहरो, शैतान के बच्चों !' लोग सिपाहियों पर चिल्लाये। राइविन ने अपने मुँह और दाढ़ी में से निकलते हुए खून को पोंछा और अपने चारों तरफ सिर घुमाकर चुपचाप एक बार देखा। एकाएक उसकी दृष्टि मा के चेहरे पर पड़ी जिससे मा चौंक पड़ी और हाथ हिलाती हुई उसकी तरफ बढ़ी। परन्तु उसने मुँह फिरा लिया था। कुछ क्षण के बाद फिर उसकी आँख घूमकर मा के चेहरे पर आ लगीं और मा को लगा कि वह अपना शरीर फैलाता हुआ सिर ऊँचा उठा रहा था और उसके खून से सने हुए गाल काँप रहे थे।

'क्या उसने मुझे नहीं पहिचाना ! शायद पहचान लिया है !' मा ने यह सोचते हुए उसकी तरफ देखा और अपना सिर हिलाया। फिर एक दुःख और सुखपूर्ण भाव से उसे रोमांच होने लगा। इतने में उसने देखा कि नीली आँखोंवाला किसान भी राइविन के पास खड़ा हुआ उसी की तरफ देख रहा है। आँखों से आँखें मिलते ही मा को होश आया कि वह अपने आपको बहुत खतरे में डाल रही थी।

'मैं यहाँ क्या कर रही हूँ ! मैं भी पकड़ ली जाऊँगी।' मा सोचने लगी।

उस किसान ने राइविन से कुछ कहा, जिसके उत्तर में राइविन ने सिर हिला दिया।

'कोई चिन्ता नहीं है।' फिर राइविन काँपती हुई, परन्तु साफ और वीरतापूर्ण आवाज में बोला—मैं संसार में अकेला नहीं हूँ। मुझे पकड़ लिया है तो क्या ! सत्य को वह गिरफ्तार नहीं कर सकते। मेरी जगह पर लोगों में अब मेरी याद रहेगी। एक घोंसला उजड़ गया तो क्या सारे पक्षी नष्ट हो जायँगे ?

'यह राइविन मेरे लिए कह रहा है।' मा ने उसकी बातें सुनकर तुरन्त ही निश्चय कर लिया।

'एक घोंसला उजड़ जाने पर लोग सत्य काम के लिए दूसरे घोंसले बनायेंगे ! और एक दिन आयेगा जब उन घोंसलों में से निकल-निकलकर गरुड़ स्वतंत्र वायु में उड़ेंगे ! लोग आजाद हो जायेंगे !'

एक स्त्री एक बर्तन में पानी भर लाई थी, और आहें भरती हुई और सिसकियाँ लेती हुई राइविन का मुँह धो रही थी। उसका मन्द और करुण स्वर भी माइखेल के

शब्दों से मिल रहा था, जिससे मा को समझ में राइबिन के शब्दों का अर्थ अच्छी तरह न आ सका। इतने में थानेदार के साथ किसानों की एक भीड़ आई और वह आकर उनके सामने खड़ी हो गई। भीड़ में से किसी ने जोर से चिल्लाकर कहा—चलो, एक आदमी को तो मैं गिरफ्तार करता हूँ दूसरा कौन मेरे साथ आता है!

इतने में थानेदार की आवाज फिर सुनाई दी। वह अब बिल्कुल बदलती हुई थी; यद्यपि उसमें खिसियानापन साफ तौर पर था।

'मैं तुम्हें मार सकता हू! मगर तू मुझ पर हाथ नहीं उठा सकता! ऐसी कभी हिम्मत भी न करना। समझता है बेवकूफ!'

'हाँ! अच्छा! जनाब कौन हैं! देवता!' चारों तरफ से, भीड़ में से आवाज आई और उन आवाजों में राइबिन का स्वर डूब गया।

'बहस मत करो, काका! तुम अधिकारियों के विरुद्ध सिर उठाते हो!'

'नाराज मत हो, हुजूर! इस आदमी ने तो अक्ल गुमा दी है।'

'चुप रहो बेवकूफ!'

'अभी तेरा वे शहर के लिए चालान कर देंगे!'

'शहरों में यहाँ से भी अधिक और बड़े कानून हैं।'

भीड़ में से शान्ति के लिए प्रार्थना करनेवाली आवाजें आ रही थीं, जो सब मिलकर एक बड़ी मोटी बड़बड़ाहट बन गई थीं और जो निराशा और दया में डूबी हुई थीं। सिपाही राइबिन को लिये टाउनहाल की सीढ़ियों पर चढ़ रहे थे। द्वार के पास पहुँचकर वे उसमें घुसे और ओझल हो गये। भीड़ छट-छटकर जल्दी-जल्दी इधर-उधर होने लगी थी। मा ने देखा, नीली आँखोंवाला किसान मैदान के उस ओर खड़ा-खड़ा मा की तरफ तिरछी नजरों से देख रहा था। उसको देखते ही मा के पाँव डगमगा गये। और निर्बलता और अकेलेपन के एक दुखी भाव ने आकर मा के हृदय को दबोचा।

'मुझे यहाँ से अभी जाना नहीं चाहिए।' मा सोचने लगी—नहीं! और यह विचार करती हुई वह चहारदीवारी की सलाखें पकड़कर वहाँ ठहर गई।

थानेदार ने टाउनहाल की सीढ़ियों पर पहुँचकर फिर पहले ही के-से रूखे और निर्जीव स्वर मे कहा—बेवकूफो! बदमाशो! दमड़ी भर की अकल तुम्हारी गाँठ में नहीं है और टाँग अड़ाते हो ऐसे मामले में। सरकारी मामले में! जंगली जानवरो! मुझे दुआ दो! मेरी सज्जनता के लिए मेरे पाँवों पर अपने सिर टेको! मेरे जरा-से इशारे पर तुम सब के सब अभी गिरफ्तार करके जेल में चक्की पीसने के लिए भेजे जा सकते हो।

कुछ किसान नंगे सिर खड़े-खड़े चुपचाप उसकी बातें सुन रहे थे। सूर्यास्त हो चला था। बादल घिर रहे थे। नीली आँखोंवाला किसान सीढ़ियों की तरफ बढ़ता हुआ एक आह भरकर कहने लगा—गाँवों का यह हाल है!

'हाँ' मा ने धीरे से उत्तर में कहा।

उसने मा की तरफ घूरकर देखा।

'तुम क्या करती हो ?' उसने फिर जरा ठहरकर पूछा।

'मैं फीते बनानेवाली स्त्रियों से फीते खरीदती फिरती हूँ। कपड़े का व्यापार भी करती हूँ।'

किसान धीरे-धीरे अपनी दाढ़ी खुजलाने लगा। फिर मुँह उठाकर टाउनहाल की तरफ देखता हुआ उदासीन भाव से धीमी आवाज में बोला—इधर तो वैसा माल तुम्हें नहीं मिलेगा।

मा ने उसकी तरफ देखा और सराय की तरफ जाने का मौका देखने लगी। किसान का चेहरा विचारपूर्ण और सुन्दर था। उसकी आँखों में किसी गहरे दुःख की झलक थी। उसका कद लम्बा था और उसके कन्धे मजबूत और चौड़े थे। छींट की कमीज पर थीकरों का एक कोट और लाल गबरून की एक पतलून वह पहने हुए था। उसके पैरों में मोजे नहीं थे।

मा ने न जाने क्यों उसकी तरफ देखकर सन्तोष से एक निःश्वास ली। फिर एकाएक मानों अपनी अन्तरात्मा के आदेश से प्रेरित होकर वह उससे यह प्रश्न पूछ बैठी—क्या मैं आज की रात-भर तुम्हारे घर पर टिक सकती हूँ। अचानक यह प्रश्न उस किसान से पूछ बैठने पर उसे अपने ऊपर बड़ा आश्चर्य होने लगा और उसका शरीर चोटी से एड़ी तक सन्न होकर अकड़ने-सा लगा। उसने कठिनता से अपना सिर सीधा किया और साँस रोकते हुए चुपचाप किसान की तरफ टकटकी लगाकर देखा। तरह-तरह के बुरे विचार उसके मन में चक्कर लगा उठे थे—हाय, कहीं मैं सभी का सर्वनाश तो नहीं करे डालती हूँ, निकोले आइवानोविश, सोनयुशका इत्यादि सबका! हाय, न जाने अब मैं पाशा से मिल सकूँगी या नहीं! वे कहीं उसे मार डालें!...

मा का एकाएक प्रश्न सुनकर वह किसान चौंका, फिर चुपचाप जमीन की तरफ देखने लगा। फिर विचारते हुए उसने अपना कोट छाती पर मोड़ते हुए उत्तर दिया—रात ही भर ठहरोगी! अच्छा तो ठहर सकती हो। कोई हर्ज नहीं है! मगर मेरा घर बहुत छोटा है! मैं बड़ा गरीब आदमी हूँ!

'कोई चिन्ता नहीं है! मैं भी कोई शौकीन नहीं हूँ! मा ने बिना विचारे ही उसे उत्तर दिया।

'रात-भर के लिए तो तुम ठहर ही सकती हो।' किसान ने अपनी आँखों से मा के चेहरे की परीक्षा करते हुए दुहराया।

अँधेरा हो चला था। सूर्यास्त की लाली में उसकी आँखें मा को ठण्डी और चेहरा पीला लगा। मा ने घूमकर चारों तरफ एक दृष्टि दौड़ाई और मानों दुःख के बोझ से दबी हुई वह धीमी आवाज मे बोली—अच्छा, मैं अभी चलती हूँ! तुम मेरा बेग ले लो!

'बहुत अच्छा।' कहते हुए उस किसान ने कन्धे मटकाये और फिर अपना कोट मोड़ता हुआ धीरे से बोला—देखो! देखो! उसे ले जाने के लिए वह जा रही है गाड़ी।

कुछ ही देर में अब भीड़ बिखर चली थी—राइविन फिर टाउनहॉल की सीढ़ियों पर दिखाई दिया। उसके हाथ पीठ के पीछे बँधे हुए थे, और उसका सिर और चेहरा एक सफेद कपड़े में लिपटा हुआ था! उसे ढकेल-ढकेलकर नीचे खड़ी हुई एक गाड़ी की तरफ ले जाया जा रहा था, जिसमें ले जाकर उसे चढ़ा दिया गया।

'अलविदा, भाइयो!' शीत-पूर्ण संध्याकाल की लालिमा में उसकी आवाज गूँजती हुई सुनाई दी—सत्य साहित्य की खोज में रहना। मिलने पर उसको सँभालकर रखना, और जो मनुष्य तुम्हें सत्य बचन सुनायें, उनका विश्वास करना!' उनसे स्नेह रखना और उनकी बातें मानना! भाइयो, सत्य के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर देना।

'चुप रह, कुत्ते!' थानेदार ने डाँटकर उससे कहा—सिपाहियो, गाड़ी बढ़ाओ। मूर्ख कहीं का।

'तुम्हें किसके लिए रोना है! तुम्हारे जीवन में है ही क्या!'

गाड़ी चल दी। दोनों ओर दो सिपाही बैठे थे और उनके बीच में राइविन बैठा था, उदास स्वर से चिल्लाकर कहने लगा—किसानो, क्यों तुम भूखे जान गँवाते हो! उठो, स्वतंत्रता के लिए लड़ो! स्वतंत्रता तुम्हे रोटी देगी। स्वतंत्रता ही तुम्हें सत्य ज्ञान देगी!...अच्छा भाइयो, अलविदा!

गाड़ी की पहियों की खड़खड़ और घोड़ों की टापों की आवाज और पुलिस के अधिकारों की डाँट-डपट में राइविन की आवाज डूबी जा रही थी।

'हो गया किस्सा खत्म!' किसान ने सिर हिलाते हुए कहा—भैया, तुम जरा देर चाय की दूकान में ठहरना! मैं अभी आता हूँ।

इकतीसवाँ परिच्छेद

मा लौटी और चाय की दूकान में आकर सेमोवार के सामने मेज पर बैठ गई। वहाँ बैठकर उसने रोटी का एक टुकड़ा सामने रखी हुई रकाबी में से उठाया और उसको कुछ देर तक गौर से देखते रहने के बाद फिर धीरे से रकाबी में रख दिया। उसे अब भूख नहीं थी। उसके दिल में बड़ी बेचैनी थी, उसका सिर चकरा रहा था और कुछ बेहोशी-सी आ रही थी। उसे ऐसा लग रहा था मानों उसके हृदय का सारा रक्त सूख गया है। उसकी आँखों में उस नीले आँखोंवाले किसान की शक्ल समा रही थी, जिसका चेहरा न तो उसके हृदय में विश्वास ही उपजाता था और न उसका कोई भाव ही व्यक्त करता था। मा किसी कारण से अपने मन में यह मान लेना नहीं चाहती थी कि वह उसे धोखा देगा। परन्तु सन्देह अधमरे सर्प की तरह उसके हृदय में लोट रहा था।

'उस किसान ने मुझे भाँप लिया है!' मा को विचार होता था—ताड़ गया है! समझ लिया है! बार-बार यही विचार मँडराता हुआ उसके दिमाग में चक्कर लगा रहा था, जिससे उसे निराशा-सी होने लगी थी। उसके मन के भीतर की यह घबराहट और खिड़की के बाहर होनेवाले शोरगुल के स्थान पर एकाएक फैल जानेवाली निर्जीव खामोशी किसी आनेवाले खतरे की तरफ इशारा करती थी, जिससे उसके हृदय मे उठनेवाला अकेलेपन और अबलापन का भाव और भी तीखा बनकर उसके हृदय की उदासी बढ़ा रहा था।

इतने में छोकरी ने आकर द्वार पर से ही पूछा—क्या मैं आपके लिए खाने को एक रकाबी आमलेट लाऊँ?

'नहीं, धन्यवाद, मुझे आमलेट नहीं चाहिए। इस शोरगुल से मैं बहुत परेशान हो गई हूँ।'

छोकरी बढ़कर मेज के पास आ गई और डरी हुई आवाज से जल्दी-जल्दी कहने लगी—देखा, थानेदार ने उसे कितना मारा! मैं उसके पास ही खड़ी देख रही थी। सारे दाँत तोड़ डाले! उसने मुँह से खून थूका तो उसके सारे दाँत ही बाहर निकल पड़े, और उसके मुँह से रक्त की एक मोटी धार बँध गई। उसकी आँखें भी मार से इतनी सूज गई थीं कि दिखाई तक नहीं पड़ती थीं। वह कोलतार के कारखाने में काम करता था। पुलिस का दारोगा बैठा हुआ हमारी दूकान में शराब पी रहा है। नशे में चूर हो गया है। फिर भी 'विस्की, विस्की,' की धुन लगाये हुए है। लोग कहते हैं, उन लोगों का एक पूरा गिरोह था। यह दाढ़ीवाला उस गिरोह का सरदार था। तीन पकड़ गये हैं। परन्तु एक भाग गया है। एक शिक्षक भी पकड़ा गया है। वह भी इन्हीं में शरीक था। इस गिरोह के लोग ईश्वर को नहीं मानते और लोगों को गिरजों का माल

लूट लेने के लिए उकसाते हैं। ऐसे खराब लोगों का यह गिरोह था। फिर भी हमारे गाँव के किसानों में से कुछ को उस आदमी पर दया आ रही थी। कुछ किसान कह रहे थे कि उसे वहीं जान से मारकर खत्म कर डालना चाहिए। हमारे यहाँ ऐसे नीच किसान भी हैं। हरे राम!

मा छोकरी की क्रमहीन बकबक ध्यानपूर्वक सुन रही थी और अपनी घबराहट और आशंकाओं का बोझ हल्का करने का प्रयत्न कर रही थी। छोकरी को अपनी बातें सुनने के लिए एक श्रोता मिल जाने से बड़ा हर्ष हो रहा था। हर्ष के कारण उसके शब्दों का प्रवाह इतना बढ़ गया था कि उसका गला रुँधने लगा। अस्तु, वह मन्द स्वर में अपने बढ़ते हुए जोश में बड़बड़ाने लगी—काका कहते हैं कि यह सब खराब फसलों का नतीजा है। अब की साल भी फसल फिर खराब हुई है। लोग भूखों मरते हैं, जिससे अब ऐसे किसान पैदा होने लगे हैं। कैसी शर्म की बात है। गाँव की पंचायतों और सभाओं में जिस प्रकार किसान आजकल चिल्लाते और लड़ते हैं, उसे देखकर तो सिर नीचा कर लेना पड़ता है। उस दिन एक किसान की बकाया लगान में कुर्की होने लगी तो उसने झपटकर कुर्क अमीन के सिर पर एक लाठी जमाई और चिल्लाया—यह ले जा बकाया लगान!

इतने में द्वार पर किसी के भारी पैरों की धम्-धम् सुनाई दी। मा मुश्किल से उठकर खड़ी हुई थी कि इतने में नीली आँखों का किसान अन्दर घुस आया और टोप उतारकर बोला—लाओ, कहाँ है तुम्हारा असबाब?

किसान ने आसानी से मा का बेग उठा लिया और उसे हिलाकर कहने लगा—अरे यह तो बिल्कुल खाली है। अच्छा मेरया, मेरे मेहमान को मेरा घर दिखा देना। इतना कहकर वह बेग लेकर चल दिया और फिर मा की तरफ मुड़कर भी न देखा।

'क्या तुम रात भर इसी गाँव में ठहरोगी?' छोकरी ने मा से पूछा।

'हाँ, मैं फीते खरीदती फिरती हूँ। फीतों की तलाश में हूँ।'

इधर के लोग फीते नहीं बनाते। टिनकोव और डेरियाना की तरफ लोग फीते बनाते हैं। इधर नहीं।'

'हाँ, कल से उधर ही जाने का विचार कर रही हूँ। आज तो बड़ी थक गई हूँ।'

चाय का दाम देते समय मा ने तीन पैसे छोकरी को भी इनाम में दिये, जिससे वह बड़ी खुश हो गई। फिर क्या था छोकरी आगे-आगे सड़क पर दौड़ती कीचड़ में छप-छप करती हुई मा को किसान का घर बताने के लिए चली। और कहने लगी—कहो तो मैं ही डेरियाना दौड़कर चली जाऊँ और वहाँ की औरतों से फीते यहीं लाने को कह आऊँ। इससे तुम्हें वहाँ जाने का कष्ट बच जायेगा। डेरियाना लगभग यहाँ से आठ मील है।

'नहीं, तुम्हारे जाने की जरूरत नहीं है, बेटी!' मा ने कहा।

वह छोकरी के कदमों से कदम मिलाते हुए चली जा रही थी। स्वच्छ वायु मुँह

घर लगने से उसकी तबियत हरी हो उठती थी। कोई निश्चय जो अभी तक साफ नहीं था; परन्तु आशापूर्ण लगता था, धीरे-धीरे उसके मन में बनने लगा था। मा ने इस निश्चय को शीघ्र ही स्वरूप देने की इच्छा करती हुई सोचने लगी—मुझे उसके यहाँ किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए! मैं एकदम ही सारी बात खोलकर सच-सच उससे कह दूँ तो!

अन्धकार बढ़ रहा था, और कुहरा गिरने से ठण्ड बढ़ चली थी। किसानों के झोंपड़ों की छोटी-छोटी खिड़कियों में से लाल-लाल और धुँधला प्रकाश चमक रहा था। चारों तरफ सन्नाटा था। सिर्फ पशुओं के रँभाने की कुछ ऊँघती हुई आवाजे सुनाई दे रही थीं। कहीं-कहीं खेतों में भी कुछ-कुछ प्रकाश दिखाई देता था। गाँव अँधियारी और क्रूर उदासी की चादर से ढँक गया था।

'यह है घर!' छोकरी एक जगह ठहरकर बोली—'परन्तु तुमने बड़ी गरीब जगह अपने ठहरने के लिए की है। * यह किसान बहुत गरीब है।' इतना कहकर छोकरी ने घर का दरवाजा खोला और जल्दी-जल्दी चिल्लाई—काकी टेटयाना! काकी! यह यात्री तुम्हारे यहाँ ठहरने के लिए आया है। और इतना कहकर वह उल्टे पावों भाग गई। उसकी 'अलविदा!' भी मा को अन्धकार में से दूर से उड़ती हुई सुनाई दी।

मा द्वार की चौखट पर रुकी और आँखें मलते हुए झोपड़े के अन्दर देखने लगी। झोपड़ा बहुत छोटा था। परन्तु वहाँ की सफाई और स्वच्छता देखकर मा को आश्चर्य हो रहा था। चूल्हे के पीछे से एक नौजवान स्त्री ने झुककर मा को प्रणाम किया और फिर गायब हो गई। कमरे के अगले भाग में मेज पर एक लैम्प जल रहा था। जिसके पास ही झोपड़े का मालिक भी बैठा हुआ मेज के किनारों पर अपनी उँगलियाँ गड़ा रहा था। उसने घूरकर मा की तरफ देखा, कुछ-कुछ ठिठककर कहा—अन्दर आ जाइए। फिर उसने अपनी स्त्री से कहा—टेटयाना, जा तो जल्दी से पियोट्र को तो बुला ला!

स्त्री मेहमान की तरफ न देखती हुई वहाँ से तुरन्त चली गई। मा किसान के सामने तिपाई पर बैठ गई, और निगाह फिराकर चारों तरफ देखने लगी—परन्तु उसका अपना बेग कहीं नजर न पड़ा। झोपड़े के अन्दर चित्त को डरानेवाली शान्ति थी, केवल लैम्प की बत्ती कभी-कभी चरचरा उठती थी। मा की आँखों के सामने किसान विचार में लीन और उदासीन बैठा था, जिससे न जाने क्यों मा को चिढ़-सी हो रही थी।

'यह कुछ बोलता क्यों नहीं है! जल्दी से कुछ कहता क्यों नहीं है!'

वह सोच रही थी। एकाएक उसके मुँह से निकला मेरा बेग कहाँ है! और अपने इस कठोर, तेज और एकाएक प्रश्न पर उसे स्वयं ही बड़ा आश्चर्य हुआ। किसान ने

---

* यूरोप में किराया लेकर घरों में यात्रियों को ठहराने का रिवाज है।

कन्धे मटकाते हुए विचारपूर्वक कहा—तुम्हारा बेग सुरक्षित है! इतना कहकर उसने अपनी आवाज और भी धीमी कर ली और निर्जीव स्वर में कहने लगा—वहाँ उस छोकरी के आगे मैंने जान-बूझकर कह दिया था कि बेग खाली है। वह खाली नहीं है। ठसाठस भरा हुआ है!

'हाँ, हाँ, तो फिर?'

किसान उठकर मा के निकट आया और झुककर उसके कान में पूछा—क्या तुम उस आदमी को जानती हो? जो अभी वहाँ गिरफ्तार हुआ था?

मा उसका प्रश्न सुनकर पहले तो चौंकी। परन्तु फिर उसने दृढ़ता से उत्तर दिया—हाँ, मैं उसे जानती हूँ।

यह सूक्ष्म उत्तर देते ही मानों उसके अन्तर में एक ज्योति का प्रकाश हो गया, जिसमें बाहर की सारी चीजें उसे साफ दीखने लगीं। अस्तु, उसने सन्तोष की एक गहरी साँस ली और तिपाई से उठकर फिर उसी पर सँभलकर अच्छी तरह बैठ गई। किसान खिलखिलाकर हँसने लगा।

'मैं उसी वक्त ताड़ गया था, जब तुमने उसकी तरफ इशारा किया था और उसने भी तुम्हारी तरफ इशारा किया था। मैंने उसी वक्त उसके कान में झुककर पूछा था कि क्या वह तुम्हें जानता है।'

'जानती हो उसने मुझे क्या उत्तर दिया था?'

'वह बोला, हम लोग बहुत से हैं।'

किसान ने प्रश्न-सूचक दृष्टि से मेहमान की तरफ देखा और फिर मुस्कराता हुआ कहने लगा—वह बड़ा बलवान् आदमी है। बड़ा वीर है। कैसी धीमी और सच्ची बातें कह रहा था। उन्होंने उसे इतना पीटा, परन्तु वह बोलता ही रहा।

किसान की अनिश्चित और मन्द आवाज और उसका अपूर्ण, परन्तु स्वच्छ मुख और खुली आँखें मा के मन में अब विश्वास उत्पन्न करने लगी थीं। उसके हृदय में भय और निराशा के स्थान में अब राइबिन के लिए दया का भाव भर रहा था, जिससे व्याकुल होकर वह एकाएक द्वेषपूर्ण स्वर में बोली—लुटेरे! चाण्डाल! और बस इतना कहकर वह सिसकियों में फूट पड़ी।

किसान उठा और क्रोध से सिर हिलाता हुआ एक तरफ हटकर खड़ा हो गया।

अधिकारियों ने अपना गन्दा काम कराने के लिए बहुत से किराये के टट्टू रख लिये हैं। हाँ, हाँ!' इतना कहकर वह एकाएक मा की तरफ मुड़ा और धीरे से बोला—देखो जो, मैं समझता हूँ, तुम्हारे बेग में पर्चे हैं! क्यों सच है न?

'हाँ।' मा ने सरलता से अपने आँसू पोंछते हुए उत्तर दिया—मैं उन्हें लेकर उसी के पास आई थी।

किसान ने भौंहें नीची कर लीं और एक हाथ में दाढ़ी दबाकर पृथ्वी की ओर देखता हुआ कुछ देर तक चुपचाप खड़ा रहा। फिर कहने लगा—पर्चे और पुस्तकें हमारे पास

आया करते थे। हमें उनकी बड़ी जरूरत है। उनमें सदा सत्य और सीधी बातें होती हैं, मैं तो उन्हें अच्छी तरह नहीं पढ़ सकता; परन्तु मेरा एक मित्र है, वह पढ़-पढ़कर सुनाता है। मेरी स्त्री भी कभी-कभी पढ़कर सुनाती है। फिर एक क्षण-भर विचार करके वह बोला—अच्छा, तो अब, तुम लोग इस बेग का क्या करोगी?

मा उसकी ओर देखती हुई बोली—जो तुम कहो।

किसान को मा के इस उत्तर पर कोई आश्चर्य नहीं हुआ और न उसने कोई अड़-चन ही की। केवल इतना कहा—जो मैं कहूँ? अच्छा! और मा के प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए सिर हिलाने लगा! फिर वह दाढ़ी हाथ में से छोड़कर उसे अपनी उँगलियों से खुजलाता हुआ बैठ गया।

राइविन की दुर्दशा का दृश्य मा के स्मृति-पट पर शिलालेख की तरह अङ्कित हो रहा था। बहुत प्रयत्न करने पर भी वह उसको स्मृति से दूर नहीं होता था। राइविन की मूर्ति उसकी आँखों में समा रही थी। और उसके सारे विचार उसी पर जम रहे थे। उसके लिए उसके हृदय में जो दर्द उठ रहा था, उसमें उसके दूसरे सभी भाव डूब गये थे। अपने बेग और साहित्य की भी उसे सुध विसर रही थी। बस एक राइविन का ही ध्यान उसे बार-बार हो रहा था और आँखों से आँसुओं की झड़ी लग रही थी। वह कहने लगी—कम्बख्त मनुष्य को लूटते हैं, उनका गला घोंटते हैं, कीचड़ में उसे लथेड़ते हैं, उसका सिर कुचलते हैं। और जब वह पूछता है। क्या करते हो पापियो! तबउसे खूब पीटते हैं और तरह-तरह के कष्ट देते हैं।

'उनके पास बल है।' किसान कहने लगा—बहुत बल है!

'कहाँ से उनके पास यह बल आता है?' मा ने आवेश में भरकर पूछा—हमीं से तो उन्हे यह बल मिलता है। हमारी सहायता पर ही तो उनका यह सारा बल अव-लम्बित है!

'हँ...ाँ...हँ...ाँ,' किसान ने लम्बाकर कहा—एक तरफ का चक्र है। इतना कहकर उसने दरवाजे की तरफ कान लगाकर ध्यान से आहट सुनी और धीरे से बोला—आ रहे हैं।

'कौन?'

'अपने लोग!'

किसान की स्त्री ने प्रवेश किया। उसके पीछे एक चेचकरू किसान कमर झुकाये हुए घुसा। घुसते ही उसने अपनी टोपी उतारकर एक कोने में फेंक दी, और लपककर अपने मेजवान के पास पहुँच कर बोला—क्यों! ठीक है!

मेजवान ने उत्तर में 'हाँ' करते हुए सिर हिलाया।

'स्टीपान' चूल्हे के पास खड़ी हुई स्त्री बोली—मेहमान को भूख लगी होगी!

'नहीं, नहीं! धन्यवाद मेरी प्यारी!'

चेचकरू किसान मा की तरफ बढ़ा और धीरे-धीरे टूटे स्वर में बोला—अच्छा तो

अब मुझे क्षमा कीजिये, मैं आपको अपना परिचय कराता हूँ। मेरा नाम है प्योट्र यगोरोव राइबीनीन उर्फ़ खिलो उर्फ़ ऑल। मैं तुम्हारे कार्य को कुछ-कुछ समझता हूँ। मुझे कुछ पढ़ना-लिखना भी आता है। मतलब यह है कि मैं निरा लट्ठ ही नहीं हूँ। यह कहते हुए उसने मा का अपनी तरफ बढ़ाया हुआ हाथ दबाकर पकड़ लिया और उसको स्नेह से हिलाते हुए मकान के मालिक की तरफ मुड़कर कहने लगा—देखो, स्टीपान मेरी बात सुनो! बारबरा निकोलायेवना बड़ी अच्छी स्त्री है। यह ठीक है। परन्तु इस काम के सम्बन्ध में उसका कहना है कि यह सब निरी मूर्खता है, केवल स्वप्न है। कुछ छोकरे और तरह-तरह के विद्यार्थी आकर लोगों के दिमाग में अण्ड-बण्ड बातें भरने की चेष्टा करते हैं। मगर तुमने एक गम्भीर और प्रौढ़ मनुष्य को भी जैसा प्रौढ़ और गम्भीर हर मनुष्य को होना चाहिये, अभी गिरफ्तार होते अपनी आँखों से देखा होगा। बोलो, अब क्या कहते हो? यह देवी भी प्रौढ़ हैं और देखने से ऐसा लगता है कि अमीर खून भी इनकी रगों में नहीं है। बुरा मत मानना, आप किस श्रेणी की हैं?

वह जल्दी-जल्दी साफ शब्दों में एक ही साँस में बोलता चला गया। उसकी छोटी दाढ़ी काँपती हुई हिल रही थी, और उसकी काली-काली आँखें घूमती हुई जल्दी-जल्दी मा के चेहरे, शक्ल और सूरत को अच्छी तरह देखने का प्रयत्न कर रही थीं। उसके कपड़े फटे और सिमटे हुए थे और बाल बिखर रहे थे। ऐसा लगता था मानों वह किसी शत्रु को पछाड़कर सीधा वहाँ आ रहा था, और अपनी जीत के आनन्द में मग्न था। उसकी सजीवता और सीधी-सादी हृदय-स्पर्शी बातों से मा को बड़ा आनन्द हो रहा था। उसके प्रश्न का उत्तर देते हुए मा ने उसकी ओर स्नेहपूर्ण दृष्टि से देखा जिससे खुश होकर उसने मा से फिर एक बार जोर से हाथ मिलाया और मुस्कराता हुआ कहने लगा—देखो स्टीपान, यह बड़ा सुथरा काम है, बड़ा ही अच्छा काम है। मैं तो तुमसे पहले ही कह चुका हूँ। बात ऐसी है कि लोग, देखो खूब समझ लो, अब अपने पैरों पर खड़े होने लगे हैं। वह श्रीमती अर्थात् बारबरा निकोलायेवना कभी तुम्हें सत्य बात नहीं बतायेगी, क्योंकि उससे उनकी हानि होने की सम्भावना है। मैं उनको आदर की दृष्टि से देखता हूँ, और यह भी मैं जरूर कहूँगा कि वह भली स्त्री हैं, और हमारा थोड़ा-बहुत भला चाहती हैं; मगर वह हमारा इतना ही भला चाहती हैं, जिससे उन्हें किसी नुकसान के होने की सम्भावना न हो। परन्तु लोग सीधे जाना चाहते हैं। वे अब किसी की हानि या नुकसान का ध्यान नहीं रखना चाहते। समझते हो? आजकल का सारा सामाजिक जीवन ही लोगों के लिए हानिकारक है, क्योंकि उसमें उन्हें सर रखने के लिए भी कहीं जगह नहीं, जिधर वे जाते हैं उधर ही उन्हें 'ठहरो!' ठहरो!' 'इधर तुम्हें जाने की इजाजत नहीं है' की आवाजें ही सुनने को मिलती हैं।

'हाँ, हाँ, मैं समझता हूँ!' स्टीपान सिर हिलाता हुआ बोला और फिर तुरन्त ही कहने लगा—यह अपने असबाब के लिए चिन्तित दीखती हैं।

प्योट्र ने मा की तरफ होशियारी से आँखें मारते हुए और उसे ढाँढ़स बँधाते हुए

कहा—चिन्ता मत करो। सब ठीक है। सब ठीक है, मैया! तुम्हारा बेग मेरे घर में सुरक्षित रखा है। अभी जब इन्होंने मुझे तुम्हारा हाल बताया और कहा कि तुम भी इस कार्य में सम्मिलित हो और उस आदमी को जो आज गिरफ्तार हुआ है, जानती हो; मैंने फौरन ही इनसे कहा—खबरदार, स्टीपान! ऐसी बात कभी मुँह से भी मत निकालना, समझीं! अच्छा तो तुमने भी मैया, हमें ताड़ ही लिया। जैसे ही हम तुम्हारे नजदीक जाकर खड़े हुए वैसे ही तुमने भी हमे भाँप लिया। सच्चे आदमियों के चेहरे नहीं छिपते! सच तो यह है कि दुनिया में बहुत सच्चे आदमी नहीं हैं। तुम्हारा बेग मेरे घर पर है। यह कहकर वह मा के पास बैठ गया और आतुरता से उसके चेहरे की ओर देखता हुआ बोला—अगर तुम उसे खाली करना चाहो तो हम बड़ी खुशी से तुम्हारी सहायता करने को तैयार हैं। हमें उन किताबों की बड़ी जरूरत है!

'यह तो हमें सभी दे देना चाहती है।' स्टीपान ने कहा।

'तब तो क्या कहने हैं! मैया, हम उन सबके लिए जगह निकाल सकते हैं।' यह कहता हुआ वह उछलकर खड़ा हो गया और जोर-जोर से हँसने लगा। फिर जल्दी-जल्दी कमरे में टहलता हुआ सन्तोषपूर्ण स्वर में कहने लगा—सिलसिला तो ठीक बँध गया है! एक जगह टूटता है तो दूसरी जगह बँध जाता है! बिलकुल ठीक है। तुम्हारा अखबार बड़ा अच्छा है, अम्माँ, खूब काम करता है। लोगों की आँखें खोल देता है! मालिकों की आँखों में वह काँटे की तरह खटकता है! मैं यहाँ से पाँच मील की दूरी पर एक श्रीमती के यहाँ बढ़ई का काम करता हूँ। वह बड़ी भली स्त्री है यह मैं मानता हूँ। वह अक्सर मुझे तरह-तरह की पुस्तकें पढ़ने के लिए देती है। कभी-कभी तो वह बड़ी ही सरल किताबें मुझे पढ़ने को देती है। परन्तु जब मैं उन्हें पढ़ने बैठता हूँ तो मुझे तो नींद आने लगती है। अपना अखबार, पर्चे और पुस्तक पढ़ने में मुझे बड़ा आनन्द आता है। फिर भी वे श्रीमती मुझे पुस्तकें पढ़ने के लिये देती हैं; इसलिए मैं उनका आभार मानता हूँ। परन्तु एक दिन मैंने उन्हें अपनी एक पुस्तक और अपने अखबार की प्रति दिखाई तो उन्होंने बड़ा बुरा माना और झट मुझसे बोलीं—फेंक दो इसे, फेंक दो इसे, प्योट्र! किसी मूर्ख छोकरे का यह काम है! ऐसा साहित्य पढ़ने से तुम्हारे कष्ट बढ़ जाएँगे! इसे पढ़ने के लिए तुम्हें जेल और जलावतनी तक हो सकती है!

इतना कहकर वह एकाएक चुप हो गया और क्षण-भर कुछ सोचता रहा। फिर उसने पूछा क्यों अम्माँ, क्या यह आदमी जो आज पकड़ा गया, तुम्हारा कोई नातेदार था!

'नहीं, उससे मेरा कोई नाता नहीं था।'

प्योट्र यह सुनकर अपना सिर पीछे की तरफ फेरकर बैठ गया और किसी चीज से सन्तुष्ट होकर चुपचाप मुस्कराने लगा। मा कहने को तो कह गई कि उससे मेरा कोई नाता नहीं था। परन्तु फिर उसे फौरन ही लगा कि राइबिन के सम्बन्ध में ऐसा कहना उसके लिए उचित नहीं था। उसे अपना उत्तर कटु लगा। अस्तु, वह कहने लगी—

उससे मेरा कोई नाता तो नहीं है; परन्तु मैं उसे बहुत दिनों से जानती हूँ, और उसे अपने बड़े भाई की तरह मानती हूँ।

मा को इतना कहकर भी सन्तोष नहीं हुआ। उसे दुःख हो रहा था और बुरा लग रहा था कि जैसे शब्द वह राइविन के लिए कहना चाहती थी, वैसे शब्द उसे मिल नहीं रहे थे। अस्तु, वह मुँह से एक धीमी-सी आह निकालकर चुप हो गई जिससे झोपड़े में उदास खामोशी छा गई। प्योट्र अपना सिर एक कन्धे पर लटकाये हुए बैठा था, और उसकी छोटी, पतली तुकल दाढ़ी एक तरफ को इस प्रकार लटक रही थी मानों वह किसी की मजाक उड़ा रहा हो—दीवाल पर झूलती हुई उसकी छाया के चेहरे से ऐसा लगता था, मानों वह अपनी जीभ निकालकर मुँह टेढ़ा करके किसी को चिढ़ा रहा था स्टीपान मेज पर कुहनियाँ टेककर बैठ गया था, और हाथ फैलाकर, मेज को तबले की तरह बजाता हुआ धीमी-धीमी धम-धम आवाज कर रहा था। उसकी स्त्री चूल्हे के पास चुपचाप खड़ी थी। वह बार-बार मा की तरफ देखती थी। अस्तु, मा ने भी स्त्री की तरफ गौर से देखा। स्त्री का चेहरा गोल और विशाल था, नाक सीधी थी और ठुड्डी छोटी, परन्तु सुडौल थी। उसकी काली-काली और घनी भौंहे मिलकर एक हो जाने से वह गम्भीर लगती थी। उसके पलक झुके हुए थे, जिनके नीचे से उसकी हरी-हरी तीक्ष्ण आँखों में किसी दृढ़ निश्चय की झलक थी।

'यों कहो कि वह तुम्हारा एक मित्र था!' प्योट्र ने धीरे से कहा—वह सचमुच एक चरित्रवान् मनुष्य है। उसे बड़ा स्वाभिमान है जैसा कि हम सबको होना चाहिए। वह सचमुच अपनी इज्जत करता है, जैसा कि हम सभी को करनी चाहिए। वह सच्चा मर्द है। क्यों टेटयाना? तुम कहा करती हो...

'क्या वह विवाहित है?' टेटयाना ने उसकी बात काटते हुए मा से पूछा और उत्तर की प्रतीक्षा करती हुई वह अपने छोटे मुँह के पतले-पतले होंठ चबाने लगी।

'वह विधुर है।' मा ने अफसोस से उत्तर दिया।

'इसीलिए वह इतना बहादुर है।' टेटयाना बोली। उसकी आवाज धीमी और कठोर थी।

'कोई विवाहित आदमी उसकी तरह हिम्मत से जेल नहीं जायगा। उसे अपने बाल-बच्चों का भय लगेगा?'

'परन्तु मैं तो विवाहित हूँ। फिर भी मैं...प्योट्र कहने लगा।

'बस, रहने भी दो।' उसने उसकी तरफ बिना देखे ही उसकी बात काटकर अपने होंठ चबाते हुए कहा—तुम क्या शेखी मारते हो? बैठे-बैठे केवल बहुत-सी बकवाद किया करते हो? कभी-कभी एकाध किताब पढ़ लेते हो। घर के कोने में मुँह देकर तुम्हारे और स्टीपान के बहुत-सी घुसपुस करने से लोगों का क्या उपकार होता है?

'क्यों बहिन? मेरी बातें तो बहुत-से आदमी सुनते हैं।' बुरा मानते हुए किसान ने

धीमी आवाज में जवाब दिया—मैं यहाँ अभी भोजन में नमक की तरह काम करता हूँ। ऐसी बातें तुम्हें मुँह से निकालना शोभा नहीं देता।

स्टीपान ने चुपचाप अपनी स्त्री की तरफ देखा और फिर सिर झुका लिया।

'किसान को विवाह करने की ही क्या जरूरत है!' टेटयाना ने पूछा—लोग कहते हैं किसान को अपने काम में हाथ बटाने के लिए एक साथी की जरूरत रहती है। परन्तु मैं पूछती हूँ कि किसान के पास ऐसा काम ही क्या रहता है?

'तेरे पास काफी काम नहीं है! तुझे और काम चाहिये!' स्टीपन ने भरी हुई आवाज से पूछा।

'परन्तु हमारे इस काम से जो हम रोज करते हैं, हमें क्या फायदा होता है। हमें तो हमेशा अपने पेट पर तवा बाँधकर ही रहना पड़ता है। बच्चे पैदा होते हैं तो उनके पालन-पोषण के लिए भी हमें इस काम के मारे समय नहीं मिल पाता, न हमें ही भर पेट रोटी इस निगोड़े काम से नसीब हो पाती है।' यह कहती हुई वह आकर मा के पास बैठ गई और हठ से बोलती ही रही—न तो उसकी आवाज में कोई उलाहना था और न दुःख—देखो; मेरे दो बच्चे थे। एक, जब वह दो वर्ष का ही था, एक दिन जब मैं काम में लगी थी, गर्म पानी में गिर कर बेचारा उबल कर मर गया। दूसरा, आग लगे इस काम में जिसके मारे झट से ही मरा हुआ निकला। यह है किसानों का आनन्द का जीवन। मैं कहती हूँ, किसानों को कभी विवाह नहीं करना चाहिये। विवाह करके वह जान-बूझ कर अपने हाथ पैर काठ में देते हैं। यदि वह स्वतन्त्र रहें तो दुनिया को अपने रहने के लायक बना सकें। और सीधे मैदान में खुलकर सत्य के लिए लड़ सकें। क्यों अम्माँ, मैं ठीक कहती हूँ कि नहीं!'

'ठीक कहती हो! ठीक कहती हो, बेटी! ऐसा नहीं करेंगे तो हम लोग कभी भी जीवन पर विजय नहीं पा सकेंगे।'

'अम्माँ, तुम्हारे पति हैं!'

'नहीं, मर चुके हैं! बस एक लड़का है।'

'तुम्हारा लड़का कहाँ है! तुम्हारे साथ ही है!'

'नहीं, जेल में है।' कहकर मा को अनायास अपने शब्दों पर अभिमान होने लगा। वरना साधारणतया ऐसे शब्दों से उसे दुःख ही होता था। वह कहने लगी—यह उसको दूसरी बार जेल हुई है। केवल इसलिए कि वह ईश्वर को सत्य समझता था, और उसका दिन-रात खुल्लमखुल्ला प्रचार करता था। वह अभी बिलकुल जवान ही है। बड़ा सुन्दर है! बड़ा बुद्धिमान् है! उसने एक अखबार निकाला था और माइखेल आइवानोविच को काम करने का तरीका बतलाया था। यद्यपि वह माइखेल से उम्र में अभी आधा ही है। अब उस सब काम के लिए उस पर मुकदमा चलेगा, और उसको कठोर दण्ड मिलेगा। काला पानी हुआ तो वह साइबेरिया से भाग आयेगा और फिर उसी काम में लग जायगा।

बोलते-बोलते उसके हृदय में अभिमान भी बढ़ रहा था। उसके मन में एक वीर-

आत्मा की मूर्ति बन रही थी, जिसको अपने शब्दों से व्यक्त करने के लिए बड़ी उत्सुक हो रही थी। आज की घटना की, जो उसने देखी थी, अर्थहीन भयंकरता और निर्लज्ज क्रूरता के दृश्य के बाद मा को अपनी आत्मा की शान्ति के लिए किसी सुन्दर तेजोमय वस्तु की आवश्यकता थी। अस्तु, अपनी सद्-आत्मा की इस प्राकृतिक माँग की पूर्ति के लिए उसने आज तक जो कुछ पवित्र और उज्ज्वल अपने जीवन में देखा था, उस सबकी स्मृति अपने मन में एकत्र करते हुए अपने हृदय में एक पवित्र अग्नि की ज्वाला प्रज्वलित की और कहने लगी—बहुत-से लोग तो संसार में पैदा हो चुके हैं, और दूसरे बहुत-से दिन-पर-दिन पैदा हो रहे हैं जो आजादी और सत्य के लिए मरते दम तक जरूर लड़ेंगे।

उसे होश न रहा कि वह क्या कह रही है। अस्तु, नाम बताने के अतिरिक्त उसने अब तक जो कुछ लोभ की जजीरों से लोगों को मुक्त करने के उनके गुप्त प्रयत्नों के बारे मे वह जानती थी, सब कह सुनाया। इस काम में भाग लेनेवालों का हाल सुनाते समय वह अपनी सारी शक्ति और स्नेह जो उसके हृदयहारी अनुभवों से उसके हृदय में जाग्रत हो गये थे, अपने शब्दों में भर देने का प्रयत्न करती थी। और अपने स्मृतिपट पर आ-आकर नाचनेवाली विभिन्न बन्धुओं की उन वीर मूर्तियों पर अपने भावों का सौन्दर्य और प्रकाश पड़ता देखकर वह स्वयं आश्चर्य-चकित होती थी। वह कह रही थी—दुनिया भर में हमारा कार्य दिन पर दिन बढ़ रहा है। सज्जनों की शक्ति अपार होती है। वह दिन पर दिन बढ़ रही है। और जब तक सत्य को पूरी विजय न हो जायगी, तब तक यह शक्ति यों ही दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती ही रहेगी।

उसकी आवाज धारा-प्रवाह बह रही थी, और शब्द उसकी जबान पर जल्दी-जल्दी आ रहे थे, जिन्हें वह बहुरङ्गी मूँगे और मोतियों की तरह आज के दिन-भर के रक्तपात और गन्दगी को पवित्र बनाने की दृढ़ इच्छा की डोरी में पिरो-पिरोकर एक सुन्दर माला बनाने का प्रयत्न कर रही थी। तीनों श्रोता उसके सामने अपनी जगहों पर गड़े हुए-से बैठे थे और बिना-हुले चुपचाप उसकी तरफ देखते हुए उसकी बातें सुन रहे थे—केवल मा के पास बैठी हुई स्त्री की साँसों की फाँय-फाँय मा के कानों में आ रही थी। उनके मा की बातें इतने ध्यान-पूर्वक सुनने से जो कुछ मा उनसे कह रही थी, और जिस सुंदर आनेवाले जीवन का वह उनसे वायदा कर रही थी, उसमें उसकी अपनी स्वयं श्रद्धा और भी बढ़ी। अस्तु, वह कहने लगी—वे जिनका जीवन कठोर है, जिनको भूख और अन्याय की चक्कियाँ दिन-रात पीसती हैं, वे बेचारे केवल अमीरों और उनके पिट्ठुओं के शिकार होने के कारण ही ऐसी बुरी अवस्था में रहते हैं। सभी को, जाकर उन वीर बन्धुओं से मिलना चाहिए जो हम लोगों के लिए जेल की काल-कोठरियों में पड़े-पड़े अथक यातनाएँ सह रहे हैं, और अपनी तनिक भी चिन्ता न करते हुए हम लोगों को भावी सुख का मार्ग दिखला रहे हैं। वे अच्छी तरह जानते हैं कि उनका मार्ग कठिन है। अस्तु, वे किसी को अपने मार्ग पर आने के लिए बाध्य नहीं करते। परन्तु एक बार भी जो उनका साथ करता है, वह उनका साथी बन जाता है और वह उनकी राह से

फिर मुख मोड़ने का नाम भी नहीं लेता। उसे स्पष्ट दीखने लगता है कि उनका मार्ग ही ठीक और सत्य है। ऐसे वीर बन्धुओं का ही हमको साथ पकड़ना चाहिए। क्योंकि वे छोटे-मोटे लाभ में पड़कर कभी राह से भटकनेवाले नहीं हैं। जब तक दुनिया से छल-छिद्र, बदी और लोभ का नामोनिशान वे मिटा नहीं देंगे, तब तक वे दम लेनेवाले नहीं है। वे तब तक हाथ पर हाथ रखकर कभी न बैठेंगे, जब तक कि दुनिया के सभी लोगो की मिलकर एक आत्मा न हो जाय और कहे—मैं शासक हूँ! मैं सब के लिए एक-से कानून बनाऊँगी।

वह कहते-कहते थककर चुप हो गई, और अपने इधर-उधर मुड़कर देखने लगी। उसने देखा कि उसके शब्द व्यर्थ नहीं गये थे। उसके चुप हो जाने पर भी एक मिनट तक वैसी ही शान्ति कायम रही। किसान चुपचाप उसकी तरफ देखते रहे थे, मानों वे उससे और कुछ सुनना चाहते थे। प्योट्र झोपड़े के बीचो-बीच में अपनी पीठ के पीछे हाथ बाँधे खड़ा था। उसकी आँखें ऊपर को चढ़ रही थीं, और मुँह पर धीमी-धीमी मुस्कराहट नाच रही थी। स्टीपान अपना एक हाथ मेज पर रखे हुए और अपनी गर्दन और सारा शरीर आगे की तरफ झुकये हुए इस तरह बैठा था, मानों वह अभी तक कुछ सुन रहा था। उसकी स्त्री अपने घुट्ठुओं पर कुहनियाँ टेके हुए आगे की तरफ झुकी हुई मा के पास बैठी थी, और चुपचाप उसके पैरों की तरफ देख रही थी।

'हाँ! तो ऐसा है!' प्योट्र ने धीरे से खामोशी भङ्ग करते हुए कहा। और सिर हिलाता हुआ तिपाई पर सँभलकर बैठ गया।

स्टीपान ने चुपके से सिर उठाया और अपनी स्त्री की ओर देखते हुए हवा में हाथ फेंक दिये, मानों एकाएक किसी चीज को पकड़ने की कोशिश की हो।

'जो भी इस काम में पड़े।' वह विचार-पूर्वक अपनी आवाज धीमी करता हुआ बोला—उसे अपना घरबार फूँककर आना चाहिए!

प्योट्र ने सिर हिलाते हुए कहा—हाँ, और फिर कभी पीछे को मुड़कर भी नहीं देखना चाहिये।

'यह काम अब बहुत फैल गया है।' स्टीपान ने कहा।

'हाँ, पृथ्वी भर पर फैला लगता है!' प्योट्र ने उसकी हाँ में हाँ मिलाते हुए कहा।

दोनों आपस में इसी प्रकार की बातें करने लगे मानों अँधेरे में लड़खड़ाते हुए बाहर निकलने का रास्ता टटोल रहे थे। मा दीवार से टिकी खड़ी थी और अपना सिर पीछे की तरफ दीवार पर झुकाये हुए उन लोगों की बातचीत सुन रही थी। टेटयाना उठी और घूमकर अपने चारों तरफ देखती हुई फिर अपनी जगह पर बैठ गई। उसकी हरी-हरी आँखों में एक रूखी-सी दमक थी। वह किसानों के चेहरों की तरफ असन्तोष और घृणा से देख रही थी।

'मालूम होता है, तुमने भी जिन्दगी में बहुत कष्ट झेले हैं।' वह एकाएक मा की तरफ मुड़कर कहने लगी।

'हाँ, झेले तो हैं।'

'तुम बहुत अच्छा बोलती हो। हृदय पर तुम्हारी बातें फौरन असर करती हैं। तुम्हारी बातें सुनकर मुझे बार-बार यही विचार आ रहा है कि हे ईश्वर! मुझे भी उन लोगों के और सत्य जीवन के एक बार दर्शन हो जाते! हम लोग कैसे रहते हैं! क्या हमारा जीवन है! बिलकुल भेड़-बकरियों का-सा हमारा जीवन है! मुझी को देखो! मैं पढ़ लिख भी सकती हूँ। अक्सर किताबें पढ़ती हूँ, और बहुत सोच-विचार भी करती हूँ। कभी-कभी तो मैं रात-रात भर सोचती रहती हूँ और एक पल भी नहीं सोती। परन्तु मेरे इस सोच-विचार से क्या लाभ होता है! मैं सोचती हूँ तो भी मेरा जीवन योंही अर्थ-हीन कटता है और नहीं सोचती तो भी वैसा ही कटता है। हमारे जीवन का कोई अर्थ नहीं है। हम किसान दिन-रात मेहनत कर-कर मरते हैं, परन्तु हमें अपने बाल-बच्चों के लिए रोटी के टुकड़ों के भी लाले पड़े रहते हैं। हमें और हमारे बच्चों को भरपेट रोटी भी नहीं मिल पाती। हमें यह जीवन बुरा लगता है। ऐसे जीवन पर हमें क्रोध आता है। अस्तु, हममें से बहुत-से नशा करते हैं और खीझकर आपस में लड़ते-झगड़ते हैं, और जीवन का दुःख भुलाने के लिए सदा काम में लगे रहते हैं और जिन्दगी भर काम, काम, काम करते हुए मर जाते हैं। परन्तु इन सब का अर्थ क्या है! कुछ भी नहीं।'

उनकी आँखों और आवाज में ग्लानि थी। उसकी आवाज मन्द और धारा-प्रवाह बह रही थी, परन्तु बीच-बीच में वह टूट जाती थी जैसे गाँठोदार डोर पर अधिक जोर पड़ने से वह टूट जाती है। दूसरे दोनों किसान चुपचाप बैठे थे। बाहर खिड़कियों के शीशों से टकराती हुई हवा जोर से बह रही थी। वह छप्पर के फूस से लड़खड़ा-लड़खड़ा कर भिन-भिनाती थी और छत की चिमनी में घुस-घुसकर सनसनाती हुई सीटियाँ बजाती थी। कहीं से एक कुत्ते की भौंकने की आवाज आ रही थी। एकाएक मेंह की बूँदे पट-पट-पट-पट करती हुई खि की के शीशों पर बरस उठती थीं। और फिर कुछ देर में बन्द हो जाती थीं। अचानक लैंप की लौ बढ़कर बड़ी हो गई और फिर क्षण-भर में मन्द होकर पहले की तरह ही एक-सी जलने लगी।

'मैं तुम्हारी बातें सुनकर आज समझी हूँ कि लोग किस उद्देश्य के लिए जीते हैं। बड़ी विचित्र बात है। मैं तुम्हारी बातें सुनकर सोच रही हूँ कि अरे, यह तो मैं सब पहले ही से जानती थी; परन्तु फिर भी जब तक तुम्हारी बातें मैंने नहीं सुनीं, मुझे उन बातों का कभी ध्यान भी नहीं हुआ। किसी ने आज तक मुझसे ऐसी बातें नहीं कहीं, जैसी तुमने कही। तुमने कैसी सच्ची-सच्ची बातें आज कही हैं! मेरी अम्मा, कैसी सच्ची-सच्ची!'

'मैं समझता हूँ अब हम लोगों को कुछ खा-पीकर लैम्प बुझा देना चाहिए।' स्टीपान ने धीरे से, परन्तु गम्भीरतापूर्वक कहा—गाँव के लोग देखेंगे कि सुमकोव के घर में आज बड़ी रात तक रोशनी जल रही है। हमारा तो कुछ नहीं बिगड़ेगा; परन्तु इससे हमारे मेहमान को नुकसान होने की सम्भावना है।

टेटयाना यह सुनकर उठी और चूल्हे की तरफ गई।

'हाँ...जी,' प्योट्र मुस्कराता हुआ नम्र स्वर में बोला—मैयाजी, अब जरा सँभलकर रहना। जब पर्चे लोगों को मिलेंगे...

'मैं अपनी फिक्र नहीं कर रहा हूँ। मैं गिरफ्तार भी हो जाऊँ, तो कोई हर्ज नहीं है।...'

इतने में उसकी स्त्री मेज के पास आई और स्टीपान से एक तरफ हट जाने के लिए कहा। वह उठकर एक तरफ खड़ा हो गया। स्त्री मेज पर खाना लगाने लगी।

'मेरे जैसे लोगों का मूल्य ही क्या है? हम जैसों को तो दमड़ी के सौ भी कोई नहीं पूछता।' वह मुस्कराता हुआ कहने लगा—मुझे अपनी फिक्र क्या होगी!

मा को उसकी बातें सुनकर उस पर दया आने लगी और वह उसकी तरफ हर्ष-पूर्वक देखती हुई बोली—नहीं, नहीं, ऐसा कहना ठीक नहीं है। मनुष्य को अपना मूल्य वही नहीं मान लेना चाहिए, जो उसका वे लोग लगाते हैं, जिन्हें केवल उसके रक्त की जरूरत रहती है। तुम्हें अपनी अन्तरात्मा को पहिचानना चाहिये और अपना मूल्य स्वयं जानना चाहिए। मित्रों की नजरों में तुम्हारा क्या मूल्य है, वह समझो! शत्रु तुम्हारा जो मूल्य लगाते हैं, उससे क्या मतलब है!

'हमारा मित्र ही कौन है!' किसान धीरे से बोला—सभी हमारे मुँह से रोटी झपट लेने की ताक में रहते हैं!

'हाँ, यह बहुत हद तक तो ठीक है। परन्तु फिर भी बहुत-से तुम्हारे मित्र भी हैं।'

'होंगे कहीं, इधर तो कोई नहीं है। यही तो सारी मुश्किल है।' स्टीपान ने विचारते हुए कहा।

'इधर तुम्हारे मित्र नहीं हैं, तो उन्हें बनाओ!'

स्टीपान ने कुछ देर सोचकर कहा—हाँ, प्रयत्न करेंगे।

'आइए बैठिए।' टेटयाना ने मेज पर बैठकर खाना खाने के लिए दावत दी।

खान खाते-खाते प्योट्र, जो मा की बातें सुनकर आवाक् हो गया था, फिर जोश में भरकर बोला—मा, तुम यहाँ से जितना शीघ्र हो सके, भाग जाओ! तुम्हें यहाँ कोई देख न ले! दूसरे स्टेशन पर जाकर रेल में सवार होना, यहाँ के स्टेशन से मत चढ़ना। यहाँ से किराये के घोड़े कर लेना।

'तुम क्यों कष्ट करोगी? मैं तुम्हें पहुँचाने आऊँगा!' स्टीपान बोला।

'नहीं, हरगिज तुम पहुँचाने मत जाना। पीछे से कुछ होगा तो तुमसे पूछा जायगा कि क्यों वह तुम्हारे घर में ठहरी थी—कहाँ रही थी। कब गई थी! मैं पहुँचाने गया था। ओहो! तुम उसे पहुँचाने भी गये थे! अच्छा तो कृपया आप भी चलिए फिर जेलखाने में! समझे! जेलखाने में जाने के लिए हमें इतनी जल्दी नहीं करनी चाहिए। धीरे-धीरे सभी की बारी आ जायेगी। कहावत है कि एक दिन राजा को भी

मौत आती ही है। उसी तरह जेल तो हमको भी जाना ही होगा। बचेगा कोई नहीं। परन्तु जल्दी करने की क्या जरूरत है ! यह तुम्हारे घर में केवल एक रात ठहरीं और सवेरे घोड़े किराये करके अपनी राह चली गईं। इसमें तुम पर कोई सन्देह नहीं करेगा। इस गाँव में होकर जानेवाले यात्री किसी-न-किसी के घर रात-भर ठहरते ही हैं। उसमें कोई नई बात नहीं होगी।'

'तुमने इतना डरना कहाँ से सीख लिया है प्योट्र !' टेइयाना ग्लानि से उस पर झुँझलाती हुई बोली।

'आदमी को सब कुछ समझना चाहिए, मैया !' प्योट्र अपने घुट्टू पर हाथ मारकर बोला—कहाँ डरना चाहिए और कहाँ वीरता दिखानी चाहिये; सब अच्छी तरह समझना चाहिये ! तभी काम चल सकेगा। याद है, एक पुलिसवाले ने उस अखबार के लिए वेगानोव को कितना मारा था ! अब वेगानोव को कोई लाख रुपया दे तो भी वह वैसा पर्चा कभी फिर हाथ से नहीं छुयेगा। हाँ, विश्वास रखो अम्माँ, मैं यह बातें अच्छी तरह समझता हूँ, काफी होशियार हूँ ! इन सब मामलों में, गाँव के सभी लोग जानते हैं, मैं इन किताबों और पर्चों को यहाँ के लोगों में बड़ी होशियारी से फैला दूँगा। जितने कहो उतने पर्चे बाँट दूँगा। हाँ, यहाँ के लोग पढ़े-लिखे नहीं हैं। बहुत डरते हैं। फिर भी चक्की में पिसते-पिसते उनकी भी आँखें खुलने लगी हैं और वे भी पूछने लगे हैं—हमारा जीवन ऐसा दुखी क्यों है ! और तुम्हारी किताबें और पर्चें उनके इस प्रश्न का सीधा-सादा उत्तर देते हैं। जीवन दुखी होने के ये कारण है ! इनको विचारो ! आपस में एका करो ! तुम्हारे साहित्य में ऐसे दृष्टान्त होते हैं कि लोग पढ़े-लिखे न होने पर भी अपने दुःख-सुख के कारण अच्छी तरह समझ लेते हैं। इस सम्बन्ध में इन लोगों में पढ़े-लिखों से अधिक समझ है, खासकर उन पढ़ों लिखों से जो खाते-पीते हैं। मैं इस गाँव में चारों तरफ घूमता हूँ और सभी कुछ देखता हूँ। हाँ जी ! जिन्दा रहना तो सम्भव है, परन्तु भँवर मे न पड़ जाने के लिए बड़ी बुद्धि और चातुर्य की आवश्यकता होती है। अधिकारी लोग चारों तरफ नाक लगा-लगाकर सूँघते फिरते है। वे जिस किसान को उनकी तरफ कम मुस्कराता हुआ देखते हैं या जो अधिकारियों की खुशामद नहीं करता और अपने जीवन में परिवर्तन करना चाहता है, उसी को सन्देह की दृष्टि से देखने लगते हैं। उस दिन पास ही के एक गाँव में अधिकारी लोग मालगुजारी वसूल करने के लिए आये थे। किसान लोग उन पर चिढ़े और क्रोध करने लगे। थानेदार गुस्सा होकर बोला—अच्छा, बदमाशो ! शहंशाह जार का विरोध करते हो ! स्पीवाकिन नाम का एक नाटा किसान भी वहीं खड़ा था। वह चिढ़कर बोला—भाड़ में जाय तू और तेरा जार। वह भी कैसा हमारा राजा है जो हमारे शरीर पर से कपड़े तक उतरवा लेता है ! यहाँ तक बात पहुँच गई अम्माँ, और वे उस किसान को पकड़कर ले गये। परन्तु उसकी बात वहीं रह गई जो उस गाँव के छोटे-छोटे बच्चों तक को मालूम है। वह तो चला गया, मगर उसके शब्द गाँवों में चारों तरफ गूँजते हुए सुनाई देते हैं। शायद आजकल मनुष्य से अधिक

उसके शब्दों में शक्ति होती है। हाँ, मैया! साधारण लोग अपना पेट भरने का प्रयत्न करते-करते बेचारे मूर्खता में ही जीवन बीताते हुए मर जाते हैं।

प्योट्र ने खाया नहीं। वह जल्दी-जल्दी अपनी घुसपुस-घुसपुस करता ही रहा। उसकी काली-काली और चंचल आँखें हर्ष से चमक रही थीं और वह उस तरफ के ग्राम्य-जीवन के विषय में मा को बहुत-सी छोटी-छोटी तरह-तरह की बातें बता रहा था, जो उसके मुँह से भरी हुई थैली में से सिक्कों की तरह लुढ़कती हुई चली आ रही थीं।

स्टीपान ने उसे कई बार याद भी दिलाई—तुम बातें करते-करते खाते भी क्यों नहीं जाते? और उसके याद दिलाने पर प्योट्र रोटी का एक टुकड़ा और चम्मच हाथ में उठाता; परन्तु फिर तोते की तरह रट लगाने लगता और खाना भूल जाता। आखिरकार खाना खत्म होते ही वह उछलकर खड़ा हो गया और कहने लगा—अच्छा, अब मेरा घर जाने का समय हो गया है। अलविदा, मा! फिर मा से हाथ मिलाते हुए सिर हिलाता हुआ बोला—अच्छा तो अब हम लोग फिर शायद कभी न मिल सकें। तुमसे मिलकर और तुम्हारी बातें सुनकर आज मुझे बड़ा आनन्द हुआ अम्माँ! तुम्हारे बेग में कागजों के सिवाय और भी कुछ है क्या? एक शाल है? बहुत अच्छा! उसमें एक शाल भी है, याद रखना, स्टीपान! तुम्हारा बेग मेरे यहाँ से लेकर यह अभी आते हैं! आओ स्टीपान! प्रणाम! भगवान् तुम्हारी सहायता करें।

उसके चले जाने के बाद झोंपड़े की छत में घोंसला रख लेनेवाली चिड़ियों की चूँ-चूँ, हवा की सन्-सन् और किवाड़ों की खट-खट सुनने का मा को मौका मिला। मकान की खिड़की पर वर्षा की बौछारें पड़ रही थीं। टेट्याना ने एक बिस्तर लाकर मा के लिए तिपाई पर बिछा दिया।

'अच्छा आदमी है।' मा ने कहा।

स्त्री ने तिरछी नजर से मा की तरफ देखते हुए उत्तर दिया—बड़ा बकवासी है! निरी बकवास से क्या होना है?

'और तुम्हारा पति कैसा आदमी है?' मा ने पूछा।

'साधारण आदमी है। किसान अच्छा है। नशा-पानी कुछ नहीं करता, हम दोनों आपस में लड़ते-भिड़ते भी नहीं है। ठीक है। परन्तु चरित्र नहीं हैं!' यह कहकर उसने अपना सिर ऊँचा उठाया और जरा चुप रहकर मा से पूछने लगी—क्यों? किस चीज की अब जरूरत है? इसी की न कि लोगों को खुले विद्रोह के लिए तैयार किया जाय? हर एक के मन में यही विचार है। परन्तु सब चुपचाप अलग-अलग सोचते हैं। अब जरूरत इस बात की है कि सब जोर से बोलें। किसी के आगे बढ़ने-भर की देर है! इतना कहकर वह तिपाई पर बैठ गई और एकाएक मा से बोली—क्यों? क्या नवयुवतियाँ भी इस काम में शरीक हैं? क्या वे भी कामगारों से मिलती-जुलती हैं और उन्हे साहित्य पढ़कर सुनाती हैं? इस काम को करते हुए नाक-मुँह तो नहीं सिकोड़तीं? डरतीं तो नहीं? मा का उत्तर ध्यानपूर्वक सुनकर उसने एक गहरी साँस ली। फिर सिर

झुकाकर नीची आँखें करती हुई वह बोली—एक किताब में पहले-पहल मैंने 'अर्थहीन जीवन' शब्द पढ़े थे और मैं उनको पढ़ते ही फौरन अच्छी तरह समझ गई थी, क्योंकि मैं इस प्रकार के जीवन को अच्छी तरह समझती थी। विचार तो उठते हैं, परन्तु अभी तक वे क्रमबद्ध नहीं हुए हैं। लोग भेड़ों की तरह इधर-उधर बिखर रहे हैं, क्योंकि कोई गड़रिया उन्हें एक जगह पर इकट्ठा करनेवाला अभी तक नहीं है। अस्तु, वे बेचारे भेड़ों की तरह भटक रहे हैं। लोगों को पता नहीं है कि क्या करें और किधर जायँ! और इसी का नाम है 'अर्थहीन जीवन।' मैं तो ऐसे जीवन से पिण्ड छुड़ाकर कहीं भाग जाना चाहती हूँ और पीछे मुड़कर फिर देखना भो नहीं चाहती। जब अपने जीवन पर सोचती हूँ तो ग्लानि होने लगती है।

मा को स्त्री की हरी-हरी आँखों की रूखी चमक और उसके सूखे चेहरे को देखकर तथा उसकी आवाज से स्पष्ट लग रहा था कि उस स्त्री के हृदय में वेदना भरी हुई थी। अस्तु, मा ने उसे पुचकारकर उसे शान्त करने के इरादे से कहा—तुम तो समझती हो, मेरी बेटी, क्या करना चाहिए...!

टेटयाना नम्रता-पूर्वक उसकी बात काटती हुई बोली—हर एक को समझना चाहिए। आपका बिस्तर तैयार हो गया है। लेटकर अब आराम कीजिए।

इतना कहकर टेटयाना चूल्हे के पास गई और वहाँ कुछ देर तक चुपचाप सीधी खड़ी हुई ध्यान-पूर्वक सोचती रही। मा बिना कपड़े उतारे ही पलङ्ग पर लेट गई। वह बड़ी थकी हुई थी। उसकी हड्डियाँ तक दुख रही थीं, जिससे वह धीरे-धीरे कराहने लगी। टेटयाना ने मेज के पास जाकर लैम्प गुल कर दिया और झोपड़े मे अन्धकार छा जाने पर अपने मन्द और सम स्वर से मानों क्रूर अन्धकार की भीषणता कम करती हुई बोली—तुम प्रार्थना नहीं करतीं! मैं भी समझती हूँ, ईश्वर नहीं है। ईश्वरीय चमत्कार भी नहीं होते। यह सब ढोंग हम लोगों को डराने और हमें मूर्ख बनाये रखने के लिए बना लिये गये हैं!

मा तिपाई पर बेचैनी से करवटें बदल रही थी। खिड़की में से बाहर का घनघोर अन्धकार उसकी तरफ आँखें गड़ाकर घूर रहा था और छत में घोंसले से चिड़ियों के बराबर पंख फटफटाने की आवाज आकर कमरे की शान्ति को भङ्ग कर रही थी। मा डरी हुई-सी धीरे-धीरे बड़बड़ाने लगी—ईश्वर के बारे में तो मैं कुछ नहीं जानती, परन्तु मैं ईसा-मसीह में जरूर विश्वास रखती हूँ। उसकी शिक्षा में मुझे श्रद्धा है। उसके यह शब्द कि 'अपने पड़ोसी को भी अपनी ही तरह प्यार करो।' मुझे प्रिय हैं और मैं उसकी इस शिक्षा पर अमल करने का प्रयत्न करती हूँ। फिर एकाएक उसने घबराकर पूछा—परन्तु यदि ईश्वर है तो उसने अपनी सत्शक्ति हम लोगों से क्यों वापस ले ली है! उसने दुनिया को दो भागों में क्यों बँट जाने दिया है! यदि वह दयावान् है, तो मनुष्यों पर जुल्म क्यों होने देता है! एक आदमी का दूसरे के हाथों उपहास और अपमान क्यों होने देता है! नाना-प्रकार की बुराई और पाशविकता संसार में क्यों होने देता है!

टेटयाना चुप थी। अन्धकार में मा को उसकी धुँधली शक्ल दीख रही थी—काले-काले परदे पर एक काली-काली जमीन भूरे चित्र की तरह। वह चुपचाप खड़ी थी। मा ने उसकी तरफ देखकर दुःख से आँखें बन्द कर लीं। कुछ देर में कराहती हुई और ठण्डी, एक क्रोधपूर्ण आवाज कमरे की खामोशी में से आई—मैं अपने बच्चों की मौत कभी नहीं भूलूँगी! न कभी ईश्वर को उसके लिए क्षमा करूँगी! न मनुष्यों को क्षमा करूँगी! नहीं, मैं कभी क्षमा नहीं करूँगी, कभी नहीं करूँगी!

निलोवना बेचैनी से बिस्तर पर उठकर बैठ गई। उसका हृदय उस दर्द की गहराई को पहचानता था, जिसमें से यह आवाज आई थी।

'तुम अभी जवान हो, बेटी! तुम्हारी कोख अभी सूखी नहीं है।' मा ने स्नेह से सने हुए शब्दों में कहा। परन्तु स्त्री चुप रही। कुछ देर में वह बड़बड़ाई—नहीं, नहीं! मैं नष्ट हो चुकी हूँ! डाक्टर का कहना है कि अब मेरे बच्चा कभी न होगा। एक चूहा फर्श पर दौड़ता हुआ निकल गया। कोई चीज एकाएक खटकी और घनघोर सन्नाटे में एक धीमी-सी आवाज बिजली की तरह चमकी। शरद् ऋतु का मेंह छप्पर पर फिर बरसने लगा था, जिससे छत पर पतली-पतली उँगलियों के सरकने की-सी आवाज हो रही थी। रात्रि की मन्द गति पर मानों टप-टप ताल देती हुई बड़ी-बड़ी बूँदें एक मनहूस आवाज से गिर रही थीं। सड़क पर किसी के धीमे-धीमे कदमों की एक खोखली आहट सुनाई दी जो बढ़ती हुई ड्योढ़ी में आ गई। इस आहट से मा की गहरी नींद भी उचट गई। धीरे से द्वार खुला और एक मन्द आवाज आई—टेटयाना, क्या लेट रही हो?

'नहीं तो।'

'क्या वह सो गई है?'

'हाँ, लगता है, सो गई है।'

प्रकाश की एक लौ जली और काँपकर फिर अन्धकार में लुप्त हो गई।

किसान बढ़कर मा के बिस्तर के पास आया और उसके शरीर को भेड़ की एक खाल से सँभालकर ढँक दिया। मा के हृदय पर उसके इस सरल स्नेह का बड़ा प्रभाव पड़ा और उसने मुस्कराते हुए आँखें बन्द कर लीं। स्टीपान ने चुपचाप अपने कपड़े उतारे और एक टाँड़ पर चढ़कर लेट गया। फिर चारों तरफ खामोशी छा गई।

———

बत्तीसवाँ परिच्छेद

मा चुपचाप पड़ी उनकी बातें सुन रही थी। बार-बार उसकी आँखों के आगे राइ-विन का रक्त-रंजित चेहरा आ जाता था। कुछ देर में टाँड़ पर से रुखी-रुखी धुसपुस की आवाज आने लगी—देखा, कैसे-कैसे लोग इस कार्य में शरीक हैं! बूढ़े लोग भी शरीक हैं जिन्होंने जिन्दगी-भर कष्टों का सामना किया होगा, और मेहनत कर-करके एड़ी-तालू का पसीना एक किया होगा—जिन्हें बुढ़ापे में घर बैठकर आराम करना चाहिए था, ऐसे लोग तक इस कार्य में लगे हुए हैं। परन्तु तुम तो अभी नौजवान हो। बुद्धि-मान् हो। अरे स्टीपान! तुम भी क्यों नहीं ऐसे काम में लगते!

किसान की मोटी, परन्तु स्नेहपूर्ण आवाज ने उत्तर में कहा—ऐसे मामले में बिना समझे-बूझे नहीं कूद पड़ना चाहिए! जरा अभी और ठहरो।

'हमेशा ऐसे ही कहते रहते हो।' आवाज ने धीमी पड़ते हुए कहा। फिर दूसरी आवाज ऊँची उठी और स्टीपान का स्वर गूँजता हुआ सुनाई दिया—देखो, ऐसा करेंगे। पहले एक-एक किसान को अलग-अलग ले जाकर उनसे एकान्त में बातें करेंगे। जैसे कि याकोव ऐलेशा है, वह अच्छा आदमी है; पढ़-लिख भी सकता है, और पुलिस के हाथों सताया भी जा चुका है या जैसे शोरिन सरजी है। वह भी बुद्धि-मान् किसान है या जैसे किनियाजेव है जो बड़ा सच्चा और बहादुर आदमी है। काम शुरू करने के लिए इतने ही काफी हैं। फिर धीरे-धीरे अपना एक पूरा गिरोह बना लेंगे। शुरू में हमको चारों तरफ अच्छी तरह देख लेना चाहिए। हाँ! इसको कैसे और कहाँ मिलना यह भी जान लेना चाहिए! और जिन मनुष्यों के बारे में इसने हम लोगों से बातें की हैं, उनको भी एक बार अपनी आँखों से देख लेना चाहिए। मैं कन्धे पर कुल्हाड़ी रखकर शहर चला जाया करूँगा और गाँववालों से कह जाया करूँगा कि शहर में लकड़ियाँ चीरकर कुछ कमाने के लिए जाता हूँ। परन्तु इस काम में तुमको सँभल-कर कदम रखना चाहिए। वह ठीक ही कहती थी कि मनुष्य का मूल्य वही होता है जो वह अपना अपने-आप लगाता है। इस काम में पड़ना है तो अपना मूल्य ऊँचा लगाना होगा। देखो न उस किसान को। थानेदार तो क्या, स्वयं ईश्वर के सामने भी वह माथा ऊँचा करके खड़ा होनेवाला वीर है, उसे कोई दबा नहीं सकता। वह अपने पैरों पर दृढ़ता से खड़ा है, पैरों को जमीन में गड़ाकर खड़ा है। निकिटा तक को उसे मारने में एकदम लज्जा आ गई। कैसी आश्चर्य की बात है! परन्तु आश्चर्य की बात नहीं भी है। प्रेम से काम लिया जाय तो सभी हाथ आ सकते हैं!

'प्रेम से! तुम्हारे सामने किसी आदमी को बुरी तरह से पीटा जायगा तो तुम मुँह बाये खड़े रहोगे!'

'ज़रा ठहरो, देखो। उसे तो इसी को बड़ी ख़ैर मनाना चाहिए कि लोगों ने उसे पीटा नहीं। हाँ, मैं ठीक कहता हूँ। अधिकारी लोगों को पीटने के लिए मजबूर कर देते हैं, और उन्हें पीटना पड़ता है। मन में उन्हें कितना ही बुरा लगे और भीतर-ही-भीतर रोते भी रहें, परन्तु फिर भी पीटना पड़ता है। क्योंकि लोगों में इतनी हिम्मत नहीं होती कि वे पाशविक व्यवहार से अपनी जान की परवाह न करते हुए भी असहकार कर दें। मालिकों का हुक्म होता है—जैसा हम चाहते हैं, बनो, भेड़िये बनो, गदहे बनो! आदमी बनने की मुमानियत है। किसी वीर आदमी को देखते ही चौंकने लगते हैं, और शीघ्र ही उसे दूसरी दुनिया में भेज देने का इन्तजाम कर देते हैं। अस्तु, हमें एक साथ बहुत-से वीर आदमी पैदा करने और उन्हें एक साथ उठाने का प्रयत्न करना चाहिए।

बहुत देर तक इसी प्रकार घुसपुस चलती रही। कभी इतनी धीमी हो जाती थी कि मा को कुछ भी सुनाई नहीं देता था, और कभी जोर-जोर से होने लगती थी। स्टीपान जोर से बोलने लगता था तो स्त्री उसे रोकती हुई कहती थी—श...।...श...वह जग जायगी।

मा सुनते-सुनते घोर निद्रा में डूब गई।

प्रातःकाल टेटयाना ने उसे बड़े अँधेरे ही जगा दिया। ऊषा शर्मीली आँखों से खिड़की पर झाँक रही थी। गिरजाघर की घण्टियों की टन्न्-टन्न् आवाज बहती हुई गाँव के भूरे प्रातःकाल के सन्नाटे में मिल रही थी। टेटयाना ने मा को जगाकर कहा—समोवार तैयार है। थोड़ी चाय पी लो। वरना उठकर फौरन बाहर जाओगी तो ठण्ड लग जायगी।

स्टीपान ने अपनी उलझी हुई दाढ़ी काढ़ते हुए मा से प्रेमपूर्वक पूछा कि शहर में कहाँ और कैसे मुलाकात हो सकेगी। किसान का चेहरा आज मा को अधिक भरा लगा। फिर चाय पीते-पीते वह मुस्कराता हुआ बोला—कैसे-कैसे बनाव बन जाते हैं!

'क्यों, क्या हुआ?' टेटयाना ने पूछा।

'देखो न! कैसे इनसे जान-पहचान हो गई!'

मा विचारपूर्वक परन्तु विश्वास से बोली—इस बनाव में भी बड़ी विचित्र सादगी थी!

किसान और उसकी स्त्री ने मा से विदा होते समय कोई दिखावा नहीं किया। मुँह से शब्द कम निकले; पर उसके आराम का ध्यान अधिक रखा।

गाड़ी में बैठकर मा विचार करने लगी—यह किसान बड़ी होशियारी से चूहे की तरह चुपचाप, परन्तु बराबर अब काम करेगा और उसके बाजू से उसकी स्त्री का असन्तुष्ट स्वर हमेशा सुनाई देगा, क्योंकि उसकी हरी-हरी आँखों से वह रूखी और जलती हुई चमक तब तक नहीं जा सकती, जब तक कि उसके हृदय में नागिन की तरह प्रतिकार की ज्वाला जलती है जो मा में अपने खोये हुए बच्चों के लिए होती है।

फिर मा को राइबिन की याद आई—उसके बहते हुए खून की, उसके चेहरे की,

उसकी जलती हुई आँखों की और उसके मुँह से निकलनेवाले शब्दों की उसे याद आई जिससे उसका हृदय एक असमर्थ कमजोरी के दुखी भाव से बैठने लगा। रास्ते-भर राइबिन की काली दाढ़ीवाली विशाल मूर्ति फटी हुई कमीज में पीठ के पीछे हाथ बँधे हुए, बिखरे हुए बालों की, क्रोधपूर्ण, परन्तु अपने विश्वास में अटल, उसकी आँखों में नाचती रही। उस मूर्ति को देख-देखकर वह उन असंख्य गाँववालों का विचार करती थी जो सिर झुकाये हुए जमीन पर बैठे थे। उन सब लोगों का विचार करती थी, जो थके हुए हृदय से चुपचाप सत्य जीवन की बाट देख रहे थे; उन हजारों लोगों का विचार करती थी जो बेचारे चुपचाप काम करते-करते जिन्दगी-भर अपने खून का पसीना बनाते थे और किसी अच्छी चीज की आशा न रखते हुए अर्थहीन जीवन बिता रहे थे।

उनका जीवन उसको एक बे-जुता हुआ पथरीला खेत-सा लगा जो बेचारा चुपचाप कामगारों के आने की बाट देखता है और स्वतंत्र और मेहनती हाथों को अच्छी फसल देने का वायदा करता हुआ कहता है—मुझमें अक्ल से सच्चे बीज बोओ तो मैं तुम्हें सौगुने लौटा सकता हूँ।

फिर दूर से ही शहर के गुम्मदों और छतों को देखकर उसकी आँखों के सामने उन तमाम लोगों के चेहरे आने लगे जो अपनी धुन में मस्त, दृढ़ता से बराबर श्रद्धा और विचारों की अग्नि भड़काकर संसार-भर में उसकी चिनगारियाँ फैला देने का प्रयत्न कर रहे थे। इससे उसका मुरझाया हुआ दिल फिर हरा होने लगा।

घर पहुँचने पर द्वार खटखटाते ही निकोले ने आकर मा के लिए द्वार खोला। उसके बाल बिखर रहे थे और उसके हाथ में एक किताब थी।

'आ गईं?' वह खुश होकर बोला—बड़ी जल्दी लौट आईं! बड़ी खुशी की बात है। बड़ी खुशी की बात है।

उसकी आँखों में दया का भाव था और वे चश्मे के शीशों के पीछे जल्दी-जल्दी खुल-खुलकर बन्द हो जातीं। उसने झपटकर मा को शाल उतारने में मदद की और स्नेह से मुस्कराता हुआ बोला—और यहाँ मेरे घर की रात को तलाशी हुई थी। मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा था कि इस तलाशी का क्या कारण है—कहीं तुम तो नहीं पकड़ ली गईं! परन्तु चलो, तुम तो खैरियत से लौट आईं! तुम पकड़ी जातीं तो फिर वे मुझे भी हरगिज न छोड़ते।

वह मा को रसोईघर में ले गया और पहुँचकर आवेश में भरकर बोला— फिर भी उन्होंने मुझे नौकरी से तो निकलवा ही दिया है। खैर, उसकी मुझे चिन्ता नहीं, क्योंकि मैं भी बे-घोड़े के किसानों की संख्या गिनता-गिनता थक गया था। उसके लिए वेतन लेने में भी मुझे शर्म आती थी, क्योंकि मेरे वेतन का रुपया भी उन्हीं बेचारों की जेबों से आता था। अपने-आप नौकरी छोड़ देना तो मेरे लिए असम्भव ही था, क्योंकि इस प्रकार काम करने के लिए मुझे बन्धुओं की आज्ञा है; परन्तु अब मेरी सारी समस्या आप-से-आप हल हो गई। मैं बड़ा सन्तुष्ट हूँ!

मा ने बैठकर चारों तरफ कमरे में दृष्टि दौड़ाई। कमरे की चीजें चारों तरफ बिखरी हुई पड़ी थीं, मानों किसी दैत्यराज ने क्रोध में भरकर मकान की दीवारों को झकझोर डाला था, जिससे मकान के भीतर की सभी चीजें उलट-पुलटकर बिखर गई थीं। दीवारों की तस्वीरें फर्श पर फैली पड़ी थीं और दीवारों पर चिपका हुआ कागज नुचा-खुचा जमीन पर इधर-उधर पड़ा था। फर्श का तख्ता भी निकला हुआ एक तरफ पड़ा था और खिड़की की चौखट उखड़ी हुई थी। चूल्हे की राख बिखरा दी गई थी। इस परिचित दृश्य को देखकर मा चुपचाप सिर हिलाने लगी।

'शायद वे बेचारे यह दिखलाना चाहते थे कि वे मुफ्त का रुपया ही नहीं खाते हैं, काम भी करते हैं!' निकोले कहने लगा। सामने एक मेज पर एक ठण्डा सेमोवार रखा था, और बे धुली रकाबियाँ उल्टी-पल्टी पड़ी थीं और कुछ पनीर और रोटी के टुकड़े एक कागज पर बिखरे पड़े थे और सेमोवार के कोयले उसके बाहर निकले पड़े थे। मा यह सब देखकर मुस्कराने लगी। निकोले भी मा की तरफ देखकर हँसने लगा।

'इस उल्टा-पल्टी के चित्र को ठीक करने का यह कष्ट करना मैंने ठीक नहीं समझा, इसकी चिन्ता तुम्हें नहीं करनी चाहिए निलोवना, क्योंकि मैं समझता हूँ, वे फिर लौटकर आयेंगे। इसीलिए मैंने अभी तक सारी चीजें जहाँ की तहाँ पड़ी रहने दी हैं। अच्छा, कहो! तुम्हारी यात्रा कैसी रही?'

मा उसका प्रश्न सुनकर चौंकी और राइबिन की शक्ल फिर उसकी आँखों में झूल उठी। वह सोचने लगी कि उसने बड़ी भूल की जो घुसते ही सारा हाल निकोले से नहीं कहा। अस्तु, वह अपराधी की तरह अपनी कुर्सी पर आगे की तरफ झुकती हुई निकोले को अपना सारा हाल सुनाने लगी। मा अपने-आपको शान्त रखने का प्रयत्न करते हुए जिससे कि कोई बात छूट न जाय, कहा—वह पकड़ गया!

निकोले का चेहरा काँप गया। वह आश्चर्य से बोला—पकड़ गया है! कैसे?

मा ने हाथ के एक इशारे से निकोले को प्रश्न करने से रोका और इस प्रकार सारा हाल कहने लगी जैसे न्यास के दरबार मे किसी मनुष्य पर होनेवाले अत्याचारों की वह शिकायत कर रही हो। निकोले अपनी कुर्सी की पीठ में थोक लगाये बैठा था। उसका चेहरा पीला पड़ गया था। वह होठ चबाता हुआ मा की कहानी सुनने लगा। सुनते-सुनते उसने अपना चश्मा उतारकर धीरे से मेज पर रख दिया और अपने चेहरे को इस प्रकार हाथ से साफ करने लगा मानों वह किन्हीं अदृश्य मकड़ी के जालों को झाड़कर हटा रहा हो। आज तक मा ने कभी उसका चेहरा इतना गम्भीर नहीं देखा था।

मा का हाल सुन चुकने पर वह उठा और कुछ देर तक चुपचाप जेबों में हाथ डाले हुए कमरे में इधर-उधर टहलता रहा। फिर अपनी व्यथा को किसी तरह दबाता हुआ वह शान्त भाव से मा के आँसुओं से भरे हुए चेहरे की तरफ देखने लगा।

'निकोवना, हम लोगों को अब समय नहीं खोना चाहिए। हम लोगों को, प्रिय-बन्धु, अब सत्ता अपने हाथों में लेनी चाहिए।' फिर वह दाँत पीसता हुआ बोला—वह

बड़ा जबरदस्त आदमी था। उसमें इतनी सज्जनता थी। उसको जेल में बड़ी कठिनता होगी! ऐसे मनुष्यों को जेल में बड़ा कष्ट होता है। फिर मा की तरफ बढ़ता हुआ वह गूँजती हुई आवाज में कहने लगा—सच तो यह है कि थानेदार और सिपाही कुछ नहीं करते। वे भी बेचारे एक चालाक और बदमाश सत्ता के हाथ की सिर्फ लाठियाँ हैं—उस बदमाश दैत्य की जो हम सबको नचाता है! परन्तु मेरे सामने कोई पशु भी हिंसा करने लगे तो मैं उसे जान से अवश्य मार दूँगा। बड़ी मुश्किल से उसने अपना जोश रोकते हुए अपने-आपको सँभाला; परन्तु मा को उसका क्रोध और परेशानी स्पष्ट दीख रही थी।

निकोले कमरे में टहलता हुआ क्रोध से फिर कहने लगा—देखो तो कैसा भयंकर जीवन है! मूर्खों की एक मण्डली किसी तरह लोगों के ऊपर अपना अधिकार जमा लेती है। यह मण्डली लोगों को पिटवाती है, दबाती है और सताती है। जिधर देखो उधर उसकी क्रूरता का दिग्दर्शन देखने को मिलता है। अत्याचार ही जीवन का नियम बन रहा है। एक जाति की जाति ही अधोगति को प्राप्त हो रही है। विचारो तो! वह सबको मारती-पीटती और सताती है और बिलकुल पशु बनी हुई है। दण्ड मिलने का भय न होने से वह अपनी पाशविक वृत्ति का जी भरके प्रयोग करती है। गुलामों के एक भाग को अपनी दास-प्रवृत्ति और अपनी पशु-प्रवृत्ति को अच्छी तरह प्रदर्शित करने का ठेका दे दिया जाता है! दूसरा भाग प्रतिकार के हलाहल से भर जाता है; शेष अपनी मूर्खता और अज्ञान से गूँगे और अन्धे बने रहते हैं। इस प्रकार एक जाति की जाति ही अधोगति हो रही है। यह कहता हुआ वह चौखट पर कुहानियाँ टेककर खड़ा हो गया और अपना सिर दोनों हाथों से दबा और दाँत पीसता हुआ चुप हो गया।

'इस पाशविक जीवन में सभी पशु बनने जा रहे हैं।' मा कहने लगी।

उदासीनता से मुस्कराता हुआ वह मा के पास गया और झुककर उसका हाथ पकड़-कर दबाता हुआ बोला—तुम्हारा बेग कहाँ है?

'रसोईघर में है।'

'दरवाजे पर एक जासूस खड़ा है। इतने कागजों को उसकी आँख बचाकर निकाल ले जाना सम्भव नहीं है। घर में छिपाने की भी कोई जगह नहीं है और मैं समझता हूँ, आज रात को फिर तलाशी भी होगी। मैं नहीं चाहता कि तुम पकड़ी जाओ। अस्तु, हमें नुकसान की परवाह न करते हुए सारे कागजों को जला डालना चाहिए।'

'क्या?'

'बेग में जो कागज हैं उन्हें फौरन जला डालना चाहिए।'

आखिरकार मा की समझ में उसकी बात आई और मन में उदास होने पर भी अपनी कामयाबी के अभिमान से उसके चेहरे पर मुस्कराहट आ गई। मुस्कराती हुई वह बोली—बेग में कुछ नहीं है, एक भी पर्चा नहीं है। धीरे-धीरे वह सारी कहानी

निकोले को सुनाने लगी। किस प्रकार राइविन की गिरफ्तारी के बाद उसने दूसरे किसानों के हाथ में वे पर्चे पहुँचाये थे। निकोले चुपचाप ध्यानपूर्वक उसकी बातें सुनने लगा। पहले तो उसके चेहरे पर क्रोध के कुछ चिन्ह आये, फिर आश्चर्य के और अन्त में उसका किस्सा काटता हुआ चिल्लाकर कहने लगा—ओ हो! क्या कहने हैं। निलोवना, कुछ समझती हो? इतना कहते-कहते उसकी जबान लड़खड़ाने लगी और वह कुछ ठिठका; फिर उसका हाथ दबाते हुए धीरे से बोला—लोगों पर तुम्हारी श्रद्धा और स्वतन्त्रता के कार्य में तुम्हारा विश्वास देखकर मेरा हृदय गद्‌गद हो जाता है। तुम्हारी आत्मा कितनी पवित्र है अम्मा! मैं तुम्हें बड़ा प्रेम करता हूँ! इतना प्रेम मैंने कभी अपनी मा को भी नहीं किया था!

मा उसको अपनी छाती से चिपटाकर सिसकियाँ भरने लगी और उसका सिर चूम लिया।

'शायद' अपने भाव की नवीनता से शर्माता हुआ, घबराहट से वह बोला—मैं बड़ी मूर्खता की बातें कर रहा हूँ; परन्तु मुझे सचमुच लगता है कि तुम बड़ी सुन्दर आत्मा हो, निलोवना! सच!

'मेरे बेटे, मैं भी तुम्हें बहुत प्यार करती हूँ! मैं तुम सबको अपनी आत्मा से, अपने जी-जान से चाहती हूँ!' वह बोली और हर्षातिरेक से उसका गला रुँध गया।

उन दोनों की आवाजें मिलकर एक लरजती हुई भाषा में परिणत हो गईं जिसमें उस महान् भाव की स्फूर्ति भर रही थी जो कि लोगों में अब उठ रहा था।

'तुममें इतनी महान् और मीठी शक्ति है जो आप-से-आप दिल को तुम्हारी तरफ खींच लेती है! कैसा सुन्दर तुम लोगों का वर्णन करती हो! किस अच्छी दृष्टि से तुम देखती हो!'

'मैं तुम्हारा भी जीवन तो देखती हूँ और उसे समझती हूँ, मेरे लाड़ले!'

'तुम पर आप-से-आप स्नेह होने लगता है। और किसी से स्नेह करना कितना महान् होता है, कितना उज्ज्वल होता है जानती हो!'

'कैसी बातें करते हो? मुर्दों को जगाने का प्रयत्न करते हो! बड़े नटखट हो।' मा उसका सिर थपथपाती हुई बोली—देखो बेटे, अभी तुम्हें बहुत काम करना है। तुम्हें बड़े सब्र की जरूरत है। इस तरह तुम्हें अपनी शक्ति नष्ट नहीं करना चाहिए। तुम्हारी शक्ति की लोगों के जीवन के लिए बड़ी आवश्यकता है। सुनो, क्या हुआ। वहाँ एक स्त्री भी थी। उसी आदमी की स्त्री...

निकोले मा के पास बैठा था। परन्तु शर्मा जाने से मुँह एक तरफ को फिरा लिया था और अपने बालों पर हाथ फिरा रहा था। थोड़ी देर में उसने अपना मुँह फिर मा की तरफ घुमा लिया और उसका शेष किस्सा बड़े चाव से सुनने लगा। सुन चुकने पर बोला—बड़ा आश्चर्य है। तुम्हारी वहाँ पकड़ जाने की बिलकुल सम्भावना थी। एकाएक तुम्हें सहायक मिल जाते हैं। इस घटना से साफ जाहिर होता है कि अब किसानों ने भी

सिर उठाने का निश्चय कर लिया है। आखिर कहाँ तक सहें? स्वाभाविक ही है। गाँवों के लिए अब हमें खासतौर पर आदमियों की जरूरत है। खास आदमियों की जरूरत है। मगर आदमियों की हर जगह कमी है। नवीन जीवन की रचना के लिए असंख्य हाथों की जरूरत है।

'कहीं पाशा और ऐन्ड्री आजाद हो सकते!' मा ने धीरे से कहा। निकोले ने मा की तरफ देखकर सिर झुका लिया।

'देखो निलोवना, तुम्हें सुनकर दुःख तो होगा; परन्तु मैं समझता हूँ, मुझे कहना ही पड़ेगा। मैं पवेल को अच्छी तरह जानता हूँ। वह जेल से भागने के लिए हरगिज राजी न होगा। वह चाहता है कि उस पर अभियोग चले, जिससे वह अपनी पूरी ऊँचाई पर उठ सके। वह इस मौके का पूरा फायदा उठाना चाहता है। ऐसे अच्छे मौके को हाथ से गँवाने की जरूरत भी नहीं है। वह सजा हो जाने के बाद साइबेरिया से भागेगा। अभी नहीं।'

मा एक गहरा निःश्वास लेती हुई धीरे से बोली—हाँ, वह समझता है कि वह अच्छे काम में जलावतन हो रहा है।

फिर निकोले आनन्द से भरता हुआ जल्दी से उछलकर खड़ा हो गया और बोला—धन्यवाद है, निलोवना! मैंने अभी तुम्हारे स्नेह से एक क्षण-भर अखण्ड आनन्द पाया। शायद मेरे जीवन का वही सर्वश्रेष्ठ क्षण था। उसके लिए तुम्हे धन्यवाद! आओ, अब हम दोनों एक-दूसरे को जी भरकर एक बार चिपटा लें।

दोनों एक-दूसरे से चिपट गये और आँखों में देखते हुए उन्होंने एक दूसरे के मुँह पर गरम-गरम बन्धुत्व के चूमों की बौछार कर दी।

'यह बड़ा अच्छा है।' फिर वह धीरे से बोला।

मा ने उसकी गर्दन से अपने हाथ हटा लिये और चुपचाप उसकी तरफ देखती हुई सुख की हँसी हँसने लगी।

'हाँ, देखो।' निकोले कुछ देर में बोला—शायद, वह तुम्हारा किसान यहाँ जल्दी ही आ जाय। अस्तु, एक पर्चा राइबिन के बारे में छापकर गाँवों के लिए फौरन तैयार कर लेना चाहिए। उसने इस वीरता से कदम उठाया है तो उसका पूरा फायदा हमें उठाना चाहिए। मैं आज ही एक पर्चा तैयार कर लूँगा और लियुडमिला उसे जल्दी से छाप देगी। परन्तु प्रश्न यह उठता है कि गाँवों में उसे कैसे भेजा जायगा।

'मैं ले जाऊँगी। उसकी चिन्ता क्यों करते हो!'

'नहीं! धन्यवाद!' निकोले ने आहिस्ता से कहा—व्यसोवश्चिकोव शायद यह काम कर सकेगा। मैं उससे पूछूँ!

'तुम उसे सब बतला देना कि कहाँ और कैसे जाय और किससे मिले, और फिर मेरा क्या काम रहेगा?'

'उसकी चिन्ता न करो।'

निकोले लिखने बैठ गया। मा ने उसकी मेज ठीक कर दी और बैठकर उसके मुँह की तरफ देखने लगी। मा ने देखा कि लिखते-लिखते निकोले की कलम काँप उठती थी। वैसे वह जल्दी-जल्दी कागज पर सीधी चल रही थी। कभी-कभी उसकी गर्दन की खाल थरथरा उठती थी। बीच-बीच में वह पीछे की तरफ सिर फेरकर आँखें बन्द कर लेता था और सोचने लगता था। उसका यह हाल देखकर मा का हृदय द्रवित हो रहा था।

'मारो!' वह एकाएक बड़बड़ाने लगी—बदमाशों पर दया हरगिज नहीं दिखानी चाहिए।

'यह लो! पर्चा तैयार हो गया!' इतने में निकोले ने बैठते हुए कहा—इसको अपने शरीर में होशियारी से छिपा लो। परन्तु याद रखना, पुलिस फिर आई तो तुम्हारे शरीर की भी जरूर ही तलाशी लेगी!

'कुत्ते उन कम्बख्तों का मांस खायँ!' मा ने धीरे से कहा।

शाम को डाक्टर डेनीलोविश निकोले के घर आया और कमरे में टहलता हुआ कहने लगा—अधिकारियों को एक दम क्या भूत सवार हो गया है! रात को उन्होंने सात जगह तलाशी ली! बीमार कहाँ गया!

'वह कल ही चला गया। आज शनिवार का दिन होने से वह कामगारों को किताबें पढ़कर सुनाना चाहता था। वह अपना काम रोकना नहीं चाहता।'

'बेवकूफी है। फटा हुआ सिर लेकर कामगारों को किताबें सुनाने बैठेगा!'

'मैंने उसको बहुत समझाया, परन्तु उसने नहीं माना।'

'बन्धुओं के सामने शायद उसे शेखी बघारने की इच्छा थी।' मा बोली—देखो! मैंने पुलिसवालों का कैसा सिर फोड़ा!

डाक्टर ने मा की तरफ देखा और भयङ्कर चेहरा बनाकर दाँत पीसता हुआ बोला—यह तो खून की प्यासी हो रही है! छी...छी...!

'अच्छा, आइवान, तुम्हारे लिए अब यहाँ कोई काम नहीं है। हम लोग आनेवाले मेहमानों की बाट देख रहे हैं। अस्तु, तुम फौरन भाग जाओ। निलोवना, वह पर्चा इन्हें दे दो!'

'एक और पर्चा बनाया है।'

'ले जाओ, इसे जाकर छापनेवाली को दे दो!'

'अच्छा, मैंने ले लिया; दे दूँगा। बस?'

'बस! दरवाजे पर जासूस है।'

'मैंने देखा है। मेरे दर्वाजे पर भी एक खड़ा है। प्रणाम काली देवी, प्रणाम! जानते हो, कब्रस्तान में बड़ा अच्छा झगड़ा हुआ है। सारा शहर उसी के बारे में बातचीत कर रहा है। लोगों के दिलों पर उसका असर हुआ है और वे सोचने लगे हैं। उस पर तुमने अच्छा पर्चा लिखा था और मौके से उसे बँटवाया भी था। मेरा तो सदा से विश्वास है कि एक अच्छी लड़ाई बुरी शांति से कहीं अच्छी होती है।'

'अच्छा, अच्छा! अब जाओ।'

'बड़े नम्र हो! आओ जरा हाथ तो मिला लो, निलोवना! उस आदमी ने बड़ी मूर्खता का काम किया है। जानते हो वह कहाँ रहता है?'

निकोले ने उसे बीमार के घर का पता दिया।

'मैं उसके घर कल जरूर जाऊँगा। अच्छा आदमी है। क्यों?'

'बहुत अच्छा आदमी है।'

'हमें उसकी जान बचानी चाहिए। उसका दिमाग बड़ा अच्छा है। ऐसे आदमियों में से ही सच्चे कामगार-वर्ग के विचारक और कार्यकर्ता पैदा होंगे जो हमारे उस लोक में चले जाने पर जहाँ वर्गयुद्ध की शायद जरूरत न होगी, हमारी जगह ले लेंगे। परन्तु आखीर में कौन जानता है, क्या होगा?'

'तुम बड़े बातूनी हो गये हो आइवान!'

'मैं आनन्द में मग्न हूँ, इसलिए बक रहा हूँ। अच्छा, लीजिए मैं जाता हूँ। जनाब जेल जाने की उम्मीद में बैठे हैं? आशा है, वहाँ आपको अच्छा आराम मिलेगा!'

'धन्यवाद! मैं आपकी तरह अभी थका नहीं हूँ।'

मा उन दोनों की बातें सुन रही थी। कामगारों के प्रति उनकी चिन्ता और भाव जानकर उसे आनन्द हो रहा था, और जेल के द्वार तक शान्ति से कार्य करते जाने की उनकी धुन देखकर उसे आश्चर्य हो रहा था। डाक्टर के चले जाने के बाद निकोले और मा पुलिस के आने की बाट देखते हुए आपस में धीरे-धीरे बातें करने लगे। नकोले अपने उन तमाम साथियों के किस्से सुनाने लगा जो जलावतनी में रहते थे या जो वहाँ से भाग आये थे और अपने नाम बदलकर फिर क्रांतिकारी काम में लग गये थे। कमरे की नंगी दिवारें उसकी आवाज को प्रतिध्वनित करती हुई मानों अवाक् होकर उन तमाम गुमनाम वीरों की कहानियाँ, जिन्होंने निष्काम भाव से अपना सर्वस्व ही स्वाधीनता की वेदी पर चढ़ा दिया था, आश्चर्यचकित सुन रही थीं।

दयाभाव से पूर्ण एक छाया मा को ढाँकती हुई उसके हृदय में उन अदृश्य लोगों के प्रति स्नेह भरने लगी। सब उसकी कल्पना में मिलकर एक अखण्ड और विशाल मानवी शक्ति की मूर्ति बन जाते थे, जो महादेवी धीरे-धीरे परन्तु अनादि काल से पृथ्वी पर विचर रही है और पृथ्वी को अपने चरण-स्पर्श से पवित्र करती हुई मनुष्यों के आगे जीवन का सीधा और स्पष्ट सत्य आदर्श रखती है, वह महान् सत्य आदर्श जो मनुष्य समाज को मुर्दा से जिन्दा बना सकता है, क्योंकि वह सभी के लिए समानता का आदेश करता है और सबको लोभ, छल और असत्य नाम के तीनों महा राक्षसों से, जिन्होंने संसार को अपने चंगुल में दबाकर दास बना रखा है, मुक्त कराने का दुनिया से वायदा करता है। इस देवी मूर्ति की कल्पना से भी मा के हृदय में वैसा ही भाव उत्पन्न होने लगा जैसा कि उसके हृदय में मरियम देवी की मूर्ति के सामने खड़े होकर प्रार्थना करने से होता था। अस्तु, आनन्द में भरकर ईश्वर को धन्यवाद देती हुई जब वह इस महादेवी की प्रार्थना

पूरी कर चुकी तो उसे अपना आज का दिन उन पुराने दिनों से कहीं अच्छा लगा, जिनको वह अब भूल चुकी थी ; परन्तु जिनसे उत्पन्न होनेवाला भाव विस्तृत होकर उसकी आत्मा में भर गया था और उसके अन्तर में अब दिन-रात जगमग-जगमग एक सुन्दर ज्योति की तरह जगमगाता था।

'पुलिस अभी तक नहीं आई!' निकोले ने एकाएक किस्सा बन्द करते हुए कहा।

मा उसकी तरफ देखने लगी। जरा ठहरकर, फिर चिढ़कर कहने लगी—उँह, जाने भी दो पुलिस को भाड़ में।

'हाँ, भाड़ में चली जाय तो ठीक है, परन्तु तुम्हारा भी तो अब सोने का समय हो गया है, निलोवना! तुम बड़ी थकी होगी। तुममे सचमुच बड़ी शक्ति है। इतनी गड़बड़, दौड़-धूप और घबराहट में भी तुम सदा शान्त ही रहती हो! केवल तुम्हारे बाल जल्दी-जल्दी सफेद हुए जा रहे हैं। अच्छा, अब जाकर सोओ।

हाथ मिलाकर दोनों सोने चले गये।

तैंतीसवाँ परिच्छेद

मा को लेटते ही गाढ़ी निद्रा आ गई और सवेरे अँधेरे ही द्वार पर खट-खट होने पर उसकी आँख खुली। धीरे-धीरे कोई दरवाजा खटखटा रहा था। अभी तक चारों तरफ अन्धकार और शान्ति का अविच्छिन्न राज्य फैला हुआ था, जिससे द्वार की खट-खट शान्ति को भंग करती हुई मा को खटकी। वह जल्दी-जल्दी कपड़े पहनकर रसोई-घर में जा पहुँची और द्वार के निकट खड़ी होकर पूछने लगी—कौन है?

'मैं।' एक अपरिचित आवाज ने उत्तर दिया।

'तुम कौन हो?'

'द्वार खोलिए!' प्रार्थना करती हुई एक मन्द आवाज आई।

मा ने साँकल खोल दी और पैर से धक्का मारकर द्वार खोला। इग्नेटी हँसता हुआ अन्दर घुसा और कहने लगा—अच्छा, तो मैं ठीक ही निकला! ठीक ही स्थान पर आया! वह कमर तक कीचड़ से सन रहा था। उसका चेहरा उड़ा हुआ था और आँखें नीचे को झुकी हुई थीं।

'हम लोग तो अपने यहाँ आफत में पड़ गये।' वह दर्वाजा बन्द करके धीरे से बोला।

'हाँ, मैं जानती हूँ।'

मा का उत्तर सुनकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। अस्तु, आखें मिचकाते हुए उसने पूछा—तुम्हे कैसे मालूम हो गया? कहाँ से इतनी जल्द खबर मिल गई?

मा ने थोड़े-से शब्दों में जल्दी-जल्दी उसे सब हाल सुना दिया और पूछा—क्या और भी बन्धु पकड़े गये हैं?

'और बन्धु तो वहाँ पर नहीं थे। वे लोग भरती में गये हुए थे। राइविन सहित कुल पाँच पकड़ लिये गये हैं।'

इतना कहकर वह छींका। फिर मुस्कराता हुआ बोला—मैं बच गया हूँ। मैं समझता हूँ, वे मेरी भी तलाश कर रहे होंगे। परन्तु ढूँढ़ने दो। मैं तो वहाँ लौटकर अब नहीं जाऊँगा। चाहे जो कुछ भी हो। वहाँ अभी कुछ और लोग भी बचे हुए हैं—लगभग सात नौजवान और एक छोकरी अभी बाहर है। कोई चिन्ता की बात नहीं है। वे सब विश्वासपात्र लोग हैं।

'यहाँ तक तुम कैसे पहुँच गये?' मा ने मुस्कराते हुए पूछा।

इतने में कमरे का दरवाजा धीरे से खुला।

'मैं?' एक तिपाई पर बैठता हुआ और चारों तरफ घूरकर देखता हुआ इग्नेटी बोला—वे लोग रात को चुपचाप रेंगते हुए सीधे तारकोल के कारखाने के पास आ पहुँचे

थे। उनके हमारे यहाँ आ धमकने के कुछ क्षण पहले ही जंगल का चौकीदार दौड़ता हुआ आया और खिड़की पर धक्का मारकर बोला—खबरदार, आ रहे हैं तुम्हें पकड़ने।

इतना कहकर इग्नेटी धीरे से हँसा और अपने कोट के पल्ले से मुँह पोंछता फिर कहने लगा—खैर, काका माइखेल को तो हथौड़ों से ठोंककर भी वे बेहोश नहीं कर सकते। काका ने चौकीदार की बात सुनते ही तुरन्त मुझसे कहा—इग्नेटी, भाग शहर को जल्दी से! याद है न तुझे उस बुढ़िया की? यह कहकर काका ने अपने हाथ से जल्दी-जल्दी तुम्हारे लिए एक पुर्जा लिखा और बोला—लो, जाता हूँ। अलविदा, बन्धु। फिर यह पुर्जा मेरे हाथ में देकर उसने मुझे धक्का मारकर झोपड़े में से निकाल दिया। मैं तीर की तरह वहाँ से भागा और लेट-लेटकर झाड़ियों में से रेंगता हुआ जाने लगा। मेरे कानों में पुलिस के आदमियों के बढ़ने की आवाज आ रही थी। मैं समझता हूँ, वे अवश्य बहुत थे। चारों तरफ से पत्तियों के खरखराने की आवाज आ रही थी। निशाचर जंगली भैंसों की तरह रात में तारकोल के कारखाने की तरफ बढ़े आ रहे थे। मैं झाड़ियों में छिप गया और वे मेरे नजदीक से होते हुए निकल गये। उनके निकल जाने पर मैं फिर उठकर चला और दो रात और एक दिन तक लगातार चलता रहा। मेरे पैर, मैं समझता हूँ, एक सप्ताह तक दुखेंगे।

उसे अपने ऊपर बड़ा सन्तोष था। उसकी भूरी आँखों में मुस्कराहट चमक रही थी और उसके लाल-लाल होंठ काँप रहे थे।

'मैं तुम्हें थोड़ी-सी चाय पिलाकर अभी ठीक किये देती हूँ। तुम हाथ-मुँह धोकर तैयार हो। इतने में मैं सेमोवार तैयार किये लेती हूँ।'

'मैं तुम्हे राइबिन का पुर्जा देता हूँ।' इतना कहकर इग्नेटी ने बड़ी कठिनता से अपना एक पाँव ऊपर को उठाया और क्रोध से झुँझलाते हुए उसे तिपाई पर रखकर कराहता हुआ पैरों की पट्टी खोलने लगा।

'मैं डर गया। मैं तो समझा कि बस आ पहुँचे मुझे लेने!' निकोले ने द्वार पर से ही कहा

इग्नेटी ने सिटपिटाकर पैर जमीन पर गिरा दिया और उठने लगा; परन्तु उसके पाँव लड़खड़ाये और दोनों हाथों से अपना शरीर पकड़े हुए तिपाई पर धम्म से गिरकर फिर बैठ गया।

'तुम अपनी जगह पर ही चुपचाप बैठे रहो!' मा ने उससे कहा।

'कैसे हो, बन्धु!' निकोले ने सद्भाव से आँखें चढ़ाते हुए और सिर हिलाते हुए पूछा और बोला—लाओ, मैं तुम्हारी पट्टियाँ खोल दूँ।

इतना कहकर वह लपककर किसान के आगे घुटने टेककर बैठ गया और जल्दी-जल्दी उसकी गन्दी और भींगी हुई पैरों की पट्टियाँ खोल डालीं।

'अच्छा!' किसान आश्चर्य से आँखें मिचकाता हुआ अपने पैर पीछे की तरफ

खींचकर धीरे से बोला। फिर वह मा की तरफ देखने लगा। मा ने उसकी तरफ न देखते हुए कहा—इनके पैरों में शराब मल देनी चाहिए।

'हाँ, हाँ! जरूर।' निकोले ने कहा।

इग्नेटी ने सिटपिटाकर एक गहरा निःश्वास लिया। इतने में निकोले की नजर कागज के उस पुर्जे पर पड़ी जो पट्टी में से निकलकर गिर पड़ा था। उसने उस पुर्जे को उठाकर खोला और उसकी सिकुड़न ठीक करते हुए मा के हाथ में देकर कहा—यह तुम्हारे लिए है।

'पढ़ो, क्या लिखा है!'

'मैया, काम की फिक्र रखना। लम्बी बहिन से कह देना कि और भी बहुत-से लिख-लिखकर भेजती रहें। जरूर, भूलना मत। अलविदा। 'राइबिन।'

'मेरा लाड़ला।' मा ने उदास होकर कहा—वे उसे गिरफ्तार करने आते हैं। परन्तु वह...

निकोले ने अपने हाथ चुपचाप नीचे गिरा दिये। परन्तु पुर्जा अभी तक उसके हाथ में ही था।

'कैसी बहादुरी से काम लेता है!' वह धीरे से सम्मान-सूचक शब्दों में कहने लगा—इससे हृदय पर चोट भी लगती है और शिक्षा भी मिलती है।

इग्नेटी ने उन दोनों के चेहरों की तरफ देखा और चुपचाप अपने मित्र के सने हुए हाथों से अपने पैरों को थपथपाने लगा। मा अपने आँसुओं को आँखों में ही छिपाती हुई दौड़कर एक बर्तन मे पानी भर लाई और उसके पास जमीन पर बैठकर उसने इग्नेटी के पैरों की तरफ हाथ बढ़ाये। परन्तु इग्नेटी ने जल्दी से पैरों को घसीटकर तिपाई के नीचे कर लिया और आश्चर्य से चिल्लाया—क्या करती हो!

'जल्दी अपने पैर इधर बढ़ा दो।'

'मैं अभी शराब लाता हूँ।' निकोले ने कहा।

नौजवान अपने पैर तिपाई के नीचे सिकोड़ता हुआ बड़बड़ाया—क्या करना चाहती हो? यह मैं तुम्हें नहीं करने दूँगा। यह बड़ा अनुचित है।

परन्तु मा ने चुपचाप उसके पाँव पकड़ लिये और पानी से उन्हें साफ करने लगी। इग्नेटी का गोल-मटोल चेहरा आश्चर्य से लम्बा हो गया और वह हक्का-बक्का होकर आँखें फाड़-फाड़कर चारों तरफ देखने लगा।

'तुम्हारे छूने से मेरे पैर में गुदगुदी-सी होती है। रहने दो।'

'इतना गरम पानी सह सकते हो? जलाता तो नहीं है?' मा ने पैर धोते हुए पूछा।

इग्नेटी जोर-जोर से साँस ले रहा था और भोंडी तरह पर गर्दन हिलाता हुआ विदूषक की तरह निचला होठ लटकाये हुए मा की तरफ घूर रहा था।

'जानते हो?' मा ने काँपते हुए स्वर से उससे कहा—उन्होंने राइबिन को रास्ते में बहुत मारा।

'क्या ?' किसान ने डरी हुई आवाज में चिल्लाकर पूछा।

'हाँ, गाँव से ले जाते समय उन्होंने उसको रास्ते में बहुत पीटा। निकोल्स्क में भी उसको एक सवार ने खूब पीटा और थानेदार ने उसके मुँह पर खूब तमाचे और घूँसे मारे और उसके इतनी ठोकरे लगाईं कि उसके शरीर से खून की धाराएँ बह उठीं।' राइविन की याद आते ही मा का दिल भर आया और गला रुँध जाने से एकाएक वह चुप हो गई।

'अच्छा ! ऐसा भी होता है ?' किसान भौंहें नीची करता हुआ बोला और उसके कन्धे हिलने लगे—मैं उन शैतानों से बड़ा डरता हूँ। अच्छा, किसानों ने तो उसको नहीं मारा ?

'एक किसान ने भी मारा। परन्तु थानेदार ने उसको मारने का हुक्म दिया था। दूसरे किसानों से भी उसने कहा था, परन्तु वे टाल-मटोल करते रहे। कुछ किसान राइविन की तरफदारी भी कर रहे थे और कह रहे थे—उसे मारते क्यों हो ? मारने का क्या अधिकार है ?'

'हूँ। अच्छा, अच्छा। तो अब किसान भी समझने लगे हैं कि कौन क्या कहता है ? कौन क्या चाहता है ?'

'किसानों में भी बुद्धि होने लगी है !'

'बुद्धिमान कहाँ नहीं हैं ? परन्तु पापी पेट उन्हें दबाये हुए है। बुद्धिमान हर जगह हैं। परन्तु उनको पाना कठिन हो रहा है। वे बेचारे गुफाओं और कन्दराओं में छिपे-छिपे रहते हैं, और अपने जिगर का खून पी-पीकर रहते हैं। उनका निश्चय अभी तक इतना दृढ़ नहीं हुआ है कि वे सब मिल कर एक हो जायँ !'

निकोले शराब की एक बोतल लेकर आया और उसे मेज पर रखकर और सेमोवार में कुछ कोयले डालकर चुपचाप बाहर चला गया। इग्नेटी ने उसकी तरफ एक विचित्र दृष्टि से देखते हुए पूछा—यह श्रीमान् हैं।

'नहीं, हमारे काम में कोई श्रीमान् या मालिक नहीं है। सभी बन्धु हैं।'

'मुझे बड़ा आश्चर्य होता है !' इग्नेटी ने अविश्वास से खिसियाई हुई हँसी हँसते हुए कहा।

'किस बात का आश्चर्य ?'

'यही कि एक तरफ तो ऐसे लोग हैं जो हमारे मुँह पर मारते हैं, और दूसरी तरफ ऐसे लोग भी हैं जो हमारे पाँव तक धोते हैं। क्या इन दोनों के बीच में कोई नहीं है ?'

एकाएक कमरे का दरवाजा खुला और निकोले चौखट पर बोला—हाँ ! बीच में वे लोग हैं जो पीटनेवालों के हाथ चाटते हैं और पीटनेवालों का खून चूसते हैं !

इग्नेटी ने निकोले की तरफ सम्मान की दृष्टि से देखा और कुछ देर चुप रहकर बोला—ठीक कहते हो !

मा ने एक गहरी साँस ली और बोली—माइखेल आइवानोविच भी हमेशा इसी प्रकार कुल्हाड़ी का वार करता हुआ कहा करता था—ठीक कहा।

'निलोवना, लगता है, तुम बड़ी थकी हुई हो। मुझे धोने दो। लाओ, अच्छी तरह...'

किसान ने एकाएक घबराकर अपना पाँव पीछे की तरफ खींच लिया—'हो गया। हो गया।' मा ने उठते हुए कहा—अच्छा, इग्नेटी, अब अपने-आप धो डालो।

नौजवान उठा और पैर हिलाकर दृढ़ता से फर्श पर चलने का प्रयत्न करने लगा।

'पैरों में फिर से जान आ गई! धन्यवाद! बहुत-बहुत धन्यवाद!

फिर उसने मुँह बना लिया। उसके होंठ काँप उठे और उसकी आँखें लाल हो गईं। कुछ देर तक चुप रहकर अपने आगे रखे हुए काले पानी से भरे बर्तन की तरफ देखता हुआ वह धीरे-धीरे बड़बड़ाने लगा—कैसे तुम्हें धन्यवाद दूँ! मुझे तो ठीक तरह से धन्यवाद देना भी नहीं आता!

फिर वे लोग जब चाय पीने के लिए मेज पर बैठ गये तो इग्नेटी ने गम्भीरता-पूर्वक कहना प्रारम्भ किया—मैं गाँव में पर्चे बाँटने का काम करता था। मैं चलने में बड़ा तेज और मजबूत हूँ। इसलिए काका माइखेल ने मुझे यह काम सौंपा था। 'पर्चे बाँटो!' उन्होंने मुझसे कहा—और पकड़े जाओ तो किसी का नाम मत लेना। कहना अकेले ही हो।

'क्या गाँवों में पर्चे बहुत से लोग पढ़ते हैं?' निकोले ने पूछा।

'जो पढ़ सकते हैं वे सभी पढ़ते हैं। धनिक भी पढ़ते हैं। हाँ, हमसे लेकर वे तो जरूर नहीं पढ़ते। हम उन्हें देने जायँ तो वे ठौर ही हमारी मुश्कें बँधवा लें और पुलिस के हवाले कर दें। परन्तु वे अच्छी तरह समझने लगे हैं कि उनकी शानो-शौकत कुछ ही दिन की रह गई। वह उस धोखे की टट्टी पर अब अधिक दिन टिक नहीं सकते!'

'ऐसा क्यों समझने लगे हैं?'

इग्नेटी आश्चर्य से बोला—क्योंकि किसान उनसे जमीन छीनकर अब अपने हाथों में करना चाहते हैं। धनिकों और श्रीमन्तों के पाँवों के तले से वह अब जमीन को अपना खून बहाकर भी निकाल लेने की तैयारी करने लगे हैं। जमीन पर अपना अधिकार जमाकर वे उसको इस प्रकार आपस में बाँटना चाहते हैं कि मालिक और मजदूर कोई न रहे जिससे लोग दो भागों में न बँटें और यह रोज के झगड़े-बखेड़े भी न रहें।

इग्नेटी को निकोले का उससे इस प्रकार प्रश्न पूछना अच्छा नहीं लगा था। अस्तु, वह निकोले की तरफ अविश्वास की दृष्टि से देख रहा था; परन्तु निकोले उसकी तरफ देखता हुआ मुस्कुरा रहा था।

'नाराज मत हो!' मा ने इग्नेटी से मजाक करते हुए कहा।

इतने में निकोले सोचता हुआ कहने लगा—राइबिन की गिरफ्तारी के संबन्ध में जो पर्चा तैयार हुआ है, उसे गाँवों में कैसे बँटवाया जायगा?

इग्नेटी ने उसके प्रश्न पर कान खड़े किये।

'मैं आज व्यसोवशचिकोव से इस काम के लिए कहूँगा।'

'क्या राइबिन के प्रबन्ध में पर्चा तैयार भी हो गया है?' इग्नेटी ने पूछा।

'हाँ!'

'मुझे दो। मैं ले जाऊँगा!' इग्नेटी ने प्रस्ताव करते हुए अपने दोनों हाथ मले और उसकी आँखें एकाएक चमक उठीं। मैं जानता हूँ, कहाँ और कैसे उन पर्चों को ले जाकर बाँटना चाहिए, मुझे ले जाने दो!

मा उसकी ओर मुँह फेरकर चुपचाप हँसने लगी।

'नहीं, तुम बड़े थके और डरे हुए हो। और तुमने अभी यह भी कहा था कि अब तुम कभी उधर लौटकर नहीं जाओगे!'

इग्नेटी यह सुनकर अपने होंठ चबाने लगा और अपने घुँघराले बालों पर हाथ फेरता हुआ बोला—हाँ, मैं थका हुआ हूँ और आराम करना चाहता हूँ। मैं डरा हुआ भी जरूर हूँ! फिर व्यवहारू ढङ्ग से वह शान्तिपूर्वक कहने लगा—वे लोगों को इतना मारते हैं कि खून तक शरीर से बहने लगता है! तुम्हीं अभी बता रही थीं। फिर अपनी हड्डियाँ तुड़वाने का शौक किसको हो सकता है? परन्तु मैं किसी-न-किसी तरह वहाँ रातो-रात जा पहुँचूँगा! कोई फ़िक्र की बात नहीं है। मुझे पर्चे दो! आज ही शाम को मैं चल दूँगा। इतना कहकर वह चुप हो गया और कुछ देर भौंहें चलाता हुआ सोचता रहा—मैं जंगल में पर्चे छिपा दूँगा और फिर अपने आदमियों को खबर कर दूँगा कि जाकर वहाँ से पर्चे ले लो। यही ठीक रहेगा। मैं खुद ही बाँटने जाऊँ तो शायद पकड़ लिया जाऊँ और पर्चे न बँट सकें। तुम्हें इस तरफ बड़ी सावधानी से काम करना चाहिए, क्योंकि ऐसे पर्चे मिलते रहना बड़ा जरूरी है। कहीं तुम लोग पकड़ न जाना, जिससे पर्चे निकलने ही बन्द हो जायँ!

'तुम्हारे डर को क्या हुआ?' माने फिर मुस्कराते हुए उससे पूछा। घुँघराले बालों का यह बलिष्ठ किसान नवयुवक अपने सच्चे और स्वाभाविक व्यवहार से मा का हृदय गद्गद कर रहा था। सचाई उसके प्रत्येक शब्द से टपकती थी और उसके गोल और दृढ़ मुख पर स्पष्ट चमकती थी।

'डर तो लगता है, परन्तु साथ-ही-साथ काम भी तो करना ही है!' वह दाँत निकालता हुआ कहने लगा—तुम मेरे ऊपर इस तरह हँसती क्यों हो? तुम भी हँस रहे हो? क्यों, क्या ऐसे मामले में डरना स्वाभाविक नहीं है? फिर भी जरूरत होगी तो आग में भी कूदना होगा। ऐसे काम में उसकी भी नौबत आ सकती है। क्यों?

'मेरे बेटे!'

इग्नेटी मा के लाड़ से सिटपिटाकर मुस्कराता हुआ बोला—यह लो। यह क्या कहती हो। क्या मैं ठीक नहीं कहता?

निकोले सद्भाव से ऊपर को आँखें चढ़ाकर किसान की तरफ देखता हुआ कहने लगा—नहीं, तुम उधर नहीं जाओगे!

'तो फिर मैं यहाँ क्या करूँगा? यहाँ कहाँ रहूँगा?' इग्नेटी ने बेचैनी से उससे पूछा।

'तुम्हारी बजाय उस तरफ दूसरा आदमी भेज दिया जायगा। तुम उसे सब जरूरी बातें बता देना कि कहाँ जाकर क्या करे और किससे मिले, इत्यादि।'

'बहुत अच्छा!' इग्नेटी ने कहा। परन्तु वह बड़ी देर में और बड़ी अनिच्छा से इस बात पर राजी हुआ।

'तुम्हारे लिए हम एक पासपोर्ट मँगवा लेंगे और सरकारी जंगलों में पहरेदार का काम करने के लिए कहीं भेज देंगे।'

नौजवान ने यह सुनते ही पीछे की तरफ अपना सिर फेंक दिया और घबराकर पूछा—परन्तु जंगलों में किसान काटने या जानवर चराने आयें तो क्या मैं उन्हें रोकूँगा? नहीं, यह मुझसे न होगा।

मा हँसने लगी और उसके साथ-साथ निकोले भी हँसने लगा। इससे फिर इग्नेटी खिटपिटाया और चिढ़ा।

'घबराओ मत!' निकोले ने उसे समझाते हुए कहा—तुम्हें किसानों को बाँधना नहीं पड़ेगा। इस बात के लिए हम पर विश्वास रखो।

'अच्छा, अच्छा।' सन्तुष्ट होकर विश्वासपूर्ण दृष्टि से निकोले की तरफ मुस्कराता हुआ इग्नेटी बोला—मुझे किसी कारखाने में काम करने के लिए भेज दो तो बड़ा अच्छा हो। सुनता हूँ, वहाँ लोग बड़े होशियार हो जाते हैं।

उसकी विशाल छाती में एक आग-सी धधक रही थी, जिसे अपनी शक्ति पर अभी तक विश्वास नहीं लगता था। अस्तु, वह भीतर-ही-भीतर प्रज्वलित होती हुई आँखों में चमकती थी और बीच-बीच में भय से भागकर घबराहट और शिक्षक के धुएँ के पीछे काँपती हुई छिपने लगती थी।

मा मेज के पास से उठकर खिड़की के पास जाकर खड़ी हो गई और बाहर की तरफ देखती हुई कुछ सोचने लगी—जीवन भी अजीब चीज है। दिन में पाँच बार हँसने का मौका आता है तो पाँच बार रोने का। फिर मुड़कर बोली—अच्छा! ठीक है। अच्छा तो तुम अब सब समझ गये न इग्नेटी? जाओ, अब मेरे बिस्तर पर लेटकर सो जाओ!

'परन्तु मुझे अभी नींद नहीं लगी है।'

'जाओ, जाओ, लेट रहो।'

'तुम लोग बड़े निठुर हो! अच्छा! अच्छा! तुम्हारी चाय, शक्कर और कृपा के लिए धन्वाद। तो मैं लेटने जाता हूँ।'

मा के बिस्तर पर लेटकर फिर वह अपना सिर खुजलाता हुआ बड़बड़ाने लगा—तुम्हारे घर-भर में मेरे शरीर के कोलतार की बदबू फैलकर बस जायगी! उफ! यह सब व्यर्थ का लाड़-प्यार है—यह स्पष्ट पुचकारना क्यों है? मैं अभी नहीं सोना चाहता। तुम लोग बड़े अच्छे हो! परन्तु यह बातें मेरी समझ में बिलकुल नहीं आतीं। ऐसा लगता है कि मैं किसी देव-लोक में आ गया हूँ। अपने गाँव से बड़ी दूर चला आया हूँ! बीच-

के लोगों के लिए उसने कैसा अच्छा कहा—बीच में वे लोग हैं जो पिटनेवालों के हाथ चाटते हैं, और पिटनेवालों का...हूँ...!

एकाएक खुर्राटे की आवाज आने लगी। उसे एकदम गहरी नींद ने आ दबाया था। उसकी भौंहें ऊपर को चढ़ गई थीं, और मुँह आधा खुला हुआ था।

फिर बहुत रात बीत जाने पर वह एक कमरे में मेज के पास बैठा व्यसोवशचिकोव से बातें करता हुआ दिखाई दिया। भौंहें चढ़ाते हुए दबी आवाज से वह उसे समझा रहा था—देखो, उस मकान की बीच की खिड़की पर चार बार खटकाना।

'चार बार!'

'हाँ, पहले तीन बार इस प्रकार।'—अपनी उँगली मेज पर मारते हुए जोर से तीन बार गिना।

'फिर जरा ठहरकर, एक बार इस तरह, समझे?'

'हाँ, मैं अच्छी तरह समझ गया।'

'इस प्रकार खटका होने पर एक लाल बालों का किसान द्वार खोलेगा और पूछेगा—क्या दाई चाहिए? तुम कहना—हाँ, मालिक ने भेजा है! बस, वह सारा मतलब समझ जायगा।'

दोनों हट्टे-कट्टे नौजवान एक-दूसरे की तरफ झुके हुए बैठे थे, और इस प्रकार धीरे-धीरे आपस में बातें कर रहे थे। मा मेज के पास छाती पर हाथ पर हाथ बाँधे खड़ी थी और उन दोनों की तरफ ध्यान-पूर्वक देख रही थी। उनके गुप्त मन्त्रों और इशारों पर वह अन्दर मुस्कराती हुई सोचती थी—अभी निरे छोकरे ही हैं।

दीवार पर लगा हुआ एक लैंप जल रहा था, जिसका मन्द-मन्द प्रकाश कमरे के एक सीले और अन्धकार-पूर्ण स्थान पर और अखबारों की जमीन पर फैली हुई तसवीरों पर पड़ रहा था। फर्श पर इधर-उधर बहुत-से पुराने बर्तन भी बिखरे हुए पड़े थे। एक बड़ा चमकदार सितारा खिड़की में से बाहर अन्धकार में चमकता हुआ दिखाई दे रहा था। गीली वार्निश और सीली मिट्टी की महक कमरे में चारों तरफ भर रही थी।

इग्नेटी के शरीर पर एक ढीला-ढीला ओवरकोट पड़ा था, जिसे पहनकर वह बड़ा खुश लगता था। मा ने देखा कि वह बार-बार उस पर हाथ फिरा-फिराकर देखता था और बड़ी भोंडी तरह से गर्दन घुमा-घुमाकर यह देखने का प्रयत्न करता था कि वह उस पर कैसा लगता है। उसके इस सरल व्यवहार को देख-देखकर मा के हृदय में बार-बार यह आवाज उठती थी—मेरे लाड़ले! मेरे बच्चे! मेरे बेटे!

'अच्छा!' इग्नेटी उठता हुआ बोला—याद हो गया सब! पहले मुराटोव के घर जाना और उसके दादा को पूछना!

'हाँ, याद हो गया।'

परन्तु इग्नेटी को अभी तक निकोले की याद पर अच्छी तरह विश्वास नहीं हुआ था। अस्तु, वह बार-बार सारी बातें, शब्द और संकेत, उसको दुहरा-दुहराकर बता रहा

था। आखिरकार उसने निकोले से अपना हाथ मिलाने के लिए बढ़ाया और बोला—अच्छा बन्धु, अलविदा! उन सबसे मेरा प्रणाम कहना और कहना कि मैं जीवित हूँ और अच्छी तरह हूँ। वे लोग बड़े अच्छे हैं। तुम स्वयं ही देख लोगे! यह कहकर उसने फिर सन्तोषपूर्ण दृष्टि अपने शरीर पर डाली और ओवरकोट पर हाथ फेरता हुआ मा से पूछने लगा—अच्छा, तो अब मैं जाऊँ? और फिर निकोले से पूछा—रास्ता तो याद हो गया है न?

'हाँ!'

'अच्छा बन्धुओ, अलविदा!' कहता हुआ इग्नेटी उठा और अपने कन्धे ऊपर को उठाकर और छाती बाहर की तरफ निकालकर, अपना नया टोप सिर पर तिरछा करके लगाया और हाथ जेबों में डालकर शान के साथ झूमता हुआ चला गया। उसके माथे और कनपटियों पर लटकते हुए घुँघराले बाल लहराते हुए अच्छे लग रहे थे।

'लो, मुझको भी आखिर काम मिल ही गया।' व्यसोवशचिकोव माँ के पास जाकर धीरे से बोला—मेरा जी भी ऊब उठा था। जेल में से भागकर मैं क्यों आया था? क्या इसलिए कि छिपे-छिपे फिरूँ और कोई काम न करूँ? वहाँ मैं कम से कम पढ़ता तो था! पवेल की सङ्गत में रहने से मुझे बहुत-सी बातें सीखने को भी मिलती थीं और बड़ा आनन्द आता था। ऐन्ड्री भी हम लोगों को रोज कुछ न कुछ सिखाता रहता था। अच्छा निलोवना, तुम्हें कुछ खबर मिली है? उन्होंने जेल से भागने के बारे में क्या निश्चय किया है? भागेंगे?

'परसों निश्चय करेंगे!' मा बोली। उसके मुँह से इतना कहकर आप से आप एक आह निकली और गहरी साँस भरती हुई वह कहने लगी—एक दिन और है। परसों निश्चय करेंगे।

अपना भारी हाथ मा के कन्धे पर रखकर और अपना मुँह उसके मुँह के नजदीक ले जाकर निकोले आवेश से बोला—तुम उन लोगों से कहना। तुम्हारी बात उनमें जो बड़े हैं, जरूर सुनेंगे! उनसे कहना कि भागना बड़ा आसान है! जेल की दीवार के पास जिस तरफ एक लेम्प का खम्भा है, उस तरफ बाहर एक बड़ा लम्बा-चौड़ा खाली मैदान है। उस मैदान के बाईं तरफ एक कब्रस्तान है और दाईं तरफ वह सड़क है जो शहर को आती है। जेल का लेम्प जलानेवाला रोज इस खम्भे के पास जाकर सीढ़ी लगाकर दीवार पर चढ़ता है और लैम्प साफ करके सीढ़ी जेल के सहन में डालकर दूसरा काम करने चला जाता है। वे लोग रोज अन्दर से उसे ऐसा करते देखते हैं। मेरा कहना है कि किसी दिन जैसे ही सीढ़ी दीवार पर लगे, ये लोग जेल में कैदियों को सिखाकर कोई झगड़ा-बखेड़ा खड़ा करा दें और जैसे ही लोगों का ध्यान उधर हो, वैसे ही जिन्हें भागना हो वे दौड़कर सीढ़ी पर होते हुए जेल की दीवार पर चढ़ जायँ और बाहर की तरफ कूद-कर एक-दो-तीन हो जायँ। बस फिर क्या है! काम पूरा हो गया।

'बाहर कूदकर वे चुपचाप शहर की तरफ चल दें। क्योंकि जेल के सिपाही

किसी कैदी के भागने पर पहिले मैदान और कब्रस्तान की तरफ उसकी तलाश में दौड़ते हैं।'

मा के मुँह के पास जोर-जोर से अपने हाथ हिलाता हुआ नकशा बना-बनाकर वह उसे भागने का रास्ता समझा रहा था। मा उसे हमेशा से निरा भोंदू ही समझती थी, क्योंकि उभरी हुई हड्डियों का उसका चेचकरू चेहरा हमेशा उदास रहा करता रहा था। और वह बहुत कम बोलता था। अस्तु, आज उसको इतना सजीव पाकर मा को बड़ा आश्चर्य हो रहा था। उसकी छोटी-छोटी भूरी आँखें, जो पहले मा को कठोर और रूखी लगती थीं, क्योंकि वे हमेशा दुनिया को विद्वेष और अविश्वास की दृष्टि से ही देखा करती थीं, अब उसे एक बिलकुल नये साँचे में ढली हुई लगीं। वे गोल-गोल आँखें एक ऐसे सम-तेज से चमक रही थीं, जिससे मा के हृदय पर प्रभाव पड़ रहा था, और उसमें विश्वास पैदा हो रहा था।

'सोचो तो—दिन में भाग सकते हैं। हाँ, हाँ, दिन में। किसी को कल्पना भी हो सकेगी कि कोई कैदी दिन में जेल से भागने का प्रयत्न करेगा!'

'और गोली चला दी तो!' मा ने काँपते हुए कहा।

'कौन गोली चलायेगा? यहाँ सिपाही नहीं होते। जेल के नम्बरदार सिर्फ वहाँ रहते हैं, उन लोगों की पिस्तौलें इतनी बढ़िया होती है कि वे उनसे जेल में कीलें ठोंकने का काम लेते हैं।'

'हाँ? तब तो बड़ा आसान है!'

'हाँ, सब काम बड़ी आसानी से हो सकता है। उनसे समझाकर कहना। मैंने सब प्रबन्ध कर लिया है। सीढ़ी भी तैयार है और जिस बन्धु के यहाँ मैं ठहरा हूँ, वह बत्ती जलानेवाला बन जायगा।'

इतने में किसी के द्वार पर खाँसने की आवाज हुई और लोहा या टीन के बजने की-सी कुछ टन्-टन् सुनाई दी।

'लो, वह भी आ गया!' निकोले बोला।

द्वार खुला और उसमें से एक टीन का नहाने का टब अन्दर घुसेड़ते हुए एक भारी आवाज ने कहा—अबे, घुस अन्दर।

टब के पीछे एक गोल-गोल भूरे रंग का नंगा सिर अन्दर घुसा। उसकी आँखें बाहर को निकली हुई थीं और मुँह पर मूँछें थीं। वह मुस्करा रहा था। निकोले ने उठकर उसको दर्वाजे के अन्दर घुसेड़ने में सहायता दी। एक लम्बा, झुके हुए शरीर का मनुष्य टब धकियाता हुआ अन्दर घुस आया। अन्दर घुसकर वह फिर खाँसा और उसके चिकने-चिकने गाल फूल गये। अस्तु, उसने थूकते हुए भारी आवाज से कमरे में उपस्थित लोगों का अभिवादन किया—प्रणाम!

'लो! इनसे पूछ लो!'

'मुझसे पूछ लें? क्या?'

'जेल से भागने का रास्ता !'

'ओह !' उस आदमी ने अपनी मूँछों पर हाथ फेरते हुए कहा ।

'देखो, याकोव वेसीलोविश ! मा को विश्वास नहीं होता कि जेल से भाग आना आसान है !'

'हाँ ! विश्वास नहीं होता ? विश्वास न होने का क्या मतलब है ? विश्वास अपने-आप थोड़े ही हृदय में घुस जाता है ? विश्वास तो करने से होता है ! यह कहो कि यह विश्वास करना ही नहीं चाहती हैं । तुम और हम विश्वास करना चाहते हैं । अस्तु, हम लोगों को विश्वास है !' बूढ़ा फिर एकाएक झुका और खाँसने लगा और देर तक खाँसता हुआ छाती पर हाथ मलता रहा । कमरे के बीच में खड़ा-खड़ा वह मा की तरफ आँखें फाड़-फाड़कर देख रहा था, और अपनी साँस ठीक करने का प्रयत्न कर रहा था ।

'परन्तु मुझको तो निश्चय नहीं करना है, निकोले !'

'लेकिन मा, तुम उन लोगों को समझा तो सकती हो ! उन्हें जाकर समझा दो कि हम लोगों ने सारी तैयारी कर ली है ! ओह ! अगर मैं उनसे मिल सकता तो मैं उन्हें जरूर-जरूर राजी होने के लिए मजबूर कर देता ।' यह कहते हुए उसने जोर से आगे की तरफ हाथ फेंके और उनको फिर दृढ़ता से अपने सीने पर ऐसे चिपटा लिया मानों वह किसी को जोर से आलिङ्गन कर रहा हो । उसकी आवाज में इतना भाव था कि मा को उसे सुनकर बड़ा आश्चर्य हो रहा था ।

'अजीब आदमी है !' मा अपने मन में सोचने लगी । फिर जोर से बोली—निश्चय करना तो पाशा और बन्धुओं के हाथ में है !

निकोले ने कुछ विचारते हुए सिर झुका लिया ।

'यह पाशा कौन है ?' आनेवाले आदमी ने बैठते हुए पूछा ।

'मेरा लड़का है !'

'तुम्हारा कुटुम्ब क्या कहलाता है ?'

'व्लेसोव !'

मनुष्य ने सिर हिलाते हुए जेब में से अपनी हुक्किया निकाली और झटककर उसे साफ किया और उसमें तम्बाकू भरते हुए टूटी आवाज से कहने उगा—मैंने उसका नाम तो सुना है । मेरा भतीजा उसे अच्छी तरह जानता है । मेरा भतीजा भी जेल में है । उसका नाम येवचेन्को है । तुमने कभी उसके बारे में भी कुछ सुना ? मेरा कुटुम्ब गोबन कहलाता है । कुछ दिनों में, लगता है, नौजवान तो सारे जेलों में भर दिये जायँगे, और बूढ़े लोग घरों पर रह जायँगे । फिर हम बूढ़ों को मजा हो जायगा । खूब खाने-पीने को मिलेगा । मुझे विश्वास दिलाते हैं कि मेरे भतीजों को कालापानी जरूर हो जायगा ! उसको वे साइबेरिया भेज देंगे !...कुत्ते !

हुक्किया सुलगाकर वह दम लगाने और फर्श पर थूकने लगा और निकोले की तरफ देखता हुआ कहने लगा—हाँ, तो वह भागना नहीं चाहते ? अच्छा, उनकी मर्जी ! जिसको

जैसा अच्छा लगे, वैसा करे। जेल में बैठा-बैठा थक जाये तो भाग आये! भागने को जी न चाहता हो, वहीं बैठा रहे। लूट लिया जाय तो चुप रहे। पीटा जाय तो सह ले। मार डाला जाय तो कब्र में सो जाये। क्यों, ऐसा ही है न! परन्तु मैं अपने भतीजे को तो राजी कर सकता हूँ। हाँ, मैं उसको जरूर राजी कर सकता हूँ। उसकी तीखी, व्यंग्य-पूर्ण बकबक पर मा को आश्चर्य हो रहा रहा था। परन्तु उसके इन अन्तिम शब्दों से कि मैं अपने भतीजे को जरूर राजी कर सकता हूँ, मा के मन में ईर्ष्या उत्पन्न हुई।

फिर घर से निकलकर सड़क पर ठण्ड और मेंह में चलती हुई वह निकोले के बारे में सोचने लगी—उसकी भी कैसी कायापलट हो गई है! देखो तो! फिर गोडन की याद आई तो वह भगवान का नाम लेती हुई विचारने लगी—ऐसा लगता है कि मैं ही अकेली नये युग की आशा में नहीं जीती हूँ। नवयुग की ज्योति को जो एक बार देख लेता है, उसी को वह पवित्र बनाती हुई जलाने लगती है! सचमुच वह एक महाज्योति है! इस प्रकार सोचते-सोचते फिर उसे अपने लड़के का ध्यान हो आया और वह मन-ही-मन कहने लगी—अगर वह भागने के लिए राजी हो जाय तो बड़ा अच्छा हो!

अगले रविवार को जब वह पवेल से मिलकर जेल से जाने लगी, तो उसने एकाएक अपने हाथ में एक छोटी-सी कागज की गाँठ देखी। उसे देखते ही वह ऐसी चौंकी मानों उसे छूकर वह झुलस गई हो। उसने अपने लड़के की तरफ प्रश्नसूचक प्रार्थना की दृष्टि डाली। परन्तु पवेल के चेहरे से उसे कोई उत्तर न मिला। पवेल की नीली-नीली आँखें सदा की भाँति गम्भीर थीं और चुपचाप मुस्करा रही थीं।

अस्तु, 'अलविदा!' कहते हुए मा ने एक आह भरी।

लड़के ने अपना हाथ फैलाकर मा की तरफ मिलाने के लिए बढ़ाया और विशेष स्नेहपूर्ण मधुर शब्दों में बोला—अलविदा अम्माँ!

मा ने उसका हाथ पकड़ लिया और खड़ी होकर उसका मुँह देखने लगी। 'घबराओ मत। नाराज मत होना।' वह बोला।

इन शब्दों से और उसकी भृकुटियों के बीच के दृढ़ बालों से मा को अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया। 'क्यों, क्या हुआ?' मा अपना सिर नीचा करती हुई बड़बड़ाई—क्या हुआ? और यह कहते हुए उसने जल्दी से अपना मुँह मोड़ लिया जिससे उसकी आँखों में भर आनेवाले आँसू और होठों की कँपकँपी पवेल को उसके हृदय का भेद न खोल दें। जेल से निकलकर सड़क पर चलते हुए उसे लगा कि उसके उस हाथ की हड्डियाँ जिससे उसने अपने लड़के का हाथ स्नेह से दबाया था, दुख रही थीं और वे भारी भी पड़ गई थीं, मानों उसके कन्धे पर कोई बड़ी चोट लगी हो।

घर पहुँचते ही उसने कागज निकोले को दिया और उसके सामने खड़ी होकर सुनने की बाट देखने लगी। निकोले कागज खोलकर सीधा करने लगा और मा के हृदय-तन्त्री के तार आशा से झन्नाने लगे। परन्तु निकोले ने कागज पढ़कर कहा— वह यह लिखता

'हम लोग यहाँ से भागेंगे नहीं, नहीं बन्धु, हरगिज नहीं। हममें से एक भी नहीं

भागेगा। ऐसा करने से हमारी सारी इज्जत मिट्टी में मिल जायगी। उस किसान का तो विचार करो जो अभी हाल में गिरफ्तार होकर यहाँ आया है। उसके हित का भी तो हमें अब ध्यान रखना है। तुम लोग जितना समय और रुपया उस पर खर्च कर सकते हो, जरूर करो। उस पर यहाँ बड़ी सख्ती की जा रही है। रोज अधिकारियों से उसका झगड़ा होता है। चौबीस घण्टे की कालकोठरी तो उसे हो ही चुकी है। और भी उसको बहुत तंग किया जा रहा है। हम सब भी उसके लिए लड़ते हैं। मा को ढाढ़स बँधाना। उन्हें प्रेम से रखना। उनसे कहना कि धीरे-धीरे सब समझ में आ जायगा।'—पवेल।

मा ने चुपचाप सरलता से अपना मस्तक ऊँचा किया और अभिमान से सिर हिलाती हुई कहने लगी—खैर, मुझसे कुछ कहने की जरूरत नहीं है। मैं समझती हूँ, छोकरे अधिकारियों के सामने खड़े होकर कहना चाहते हैं, आओ! कुचलो सत्य को! देखें, कैसे कुचलते हो!

निकोले ने यह सुनकर जल्दी से अपना मुँह फिरा लिया और रूमाल निकालकर जोर से नाक साफ करता हुआ बड़बड़ाया—ऊँह! मुझे बड़े जोर का जुकाम हो गया है। फिर चश्मा ठीक करने के बहाने अपनी आँखों पर रूमाल रखकर वह कमरे में टह-लता हुआ बोला—न भागने से सफलता तो हो सकती थी!

'कोई चिन्ता नहीं। अभियोग हो जाने दो!' मा ने क्रोध से दाँत पीसते हुए कहा।

'मेरे पास एक बन्धु का सेण्टपीटर्सबर्ग से पत्र आया है...'

'साइबेरिया से भी तो वह भाग सकता है, क्यों?'

'हाँ, हाँ! सेण्टपीटर्स से बन्धु पत्र में लिखता है कि मुकदमा जल्द ही शुरू होना निश्चय हो गया है। सजा भी निश्चय हो गई है। सभी को काला पानी होगा। देखो, इन धोखेबाजों को! यह लोग अपनी अदालतों का भी खुद ही मजाक उड़ाते हैं! सम-झती हो! मुकदमा प्रारम्भ होने से पहले ही सजा सेण्टपीटर्सबर्ग में निश्चय हो चुकी है!'

'ठहरो!' मा दृढ़ता से बोली—मुझे पुचकारने या समझाने की जरूरत नहीं है। पाशा कोई ऐसा काम नहीं करेगा जो सत्य के विरुद्ध हो। वह कभी व्यर्थ में अपनी आत्मा को कष्ट नहीं देगा। इतना कहकर साँस लेने के लिए वह जरा रुकी और फिर कहने लगी—न वह व्यर्थ में दूसरों की आत्मा को ही कष्ट देगा। उसका मुझ पर बहुत प्रेम है। देखो, वह मेरा कितना ध्यान रखता है! लिखता है, मा को समझा देना। उसको ढाढ़स बँधाना और प्रेम से रखना, क्यों!

मा का हृदय जोर-जोर से धक-धक कर रहा था। परन्तु फिर भी वीरता और आवेश से वह बोल रही थी, और भावातिरेक से उसका सिर चर्राने लगा।

'तुम्हारा लड़का बड़ा अच्छा है। मैं उसे प्यार करता हूँ, और उसे बहुत सम्मान की दृष्टि से देखता हूँ।'

'मैं कहती हूँ...सुनो! राइबिन के बारे में अब हम लोगों को शीघ्र ही कुछ सोचकर करना चाहिए।' मा ने प्रस्ताव किया।

उसकी फौरन ही कुछ करने की इच्छा हो रही थी—कहीं जाने की! इतना पैदल चलने की कि चलते-चलते थककर जमीन पर गिर जाय और सो जाय। दिन-भर चलते-चलते और काम करते-करते थककर सन्तोष से सो जाय।

'हाँ, हाँ! ठीक है!' कमरे में टहलता हुआ निकोले बोला—जरूर! सशेन्का को फौरन बुलाना चाहिए।

'वह आती ही होगी! जिस दिन मैं पाशा से मिलने जाती हूँ, वह यहाँ जरूर आती है।'

सिर झुकाकर विचारता हुआ निकोले मा के निकट सोफा पर बैठ गया। उसके होंठ काँप रहे थे। वह एक हाथ में अपनी दाढ़ी दबाकर उसे मोड़ता हुआ कहने लगा—दुःख है, मेरी बहिन आज यहाँ नहीं है। वरना राइबिन का मामला आज ही हाथ में लेते!

'हाँ, पाशा के सामने हो सब प्रबन्ध हो जाता तो अच्छा था। उसे भी उससे बड़ा आनन्द होता।'

इतने में किसी ने द्वार की घण्टी बजाई। दोनों एक-दूसरे के चेहरे की तरफ देखने लगे।

'आ गई सशा!' निकोले ने धीरे से कहा।

'उससे कैसे कहोगे?' मा ने निकोले के कान में पूछा।

'हाँ-हाँ, बड़ा मुश्किल है।'

'मुझे उस बेचारी पर बड़ी दया आती है!' इतने में घण्टी फिर टनटनाती हुई बजी—परन्तु बहुत जोर से नहीं। ऐसा लगा कि घण्टी बजानेवाला भी किसी विचार में डूबा हुआ था, जिससे बेपरवाही से धीरे-धीरे घण्टी बजा रहा था। निकोले और मा दोनों एक साथ उठकर द्वार खोलने के लिए बढ़े। परन्तु रसोई के द्वार पर पहुँचकर निकोले रुका और एक तरफ हटकर खड़ा हो गया।

'द्वार तुम खोलो!' वह मा से बोला।

'क्यों? राजी नहीं हुआ?' द्वार खुलते ही लड़की ने मा से पूछा।

'नहीं।'

'मैं पहले ही जानती थी।' सशा ने कहा और उसका चेहरा पीला पड़ गया। उसने अपने कोट के बटन खोले और फिर जल्दी से दो बटन बन्द कर दिये। फिर कोट उतारने का प्रयत्न करने लगी तो दो बटन बन्द होने से वह न उतरा। 'बड़ा खराब मौसम हैं। मेह और हवा बहुत है! बड़ा खराब लगता है। पवेल अच्छी तरह तो है?'

'हाँ!'

'खूब अच्छी तरह? आनन्द से? हमेशा सागर की तरह गम्भीर? केवल इतना...' यह कहते-कहते उसका गला भर आया, जिससे वह और कुछ न कह सकी और चुप होकर अपने हाथों की तरफ देखने लगी।

'पवेल लिखता है कि राइबिन को जेल से छुड़ा लेना चाहिए।' मा ने उसकी तरफ से मुँह मोड़े-मोड़े कहा।

'हाँ जिस तरह पवेल को छुड़ाने का विचार किया था, उसी तरह से राइबिन को भी छुड़ाया जा सकता है।'

'मेरा भी यही विचार है।' कमरे के द्वार पर आकर निकोले ने कहा—कैसी हो सशा

लड़की ने उसकी तरफ हाथ बढ़ाते हुए पूछा—फिर पूछना ही किससे है! सभी लोगों की राय है कि यह काम सम्भव है। मैं तो समझती हूँ कि सभी की यही राय है।

'परन्तु इस काम को करने का जिम्मा कौन लेगा? सभी बन्धु काम में फँसे हुए हैं।'

'मैं लूँगी!' सशा ने कहा और फौरन् उछलकर खड़ी हो गई—मेरे पास इस काम के लिए समय है!

'अच्छा, लो! परन्तु दूसरों से भी पूछ लो।'

'अच्छा, अभी जाती हूँ। दूसरों से भी पूछ लेती हूँ।' यह कहकर वह फिर अपनी पतली-पतली उँगलियों से अपने कोट के बटन मजबूती से बन्द करने लगी।

'जरा ठहरो! थोड़ा आराम कर लो!' मा ने उसे सलाह दी।

सशा मुस्कराती हुई कोमल स्वर में कहने लगी—मेरी इतनी चिन्ता न करो। मैं थकी हुई नहीं हूँ। यह कहकर वह मा और निकोले के हाथ स्नेह से दबाकर शान्त और गंभीर चाल से चली गई।

———

उसकी फौरन ही कुछ करने की इच्छा हो रही थी—कहीं जाने की ! इतना पैदल चलने की कि चलते-चलते थककर जमीन पर गिर जाय और सो जाय। दिन-भर चलते-चलते और काम करते-करते थककर सन्तोष से सो जाय।

'हाँ, हाँ ! ठीक है !' कमरे में टहलता हुआ निकोले बोला—जरूर ! सशेन्का को फौरन बुलाना चाहिए।

'वह आती ही होगी ! जिस दिन मैं पाशा से मिलने जाती हूँ, वह यहाँ जरूर आती है।'

सिर झुकाकर विचारता हुआ निकोले मा के निकट सोफा पर बैठ गया। उसके होंठ काँप रहे थे। वह एक हाथ में अपनी दाढ़ी दबाकर उसे मोड़ता हुआ कहने लगा—दुःख है, मेरी बहिन आज यहाँ नहीं है। वरना राइबिन का मामला आज ही हाथ में लेते !

'हाँ, पाशा के सामने ही सब प्रबन्ध हो जाता तो अच्छा था। उसे भी उससे बड़ा आनन्द होता।'

इतने में किसी ने द्वार की घण्टी बजाई। दोनों एक-दूसरे के चेहरे की तरफ देखने लगे।

'आ गई सशा ?' निकोले ने धीरे से कहा।

'उससे कैसे कहोगे ?' मा ने निकोले के कान मे पूछा।

'हाँ-हाँ, बड़ा मुश्किल है।'

'मुझे उस बेचारी पर बड़ी दया आती है !' इतने में घण्टी फिर टनटनाती हुई बजी—परन्तु बहुत जोर से नहीं। ऐसा लगा कि घण्टी बजानेवाला भी किसी विचार में डूबा हुआ था, जिससे बेपरवाही से धीरे-धीरे घण्टी बजा रहा था। निकोले और मा दोनों एक साथ उठकर द्वार खोलने के लिए बढ़े। परन्तु रसोई के द्वार पर पहुँचकर निकोले रुका और एक तरफ हटकर खड़ा हो गया।

'द्वार तुम खोलो !' वह मा से बोला।

'क्यो ? राजी नहीं हुआ ?' द्वार खुलते ही लड़की ने मा से पूछा।

'नहीं।'

'मैं पहले ही जानती थी।' सशा ने कहा और उसका चेहरा पीला पड़ गया। उसने अपने कोट के बटन खोले और फिर जल्दी से दो बटन बन्द कर दिये। फिर कोट उतारने का प्रयत्न करने लगी तो दो बटन बन्द होने से वह न उतरा। 'बड़ा खराब मौसम हैं। मेह और हवा बहुत है ! बड़ा खराब लगता है। पवेल अच्छी तरह तो है ?'

'हाँ !'

'खूब अच्छी तरह ? आनन्द से ? हमेशा सागर की तरह गम्भीर ? केवल इतना...' यह कहते-कहते उसका गला भर आया, जिससे वह और कुछ न कह सकी और चुप होकर अपने हाथों की तरफ देखने लगी।

'पवेल लिखता है कि राइविन को जेल से छुड़ा लेना चाहिए।' मा ने उसकी तरफ से मुँह मोड़े-मोड़े कहा।

'हाँ जिस तरह पवेल को छुड़ाने का विचार किया था, उसी तरह से राइविन को भी छुड़ाया जा सकता है!'

'मेरा भी यही विचार है!' कमरे के द्वार पर आकर निकोले ने कहा—कैसी हो सश

लड़की ने उसकी तरफ हाथ बढ़ाते हुए पूछा—फिर पूछना ही किससे है? सभी लोगों की राय है कि यह काम सम्भव है। मैं तो समझती हूँ कि सभी की यही राय है।

'परन्तु इस काम को करने का जिम्मा कौन लेगा? सभी बन्धु काम में फँसे हुए हैं!'

'मैं लूँगी!' सशा ने कहा और फौरन् उछलकर खड़ी हो गई—मेरे पास इस काम के लिए समय है!

'अच्छा, लो! परन्तु दूसरों से भी पूछ लो।'

'अच्छा, अभी जाती हूँ। दूसरों से भी पूछ लेती हूँ।' यह कहकर वह फिर अपनी पतली-पतली उँगलियों से अपने कोट के बटन मजबूती से बन्द करने लगी।

'जरा ठहरो! थोड़ा आराम कर लो!' मा ने उसे सलाह दी।

सशा मुस्कराती हुई कोमल स्वर में कहने लगी—मेरी इतनी चिन्ता न करो। मैं थकी हुई नहीं हूँ। यह कहकर वह मा और निकोले के हाथ स्नेह से दबाकर शान्त और गंभीर चाल से चली गई।

———

चौंतीसवाँ परिच्छेद

मा और निकोले खिड़की पर खड़े देख रहे थे—लड़की कमरे से निकलकर सहन में से होती हुई सहन के द्वार के बाहर चली गई। निकोले धीरे-धीरे मुँह से सीटी बजाता हुआ आकर मेज पर बैठ गया और कुछ लिखने लगा।

'अच्छा, अब वह इस काम में लग जायगी। इससे उसका समय काटना आसान हो जायगा।' मा ने सोचते हुए कहा।

'हाँ, ठीक है।' निकोले बोला और फिर मा की तरफ घूमकर उसने मुस्कराते हुए पूछा—क्यों निलोवना, क्या तुम भी कभी इस आग में जली थीं ? तुमने भी कभी किसी प्रेमी के लिए विरहाग्नि सही थी ?

'उँह।' मा ने हाथ हिलाते हुए कहा—कैसी विरहाग्नि ? मुझे तो इसी बात का डर रहा करता था कि कहीं उससे मेरा विवाह न कर दिया जाय—उससे मेरा विवाह न कर दिया जाय।

'तुम किसी को नहीं चाहती थीं ?

मा सोचने लगी। फिर बोली—मुझे याद नहीं पड़ता बेटा ! परन्तु ऐसा कैसे हो सकता है कि मैं किसी को नहीं चाहती थी। मैं समझती हूँ, कोई था तो जरूर जिसे मैं चाहती थी ; परन्तु याद नहीं आ रहा है कि वह कौन था।

मा ने निकोले की तरफ देखा और उदास होकर कहने लगी—मेरा पति मुझे बहुत मारता था। बस, इतना ही मुझे याद है। इसके पहले की कोई स्मृति मुझे याद नहीं है।

निकोले ने मेज की तरफ मुँह घुमा लिया। मा जल्दी से कमरे के बाहर क्षण-भर के लिए चली गई। फिर वह लौटकर जब अन्दर आई तो निकोले उसकी तरफ बड़े स्नेह देखता हुआ उसको कोमल और स्नेहपूर्ण शब्दों में अपनी कहानी सुनाने लगा। निकोले के जीवन की पूर्व स्मृतियाँ सुन-सुनकर मा के हृदय को बड़ा आनन्द होने लगा। वह बोला—मैं बिलकुल सशेन्का की तरह था। मैं एक लड़की को बहुत ही चाहता था। वह बड़ी सुन्दर थी—उसकी आश्चर्यजनक सुन्दरता मेरे लिए एक तारे की तरह पथ-प्रदर्शक थी। मेरे लिए वही सारे सौन्दर्य और स्नेह की मूर्ति थी। बीस वर्ष हुए, जब मैं उससे पहले-पहल मिला था। जिस दिन मैंने उसे पहले-पहल देखा, उसी दिन से मैं उसे चाहने लगा। और सच तो यह है कि मैं उसे अभी तक वैसा ही चाहता हूँ। मैं उसे अपनी आत्मा से चाहता हूँ। मेरे ऊपर उसका बड़ा एहसान है। और मैं उसे हमेशा चाहता रहूँगा।

पास में खड़ी हुई मा ने देखा कि यह कहते हुए उसकी आँखें एक आन्तरिक

प्रकाश से स्वच्छ होकर चमकने लगीं ; उसने अपने हाथ पीछे करके कुर्सी की पीठ पर रख लिये और अपना सिर उन पर रखकर आकाश की तरफ देखने लगा और उसका दुबला-पतला, परन्तु ताकतवर शरीर, एक पौधे के तने की तरह ऊपर को उठता हुआ मानों सूर्य को स्पर्श करने का प्रयत्न-सा करने लगा।

'तो तुमने उससे विवाह क्यों नहीं कर लिया ? तुम्हें उससे शादी कर लेनी चाहिए।'

'आह ! उसका विवाह हुए पाँच वर्ष हो चुके हैं।'

'परन्तु उसका विवाह होने से पहले तुमने ही उससे विवाह क्यों नहीं कर लिया ? क्या वह तुम्हें नहीं जानती थी ?'

उसने कुछ देर तक विचार किया और फिर उत्तर में कहा—हाँ, ऊपर से तो यही लगता था कि वह भी मुझे चाहती थी। मैं समझता हूँ, नहीं, मुझे विश्वास है, वह भी मुझे अवश्य चाहती थी। मगर हमेशा ऐसा ही होता रहा कि जब मैं जेल से छूटता था तो वह जेल में होती थो और जब वह छूटती थी तो मैं जेल में होता था। बिलकुल सशा और पवेल की-सी ही लगभग हालत थी। आखिरकार सरकार ने उसे दस वर्ष के लिए साइबेरिया को जलावतन कर दिया। मैं भी अर्जी देकर उसके साथ साइबेरिया चला जाना चाहता था ; परन्तु मुझे शर्म आई कि काम छोड़कर इस प्रकार जाने पर बन्धु क्या कहेंगे। उसे भी इस बात पर शर्म आती। अस्तु, मैं दिल पर पत्थर रखकर रह गया और नहीं गया। साइबेरिया में उसकी एक दूसरे आदमी से मुलाकात हो गई। वह भी हमारा बन्धु था। बड़ा अच्छा आदमी है। फिर वे दोनों साइबेरिया से निकलकर भाग गये। अब उन्होंने विवाह कर लिया है और वे दोनों साथ-साथ विदेश में रहते हैं। समझती हो...'

निकोले ने इतना कहकर अपना चश्मा उतारा और उसके शीशे रूमाल से साफ करने लगा—उनको रोशनी की तरफ दिखाया और उनको साफ करने लगा।

'आह, मेरे प्यारे बेटे !' मा ने सिर हिलाते हुए प्रेम से कहा। मा को उसके लिए बड़ा दुःख हो रहा था। परन्तु साथ-ही-साथ कोई वस्तु उसे वात्सल्य-स्नेह से मुस्कराने के लिए भी बाध्य-सी कर रही थी। निकोले बैठक बदलकर कुर्सी पर बैठ गया और कलम पकड़कर हाथ को इस प्रकार हिलाता हुआ, मानों वह उससे ताल दे रहा हो, कहने लगा—गृहस्थी के जीवन से क्रान्तिकारी की शक्ति कम हो जाती है। उसे अपने बाल-बच्चों को अच्छी तरह रखने की चिन्ता होने लगती है और अपना और अपनों का पेट भरने के लिए भी उसे काम बहुत करना पड़ता है। क्रान्तिकारी को गृहस्थी में पड़कर अपनी शक्ति कम नहीं कर लेनी चाहिए। बल्कि हमेशा अपनी शक्ति बढ़ाते रहने का प्रयत्न करना चाहिए ; दिन पर दिन अपनी शक्ति को गहरा और विशाल बनाने का प्रयत्न करते रहना चाहिए ; इस काम के लिए पूरा समय चाहिए। क्रान्तिकारियों को हमेशा दूसरों से आगे रहना चाहिए। हम कामगारों को ही ऐतिहासिक न्याय के अनुसार पुरानी दुनिया नष्ट करके नई दुनिया बनानी है। यदि हमीं ठिठकेंगे, या थककर

बीच में रुकने लगेंगे, या थोड़ी-सी ही विजय प्राप्त कर लेने के लोभ में पड़ जायँगे तो बड़ा अनर्थ हो जायगा और हम अपने उद्देश्य के प्रति ही द्रोही बनेंगे। कोई क्रान्तिकारी किसी व्यक्ति-विशेष से चिपटकर नहीं रह सकता, किसी के साथ लगातार हाथ मिलाये हुए जीवन में नहीं चल सकता। ऐसा करे तो उसे अपने क्रान्तिकारी विश्वास को कम और ढीला करना होगा। हमें यह कभी न भूल जाना चाहिए कि हमारा ध्येय छोटी-छोटी विजय प्राप्त कर लेना नहीं है, पूर्ण और आखिरी विजय प्राप्त करना है।

यह कहते हुए उसकी आवाज में दृढ़ता आ गई, और उसका चेहरा पीला पड़ गया। उसकी आँखों से उसका चारित्र्य-बल टपक रहा था। इतने में द्वार की घण्टी फिर टनटनाती हुई बजी और द्वार खुल जाने पर लियूडमिला ने अन्दर प्रवेश किया। वह एक हलका ओवरकोट पहने हुए थी। उसके गाल ठण्ड से लाल हो रहे थे। फटे हुए ऊपरी जूते खोलती हुई वह चिढ़ी हुई आवाज में बोली—उन्होंने मुकदमा एक सप्ताह के अन्दर ही शुरू कर देने का निश्चय कर लिया है।

'सच!' कमरे में से निकोले चिल्लाया; और मा दौड़ती हुई निकोले के पास आ गई। लियूडमिला की बात सुनकर न जाने भय अथवा हर्ष से मा के हृदय में एकाएक उथल-पुथल मच गई थी।

लियूडमिला ने मा के साथ-साथ निकोले की तरफ बढ़ते हुए व्यंग्य-पूर्ण शब्दों में कहा—हाँ, सच है। नायब वकील सरकार, शोस्टक, अभी-अभी कानून की वह सब किताबें लेकर आया है, जिनके अनुसार उन लोगों पर मुकदमा चलाया जायगा। मगर अदालत में लोग खुले तौर पर कह रहे हैं कि उन लोगों की सजाएँ भी निश्चित हो चुकी हैं। इस सबका क्या अर्थ है? क्या हमारी सरकार को डर लगता है कि उसके न्यायाधीश उसके दुश्मनों के साथ कहीं नर्मी का बर्ताव न दिखायें? इतने दिनों तक और इतने परिश्रम से अपने नौकरों का चरित्र बिगाड़कर भी अभी तक सरकार को यह विश्वास नहीं होता है कि सरकारी नौकर बड़ी आसानी से कमीनापन कर सकते हैं?

इस प्रकार कहती हुई लियूडमिला सोफे पर बैठ गई और अपने पतले-पतले गालों को गर्माने के लिए जल्दी-जल्दी अपनी हथेलियों से मलने लगी। उसके धुँधले नेत्रों से ग्लानि की आग बरस रही थी, उसकी आवाज का क्रोध बढ़ रहा था।

'तुम अपनी गोली-बारूद व्यर्थ में ही बर्बाद कर रही हो, लियूडमिला!' निकोले ने उसे सन्तोष देने का प्रयत्न करते हुए कहा—वे लोग तुम्हारी बातें यहाँ आकर नहीं सुनेंगे।

'मैं उन्हें एक दिन सुनने के लिए मजबूर कर दूँगी!'

यह कहकर उसकी आँखों के नीचे के काले-काले मण्डल काँपे और उसके चेहरे पर एक भयानक छाया घिर आई। वह होंठ चबाती हुई कहने लगी—मेरा विरोध करो! यह तुम्हारा अधिकार है! मैं तुम्हारी शत्रु हूँ! परन्तु अपनी सत्ता की रक्षा करने के लिए लोगों का चरित्र और मत बिगाड़ो। उनका चरित्र नष्ट करके मुझे उनके प्रति अपने

हृदय में एक स्वाभाविक घृणा रखने के लिए तो मजबूर मत करो! मेरी आत्मा में तो अपने अविश्वास का गरल भरने की धृष्टता मत करो, दुष्टो!

निकोले ने उसका चेहरा अपने चश्मे में से घूरकर देखा और फिर आँखें ऊपर चढ़ाकर उदासीनता से सिर हिलाने लगा। परन्तु वह बराबर बोलती रही, मानों जिन लोगों के प्रति वह अपनी घृणा प्रदर्शित कर रही थी, वह सामने ही खड़े हुए उसकी बातें सुन रहे हों। मा चुपचाप खड़ी-खड़ी उसकी बातें ध्यान-पूर्वक सुन रही थी; परन्तु उसकी समझ में उसकी बातें बिलकुल नहीं आ रही थीं। मा के कान में तो बस यही शब्द बार-बार गूँजते हुए उठ रहे थे—मुकदमा शुरू होगा! मुकदमा एक सप्ताह में ही शुरू हो जायगा।

मा इसकी भी अच्छी तरह कल्पना नहीं कर सकती थी कि मुकदमा कैसे होगा—न्यायाधीश पवेल के साथ किस प्रकार का व्यवहार करेंगे। तरह-तरह के विचार मँडराते हुए उसके दिमाग में भर रहे थे, जिनसे उसका सिर चकरा उठा था और आँखों के सामने अँधेरा छा रहा था। उसे ऐसा लग रहा था कि वह किसी भँवर में मानों फँस गई है। उसके अन्तर में भावों का एक स्रोत फूट पड़ा था, जिसने उसके रक्त में मिलकर उसके हृदय पर कब्जा कर लिया था और उसके हृदय को अपने बोझ से दबा-दबाकर उसमें स्फूर्ति और वीरता का एक विष-सा भर रहा था।

इस प्रकार घबराहट, उदासी और दुःखपूर्ण आशा के बादलों से आच्छादित उसका एक दिन बीता। दूसरा दिन भी यों ही बीता। परन्तु तीसरे दिन सशा दौड़ती हुई आई और निकोले से कहने लगी—सारी तैयारी हो चुकी है। आज ही घण्टे-भर में काम पूरा हो जायगा।

'पूरी तैयारी हो गई! इतनी जल्दी?' निकोले को बड़ा आश्चर्य हुआ।

'क्यों, पूरी तैयारी में क्या था? केवल राइबिन के लिए एक छिपने की जगह और कपड़ों को ढूँढ़ लेने भर की देर थी! शेष सारे काम का जिम्मा तो गोबन ने अपने ऊपर ले ही लिया था। राइबिन को शहर के सिर्फ एक मुहल्ले में होकर गुजरना पड़ेगा। व्यसोवशचिकोव भेष बदले हुए उसको सड़क पर मिलेगा और उसको जल्दी से एक ओवरकोट पहनाकर उसके सिर पर एक नया टोपा लगा देगा और उसको मेरे घर का रास्ता दिखा देगा। मैं घर पर उसकी बाट देखूँगी और जैसे ही वह वहाँ आयेगा, वैसे ही उसके कपड़े बदलकर और उसको अपने साथ लेकर छिपने के स्थान की तरफ चल पड़ूँगी।'

'ठीक है। मगर यह गोबन कौन है?'

'तुमने उसे देखा है। तुमने उस रोज लुहारों से बातचीत उसी के मकान पर की थी।'

'हाँ, हाँ, याद आ गया। वह अजीब-सा बूढ़ा आदमी?'

'वह जवानी में फौज का एक सिपाही था। वह अधिक पढ़ा-लिखा तो नहीं है; परन्तु फिर भी उसे हिंसा से और उन सभी लोगों से जो हिंसा में विश्वास रखते हैं, बड़ी घृणा है। वह कुछ-कुछ दार्शनिक है।'

मा चुपचाप उनकी बातें सुन रही थी और कुछ सोच रही थी।

'गोबन अपने भतीजे को भी भगाना चाहता है। उसकी बातें याद हैं? तुम्हें येव-चेनको बहुत पसन्द था।' निकोले सिर हिलाने लगा।

'गोबन ने सारा प्रबन्ध ठीक कर लिया है। परन्तु मुझे अभी तक सफलता में सन्देह होता है। जेल के रास्तों पर बहुत-से कैदी होंगे और मैं समझती हूँ, जैसे ही वे सीढ़ी देखेंगे वैसे ही वे सब-के-सब भागने का प्रयत्न करेंगे...' इतना कहकर उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं और कुछ देर तक चुप रही। मा बढ़कर उसके निकट आ गई—वे लोग आपस में धक्का-मुक्की करते हुए एक-दूसरे का रास्ता रोकने लगेंगे।

तीनों खिड़की पर खड़े थे। निकोले और सशा के पीछे मा खड़ी थी। उनकी इस प्रकार की जल्द-जल्द बात-चीत से मा के हृदय में घबराहट और चिन्ता और भी बढ़ने लगी थी।

'मैं भी जाऊँगी।' मा ने एकाएक कहा।

'कहाँ?' सशा ने चौंककर पूछा।

'नहीं, प्यारी मा! नहीं। तुम हरगिज न जाना। पकड़ जाओगी! तुम उधर हरगिज मत जाना!' निकोले ने मा को सलाह देते हुए कहा।

मा ने उन दोनों की तरफ देखा और नम्रता से, परन्तु हठ-पूर्वक बार-बार कहने लगी—नहीं; मैं भी जाऊँगी! मैं भी जाऊँगी।

उन्होंने एक-दूसरे की ओर देखा और सशा कन्धे मटकाती हुई बोली—आशा बड़ी बलवती होती है!

फिर मा की तरफ मुड़कर उसने उसका हाथ थाम लिया और उसके कन्धे पर अपना सिर टेककर, मीठी, सरल और हृदय-स्पर्शी आवाज में मा से कहने लगी—मैं तुमसे कहती हूँ, मैया, तुम उसकी व्यर्थ में बाट देखती हो! वह वहाँ से भागने का प्रयत्न नहीं करेगा।

'मेरी प्यारी बेटी!' मा ने सशा को अपने काँपते हुए सीने से चिपटाकर कहा—मुझे भी लिये चलो। मैं तुम्हारे काम में कोई अड़चन नहीं डालूँगी। मुझे अभी तक विश्वास नहीं होता कि जेल से भागना सचमुच सम्भव है।

'अच्छा, मा भी मेरे साथ जायगी!' लड़की ने निकोले से कहा।

'तुम्हारी मरजी!' उसने सिर झुकाते हुए जवाब दिया।

'परन्तु हम लोगों को साथ-साथ नहीं जाना चाहिए, अम्माँ! तुम खेत में होती हुई बाग में जाना। वहाँ से तुम्हें जेल की दीवार का वह हिस्सा दिखाई देगा। परन्तु लोगों ने तुमसे पूछा कि यहाँ क्या करती हो तो क्या जवाब दोगी?'

हँसते हुए मा ने विश्वासपूर्वक जवाब दिया—उस वक्त सोच लूँगी कि उन्हें क्या उत्तर दूँ।

'परन्तु जेल के सिपाही तुम्हें पहचानते हैं!' सशा बोली—यदि उन्होंने तुम्हें वहाँ देखा तो?

'वे मुझे नहीं देख पायेंगे !' मा ने धीरे-धीरे मुस्कराते हुए कहा।

घंटे-भर बाद मा जेल से सटे हुए खेतों में से जाती हुई दिखाई दी। हवा बड़ी तेज चल रही थी। वह उसके कपड़ों को उड़ा-उड़ाकर जमीन पर जमी हुई बरफ से मारती थी और खेतों और बाड़ियों के पुराने लकड़ी के परकोटों को, जिनके किनारे-किनारे मा जा रही थी, जोर-जोर से झकझोर रही थी। जेल के आँगन से हवा किसी की आवाज को उड़ाकर लाई और उसको चारों तरफ बिखेरती हुई आकाश में उड़ा ले गई, जहाँ बादल आपस में होड़ लगाते हुए दौड़ रहे थे।

मा के पीछे शहर था, सामने कब्रस्तान था और दाहिनी ओर लगभग सत्तर फीट की दूरी पर जेलखाना था। कब्रस्तान के पास एक सिपाही अपने घोड़े की लगाम पकड़े हुए धीरे-धीरे जा रहा था। उसके साथ एक दूसरा सिपाही भी था जो जोर-जोर से चिल्लाता और सीटी बजाता था और हँसता हुआ चल रहा था। इन दो सिपाहियों के सिवाय जेल के आस-पास और कोई नहीं था। मा आप-से-आप उनकी तरफ खिंचती हुई-सी चली गई और उनके पास पहुँच जाने पर चिल्लाई—क्यों भाइयो ! तुमने इधर एक बकरी तो फिरती हुई नहीं देखी ?

उनमें से एक ने जवाब दिया—नहीं।

उनके पास से गुजरती हुई मा धीरे-धीरे कब्रस्तान की चहारदीवारी की तरफ गई। तिरछी नजरों से वह अपने दायें और पीछे की तरफ देखती जाती थी। एकाएक उसके पाँव थरथराये और भारी होकर पृथ्वी में गड़ने लगे। जेल के मोड़ पर से निकलकर एक बत्ती जलानेवाला जल्दी-जल्दी बढ़ता हुआ जेल की दीवार की तरफ जा रहा था। उसकी कमर झुकी हुई थी और उसके कन्धे पर एक छोटी-सी सीढ़ी थी। मा ने भय से अपनी आँखें बन्द कर लीं। परन्तु फिर फौरन ही आँख खोलकर उसने सिपाहियों की तरफ देखा। वे एक स्थान पर खड़े हुए जोर-जोर से पैर पटक रहे थे और घोड़ा उनके चारों ओर चक्कर लगाता हुआ दौड़ रहा था। मा ने फिर जेल की दीवार की तरफ देखा। बत्तीवाले ने दीवार पर सीढ़ी लगा दी थी और उस पर चढ़ता हुआ ऊपर जा रहा था। दीवार के ऊपर पहुँच जाने पर उसने जेल के अन्दर की तरफ देखा और हाथ हिलाकर जल्दी से नीचे उतर आया और फिर जेल के मोड़ पर जाकर गायब हो गया। क्षण-भर में राइबिन का काला सिर दीवार पर उठता हुआ दिखाई दिया और देखते-देखते उसका सारा शरीर दीवार के ऊपर चढ़ आया। उसी तरह एक दूसरा सिर भी जो एक फटा हुआ टोप पहिने था, उसके साथ-साथ दीवार पर उठता हुआ चढ़ आया और फिर दोनों के दोनों दो काले गट्ठरों की तरह दीवार पर से लुढ़कते हुए नीचे आ गये। एक तो उनमें से उठकर फौरन ही भाग गया और मोड़ पर पहुँचकर गायब भी हो गया; परन्तु राइबिन खड़ा होकर चारों तरफ निगाह दौड़ने लगा।

'भाग जाओ ! भाग जाओ !' मा जल्दी-जल्दी उसकी तरफ कदम बढ़ाती हुई बड़बड़ाई। मा के कानों में चिल्ल-पुकार की आवाजें गूँज उठी थीं। जेल के अन्दर से

लोग शोर मचा रहे थे। इतने में दीवार पर एक तीसरा सिर दिखाई दिया। उसे देखते ही मा की साँस रुक गई।

हल्के बालों और बेदाढ़ी का वह सिर था जो इस प्रकार हिल रहा था मानों किसी चीज से छुड़ाकर भागने का प्रयत्न कर रहा हो; परन्तु एकाएक वह फिर दीवार के उस तरफ ही गिरा और गायब हो गया। चिल्लाने को आवाजें और भी जोर-जोर से आने लगी थीं और शोर-गुल बढ़ रहा था। हवा के झकोरे जोर-जोर की सीटियों की आवाजें चारों तरफ बिखेर रहे थे। राइबिन दीवार के साथ-साथ चलता हुआ बढ़ा-सा जा रहा था। दीवार को पार कर चुकने पर वह जेल और शहर के बीच का मैदान पार करने लगा। मा को ऐसा लग रहा था कि वह बहुत धीरे-धीरे जा रहा है, और व्यर्थ में सिर उठा-उठाकर इधर-उधर देखता है। जिसने भी उसका मुँह एक बार देख लिया होगा, वह उसे कभी नहीं भूल सकता और उसे पहचान लेगा। अस्तु, वह बड़बड़ाने लगी—जल्दी-जल्दी! इतने में जेल की दीवार के पीछे कोई चीज जोर से खटकी। शीशा-सा टूटने की एक बारीक आवाज आई। सिपाहियों में से एक ने एकाएक पैर जमीन में गड़ाकर घोड़े को अपनी तरफ खींचा, जिससे घोड़ा बिजक गया। दूसरा सिपाही हाथों का भोंपा मुँह पर बनाकर जेल की तरफ कुछ चिल्लाया और चिल्लाते हुए भी कान उठा-उठाकर इधर-उधर देखने लगा। मा ध्यान-पूर्वक चारों तरफ देख रही थी; परन्तु सब कुछ अपनी आँखों से देखते हुए भी उसे विश्वास नहीं हो रहा था, क्योंकि जिस काम को वह इतना भयङ्कर और टेढ़ा समझती थी, वह इतनी आसानी से देखते-देखते हो गया था कि वह बिलकुल हक्का-बक्का रह गई थी। राइबिन अब मैदान में नहीं दीख रहा था। हाँ, एक लम्बा-सा आदमी एक पतला ओवरकोट पहने हुए जा रहा था और एक लड़की उसके साथ-साथ दौड़ती हुई चली जा रही थी। जेलखाने के मोड़ पर से तीन जेल के सिपाही उछलते हुए निकले और तीनों अपने दाहिने हाथ आगे की तरफ बढ़ाये हुए साथ-साथ दौड़ने लगे। मैदान के सिपाहियों में से एक उनकी तरफ झपटा और दूसरा बिजके हुए घोड़े के चारों तरफ घूम-घूम उस पर काबू पाने का प्रयत्न करने लगा। परन्तु घोड़ा उछलता और कूदता ही रहा और उसके काबू में नहीं आया। सीटियाँ जोर-जोर से बजती हुई हवा को चीर रही थीं और उनकी भयङ्कर और तीक्ष्ण आवाज मा के हृदय में भय उत्पन्न कर रही थी। अस्तु, वह काँपती हुई कब्रस्तान की चहारदीवारी के साथ-साथ सिपाहियों के पीछे-पीछे चली। मगर वे दौड़ते हुए जेलखाने के दूसरे मोड़ पर गायब हो गये। उनके पीछे-पीछे दौड़ता हुआ जेल का नायब जमादार भी जा रहा था, जिसको वह पहचानती थी। उसके कोट के बटन खुले हुए थे और वह हाँफ रहा था। एक तरफ से पुलिसवाले भी निकल आये और वे भी दौड़ने लगे

हवा जोर से सीटी बजाती हुई उछल-कूद रही थी, मानों वह आनन्द मना रही थी। वह टूटी और घबराती हुई चिल्लाने की आवाजें चारों तरफ उड़ा-उड़ाकर मा के कानों में ला रही थी।

'क्या यह हमेशा यहीं पड़ी रहती है ?'

'क्या यह सीढ़ी ?'

'क्या बकता है ! बदमाश !'

'उन दोनों सिपाहियों को गिरफ्तार कर लो ।'

'पुलिसवालो !'

फिर चारों तरफ से सीटियों की आवाजें आने लगीं। मा इस चारों तरफ की घब-राहट और शोरगुल से खुश हो रही थी। उसके हृदय में अब कोई डर नहीं था और वह यह विचारती हुई चली जा रही थी—भागना तो आसान था। चाहता तो वह भी भाग सकता था।

परन्तु अब अपने लड़के की याद आने पर उसे दुःख के साथ-साथ अभिमान भी हो रहा था। पहले की तरह उसकी चिन्ता से उसका हृदय नहीं बैठ रहा था।

इतने में सामने के मोड़ पर से एक काली-काली घुँघराली दाढ़ी का हेड कान्स्टेबल और दो पुलिस के सिपाही दौड़े हुए निकले।

'ठहरो !' हेड कान्स्टेबल हाँफता हुआ मा की तरफ चिल्लाया—तुमने अभी-अभी एक दाढ़ीवाला आदमी इधर से भागकर जाता हुआ तो नहीं देखा ?

मा ने एक बाग की तरफ उँगली उठाकर शान्ति-पूर्वक उत्तर दिया—हाँ, एक दाढ़ी-वाला उस तरफ दौड़ता हुआ गया है।

'बगोरोव, दौड़ो उधर से ! सीटी बजाओ ! कितनी देर उसे गये हुई ?'

'अभी-अभी, मैं समझती हूँ, एक मिनट ही हुआ होगा।'

मगर सीटी की आवाजों में उसका उत्तर किसी ने नहीं सुना और हेड कान्स्टेबल उसके जवाबों का इन्तजार न करके एकदम बेतहाशा ऊँची-नीची पथरीली जमीन पर दौड़ता हुआ बाग की तरफ हाथ हिलाता हुआ झपटा और उसके पीछे-पीछे सिर झुकाये हुए सीटी बजाते हुए दूसरे सिपाही भी लपके।

मा उनकी तरफ देखती हुई सिर हिलाती हुई मुस्कराने लगी और अपने ऊपर सन्तोष करती हुई घर की तरफ चली। खेतों में से निकलकर जैसे ही वह सड़क पर पहुँची, उसने एक गाड़ी अपने सामने से जाती हुई देखी। मा ने सिर उठाकर देखा तो उस गाड़ी में हल्की मूँछों और पीले-पीले मुरझाये हुए चेहरे का एक नौजवान बैठा हुआ जा रहा था। उसने भी मा की तरफ घूमकर देखा। वह तिरछा बैठा था और शायद इसलिए उसका दाहिना कन्धा बायें से कुछ ऊँचा लगता था।

घर पहुँचने पर निकोले ने हँसते हुए मा का स्वागत किया।

'अच्छा, जिन्दा लौट आईं ! कहो क्या हुआ ?'

'ऐसा लगता है कि हम लोगों की पूर्ण विजय हो गई है।'

फिर मा धीरे-धीरे सारी बातें याद करती हुई निकोले को जेल से भागने का हाल सुनाने लगी। निकोले को भी ऐसी सरल सफलता पर बड़ा आश्चर्य हो रहा था।

'देखो, हम लोग कितने भाग्यवान् हैं !' निकोले हाथ मलता हुआ मा से बोला—मगर मुझे तुम्हारे लिए बड़ा डर हो रहा था। भगवान् ही जानता है, मैं तुम्हारे लिए कितना डर रहा था। निलोवना, मेरी बात सुनो, मुकदमे से जरा भी मत घबराओ। जितनी जल्द मुकदमा खत्म हो जायगा, उतनी ही जल्द पवेल को कारागार से छुटकारा मिल जायगा। मेरा विश्वास रखो। मैंने अभी से अपनी बहन को लिख दिया है कि वह पवेल के बारे में सारी बातें सोच रखे। सजा सुनाने के बाद फौरन मौका मिल सका तो पवेल को जेल लौटते समय सड़क पर से ही भगा दिया जायगा। मुकदमा इस तरह होगा। यह कहकर वह मा से अदालत का वर्णन करने लगा। मा को उसकी बातें सुनते हुए ऐसा लगा कि उसको किसी बात का डर था, जिससे वह उसे ढाढ़स बँधाकर उसका दिल हल्का करने का प्रयत्न कर रहा था।

'शायद तुम्हें डर है कि मैं जजों से कुछ कह न बैठूँ !' मा ने एकाएक उससे पूछा—मैं कहीं उनसे कोई प्रार्थना न कर बैठूँ, क्यों ?

निकोले मा का यह प्रश्न सुनकर उछल पड़ा। उसकी तरफ हाथ हिलाता हुआ बुरा मानकर कहने लगा—कैसी बातें करती हो ! मेरा अपमान क्यों करती हो ?

'क्षमा करो ! कृपया मुझे माफ करो ! मैं स्वयं बहुत डर रही हूँ। किस बात से मैं इतना डर रही हूँ, यह मुझे स्वयं पता नहीं लगता ; परन्तु सचमुच मुझे बड़ा डर लगता है।'

इतना कहकर वह चुप हो गई और उसकी आँखें कमरे में इधर-उधर घूमने लगीं। फिर वह कहने लगी—कभी-कभी मुझे लगता है कि वे कहीं अदालत में पाशा का अपमान न करें। उस पर मुँह बनाते हुए कहें : अरे किसान ! अरे ओ किसान के छोकरे ! तूने यह क्या गड़बड़घोटाला खड़ा किया ! और पाशा अभिमानी तो है ही, उनको कहीं कोई सख्त जवाब न दे बैठे या पेंड्री कहीं उन पर खिलखिलाकर हँस न पड़े ! सारे के सारे बन्धु वहाँ गरम मिजाज के हैं और सत्यवादी हैं। अस्तु, मुझे बार-बार यही ख्याल आता है, कहीं कोई उनमें से एकाएक कुछ कह न बैठे। क्योंकि एक ने उनमें से क्रोध किया और कुछ कहा तो फिर सभी उसका समर्थन करेंगे, जिसका परिणाम यह होगा कि अदालत सभी को इतनी कठोर सजा दे देगी कि उनका फिर इस जिन्दगी में कभी घर लौटकर आना भी असम्भव हो जायगा। फिर उनका कभी मुँह देखना भी हमें नसीब न हो सकेगा।

निकोले चुपचाप अपनी दाढ़ी खुजलाता हुआ मा की बातें सुन रहा था। मा कहती रही—यह विचार मुझे बार-बार आता है और मेरे दिमाग से दूर नहीं होता। मुकदमे से सचमुच मुझे बड़ा डर लगता है। जब अदालत में जज लोग एक-एक घटना, एक-एक बात को लेकर तौलने लगेंगे, तब हम लोगों की बड़ी मुश्किल होगी। सजा का भी मुझे इतना डर नहीं लग रहा है जितना मुकदमे का। मैं अच्छी तरह तुम्हें समझा नहीं सकती। मा को लगा कि निकोले उसके डर को समझ नहीं रहा था। अस्तु, उसने अपने

इस डर की बात और आगे नहीं बढ़ाई और इतना कहकर ही चुप हो गई। मगर उसका यह भय मुकदमे की तारीख के बाकी तीन दिन तक बढ़ता ही रहा। अन्त में मुकदमे की तारीख के दिन वह कमर और गरदन झुकाये हुए अदालत के कमरे में घुसी, मानों उसकी पीठ पर इतना बोझ लदा हुआ था, जिससे उसकी पीठ दुहरी होकर जमीन से लगी जाती थी।

सड़क पर आते हुए परिचित लोगों के उसे प्रणाम करने पर वह चुपचाप उनकी तरफ सिर झुकाती हुई, भीड़ में से अपना रास्ता चीरती हुई जल्दी-जल्दी अदालत के सहन में घुस आई थी। अदालत के कमरे में घुसने पर उसे दूसरे मुलजिमों के घरवाले और रिश्तेदार मिले जो उससे फौरन ही धीरे-धीरे घुसपुस-घुसपुस करने लगे। परन्तु उनकी सारी बातें उसे व्यर्थ-सी लगीं, क्योंकि वे उसकी समझ में नहीं आ रही थीं। फिर भी वे सब-के-सब उसे चिढ़े हुए-से लग रहे थे, और वे भी उसी वेदना-पूर्ण भाव से पीड़ित लगते थे, जिससे मा का दिल बैठा जा रहा था।

'चलो, हम-तुम दोनों साथ-साथ बैठेंगे।' सिजोव ने मा को एक तिपाई की तरफ ले जाते हुए कहा।

मा आज्ञाकारी की भाँति चुपचाप उसके साथ तिपाई पर बैठ गई और अपने कपड़े ठीक करती हुई चारों तरफ देखने लगी। उसकी आँखों के आगे लाल-पीली चिनगारियाँ-सी उड़ रही थीं।

'भैया, तुम्हारे लड़के ने तो मेरे वेस्या का खोज ही मार दिया!' पास में बैठी हुई एक स्त्री मा से धीरे से बोली।

'चुप बैठी रहो, नटाल्या!' सिजोव ने उसे झिड़कते हुए कहा।

निलोवना ने उस स्त्री की तरफ घूमकर देखा। वह सेमोयलोव की मा थी। कुछ दूर पर उसका पति भी बैठा था, जिसका गञ्जा सिर, हड्डियोंदार चेचकरू चेहरा और विशाल, घनी, लाल-लाल दाढ़ी हिल रही थी। वह सामने की तरफ अपनी आँखें उठाये हुए देख रहा था।

एक धुँधला-धुँधला स्थिर प्रकाश कमरे के ऊँचे-ऊँचे रोशनदानों के शीशों में से अन्दर आ रहा था, जिनके ऊपर पड़ी हुई बरफ नजाकत से धीरे-धीरे फिसलती हुई छत पर गिर रही थी। रोशनदानों के बीच से शाहंशाह जार का एक विशाल चित्र एक बड़े सुनहरे चौखट में जड़ा हुआ लटक रहा था। सीधी और गम्भीर लाल-लाल पर्दों की चुन्नटें कमरे की खिड़कियों के इधर-उधर लटक रही थीं, जार के चित्र के सामने, लगभग कमरे की पूरी लम्बाई के बराबर एक लम्बी मेज लगी हुई थी, जिस पर एक हरा कपड़ा पड़ा हुआ था। दीवार की दाहिनी तरफ एक कटघरे में दो तिपाइयाँ पड़ी थीं और बाईं तरफ गुलाबी रंग की कुर्सियों की दो कतारें थीं। चपरासी गले पर हरे कालर और पेट पर पीले बटन लगाये हुए कमरे में चुपचाप इधर से उधर दौड़ रहे थे। कमरे में धुँधले वातावरण में धीमी-धीमी घुसपुस-घुसपुस हो रही थी, और चारों तरफ

किसी गन्धी की दूकान की-सी कई प्रकार की गन्ध फैल रही थीं। यह सारा दृश्य, वहाँ की चमक-दमक, आवाजें और तरह-तरह की गन्ध, देखनेवालों की आँखों पर एक भारी बोझ-सा लाद रहा था, जो प्रत्येक साँस के साथ उनके सीनों में भरता हुआ, सजीव और और सुन्दर भावों को बाहर ढकेलकर उनकी छातियों में एक जड़ और मनहूस भय-सा भर रहा था।

एकाएक एक आदमी ने जोर से कुछ कहा जिसकी आवाज सुनते ही मा काँपी और सब एकाएक उठकर खड़े हो गये। मा भी सिजोव का हाथ पकड़े हुए उठकर खड़ी हो गई।

कमरे की बाईं तरफ का ऊँचा दरवाजा खुला और एक बूढ़ा आदमी हिलता हुआ अन्दर घुसा। और उसके भूरे और छोटे मुँह पर हल्के-हल्के गलमुँछे थे, आँखों पर चश्मा था और ऊपर का होंठ मुड़ा हुआ था जो उसके मुँह में घुसा जा रहा था। उसके लटकते हुए जबड़े और उसकी ठोढ़ी उसकी वर्दी के ऊँचे कालर पर रखे हुए थे, जिससे ऐसा लगता था मानों कोट के कालर के भीतर गरदन नहीं थी। उसकी बाँह पकड़े हुए और उसे सहारा देता हुआ उससे जरा पीछे एक लम्बा निष्ठुर और गोल चेहरे का मनुष्य चला आ रहा था। इनके पीछे तीन आदमी सुनहरी लैसदार वर्दियाँ पहिने हुए और तीन सादा पोशाक में धीरे-धीरे आ रहे थे। ये लोग मेज के इधर-उधर जरा देर तक घूमकर अपनी-अपनी कुर्सियों पर बैठ गये। उन सबके बैठ जाने पर उनमें से एक आदमी ने जो बिना बटनों का एक चोगा पहने था और जिसकी मूँछें मुड़ी हुई थीं, एक बूढ़े मनुष्य से कुछ इस तरह कहना प्रारम्भ किया मानों वह अभी ऊँघ ही रहा था और बूढ़ा अपने भारी-भारी होंठों को हिलाता हुआ चुपचाप उसे सुनने लगा। बूढ़ा विचित्र ढग से सीधा और स्थिर बैठा हुआ उसकी बातें सुन रहा था। उसके चश्मे के पीछे मा को नेत्रों के स्थान में दो वर्णहीन दाग-से दिखाई दे रहे थे।

मेज के छोर पर एक डेस्क के पास एक लम्बा गंजे सिर का मनुष्य खड़ा था जो खाँसता हुआ कागजों को उलट-पलट रहा था।

इतने में बूढ़े ने आगे की तरफ अपना शरीर बढ़ाकर बोलना आरम्भ किया। उसके पहले शब्द तो साफ सुनाई दिये, परन्तु पीछे से उसने जो कुछ कहा वह उसके पतले और भूरे होंठों से निकलता हुआ बिलकुल स्वरहीन मालूम हुआ।

'मैं शुरू करता हूँ...'

'देखो! देखो!' सिजोव धीरे से मा को कनिहाकर उठाता हुआ बड़बड़ाया।

कटघरे के पीछे का द्वार खुला और एक सिपाही अपने कन्धे पर तलवार रखे हुए अन्दर घुसा। उसके पीछे पवेल, ऐन्ड्री, फेड्या माजिन, गसेवबन्धु, समोयलोव, बुकिन, सोमोव और पाँच अन्य नवयुवक, जिनके नाम मा नहीं जानती थी, घुसे। पवेल मुस्करा रहा था। ऐन्ड्री ने भी मा की तरफ सिर हिलते हुए अपने दाँत निकाल दिये। और कमरे में उनकी मुस्कान से चारों तरफ मानों एकाएक आनन्द फैल गया। कमरे की

गला घोटनेवाली और अस्वाभाविक खामोशी में इन लोगों के आते ही एकाएक जान-सी आ गई, जिससे वर्दियों पर लगी हुई सुनहरी जरी की चमक-दमक एकदम फीकी पड़ गई। एक वीरतापूर्ण श्रद्धा और सजीव शक्ति से मा का हृदय प्रोत्साहित हो उठा। मा के पीछे की तिपाइयों पर, जहाँ अभी तक लोग चुपचाप अपने हृदयों को दबाये हुए बैठे-बैठे बाट देख रहे थे, एकाएक एक गुनगुनाहट होने लगी।

'छोकरे जरा भी घबराये हुए नहीं हैं!' मा ने सिजोव को धीरे से अपने कान में कहते हुए सुना। इतने में मा की दाहिनी तरफ बैठी हुई सेमोयलोव की मा सिसकियों में फूट पड़ी।

'चुप रहो!' एक कठोर आवाज आई।

'मैं पहले से चेतावनी दिये देता हूँ' बूढ़ा जज चिल्लाकर बोला—कि ऐसा होगा तो मुझे मजबूर होना पड़ेगा...

———

पैंतीसवाँ परिच्छेद

पवेल और ऐन्ड्री पास-पास पहली तिपाई पर बैठे और उनके साथ माज़िन, सेमोयलोव और गसेवबन्धु बैठे। ऐन्ड्री ने दाढ़ी मुड़ा ली थी; मगर उसकी मूँछें बढ़ी हुई लटक रही थीं, जिससे उसका गोल-गोल चेहरा एक समुद्री कौवे की तरह लगता था। उसके चेहरे पर भी कुछ नवीनता आ गई थी, मुँह के इधर-उधर की सिमटनों में कोई एक तीक्ष्ण, काटती हुई-सी चीज लगती थी और आँखों में गहराई बढ़ गई थी। माज़िन के ऊपरी होंठ पर काले-काले उगते हुए रोंगटों की पंक्ति दीख रही थी। उसका चेहरा पहले से अधिक भरा हुआ लगता था। सेमोयलोव का सिर सदा की भाँति घुँघराले बालों से ढँका था और आइवान गसेव भी सदा की भाँति दाँत निकाल-निकालकर मुस्करा रहा था।

'आह, फेडका! मेरा फेडका!' सिज़ोव सिर झुकाकर धीरे से बड़बड़ाया।

मा को लगा कि वह साँस जल्दी-जल्दी ले रही थी। उसने बूढ़े जज के उन अस्पष्ट प्रश्नों को सुना, जो वह बन्दियों की ओर न देखते हुए उनसे कह रहा था। उसका सिर उसकी वर्दी के कोट के कालर पर भिड़ा स्थिर रखा था। उसके प्रश्नों के मा ने अपने लड़के को शान्त और सूक्ष्म उत्तर भी देते सुना। उसको वह बूढ़ा न्यायाधीश और उसके साथी बहुत बुरे और क्रूर लग रहे थे। उसने उनके चेहरों को गौर से देखते हुए उन्हें समझने का प्रयत्न किया, क्योंकि धीरे-धीरे उसके मन में एक नई आशा जागृत होने लगी थी। जज के साथ-साथ आनेवाले निष्ठुर नौजवान ने लापरवाही से एक कागज जोर से पढ़ा, और उसकी सम आवाज से कमरे में उदासी भर गई, जिसमें लोग ऐसे चुपचाप बैठे थे, मानों उन्हें लकवा मार गया हो। चार वकील धीरे-धीरे, परन्तु आवेश में भरे, बन्दियों से बातें कर रहे थे। वे जल्दी-जल्दी अपने हाथ-पैर हिलाते हुए कुछ कह रहे थे और उनके काले-काले चुगों को हिलता हुआ देखकर किन्हीं बड़े और काले पक्षियों के कमरे में उड़ते हुए घुस आने का-सा भ्रम होता था।

बूढ़े जज के एक तरफ एक छोटी-छोटी सीली-सीली आँखों का दूसरा जज अपना बड़ा पेट आगे को निकाले हुए आराम से बैठा था। उसका सिर कुर्सी की पीठ पर थका हुआ-सा रखा था और उसकी आँखें आधी मिची और आधी खुली थीं। वह कुछ सोच रहा था। सरकारी वकील का चेहरा भी थका हुआ, उदास और निराश लगता था। जज के पीछे शहर का मेयर जो सुगठित शरीर का मनुष्य था, बैठा-बैठा विचार-पूर्वक अपने हाथों से अपने गाल थपथपा रहा था। उसके पास ही सफेद बालों, विशाल दाढ़ी, लाल मुँह और बड़ी-बड़ी और दयार्द्र आँखों का जागीरदारों का मुखिया बैठा था; और निकट जिले का सरपंच जो बिना बाँहोंवाला किसानों का ओवरकोट पहिने हुए था, बैठा

था। सरपंच को अपना बड़ा पेट सँभालकर रखना मुश्किल हो रहा था। वह बार-बार कोट के पल्ले से अपना पेट ढाँकता था, परन्तु पल्ला उस पर से बार-बार फिसल जाता था, जिससे पेट फिर खुल जाता था।

'न तो यहाँ कोई अपराधी ही है और न न्यायाधीश।' पवेल की आवाज जोर से कहती हुई सुनाई दी—हम आपके बन्दी हैं और आप हमारे विजेता हैं।

चारों ओर एकदम सन्नाटा छा गया था। कुछ सेकण्ड तक तो मा के कानों में केवल कागज पर चलने की पतली-पतली खुरचने की आवाज और अपने दिल की धुक-धुक ही सिर्फ आई।

बूढ़ा जज भी, ऐसा लगता था, मानों कहीं दूर में होनेवाली किसी आवाज को सुन रहा था। फिर उसके साथी हिले और वह बोला—हूँ! अच्छा, ऐन्ड्री नखोदका, तुम अपना कसूर कबूल करते हो?

इतने में किसी ने बड़बड़ाते हुए कहा—खड़े होकर जवाब दो।

ऐन्ड्री धीरे-धीरे उठा और अपना सिर ऊँचा करके मूँछों पर ताव देता हुआ बूढ़े की तरफ उसने कनखियों से देखा।

'किस अपराध को मैं कबूल करूँ?' उसने धीमी, परन्तु उठती हुई आवाज में कन्धे हिलाते हुए कहा—न तो मैंने किसी का खून ही किया है और न कहीं डाका ही मारा है! मैं तो सिर्फ उस जीवन-व्यवस्था को मानने से इन्कार करता हूँ, जिसमें प्रजा के एक वर्ग को दूसरे वर्ग का गला घोंटने और लूटने पर बाध्य होना पड़ता है।

'जवाब मुख्तसिर में दो, सिर्फ हाँ कहो या न!' बूढ़े ने प्रयत्न से परन्तु साफ तौर पर कहा।

मा को इतने में लगा कि उसके पीछेवाली तिपाइयों पर कुछ गड़बड़ होने लगी थी। लोग आपस में किसी बात के बारे में घुसपुस करते हुए हिल-डुल रहे थे और इस प्रकार दीर्घ निःश्वास ले रहे थे, मानों निष्ठुर, लम्बे मनुष्य के शब्दों ने उनके ऊपर जो आतंक का जाल-सा तान दिया, उससे वे मुक्त हो रहे हों।

'सुनती हो, छोकरे क्या कह रहे हैं!' सिजोव ने मा के कान में कहा।

'हाँ!'

'फेडोर माजिन, तुम्हारा क्या जवाब है?'

'मैं कोई जवाब नहीं देना चाहता!' फेड्या ने अपने पैरों पर उछलकर कहा। उसका चेहरा क्रोध से लाल था और आँखें चमक रही थीं और न जाने क्यों वह अपने हाथ पीठ के पीछे किये हुए था।

उसका उत्तर सुनकर सिजोव के मुँह से धीरे से कराहने की आवाज निकली और मा की आँखें आश्चर्य से फटकर रह गईं।

'मैं कोई सफाई नहीं देता! न मैं कुछ कहना चाहता हूँ। मैं तुम्हारी इस अदालत को न्यायालय ही नहीं मानता। तुम हो कौन? क्या रूस की प्रजा ने तुम्हें हमारा न्याय

करने का अधिकार दिया है ? नहीं, उन्होंने तुम्हें कोई अधिकार नहीं दिया है। मैं तुम्हारा अधिकार नहीं मानता।' इतना कहकर वह बैठ गया और अपना क्रोध से लाल-लाल चेहरा ऐन्ड्री के कन्धों के पीछे छिपा लिया।

मोटे जज ने बूढ़े जज की तरफ झुककर उसके कान में कहा। बूढ़े जज का मुँह पीला पड़ गया था। उसने पलक उठाकर एक तिरछी नजर बन्दियों पर डाली और फिर अपना हाथ मेज पर बढ़ाकर अपने सामने रखे हुए एक कागज पर कुछ पेन्सिल से लिखा। जिले के सरपंच ने सिर हिलाते हुए सावधानी से अपने पैर हिलाये और घुटनों पर पेट सँभालकर उस पर हाथ रख लिये। बूढ़े जज ने घूमकर लाल मूँछों के जज से कुछ जल्दी-जल्दी कहा, जिसे लाल मूँछों के जज ने सिर झुकाकर गौर से सुना। जागीर-दारों के मुखिया ने सरकारी वकील से कुछ कहा जिसे सुनकर शहर का मेयर मुस्कराता हुआ अपने गाल मलने लगा। इतने में बूढ़े जज की आवाज फिर सुनाई दी और चारों वकील बड़े ध्यान से सुनने लगे। बन्दी एक-दूसरे के कान में कुछ फुसफुस कर रहे थे और फेड्या ने सिटपिटाकर मुस्कराते हुए अपना मुँह छिपा लिया था।

'कैसा जवाब दिया! साफ! एकदम सीधा! बड़ा अच्छा!' सिजोव ने आश्चर्य-पूर्वक मा के कान में कहा—वाह मेरे छोकरे!

मा घबराकर मुस्कराने लगी थी। 'मुकदमे की कार्रवाई उसे उस भयङ्कर आपत्ति की भूमिका-सी लग रही थी जो शीघ्र ही आकर उन सबका गला घोंट देने की घात में थी। परन्तु पवेल और ऐन्ड्री के शब्द ऐसे शान्त, निर्भीक और दृढ़ थे, मानों वे अदा-लत के इजलास में नहीं, बल्कि अपने घर में ही बोल रहे थे। फेड्या के जोशीले, जवानी से भरे, अदालत पर आक्षेप से मा को बड़ा आनन्द हुआ था और उसे ऐसा लगा था कि वीरता का एक कौंधा-सा एकाएक कमरे में चमक उठा हो। अपने पीछे बैठे हुए लोगों के हिलने-डुलने और व्यवहार से भी मा ने समझा कि उसी को ऐसा नहीं लगा था।

'आपको क्या कहना है ?' बूढ़ा जज सरकारी वकील से बोला। उसका प्रश्न सुनते ही गंजी खोपड़ी का सरकारी वकील उठा और अपना एक हाथ डेस्क पर टेककर सँभल-कर खड़ा हो गया और जल्दी-जल्दी अभियुक्तों के नाम लेने लगा।

उसकी बातों में मा को कोई भयङ्कर बात तो न लगी ; परन्तु फिर भी उसके हृदय में वकील की बातों से छुरियाँ-सी चुभने लगीं। किसी विरोधी वस्तु का भय, बाहर प्रकट न होकर, भीतर ही भीतर, चुपचाप, उसका हृदय छेद-छेदकर उसे दुःख पहुँचाने लगा। सरकारी वकील चोगा लटकाये हुए एक काले बादल की तरह जजों को ढाँके हुए था, जिससे बाहर से उनके पास किसी चीज का पहुँचना अशक्य लगता था। मा ने जजों की तरफ देखा, परन्तु वह उनको न समझ सकी। उन्होंने न तो पवेल या फेड्या पर नाराजगी दिखाई और न जैसा मा सोचती थी, उन नवयुवकों को डाँटा ही। न उन्होंने अभियुक्तों को गालियाँ ही दीं। वे अपने प्रश्न—अनिच्छा-सी प्रकट करते हुए मानों सोच रहे हों कि इन प्रश्नों से क्या फायदा है—अभियुक्तों से पूछते,

थे और उन प्रश्नों के अभियुक्त जो उत्तर देते थे, बहुत सब्र से पूरी तरह सुनते थे। ऐसा स्पष्ट लगता था कि उन्हें परिणाम का पहले से ही पता होने से मुकदमे के ढकोसले में कोई रस नहीं आ रहा था।

मा के सामने एक खुफिया पुलिस का आदमी खड़ा हुआ भारी स्वर में कह रहा था—पवेल व्लेसोव सबका नेता था।

'और नखोदका?' मोटे जज ने सुस्त आवाज से पूछा।

'वह भी।'

'मैं...'

बूढ़े जज ने किसी से कहा...बस, और तुम्हें कुछ नहीं कहना है?

मा को सभी जज थके हुए और बीमार-से लग रहे थे। बीमारों की-सी थकावट उनके चेहरों, उनके ढब और उनकी आवाजों में लगती थी। वह ऊबे और उकताये हुए-से थे और उन्हें अपनी वर्दियाँ, इजलास, सिपाही, वकील तथा कुर्सियों में बैठकर उन्हीं बातों को पूछना जो उन्हें पहले ही बताई जा चुकी थीं, व्यर्थ के एक दिखाव और ढकोसला-सा अखर रहा था। मा जीवन के मालिकों से परिचित नहीं थी। उसने ऐसे लोगों को पहले कभी नहीं देखा था। अस्तु, उसे जजों के चेहरे नये और विचित्र-से लग रहे थे। परन्तु उन्हें देखकर उसके हृदय में भय नहीं हो रहा था; बल्कि उन पर उसे दया-सी आ रही थी।

इतने में पीले मुँहवाला परिचित पुलिस का अधिकारी सामने आया और पवेल और ऐन्ड्री के बारे में शब्दों को खींच-खींचकर और बना-बनाकर अपना बयान देने लगा। मा मन-ही-मन हँसती हुई सोचने लगी—तुम्हें तो उनके कामों का कुछ भी पता नहीं है, काकाजी!

मा को अब कटघरे के भीतर बैठे हुए बन्दियों की तरफ देखकर डर नहीं लगता था, क्योंकि वे स्वयं सब-के-सब बड़े निर्भीक दीखते थे। न उन्हें किसी की दया की जरूरत लगती थी। मा के हृदय में उनको देख-देखकर उनके प्रति प्रशंसा और प्रेम का भाव जाग्रत हो रहा था, जो उसके हृदय को धीरे से थपथपा रहा था—प्रशंसा का एक शान्त भाव और प्रेम का एक स्पष्ट आनन्दपूर्ण भाव। वे सब-के-सब वीरमुद्रा के नवयुवक दीवाल के सहारे एक तरफ चुपचाप बैठे थे। न तो वे जजों और गवाहों के रसहीन प्रश्नोत्तरों में कोई भाग ले रहे थे और न अपने वकीलों और सरकारी वकील की कानूनी बहसों से उन्हें कोई सरोकार लगता था। उनका व्यवहार ऐसा था, मानों अदालत में जो कुछ हो रहा था, उससे उन्हें कोई सम्बन्ध नहीं था। कभी-कभी उनमें से कोई व्यंग्यपूर्ण हँसता हुआ अपने दूसरे बन्धुओं से कुछ कहने लगता था, जिसे सुनकर उन सबके चेहरों पर भी एक व्यंग्यपूर्ण मुस्कान नाचने लगती थी। ऐन्ड्री और पवेल बराबर अपने एक वकील से बातें करने में लगे हुए थे, जिसको मा ने एक दिन पहले ही निकोले के यहाँ देखा था, और जिसको निकोले 'बन्धु' शब्द से सम्बोधित करता था।

माश्किन भी जो सबसे अधिक जोश में दीखता था, इन लोगों की बातें सुन रहा था। बीच-बीच में सेमोयलोव कुछ आईवान गसेव से कहता था, जिसे सुनकर आईवान दूसरे बन्धुओं को कनिहाने लगता था और उसको अपनी हँसी रोकना मुश्किल हो जाता था, जिससे उसका चेहरा लाल हो जाता था और गाल फूल जाते थे। अस्तु, वह चुपचाप अपना मुँह नीचे को कर लेता था। सेमोयलोव कई बार बीच में छींक भी चुका था और छींकने के बाद कई मिनट तक मुँह फुलाये हुए गम्भीर बनकर वह बैठ जाता था। इसी प्रकार हरएक बन्धु की जवानी अपने-अपने स्वभाव के अनुसार उमड़ रही थी और उसकी लहरें उन बाँधों को बाँधे जा रही थीं जिनके बाँधने का वे सब भरसक प्रयत्न-सा कर रहे थे। मा उनकी तरफ देखती थी और उनकी एक-दूसरे से तुलना करती हुई कुछ विचारती थी। उनको देख-देखकर उसे अपने हृदय मे उठता हुआ शत्रुता का भाव समझना और व्यक्त करना असम्भव हो रहा था।

सिजोव ने धीरे से मा को कनिहाया और मा ने मुड़कर उसकी तरफ देखा। उसके मुख पर सन्तोष-पूर्ण विचार की एक झलक थी। वह मा को कनिहाता हुआ कहने लगा—देखो-देखो, छोकरे कैसी वीरता से आपत्ति का मुकाबला कर रहे हैं! कैसे फौलाद के बने हैं! ओहो! कैसे सरदारों की तरह वीर दीखते हैं। फिर भी उन्हें सजा तो हो ही जायगी।

मा उसे सुनाती हुई मन-ही-मन बार-बार कहती थी—कौन सजा देगा! किसको सजा देगा!

गवाह जल्दी-जल्दी, रसहीन स्वरों में अपने बयान दे रहे थे और जज, जिनके चेहरों का अनिच्छा और नीरसता से रङ्ग फीका था, थके हुए और अलिप्त-से आकाश की तरफ चुपचाप देख रहे थे। ऐसा लगता था कि उन्हें कोई नई वस्तु देखने अथवा सुनने का बिलकुल आशा नहीं थी। बीच-बीच मे मोटा जज मुँह फाड़कर जँभुआई लेता था और अपनी मुस्कराहट को अपनी मोटो हथेली से ढाँक लेता था। लाल मूँछों का जज अधिक-अधिक पीला पड़ता जा रहा था। वह अपनी उँगली उठाकर कनपटी पर गड़ाता था और आँखें फाड़-फाड़कर दुःख से छत की तरफ देखता था। सरकारी वकील बार-बार कागज पर कुछ लिखता था और फिर जमींदारों के सरदार से बातचीत करने लगता था। जमींदारों का सरदार अपनी दाढ़ी खुजलाता हुआ चुपचाप अपने विशाल और सुन्दर नेत्र इधर-उधर घुमाता था और बार-बार बड़प्पन की-सी मुस्कान मुस्कराता था। शहर का मेयर अपने एक पैर पर दूसरा पैर रखे बैठा था और उँगलियों से अपने घुटनुओं का बराबर ताल लगा रहा था। केवल एक मनुष्य गवाहों की रसहीन बड़बड़ाहट को सुनता हुआ-सा लग रहा था—वह था जिले का सरपंच, जो चुपचाप सिर झुकाये और घुट्ओं पर अपना पेट रखे हुए और उसे दोनों हाथों से सँभालकर पकड़े हुए बैठा था। बूढ़ा जज कुर्सी में डूबा हुआ, उसमें गड़ा हुआ-सा बैठा था। इसी प्रकार मुकदमे की कार्रवाई बहुत देर तक चलती रही, और कुछ देर बाद फिर सभी लोगों पर एक मुर्दनी-सी छाने लगी।

मा को लगा कि अदालत का वह बड़ा कमरा अभी तक न्याय के उस ठण्डे और कठोर वातावरण से परिपूर्ण नहीं था, जिसमें आत्मा अपने हृदय के उद्गार खोलने पर बाध्य होती है, उनकी परीक्षा करती है और हर एक चीज को निष्पक्ष दृष्टि से देख-देखकर परखने की चेष्टा करती है और उसे सच्चे हाथों से तौलती है। अपनी शक्ति अथवा महत्ता से हृदय में भय पैदा करनेवाली अदालत के कमरे में उसे कोई चीज नहीं दीखी।

'मैं अब अदालत...' बूढ़े जज ने स्पष्ट स्वर में खड़े होते हुए कुछ शब्द कहे जो उसके पतले-पतले होंठों में दबकर रह गये।

निःश्वासों, धीमी-धीमी आवाजों, खाँसने और पैरों के चलने के शोर से अदालत का कमरा एकाएक भर गया। सिपाही कैदियों को लेकर बाहर चले और कैदी जाते हुए अपने-अपने नाते-रश्तेदारों और मित्रों की तरफ सिर हिलाने लगे। आइवान गसेव ने किसी से सुरीली आवाज में चिल्लाकर कहा—घबराना मत, यगोर!

मा और सिजोव भी उठकर बाहर बरामदे में चले गये।

'चलो, दूकान पर चलकर थोड़ी-सी चाय पीयें!' बूढ़े आदमी ने स्नेह-पूर्वक मा से कहा—मुकदमा अब डेढ़ घण्टे के बाद शुरू होगा।

'नहीं, मेरा जी चाय पीने को नहीं चाहता है।'

'अच्छा, तो मैं भी नहीं जाऊँगा। देखा, कैसे गजब के छोकरे हैं! कैसा उनका व्यवहार है! मानों ये ही तो आदमी हों, दूसरे सब कुछ भी नहीं। सब-के-सब छोड़ दिये जायँगे, मुझे तो ऐसा ही लगता है। फेडका को देखा, ओ हो!' इतने में सेमोयलोव का बाप भी हाथ में अपना टोप पकड़े हुए उनके पास आया। वह क्रोधपूर्वक मुस्कराता हुआ कहने लगा—मेरे वेसिली को देखो। उसने कोई सफाई नहीं दी। और व्यर्थ की बकवास करने की भी कोई इच्छा नहीं दिखाई। उसी ने ऐसी शुरुआत की। तुम्हारे लड़के ने तो निलोवना, वकील भी किये; परन्तु मेरे ने कहा—मुझे कोई वकील नहीं चाहिए। और उसके बाद फिर चारों ने वकील करने से इनकार कर दिया। हूँ; दे...खा!

उसी के पास उसकी स्त्री भी खड़ी थी। वह अपनी आँखें खोल और मींच रही थी और रूमाल से उन्हें पोंछ रही थी। सेमोयलोव का बाप हाथ में अपनी दाढ़ी पकड़कर जमीन की तरफ देखते हुए बोला—एक बात अजीब जरूर है। उन सबकी तरफ देखकर—उन सब शैतानों की तरफ देखकर ऐसा विचार तो आता है कि उन्होंने यह सब ऊटपटाँग किया जरूर। व्यर्थ में उन्होंने अपना सत्यानाश किया है। और फिर एकाएक यह भी विचार होता है कि 'शायद वही ठीक हो!' कारखाने में अब ऐसे ही आदमियों की संख्या दिन-दिन बढ़ती जाती है। उनकी पकड़ा-धकड़ी जरूर होती है। परन्तु फिर भी वे कम नहीं होते, जैसे कि नदी से मछलियाँ पकड़ लेने पर भी कम नहीं होतीं। अस्तु, यह भी मन में विचार उठता है कि कहीं शक्ति इन्हीं लोगों के पास तो नहीं है!

'हम लोगों के लिए यह सब समझना बड़ा कठिन है, स्टीपान पेट्रोवा!' सिजोव ने कहा।

'हाँ, कठिन तो है।' सेमोयलोव ने स्वीकार किया।

उसकी स्त्री नाक साफ करती हुई बोली—वे सब छोकरे बड़े बन्दर हैं। बड़े कठोर हैं। फिर मुस्कराती हुई कहने लगी—देखो निलोवना, मुझसे नाराज मत हो जाना। मैंने अभी तुम्हारे लड़के को व्यर्थ में दोष दिया था। कोई भी मूर्ख बता सकता है कि अधिक दोष किसका है। सच बात तो यही है। देखो न, खुफिया पुलिस के अधिकारी और उनके जासूस हमारे वेसिली के बारे में क्या कह रहे थे! वे अच्छी तरह उसे जानते हैं।

वह अपने भावों को अच्छी तरह नहीं समझ रही थी। फिर भी अपने लड़के पर अभिमान कर रही थी। परन्तु मा ने उसके भावों को समझा। अस्तु, वह स्नेहपूर्वक मुस्कराती हुई उससे मन्द स्वर में बोली—युवक हृदय सदा ही सत्य के अधिक निकट रहता है।

लोग बरामदे में इधर-उधर घूम रहे थे और झुण्डों में एकत्र हो-होकर आपस में चर्चाएँ कर रहे थे। अकेला शायद ही कोई खड़ा था। सभी के चेहरों पर बोलने, पूछने और सुनने की एक तीव्र इच्छा दीखती थी। तंग, सफेद बरामदे में लोग इधर-उधर इस तरह घूम रहे थे, जिस तरह आँधी आने से पहले हवा जोर से घूमती हुई धूल उड़ाती फिरती है। हर आदमी किसी एक ऐसी स्थिर और दृढ़ वस्तु की खोज में लग रहा था, जिस पर वह खड़ा हो सके।

बुकिन का बड़ा भाई जो लम्बा था और जिसका मुंह लाल था, अपना हाथ हिलाता हुआ चारों तरफ भागा-भागा फिर रहा था।

'जिले का सरपंच क्लीपेनोव बेचारा इस मुकदमे में बुरा फँस गया है।' उसने जोर से चिल्लाकर कहा।

'बको मत, कोन्सटेनटीन!' इसके बूढ़े बाप ने उसे झिड़कते ए चारों तरफ चिन्ता से देखकर कहा।

'क्यों! ठीक तो कहता हूँ, उसके सम्बन्ध में सभी कहते हैं कि उसने पिछले साल अपने कारिन्दे को उसकी स्त्री हथियाने के लिए जान से मार डाला। भला वह कैसे न्यायाधीश हो सकता है? मैं यह जानना चाहता हूँ। वह खुल्लमखुल्ला अपने कारिन्दे की स्त्री को घर में रखे हुए है—उसका क्या जवाब है! और वह बड़ा नामी चोर भी है।'

'अरे...कोन्सटेनटीन ऐसा है!'

'हाँ! हाँ! सच है।' सेमोयलोव का बाप बोला।

'सचमुच। तब तो अदालत निष्पक्ष नहीं हो सकती।'

बुकिन उसकी आवाज सुनकर जल्दी से उसकी तरफ बढ़ा। भीड़ भी उसी के साथ-साथ उधर ही चली गई। जोश से लाल बुकिन हाथ हिलाता हुआ कहने लगा—अधिकारियों के विरुद्ध जानेवालों का अधिकारी ही न्याय कैसे कर सकते हैं! वे न्याय क्योंकर करेंगे!

'कोन्सटेनटीन जैसे आदमी अधिकारियों के विरुद्ध कैसे जा सकते हैं ? एं...?'

'सुनो ! फेडोर माजिन ने बिलकुल सच कहा । तुम मेरा अपमान करो और मैं तुम्हारे मुँह पर एक घूँसा मारूँ । फिर तुम्हीं मेरा न्याय करने भी बैठो तो तुम अवश्य ही मुझे अपराधी करार दोगे । परन्तु पहले कसूर किसने किया ? तुम्हीं ने न ? फिर सजा मुझे होगी ?'

इतने में एक बूढ़े तिरछी नाक के चपरासी ने आकर जिसकी छाती पर बहुत-से तमगे लटक रहे थे, भीड़ को एक तरफ ढकेलते हुए बुकिन की तरफ उँगली हिलाकर कहा—यहाँ मत चिल्लाओ । जानते नहीं हो, यह क्या जगह है ? क्या इस जगह को भी तुम लोगों ने भटियारखाना समझ रखा है ?

'माफ करो, मेरे बाँके वीर ! मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि मैं इजलास में हूँ । परन्तु सुनो । अगर मैं तुम्हें मारूँ और तुम मुझे मारो और फिर मैं ही जाकर तुम्हारा न्याय करूँ, तो तुम्हीं बताओ, उसका क्या फल होगा ?'

'चुप हो जाओ ! नहीं तो मैं तुम्हें बाहर कर दूँगा ।' चपरासी ने कठोरता से उससे कहा ।

'बाहर कहाँ ? क्यों ?'

'वहाँ दूर सड़क पर—जिससे तुम्हारे चिल्लाने की आवाज यहाँ न आ सके ।'

'यह सब बस एक ही बात चाहते हैं कि लोग मुँह न खोलें । चुप रहें ।'

'और तुम क्या चाहते हो ?' बुढ़ा चपरासी जोर से चिल्लाया । बुकिन ने झटककर अपने हाथ फैला दिये और लोगों की तरफ घूमता हुआ मन्द स्वर मे कहने लगा—सभी लोगों को मुकदमा क्यों नहीं देखने देते ? सिर्फ रिश्तेदारों को ही क्यों घुसने देते हैं ? अगर सचमुच न्याय करते हो तो सबके सामने करो । डर किस बात का है ?

सेमोयलोव के बाप ने फिर कहा—परन्तु अबकी बार अधिक जोर से—मुकदमे का फैसला निष्पक्ष नहीं होगा, यह तो सच ही है ।

मा की इच्छा उससे कहने की हुई कि उसने भी निकोले के मुँह से अदालत के पक्षपात की बातें सुनी थीं । परन्तु उसने अच्छी तरह निकोले की बातें समझी नहीं थीं और उसने क्या कहा था, यह भी वह भूल गई थी । अस्तु, उसे याद करने का प्रयत्न करती हुई वह भीड़ से अलग होकर एक तरफ खड़ी हो गई । भीड़ से अलग होते ही उसने देखा कि एक हल्की मूँछों का नौजवान उसकी तरफ एकटक घूर रहा है । नौजवान का दाहिना हाथ पतलून की जेब में था, जिससे उसका बायाँ कन्धा दाहिने से कुछ छोटा लगता था । उसकी यह विचित्रता मा को परिचित-सी लगी । परन्तु नवयुवक ने उसकी तरफ से एकाएक मुँह फेर लिया । मा फिर निकोले की बातें याद करने के प्रयत्न में लग गई और क्षण-भर उस नौजवान को भूल गई । परन्तु कुछ ही देर में फिर उसके कान में यह मन्द-मन्द प्रश्न आया—वह बाईं तरफ जो खड़ी है, वह स्त्री ?

और किसी ने जोर से हँसते हुए उत्तर दिया—हाँ ! हाँ !

मा ने घूमकर देखा तो वही नौजवान उसकी तरफ से आधा मुड़ा हुआ था और अपने पास में खड़े हुए एक काली दाढ़ी के मनुष्य से जो एक छोटा ओवरकोट और लम्बे फुलबूट पहने हुए था, कुछ कह रहा था।

मा ने बेचैनी से याद करने की चेष्टा की कि इस परिचित-से नौजवान को उसने पहले कहाँ देखा। परन्तु उसे याद न आया।

इतने में चपरासी ने अदालत के कमरे का द्वार फिर खोल दिया और चिल्लाकर कहा—चलो, नाते-रिश्तेदार! टिकट दिखाओ।

एक चिढ़ी हुई आवाज ने इस पर कहा—टिकट दिखाओ! सरकस में चलो।

सभी के चेहरों पर क्रोध और बेचैनी के चिह्न थे। अब उनका व्यवहार अधिक स्वतंत्र हो गया था और वे बड़बड़ाते हुए चपरासी से झगड़ रहे थे।

तिपाई पर बैठते हुए सिजोव मा से कुछ बड़बड़ाया।

'क्या?' मा ने पूछा।

'कुछ नहीं। लोग बड़े मूर्ख हैं। उन्हें कुछ नहीं मालूम। अन्धेरे में बेचारे टटोलते-से गिरते हैं।'

इतने में घण्टी बजी और किसी ने लापरवाही से ऐलान किया—अदालत शुरू होती है।

उसके यह कहते ही सब उठकर खड़े हो गये और फिर उसी क्रम में जजों ने प्रवेश किया, जैसे सवेरे किया था और आकर अपनी-अपनी जगह पर बैठ गये। इसके बाद बन्दी फिर अन्दर लाये गये।

'ध्यान से सुनो!' सिजोव ने मा के कान में कहा—सरकारी वकील बोलता है।

मा ने गर्दन ऊँची की और सारा शरीर उठाती हुई किसी भयङ्कर वस्तु की प्रतीक्षा-सी करने लगी।

जजों की तरफ से आधा मुड़ा हुआ, परन्तु मुँह उसकी तरफ किये हुए अपनी कुह-नियाँ सामने के डेस्क पर टेककर सरकारी वकील ने एक गहरी साँस ली और फिर एका-एक हवा में अपना दाहिना हाथ फेंककर बोलना शुरू किया।

मा उसके पहले शब्द बिलकुल न सुन सकी। उसकी आवाज मोटी और धारा-प्रवाह थी। कभी धीमी हो जाती थी तो कभी फिर तेज। उसके शब्द कपड़ों पर बखिया की सीवन की तरह एक पतली लाइन में चल रहे थे—एकाएक वे फटकर जल्दी-जल्दी ऊपर की तरफ इस प्रकार मँडराये जिस प्रकार मक्खियाँ शक्कर की डली पर मँडराती हुई जाती हैं परन्तु मा को उनमें किसी भयंकर या डरावनी वस्तु के चिह्न नहीं दीखे। वे बरफ की तरह ठण्डे और राख की तरह सफेद, कमरे में पतझड़ की माहुर की तरह बरस रहे थे। सरकारी वकील की वक्तृता जिसमें शब्दों की भरमार थी; परन्तु जो भावों से हीन थी, पवेल और उसके बन्धुओं तक पहुँचती हुई नहीं लगती थी, क्योंकि बिलकुल स्पष्ट था कि उसका उन लोगों पर कोई असर नहीं हो रहा था। वे सब पहले की तरह

ही अपनी जगहों पर दृढ़ता से बैठे मुस्कराते हुए आपस में बातें कर रहे थे। बीच-बीच में वे अपनी मुस्कराहट को छिपाने के लिए बनावटी क्रोध भी कर उठते थे।

'कितना झूठ बकता है!' सिजोव बड़बड़ाया। परन्तु मा ऐसा नहीं कह सकती थी। उसे लगा कि वकील सरकार ने सभी को एक-सा दोषी ठहराया है, किसी को अलग नहीं किया गया है। पवेल के सम्बन्ध में बोल चुकने पर उसने फेद्या के बारे में कहा और उसको भी पवेल के समान ही दोषी ठहराकर वह बुकिन को भी हठपूर्वक उन्हीं की पंक्ति में रखने लगा। मा को लगा कि वह उन सभी को एक-दूसरे के ऊपर भरता हुआ एक ही बोरे में भरकर सी देने का-सा प्रयत्न कर रहा था। परन्तु उसके शब्दों के ऊपरी अर्थ से ही मा को सन्तोष नहीं हुआ था, क्योंकि न तो उनसे उसके हृदय पर कोई असर ही हुआ था और न उनसे उसे किसी प्रकार का डर ही लगा था। वह अभी तक किसी भयंकर वस्तु की ही बाट देख रही थी और वकील सरकार के शब्दों के पीछे, उसके चेहरे में, उसकी आँखों में, उसके स्वर में, उसके हवा में हिलते हुए हाथ में किसी चीज को ढूँढ़ रही थी। कहीं वह भयंकर वस्तु अवश्य होनी चाहिए जिसको वह हवा में सूँघती-सी थी; परन्तु जो उसको दीखती नहीं थी। उसके स्पष्ट न होने से मा के हृदय में एक अपार वेदना हो रही थी।

मा ने जजों की तरफ देखा। निस्सन्देह उन्हें भी सरकारी वकील की वक्तृता नीरस लग रही थी, क्योंकि उनके निर्जीव, पीले चेहरों से कोई भाव व्यक्त नहीं हो रहा था। बीमार, मोटे या पतले, स्थिर निर्जीव मनुष्यों के धब्बे से अदालत के कमरे में फैले हुए वहाँ के मुर्दार वातावरण में धुँधले दीख रहे थे, सरकारी वकील के शब्द उड़-उड़कर हवा में अदृश्य हो जानेवाले धुएँ की तरह उनकी तरफ जा रहे थे और उनके चारों तरफ घिरते हुए उन्हें एक रूखी लापरवाही और थकी हुई इन्तजारी की घटा में ढाँक रहे थे।

बीच-बीच में जजों में से कोई अपनी बैठक जरूर बदलता था। परन्तु उनके थके शरीरों का सुस्ती से हिलना उनकी सोई हुई आत्मा को नहीं जगा पाता था। बूढ़ा जज जरा भी हिलता-डुलता नहीं था। वह अपनी जगह पर जमा हुआ स्थिर और सीधा बैठा था। उसके चश्मे के पीछे के सफेद-सफेद धब्बे कभी-कभी एकाएक मिटते हुए उसके चेहरे पर फैलने लगते थे। मा ने उनके मुर्दार चेहरों, उनकी लापरवाही, उनकी द्वेष-रहित और निर्लेप मुद्रा को ध्यान-पूर्वक देखा और सोचने लगी—यही न्याय करेंगे!

इस प्रश्न ने उसके हृदय को बार-बार इतना दबोचा कि उसमें से भयंकर वस्तु की आशा निकल गई और किसी आनेवाले अन्याय की तीक्ष्ण आकांक्षा उठती हुई उसी का गला-सा घोटने लगी।

एकाएक सरकारी वकील ने अपनी वक्तृता बन्द कर दी और जजों की तरफ सिर झुकाकर वह अपने हाथ मलता हुआ बैठ गया। जमींदारों के सरदार ने उसकी तरफ सिर हिलाया और शहर के मेयर ने उससे मिलाने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया। जिले का सरपंच अपने पेट पर हाथ फेरता हुआ मुस्कराने लगा।

परन्तु जजों को उसकी वक्तृता से कोई प्रसन्नता नहीं हुई, क्योंकि उन्होंने कोई प्रसन्नता का भाव व्यक्त नहीं किया।

'शैतान का बच्चा!' सिजोव ने सरकारी वकील को धीरे से गाली दी।

'अच्छा!' बूढ़ा जज एक कागज मुँह तक उठाता हुआ बोला—अब दूसरे पक्ष के वकीलों को जो कहना हो, कहें...

यह सुनकर वह वकील जिसको मा ने निकोले के यहाँ देखा था, उठा। उसके चौड़े चेहरे से भलमनसी टपकती थी। उसकी छोटी-छोटी आँखें पलकों के नीचे से दो तेज छूरियाँ-सी हृदय में भोंकती हुई, जल्दी-जल्दी खुलती और बन्द होती हुई कैंची की तरह हवा को काट रही थीं। उसने स्पष्ट और गूँजती हुई आवाज में धीरे-धीरे बोलना शुरू किया; परन्तु मा उसकी वक्तृता समझ न सकी। सिजोव ने मा के कान में कहा—सुनो, वह क्या कह रहा है! कह रहा है कि 'लोग गरीब हैं। बेचैन हैं! मूर्ख हैं!' अरे, यह फेडेर बीच में क्या कहता है! 'और वे नादान हैं।'

उसके यह कहते हुए अन्याय का भाव अदालत के कमरे में जाग्रत हुआ और जाग्रत होकर विद्रोह में परिणत होने लगा।

वकील की ऊँची और तेज आवाज के साथ-साथ कमरे में बैठे हुए लोगों का समय भी जल्दी-जल्दी कटने लगा। वकील कह रहा था—कोई भी नौजवान जिसके सीने में दिल है और उस दिल में हिम्मत है, अवश्य ऐसे जीवन के विरुद्ध सिर उठायेगा, जिसमें इतना परस्पर अविश्वास, इतनी बुराइयाँ, इतना असत्य और इतनी नीरसता है। सच्चे मनुष्यों की आँखें ऐसे जीवन के स्पष्ट विरोध को देखकर बिना आँसू बहाये नहीं रह सकतीं......

इतना सुनकर हरे चेहरे के जज ने बूढ़े जज के कान में झुककर कुछ कहा, जिसे सुनकर बूढ़े जज ने रूखी आवाज में वकील से कहा—कृपया जरा सोच-समझकर बोलिए!

'हूँ!' सिजोव ने धीरे से हुँकार ली।

'यही न्यायाधीश है।' मा ने आश्चर्य-चकित होकर मन में सोचा। मा को बूढ़े जज के शब्द मिट्टी के घड़े की तरह खोखले-से लगे, जो मा के हृदय में किसी भयङ्कर वस्तु का उसे डर हो रहा था, उस पर सब हँस रहे थे।

'यह तो मुर्दों की तरह बैठे हैं।' मा ने सिजोव के जवाब में कहा।

'ठहरो! ठहरो! उनमें अब जान आ चली है।'

मा ने आँखें उठाकर फिर जजों की तरफ देखा, तो उसे अब उनके चेहरों पर बेचैनी के चिह्न साफ दिखाई दिये। एक दूसरा नाटे कद और तीक्ष्ण, पीले, व्यंग्यपूर्ण चेहरे का वकील अभियुक्तों की तरफ से सम्मान-पूर्वक बोल रहा था। वह कह रहा था—मैं बड़े अदब के साथ अदालत का ध्यान सरकारी वकील की अटल श्रद्धा की तरफ खींचना चाहता हूँ, जो उन्हें पुलिस-विभाग के लोगों के व्यवहार और गवाहियों पर है।

उन लोगों के व्यवहार और गवाहियों पर जिन्हें साधारण लोग अपनी भाषा में जासूस कहते हैं।

हरे मुँह का जज प्रमुख जज के कान में झुककर फिर कुछ कहने लगा और सरकारी वकील एकदम उछलकर खड़ा हो गया। परन्तु वह वकील अपनी बात कहता ही रहा—जासूस जीमैन ने इस अदालत में गवाह के सम्बन्ध में खुद इकबाल किया है कि उसने उसे धमकाया था। उसी तरह सरकारी वकील ने भी, अदालत को मालूम ही है, गवाहों को डराने की अदालत में ही कोशिशें कीं और उस सम्बन्ध में हमारे अदालत का ध्यान खींचने पर, उनको प्रमुख जज की ओर से झिड़की भी मली...

यह सुनकर सरकारी वकील जल्दी-जल्दी क्रोध से कुछ कहने लगा और बूढ़ा जज भी उसी तरह क्रोध से बड़बड़ाया। वकील ने चुपचाप सिर झुकाकर उन दोनों को सम्मान-पूर्वक सुना और फिर कहने लगा—मैं अपने शब्दों का क्रम बदलने के लिए तैयार हूँ, अगर सरकारी वकील की यह राय है कि मैंने इधर की बात उधर और उधर की इधर रख दी है। परन्तु उससे जो कुछ मैंने अभी कहा, उसकी सत्यता में कोई फर्क नहीं पड़ता। अस्तु, सरकारी वकील को शब्दों के जरा इधर-उधर हो जाने पर इतना भड़कने और जोश दिखाने की कोई जरूरत मुझे तो नहीं मालूम होती...

'खूब दिया!' सिजोव बोला—और दो कसकर! ऐसा चुभता हुआ मारा कि आत्मा तक बिंध जाय!

कमरे में एकाएक जीवन आ गया था और लोगों के दिलों में जोश भरने लगा था। वकीलों ने चारों तरफ आक्रमण शुरू कर दिया था। वे जजों को चिढ़ा-चिढ़ाकर क्रोध दिलाते हुए उनकी सुस्ती भगा रहे थे और उनकी बूढ़ी खालों में अपने शब्दों के बाण से छेद कर रहे थे। जज एक दूसरे की तरफ खिसकते और एकाएक फूलकर सूजते हुए मानों अपने मोटे शरीरों को उनके तीक्ष्ण शब्दों के आक्रमणों से बचाने का प्रयत्न कर रहे थे। उनके व्यवहार से ऐसा लगता था, मानों उन्हें डर लगता था कि कहीं अपने विरोधियों के वारों से वे डिग न जायँ, जिससे उनका निश्चय, जो वह कर चुके थे, कहीं बदल न जाय। उनके मन में सचमुच विचित्र भाव उठ रहे थे। उनके आंतरिक संघर्ष को समझ लेने में मा के पीछे की तिपाइयों पर बैठे हुए लोग निःश्वास लेते हुए आपस में घुसपुस कर रहे थे।

एकाएक पवेल उठा और उसके उठते ही चारों तरफ शांति छा गई। मा ने उचकते हुए अपना शरीर आगे की तरफ बढ़ाया। वह बोला—अपने दल के एक सदस्य की हैसियत से मैं अपने दल के सिवाय और किसी अदालत को नहीं मानता। अस्तु, मैं अपने बचाव में कुछ नहीं कहना चाहता। अपने दूसरे बन्धुओं के इच्छानुसार मैंने भी सफाई में कोई सबूत देने से इनकार कर दिया है। मैं केवल आपको अपने संबंध में कुछ ऐसी बातें समझाने की कोशिश करना चाहता हूँ, जो मुझे लगता है, आप अभी तक नहीं जानते हैं। सरकारी वकील ने कहा है कि सामाजिक सत्तावाद का झण्डा उठाकर हमने

सरकार के प्रति विद्रोह का झण्डा उठाया है, और उन्होंने हम लोगों को केवल जार के प्रति विद्रोही साबित करने का प्रयत्न किया है। मैं आपको बतलाना चाहता हूँ कि जार को तो हम लोग उन जंजीरों में से सिर्फ एक जंजीर ही मानते हैं जो हमारे देश की प्रजा को जकड़े हुए हैं। यह जरूर है कि सरकार इन तमाम जंजीरों में से हमारे शरीर के सबसे निकट है। अस्तु, हमें अपनी मुक्ति के लिए पहले उसी पर वार करना पड़ा है!

पवेल की दृढ़ आवाज के कारण कमरे में छाई हुई खामोशी और भी अधिक लगती थी और कमरे की दीवारों का एक-दूसरे से अन्तर भी बढ़ता हुआ-सा लग रहा था। पवेल ने अपने शब्दों से लोगों को अपने-आपसे बहुत दूर हटा दिया था, जिससे वह मा की आँखों में एकाएक बहुत ऊँचा उठ गया और उसका कठोर, शान्त और अभिमानी चेहरा जिस पर दाढ़ी बढ़ रही थी, उसका मस्तक और गम्भीर नीली-नीली आँखें मा को सब चमकते हुए-से लगे।

जज उसकी बातें सुनकर बेचैनी से हिलने-डुलने लगे थे। जमींदारों के सरदार ने सुस्त चेहरे के जज के कान में कुछ कहा और वह सिर हिलाता हुआ बूढ़े जज की तरफ मुड़ा जिसकी दूसरी तरफ बैठा हुआ बीमार-सा जज उससे कुछ कह रहा था। बूढ़ा जज कुर्सी में आगे-पीछे हिलता हुआ पवेल से कुछ कहने लगा। परन्तु उसकी आवाज पवेल की नौजवान आवाज के जोरदार प्रवाह में डूब गई। पवेल कह रहा था—हम समाजवादी हैं, अर्थात् हम व्यक्तिगत सम्पत्ति के विरोधी हैं, जो हमारे विश्वास के अनुसार लोगों में भेद डालती है। उन्हें एक-दूसरे से लड़ाती है और उन्हें दो अनमिल विरोधी श्रेणियों में बाँट देती है, जिससे उस असत्य का संसार में जन्म होता है, जिसकी सहायता से विरोधी को ढाँकने और उसकी रक्षा करने का प्रयत्न किया जाता है और लोगों में झूठ, छल, छिद्र और द्वेष का प्रचार करके हमारे जीवन का सर्वनाश किया जाता है। हम समाजवादियों का यह विश्वास है कि जिस समाज में मनुष्य को केवल सम्पत्ति उत्पन्न करने का केवल एक ही साधन समझा जाता है, वह समाज मनुष्य-जीवन का शत्रु है। वह हमारा विरोधी और घातक है। अस्तु, हम उसकी नीति को स्वीकार नहीं कर सकते। हम उसके दो-मुँही झूठ अर्थात् एक से कुछ कहना और दूसरे से कुछ और उसके मनुष्य मात्र पर अविश्वास को हरगिज नहीं मान सकते, क्योंकि ऐसे समाज में व्यक्तियों का जो एक-दूसरे से सम्बन्ध होता है, उससे हमें हार्दिक ग्लानि है। अस्तु, ऐसा समाज मनुष्य-जीवन पर जो-जो शारीरिक और नैतिक बन्धन रखता है, हम उसके भी विरोधी हैं, और मरते दम तक हम उसका विरोध करते रहेंगे। हम तो सदा ही उन सारे प्रयत्नों को निष्फल करने का भरसक प्रयत्न करेंगे जो मुफ्तखोरी अर्थात् मुनाफे की थैलियाँ फुलाने के लिए किये जाते हैं। हम अपनी एड़ी-चोटी का पसीना अपनी मेहनत से एक कर देनेवाले कामगार हैं। हमारे बाहुबल से ही सारे संसार की सम्पत्ति, बच्चों के छोटे-छोटे खिलौने से लेकर वे दैत्याकार कलें और मशीनें तक जिनकी सहायता से मनुष्य-समाज ने एक नई दुनिया बना ली है, उत्पन्न होती हैं। परन्तु हमको आदमियों

की तरह अपनी मान-मर्यादा को सुरक्षित रखते हुए दुनिया में रहने का भी अधिकार नहीं है। हर एक आदमी हमसे अपना फायदा उठाना चाहता है और हमारा औजारों की तरह अपने फायदे के लिए ही उपयोग करता है। हमारा जो कि दुनिया की सारी सम्पत्ति उत्पन्न करते हैं, दुनिया में कोई अधिकार नहीं है। अस्तु, हम समाजवादी यह चाहते हैं कि जो सम्पत्ति हम पैदा करते हैं, उस पर हमारा ही अधिकार हो। हमारा उद्देश्य और ध्येय बड़ा सरल और सीधा है—सभी के लिए मेहनत करना अनिवार्य हो। सम्पत्ति उत्पन्न करने के सारे साधनों पर मेहनत करनेवाले कामगारों और किसानों का अधिकार हो और वह किसी की वैयक्तिक सम्पत्ति न बन सकें, जिससे सारी शक्ति और अधिकार भी इन्हीं के हाथों में रहे, जो सम्पत्ति पैदा करते हैं। मैं समझता हूँ कि अब आप लोगों को स्पष्ट हो गया होगा कि हम लोग जार के खिलाफ विद्रोह खड़ा करनेवाले बागी ही नहीं हैं। पवेल यह कहता हुआ मुस्कराने लगा और उसकी नीली-नीली आँखों में दया की एक ज्योति-सी जग उठी।

'कृपया, मुकदमे से सम्बन्ध रखनेवाली बातों के सम्बन्ध में ही बोलो!' प्रमुख जज ने जोर से स्पष्ट शब्दों में कहते हुए पवेल की तरफ मुँह फेरा और उसको गौर से देखने लगा। मा को लगा कि जज की बाईं धुंधली आँख में लोभ की विनाशकारी ज्वाला जलने लगी थी। दूसरे जज भी जिस दृष्टि से पवेल को घूर रहे थे, उसे देखकर मा घबरा उठी, उसको ऐसा लगा कि उनकी आँखें उसके चेहरे और शरीर में भरे हुए उसके गरम-गरम खून के लिए तरस रही थीं, जिसे वे अपने जीर्ण शरीरों में भरकर उसमें फिर से नया जीवन लाना चाहते थे। पवेल सीधा अपना मस्तक ऊँचा किये हुए खड़ा था। वह दृढ़ता से उनकी तरफ हाथ बढ़ाकर साफ आवाज में कहने लगा—हम लोग क्रान्तिकारी हैं और तब तक हम लोग क्रान्तिकारी ही रहेंगे, जब तक कि व्यक्तिगत संपत्ति को संसार से समूल नष्ट नहीं कर देंगे। जब तक कि एक वर्ग दुनिया में केवल हुक्म चलाता है और दूसरा वर्ग अपनी एड़ी-चोटी का पसीना एक करता हुआ मेहनत करता है, हम क्रान्तिकारी ही रहेंगे। हम उस समाज-व्यवस्था के घोर शत्रु हैं, जिसके हितों की रक्षा करने के लिए आप लोग यहाँ अदालत में बैठे हैं और जब तक हमें पूर्ण विजय प्राप्त नहीं हो जायगी, तब तक हमारा और आपका कोई समझौता होना अशक्य है। हम कामगार हैं। अस्तु, हमारी विजय निश्चय है, क्योंकि आपका समाज इतना बलवान् नहीं है, जितना वह अपने अपने-आपको समझे बैठा है। वही सम्पत्ति, जिसको उत्पन्न कराने के लिए तुम्हारा समाज लाखों और करोड़ों मनुष्यों को अपना क्रीतदास बनाये हुए है और उनको भेड़ों-बकरों की तरह दिन-रात भेंट चढ़ा रहा है, वही सत्ता जो एक वर्ग को हमारे ऊपर अपना 'अधिकार जमाने की ताकत देती है, समाज में द्वेष-भाव फैलाकर तुम्हारे समाज का शारीरिक और नैतिक पतन भी कर रही है। गरीबों को संसार में कायम रखने के लिए तुम्हारा वर्ग बड़ा प्रयत्न कर रहा है और करेगा, क्योंकि एक तरह से तुम भी उसी तर इस सामाजिक व्यवस्था के गुलाम हो, जिस तरह हम ; बल्कि हमसे

कहीं अधिक तुम गुलाम हो। हम शारीरिक गुलाम ही हैं, तुम नैतिक गुलाम हो। तुम अपनी शानो-शौकत और आदतों के बोझ से ही इतने दबे हुए हो कि उससे तुम्हारी आत्माएँ ही कुचल गई हैं। हमारी आत्मा की उन्नति के मार्ग में ऐसी कोई अड़चनें नहीं हैं। जिस गरल को हमें पिला-पिलाकर तुम हमारी आत्मा को ही मार देना चाहते हो, वह उस अमृत से बहुत कमजोर है जो तुम्हारी हरकतों से हमारे अन्तर में तुम्हारे बिना जाने-बूझे उत्पन्न हो रहा है। इस अमृत की अमर ज्योति कामगारों के अन्तर में दिन-दिन ऊँची उठती हुई उनमें सारी श्रेष्ठ शक्तियों की शक्ति आत्मशक्ति और तुममें भी जो कुछ श्रेष्ठता है उसको भी भर रही है और उन्हें मजबूत बना रही है।

परन्तु, तुममें अब अपने अधिकारों और अपनी सत्ता को आदर्श बनाकर हमसे लड़ने की शक्ति नहीं है। ऐतिहासिक न्याय की दृष्टि से तुम्हारा काम पूरा हो चुका है। विचारों की दुनिया में भी अब न तो तुम कोई नई सृष्टि कर रहे हो और न करने की तुममें शक्ति ही है। आध्यात्मिक दुनिया में भी तुम्हारा स्थान एक बाँझ स्त्री का-सा है। हमारे कामगारवर्ग के विचारों का विकास हो रहा है। हमारे विचार जगमगाते हुए लोगों पर अपना अधिकार जमा रहे हैं और उन्हें संगठित करते हुए उन्हें अपनी स्वतंत्रता की लड़ाई छेड़ देने के लिए तैयार कर रहे हैं। अपनी महाशक्ति का ज्ञान दुनिया-भर के कामगारों को एक सूत्र में बाँधता हुआ उनकी आत्माओं को एक बना रहा है। हमारी इस बढ़ती हुई महाशक्ति को, हमारे इस उत्थान को रोकने के लिए तुम्हारे पास अविश्वास और अत्याचार के सिवाय और कोई साधन नहीं है! परन्तु तुम्हारे अविश्वास का सबको पता है, और तुम्हारा अत्याचार भी अब अपनी सीमाएँ लाँघ चुका है और जिनसे तुम आज हमारा गला घुटवा रहे हो, वे ही कल स्नेह से हमारे हाथ आकर पकड़ेंगे!

तुम्हारी शक्ति तुम्हारे सोने के ढेरों पर ही निर्भर है, जो कि एक निर्जीव वस्तु है और जो तुम्हारे वर्ग को ही ऐसे विचित्र गिरोहों मे विभाजित कर रही है जो अपने लोभ में एक-दूसरे को ही हड़पने का प्रयत्न करते रहेंगे। हमारी शक्ति किसी निर्जीव वस्तु पर निर्भर नहीं है। वह तो दुनिया-भर के कामगारों की एकता के सजीव ज्ञान पर निर्भर है। तुम अपराधी हो, क्योंकि तुम दूसरों को गुलाम बनाते हो, और उन्हें अपनी गुलामी में रखने के प्रयत्नों में संलग्न रहते हो। हम दुनिया को उन विचारों और राक्षसों से मुक्त करने के प्रयत्नों में लगे हैं, जिन्होंने तुम्हारे लाभ और द्वेष से उत्पन्न होकर दुनिया पर अपना आतङ्क जमा लिया है। तुम्हारी करतूतों से मनुष्य-समाज से जीवन छिन गया है और वह छिन्न-भिन्न हो गया है। जिस दुनिया के तुमने टुकड़-टुकड़े कर डाले हैं, उसे समाजवाद फिर से पुनर्घटित करके एक करना चाहता है और वह कार्य पूरा करके ही रहेगा, इसमें जरा भी सन्देह नहीं है! इतना कहकर पवेल क्षण-भर के लिए चुप हो गया और फिर धीमी आवाज में, परन्तु दृढ़ता से दुहराया—हाँ, इसमें जरा भी सन्देह नहीं है!

जज विचित्र प्रकार से मुँह बना-बनाकर आपस में घुसपुस कर रहे थे। अभी तक

उनके लोभी नेत्र निलोवना के लड़के पर वैसे ही गड़े थे। मा को ऐसा लग रहा था कि उनकी नजरें पड़ने से उसके लड़के का कोमल, परन्तु बलिष्ठ शरीर कान्तिहीन होता जा रहा था, तथा उनकी आँखें उसके शरीर की ताकत और कान्ति को देख-देखकर ईर्ष्या से जल रही थीं। सारे बंदी अपने बन्धु की वक्तृता को बहुत ध्यान-पूर्वक सुन रहे थे। उनके चेहरों पर हवाइयाँ उड़ रही थीं, परन्तु उनके नेत्रों में आनन्द छलक रहा था। मा अपने लड़के के एक-एक शब्द को पी गई थी, और वे उसकी स्मृति पर पत्थर की लकीर की तरह अङ्कित हो गये थे। बूढ़े जज ने पवेल को कई बार बीच में बोलने से रोका और उसे कुछ समझाया और एक बार वह उदासीनता से मुस्कराया भी; परन्तु पवेल चुपचाप उसे सुनकर फिर गम्भीरता-पूर्वक, परन्तु शांत स्वर में सबको अपनी बातें सुनने के लिए बाध्य-सा करता हुआ, और जजों की इच्छाओं पर भी अपनी इच्छा का अधिकार-सा जमाता हुआ बोलने लगता था। बड़ी देर तक इसी तरह वह बोलता रहा। आखिरकार बूढ़ा जज पवेल की तरफ अपने हाथ फेंककर जोर से चिल्लाया; परन्तु फिर पवेल उसकी परवाह न करता हुआ शान्तिपूर्ण, परन्तु कुछ-कुछ व्यंग्य-पूर्ण स्वर में कहता ही रहा—मुझे जो कहना था, वह मैं लगभग कह चुका हूँ। आपका अपमान करने का मेरा जरा भी इरादा नहीं था; परन्तु इस स्वाँग में, जिसे आपने न्यायालय में मुकदमे का शीर्षक दिया है, मुझे एक आनिवार्य दर्शक की हैसियत से इतना कहना पड़ता है कि मुझे आप पर बड़ी दया आती है। आप आखिर मनुष्य हैं। अस्तु, मुझे यह देखकर बहुत दुःख होता है कि मनुष्य, चाहे वह मेरे शत्रु ही क्यों न हों, हिंसा की सेवा में इतने निर्लज्ज और इतने अधःपतन को प्राप्त हो सकते हैं कि वे अपने मनुष्य-धर्म और मान-मर्यादा को बिलकुल ही भूल सकते हैं!

यह कहता वह जजों की तरफ न देखता हुआ बैठ गया। ऐन्ड्री ने आनन्द में मग्न होकर उसका हाथ जोर से पकड़ लिया और सेमोयलोव, माजिन और अन्य सब बन्धु उसकी तरफ खिंच आये। वह बन्धुओं के चेहरों की तरफ देखता हुआ उनके भाव को देखकर झिझक से मुस्कराने लगा। फिर उसने आँखें उठाकर मा की तरफ देखा और उसकी तरफ इस तरह सिर हिलाया, मानों उससे पूछ रहा हो, क्यों? ठीक है न?

मा उत्तर में उसकी तरफ देखती हुई काँपी और आनन्द-महासागर में गोते लगाने लगी।

'लो, करो शुरू मुकदमा!' सिजोव ने मा के कान में कहा—कैसी खरी-खरी सुनाई?' कहो मैया!

———

छत्तीसवाँ परिच्छेद

मा उत्तर में चुपचाप सिर हिलाती हुई मुस्कराने लगी। उसे बड़ा सन्तोष हो रहा था कि उसका बेटा ऐसी वीरता से बोला था ; परन्तु उससे भी अधिक सन्तोष शायद उसे इस बात पर हो रहा था कि वह बोलना खत्म कर चुका था। एकाएक उसे विचार होने लगा था कि शायद उसके इस व्याख्यान के कारण पवेल पर आनेवाली मुसीबतें और भी बढ़ जायँगी। परन्तु, फिर भी उसका हृदय अभिमान से फुदक रहा था और पवेल के शब्द उसकी छाती में गूँजते हुए घर कर रहे थे।

इतने में ऐन्ड्री उठा और आगे को अपना शरीर फेंककर तिरछी दृष्टि से जजों की तरफ देखता हुआ बोला—सफाई देखनेवाले श्रीमानो...

'तुम अदालत से बोल रहे हो, सफाई देनेवाले श्रीमानों से नहीं!' बीमार चेहरे के जज ने जोर से चिल्लाकर कहा।

ऐन्ड्री के चेहरे से मा ने ताड़ लिया था कि वह जजों को चिढ़ाना चाहता है। उसकी मूँछें हिल रही थीं और एक चालाक बिल्ली की-सी मुस्कराहट, जिसे मा अच्छी तरह पहिचानती थी, उसकी आँखों में चमक रही थी। उसने अपना लम्बा हाथ सिर पर फेरते हुए गहरी साँस ली और सिर झुकाकर बोला—मैं अदालत से बोल रहा हूँ? नहीं, मेरा ऐसा खयाल नहीं है। आप हमारे सामने अपनी सफाई देनेवाले श्रीमान्-वर्ग की तरफ से बैठे हैं।

'मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप केवल मुकदमे के बारे में ही बोलिए। अण्ड-बण्ड बातें न करिए!' बूढ़े जज ने रूखे स्वर में कहा।

'सिर्फ मुकदमे के बारे में? बहुत अच्छा! मैं बहस के लिए माने लेता हूँ कि आप लोग सचमुच जज हैं, स्वतंत्र मनुष्य हैं, सच्चे हैं...'

'अदालत अपने बारे में तुमसे कुछ सुनना नहीं चाहती ...'

'अपने बारे में अदालत मुझसे कुछ सुनना नहीं चाहती? अच्छा! मगर मैं अदालत के बारे में कुछ कहना चाहता हूँ। मान लीजिए कि आप अपने और पराये में भेद नहीं करेंगे। आप बिलकुल स्वतंत्र हैं। परन्तु आपके सामने दो पक्ष आते हैं। एक शिकायत करता है कि इसने मुझे लूट लिया और मेरा सत्यानाश कर दिया है। और दूसरा उत्तर देता है कि मुझे इसको लूटने और सत्यानाश करने का अधिकार है; क्योंकि मेरे पास हथियार हैं।'

'कृपया हमें कहानियाँ मत सुनाइए।'

'अच्छा! मगर मैंने तो सुना था कि बूढ़े आदमियों को कहानियाँ अच्छी लगती हैं। खासकर शैतान बूढ़ों को।'

'मैं तुम्हें बोलने की मुमानियत कर दूँगा ! मुकदमे के बारे में तुम्हें जो कुछ कहना हो, कह सकते हो। मगर यहाँ अण्ड-बण्ड नहीं बक सकते। विदूषक का पार्ट खेलने के लिए यह स्थान नहीं है। जो कुछ तुम्हे अपने और अपने मुकदमे के बारे में कहना है, उचित भाषा में कहो, अनुचित भाषा का प्रयोग नहीं कर सकते।'

लिटिल रूसी चुप होकर अपना सिर खुजलाता हुआ, जजों की तरफ देखने लगा था।

'मुकदमे के बारे में ही कहूँ !' लिटिल रूसी ने गम्भीरता से पूछा—परन्तु मुकदमे के बारे में तुमसे और क्या कहूँ ! जो कुछ तुम्हें जानने की आवश्यकता थी, मेरे बन्धु ने तुमसे कह दिया है। और जो कुछ बाकी बच गया है, वह भी तुमसे कह दिया जायगा। समय आने दो, दूसरे लोग कहेंगे।'

बूढ़ा जज उठकर बोला—बस, अब तुम नहीं बोल सकते। वेसिली सेमोयलोव, तुमको क्या कहना है ?

जोर से अपना होंठ चबाता हुआ लिटिल रूसी तिपाई पर बैठ गया और सेमोयलोव अपने घूँघरवाले बाल हिलाता हुआ उठकर खड़ा हुआ और कहने लगा—वकील सरकार ने मेरे बन्धुओं को और मुझको इस 'जंगली' सभ्यता का शत्रु बतलाया है...

'सिर्फ अपने मुकदमे के बारे मे तुम्हें जो कुछ कहना हो, कहो।'

'परन्तु क्या यह मुकदमे के बारे में नहीं है ! कोई ऐसी चीज दुनिया में नहीं है जिससे सच्चे आदमियों का सम्बन्ध न हो ! मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप मुझे बोलते समय बीच में न टोकें। मैं आपसे यह पूछना चाहता हूँ कि आपकी यह सभ्यता...'

'हम यहाँ तुमसे बहस करने के लिए नहीं बैठे हैं। अण्ड-बण्ड बातें मत करो।' बूढ़े जज ने गुस्से से दाँत पीसते हुए कहा।

ऐन्ड्री के व्यवहार से जजों का ढंग एकाएक बदल गया था। उसके शब्दों ने उनके ऊपर से एक जाल-सा झाड़कर हटा दिया था। उनके भूरे-भूरे चेहरों पर धब्बे-से पड़ने लगे थे और हरी-हरी ठंडी चिनगारियाँ उनकी आँखों से निकलने लगी थीं। पवेल के व्याख्यान से वे चिढ़े जरूर थे ; परन्तु उससे वे दब-से गये थे। उसके तीव्र प्रवाह के सामने सिर झुकाते हुए उन्होंने अपना क्रोध दबा लिया था ; परन्तु लिटिल रूसी की बातों से उनका वह क्रोध एकाएक भड़ककर उमड़ आया था। जज सेमोयलोव के चेहरे की तरफ देखते हुए, सूखे चेहरों से एक-दूसरे से घुसपुस कर रहे थे। उनकी सुस्ती एकाएक काफूर हो गई थी। वे जल्दी-जल्दी अपने हाथ-पैर हिला रहे थे। उनको देखकर ऐसा लगता था कि वे सेमोयलोव को पकड़कर खा जाना चाहते थे, उसे चबा-चबाकर कहकहा लगाना चाहते थे।

'तुम जासूसों को पालते हो ; स्त्रियों और छोकरियों तक को इस्तेमाल करके उनकी अधोगति कराते हो; मनुष्यों को ऐसी स्थिति में रख देते हो कि उन्हें चोरी और खून करने तक पर बाध्य होना पड़ता है, तुम लोगों को शराब पिला-पिलाकर बिगाड़ते हो, उनसे अन्तर्राष्ट्रीय कत्ल करवाते हो, दुनिया-भर में झूठ का प्रचार कराते हो, तरह-तरह

की नीचता और क्रूरता करवाते हो। यह तुम्हारी वह सभ्यता है, जिसकी तुम डींग हाँकते हो। हाँ, हम ऐसी सभ्यता के शत्रु हैं। उसके घोर शत्रु हैं।'

'कृपया! कृपया!' बूढ़ा जज, ठोढ़ी हिलाता हुआ चिल्लाया। परन्तु उसके चिल्लाते ही सेमोयलोव भी अपना मुँह लाल करता हुआ चिल्लाकर बोला—परन्तु तुम्हारी गन्दी सभ्यता से भिन्न एक दूसरी सच्ची सभ्यता के उपासक भी पैदा हो चले हैं। जिस सभ्यता के उत्पन्न करनेवालों पर तुम अत्याचार करते हो, उन्हें कालकोठरियों में डाल-डालकर सताते हो, यहाँ तक कि उन्हें पागल कर देते हो...

'बस, अब तुम आगे नहीं बोल सकते। हूँ...फेडोर माजिन, बोलो, तुमको क्या कहना है!'

बोतल में से उछलकर काग जिस तरह निकलती है, उसी तरह नाटा माजिन भी उछलकर खड़ा हो गया और कहने लगा—मैं...मैं कसम खाकर कह सकता हूँ कि तुम सब कुछ पहले ही से निश्चय कर चुके हो। हमारे लिए सजा तय कर चुके हो...इतना कहकर उसकी साँस उखड़ गई और उसका मुँह एकदम पीला हो गया। उसकी आँखें फैलती हुई उसके सारे चेहरे को हड़पने का-सा प्रयत्न करने लगीं। फिर हाथ आगे को फेंककर वह चिल्लाया—परन्तु मैं कसम खाकर कहता हूँ कि तुम मुझे कहीं भी भेज दो, मैं वहाँ से भाग जाऊँगा और स्वतन्त्र होकर फिर यही काम करूँगा। दिन-रात यही काम करूँगा, जिन्दगी-भर यही करूँगा। कसम खाकर कहता हूँ।...

सिजोव के मुँह से उसके भयानक शब्द सुनकर एक चीख निकल पड़ी। दूसरे लोग भी आवेश की उठती हुई तरंगों में बहते हुए आपस में विचित्र प्रकार से एक मन्द-मन्द गुनगुन करने लगे थे। एक स्त्री रो रही थी और कोई रुँधे हुए गले से खाँस रहा था। पुलिस के आदमी कैदियों की तरफ सुस्ती से आश्चर्य-पूर्वक देखते हुए अदालत की भीड़ पर एक क्रोध-पूर्ण दृष्टि डाल रहे थे। जज हिलने लगे थे। बूढ़ा जज पतली आवाज से चिल्लाया—आइवान गसेव।

'मैं कुछ कहना नहीं चाहता।'

'वेसिली गसेव।'

'मुझे भी कुछ नहीं कहना है।'

'फेडोर बुकिन!'

भूरा, मुरझाया हुआ बुकिन धीरे से उठा और आहिस्ता से सिर हिलाता हुआ मोटी आवाज में बोला—अरे, तुम्हें लज्जा आनी चाहिए! मैं एक अपढ़ मनुष्य हूँ, फिर भी मैं जानता हूँ, न्याय किसे कहते हैं। इतना कहकर उसने अपना हाथ माथे पर रखकर और आँखें मींचकर, इस प्रकार देखा मानों वह किसी बहुत दूर की चीज को देख रहा हो।

'यह क्या कहता है!' बूढ़े जज ने आश्चर्य-चकित होकर अपनी कुर्सी की पीठ से थोक लगाते हुए चिल्लाकर उससे पूछा।

'ऊँह ! खैर ! क्या फायदा ?'

इतना कहकर बुकिन भी क्रोध-पूर्वक तिपाई पर बैठ गया। उसकी काली-काली आँखों में कोई महान् और गम्भीर चीज चमक रही थी। कोई ऐसी निष्ठुर, ग्लानिपूर्ण और स्पष्ट वस्तु, जो सभी को खटकी। जज भी उसे ध्यानपूर्वक सुनने लगे, मानों उसके शब्दों से भी अधिक स्पष्ट उन्हें किसी प्रतिध्वनि की भनक सुनाई दी हो। दर्शकों की तिपाइयों पर सारा आवेश ठण्डा पड़ गया और केवल एक मन्द रुदन-सा हवा में गूँजता रह गया। सरकारी वकील कन्धे मटकाता हुआ दाँत पीस-पीसकर जमींदारों के सरदार से कुछ कहने लगा। इतने में फिर कमरे में आवेशपूर्ण घुसपुस की भिनभिनाहट शुरू हो गई।

मा का शरीर थकावट से दुखने लगा था। उसके माथे पर पसीने की छोटी-छोटी बूँदें झलक आई थीं। सेमोयलोव की मा तिपाई पर बैठी-बैठी अपने कन्धे और कुहनियों से उसे कनिहा रही थी और अपने पति से दबी हुई जबान से कह रही थी—यह क्या हो रहा है ? क्या ऐसा भी सम्भव है ?

'सब कुछ देखती हो ! सम्भव क्यों नहीं है ?'

'हाय, वेसिली को क्या होगा ?'

'चुप बैठी रहो ! बिलकुल खामोश !'

लोगों को कोई चीज खटक रही थी, यद्यपि उनकी समझ में साफ-साफ नहीं आ रहा था कि वह क्या थी। सबने घबराकर अपनी आँखें बन्द कर ली थीं, मानों किसी ऐसी चीज ने एकाएक चमककर उन्हें चौंधिया दिया हो, जिसका आकार और अर्थ तो उन्होंने नहीं समझ पाया था, परन्तु जिसमें आकर्षणशक्ति बेहद थी। लोग अपने अन्दर इस महान् शक्ति का प्रवेश होना न समझ सके। अस्तु, उन्होंने उसको एक ऐसी छोटी वस्तु में परिणत कर लिया, जिसको वह अच्छी तरह समझते थे। बुकिन का भाई अपने-आपको सँभालते हुए जोर से बोला—क्यों ! उनको बोलने क्यों नहीं देते हैं ? सरकारी वकील जो चाहे कह सकता है, उनको...

एक अधिकारी ने तिपाइयों की तरफ हाथ हिलाते हुए धीरे से कहा—चुपो ! चुपो !!

सेमोयलोव का बाप पीछे की तरफ झुककर अपनी स्त्री के कान में टूटे हुए शब्दों में बोला—हाँ जी, मान भी लो कि वे अपराधी हैं। मगर उन्हें बोलने तो देना चाहिए। किसका विरोध उन्हें किया है ? हर चीज का ! मैं भी समझना चाहता हूँ। मेरा भी उसके समझने में हित है और फिर एकाएक वह जोर से बोला—पवेल सत्य कहता था। हाँ ! मैं भी समझना चाहता हूँ। उन्हें बोलने दो···

'चुप रहो !' अधिकारी ने उसकी तरफ उँगली हिलाकर कहा।

सिजोव क्रोध से सिर हिलाने लगा।

परन्तु मा चुपचाप अपनी आँखें जजों पर गड़ाये हुए बैठी थी। वह देख रही थी कि जजों का क्रोध बढ़ रहा है, क्योंकि वे घबराये हुए जल्दी-जल्दी एक-दूसरे से अस्पष्ट

स्वरों में बोल रहे थे। उनके ठण्डे और गुदगुदे शब्दों की आवाज आ-आकर मा के चेहरे को छूती थी और उसके मुँह में एक प्रकार का अप्रिय स्वाद-सा उत्पन्न कर रही थी। मा को ऐसा विचार हो रहा था कि वे सब उसके लड़के और उसके दूसरे बन्धुओं के शरीरों के सम्बन्ध में कुछ कह रहे थे। उनके नंगे बलिष्ठ शरीरों, उनके पुट्ठों, उनके जवान गरम-गरम खून से थलथलाते हुए सजीव अंगों के बारे में वे बातें करते थे। उनके शरीरों को देख-देखकर जजों के हृदय में एक ऐसी ईर्ष्या-सी हो रही थी, जैसी निर्बल और दरिद्र के मन में किसी धनवान् को देखकर होती है, अथवा जैसी किसी स्वस्थ और बलिष्ठ मनुष्य की शक्ति देखकर एक मुरझाये हुए बीमार को ईर्ष्या होती है। जजों के मुँहों में इन जवान शरीरों के लिए पानी आ रहा था, जो उनके लिए मेहनत करने और सम्पत्ति उत्पन्न करने, उन्हें आनन्द देने और उनके लिए सृष्टि करने के योग्य थे। इन नवयुवकों को अपने सामने देखकर बूढ़े जजों को उसी प्रकार क्रोध आ रहा था, जैसे किसी ऐसे बूढ़े कमजोर हिंसक पशु को अपने सामने शिकार देखकर आता है, जिसको पकड़ लेने की उसे शक्ति नहीं होती है, जिससे वह पड़ा-पड़ा अपनी अशक्ति पर गुर्राता है।

मा ने एक बार फिर गौर से जजों की तरफ देखा और उसका यह विचार और भी अधिक प्रबल हो गया। क्योंकि जज अपना क्रोध और लोभ बिलकुल नहीं छिपा रहे थे। उनका क्रोध जो उस भूखे हिंसक पशु का-सा था, जो किसी समय बहुत खाता था, परन्तु अब बूढ़ा हो गया था। निलोवना स्त्री थी और तिस पर मा थी। उसे अपने पुत्र का शरीर उसमें बसनेवाली आत्मा से अधिक प्रिय था। अस्तु, उसको यह देख-देखकर बड़ा भय लग रहा था कि जजों की भूखी, नीरस आँखें उसके लड़के के चेहरे, छाती, कन्धों और हाथों पर रेंगती हुई उसका गरम-गरम चमड़ा स्पर्श करते ही, शायद इस भय से कि कहीं उनकी आँखों में आग न लग जाय, हट जाता थीं; परन्तु फिर शीघ्र ही उसके शरीर को देखती हुई इस खोज में लग जाती थीं कि किस तरह अपने कठोर मस्तिष्क और सूखे हुए पुट्ठों को जो अधमरे होते हुए भी सामने एक जवान शिकार को देखकर ईर्ष्या और लोभ से फड़कने लगे थे, उसका रक्त पिलाकर और उसे दण्ड देकर अपनी आँखों के आगे से दूर भेजकर फिर सजीव कर लें। मा को लगा कि लड़के को भी उनकी अप्रिय दृष्टि अपने शरीर को छूती हुई लग रही थी, जिससे वह काँपता हुआ मा की तरफ देख रहा था।

वह मा के चेहरे की ओर कुछ-कुछ थकी हुई, परन्तु शान्त, स्नेहपूर्ण और दयार्द्र आँखों से देख रहा था और बीच-बीच में उसकी तरफ सिर हिलाता हुआ मुस्कराता था। मा उसके मुस्कराने का अर्थ समझती थी।

'अब जल्दी ही...।' मा ने अपने मन में कहा।

इतने में मेज पर हाथ टेकता हुआ बूढ़ा जज उठा। उसका सिर उसकी वर्दी के कालर में डूबा हुआ था। वह स्थिर खड़ा होकर गुनगुनाती हुई आवाज से एक कागज पढ़ने लगा।

'सजा का हुक्म सुना रहा है।' सिजोव ने उसको सुनते हुए कहा।

चारों तरफ सन्नाटा छा गया था और सब बूढ़े जज की तरफ एक टक देख रहे थे। वह नाटा और सीधा अपने हाथ में पकड़ी हुई लकड़ी की तरह खड़ा था। दूसरे जज भी उसके साथ उठकर खड़े हो गये थे। जिले के सरपच ने अपना सिर एक तरफ के कन्धे पर झुका लिया था और चुपचाप छत की ओर देख रहा था। शहर का मेयर अपने सीने पर हाथ बाँधे खड़ा था। जमींदारों का सरदार अपनी दाढ़ी खुजला रहा था। बीमार चेहरे का जज और उसका सूजा हुआ पड़ोसी तथा सरकारी वकील बन्दियों की तरफ तिरछी नजरों से देख रहे थे। जजों के पीछे से लाल फौजी कोट पहिने हुए शाहंशाह जार अपने चित्र में से सफेद और बेफिक्र चेहरे से उन सबके सिरों के ऊपर से बन्दियों को देख रहा था। उसके चेहरे पर एक कीड़ा-सा रेंग रहा था अथवा मकड़ी का तना हुआ जाला हिल रहा था।

'जलावतन!' सिजोव के मुंह से सन्तोष के एक गहरे निःश्वास के साथ निकला और वह धम्म से तिपाई पर बैठ गया।

'खैर, अच्छा है। ईश्वर को धन्यवाद है। मैंने तो सुना था कि उन्हें कड़ी मशक्कत की सजा दी जायगी। कुछ फिक्र नहीं है, मैया! यह कुछ नहीं है।'

अपने विचारों से और एक जगह बैठी-बैठी थक जाने से मा ने बूढ़े के हर्ष का अर्थ तो समझा, वह उसकी निराशा से खदेड़ी हुई आत्मा को एक दिलासे की तरह था, परन्तु मा को उससे कोई सन्तोष नहीं हुआ।

'मैं तो यह पहिले ही से जानती थी।' मा ने उत्तर में कहा।

'हाँ, मगर अब निश्चय हो गया। पहिले से कौन कह सकता था कि अधिकारी आखिर में क्या करेंगे? परन्तु फेड्या बड़ा अच्छा निकला! मेरा लाड़ला!'

फिर वे दोनों उठकर कटघरे के पास गये। मा ने आँसू बहाते हुए स्नेह से बेटे का हाथ पकड़कर दबा लिया। पवेल और फेड्या स्नेहपूर्ण शब्दों में उनसे बातें करते हुए मुस्कराने और विनोद करने लगे। सब लोग जोश में थे। परन्तु साथ-साथ शान्त और प्रसन्न थे। स्त्रियाँ रो रही थीं, मगर व्लेसोवा की तरह दुःख से नहीं, बल्कि अपनी आदत के कारण। उन्हें कोई ऐसा धक्का नहीं लगा था, जैसा कि एकाएक सिर पर चोट पहुँचने से पड़ता है। उन्हें केवल इस बात से दुःख हो रहा था कि अब उन्हें अपने लड़कों से जुदा होना पड़ेगा। परंतु यह दुःख भी आज की घटनाओं के कारण उतना ही नहीं था, जितना वैसे होता। पिता और माताएँ अपने बच्चों की ओर मिश्रित भाव से देख रहे थे। माता-पिता का बच्चों के प्रति अविश्वास का भाव और बड़े-बूढ़ों नौजवानों के प्रति अपने बड़प्पन का भाव, उनके प्रति एक निर्मल सम्मान का भाव, तथा यह भाव कि उनके बिना अपना जीवन सूना हो जायगा और उस नई उत्कण्ठा का भाव जो इन नौजवानों ने एक नये जीवन के लिए इतनी वीरता से लड़कर उनके हृदयों में पैदा कर दी थी, और जो उनसे एक नये जीवन का वायदा कर रही थी; परन्तु जिसे

वे अभी तक अच्छी तरह समझते नहीं थे इत्यादि कई भावों के हृदय में मिलने से एक मिश्रित भाव उनके हृदयों में उठ रहा था। इस अनोखे भाव की नवीनता और विचित्रता के कारण उन्हें उसका व्यक्त करना असम्भव हो रहा था। अस्तु, वे अपने लड़कों से बातें तो बहुत-सी कर रहे थे, परंतु साधारण मामलों के बारे में बोल रहे थे। रिश्तेदार व्यक्तियों से कपड़ों इत्यादि के बारे में पूछते हुए कि क्या-क्या कपड़े उन्हे भेजना चाहिए, बंधुओं को समझा रहे थे कि उन्हें अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए और अधिकारियों से व्यर्थ लड़ना नहीं चाहिए।

'भैया, सभी थक रहे हैं। हम और वे दोनों।' सेमोयलोव के बाप ने अपने लड़के से कहा।

बुकिन के भाई ने हाथ हिलाते हुए अपने भाई को विश्वास दिलाया—उन्होंने केवल न्याय किया है और कुछ नहीं, ऐसा तो वे नहीं कह सकते!

छोटे बुकिन ने जवाब दिया—तुम उस सितारे को मत भूल जाना। मैं उसकी तरफ रोज देखा करता हूँ। मुझे वह बड़ा प्यारा लगता है।

'घर आ जाना, सब ठीक मिलेगा!'

'मुझे घर आकर क्या करना है?'

सिजोव ने अपने भतीजे का हाथ पकड़कर धीरे से कहा—अच्छा फेडोर, देशाटन की तैयारी कर दी!

'अच्छा भैया!' फेड्या ने झुककर उसके कान में कुछ शरारत से मुसकराते हुए कहा, जिसे सुनकर पास में खड़ा हुआ सैनिक भी मुसकरा उठा। परन्तु फिर वह फौरन ही गम्भीर बनकर चिल्लाया—हटो इधर से!

मा भी औरों की तरह कपड़ों, स्वास्थ्य इत्यादि के सम्बन्ध में पवेल से बातचीत कर रही थी। परन्तु उसके मन मे सशा और पवेल के सम्बन्ध में तरह-तरह के बहुत-से प्रश्न उठ रहे थे, जिनसे उनका गला रुँधा जा रहा था। इस प्रकार के विभिन्न भावों के नीचे अपने पुत्र के प्रति पूर्ण प्रेम का एक भारी भाव धीरे-धीरे उसके हृदय मे बढ़ रहा था और उसके मन में अपने बेटे को किसी तरह प्रसन्न करने की और उसके हृदय के अधिक निकट पहुँचने की एक दबी हुई इच्छा बढ़ रही थी। किसी भयङ्कर वस्तु की आशा अब उसके हृदय से जा चुकी थी, केवल जजों की याद आ जाने पर एक कँपकँपी उसे आती थी और कहीं किसी कोने मे एक बुरा विचार भी उनके सम्बन्ध में होने लगता था।

'नौजवानों का न्याय करने के लिए जज भी नौजवान होने चाहिएँ, बूढ़े नहीं।' उसने अपने से कहा।

'परन्तु मनुष्य-जीवन की व्यवस्था ही ऐसी क्यों न कर दी जाय कि किसी को कोई अपराध ही न करना पड़े!' पवेल ने उत्तर में कहा।

मा ने लिटिल रूसी की तरफ देखा। वह कभी इससे और कभी उससे बातें कर रहा

था। मा को ध्यान आया कि उसको पवेल से भी अधिक प्रेम की आवश्यकता थी। क्योंकि उसका वहाँ कोई नहीं था। अस्तु, वह उसकी तरफ बढ़कर उससे बातें करने लगी। ऐन्ड्री सदा की भाँति मुसकराता हुआ विनोदपूर्ण बातें मा से स्नेह-पूर्वक करने लगा। मा के चारों तरफ, उसे लपेटती हुई और उसके पास से गुजरती हुई, रिश्तेदारों और बन्दियों की आपस में बातें हो रही थीं। वह सबको सुन रही थी और सबके भावों को समझ रही थी। और उसे अपने हृदय की विशालता पर स्वयं आश्चर्य हो रहा था, जो सबके भावों को सम आनन्द से अपने अन्दर भरकर उनका स्पष्ट प्रतिबिम्ब लौटा रहा था, जिस प्रकार कि एक गहरी और शान्त झील पर चमकीले प्रतिबिम्ब पड़-पड़कर वैसे ही चमकते हुए लौटते हैं।

आखिरकार सैनिक बन्दियों को लेकर चले गये। मा अदालत से निकली तो उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि रात्रि का अन्धकार शहर पर छा चुका था। सड़कों की लालटेनें जल चुकी थीं और आकाश में तारे चमक रहे थे। कुछ नौजवानों के झुण्ड अदालत के इधर-उधर मँडराते हुए घूम रहे थे। बर्फ भी गिरने लगी थी, और उसकी खुर्र-खुर्र आवाज आ रही थी। एक आदमी ने जो कोहकाफ की तरफ के फकीरों का-सा भूरा लबादा पहने हुए था, आकर सिजोव से जल्दी से पूछा—कहो, क्या सजा मिली?

'जलावतनी!'

'सबको?'

'हाँ, सबको!'

'धन्यवाद!' कहता हुआ वह आदमी जल्दी से ओझल हो गया।

'देखो!' सिजोव मा से बोला—लोग आ-आकर पूछ रहे हैं।

इतने में दस-बारह नौजवान लड़के-लड़कियों के झुण्ड ने आकर उन्हें घेर लिया और उन्होंने उनसे प्रश्नोत्तरों की झड़ी लगा दी, जिसे सुनने के लिए और भी बहुत-से लोग जुटने लगे। मा और सिजोव खड़े थे और उनसे सजा के सम्बन्ध में, कैदियों के व्यवहार के सम्बन्ध में, उनके बयानों के सम्बन्ध में और उनके बयानों के अर्थ के सम्बन्ध बहुत-से तरह-तरह के प्रश्न पूछे जा रहे थे। उन लोगों की आवाजों में एक नई उत्कण्ठा ही गूँज रही थी, जो सच्ची और स्नेह-पूर्ण थी, जिससे उन्हें उत्तर देकर उनका सन्तोष करने की इच्छा होती थी।

'लोगो, यह पवेल व्लेसोव की मा है!' किसी ने चिल्लाकर कहा। यह सुनते ही सब एकाएक चुप हो गये।

'मा, मुझे अपने से हाथ मिलाने की आज्ञा दो!'

किसी ने यह कहते हुए अपने दृढ़ हाथ से मा की उँगलियाँ पकड़ लीं और जोश में भरकर कहा—तुम्हारा पुत्र हमारे सबके लिए वीरता का आदर्श होगा।

'रूस के कामगारों की जय हो!' एक गूँजती हुई आवाज उठती हुई चिल्लाई और 'कामगार जिन्दाबाद!' 'इनकिलाब जिन्दाबाद!' के जोरदार बहुत-से नारे चारों तरफ

से उठते हुए आकाश में गूँज उठे। चारों तरफ से लोग दौड़ते हुए मा और सिजोव के पास आ रहे थे। इतने में हवा में से गूँजती हुई पुलिस की सीटियों की आवाजें भी आने लगीं। परन्तु उनको सुनकर भी नारे बन्द नहीं हुए। बूढ़ा सिजोव मुसकरा रहा था और मा को यह सारा दृश्य एक स्वप्न की तरह लग रहा था। वह मुसकराती हुई अपनी तरफ बढ़े हुए लोगों के हाथों को स्नेह से दबा-दबाकर उनके अभिवादनों का उनकी तरफ सिर झुका-झुकाकर उत्तर दे रही थी। हर्ष से उसकी आँखों में आँसू आ गये थे और उसका गला घुटा-सा जा रहा था। उसके पास से किसी की एक घबराई हुई आवाज ने कहा—बंधुओ! मित्रो! निरंकुशता के उस विकराल राक्षस ने, जो रूस की प्रजा को दिन-रात हड़प-हड़पकर अपना पेट भरता है, आज अपने लालची, विकराल मुख में इन नौजवान वीरों...

'चलो मा, अब घर चलें!' सिजोव ने मा से कहा; परन्तु इतने में ही सशा ने आकर मा की बाँह पकड़ ली और जल्दी-जल्दी खींचती हुई उसे सड़क के उस पार ले गई।

'चलो, चलो! यहाँ अब गिरफ्तारियाँ होंगी! क्या कहा? जलावतनी? सब साइबेरिया को?'

'हाँ, हाँ!'

'उसने कैसा बयान दिया, मैं तुम्हारे बिना कहे ही समझ सकती हूँ। उसने अवश्य दूसरों से जोरदार और अधिक सादी भाषा में अपना बयान दिया होगा। और उसने सबसे अधिक कड़ी-कड़ी भी सुनाई होगी। वह हृदय से बड़ा ही भावुक और कोमल है। केवल उसे अपने भाव प्रकट करते हुए लज्जा-सी आती है। परन्तु बड़ा शर्मीला-सा है। वह सीधा, साफ और स्वयं सत्य की तरह दृढ़ है। उसकी आत्मा बड़ी ऊँची और महान् है, उसमे सभी कुछ है! सभी कुछ है! परन्तु न जाने क्यों वह व्यर्थ अपने-आपको दबाता-सा रहता है। शायद उसे इस बात का डर लगा रहता है कि ऐसा न करने से उसके कार्य में विघ्न खड़े हो सकते हैं। मैं उसे खूब जानती हूँ!'

सशा की स्नेहपूर्ण घुसपुस से और उसके मीठे-मीठे शब्दों से मा को फिर ढाढ़स बँधने लगा, जिससे उसके शरीर की लुप्त हो जानेवाली शक्ति फिर लौट आई।

'तुम पवेल के पास कब जाओगी?' मा ने सशा का हाथ अपनी छाती से लगाते हुए पूछा। मा की ओर श्रद्धा से देखते हुए लड़की ने जवाब दिया—जैसे ही मेरा यहाँ का काम सँभालने के लिए कोई बन्धु मिल जायगा, मैं पवेल के पास रहने के लिए साइबेरिया चली जाऊँगी। मेरे पास वहाँ तक पहुँचने के लिए रुपये भी हैं। परन्तु शायद मैं भी वहाँ मुफ्त में पहुँच जाऊँ; क्योंकि मैं भी पकड़े जाने की बाट देख रही हूँ। स्पष्ट है कि सजा हो जाने पर मुझे भी साइबेरिया ही भेजा जायगा। मैं स्वयं ही कह दूँगी कि मैं भी वहीं साइबेरिया में जाना चाहती हूँ, जहाँ पवेल भेजा गया है।

पीछे से सिजोव की आवाज आई—वहाँ पहुँच जाने पर पवेल को मेरा अभिवादन

देना। कहना, सिजोव ने तुम्हें नमस्कार कहा है। पवेल जानता है, मैं फेड्या माजिन का चाचा हूँ।

सशा एकदम चुप हो गई और उसकी तरफ घूमकर अपना हाथ मिलाने के लिए बढ़ाती हुई बोली—मैं फेड्या को अच्छी तरह जानती हूँ। मेरा नाम एलेक्जेन्ड्रा है।

'और तुम्हारे पिता का?'

लड़की ने उसके चेहरे को घूरकर देखा और बोली—मेरा पिता नहीं है।

'मर गया है?'

'नहीं, जीवित है।' उसने उत्तर दिया और एक प्रकार की हठ और दृढ़ता की गूँज उसकी आवाज में से निकलती हुई उसके चेहरे पर फैल गई। फिर वह बोली—मेरा पिता एक बड़ा जमींदार है—एक पूरे जिले का ही मालिक है। वह किसानों को चूसता है और सताता है। अस्तु, मैं उसको अपना पिता नहीं मानती।

'ऐं...ऐं...ऐं!' कहता हुआ सिजोव उसके शब्द सुनकर भौंचक्का-सा रह गया। फिर कुछ ठहरकर वह लड़की की ओर तिरछी नजर से देखता हुआ बोला—अच्छा मा, प्रणाम! मैं इस मोड़ की बाईं सड़क से जाऊँगा। कभी-कभी बातें करने और एक प्याला चाय पीने मेरे घर आना। नमस्कार, श्रीमती! मैं समझता हूँ, आप अपने पिता पर बड़ी कठोर हैं—हाँ, परंतु तुम्हारा कार्य ही बड़ा कठोर है।

'अगर तुम्हारा लड़का बुरा हो और लोगों को सताता हो, जिससे तुम्हारे हृदय में ग्लानि उत्पन्न होती हो, तो क्या तुम उसके बारे में ऐसा ही नहीं कहोगे?' सशा ने जोर से चिल्लाकर उससे पूछा।

'हाँ, हाँ, जरूर कहूँगा!' बूढ़े ने कुछ-कुछ झिझकते हुए उत्तर दिया।

'अर्थात् तुम्हें अपने लड़के से न्याय अधिक प्रिय है! मुझे भी अपने पिता से न्याय अधिक प्रिय है।'

सिजोव सिर हिलाता हुआ मुसकराया और एक गहरा निःश्वास लेता हुआ कहने लगा—अच्छा, अच्छा! तुम बुद्धिमान् हो। नमस्कार! नमस्कार! भगवान् तुम्हारा भला करे! लोगों के प्रति तुम्हारा स्नेह दिन-दूना रात-चौगुना हो! ओ हो हो हो! अच्छा, अच्छा, ईश्वर की तुम पर असीम कृपा हो। प्रणाम, निलोवना! जब तुम पवेल से मिलो तो उससे यह जरूर कहना कि मैंने भी उसका बयान सुना था। मैं उसे पूरी तरह समझा तो नहीं, मुझे उसमें कुछ चीजें भयंकर भी लगीं; परन्तु उससे कहना कि जो कुछ भी उसने कहा, बिलकुल सत्य था। उन छोकरों ने सत्य ढूँढ़ लिया है! हाँ, हाँ!

यह कहकर उसने उन दोनों को टोप उठाकर अभिवादन किया और शान्ति-पूर्वक सड़क के मोड़ पर घूमकर अपनी राह पकड़ी।

'आदमी तो अच्छा लगता है।' सशा ने उसकी तरफ अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से

मुसकराते हुए कहा—ऐसे लोग हमारे बड़े काम आ सकते हैं। उनके पास अपना साहित्य छिपाकर रखा जा सकता है।

मा को आज लड़की का चेहरा हमेशा से अधिक कोमल और दयालु लग रहा था। निकोल के सम्बन्ध में उसके शब्द सुनकर मा सोचने लगी—सदा ही अपने कार्य की इन्हें फिक्र रहती है। इस वक्त भी जब कि इसका हृदय इतना जल रहा है, अपने कार्य का इसे ध्यान है।

———

सैंतीसवाँ परिच्छेद

घर पहुँचकर वे दोनों सोफे पर पास-पास बैठ गईं और वहाँ की शान्ति से आराम पाती हुई मा फिर सशा से पवेल के पास साइबेरिया जाने के बारे में बातें करने लगी। विचार-पूर्वक अपनी घनी भौंहें चढ़ाती हुई अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से वह आकाश की ओर देखती थी, मानों स्वप्न देख रही हो। उसके पीले चेहरे से स्पष्ट था कि वह गहरे विचार में डूबी हुई थी।

'फिर, जब तुम दोनों के बाल-बच्चे हो जायँगे, तब मैं उन्हें खिलाने और प्यार करने के लिए आ जाऊँगी। वहाँ भी हम लोग फिर उसी तरह रहने लगेंगे, जैसे यहाँ रहते हैं। पाशा अपने लिए कहीं काम ढूँढ़ लेगा। उसके हाथ सोने के हैं। उसे कहीं भी काम मिल जायगा।'

'हाँ!' सशा ने विचारते हुए जवाब में कहा।

'अच्छा...' फिर एकदम चौंककर, मानों उसने किसी बोझ को उतारकर अपने पीछे फेंक दिया हो, वह अपना स्वर बदलती हुई बोली—मगर पवेल वहीं रहने नहीं लगेगा। वह वहाँ से अवश्य भाग आयेगा।

'ऐसा कैसे हो सकेगा! बाल-बच्चों का क्या होगा!'

'यह मैं कुछ नहीं जानती। वहाँ पहुँचकर इस बात पर सोचेंगे। ऐसे मौकों पर उसे मेरा विचार नहीं करना चाहिए और न मैं ही उसे रोकूँगी। वह जब चाहे तब और जहाँ चाहे वहाँ जाने को स्वतंत्र है और रहेगा। मैं उसकी पत्नी जरूर हूँ; परन्तु मैं उसकी मित्र और साथी की तरह उसके इस काम में बन्धु हूँ। उसका कार्य ही ऐसा है कि वर्षों तक मैं उसका और अपना सम्बन्ध उस प्रकार का नहीं बना सकूँगी, जैसा और साधारण स्त्री-पुरुषों का होता है। यह मैं जानती हूँ कि उससे जुदा होना मेरे लिए बड़ा कठिन होगा; परन्तु किसी तरह मैं उसे सह लूँगी। पवेल यह जानता है कि मैं किसी मनुष्य को अपनी जागीर मानने में असमर्थ हूँ। मैं उसको कभी नहीं रोकूँगी, हरगिज नहीं।'

मा उसका मतलब समझ गई। मा को लगा कि जो कुछ लड़की कह रही थी, उसमें उसका पूरा विश्वास था और वह उसको पूरा करने की शक्ति भी रखती थी। अस्तु, मा का हृदय उसके लिए भर आया और मा ने उसे अपनी छाती से लगा लिया।

'मेरी प्यारी बेटी, तेरे लिए वह जीवन बड़ा कठिन होगा!'

सशा ने गिलहरी की तरह अपना शरीर सिकोड़कर मा की गोद में रख दिया और चुपचाप मुसकराने लगी। उसका मुँह लाल हो गया और वह कोमल, परन्तु दृढ़ आवाज में कहने लगी—अभी उस समय के आने में बहुत देर है। परन्तु ऐसा मत

सोचो कि मेरे लिए वह जीवन कठिन होगा। मैं वैसा करने में कोई त्याग नहीं करूँगी। मैं अच्छी तरह समझती हूँ कि मैं क्या कर रही हूँ और मैं यह भी जानती हूँ कि ऐसा करते हुए मुझे किस प्रकार के जीवन की आशा करनी चाहिए। अगर मैं पवेल को प्रसन्न बना सकूँ तो मैं प्रसन्न रहूँगी। मेरा उद्देश्य और मेरी इच्छा उसका बल और शक्ति बढ़ाने की है। उसको जितना आनन्द और प्रेम मैं दे सकती हूँ, उतना देना चाहती हूँ। मैं उस पर प्रेम और सुख की वर्षा करना चाहती हूँ। मैं उसे बेहद प्यार करती हूँ और वैसा ही वह भी मुझे करता है। मैं अच्छी तरह जानती हूँ, जो मैं उसे दूँगी वही वह भी मुझे देगा। हम दोनों अपने प्रेम से एक-दूसरे की शक्ति बढ़ायेंगे और आवश्यकता हुई तो मित्रों की भाँति एक-दूसरे से जुदा भी हो जायँगे।

यह कहकर सशा बड़ी देर तक चुप रही। मा और लड़की दोनों एक-दूसरे से चिपटी हुई, सोफा के एक कोने में बैठी-बैठी, उस मनुष्य का ध्यान करती रहीं, जिसे वे दोनों इतना चाहती थीं। चारों तरफ सन्नाटा छा रहा था और कमरे के वातावरण में उदासी और स्नेह भर रहा था।

निकोले थका हुआ, परन्तु जल्दी तेजी से घुसा। घुसते ही वह बोला—अच्छा, सशेंका, यहाँ से भागो, जितनी दूर भाग सको, भाग जाओ। आज सवेरे से दो जासूस मेरे पीछे लग रहे हैं, और इतना छिप-छिपकर पीछा करने का प्रयत्न कर रहे हैं कि मालूम होता है, गिरफ्तारी होनेवाली है। मुझे ऐसा लगता है कि कहीं कुछ हुआ है। खैर, यह पवेल का व्याख्यान मैं ले आया हूँ। इसको तुरन्त प्रकाशित करना निश्चय हुआ है। इसे लियूडमिला के पास ले जाओ। पवेल बड़ा अच्छा बोला; निलोवना, उसका व्याख्यान बड़ा काम आयेगा। जासूसों का ध्यान रखना सशा। जरा ठहरना, इन कागजों को भी छिपा लो। इन्हें आइवान को दे देना।

बोलते-बोलते वह ठण्ड से ठिठुरे हुए अपने हाथ जोर से मलता रहा और मेज की दराज खोलकर कुछ कागज निकाले, जिनमें से कुछ फाड़कर फेंक दिये, कुछ अलग रख दिये। वह धुन में मस्त था, ऊपर से खिटपिटाया हुआ था।

'थोड़े ही दिन हुए, यह सब जगह साफ की थी और इतने ही दिनों में देखो, यहाँ कितना कागजों का ढेर इकट्ठा हो गया है, शैतान! देखो, तुम भी यहाँ रात को न सोओ तो अच्छा है। वह दृश्य देखने में बड़ा अच्छा नहीं होता और कहीं तुम्हें शायद पकड़ लें, और तुम्हारी पवेल का व्याख्यान जगह-जगह ले जाने के लिए बड़ी जरूरत होगी।'

'हूँ, मुझे किसलिए पकड़ेंगे? शायद तुम्हारी भूल हो।'

निकोले ने आँखों के सामने हाथ हिलाया और जोर देकर बोला—मैं दूर से सूँघ लेता हूँ। तुम लियूडमिला को भी बड़ी सहायता दे सकती हो। भाग जाओ यहाँ से।

अपने लड़के का व्याख्यान छापने में सहायता करने का विचार अच्छा लगा और उसने उत्तर में कहा—ऐसा है तो मैं चली जाऊँगी, मगर यह मत सोचना कि मैं डरती हूँ।

'बहुत ठीक ! अच्छा बोलो, मेरा बेग और मेरे कपड़े कहाँ हैं ? तुम्हारे लालची हाथों ने मेरी सारी चीजों को हथिया लिया है और मुझे अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति पर कुछ भी अधिकार नहीं रहा है। मैं पूरी तैयारी कर रहा हूँ—उनको बुरा तो लगेगा।'

सशा ने चुपचाप कागज जला दिये और सावधानी से उनकी राख चूल्हे की राख में मिला दी।

'सशा, जाओ।' निकोले ने अपना हाथ उसकी तरफ बढ़ाकर कहा—अलविदा! किताबें मत भूलना—अगर कोई नवीन और अच्छी निकले। अच्छा अलविदा, प्रिय बन्धु ! अधिक सावधानी से रहना।'

'क्या बहुत दिनों के लिए जाते हो ?' सशा ने पूछा।

'शैतान ही उनको जाने। लगता तो ऐसा ही है। मेरे विरुद्ध कुछ उन्हें मिल गया है। निलोवना, क्या तुम उसके साथ जाती हो ? दो आदमियों का पीछा करना बड़ा कठिन है—खैर !'

'मैं जाती हूँ।' मा कपड़े पहिनने के लिए चली गई। वह सोचने लगी कि ये लोग जो सबको स्वतन्त्र करने के प्रयत्न में लगे हुए हैं, अपनी निजी स्वतन्त्रता की कितनी कम चिन्ता करते हैं। जिस साधारण और व्यवहारू ढँग से निकोले अपनी गिरफ्तारी की प्रतीक्षा कर रहा था, उससे मा को आश्चर्य भी हुआ और दुःख भी। उसने निकोले के मुख की ओर ध्यान से देखने का प्रयत्न किया ; उसे उसकी मस्ती के अतिरिक्त वहाँ और कुछ दिखाई न दिया, जिस धुन की मस्ती में उसके नेत्रों का साधारण कोमल भाव डूब गया था। इस मनुष्य में, जिसे मा सबसे अधिक चाहती थी, जरा भी घबराहट का चिह्न नहीं था ; न वह कुछ गड़बड़ ही कर रहा था। सबका एक सा ध्यान रखनेवाला, सबके प्रति एक सा स्नेह रखनेवाला, सदा शान्त, वह मा को हमेशा की तरह अपने कार्य के अतिरिक्त प्रत्येक वस्तु और प्रत्येक मनुष्य से अनजान लगा। वह दूर, अपने भीतर एक गुप्त आन्तरिक जीवन, लोगों से कुछ आगे, रखता हुआ लगता था। फिर भी मा को ऐसा लगता था कि वह औरों से उससे अधिक निकट है, और वह उस पर एक ऐसा प्रेम रखती थी, जो ध्यान से देखता था और मानों अपने-आपमें विश्वास नहीं रखता था। मा के हृदय मे उसके लिए बड़ा दुःख होने लगा ; परन्तु उसने अपने भावों को दबा लिया, क्योंकि वह जानती थी कि उन्हें व्यक्त करने से निकोले घबरा जायगा और सदा की भाँति सिटपिटाकर मूर्ख की तरह बातें करने लगेगा।

जब वह कमरे में लौटकर आई तो उसने निकोले को सशा का हाथ दबाकर कहते सुना—प्रशंसनीय ! मुझे पूरा विश्वास है। यह उसके लिए और तुम्हारे लिए, दोनों के लिए अच्छा होगा। थोड़ा-सा व्यक्तिगत आनन्द कुछ हानि नहीं करता ; परन्तु थोड़ा-सा। समझीं ? जिससे वह निकम्मा न हो जाय। क्या तुम तैयार हो, निलोवना ?

वह चश्मा ठीक करता हुआ, उसकी तरफ गया—अच्छा, अलविदा। मैं समझता हूँ कि तीन महीने, चार महीने—अच्छा, अधिक-से-अधिक छः महीने—छः महीने एक

मनुष्य के जीवन का काफी समय है। छः महीने में बहुत कुछ किया जा सकता है। सावधानी से रहना कृपया, हाँ! आओ, आलिंगन कर लें। पतला-दुबला होने पर भी, उसने मा की गर्दन अपने बलिष्ठ हाथों में ओर से लिपटा ली, उसकी आँखों में देखा और मुसकराया—ऐसा लगता है कि मैं तुम्हारे प्रेम में फँस गया हूँ। हमेशा ही तुम्हें चिपटाये रहता हूँ।

मा चुप थी, निकोले का माथा और गाल चूम रही थी और उसके हाथ काँप रहे थे। इस डर से कि कहीं निकोले न देख ले, उसने अपने हाथ हटा लिये।

'आओ। बहुत ठीक। कल होशियार रहना। देखो, ऐसा करना, छोकरे को सवेरे भेजना। लियूडमिला ने इन कामों के लिए एक छोकरा रख छोड़ा है, उससे कहना कि वह मकान के चौकीदार के पास जाकर पूछे कि मैं घर पर हूँ या नहीं। मैं चौकीदार से पहले से कह रखूँगा; वह अच्छा आदमी है और मैं उसका मित्र हूँ। अच्छा, अलविदा, बन्धुओ! तुम्हें काम में सफलता मिले।'

सड़क पर चलते-चलते सशा ने धीरे से मा से कहा—इस प्रकार बातें करते हुए, जरूरत हुई, तो वह मृत्यु के मुँह तक में चला जायगा और ऊपर से वह जरा इसी प्रकार शीघ्रता करेगा, जब मौत सामने खड़ी घूरती होगी, तब भी वह अपना चश्मा ठीक करके लगायेगा और कहेगा 'प्रशंसनीय' और जान दे देगा।

'मैं उसे प्यार करती हूँ।' मा ने मन्द स्वर में कहा।

'मैं आश्चर्य करती हूँ; परन्तु प्यार—नहीं। मेरे हृदय में उसके लिए बड़ा मान है। वह एक प्रकार का रूखा, यद्यपि भला और शान्त और कभी कोमल भी है; परन्तु उसमें मनुष्य का हृदय काफी नहीं है। मुझे लगता है कि हम लोगों का पीछा किया जा रहा है। आओ, हम लोग अलग हो जायँ। अगर तुम्हें ऐसा लगे कि तुम्हारा पीछा किसी जासूस ने किया है तो लियूडमिला के घर में प्रवेश मत करना।'

'मैं जानती हूँ।' मा बोली। सशा ने परन्तु फिर भी दुहराया—प्रवेश मत करना, अच्छा! मेरे पास चली आना। नमस्कार।

सशा जल्दी से मुड़ी और पीछे की तरफ चल दी। मा ने उसे पुकारकर कहा—नमस्कार।

कुछ मिनट के बाद मा ठण्ड से ठिठुरी हुई लियूडमिला के छोटे कमरे में अँगीठी के पास बैठी थी। लियूडमिला एक काली पोशाक पहिने और फीते से उसे कमर पर कसे हुए धीरे-धीरे कमरे में इधर-उधर टहल रही थी, उसकी पोशाक की फर-फर और उसकी आदेश-पूर्ण आवाज का स्वर कमरे की वायु को अपनी ओर खींचता था। स्त्री की आवाज एक-सी आ रही थी।

'लोग इतने बुरे नहीं हैं जितने मूर्ख। वे केवल निकट की वस्तु देख सकते हैं, जिसे शीघ्र ही पा लेना सम्भव होता है; परन्तु जो कुछ निकट होता है, सस्ता होता है; जो दूर होता है, बहुमूल्य होता है। सच तो यह है कि यह जीवन बदल जाय, हलका हो

जाय और लोग अधिक बुद्धिमान् हो जायँ, तो सबको आसानी और आनन्द हो जाय। परन्तु दूर भविष्य को प्राप्त करने के लिए अपने निकट वर्तमान की भेंट चढ़ानी होगी...'

निलोवना कल्पना करने लगी कि यह स्त्री यह सब छापने का काम कहाँ करती होगी। कमरे में सड़क की तरफ तीन खिड़कियाँ थीं ; एक सोफा पड़ा था, एक किताबों की आलमारी रखी थी, एक मेज थी, कुर्सियाँ थीं, एक पलंग दीवार से लगा था, उसके पास कोने में हाथ-मुँह धोने के लिए उगालदान था, दूसरी तरफ एक अँगीठो रखी थी ; दीवार पर तसवीरें और फोटो लग रहे थे। सब कुछ नया, ठोस, स्वच्छ था ; और सबके ऊपर मालकिन की गम्भीर भिक्षुणी की-सी सूरत एक ठण्डी छाया डाल रही थी। लगता था कि कहीं कुछ छुपा है, कुछ गुप्त है, परन्तु कहाँ है, यह मालूम नहीं होता था। मा ने दरवाजों की तरफ देखा ; उन्हीं एक में से होकर वह कमरे मे घुसी थी। अँगीठी के पास एक दूसरा, तङ्ग और ऊँचा द्वार था।

'मैं तुम्हारे पास काम से आई हूँ।' मा यह देखकर कि लियूडमिला उसकी तरफ देख रही थी, खिटपिटाकर बोली।

'मैं समझती हूँ। और किसी कारण से मेरे पास कोई नहीं आता।'

लियूडमिला की आवाज में कुछ विचित्र चीज थी। मा ने उसके मुख की ओर देखा। लियूडमिला अपने पतले होंठों के कोनों से मुस्कराई, उसकी धुँधली आँखें चश्मे के पीछे चमक उठीं। नजर एक तरफ को हटाकर मा ने उसके हाथ में पवेल का व्याख्यान दे दिया।

'यह लो। यह तुरन्त छापने के लिए कहा है।'

और फिर वह निकोले की गिरफ्तारी के लिए तैयारी का हाल सुनाने लगी।

लियूडमिला ने चुपचाप कागज अपनी पेटी में घुसेड़ लिया और एक कुर्सी पर बैठ गई। अग्नि की ज्योति की-सी एक चमक उसके चश्मे के शीशों पर चमकी ; उसकी गरम मुसकान उसके स्थिर मुख पर खेलने लगी।

'अगर वे मुझे पकड़ने आये तो मैं उन्हें गोली से मार दूँगी।' उसने धीमे स्वर में दृढ़ता से कहा—मुझे हिंसा से अपनी रक्षा करने का अधिकार है ; और जब मैं दूसरों को लड़ने का आवाहन देती हूँ तो फिर मैं स्वयं उनसे क्यों न लड़ूँ ! मैं यह चुपचाप रहना नहीं समझ सकती ; मुझे यह पसन्द नहीं है।'

ज्योति की परछाईं उसके चेहरे को दौड़कर पार कर गई और फिर वह गम्भीर हो गई, कुछ क्रोध भी हो आया।

'तुम्हारा जीवन आनन्दमय नहीं है।' मा ने दया से विचार किया।

लियूडमिला ने अनिच्छा से पवेल का व्याख्यान पढ़ना आरम्भ किया ; फिर वह कागज पर झुकने लगी, जल्दी-जल्दी पढ़कर पृष्ठ लौटने लगी। पढ़ चुकने पर उठी, सिर ऊँचा करके खड़ी हुई और बढ़कर मा के पास आई।

'यह ठीक। यह मुझे पसन्द है, यद्यपि इसमें भी शान्ति है। परन्तु व्याख्यान मृत्यु का धौंसा है और बजानेवाला मजबूत आदमी है।'

एक मिनट तक सिर झुकाकर उसने विचार किया—मैं तुमसे तुम्हारे लड़के के बारे में बातें करना नहीं चाहती थी। मैंने उसे कभी नहीं देखा और दुखःप्रद विषयों पर बात-चीत करना पसन्द नहीं करती। मैं अच्छी तरह समझती हूँ कि अपने किसी प्यारे के जलावतन हो जाने का क्या अर्थ होता है। परन्तु इतना मैं तुमसे जरूर कहूँगी कि तुम्हारा बेटा है बड़ा प्रशंसनीय पुरुष। वह जवान है, यह तो स्पष्ट ही है; परन्तु उसकी आत्मा महान् है! तुम्हारा अहोभाग्य है कि तुमने ऐसे बेटे को अपनी कोख से उत्पन्न किया, यद्यपि तुम्हें भयंकर तो लगता ही होगा।

'हाँ, अहोभाग्य की बात है। और अब भयंकर भी नहीं लगता।'

लियूडमिला ने अपने चिकने कढ़े हुए बालों पर कोमलता से हाथ फिराया और एक धीमा निःश्वास लिया। एक हलकी गरम परछाईं उसके गालों पर काँपी, एक दबी हुई मुसकान की परछाईं।

'हम इसको छापेंगे। क्या तुम कुछ मदद करोगी?'

'अवश्य।'

'मैं इसे जल्दी से चढ़ाती हूँ। तुम लेट जाओ; दिन-भर तुमने काम किया; तुम थक गई हो। इस पलंग पर लेट जाओ; मुझे सोना नहीं है, और रात को शायद मैं तुम्हें काम करने के लिए जगाऊँ। जब तुम लेट जाओ, तो लेम्प बुझा देना।'

उसने दो लकड़ियाँ अँगीठी में डालीं, अपने-आपको सीधा किया और अँगीठी के पास के तंग द्वार में से दरवाजे को अच्छी तरह बन्द करती हुई अन्दर घुस गई। मा उसकी तरफ देखती रही, फिर कपड़े उतारती हुई विचार करने लगी—बड़ी कठोर है, और फिर उसका हृदय जलता है। छिपाना कठिन है। हर एक प्यार करता है। बिना प्यार के जीना असम्भव है।

थकान के मारे उसका सिर चक्कर खा रहा था, परन्तु उसकी आत्मा में विचित्र शांति थी और एक आन्तरिक कोमल, दयामय प्रकाश से जो धीमे धीमे उसकी छाती में भर रहा था, प्रत्येक वस्तु उसे प्रकाशित लगती थी। उसे इस शान्ति का ज्ञान हो चुका था, बड़े दुःख के बाद वह प्राप्त हुई थी। पहले इसने उसे जरा-जरा घबराया था, परन्तु अब वह उसकी आत्मा को विस्तृत कर रहा था और उसे किसी एक अज्ञेय शक्तिमन्त्र से स्फूर्ति दे रहा था, उसकी आँखों के सामने बार-बार पवेल, ऐण्ड्री, निकोले, सशा के चेहरे आ जाते थे। उनको देखकर प्रसन्न होती थी, वे धीरे से उसके हृदय को गुदगुदाकर और उसमें उदासी भरकर अलोप हो जाते थे, कोई विचार उसे नहीं होता था। उसने लैम्प बुझा दिया, ठण्डे बिस्तर पर कम्बल लपेटकर पड़ गई और कुछ ही देर में सो गई।

अड़तीसवाँ परिच्छेद

फिर जब मा की आँख खुली तो कमरे में जाड़े की सफेद-सफेद धूप चमचमाती हुई फैल रही थी। लियूडमिला ने, जो हाथ में एक किताब लिये सोफा पर लेटी-लेटी पढ़ रही थी, अपने स्वभाव के विरुद्ध मुसकराते हुए मा की तरफ देखा।

'अरे!' मा सिटपिटाकर कहने लगी—मैं बहुत सोई?

'प्रणाम!' लियूडमिला ने उत्तर में कहा—हाँ, दस बजनेवाले हैं। उठिए, चाय पीजिए।

'तुमने मुझे जगाया क्यों नहीं?'

'मैं जगाना चाहती तो थी। उठकर तुम्हारे पास तक गई भी। परन्तु तुम बड़ी आनन्द की नींद में मस्त थीं। सोते-सोते खूब मुसकरा रही थीं।'

यह कहकर लियूडमिला अपने चमकीले शरीर को जोर से झटककर सोफे पर से उठ खड़ी हुई और पलँग के पास जाकर मा के मुँह की तरफ झुकी, तो मा को उसकी धुँधली-धुँधली आँखों में एक ऐसी प्रिय और विचित्र वस्तु दीखी, जो उसको समझ में अच्छी तरह न आ सकी कि क्या थी।

'मा, तुम्हें जगाने को मेरा जी नहीं चाहा; क्योंकि मैंने सोचा कि शायद तुम सुख का कोई स्वप्न देख रही हो।'

'नहीं, मैं ऐसा कोई स्वप्न नहीं देख रही थी।'

'फिर भी तुम्हारे मुख पर मुसकान देखकर मेरे हृदय को बड़ा आनन्द हो रहा था। वह मुसकान बड़ी शान्त, स्वच्छ, महान् लग रही थी।' लियूडमिला यह कहकर हँसने लगी—मैं तुम्हारे बारे में विचार करने लगी, तुम्हारे जीवन के बारे में सोचने लगी। तुम्हारा जीवन कितना कठोर है? क्यों?

मा भौंहें चलाती हुई, चुपचाप सुनती हुई सोच रही थी।

'हाँ, हाँ, तुम्हारा जीवन बहुत कठोर है!' लियूडमला ने जोर देते हुए कहा।

'मैं कह नहीं सकती,' मा अपने-आपको सँभालकर बोली—कभी मुझे जीवन कठोर लगता है और कभी नहीं भी लगता है। गम्भीरता और आश्चर्य से पूर्ण रहता है और बहुत जल्द-जल्द बीतता है। एक के बाद दूसरी घटनाएँ मेरे जीवन में इतनी जल्दी आती रहती हैं...

यह कहकर एक वीरता-पूर्ण आवेश की उमङ्ग-सी उसकी छाती में उमड़ी, जिसने उसके हृदय को मानों दृश्यों और विचारों से भर दिया; क्योंकि वह पलंग पर बैठ गई और जल्दी-जल्दी अपने विचारों को शब्दों में इस प्रकार व्यक्त करने लगी—प्रवाह एक तरफ को बहा जा रहा है। जैसे किसी घर में आग लगती है तो लपटें यहाँ-वहाँ से फूट-

फूटकर भभक-भभककर ऊपर की तरफ उठती हैं, जीवन भी उसी प्रकार, दिन पर दिन शक्तिसंचय करता हुआ, चमकता हुआ उठ रहा है। कठोरता तो हमारे जीवन में अवश्य बहुत है। वह तो तुम अच्छी तरह जानती ही हो। लोगों को बहुत कुछ सहन करना पड़ता है। उन पर बड़ी मार पड़ती है। उन्हें हर तरह से सताया जाता है। हर जगह उनका पीछा किया जाता है। बेचारे छिपे-छिपे फिरते हैं। उन्हें संसार के कोई सुख नहीं मिलते। सचमुच जीवन बड़ा कठोर है। फिर भी जब उन लोगों की तरफ निगाह उठाकर देखते हैं तब ऐसा लगता है कि यह कठोर, बुरा और मुश्किल जीवन उनके शरीरों को ही छूता है; उनकी आत्मा को नहीं छूता।

लियूडमिला ने जल्दी से ऊपर को अपना सिर उठाते हुए मा की ओर एक गहरी और आकर्षक दृष्टि डाली। मा को लगा कि वह अपने शब्दों से अपने विचारों को पूरी तरह व्यक्त नहीं कर सकी थी, जिससे उसके हृदय पर चोट पहुँची।

'तुम अपनी बातें नहीं करतीं!' लियूडमिला ने कोमल स्वर में कहा।

'मा ने उसकी तरफ देखा और पलँग से उठकर कपड़े बदलती हुई कहने लगी—अपनी बातें नहीं करती! हाँ देखो, इस जीवन में, जो मैं अब व्यतीत कर रही हूँ, अपनी बातें करना मुझे कठिन हो गया है। जब जीवन से ही मुझे प्रेम हो गया है, तब केवल अपना ध्यान नहीं आता। अब तो सभी के लिए मेरे हृदय में भय होता है और सभी के लिए दुःख होता है। संसार ही सिमटकर मेरे दिल में भरने-सा लगा है और मेरा हृदय सभी लोगों की तरफ खिंचता है। उनसे अपने जीवन को मैं अलग कैसे कर सकती हूँ! ऐसा करना बड़ा कठिन है!

लियूडमिला हँसती हुई कोमल स्वर में बोली—ऐसा करने की शायद जरूरत भी नहीं है।

'जरूरत है या नहीं है, यह तो मैं नहीं जानती; परन्तु यह मैं जरूर जानती हूँ कि लोग जीवन के सम्पर्क में आकर अधिक बलवान् और बुद्धिमान् होते जा रहे हैं। यह तो प्रत्यक्ष है!'

कमरे के बीच में खड़ी हुई मा आधे कपड़े पहने हुए एक क्षण के लिए ठिठककर विचारों में पड़ गई। उसको एकाएक ऐसा लगने लगा कि उसकी आत्मा ही मानों बिलकुल बदल गई थी। वह आत्मा, जो अपने लड़के की रक्षा के लिए चिन्तित और भयभीत रहा करती थी, अब उसके शरीर से नष्ट हो चुकी थी या वह बहुत आगे बढ़ गई थी, अथवा शायद आवेश की अग्नि में जल जाने से तपकर स्वच्छ हो गई थी, जिससे उसके हृदय में एक नवीन शक्ति आ गई थी। वह खड़ी-खड़ी अपनी आत्मा से बातें-सी करने लगी। उसे अपने हृदय में झाँककर देखने की इच्छा हो रही थी; क्योंकि उसे इस बात का भय-सा हो रहा था कि कहीं फिर वहाँ कोई चिन्ता न खड़ी हो जाय।

'क्या सोच रही हो!' लियूडमिला ने, स्नेह-पूर्वक उसकी तरफ बढ़कर पूछा।

'कुछ नहीं।'

दोनों चुप हो गईं और एक-दूसरे की तरफ चुपचाप ध्यान से देखने लगीं। फिर वे मुसकराईं और लियूडमिला यह कहती हुई कमरे के बाहर चली गई—देखूँ तो, मेरा सेमोवार क्या कर रहा है!

उसके चले जाने पर मा ने खिड़की में से बाहर की तरफ देखा। ठण्डा और छलकता हुआ दिन बाहर सड़क पर चमक रहा था। उसकी आत्मा भी उसी प्रकार चमक रही थी। परन्तु उसमें वह गरमी नहीं थी, जो बाहर की चमक में थी। आनन्द के कारण मा की इच्छा बहुत-सी बातें करने की हो रही थी। उसका हृदय उस परिवर्तन के लिए जो उसकी आत्मा में हो गया था, जो सूर्यास्त की लालिमा के सदृश एक प्रकार से उसकी आत्मा को प्रकाशित कर रहा था, किसी का उपकार मानना चाहता था! किसका उपकार, यह वह नहीं जानती थी। अस्तु, उसके हृदय में ईश्वर से प्रार्थना करने की इच्छा होने लगी जो बहुत दिनों से उसके हृदय में नहीं हुई थी। इतने में किसी का नौजवान चेहरा उसे याद आ गया और किसी की गूँजती हुई आवाज उसके कानों में आई—यही है पवेल व्लेसोव की मा! सशा की आँख आनन्द और मृदुलता से पूर्ण चमकती हुई दिखाई दीं और राइबिन की काली-काली लम्बी मूर्ति आँखों के आगे उठने लगी, और पवेल का ढला हुआ गम्भीर चेहरा मुसकराता हुआ और निकोले खिटपिटाया हुआ आँखें मिचकाता हुआ दिखाई दिया। परन्तु जैसे ही मा ने धीरे से एक गहरी साँस ली, यह सब दृश्य उसकी आँखों से लुप्त हो गये।

'निकोले ठीक कहता था।' लियूडमिला ने फिर कमरे में प्रवेश करते हुए कहा—लगता है, वह भी पकड़ गया। मैंने छोकरे को, जैसा तुमने कहा, उसे देखने भेजा था। परन्तु उसने लौटकर कहा कि पुलिस के आदमी उसके सहन में छिपे हैं, और द्वार पर चौकीदार तो नहीं मिला, मगर द्वार के पीछे भी पुलिस के आदमी छिपे हुए थे। मकान के चारों ओर भी जासूस मँडरा रहे हैं। छोकरा उन्हें खूब पहिचानता है।

'हाँ!' मा ने सिर हिलाकर कहा—बेचारा! और यह कहकर उसने एक गहरा निःश्वास लिया। परन्तु वह दुःखी नहीं हुई और इस पर वह स्वयं चुपचाप आश्चर्य करने लगी।

'कुछ दिनों से निकोले शहर के कामगारों को पर्चे और पुस्तकें पढ़-पढ़कर खूब सुनाया करता था। अस्तु, उसके गायब हो जाने का समय आ गया था।' लियूडमिला ने क्रोध में भरते हुए कहा—बन्धुओं ने उससे भागने के लिए भी कहा; परन्तु उसने उनका कहा नहीं माना। मैं समझती हूँ, ऐसी स्थिति में समझाना ठीक नहीं होता, जबरदस्ती करनी चाहिए।

इतने में काले बालों, लाल मुँह, सुन्दर नेत्रों और तोते की-सी नुकीली नाक का एक छोकरा द्वार में आकर खड़ा हो गया।

'सेमोवार अन्दर ले आऊँ?' उसने गूँजती हुई आवाज में पूछा।

'हाँ सेरयोज्हा, कृपया ले आओ। यह लड़का मुझसे पढ़ता है, अम्माँ! क्या तुम पहिले कभी इससे नहीं मिलीं?'

'नहीं!'

'यह कभी-कभी निकोले के पास जाया करता था। इसे वहाँ मैं भेजती थी।'

लियूडमिला आज मा को भिन्न लग रही थी। आज वह मा को अधिक सादा और अपने हृदय के निकट लगती थी। उसके अमीरों के-से लचकीले शरीर में एक नवीन सौन्दर्य और शक्ति दीखती थी; उसकी निष्ठुरता पिघल गई थी, और उसकी आँखों के नीचे के कुण्डल रात-भर में मानों बहुत बड़े हो गये थे, उसका चेहरा पीला और पतला लगता था, और उसके विशाल नेत्र गड्ढों में बैठ गये थे। उसका चेहरा देखने से लगता था कि वह बहुत थकी हुई थी और उसकी आत्मा पर कोई बड़ा बोझ-सा लद रहा था।

छोकरा सेमोवार कमरे में ले आया।

'सेरयोज्हा, यही हैं निलोवना! उसी कामगार की मा जिसकी कल सजा हुई!'

सेरयोज्हा ने चुपचाप मा की तरफ सिर झुकाकर मा का हाथ स्नेह से पकड़कर दबाया। फिर वह जाकर रोटी ले आया और मेज पर बैठ गया। लियूडमिला मा को समझाने लगी कि जब तक इस बात का ठीक-ठीक पता न लग जाय कि पुलिस किसकी बाट देख रही है, तब तक निकोले के घर नहीं जाना चाहिए।

'शायद वे तुम्हारी ही बाट देखते हों! तुम्हारी तलाशी वे जरूर लेंगे।'

'लेने दो। मुझे पकड़ भी लेंगे तो कोई हर्ज नहीं है। केवल मुझे पाशा का व्याख्यान लोगों के पास भेज देने की चिन्ता है।'

'उसका फर्मा तैयार हो गया है। कल ही शहर और मुफस्सिल के गाँवों में बाँटने लिए मिल सकेगा। कुछ प्रतियाँ दूसरे जिलों के लिए भी मिल जायँगी। तुम नटाशा को जानती हो?'

'हाँ, हाँ?'

'तो उसके पास तुम्हीं ले जाना!'

छोकरा अखबार पढ़ रहा था। वह उनकी बात-चीत सुनता नहीं लगता था। मगर बीच-बीच में अखबार से आँखें हटाकर वह मा की तरफ देखने लगता था और मा की आँखें जब उसकी सजीव आँखों से मिल जाती थीं, तो मा को बड़ी प्रसन्नता होती थी और वह मुसकराने लगती थी। फिर वह अपने-आपको अपने मुसकराने पर मन-ही-मन झिड़कने लगती थी। लियूडमिला फिर निकोले के बारे में बातें करने लगी, परन्तु गिरफ्तारी पर उसने तनिक भी खेद प्रकट नहीं किया। मा को लगा कि वह बिलकुल स्वाभाविक स्वर में बात-चीत कर रही थी। और रोज से आज वक्त जल्दी-जल्दी बीत रहा था। जब वे दोनों चाय पीकर उठीं तो लगभग दोपहर हो चुका था।

'परन्तु' लियूडमिला बोली और इतने में ही किसी ने द्वार पर एक धक्का मारा।

छोकरा उठकर खड़ा हो गया और अपनी सुन्दर आँखें चढ़ाते हुए उसने प्रश्न-पूर्वक लियूडमिला की तरफ देखा।

'द्वार खोल दो, सेरयोज्हा! तुम्हारा क्या विचार है? कौन होगा?' गम्भीरता से जेबों में हाथ डालते हुए मा से लियूडमिला ने कहा—अगर पुलिस हुई तो, तुम तो निलोवना, इधर इस कोने में खड़ी हो जाना और तुम, सेर...

'हाँ, हाँ, मैं जानता हूँ। उस गुप्त द्वार से।' छोकरे ने उत्तर दिया और यह कहकर वह द्वार खोलने चला गया।

मा मुस्कराने लगी। वह इन तैयारियों से विचलित नहीं हुई थी, क्योंकि उसे नहीं लग रहा था कोई दुर्घटना होनेवाली है।

द्वार खुलने पर नाटे कद के डाक्टर ने अन्दर प्रवेश किया। घुसते ही जल्दी से वह बोला—पहली खबर तो यह है कि निकोले पकड़ा गया है। आहा! तुम यहाँ हो निलोवना! वे तुम्हारी भी ताक में हैं। जब वह पकडा गया तो क्या तुम वहाँ नहीं थीं?

'उसने मुझे भगा दिया था। यहाँ भेज दिया था।'

'हूँ। मैं नहीं समझता, इससे कोई फायदा होगा। दूसरी खबर यह है कि रात ही को चन्द नौजवानों ने पवेल के व्याख्यान की पाँच सौ नकलें तैयार कर ली हैं, खराब नकलें नहीं हैं; साफ हैं। आज रात को वे उन्हें शहर-भर मे बाँट देना चाहते हैं। मैं उनके इस प्रस्ताव के विरुद्ध हूँ। शहर के लिए छपी हुई नकलें होनी चाहिएँ। यह नकलें किसी दूसरी जगह भेजी जा सकती हैं।'

'लाओ, मैं उन्हें नटाशा को दे आऊँगी।' मा ने उत्साह से कहा—मुझे दे दो।

मा को पवेल का व्याख्यान चारों ओर लोगों में बिखेर देने की प्रबल इच्छा हो रही थी। वह पृथ्वी-भर पर घूम-घूमकर अपने पुत्र के शब्दों का प्रचार करने के लिए तैयार थी; अस्तु, वह याचना-पूर्ण नेत्रों से डाक्टर के चेहरे की तरफ देखने लगी।

'मेरी कुछ समझ में नहीं आता कि ऐसे मौके पर यह काम तुम्हें अपने हाथों में लेना चाहिए या नहीं।' डाक्टर ने अनिश्चय से कहा—फिर जेब से अपनी घड़ी निकालकर समय देखता हुआ बोला—इस समय बारह बजकर बारह मिनट हुए हैं। गाड़ी दो बजकर पाँच पर छूटती है और वहाँ सवा पाँच पर पहुँचती है। तुम वहाँ शाम को पहुँचोगी। फिर भी ठीक समय पर पहुँच जाओगी, बहुत देर नहीं होगी। लेकिन यह ख्याल नहीं है।

'यह ख्याल नहीं है।' लियूडमिला ने क्रोध से दुहराया।

'तो और क्या ख्याल है?' मा ने उनकी तरफ बढ़ते हुए पूछा—ख्याल सिर्फ इसी का होना चाहिए कि काम अच्छी तरह हो जाय। मैं इस काम को बहुत अच्छी तरह कर सकती हूँ।

डाक्टर ने उसकी तरफ घूमकर देखा और अपना माथा कुरेदता हुआ बोला—तुम्हारे लिए यह काम करना खतरनाक होगा।

'क्यों ?' मा ने कड़ककर पूछा।

'इसलिए', डाक्टर ने शीघ्रता से टूटी आवाज में कहा—कि तुम निकोले की गिरफ्तारी से एक घण्टा पहले घर से गायब हो गईं। फिर तुम कारखाने पर देखी गईं, जहाँ तुम्हें लोग उस शिक्षक की चाची करके जानते हैं और तुम्हारे यहाँ पहुँचने के बाद ही कारखाने में पर्चे बँटे। यह सब बातें मिलाकर तुम्हारी गर्दन के लिए एक फन्दा तैयार हो जाता है।

'वहाँ मुझे कोई देख न पायेगा।' मा ने अपनी इच्छा की उमङ्ग में विश्वास दिलाते हुए कहा—वहाँ से लौटने पर वे मुझे गिरफ्तार करेंगे और पूछेंगे कि मैं कहाँ थी, तो... एक क्षण-भर ठहरकर वह बोली—मैं जानती हूँ, मैं उनसे क्या कहूँगी। कारखाने से मैं सीधा शहर के बाहर की तरफ चली जाऊँगी। वहाँ मेरा एक मित्र रहता है। उसका नाम सिजोव है। बस, मैं उनसे कहूँगी कि मुकदमे के बाद मैं सीधी उसी के यहाँ चली गई थी। उससे बातचीत करके अपने दिल का दर्द हल्का करने के लिए मैं उसके यहाँ चली गई थी, क्योंकि वह भी अपने भतीजे की सजा हो जाने के कारण मेरी ही तरह दुःखी है। मैं तब से बराबर उसी के यहाँ रही। सिजोव मेरी गवाही दे देगा। समझे ?

मा देख रही थी कि वे उसकी प्रबल इच्छा के सामने झुकने लगे थे। अस्तु, वह उन्हें शीघ्र से शीघ्र अपना प्रस्ताव मान लेने के लिए प्रयत्न करने लगी। वह हठपूर्वक बोल रही थी और उसका हृदय आशा से गद्‌गद हो रहा था। अन्त में वे उसके प्रस्ताव पर राजी हो गये।

'अच्छा, जाओ !' डाक्टर ने अनिच्छा से उसका प्रस्ताव स्वीकार करते हुए कहा। लियूदमिला चुप थी। कमरे में कुछ विचारती हुई इधर से उधर टहल रही थी। उसका चेहरा फीका पड़ गया था, गाल अन्दर को धँस गये थे और उसकी गर्दन के पुट्ठे इस प्रकार खिंच रहे थे, मानों उसका सिर एकाएक भारी होकर आप-से-आप छाती पर लटक गया हो। मा उनकी तरफ देख रही थी। डाक्टर के अनिच्छा से स्वीकृति दे देने पर मा ने एक निःश्वास लिया।

'तुम सब मेरी चिन्ता करते हो,' मा ने मुसकराते हुए कहा—परन्तु तुम अपनी चिन्ता क्यों नहीं करते ? इस बात से आनन्द की तरंगें ऊपर को उठने लगीं।

'यह सच नहीं है। हमें अपनी चिन्ता भी है। हमें अपनी चिन्ता भी रखनी चाहिए। हम लोग उन साथियों को खूब डाँटते हैं, जो व्यर्थ में अपनी शक्ति बर्बाद करते हैं। हाँ, अच्छा देखो, अब तुम्हें इस प्रकार करना होगा। व्याख्यान की प्रतियाँ तुम्हें स्टेशन पर मिल जायँगी।' उसने माँ को समझा दिया कि किस तरह सारा काम पूरा किया जायगा। 'फिर उसके चेहरे की ओर देखता हुआ वह बोला—अच्छा निलोवना, ईश्वर करे, तुम्हे सफलता मिले। तुम बड़ी प्रसन्न हो, क्यों ? यह कहकर वह उदास और असन्तुष्ट मुँह फेरकर चल दिया। उसके चले जाने पर जब फिर द्वार-बन्द हो गया, तब लियूदमिला मा के पास धीरे-धीरे मुसकराती हुई आई और बोली—तुम बड़ी अच्छी स्त्री

हो। मैं तुम्हें समझती हूँ ! यह कहकर वह मा का हाथ पकड़कर कमरे में टहलने लगी—मेरे भी एक लड़का है। वह तेरह वर्ष का हो चुका है। मगर वह अपने बाप के पास रहता है। मेरा पति एक सरकारी वकील का नायब है। शायद अब वह सरकारी वकील भी हो गया हो। मेरा लड़का उसी के पास है। वह कैसा होगा ! मैं प्रायः सोचा करती हूँ। इतना कहते-कहते उसकी मन्द, परन्तु जोरदार आवाज काँप उठी और वह विचारती हुई धीरे-धीरे कहने लगी—उसका लालन-पालन एक ऐसा आदमी कर रहा है, जो मेरे बन्धुओं का खुल्लमखुल्ला द्रोही है, उन लोगों का द्रोही जिन्हें मैं दुनिया में सर्वश्रेष्ठ मनुष्य समझती हूँ। अस्तु, शायद मेरा लड़का एक दिन मेरा ही वैरी हो जाय। वह मेरे पास नहीं रह सकता। मैं अपने असली नाम से भी नहीं रह सकती हूँ। मैंने आठ वर्ष से अपने लड़के का मुँह तक नहीं देखा है। आठ वर्ष इस छोटी-सी जिन्दगी में बहुत होते हैं, इतना समय हो चुका है !

खिड़की पर जाकर उसने मुरझाकर खुले आकाश की तरफ देखा और बोली—अगर वह आज मेरे पास होता तो मेरे शरीर में अधिक बल होता। मेरे हृदय के वे घाव यों ही खुले हुए न रहते, जो सदा दुखते हैं। वह मर ही जाता तो भी मेरे लिए शायद कुछ आसान हो गया होता। इतना कहकर वह फिर रुकी और दृढ़ता-पूर्वक जोर से कहने लगी—उसके मर जाने पर मुझे यह भ्रम तो न रहता कि कभी वह उस चीज का शत्रु भी बन सकता है जो मा के प्रेम से भी ऊँची है, जो जीवन से भी अधिक प्रिय और महत्त्व की है।

'मेरी बेटी !' मा ने धीरे से लियूडमिला का हाथ पकड़कर कहा। मा को लगा कि एक जबरदस्त अग्नि उस स्त्री का हृदय जला रही थी।

'तुम बड़ी भाग्यवान् हो !' लियूडमिला ने फिर मुसकराते हुए कहा—कैसी आनन्द की बात है कि मा और बेटे साथ-साथ एक काम में लगे हैं, जो बड़ी मुश्किल से होता है !

मा ने अचानक अपने मन में कहा—हाँ, यह बड़े भाग्य की बात है ! और फिर वह इस प्रकार धीमी आवाज में मानों कोई भेद खोल रही हो, कहने लगी—यह दूसरा ही जीवन है। तुम सब, निकोले आइवानोविश इत्यादि सत्य के कार्य में लगे हुए सभी लोग, साथ हो। सभी एकाएक हमारे संबंधी हो गये हैं। मैं सब समझती हूँ, परंतु शब्द मैं नहीं समझती। और सब कुछ मैं समझती हूँ। सब कुछ।

'हाँ, ऐसा ही है।' लियूडमिला बोली—सचमुच ऐसा ही है।

मा ने अपने हाथ लियूडमिला के सीने पर रखकर उसे दबाया और मंद स्वर में मानों अपने शब्दों पर स्वयं विचार करती हुई कहने लगी—हमारे बच्चे दुनिया में हमसे आगे जा रहे हैं। मैं समझती हूँ। बच्चे दुनिया में आगे जा रहे हैं, सारी पृथ्वी पर से जब जगहों से एक ही तरफ को जा रहे हैं। अच्छे-अच्छे हृदयों के जवान जा रहे हैं। सच्चे इरादों के लोग जा रहे हैं। जाकर वे बुराई और अन्धकार के राज्य पर आक्रमण करते हैं, और अपने पैरों के नीचे वे झूठ को रौंदते हैं और लोगों को उससे बचाने और सबकी उससे रक्षा करने

का प्रयत्न करते हैं। जवान और बलवान् लोग अपनी अजेय शक्ति का उपयोग अब संसार में एक ही वस्तु के लिए कर रहे हैं अर्थात् न्याय कायम करने के लिए। वे मनुष्य-मात्र के दुःख और दुर्भाग्य पर विजय प्राप्त करने के लिए बढ़ रहे हैं। वे दुःख का दुनिया से नामो-निशान मिटा देने के लिए अपने हथियार सजा-सजाकर दुःखरूपी राक्षस पर विजय पाने के लिए आगे बढ़े जा रहे हैं और वे उस पर विजय पाकर ही मानेंगे। हम एक नया सूर्य उगायेंगे, किसी ने मुझसे एक बार कहा था। मुझे लगता है, वे सचमुच ही एक नया सूर्य उगा रहे हैं। वे कहते हैं कि वे जीवन में सबका एक हृदय बना देंगे, सारे टूटे हुए हृदयों को मिलाकर, मुझे लगता है, वे सचमुच सबके हृदय एक कर रहे हैं। वे कहते हैं कि जीवन को पवित्र बना देंगे। मुझे लगता है कि सचमुच वे हमारे सबके जीवन को पवित्र कर रहे हैं।

उसने आकाश की तरफ हाथ हिलाकर कहा—एक वहाँ सूर्य है।

फिर उसने छाती पर हाथ मारकर कहा—और एक दूसरा यहाँ सांसारिक सुख का महासूर्य उगाया जा रहा है, जिसका प्रकाश पृथ्वी पर सदा फैला रहेगा। सारी पृथ्वी पर, और उन सब वस्तुओं पर जो पृथ्वी पर हैं, हमारे आन्तरिक प्रेम का प्रकाश सदा फैला रहेगा।

भूली हुई ईश्वर-प्रार्थनाओं के शब्द उसे यह कहते-कहते याद आने लगे, और एक नई श्रद्धा की ज्योति उसके अन्तर में होकर उन शब्दों को चिनगारियों की तरह उसके हृदय में भरने लगी।

'बच्चे सत्य और सुबुद्धि के पथ पर जा रहे हैं और सबके लिए प्रेम की भेंट लिये जा रहे हैं। वे हर एक चीज के ऊपर नया आकाश बना रहे हैं और हर एक चीज को अपनी आत्मा के भीतर से निकलनेवाली पवित्र अग्नि से प्रज्वलित कर रहे हैं, दुनिया में एक ऐसे नवीन जीवन की वृष्टि हो रही है, जो इन बच्चों के सार्वभौम प्रेम से उत्पन्न हो रही है। इस प्रेम की अग्नि को कौन बुझा सकता है? किसमें इतनी शक्ति है? पृथ्वी स्वयं इस नये जीवन को जन्म दे रही है, और सारे प्राणी इस आनेवाले जीवन की विजय चाह रहे हैं। अब चाहे रक्त की नदियाँ बहें या रक्त के सागर भर जायँ; परन्तु इस नई ज्योति को कोई बुझा नहीं सकता।'

यह कहकर वह अपने आवेश से थक जाने के कारण लियूडमिला के निकट से हट गई और सोफा पर बैठकर हाँफने लगी। लियूडमिला भी चुपचाप सावधानी से उससे दूर हट गई, मानों उसे किसी चीज को नष्ट कर डालने का भय हो रहा था। फिर वह लचकती हुई कमरे में टहलने लगी और मा की तरफ अपनी धुँधली-धुंधली आँखों से घूरने लगी। लियूडमिला इस समय अधिक लम्बी, सीधी और पतली दीख रही थी। उसका सूखा और गम्भीर चेहरा विचारों में डूबा हुआ था और उसके होंठ हिल रहे थे। कमरे की स्तब्धता से मा शीघ्र ही शान्त हो गई और लियूडमिला की दशा देखकर अपराधी की भाँति कोमल स्वर से पूछने लगी—मेरे मुँह से कोई अनुचित बात निकली है?

लियूडमिला यह सुनते ही फौरन मुड़ी और मा की तरफ उसने इस प्रकार देखा मानों वह मा का प्रश्न सुनकर डर गई हो।

'नहीं, नहीं।' लियूडमिला ने जल्दी से कहा और इस प्रकार मा की तरफ हाथ बढ़ाया मानों वह किसी चीज को अपने हाथों में पकड़ लेना चाहती थी। 'मगर अब और इस संबंध में बातें नहीं करेंगे। जितना तुमने कहा है, उतना ही रहने दो! हाँ, बस!' फिर शान्त स्वर में उसने जोर से कहा—तुम्हे जल्दी ही जाने की तैयारी करनी चाहिए। बहुत दूर जाना है।

'हाँ, हाँ! मैं अभी तैयार हो जाती हूँ। मैं बड़ी प्रसन्न हूँ। ओहो हो! मैं बड़ी खुश हूँ! कैसे तुम्हें बताऊँ? अपने बेटे का संदेशा लेकर जाऊँगी। अपने रक्त का संदेशा! ओ हो हो! अपनी आत्मा का संदेशा लेकर दुनिया को देने जाऊँगी!'

मा मुसकरा रही थी। परन्तु उसकी मुसकान की स्पष्ट परछाईं लियूडमिला के मुख पर नहीं पड़ रही थी। मा को ऐसा लगा कि लियूडमिला अपने मन का आनंद अपने मन में ही दबा देने का प्रयत्न कर रही थी। अस्तु, मा को बड़ी इच्छा हुई कि इस हठीली, दुःख से लिप्त आत्मा में अपनी आग भरकर उसे भी अपने अन्तर की तरह जलाये, और उसके हृदय को अपने हृदय से मिलाकर उसे भी आनंद का राग अलापने पर बाध्य करे। अस्तु, उसने लियूडमिला के दोनों हाथ अपने हाथों में पकड़ लिये और उन्हें जोर से दबाया।

'मेरी लाडली! यह जानकर कितना आनंद होता है कि सभी के जीवन में वह ज्योति है, जिसका वे एक दिन अवश्य दर्शन करेंगे, जिसमें वे अपनी आत्मा को स्नान करायेंगे और जिसकी अमर अग्नि से सभी उष्णता पायेंगे!'

मा का सुन्दर विशाल चेहरा काँप रहा था और उसके नेत्र चमक रहे थे। उसकी भौंहे इस प्रकार हिल रही थीं, मानों वे नेत्रों की चमक को तलवार को तरह काटने का प्रयत्न कर रही थीं। विचारों के नशे में डूबी हुई-सी वह अपने मस्तिष्क में उठनेवाले विचारों में और अपने हृदय में उठानेवाले भावों में अपने जीवन की घटनाएँ भर रही थी; और अपने विचारों को दबा-दबाकर दृढ़ शब्दों को मानों जगमगाते हुए ही बना-बनाकर टपका रही थी जो वसन्ती सूर्य की किरणों में लाल-लाल चमक रहे थे अथवा यों कहिए कि वसन्ती सूर्य की मानों शक्ति पाकर उसके विचार हृदय में दृढ़ता से जमकर और बनकर बाहर फूलों की तरह खिल-खिलकर झर रहे थे। वह कह रही थी—दुनिया का नया देवता 'जनता' है। दुनिया की सारी चीजें सभी के लिए हैं। सभी कुछ हर एक के लिए है। जीवन का सर्वस्व एकता में है। सारा जीवन हर एक के लिए है; और हर एक सारे जीवन के लिए है! इसी प्रकार मैं तुम सबको देखती हूँ। इसीलिए, मैं समझती हूँ, तुम पृथ्वी पर जन्मे हो। तुम सब एक-दूसरे के सच्चे बन्धु हो। तुम सब एक ही कुटुम्ब के हो, क्योंकि तुम्हारा सबका जन्म एक माता, सत्य के पेट से ही हुआ है। सत्य ने ही तुम्हें जन्म दिया है; और सत्य के लिए ही तुम सब जीते हो।

फिर आवेश से थककर वह चुप हो गई और दम लेकर उसने आगे की तरफ इस प्रकार हाथ फैलाये, मानों वह किसी को आलिङ्गन कर रही हो।

'और जब मैं उस शब्द 'बन्धु' को अपने मन में उच्चारती हूँ, तभी मेरे हृदय में यह आवाज आने लगती है, "वे जा रहे हैं! सभी तरफ से जा रहे हैं! झुण्ड के झुण्ड एक ही लक्ष्य की ओर जा रहे हैं!" मुझे यह आवाज ऐसी गरजती और गूँजती हुई सुनाई देती है, मानों वह दुनिया-भर के गिरजों और मन्दिरों के घण्टों के साथ मिली हुई मेरे कानों में आ रही हो, जिससे मुझे बड़ा आनन्द होता है।'

लियूडमिला का चेहरा आश्चर्य से चमक रहा था और उसके होंठ काँप रहे थे। उसकी धुँधली-धुँधली आँखों से आँसुओं की धाराएँ गालों पर होती हुई बह रही थीं।

मा ने उसे अपने सीने से चिपटा लिया और उसके हृदय पर अपने शब्दों से विजय प्राप्त कर लेने पर थोड़ा अभिमान करती हुई धीरे-धीरे मुसकराने लगी।

विदा होते समय लियूडमिला ने मा की ओर देखकर कोमल स्वर में पूछा—जानती हो कितनी सुखी हो! और फिर अपने-आप ही उसने उत्तर भी दे लिया—बड़ी सुखी हो! ऊँचे पर्वतों पर ऊषा की भाँति सुखी हो!

उन्तालीसवाँ परिच्छेद

सड़क पर निकलते ही बर्फीली ठण्डी हवा ने एक गीली चादर की तरह मा के शरीर को ढाँक लिया। वह उसके गले में घुस गई, उसकी नाक गुदगुदाने लगी और क्षण-भर के लिए उसने उसकी साँस ही रोक दी। मा ठिठककर पीछे की तरफ देखने लगी। कुछ दूर पर निर्जन सड़क के मोड़ पर एक गाड़ीवाला एक फटा-सा टोप पहने हुए खड़ा था। उससे कुछ दूर एक दूसरा आदमी आ रहा था, जो इतना झुका हुआ था कि उसका सिर बिलकुल उसके कन्धों में घुसा हुआ लगता था। उससे आगे कुछ दूर पर एक सिपाही उछलता हुआ अपने कान जल्दी-जल्दी मलता हुआ दौड़ा जा रहा था।

'सिपाही दुकान से कुछ खरीदने के लिए आया होगा।' मा ने अपने मन में सोचा और फिर सन्तोष से अपने पैरों के नीचे कुचलती हुई बर्फ की चर्र-चर्र सुनती हुई वह आगे बढ़ी। स्टेशन पर वह बहुत जल्द पहुँच गई। गाड़ी में अभी काफी देर थी। फिर भी तीसरे दर्जे के गन्दे, मैले, काले-काले मुसाफिरखाने में अभी से आदमियों की भीड़ लग रही थी। रेल की पटरियों पर काम करनेवाले कामगार भी ठण्ड से परेशान होकर मुसाफिर-खाने के अन्दर घुस आये थे। इक्के-गाड़ीवाले और कुछ चीथड़े लपेटे हुए बे-घरबार के लोग भी मुसाफिरखाने के अंदर की गर्म हवा का फायदा उठाने के लिए अंदर आ गये थे। मुसाफिरों में कुछ किसान थे, एक ओवरकोट पहने हुए मोटा-सा सौदागर था, एक पादरी अपनी लड़की के साथ था, एक चेचकरू जवान औरत थी, पाँच-छः सिपाही थे और आपस में घुसपुस-घुसपुस बातचीत करते हुए कुछ दूकानदार थे। सब हुक्का-बीड़ी पीने, बातें करने और दूकान पर जाकर चाय और ह्विस्की पीने में लगे हुए थे। कोई ठट्ठा मारकर जोर से हँस रहा था; धुएँ का एक छोटा-सा बादल घुमड़-घुमड़कर ऊपर को उठ रहा था; मुसाफिरखाने का दरवाजा खुलने पर चर्र-चर्र होता था और फिर धड़ाम् से बन्द हो जाता था। बीच-बीच में खिड़कियाँ एकाएक खड़खड़-खड़खड़ आवाज करके हिलने लगती थीं। तम्बाकू, मशीन के तेल और मछलियों की बू से नाक के नथने फटे जा रहे थे। मा दरवाजे के निकट जाकर बैठ गई और इन्तजार करने लगी। जब दर-वाजा खुलता था, ताजी हवा की एक फुआर मा के मुँह पर आकर लगती थी जो उसे बड़ी प्रिय लगती थी। अस्तु, वह उसे एक गहरी साँस में खींचकर अपने अन्दर भर लेती थी। कपड़ों से ढके हुए, हाथों में कुछ गठरियाँ लिये हुए कुछ मुसाफिर अन्दर घुसे और उन्होंने भद्दी तरह से धक्का मारते हुए दरवाजा खोला और बड़बड़ाते और कोसते हुए अपना सामान तिपाइयों और जमीन पर पटक दिया और अपने ओवरकोटों के कालरों, बाँहों और अपनी दाढ़ियों और मूँछों पर से मुँह फुलाते और बुड़बुड़ाते हुए सूखी बर्फ झाड़-झाड़कर साफ करने लगे।

फिर एक नौजवान हाथ में एक पीला-पीला बेग लिये हुए घुसा। घुसते ही उसने घूमकर चारों तरफ नजर दौड़ाकर देखा और सीधा मा के पास चला आया।

'मास्को जा रही हो? अपनी भतीजी के पास?' उसने धीमी आवाज में पूछा।

'हाँ, टेन्या को देखने जा रही हूँ।' मा ने कहा।

'ठीक!' उस नौजवान ने उत्तर में कहा और अपना बेग मा के पास तिपाई पर रख दिया। फिर जल्दी से उसने जेब में से एक सिगरेट निकाला और उसको जलाकर टोप हिलाता हुआ चुपचाप दूसरे द्वार की तरफ चला गया। मा ने बेग के ठण्डे-ठण्डे चमड़े पर हाथ फिराकर उसे टटोला और फिर उस पर अपनी कुहनी टेककर संतोष से बैठ गई और इधर-उधर के लोगों को देखने लगी। कुछ देर बाद वह उठी और प्लेट-फार्म के द्वार के पास रखी हुई एक दूसरी तिपाई पर बैठने के लिए चली। बेग को अपने हाथ में वह कसकर पकड़े हुए थी। बेग बड़ा नहीं था। मा सिर उठाये हुए अपने सामने आनेवाले चेहरों को गौर से देखती हुई चल रही थी। ऊँचे कालर का ओवरकोट पहने हुए एक नाटा-सा मनुष्य मा से टकराया और उछलकर एक तरफ अपने हाथ सिर की तरफ हिलाता हुआ हट गया। मा को वह परिचित-सा लगा। मा ने घूमकर उसकी तरफ देखा तो वह अपने कोट के कालर में से एक चमकती हुई आँख निकाले मा की तरफ देख रहा था। मा उसे देखते ही सन्न हो गई और उसके जिस हाथ मे बेग था, वह काँप गया और उसका कन्धा एकदम बेग भारी हो जाने से दुखने लगा।

'मैंने इसको कहीं देखा है!' मा अपने मन में सोचने लगी, और इस विचार में उसने अपने मन की सारी घबराहट डुबा-सी दी। परन्तु फिर भी उसके हृदय में शांति नहीं हुई और अपने गले और मुँह के भीतर उसे एक बुरा स्वाद-सा लगा। फिर एक बार उसको मुड़कर देखने को मा का जी चाहा और उसको फिर मा ने घूमकर देखा तो वह सावधानी से पहला पाँव बदलकर दूसरे पर खड़ा था। परन्तु था उसी जगह। ऐसा लगता था कि वह कुछ चाहता था, मगर निश्चय नहीं कर पाया था कि क्या चाहता था। उसका दाहिना हाथ कोट के बटनों के बीच घुसा हुआ था, और बायाँ जेब के अन्दर था, जिससे बायें कन्धे से दाहिना कुछ ऊँचा लगता था। धीरे-धीरे मा चुपचाप तिपाई के पास गई और ऐसी सावधानी से उस पर बैठ गई, मानों अपने भीतर अथवा अपने ऊपर उसे किसी बम के फट जाने का-सा डर हो रहा था। किसी आनेवाली दुर्घटना के भय ने उसकी स्मृति को जगाया, और उसे फौरन ही याद हो आया कि इस मनुष्य को उसने पहले भी दो बार देखा था। एक बार राइबिन के जेल से भागने के बाद खेतों में और दूसरी बार उस रोज शाम को अदालत में। उसी की बगल में वह कांस्टेबल भी खड़ा था, जिसको मा ने यह कहकर गलत रास्ते पर दौड़ा दिया था कि राइबिन इधर को भागकर गया है। वे दोनों मा को पहचानते थें। स्पष्ट था, वे इस समय उसका पीछा कर रहे थे।

'क्या मैं भी गिरफ्तार हो गई हूँ!' मा ने मन-ही-मन सोचा और तुरंत ही अपने–

आप चौंककर उत्तर भी दे लिया—शायद अभी नहीं...परंतु फिर फौरन ही और देते हुए बड़े प्रयत्न से गम्भीरता-पूर्वक मन-ही-मन कहने लगी—मैं गिरफ्तार हो चुकी हूँ। अब आगे जाने से कोई फायदा नहीं।

मा ने फिर घूमकर देखा और उसके विचार चिनगारियों की तरह बिखरकर चमकते हुए लुप्त हो गये।

'इस बेग को यहीं छोड़ दूँ ! भाग जाऊँ !' वह सोचने लगी।

परन्तु फिर फौरन ही विचार आया—कितना नुकसान हो जायगा ! अपने बेटे का सन्देशा इनके हाथों में क्योंकर छोड़ दूँ !

उसने काँपते हुए हाथ से बेग को दबाकर जोर से पकड़ लिया और सोचने लगी—इसको लेकर यहाँ से भाग जाऊँ ! मगर किधर को भागूँ !

ऐसे विचार उसे किसी अपरिचित आदमी के लगे, अपने नहीं ; किसी ऐसे बाहरी मनुष्य के, जो उन विचारों को उसके दिमाग में जबरदस्ती भरने का प्रयत्न कर रहा था। ये विचार उसको लजाये दे रहे थे ; उनकी जलन से उसका दिमाग उधड़ा जा रहा था और उसके हृदय पर अग्नि के कोड़े-से बरस रहे थे। ऐसे विचार उसे अपमान की तरह लगे। वे उसे अपनी आत्मा से और पवेल से, और उस सबसे जो उसके हृदय को प्रिय था, दूर भगा ले जाने की चेष्टा कर रहे थे। मा को ऐसा लगा कि कोई हठीली, विरुद्ध शक्ति उसको दबोच रही थी। उसके कन्धे और सीना दबाकर उसका कद छोटा बना रही थी और उसे एक भयंकर भय के गढ़े में ढकेल दे रही थी। कनपटियों के पास की उसकी रगें जोर से हिल रही थीं और उसके बालों की जड़ें गरम हो गई थीं।

फिर मा ने अपने हृदय की एक महान् और तीक्ष्ण चेष्टा से जो उसकी अन्तरात्मा को झकझोरती हुई-सी लगी, इन चालाकी के तुच्छ और कमजोर विचारों को एक कठोर स्वर 'बस !' कहकर अपने दिमाग से भगा दिया।

वह फिर एकदम स्वस्थ हो गई। उसमें स्फूर्ति आ गई और वह अपने मन में कहने लगी—अपने बेटे को क्यों लजाती हो ? क्यों इतना डरती हो !

कुछ क्षण के संकल्प-विकल्प ने ही उसके अन्तर में फिर सुव्यवस्था कर दी, और उसका हृदय शान्ति से फिर धड़कने लगा।

'अब आगे क्या होगा ! पकड़ लेने पर वे मेरे साथ कैसा व्यवहार करेंगे !' मा अपने मन में सोचने लगी।

इतने में जासूस ने स्टेशन के एक सिपाही को बुलाया और उसे मा को दिखाकर उसके कान में कुछ समझाने लगा। सिपाही ने जासूस की तरफ घूरकर देखा और पीछे की तरफ हटकर खड़ा हो गया। फिर दूसरा सिपाही आया और उसने भी सुना और सुनकर दाँत निकालते हुए अपनी आँखें नीची कर लीं। दूसरा सिपाही बूढ़ा आदमी था। उसकी शक्ल भद्दी, रंग भूरा और मुँह मुड़ा हुआ था। वह जासूस की तरफ सिर हिलाकर मा की तिपाई की तरफ चला। जासूस सिपाहियों को समझा-बुझाकर फौरन लुप्त हो गया।

बूढ़। सिपाही धीरे-धीरे चलता हुआ मा के पास आया और ध्यान से आँखें गड़ाकर मा के चेहरे की तरफ देखने लगा। मा तिपाई के उस छोर पर बैठी हुई काँप रही थी और मन में सोच रही थी कि कहीं मुझे पकड़कर मारें न! कहीं मुझे मारें न!

सिपाही मा के पास आकर खड़ा हो गया और मा के चेहरे की ओर देखने लगा।

'क्या देखती हो?' फिर उसने धीमी आवाज से मा से पूछा।

'कु नहीं!'

'हूँ...! चोर! इतनी बूढ़ी और फिर भी चोरी...'

उसके कँटीले शब्द मा के हृदय को बेधते हुए उसके अन्तर में घुस गये और उसे लगा, मानों उन्होंने उसके चेहरे को चीर-फाड़ डाला हो और उसकी आँखें चीरकर बाहर निकाल ली हों।

'मैं चोर नहीं हूँ! तू झूठा है!' मा अपनी पूरी ताकत से उस पर चिल्लाई। मा के आगे का सारा दृश्य एक विद्रोह के बवण्डर में घूमता हुआ नाच उठा, और अपमान के वार से उसका हृदय फटने लगा। मा ने बेग को हाथ से झटका, जिससे वह खुल गया।

'देखो, लोगो देखो! सब लोग देख लो!' वह खड़ी होकर अपने सिर के ऊपर कागजों का एक पुलिन्दा हिलाती हुई चिल्लाई और उसने अपने कानों मे आनेवाले शोरो-गुल में लोगों की आवाजें, जो चारों तरफ से उसकी तरफ दौड़ उठे थे, इस प्रकार आती हुई सुनी—क्या है?

'जासूस है।'

'क्या मामला है?'

'यह बुढ़िया चोर है! लोग कहते हैं।'

'यह?'

'क्या चोर इस तरह चिल्लाकर लोगों को अपनी तरफ बुलाते हैं?'

'ऐसी शरीफ औरत! चोर! हरे राम!'

'किसको पकड़ा है?'

'मैं चोर नहीं हूँ!' मा ने भरी हुई आवाज में चिल्लाकर कहा। चारों ओर से अपनी तरफ लोगों को बढ़ते देखकर उसे कुछ ढाढ़स बँधने लगा था।

'कल राजनैतिक बन्दियों का जो मुकदमा हुआ था, उनमें मेरा लड़का व्लेसोव भी था। उसने अदालत में जो बयान दिया था, वही यह है। मैं इसे लोगों में बाँटने के लिए जा रही हूँ कि लोग उसे पढ़कर सत्य समझ लें।'

किसी ने एक पर्चा सावधानी से उसके हाथ में से खींचा, परन्तु मा ने कागजों का पूरा पुलिन्दा ही हवा में हिलाकर, भीड़ में फेंक दिया।

'इस वीरता के काम के लिए इसकी कोई प्रशंसा नहीं करेगा!' किसी ने डरी हुई आवाज में कहा।

'ई...ई...ई...ई !' चारों ओर से भय की प्रतिध्वनि सुनाई दी।

मा ने देखा कि पर्चों को लोग झटकते हुए जल्दी-जल्दी अपनी जेबों और कपड़ों में छिपा रहे थे। यह देखकर वह और भी दृढ़ता से पाँव गड़ाकर और तनकर खड़ी हो गई। उसके चेहरे से शान्ति और दृढ़ता टपक रही थी। उसे मालूम हो रहा था कि उसका अटल आत्माभिमान उसे दूसरे लोगों से ऊँचा उठा रहा था, जिससे उसके हृदय में आनन्द की ज्योति जग रही थी। अस्तु, वह अपनी पूरी ताकत से बेग में से पवेल के बयान की नकलें जल्दी-जल्दी निकाल-निकालकर भीड़ में इधर-उधर लोगों के लालची हाथों में फेंकती हुई चिल्लाई—इसी के लिए उन्होंने मेरे बेटे और उसके बन्धुओं को निर्वासित किया है। जानते हो ? मैं तुमसे सच कहती हूँ ! एक माता के हृदय पर विश्वास करो ! मेरे सफेद बालों पर विश्वास करो ! कल ही उन्होंने उन सब नौजवानों को इसी लिए कालापानी किया है कि वे तुम्हें और तुम्हारी तरह दूसरे लोगों को सत्य बातें बतलाते थे। सोचो तो, तुम्हारा जीवन कैसा है !...

भीड़ आश्चर्य से खामोश थी। धीरे-धीरे मा को घेरते हुए लोग नजदीक बढ़ते आ रहे थे।

'...आम लोग मेहनत करते-करते मरे जाते हैं, परन्तु फल कुछ नहीं होता। गरीबी, भुखमरी और बीमारी सदा ही मुँह बाये उनके द्वार पर खड़ी रहती है। मजबूर होकर कुछ लोग चोरियाँ करते हैं, और डाके डालते हैं। परन्तु हमारे सिरों पर पैर रखकर खड़े होनेवाले धनी-मानी सन्तोष से बैठकर चैन की वंशी बजाते हैं। उन्होंने हम पर अपना हुक्म चलाने के लिए सरकार, अधिकारी, पुलिस और सेना, सब पर अपना अधिकार जमा लिया है। सभी हमारे विरोधी हैं, हर चीज हमारे विरुद्ध है। हम लोग जिन्दगी भर अपना खून पसीना करते हैं; परन्तु हम हमेशा गन्दगी में ही पड़े-पड़े सड़ते हैं। दूसरे हमें धोखा देकर हमारी मेहनत के बल पर मोटे बनते हैं, आनन्द मनाते हैं, और हम अज्ञानता की जंजीरों से जकड़े हुए कुत्तों की तरह जीवन बिताते हैं। हम अज्ञान के घोर अन्धकार में पड़े हैं और दिन-रात भय से अपना जीवन बिताने के कारण हर आदमी और हर चीज से डरते हैं। हमारा जीवन एक अँधियारी रात की तरह है; एक भयंकर स्वप्न-सा है। हमें नशा पिलाकर बेहोश बना दिया गया है, और हमारा खून दिन-रात चूसा जा रहा है। हमारा खून चूसनेवालों ने हमारा इतना खून पी लिया है कि उन्हें बदहजमी हो गई है और उल्टी होने लगी है। परन्तु फिर भी वे लोभ के कीड़े जोकों की तरह हमारे शरीर से चिपट रहे हैं। क्यों ? मैं सच कहती हूँ या नहीं ?'

'सच कहती हो ! सच कहती हो !' भीड़ में से धीमे-धीमे उत्तर आये। इतने में मा ने भीड़ के पीछे फिर उस जासूस को दो पुलिस के अधिकारियों के साथ देखा। अस्तु, उसने बचे-खुचे पर्चों को भी जल्दी-जल्दी भीड़ में बाँट देने के विचार से बेग में हाथ डाला; परन्तु वहाँ किसी दूसरे आदमी का एक हाथ पर्चे ले रहा था।

'ले लो ! सब ले लो !' मा ने झुकते हुए कहा। एक गन्दा चेहरा मा की तरफ

उठता हुआ उसके कान में धीरे से बोला—किसको जाकर तुम्हारी गिरफ्तारी की खबर सुना दूँ ? किसी के पास तुम्हें कोई सन्देशा भेजना है ?

मा ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह कहती रही—हमारे इस जीवन को बदलने के लिए, हम सबको स्वतंत्र करने के लिए, हमको मुर्दों से उठाकर जीवित करने के लिए जैसे मैं मुर्दों से जीवित हो गई हूँ, कुछ लोग तैयार हो चुके हैं, जिन्होंने सत्य के चुपचाप दर्शन किये हैं। चुपचाप, क्योंकि जैसा तुम सब लोग जानते ही हो, आजकल किसी को सत्य के सम्बन्ध में जोर से कुछ कहने-सुनने की आज्ञा नहीं है। सत्य बोलनेवालों को ढूँढ़-ढूँढ़कर मारा जा रहा है, उनका गला घोट दिया जाता है; उनको जेलों में सड़ाया जाता है, उनको अपङ्ग बना दिया जाता है। धन में बल है, सत्य नहीं। सत्य धन का सदा से संसार में घोर शत्रु रहा है, परन्तु अब हमारे बच्चे संसार में सत्य फैला रहे हैं। तेजस्वी, सच्चे नौजवान तुमको सत्य का मार्ग दिखा रहे हैं! अभी वे थोड़े हैं! अस्तु, उनकी शक्ति कम है। परन्तु दिन-दिन उनकी संख्या बढ़ रही है। वे अपने युवक हृदयों को स्वतन्त्रता और सत्य की वेदी पर भेंट चढ़ा रहे हैं, और उससे एक अजेय शक्ति उत्पन्न कर रहे हैं। उनके हृदय-द्वार में से प्रवेश करता हुआ यह सत्य हमारे कठोर जीवन में भी आयेगा, और हममें जान डालकर हमें सजीव बनायेगा और हमें धनिकों के अत्याचारों से, उन लोभियों के अत्याचारों से, जिन्होंने अपनी आत्मा लोभ को बेच दी है, मुक्त करेगा। विश्वास रखो।'

'हटो, हटो! रास्ते में से हटो!' चिल्लाते हुए पुलिस के अधिकारी भीड़ को धक्का देते हुए आगे बढ़ने का प्रयत्न कर रहे थे। लोग अनिच्छा से उनके लिए रास्ता कर रहे थे। भीड़ अधिकारियों को दबाती हुई, बिना किसी इरादे के, उनके मार्ग में बाधा बन रही थी। सफेद बालोंवाली बुढ़िया की दयालु आँखें लोगों को अपनी ओर खींच रही थीं। वे, जिनका जीवन छिन्न-भिन्न था, जिन्हें जीवन की व्यवस्था एक-दूसरे से अलग रखती थी, इस समय बुढ़िया के उन निर्भीक शब्दों को सुनकर, जिनके लिए वे शायद अपने हृदयों में बहुत दिनों से लालायित रहते थे—जीवन को कठोरता और अन्याय से अपमानित और विद्रोही बने हुए अपने हृदयों में बहुत दिनों से लालायित रहते थे—इससे मिलकर एक हो गये थे। जो लोग मा के निकट थे, बिलकुल चुपचाप खड़े थे। मा ने उनके उदास चेहरों और उनकी चढ़ी हुई त्योरियों और उनकी आँखों को देखा। उनकी गर्म साँसे आ-आकर मा के मुँह पर लग रही थीं।

'तिपाई के ऊपर चढ़कर खड़ी हो जाओ।' वे बोले।

'मैं अभी पकड़ी जाऊँगी। ऊपर चढ़ने की जरूरत नहीं है!'

'जल्दी-जल्दी बोलो! पुलिस आ रही है।'

'उन सच्चे आदमियों का साथ दो! गरीबों के जो हितैषी हैं, उनका साथ दो! सन्तुष्ट होकर मत बैठे रहो! बन्धुओ, सन्तुष्ट होकर मत बैठो! अत्याचारी के बल के सामने सिर मत झुकाओ! कामगारो, उठो! तुम्हीं जीवन के मालिक हो! सभी तुम्हारे

परिश्रम पर निर्भर हैं ! परिश्रम के लिए ही बस तुम्हारे हाथ खोले जाते हैं। वरना तुम उनके बन्दी हो। उन्होंने तुम्हारी आत्मा को मार दिया है ! तुम्हें सब तरह से लूट लिया है ! अपने दिल और दिमाग कों मिलाकर एकता की शक्ति उत्पन्न करो, जिससे तुम सारी दुनिया पर विजय प्राप्त कर लोगे। तुम्हारे सिवाय और कोई तुम्हारा इस दुनिया में मददगार और मित्र नहीं है। कामगारों के हितैषी यही कामगारों से कहते हैं—वे हितैषी जो कामगारों से जा-जाकर मिलते हैं और जिन्हें उसके लिए जेलों में अपना जीवन बिताना होता है, बेईमान या धोखेबाज आदमी-सा काम नहीं कर सकते।'

'रास्ते में से हटो! भागो!' पुलिसवालों की आवाजें नजदीक होने लगी थीं। उनकी संख्या बढ़ गई थी और वे जोर से धक्के देते हुए बढ़ रहे थे। मा के सामने के आदमी एक-दूसरे को पकड़े हुए झूम रहे थे।

'बस ! और तो बेग में नहीं है !' किसी ने धीरे से पूछा।

'ले लो ! सब ले लो !' मा चिल्लाती हुई बोली। मा को ऐसा लग रहा था कि उसके शब्द उसकी छाती के भीतर घुसकर एक गीत बन जाते थे। परन्तु उसे इस बात पर बड़ा दुःख होता था कि उसकी आवाज काम नहीं कर रही थी। वह भारी पड़ गई थी, और काँपती हुई बैठ रही थी।

'मेरे बेटे के शब्द एक सच्चे कामगार के शब्द हैं ; एक ऐसी आत्मा के शब्द हैं, जो किसी के हाथ बिक नहीं गई है। उन शब्दों की वीरता में ही तुम उनका सत्य देख सकते हो। वे इतने निर्भीक शब्द हैं कि आवश्यकता होने पर सत्य के लिए वे अपनी भेंट स्वयं चढ़ा सकते हैं। तुमको, कामगारो ! वे शब्द सत्य, बुद्धि और निर्भीकता का सन्देशा सुनाते हैं। अपना हृदय खोलकर इन शब्दों का स्वागत करो और इनको सोचो। इन शब्दों से तुम्हें सब कुछ समझ लेने और सत्य और मनुष्यमात्र की स्वतन्त्रता के लिए लड़ने की शक्ति प्राप्त होगी ! इनको अपनाओ। इन शब्दों पर विश्वास करो। इनको लेकर मनुष्यमात्र के सुख के लिए आगे बढ़ो। खुशी-खुशी नये जीवन की तरफ कदम बढ़ाओ।'

इतने में किसी ने उसकी छाती पर एक घूँसा मारा, जिससे वह लड़खड़ाकर तिपाई पर गिर पड़ी। पुलिसवालों के हाथ लोगों के सिरों, कालरों और कन्धों को पकड़-पकड़-कर उन्हें एक तरफ ढकेल रहे थे और लोगों के टोप उछल-उछलकर दूर जा-जाकर गिर रहे थे। मा की आँखों के आगे अन्धकार छा गया, और सारा दृश्य चक्कर खा-खाकर नाचने लगा। मगर अपनी थकावट पर शीघ्र ही काबू पाकर वह अपनी बची हुई शक्ति एकत्र करती हुई जोर से फिर चिल्लाई—लोगो, अपनी बिखरी हुई शक्ति को एक शक्ति में मिलाओ !

वह इतना ही कह पाई थी कि एक विशाल डील-डौल के पुलिस अधिकारी ने आकर उसकी गर्दन पकड़ ली, और उसे झकझोरते हुए बोला—चुप रहो।

मा का सिर दीवार से टकराया और उसके हृदय में आतंक का एक धुआँ-सा भर

गया। परन्तु क्षण-भर में उस धुएँ के बादल से उसका हृदय बाहर निकलकर फिर जगमगाने लगा।

'भाग जाओ!' पुलिस का अधिकारी लोगों पर चिल्लाया।

'डरो मत! जो कष्ट तुम अपने जीवन-भर सहते रहते हो, उससे अधिक और कष्ट तुम्हें नहीं मिल सकते हैं!'

'चुप हो जाओ! बको मत!' पुलिस के आदमी ने मा की बाँह पकड़कर उसे खींचा और एक दूसरे पुलिसवाले ने उसकी दूसरी बाँह पकड़ ली, और उसे घसीटते हुए जल्दी-जल्दी एक तरफ को ले चले।

'उन वेदनाओं से अधिक भयंकर वेदनाएँ, जो रोज तुम्हारा हृदय बेधती रहती हैं, तुम्हारी छाती को खोखला करती रहती हैं, तुम्हारी शक्ति को नष्ट करती रहती हैं, इस संसार में और कोई नहीं हैं।'

जासूस दौड़ता हुआ आया और मा के मुँह पर घूँसा हिलाता हुआ चिल्लाया—चुप रह! बुढ़िया खूसट!

मा की आँखें फटकर चमक रही थीं और उसके जबड़े थरथरा रहे थे। फर्श के चिकने पत्थरों पर जोर से पैर रगड़ती हुई अपनी रही-सही शक्ति को एकत्र करती हुई वह फिर चिल्लाई—लोगों की नई आत्मा को कोई नहीं मार सकता!

'कुतिया!' जासूस ने चिल्लाकर उसके मुँह पर एक थप्पड़ मारा।

क्षण-भर के लिए काले-काले और लाल-लाल धब्बों ने उसकी आँखों के सामने एक अन्धकार-सा कर दिया और उसके मुँह में खारा-खारा खून आ गया।

परन्तु चारों ओर से लोगों ने चिल्लाकर उसका उत्साह बढ़ाया:

'उसको मारते क्यों हो!'

'मारो मत भाइयो!'

'यह क्या हो रहा है!'

'अरे बदमाशो!'

'मारो कम्बख्तों को!'

'मेरा रक्त बहा लो। परन्तु मेरे रक्त में तुम सत्य को नहीं डुबा सकते!...'

पीठ और गर्दन पर मा को धक्के मिल रहे थे, और उसके कन्धों और सिर पर मार पड़ रही थी। उसकी आँखों के आगे का सारा दृश्य घूम रहा था और पुलिस की सीटियों की गूँजती हुई आवाजों और लोगों के चिल्लाने की आवाजों के बवण्डर में वह धुँधला पड़ता जा रहा था। मोटी-मोटी-सी कोई चीज उसके कानों में रेंगती हुई उसे बहरा बनाये दे रही थी और उसके हलक में उतरती हुई उसका गला रूँध रही थी। पैरों के नीचे की जमीन उसे हिलती और नीचे को धँसती हुई लग रही थी। उसके पाँव झुके जा रहे थे, शरीर थरथरा रहा था और दर्द से झुलसकर भारी होता हुआ और लड़खड़ाता हुआ अशक्त हुआ जा रहा था। परन्तु उसकी आखें बन्द नहीं हुई थीं। वे अपने सामने

की बहुत-सी दूसरी आँखों में उसी परिचित मा के हृदय को अतिप्रिय, अग्नि की तेजस्वी और वीरतापूर्ण ज्योति को जगमगाते देख रही थीं।

मा को धकियाते-धकियाते पुलिसवाले एक द्वार के भीतर ले आये थे; परन्तु मा ने पुलिसवालों से अपना हाथ छुड़ाकर दरवाजे की चौखट पकड़ ली और चिल्लाई—सत्य को तुम रक्त के महासागर में भी नहीं डुबा सकते...पुलिसवालों ने उसके हाथ से चौखट छुड़ाने के लिए मा के हाथ पर वार किया।

'हाय रे! व्यर्थ में हो तुम लोगों की घृणा के पात्र बन रहे हो। अरे नासमझो! यह खून एक दिन तुम्हारे सिर पर चढ़कर बोलेगा।'

इतने में किसी ने उसकी गर्दन पकड़कर जोर से दबाई, जिससे उसका गला घुँटा और उसमें से गड़गड़ाती हुई आवाज आई—अरे नासमझो...

———